

धवला - टीका - समन्वितः

षट्खंडागमः

वर्णानामधेये

खंड - ५ पुस्तक - १४ भाग - ४, ५, ६

- प्रकाशक -

जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापुर

श्रीमंत सेठ सिताबराय लक्ष्मीचन्द्र जैन साहित्योद्धारक
सिद्धान्त ग्रंथमाला द्वारा अधिकार प्राप्त
जीवराज जैन ग्रंथमाला.

(धवला-पुष्प १४)

श्री भगवत्-पुष्पदन्त-भूतबलि-प्रणीतः

षट्खंडागमः

श्रीवीरसेनाचार्य-विरचित-धवला-टीका-समन्वितः

तस्य

पंचमखंडे वर्गणानामध्ये

हिन्दी भाषानुवाद-तुलनात्मकटिप्पण-प्रस्तावनानेकपरिशिष्टैः सम्पादितम्
बंधनानुयोगद्वारम्

खंड ५

पुस्तक १४

भाग ४, ५, ६

— ग्रंथसम्पादकः —

स्व. डॉ. हीरालालो जैनः

— सहसम्पादकी —

स्व. पं. फूलचन्द्र सिद्धान्त शास्त्री

स्व. पं. बालचन्द्र सिद्धान्त शास्त्री

— प्रकाशकः —

जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापुर

वीर नि. संवत् २५२०

इ. सन १९९४

प्रकाशक—

सेठ अरविंद रावजी

अध्यक्ष— जैन संस्कृति संरक्षक संघ

फलटण गल्ली, सोलापुर- २



संशोधित द्वितीय आवृत्ति १९९४ प्रतियाँ— ११००



संशोधक सहायक—

स्व. डॉ. ए. एन. उपाध्ये

स्व. पं. ब्र. रतनचंदजी मुख्तार

पं. जवाहरलालजी शास्त्री, भिण्डर



ग्रंथमाला संपादक—

पं. नरेंद्रकुमार मिसीकर शास्त्री, सोलापुर

(न्यायतीर्थ महामहिमोपाध्याय)

डॉ. पं. देवेंद्रकुमार शास्त्री, नीमच



मुद्रक—

कल्याण प्रेस, सोलापुर.

मुद्रण सच्चाट. सोलापुर.

मूल्य— १२०/- रुपये

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

Rights to Publish Received From Shrimant Seth Sitabrai Lakshmichandra Jain
Sahityoddhraka Siddhanta Granthamala

Jivaraj Jain Granthamala

Dhavalā Section– 14

THE
SHATKHANDAGAMA
OF
PUSHPADANTA AND BHOOTABALI
WITH
THE COMMENTARY DHAVALA OF VEERASENA

Varganakhanda
Bandhananuyogadwarm

Edited
With introduction, translation, notes and indexes

By
Late Pt. Hiralal Jain

Assisted by
Late Pt. Phoolachandra Siddhanta Shastri
Late Pt. Balachandra Siddhanta Shastri

Vol. 5

Book– 14

Section– 4, 5, 6

Published by
Jaina Samskriti Samrakshaka Sangha

SOLAPUR.

Veera Samvat– 2520

A. D. 1994

Published by—

Seth Aravind Raoji

President

Jaina Samskriti Samrashaka Sangha

Phaltan Galli, **SOLAPUR-2**



Revised Second Edition — 1994 (1100 Copies)



Research Assistant s

Late Dr. A. N. Upadhye

Late Dr. Pt. Ratanchandji Mukhtar

Pt. Jawaharlal Jain Shastri (Bhindar)



Editors of Granthamala—

Pt. Narendrakumar Bhisikar Shastri (Solapur)

(Nyayateertha, Mahamahimopadhyaya)

Dr. Pt. Devendrakumar Shastri (Neemach)



Printed by—

Kalyan Press, Solapur.

Mudran Samrat, Solapur.

Price ; Rs. 120/-

(Copyright Reserved)

हार्दिक अभिनंदन !



धवला षट्खंडागमके भाग १० से १६ तक के पुनर्मुद्रण के लिए ' धर्मानुरागी ' धवला परम संरक्षक श्री. डॉ. अप्पासाहेब कलगौडा नाडगौडा पाटील और उनकी धर्मपत्नी सौ डॉ. त्रिशलादेवी अप्पासाहेब नाडगौडा पाटील रत्नकवी (कर्नाटक) इन्होंने आर्थिक सहयोग देकर जिनवाणीकी सेवाका जो महान् आदर्श उपस्थित किया है उसके लिए उनका हार्दिक अभिनंदन करते हुए हम उनके प्रति अनेकशः धन्यवाद प्रकट करते हैं ।

— विश्वस्त मंडल —

जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापुर.

- प्रकाशकीय निवेदन -

षट्खण्डागम धवला सिद्धांत ग्रंथके पंचम खण्डके चतुर्थ, पंचम तथा षष्ठवे भागमें अर्थात् चौदहवें पुस्तकमें वर्गणाओंका सविस्तर वर्णन किया गया है ।

इस ग्रंथका पूर्व प्रकाशन श्रीमंत सेठ सिताराम लक्ष्मीचन्द्र जैन साहित्योद्धारक फंड विदिशा द्वारा हुआ है । उसका मूल ताडपत्र ग्रंथसे मिलानकर संशोधित पाठसहित द्वितीयावृत्तिका प्रकाशन अधिकार प्राप्त जीवराज जैन ग्रंथमाला सोलापुर द्वारा प्रकाशित करनेमें हम अपना सौभाग्य समझते हैं ।

स्व. ब. रतनचंदजी मुख्त्यार(सहारनपुर) तथा पं. जवाहरलालजी सिद्धान्त शास्त्री (भिडर) इनके द्वारा भेजे हुए संशोधनका भी इस संशोधनकार्यमें हमें सहयोग मिला जिसके लिए हम सभी सज्जनोंके अतीव आभारी हैं ।

इस ग्रंथका प्रूफ संशोधन कार्य जीवराज जैन ग्रंथमालाके संपादक श्री. पं. नरेंद्रकुमार भिसीकर शास्त्री तथा श्री. धन्यकुमार जैनी द्वारा संपन्न हुआ है । तथा मुद्रणकार्य कल्याण प्रेस, तथा मुद्रण सम्राट, सोलापुर इनके द्वारा संपन्न हुआ है । हम इनके भी आभार प्रदर्शित करते हैं ।

धर्मानुरागी श्रीमान् डॉ. अप्पासाहेब कलगौडा नाडगौडा पाटील तथा उनकी धर्मपत्नी डॉ. सी. त्रिशलादेवी नाडगौडा पाटील इन महानुभावोंने षट्खण्डागम धवला भा. १० से १६ तकके पुनर्मुद्रणके लिए आर्थिक सहयोग देकर जिनवाणीकी सेवाका महान आदर्श उपस्थित किया । इसलिए उनका हादिक अभिनंदन करते हुए हम उनके सहयोग के लिए अनेकशः धन्यवाद प्रकट करते हैं ।

- रतनचंद सखाराम शहा

मंत्री

जीवराज जैन ग्रंथमालाका परिचय

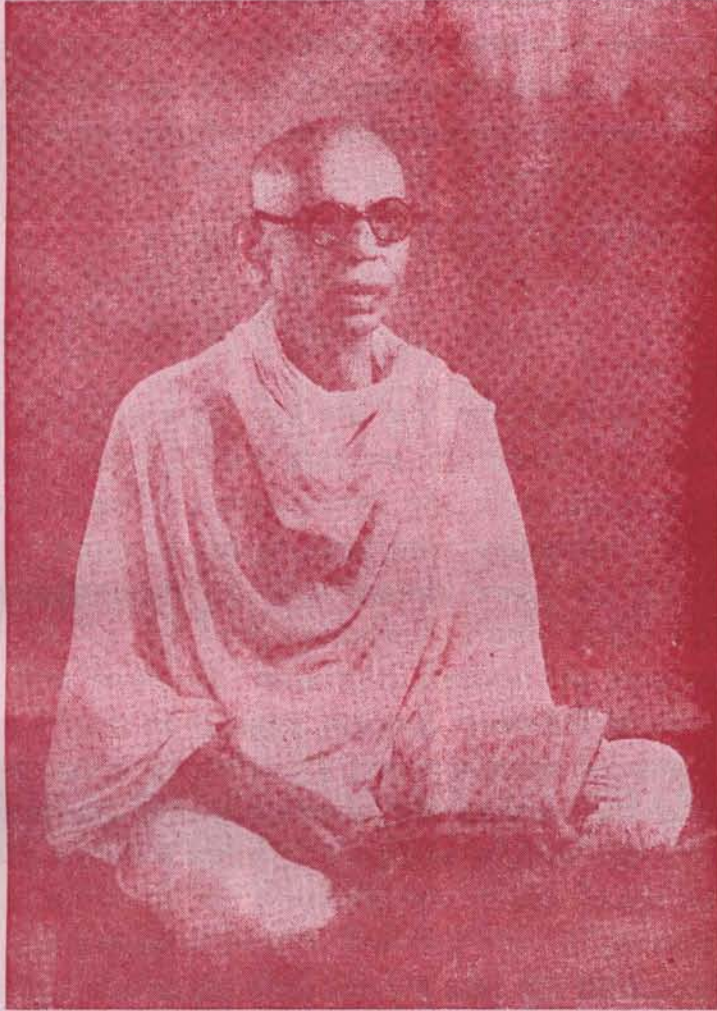
सोलापुर निवासी श्रीमान् स्व. ब्र. जीवराज गौतमचंद दोशी कई वर्षोंसे संसारसे उदासीन होकर धर्मकार्यमें अपनी वृत्ति लगाते रहे। सन १९४० में उनकी यह प्रबल इच्छा हो उठी कि अपनी न्यायोपाजित संपत्तिका उपयोग विशेषरूपसे धर्म और समाजकी उत्थतिके कार्यमें करें। तदनुसार उन्होंने समस्त भारतका परिभ्रमण कर जैन विद्वानोंसे इस बातकी साक्षात् और लिखित संमतियां संग्रह की कि कौनसे कार्यमें संपत्तिका उपयोग किया जाय। स्फुट मतसंचय कर लेनेके पश्चात् सन १९४१ के ग्रीष्म कालमें ब्रह्मचारीजीने श्रीसिद्धक्षेत्र गजपंथ की पवित्र भूमिपर विद्वानोंका समाज एकत्रित किया और ऊहापोहपूर्वक निर्णयके लिये उक्त विषय प्रस्तुत किया। विद्वत्सम्मेलनके फलस्वरूप ब्रह्मचारीजीने जैन संस्कृति तथा साहित्य के समस्त अंगोंके संरक्षण, उद्धार और प्रचारके हेतु 'जैन संस्कृति संरक्षक संघ' की स्थापना की और उसके लिए ३०,००० तीस हजार रुपयेके दानकी घोषणा कर दी। उनकी परिग्रह निवृत्ति बढ़ती गई। सन १९४४ में उन्होंने लगभग २,००,००० दो लाख की अपनी संपूर्ण संपत्ति संघको ट्रस्टरूपसे अर्पण की। इसी संघ के अंतर्गत 'जीवराज जैन ग्रंथमाला' का संचलन हो रहा है।

प्रस्तुत ग्रंथ, श्रीमंत सेठ सिताबराय लक्ष्मीचन्द्र जैन साहि-त्योद्धारक सिद्धान्त ग्रंथमालाके द्वारा अधिकार प्राप्त जीवराज जैन ग्रंथमालाके धवला विभागका चौदहवां पुष्प है।

विषय सूची

	पृष्ठ
१	
प्रस्तावना	
१ विषय-परिचय	१
२ विषयसूची	१६
२	
मूल अनुवाद और टिप्पण	१-५६४
१ बंधनानुयोगद्वारा	१-४६
२ बंधक अनुयोगद्वारा	४७-२२४
३ शरीरिशरीरप्ररूपण	२२५-४६८
४ चूलिका	४६९-५६२
५ बंधविधान	५६३-५६४
३	
परिशिष्ट	
१ बंधनानुयोगद्वारा सुताणि	१
२ अवतरण गाथासूची	२८
३ विशेष वाक्यसंग्रह	२९
४ न्यायोक्तियाँ	२९
५ ग्रंथोल्लेख	२९
६ पारिभाषिक शब्दसूची	३१





स्व. ब्र. जीवराज गौतमचंद दोशी

संस्थापक

जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापूर.

विषय-परिचय

बन्धनके चार भेद हैं— बन्ध, बन्धक, बन्धनीय और बन्धविधान । यहाँ इस अनुयोग-द्वारमें, बन्धक और बन्धविधानकी सूचनामात्र की है, क्योंकि बन्धकका विशेष विचार खुदा-बन्धमें और बन्धविधानका विशेष विचार महाबन्धमें किया है । शेष दो प्रकरण अर्थात् बन्ध और बन्धनीयका विचार इस अनुयोगद्वारमें किया है । इस अनुयोगद्वारमें बन्धनीयके प्रसंगसे वर्गणाओंका विशेषरूपसे ऊहापोह किया गया है, इसलिए ही स्पर्शसे लेकर यहाँ तकके पूरे प्रकरणकी वर्गणाखंड संज्ञा पड़ी है । अब संक्षेपसे इस भागमें वर्णित विषयका ऊहापोह करते हैं ।

१ बन्ध

बन्धके चार भेद हैं— नामबन्ध, स्थापनाबन्ध, द्रव्यबन्ध और भावबन्ध । इनमेंसे नेगम, संग्रह और व्यवहारनय सब बन्धोंको स्वीकार करते हैं । ऋजुसूत्रनय स्थापनाबन्धको स्वीकार नहीं करता है, शेष को स्वीकार करता है । शब्दनय केवल नामबन्ध और भावबन्धको स्वीकार करता है । कारण स्पष्ट है ।

एक जीव एक अजीव नाना जीव और नाना अजीव आदि जिस किसीका बन्ध ऐसा नाम रखना नामबन्ध है । तदाकार और अतदाकार पदार्थोंमें यह बन्ध है ऐसी स्थापना करना स्थापनाबन्ध है । द्रव्यबन्धके दो भेद हैं— आगमद्रव्यबन्ध और नोआगमद्रव्यबन्ध । भावबन्धके भी ये ही दो भेद हैं । बन्धविषयक स्थित आदि नौ प्रकारके आगममें वाचना आदि रूप जो उपयुक्त भाव होता है उसे आगम भावबन्ध कहते हैं । नोआगमभावबन्ध दो प्रकारका है— जीवभावबन्ध और अजीवभावबन्ध । जीवभावबन्धके तीन भेद हैं— विपाकज जीवभावबन्ध, अविपाकज जीवभावबन्ध और तदुभयरूप जीवभावबन्ध । जीवविपाकी अपने अपने कर्मके उदयसे जो देवभाव, मनुष्यभाव, तिर्यञ्चभाव, नरकभाव, स्त्रीवेद, पुरुषवेद आदि रूप ओदधिक भाव होते हैं वे सब विपाकज जीवभावबन्ध कहलाते हैं । अविपाकज जीवभावबन्धके दो भेद हैं— औपशमिक और क्षायिक । उपशान्त क्रोध, उपशान्त मान आदि औपशमिक अविपाकज जीवभावबन्ध कहलाते हैं और क्षीणमोह, क्षीणमान आदि क्षायिक अविपाकज जीवभावबन्ध कहलाते हैं । यद्यपि अन्यत्र जीवत्व, भव्यत्व और अभव्यत्व ये तीन पारिणामिक मानकर इन्हें अविपाकज जीवभावबन्ध कहा है पर ये तीनों भाव भी कर्मके निमित्तसे होते हैं, इसलिए यहाँ इन्हें अविपाकज जीवभावबन्धमें नहीं गिना है । तथा एकेन्द्रियलब्धि आदि क्षायोपशमिकभाव तदुभयरूप जीवभावबन्ध कहे जाते हैं । अजीवभावबन्ध भी विपाकज, अविपाकज और तदुभयके भेदसे तीन प्रकारका है । पुद्गलविपाकी कर्मके उदयसे शरीरमें जो वर्णादि उत्पन्न होते हैं वे विपाकज अजीवभावबन्ध कहलाते हैं । तथा पुद्गलके विविध स्कन्धोंमें जो स्वाभाविक वर्णादि होते हैं वे अविपाकज अजीवभावबन्ध कहलाते हैं और दोनों मिले हुए वर्णादिक तदुभयरूप अजीवभावबन्ध कहलाते हैं ।

यह हम पहले ही संकेत कर आये हैं कि द्रव्यबन्ध दो प्रकारका है— आगम-द्रव्यबन्ध और नोआगमद्रव्यबन्ध । बन्धविषयक नौ प्रकारके आगममें वाचना आदिरूप जो अनुपयुक्त भाव होता है उसे आगमद्रव्यबन्ध कहते हैं । नोआगम द्रव्यबन्ध दो प्रकारका है— प्रयोगबन्ध और विस्रसाबन्ध । विस्रसाबन्धके दो भेद हैं— सादिविस्रसाबन्ध और अनादिविस्रसाबन्ध । अलग अलग धर्मास्तिकायका अपने देशों और प्रदेशोंके साथ अधर्मास्तिकायका अपने

देशों और प्रदेशों के साथ और आकाशस्तिकायका अपने देशों और प्रदेशों के साथ अनादिकालीन जो बंध है वह अनादि विसर्गाबंध कहलाता है तथा जो स्निग्ध और रूक्षगुणयुक्त पुद्गलोंका जो बन्ध होता है वह सादि विसर्गाबंध कहलाता है। सादिविसर्गाबंधके लिए मूल ग्रन्थका विशेषरूपसे अवलोकन करना आवश्यक है। नाना प्रकारके स्कन्ध इसी सादि विसर्गाबंधके कारण बनते हैं। प्रयोगबन्ध दो प्रकारका है— कर्मबन्ध और नोकर्मबन्ध। नोकर्मबन्धके पाँच भेद हैं— आलापनबन्ध, अल्लीवणबन्ध, संश्लेषबन्ध, शरीरबन्ध और शरीरिबन्ध। काष्ठ आदि पृथग्भूत द्रव्योंकी रस्सी आदिसे बाँधना आलापनबन्ध है। लेपविशेषके कारण विविध द्रव्योंके परस्पर बंधनेको अल्लीवणबन्ध कहते हैं। लाख आदिके कारण दो पदार्थोंका परस्पर बंधना संश्लेषबन्ध कहलाता है। पाँच शरीरोंका यथायोग्य सम्बन्धको प्राप्त होना शरीरबन्ध कहलाता है। इस कारण पाँच शरीरोंके द्विसंयोगी और त्रिसंयोगी पन्द्रह भेद हो जाते हैं। नामोंका निर्देश मूल में किया ही है। शरीरबन्धके दो भेद हैं— सादि शरीरबंध और अनादिशरीरबन्ध। जीवका औदारिक आदि शरीरोंके साथ होनेवाले बन्धको सादिशरीरबन्ध कहते हैं। यद्यपि तैजस और कामणशरीरका जीवके साथ अनादिबन्ध है पर यहां अनादि सन्तानबन्धकी विवक्षा न होनेसे वह सादिशरीरबन्धमें ही गभित कर लिया गया है। कर्मबन्धका विशेष विचार कर्मप्रकृति अनुयोगद्वारमें पहले ही कर आये हैं।

२ बन्धक

बन्धकका विशेष विचार खुदाबन्धमें ग्यारह अनुयोगद्वारोंका आलम्बन लेकर पहले कर आये हैं, इसलिए यहाँ इस विषयकी सूचनामात्र दी गई है।

३ बन्धनीय

जीवसे पृथग्भूत जो कर्म और नोकर्म स्कन्ध हैं उनकी बन्धनीय संज्ञा है। वे पुद्गल द्रव्य, क्षेत्र काल और भावके अनुसार वेदनयोग्य होते हैं। ऐसा होते हुए भी वे स्कन्ध पर्यायसे परिणत होकर ही वेदनयोग्य होते हैं ऐसा नियम है। उसमें भी सभी पुद्गलस्कन्ध वेदनयोग्य नहीं होते किन्तु तेईस प्रकारकी वर्गणाओंमें जो ग्रहणप्रायोग्य वर्गणायें हैं उनके कर्म और नो-कर्मरूप परिणत होनेपर ही वे वेदनयोग्य होते हैं अतः यहाँ वर्गणाओंका अनुगम करते हुए उनका इन आठ अनुयोगद्वारोंका अवलम्बन लेकर विचार किया गया है। वे आठ अनुयोगद्वार ये हैं— वर्गणा, वर्गणाद्रव्यसमुदाहार, अनन्तरोपनिधा, परम्परोपनिधा, अवहार, यवमध्य पदमी-मांसा और अल्पबहुत्व।

वर्गणा— वर्गणाके दो भेद हैं— आभ्यन्तर वर्गणा और बाह्य वर्गणा। आभ्यन्तरवर्गणा दो प्रकारकी है— एकश्रेणिवर्गणा और नानाश्रेणिवर्गणा। उनमेंसे एकश्रेणिवर्गणाका सर्व प्रथम सोलह अनुयोगद्वारोंका आलम्बन लेकर विचार किया गया है। वे सोलह अनुयोगद्वार ये हैं— वर्गणानिक्षेप वर्गणानयविभाषणता, वर्गणाप्ररूपणा, वर्गणानिरूपणा, वर्गणाध्रुवाध्रुवानुगम, वर्गणासान्तरनिरन्तरानुगम, वर्गणाओजयुग्मानुगम, वर्गणाक्षेत्रानुगम, वर्गणास्पर्शनानुगम, वर्गणाकालानुगम, वर्गणाअन्तरानुगम, वर्गणाभावानुगम, वर्गणाउपनयनानुगम, वर्गणापरिमाणानुगम वर्गणाभागाभागांशानुगम और वर्गणाअल्पबहुत्वानुगम।

यहां वर्गणानिक्षेपके छह भेद करके उनमेंसे कौन निक्षेप किस नयका विषय है यह बतलाकर इस प्रकरणको समाप्त किया गया है। वर्गणाके सोलह अनुयोगद्वारोंमेंसे केवल दो का ही विचार कर वर्गणाद्रव्यसमुदाहारका अवतार क्यों किया गया है यह प्रश्न उठाकर वीर-सेनस्वामीने उसका यह समाधान किया है कि वर्गणा प्ररूपणा अधिकार केवल वर्गणाओंकी एक श्रेणिका कथन करता है किन्तु वर्गणाद्रव्यसमुदाहार वर्गणाओंकी एकश्रेणि और नाना-श्रेणिका सांगोपांग विचार करता है अतः यहां वर्गणाके शेष चौदह अधिकारोंका कथन न करके वर्गणाद्रव्यसमुदाहारका कथन प्रारम्भ किया है।

वर्गणाद्रव्यसमुदाहार— इस अनुयोगद्वारके भी चौदह अवान्तर अधिकार हैं जिनके नाम ये हैं— वर्गणाप्ररूपणा, वर्गणानिरूपणा, वर्गणाध्रुवाध्रुवानुगम, वर्गणासान्तरनिरन्तरानुगम, वर्गणाओजयुगमानुगम, वर्गणक्षेत्रानुगम, वर्गणास्पर्शनानुगम, वर्गणाकालानुगम, वर्गणाअन्तरानुगम, वर्गणाभावानुगम, वर्गणाउपनयनानुगम, वर्गणापरिमाणानुगम, वर्गणाभागाभागानुगम और वर्गणा अल्पबहुत्व।

वर्गणाप्ररूपणा— इसके द्वारा तेईस प्रकारकी वर्गणाओंका विचार किया है। वे तेईस प्रकारकी वर्गणायें ये हैं—एकप्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्य वर्गणा, संख्यातप्रदेशिक परमाणुपुद्गल-द्रव्य वर्गणा, असंख्यात प्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा, अनन्तप्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा, आहारवर्गणा, अग्रहणवर्गणा, तेजसशरीरद्रव्यवर्गणा, अग्रहणवर्गणा, भाषाद्रव्यवर्गणा, अग्रहण-वर्गणा, मनोद्रव्यवर्गणा, अग्रहणवर्गणा, कर्मणद्रव्यवर्गणा, ध्रुवस्कन्धवर्गणा, सान्तरनिरन्तर-वर्गणा, ध्रुवशून्यवर्गणा, प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणा, ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणा, बादरनिगोदद्रव्यवर्गणा, ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणा, सूक्ष्मनिगोदवर्गणा, ध्रुवशून्यवर्गणा और महास्कन्धवर्गणा।

एक परमाणुकी एकप्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा संज्ञा है। द्विप्रदेशिकसे लेकर उत्कृष्ट संख्यातप्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा तककी सब वर्गणाओंकी संख्यातप्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा संज्ञा है। जघन्य असंख्यातप्रदेशिकसे लेकर उत्कृष्ट असंख्यातप्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाओंकी असंख्यातप्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा संज्ञा है। आहारवर्ग-णासे पूर्वतककी अनन्तप्रदेशी और अनन्तानन्तप्रदेशी जितनी वर्गणायें हैं उनकी यहां अनन्त-प्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा संज्ञा दी है। इन्हीं वर्गणाओंमें परीत और अपरीतप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणायें भी सम्मिलित हैं। औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारक-शरीरके योग्य वर्गणाओंकी आहारवर्गणा संज्ञा है। इसी प्रकार आगे भी अपने अपने कार्योंके अनुसार उन उन वर्गणाओंकी संज्ञा जाननी चाहिए। यहां जो चार ध्रुवशून्यवर्गणायें कही हैं वे वस्तुतः शून्यरूप हैं। केवल पिछली वर्गणा और अगली वर्गणाके मध्यके शून्यरूप अन्तरालका परिज्ञान करानेके लिए यह संज्ञा दी गई है।

यहां अन्तमें आई हुई प्रत्येकशरीरवर्गणा, बादरनिगोदवर्गणा, सूक्ष्मनिगोदवर्गणा और महास्कन्धवर्गणा ये चार ऐसी वर्गणायें हैं जिनके स्वरूपके विषयमें कुछ अलगसे प्रकाश डालना आवश्यक है, अतः यहां इस विषयमें लिखा जाता है। एक जीवके एक शरीरमें जो कर्म और नोकर्मस्कन्ध संचित होता है उसकी प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणा संज्ञा है यह प्रत्येकशरीर पृथि-वीकायिक, जलकायिक, अप्तिकायिक, वायुकायिक, देव, तारकी, आहारकशरीरी प्रमत्तमयत और

केवली जिनके पाया जाता है। इन आठ प्रकारके जीवोंको छोड़कर शेष जितने संसारी जीव हैं उनका शरीर या तो निगोद जीवोंसे प्रतिष्ठित होनेके कारण सप्रतिष्ठित प्रत्येकरूप है या स्वयं निगोदरूप है। मात्र जो प्रत्येक वनस्पति निगोदरहित होती है वह इसका अपवाद है। यहां यह प्रश्न उठता है कि जब मनुष्योंके शरीर अन्य अवस्थाओं में निगोदोंसे प्रतिष्ठित होते हैं तब ऐसी अवस्थामें आहारकशरीरी, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जीवोंके शरीर निगोद-रहित कैसे हो सकते हैं? समाधान यह है कि प्रमत्तसंयत जीवके जो औदारिकशरीर होता है वह तो निगोदोंसे सप्रतिष्ठित ही होता है। वहां जो आहारकशरीर उत्पन्न होता है वह अवश्य ही निगोदराशिसे अप्रतिष्ठित होनेके कारण केवल प्रत्येकरूप होता है। इसी प्रकार जब यह जीव बारहवें गुणस्थानमें पहुँचता है तो वहां उसके शरीरमें जितनी निगोदराशि होती है उसका क्रमसे अभाव होता जाता है और बारहवें गुणस्थानके अंतिम समयमें निगोदराशि और क्रमराशिका पूरी तरहसे अभाव होकर सयोगिकेवली जीवका शरीर केवल प्रत्येकरूप हो जाता है। उसके बाद अयोगिकेवली जीवके यही शरीर रहता है, इससिए यह भी प्रत्येकरूप होता है। यह जघन्य प्रत्येकशरीर वर्गणा क्षपितकर्मांश विधिसे आये हुए अयोगिकेवली जिनके अंतिम समयमें होती है और उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणा महावनके दाहादिके समय एकबंधन-बद्ध अग्निकायिक जीवोंके होती है। यहां यद्यपि महावनके दाहके समय जितने अग्निकायिक जीव होते हैं उनका अपना अपना शरीर अलग अलग ही होता है, पर वे सब जीव और उनके शरीर परस्पर संयुक्त रहते हैं, इसलिए उन सबकी एक वर्गणा मानी गई है। यहां एक प्रश्न यह होता है कि विग्रहगतिमें स्थित जो बादर निगोद और सूक्ष्मनिगोद जीव होते हैं उन्हें प्रत्येकशरीर मानने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए, क्योंकि, वहां उन जीवोंका एक शरीर न होनेसे वे सब अलग अलग ही माने जाने चाहिए। इस शंकाका समाधान यह है कि वहां भी उनके साधारण नोकर्मका उदय रहता है और इसलिये वे अनंत होते हुए भी एकबंधनबद्ध ही होते हैं, अतः उन्हें प्रत्येकशरीर नहीं माना जा सकता। यह कहना कि विग्रहगतिमें शरीरनामकर्मका उदय देखा जाता है, इसलिए जिनके इन कर्मोंका उदय होता है उन्हें निगोद जीव माननेमें कोई बाधा नहीं आती। तथा इनके अतिरिक्त जो जीव होते हैं, चाहे उन्होंने शरीर ग्रहण किया हो और चाहे शरीर ग्रहण न किया हो, वे सब प्रत्येकशरीर जीव कहलाते हैं। इस प्रकार प्रत्येकशरीरवर्गणा किन किन जीवोंके किस प्रकार होती है इसका विचार किया।

उक्त चार वर्गणाओंमें दूसरी वर्गणा बादरनिगोदवर्गणा है। यह वर्गणा क्षपित कर्मांशविधिसे आये हुए क्षीणकषाय जीवके अंतिम समयमें होती है, क्योंकि, एक तो जो क्षपितकर्मांश विधिसे आया हुआ जीव होता है उसके कर्म और नोकर्मका सञ्चय उत्तरोत्तर न्यून न्यून होता जाता है। दूसरे ऐसा नियम है कि क्षपकश्चेणि पर आरोहण करनेवाले जीवके विशुद्धिवश ऐसी योग्यता उत्पन्न हो जाती है जिससे उस जीवके क्षीणकषाय गुणस्थानमें पहुँचने पर उसके प्रथम समयमें शरीरस्थित अनंत बादरनिगोद जीव मरते हैं। इस प्रकार क्षीणकषायके प्रथम समयसे लेकर आवलिपृथक्त्वप्रमाण काल जाने तक उत्तरोत्तर विशेष अधिक विशेष अधिक बादरनिगोद जीव मरते हैं। उससे आगे क्षीणकषायके कालमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल शेष रहने तक संख्यातभाग अधिक संख्या-तभाग अधिक जीव मरते हैं। उससे अगले समयमें असंख्यातगुणे जीव

मरते हैं। इस प्रकार क्षीणकषायके अन्तिम समय तक असंख्यातगुणों असंख्यातगुणों जीव मरते हैं। इस प्रकार क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जो मरनेवाले निगोद जीव होते हैं उनके विस-सोपचयसहित कर्म और नोकर्मके समुदायको एद बादर निगोदवर्गणा कहते हैं। चूंकि यह अन्य बादर निगोदवर्गणाकी अपेक्षा सबसे जघन्य होती है, अतः क्षपितकर्मांश विधिसे आये हुए जीवके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य बादर निगोदवर्गणा कही गई है।

यहाँ बारहवें गुणस्थानमें उस गुणस्थानवाले जीवके शरीरके सब निगोद जीवोंके मर-नेकी बात कही गई है। इसका अभिप्राय यह है कि सयोगी केवली और अयोगिकेवली जीवका शरीर एक मात्र अपने जीवको छोड़कर अन्य त्रस और स्थावर निगोद जीवोंसे रहित हो जाता है। उनके शरीरकी सात धातु और उपधातु यहाँ तक कि रोम, नख, चमड़ी और रक्त भी एक सयोगिकेवली जीवके शरीरको छोड़कर अन्य किसी जीवका आधार नहीं रहता। यहाँ बारहवें गुणस्थानमें यद्यपि क्रमसे निगोद राशिका अभाव बतलाया गया है, इसलिए यह प्रश्न हो सकता है की क्षीणकषाय जीवके शरीरसे निगोदराशिका अभाव होता है तो होओ, पर उसके शरीरसे त्रसराशिका भी अभाव हो जाता है यह कैसे माना जा सकता है? उत्तर यह है कि नारकी देव, आहारकशरीरी और केवली इन चार प्रकारके त्रस जीवोंके शरीरोंको छोड़कर अन्य जितने त्रस जीवोंके शरीर हैं वे सब बादरनिगोद प्रतिष्ठित होते हैं, ऐसा आग-मवचन है। अब जब कि केवली जिनके शरीरमें एक भी निगोद जीव नहीं रहता तो वहाँ उनके आधारभूत अन्य क्रमिरूप त्रस जीवोंकी सम्भावना ही नहीं की जा सकती है। यही कारण है कि केवली जिनके शरीरको कृमिरूप त्रस जीवों और बादरनिगोद जीवोंसे रहित बतलाया है।

निगोद जीव क्षीणकषाय जीवके शरीरमेंसे क्यों मरने लगते हैं, इसका समाधान बीरसेन स्वामीने इस प्रकार किया है। उनका कहना है कि ध्यानके बलसे वहाँ उत्तरोत्तर बादर निगोद जीवोंकी उत्पत्तिका निरोध होता जाता है, इसलिए क्रमसे नये बादर निगोद जीव उत्पन्न नहीं होते हैं और जो पुराने बादरनिगोद जीव होते हैं उनकी आयु पूर्ण हो जानेके कारण वे मर जाते हैं। यद्यपि क्षीणकषायके शरीरमें बादर निगोद जीव सर्वथा उत्पन्न ही नहीं होते ऐसी बात नहीं है। प्रारम्भमें तो वे उत्पन्न होते हैं और क्षीणकषायगुणस्थानके कालमें बादरनिगोद जीवकी जघन्य आयु प्रमाण कालके शेष रहने तक वे उत्पन्न होते हैं। इसके बाद नहीं उत्पन्न होते। यहाँ यह प्रश्न होता है कि जिस प्रकार प्रारम्भमें वे उत्पन्न होते हैं उसी प्रकार क्षीणकषायके अन्तिम समय तक वे क्यों नहीं उत्पन्न होते? समाधान यह है कि केवली जिनका शरीर प्रतिष्ठित प्रत्येकरूप है ऐसा षट्खण्डागम शास्त्रका अभिप्राय है। अब यदि यह माना जाता है कि क्षीण-कषाय जीवके शरीरमें अन्तिम समय तक बादर निगोद जीव उत्पन्न होते हैं तो केवली जिनके शरीरमें भी बादर निगोद जीवोंका सद्भाव मानना पड़ता है। चूंकि केवली जिनके शरीरमें बादर निगोद जीवोंका सद्भाव नहीं बतलाया है, इसलिए यह बात सुतरां सिद्ध हो जाती है कि क्षीणकषायके शरीरमें अन्तिम समय तक बादर निगोद जीव न उत्पन्न होकर जहाँ तक सम्भव है वही तक उत्पन्न होते हैं।

साधारणतः अन्य शास्त्रोंमें केवली जिनके शरीरको सात धातु और उपधातुसे रहित परमोदारिक रूप कहा गया है और यह भी बतलाया है कि केवलीके शरीरके नख और केश

नहीं बढ़ते । केवली होनेके समय शरीरकी जो अवस्था रहती है, आयुके अन्तिम समय तक वही अवस्था बनी रहती है, सो इन सब बातोंका रहस्य इस मान्यतामें छिपा हुआ है । इसका अर्थ यह नहीं लेना चाहिए कि उनके शरीरमेंसे हड्डी आदिका अभाव हो जाता है । जो चीज जैसी होती है वह वैसी ही बनी रहती है । मात्र उसमेंसे बादर निगोद जीव और उनके आधारभूत क्रमिका अभाव हो जानेसे वह उस प्रकार पुद्गलका सञ्चयमात्र रह जाता है । उदाहरणके लिए दूध लीजिए । गायके स्तनोंसे दूध निकालनेपर कुछ कालमें उसमें जीवोत्पत्ति होने लगती है, पर अग्नि पर अच्छी तरहसे तपा लेनेपर उसमें कुछ काल तक जीवोत्पत्ति नहीं होती । किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि वह दूध ही नहीं रहता । दूध तो उस अवस्थामें भी बना रहता है । इस प्रकार जो बात दूधके विषयमें है वही बात केवली जिनके शरीरके और उसकी धातुओं और उपधातुओंके विषयमें भी जाननी चाहिए ।

इस प्रकार क्षपितकर्मांश विधिसे आए हुए क्षीणकषाय जीवके अन्तिम समयमें प्राप्त शरीरमें जघन्य बादरनिगोदवर्गणा होती है । तथा स्वयम्भूरमणद्वीपके कर्मभूमिसम्बन्धी भागमें भूलीके शरीरमें उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणा होती है । मध्यमें नाना जीवोंका आश्रय लेकर ये बादरनिगोदवर्गणायें अनेक विध होती हैं ।

तीसरी विचारणीय सूक्ष्मनिगोदवर्गणा है । बादर और सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें अन्तर यह है कि बादरनिगोदवर्गणा दूसरेके आश्रयसे रहती है और सूक्ष्मनिगोदवर्गणा जलमें, स्थलमें व आकाशमें सर्वत्र बिना आश्रयके रहती है । क्षपित कर्मांशविधिसे और क्षपित घोलमान विधिसे आये हुए जो सूक्ष्म निगोद जीव होते हैं उनके यह सूक्ष्म निगोद वर्गणा जघन्य होती है । यह तो आगमप्रसिद्ध बात है कि एक निगोद जीव अकेला नहीं रहता । अनन्तानन्त निगोद जीवोंका एक शरीर होता है । असंख्यातलोकप्रमाण शरीरोंकी एक पुलवि होती है और आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंका एक स्कन्ध होता है । यहाँ ऐसे सूक्ष्म स्कन्धकी एक जघन्य वर्गणा ली गई है । तथा उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणा एक बन्धनबद्ध छह जीवनि-कायोंके संघातरूप महामत्स्यके शरीरमें दिखलाई देती है । ये अपने जघन्यसे उत्कृष्ट तक निरन्तर क्रमसे पाई जाती हैं । बादर निगोद वर्गणाओंमें जिस प्रकार बीच-बीचमें अन्तर दिखलाई देता है उस प्रकार इनमें नहीं दिखलाई देता ।

चौथी विशेष वक्तव्य योग्य महास्कन्धद्रव्यवर्गणा है । यह वर्गणा आठों पृथिवियाँ, भवन और विमान आदि सब स्कन्धोंके संयोगसे बनती है । यद्यपि इन सब पृथिवी आदिमें अन्तर दिखलाई देता है, पर सूक्ष्म स्कन्धों द्वारा उनका परस्पर सम्बन्ध बना हुआ है, इस-लिए इन सबको मिलाकर एक महास्कन्ध द्रव्यवर्गणा मानी गई है ।

इसप्रकार ये कुल तेईस वर्गणायें हैं । इनमेंसे आहारवर्गणा, तैजसवर्गणा, भाषा-वर्गणा मनोवर्गणा और कर्मणशरीरवर्गणा ये पाँच वर्गणायें जीवद्वारा ग्रहण योग्य हैं, शेष नहीं । इन वर्गणाओंका प्रमाण कितना है, पिछली वर्गणासे अगली वर्गणा किस क्रमसे चालू होती है, अपनी जघन्यसे अपनी उत्कृष्ट कितनी बड़ी है आदि प्रश्नोंका समाधान मूलकी देखकर कर लेना चाहिए ।

यहाँ तक एकश्रेणिवर्गणाओंका विचार करके आगे नाताश्रेणिवर्गणाओंका विचार करते हुए कौन वर्गणा कितनी होती है यह बतलाया गया है । एकश्रेणिवर्गणामें जातिकी

अपेक्षा कुल वर्गणायें तेईस मानकर उनका विचार किया गया है और नानाश्रणिवर्गणामें प्रत्येक वर्गणा सख्याकी अपेक्षा कितनी हैं इसप्रकार परिमाण बतलाकर विचार किया गया है ।

वर्गणानिरूपणा- तेईस प्रकारकी वर्गणाओंमेंसे कौन वर्गणा किस प्रकार उत्पन्न होती है, क्या भेदसे उत्पन्न होती है या संघातसे उत्पन्न होती है, या भेद-संघातसे उत्पन्न होती है इस बातका विचार इस अधिकारमें किया गया है । स्कन्धके टूटनेका नाम भेद है । परमाणुओंके समागमका नाम संघात है और स्कन्धका भेद होकर मिलनेका नाम भेद-संघात है । उदाहरणार्थ- द्विप्रदेशी आदि उपरिम वर्गणाओंके भेदसे एकप्रदेशी वर्गणा उत्पन्न होती है । द्विप्रदेशी वर्गणा त्रिप्रदेशी आदि उपरिम वर्गणाओंके भेदसे, एकप्रदेशी वर्गणाओंके संघातसे और स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे उत्पन्न होती है । इसी प्रकार आगे भी समझ लेना चाहिए । मात्र सान्तर-निरन्तर वर्गणासे लेकर अक्षून्यरूप जितनी वर्गणायें हैं वे सब स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे ही उत्पन्न होती हैं । इतनी बात अवश्य है कि किन्हीं सूत्रपौधियोंमें सान्तर-निरन्तर वर्गणाकी उत्पत्ति भी पूर्वकी वर्गणाओंके संघातसे, उपरिम वर्गणाओंके भेदसे और स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे बतलाई है । कारणका विचार मूल टीकामें किया ही है, इसलिए वहाँसे जान लेना चाहिए ।

पहले वर्गणाद्वयसमुदाहारके चौदह भेद करके सूत्रकारने वर्गणाप्ररूपणा और वर्गणा-निरूपणा इन दो का ही विचार किया है । शेष बारहका क्यों नहीं किया है इस बातका विचार करते हुए वीरसेन स्वामी कहते हैं कि सूत्रकार चौबीस अनुयोगद्वारस्वरूप महाकर्म-प्रकृतिप्राभृतके ज्ञाता थे, इसलिए उन अनुयोगद्वारोंके अज्ञानकार होनेके कारण नहीं किया है, यह तो कहा नहीं जा सकता है । वे उनका कथन करना भूल गये इसलिए नहीं किया है यह भी कहना उचित नहीं है, क्योंकि, सावधान व्यक्तिसे ऐसी भूल होना सम्भव नहीं है । फिर क्यों नहीं किया है इस बातका समाधान करते हुए वीरसेनस्वामी कहते हैं कि पूर्वाचार्योंके व्याख्यानका जो क्रम रहा है उसका प्ररूपण करनेके लिए ही यहाँ भूतबलि भट्टारकने शेष बारह अनुयोगद्वारोंका कथन नहीं किया है । इस प्रकार मूल सूत्रोंमें शेष बारह अनुयोग-द्वारोंका विचार तो नहीं किया गया है, फिर भी वीरसेनस्वामीने उन अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर वर्गणाओंका विस्तारसे विचार किया है, सो समस्त विषय मूलसे जान लेना चाहिए ।

बाह्य वर्गणा विचार

इस प्रकार यहाँ तक आध्यन्तर वर्गणाका विचार करके आगे बाह्यवर्गणाका विचार चार अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर किया गया है । वे चार अनुयोगद्वार ये हैं- शरीरिशरीर-प्ररूपणा, शरीरप्ररूपणा, शरीरविस्रसोपचयप्ररूपणा और विस्रसोपचयप्ररूपणा । शरीरी जीवको कहते हैं । इनके प्रत्येक और साधारणके भेदसे दो प्रकारके शरीर होते हैं । इन दोनोंका जिसमें प्रतिपादन किया जाता है उसे शरीरिशरीरप्ररूपणा कहते हैं । औदारिक आदि पाँच प्रकारके शरीरोंका अपनी अवान्तर विशेषताओंके साथ जिसमें प्ररूपणा किया जाता है उसे शरीरप्ररूपणा कहते हैं । जिसमें पाँचों शरीरोंके विस्रसोपचयके सम्बन्धके कारणभूत स्निग्ध रूक्षगुणके अविभागप्रतिच्छेदोंका कथन किया जाता है उसे शरीरविस्रसोपचयप्ररूपणा कहते हैं । तथा जिसमें जीवसे मुक्त हुए उन्हीं परमाणुओंके विस्रसोपचयकी प्ररूपणा की जाती है उसे विस्रसोपचयप्ररूपणा कहते हैं ।

शरीरशरीरप्ररूपणा— इसमें जीवोंके प्रत्येकशरीर और साधारण शरीर ये दो भेद बतलाकर साधारणशरीर वनस्पतिकायिक ही होते हैं और शेष जीव प्रत्येकशरीर होते हैं यह बतलाया गया है। इसके आगे साधारणका लक्षण करते हुए बतलाया है कि जिनका साधारण आहार है और स्वासोच्छ्वासका ग्रहण साधारण है वे साधारण जीव हैं। इनका शरीर एक होता है। उसे व्याप्त कर अनन्तानन्त निगोद जीव रहते हैं, इसलिए इन्हें साधारण कहते हैं और इसीलिए आहार और स्वासोच्छ्वासका ग्रहण भी साधारण होता है। तात्पर्य यह है कि सर्व प्रथम उत्पन्न हुए जीव जितने कालमें शरीर आदि चार पर्याप्तियोंसे पर्याप्त होते हैं उतने ही कालमें अनन्तर उसी शरीरमें उत्पन्न हुए जीव भी शरीर आदि चार पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो जाते हैं। यहां अलग अलग जीवोंके योगके तारतम्यसे और आगे पीछे उत्पन्न होनेसे पर्याप्तियोंके पूर्ण करनेमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। यहां तक पर्याप्तियोंके पूर्ण होनेके समयमें यदि जीव इस शरीरमें उत्पन्न होते हैं तो वे उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें ही पूर्वमें उत्पन्न हुए जीवों द्वारा ग्रहण किये गये आहारसे उत्पन्न हुई शक्तिको प्राप्त कर लेते हैं। उन्हें उसके लिए अलगसे प्रयत्नशील नहीं होना पड़ता। विशेष स्पष्ट कहें तो यह कहा जा सकता है कि पर्याप्तियोंकी निष्पत्तिके लिए एक जीव द्वारा जो अनुग्रहण अर्थात् परमाणु-पुद्गलोंका ग्रहण है वह उस समय वहाँ रहनेवाले या पीछे उत्पन्न होनेवाले अन्य अनन्तानन्त जीवोंका अनुग्रहण होता है, क्योंकि, एक तो उस आहारसे जो शक्ति उत्पन्न होती है वह युगपत् सब जीवोंको मिल जाती है। दूसरे उन परमाणुओंसे जो शरीरके अवयव बनते हैं वे सबके होते हैं। इसी प्रकार बहुत जीवोंके द्वारा जो अनुग्रहण है वह एक जीवके लिए भी होता है। एक शरीरमें जो प्रथम समयमें जीव उत्पन्न होते हैं और जो द्वितीयादि समयोंमें उत्पन्न होते हैं वे सब यहाँपर एक साथ उत्पन्न हुए माने जाते हैं, क्योंकि, उन सबका एक शरीरके साथ सम्बन्ध पाया जाता है। यह तो उनके आहारग्रहणकी विधि है। उनके मरण और जन्मके सम्बन्धमें भी यह नियम है कि जिस शरीरमें एक जीव उत्पन्न होता है वहाँ नियमसे अनन्तानन्त जीव उत्पन्न होते हैं और जिस शरीरमें एक जीव मरता है वहाँ नियमसे अनन्तानन्त जीवोंका मरण होता है। तात्पर्य यह है कि वे एक बन्धनबद्ध होकर ही जन्मते हैं और मरते हैं। वे निगोद जीव बादर और सूक्ष्मके भेदसे दो प्रकारके होते हैं और ये परस्पर अपने सब अवयवों द्वारा समवेत होकर ही रहते हैं। उसमें भी बादर निगोद जीव मूली, थूवर और आर्द्रक आदिके आश्रयसे रहते हैं और सूक्ष्म निगोद जीव सर्वत्र एक बन्धनबद्ध होकर पाये जाते हैं। एक निगोद जीव अकेला कहीं नहीं रहता। इन निगोद जीवोंके जो आश्रय स्थान हैं उनमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीर होते हैं। उनमेंसे एक एक निगोदशरीरमें जितने बादर और सूक्ष्मनिगोद जीव प्रथम समयमें उत्पन्न होते हैं उनसे दूसरे समयमें उसी शरीरमें असंख्यातगुणे हीन निगोद जीव उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालतक उत्तरोत्तर प्रत्येक समयमें असंख्यातगुणे हीन असंख्यातगुणे हीन जीव उत्पन्न होते हैं। पुनः एक, दो आदि समयसे लेकर उत्कृष्ट रूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालका अंतर देकर पुनः एक, दो आदि समयोंसे लेकर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालतक उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार सान्तर निरन्तरक्रमसे जबतक सम्भव है वे निगोद जीव उत्पन्न होते हैं। ये सब उत्पन्न हुए जीव एक साथ एक क्षेत्रावगाही होकर रहते हैं। सूत्रकार कहते हैं कि ऐसे अनन्त जीव हैं जो अभीतक त्रसपर्याप्तिको नहीं प्राप्त हुए हैं, क्योंकि, इनका ऐकेन्द्रिय जातिमें उत्पत्तिका

कारणभूत संश्लेश परिणाम प्रबल है जिससे वे निगोदवास छोड़नेमें असमर्थ हैं। अबतक जितने सिद्ध हुए और जितना काल व्यतीत हुआ उससे भी अनन्तगुणे जीव एक निगोद-राशिमें निवास करते हैं। यहाँपर वीरसेनाचार्य संख्यात आदिकी परिभाषा करते हुए लिखते हैं कि आय रहित जिन राशियोंका केवल व्ययके द्वारा विनाश सम्भव है वे राशियाँ संख्यात और असंख्यात कही जाती हैं। तथा आय न होनेपर भी जिस राशिका व्ययके द्वारा कभी अभाव नहीं होता वह राशि अनन्त कही जाती हैं। यद्यपि अर्धपुद्गल परिवर्तन काल भी अनन्त माना जाता है, पर यह उपचार कथन है। और इस उपचारका कारण यह है कि यह अन्य ज्ञानोंका विषय न होकर अनन्त सज्ञावाले सिर्फ केवलज्ञानका विषय है, इसलिए इसमें अनन्तका व्यवहार किया जाता है। निगोदराशि दो प्रकारकी है—चतुर्गतिनिगोद और नित्यनिगोद। जो चारों गतियोंमें उत्पन्न होकर पुनः निगोदमें चले जाते हैं वे चतुर्गतिनिगोद कहलाते हैं। इतरनिगोद शब्द इसीका वाचक है और जो अबतक निगोदसे नहीं निकले हैं या सर्वदा निगोदमें रहते हैं वे नित्यनिगोद कहे जाते हैं। अतीत कालमें कितने जीव त्रस-पर्यायको प्राप्त कर चुके हैं इस प्रश्नका समाधान करते हुए वीरसेनस्वामी लिखते हैं कि अतीतकालसे असंख्यातगुणे जीव ही अभीतक त्रसपर्यायको प्राप्त हुए हैं।

यह अर्थपद है। इसके अनुसार यहाँ आठ अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं। वे ये हैं—सत्, संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, भाव और अल्पबहुत्व। यहाँ इन आठों अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले, चार शरीरवाले और शरीर सहित जीवोंका ओष और आदेशसे विचार किया गया है। विग्रहगतिमें विद्यमान चारों गतिके जीव दो शरीरवाले होते हैं, क्योंकि, उनके तैजस और कार्मण ये दो शरीर पाये जाते हैं। औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरवाले या वैक्रियिक, तैजस और कार्मणशरीरवाले जीव तीन शरीरवाले होते हैं। औदारिक, वैक्रियिक, तैजस और कार्मणशरीरवाले या औदारिक, आहारक, तैजस और कार्मणशरीरवाले जीव चार शरीरवाले होते हैं। तथा सिद्ध जीव शरीर रहित होते हैं। यहाँ सत् आदि अनुयोगद्वारोंके आश्रयसे विशेष व्याख्यान मूलसे जान लेना चाहिए। विशेष बात इतनी है कि सूत्रोंमें केवल सत्प्ररूपणा और अल्पबहुत्व प्ररूपणा ही कही गई है। शेष छहका व्याख्यान वीरसेन आचार्यने किया है।

शरीरप्ररूपणा— इसका व्याख्यान छह अनुयोगद्वारोंके आश्रयसे किया गया है। वे छह अनुयोगद्वार ये हैं—नामनिरुक्ति, प्रदेशप्रमाणानुगम, निषेकप्ररूपणा, गुणकार, पदमीमांसा और अल्पबहुत्व। नामनिरुक्तिमें पाँचों शरीरोंकी निरुक्ति की गई है। प्रदेशप्रमाणानुगममें पाँचों शरीरोंके प्रदेश अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवे भागप्रमाण है यह बतलाया गया है। निषेकप्ररूपणाका विचार अवान्तर छह अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर किया गया है। उनके ये नाम हैं—समुत्कीर्तना प्रदेशप्रमाणानुगम, अनन्तरोपनिधा, परम्प-रोपनिधा, प्रदेशावरच और अल्पबहुत्व। समुत्कीर्तना द्वारा बतलाया गया है कि जिन औदारिक, वैक्रियिक और आहारकशरीरकी वर्गणाओंका प्रथम समयमें ग्रहण होता है उनमेंसे कुछ एक समय तक, कुछ दो समय तक इस प्रकार तीन आदि समयसे लेकर जिसकी जितनी उत्कृष्ट स्थिति होती है कुछ उतने काल तक रहती हैं। आशय यह है कि इन शरीरोंकी स्थितिमें आधाधा काल नहीं होता। इसी प्रकार तैजसशरीरके

विषयमें भी जानना चाहिए । मात्र तैजसशरीरकी उत्कृष्ट स्थिति छयासठ सागर लेनी चाहिए । कामंशरीरके परमाणु ग्रहण करनेके बाद एक आवलि तक नहीं खिरते, इसलिए इसके परमाणु कुछ एक समय अधिक एक आवलि तक और कुछ दो समय अधिक एक आवलि तक इस प्रकार तीन समय अधिक एक आवलिसे लेकर उत्कृष्ट रूपसे कर्मस्थिति-प्रमाण काल तक रहते हैं । कामंशरीरकी स्थितिमें कमसे कम एक आवलिप्रमाण आबाधा काल है, इसलिए यहाँ आबाधाको ध्यानमें रखकर निजंराका विचार किया गया है । प्रदेश-प्रमाणानुगममें बतलाया है कि पाँचों शरीरोंके प्रदेश प्रत्येक समयमें अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवे भागप्रमाण प्राप्त होते हैं । और यह क्रम अपनी अपनी स्थिति तक जानना चाहिए । अनन्तरोपनिधामें बतलाया है कि पाँचों शरीरोंके प्रदेश प्राप्त होकर प्रथम समयमें बहुत दिये जाते हैं । तथा द्वितीयादि समयोंमें विशेष हीन विशेष हीन दिए जाते हैं । इस प्रकार अपनी अपनी स्थिति पर्यन्त जानना चाहिए । परम्परोपनिधामें बतलाया है कि प्रारम्भके तीन शरीरोंके प्रदेश प्रथम समयमें जितने दिये जाते हैं, अन्तर्मुहूर्त जाने पर उसके अन्तिम समयमें वे आध दिये जाते हैं । इसलिए इन शरीरोंकी एक द्विगुणहानि अन्तर्मुहूर्त प्रमाण और नाना द्विगुणहानियाँ आदिके दो शरीरोंमें पत्यके असंख्यातवे भागप्रमाण और आहारकशरीरमें संख्यात समयप्रमाण होती हैं । तथा तैजसशरीर और कामंशरीरके प्रदेश प्रथम समयमें जितने निक्षिप्त होते हैं, पत्यके असंख्यातवे भाग जाकर वे आधे निक्षिप्त होते हैं । इनकी एक द्विगुणहानि पत्यके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण है और नाना द्विगुणहानियाँ पत्यके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवे भागप्रमाण हैं । प्रदेशविरचमें सोलह पदवाला दण्डक कहा गया है जिसमें पर्याप्तनिर्वृत्ति, निर्वृत्तिस्थान और जीवनीयस्थान इनका स्वतन्त्र भावसे और सम्मूच्छन, गर्भज व औपपादिक जीवोंके आश्रयसे स्वस्थान अल्पबहुत्व कहा गया है । उसके बाद इन्हींका परस्थान अल्पबहुत्व कहा गया है । पुनः इसके आगे प्रदेशविरचके छह अवान्तर अनुयोगद्वारोंका नामनिर्देश करके उनके आश्रयसे पाँच शरीरोंकी प्ररूपणा की गई है । उनके नाम ये हैं- जघन्य अग्रस्थिति, अग्रस्थितिविशेष, अग्रस्थितिस्थान, उत्कृष्ट अग्रस्थिति, भागाभागानुगम और अल्पबहुत्व । निषेकप्ररूपणाके अन्तिम अनुयोगद्वार अल्पबहुत्वमें पाँच शरीरोंके आश्रयसे एक गुणहानि और नाना गुणहानियोंके अल्पबहुत्वका विचार किया गया है । इस प्रकार अपने अवान्तर अधिकारोंके साथ निषेक प्ररूपणाका कथन करके गुणकार अनुयोगद्वारमें पाँच शरीरोंके प्रदेश उत्तरोत्तर कितने गुणे हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए गुणकारका कथन किया है । पदमीमांसामें औदारिक आदि पाँच शरीरोंके जघन्य और उत्कृष्ट प्रदेशोंका स्वामी कौन-कौन जीव है इसका विचार किया गया है । अल्पबहुत्वमें औदारिक आदि पाँच शरीरोंके प्रदेशोंके अल्पबहुत्वका विचार कर शरीरप्ररूपणा समाप्त की गई है ।

शरीरविस्त्रसोपचयप्ररूपणा- यद्यपि पाँच शरीरोंमें स्निग्धादि गुणोंके कारण जो परमाणुपुद्गल सम्बद्ध होकर रहते हैं उनकी 'विस्त्रसोपचय संज्ञा है । फिर भी यहाँ पर इन विस्त्रसोपचयोंके कारणभूत जो स्निग्धादि गुण हैं उन्हें भी कारणमें कार्यका उपचार करके विस्त्रसोपचय कहा गया है । इस प्रकार यहां इन्हीं स्निग्धादि गुणोंका इस अनुयोगद्वारमें अपने छह अवान्तर अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर विचार किया गया है । उनके नाम ये हैं- अविभागप्रतिच्छेदप्ररूपणा, वर्गणाप्ररूपणा, स्पर्धकप्ररूपणा, अन्तरप्ररूपणा, शरीरप्ररूपणा

और अल्पबहुत्व । अविभागप्रतिच्छेदप्ररूपणामें बतलाया है कि औदारिक शरीरके एक एक प्रदेशमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे अनन्त अविभागप्रतिच्छेद होते हैं । वर्गणाप्ररूपणामें बतलाया है कि इस प्रकार अविभागप्रतिच्छेदवाले सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंकी एक वर्गणा होती है और ये सब वर्गणायें अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण होती हैं । इतनी वर्गणाओंका एक औदारिकशरीरस्थान होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । स्पर्धक प्ररूपणामें बतलाया है कि अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण वर्गणाओंका एक स्पर्धक होता है । तथा सब स्पर्धक मिलकर भी इतने ही होते हैं । अन्तर प्ररूपणामें बतलाया है कि एक स्पर्धकसे दूसरे स्पर्धककी अन्तिम वर्गणामें जितने अविभाग-प्रतिच्छेद होते हैं उन्हें सब जीवोंसे अनन्तगुणे करने पर जो लब्ध आवे उतने अविभाग-प्रतिच्छेद उससे अगले स्पर्धककी प्रथम वर्गणामें जानने चाहिए । शरीरप्ररूपणामें बतलाया है कि ये अनन्त अविभागप्रतिच्छेद शरीरके बन्धनके कारणभूत गुणोंका प्रज्ञासे छंद करने पर उत्पन्न होते हैं और फिर यहीं पर प्रसंगसे छेदके दस भेदोंका स्वरूपनिर्देश किया गया है । अल्पबहुत्वमें पाँच शरीरोंके अविभागप्रतिच्छेदोंके अल्पबहुत्वका विचार करके शरीर-विस्त्रसोपचयप्ररूपणा समाप्त की गई है ।

विस्त्रसोपचयप्ररूपणा- जो पाँच शरीरोंके पुद्गल जीवने लोड दिये हैं और जो औदारिकभावको न छोड़कर सब लोकमें व्याप्त होकर अवस्थित हैं उनकी यहाँ विस्त्रसोपचय संज्ञा मानकर विस्त्रसोपचयप्ररूपणा की गई है । एक एक जीवप्रदेश अर्थात् एक एक परमाणु पर सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्त्रसोपचय उपचित रहते हैं और वे सब लोकमें से आकर विस्त्रसोपचयरूपसे सम्बन्धको प्राप्त होते हैं । या वे पाँच शरीरोंके पुद्गल जीवसे अगल होकर सब आकाश प्रदेशोंसे सम्बन्धको प्राप्त होकर रहते हैं । इस प्रकार जीवसे अलग होकर सब लोकको प्राप्त हुए उन पुद्गलोंकी द्रव्यहानि, क्षेत्रहानि, कालहानि और भावहानि किस प्रकार होती है, आगे यह बतलाया गया है और यह बतलानेके बाद जीवसे अभेदरूप पाँच शरीर पुद्गलोंके विस्त्रसोपचयका माहात्म्य बतलानेके लिए अल्पबहुत्वका निर्देश किया गया है । तथा मध्यमें प्रसंगसे जीवप्रमाणानुगम, प्रदेशप्रमाणानुगम और इनके अल्पबहुत्वका भी विचार किया गया है । इस प्रकार इतना विचार करने पर बाह्यवर्गणाका विचार समाप्त होता है ।

चूलिका

पहले जो अर्थ कह आये हैं उनका विशेषरूपसे कथन करना चूलिका है । पहले ' जत्थेय मरदि जीवो ' इत्यादि गाथा कह आये हैं । यहाँ पर सर्व प्रथम इसी गाथाके उत्तरार्ध विचार किया गया है । ऐसा करते हुए बतलाया है कि प्रथम समयमें एक निगोद जीवके उत्पन्न होने पर उसके साथ अनन्त निगोद जीव उत्पन्न होते हैं । तथा जिस समय ये जीव उत्पन्न होते हैं उसी समय उनका शरीर और पुलवि भी उत्पन्न होती है । तथा कहीं कहीं पुलविकी उत्पत्ति पहले भी हो जाती है, क्योंकि, पुलवि अनेक शरीरोंका आधार है, इसलिए उसकी उत्पत्ति पहले माननेमें कोई बाधा नहीं आती । साधारण नियम यह है कि अनन्तानन्त निगोद जीवोंका एक शरीर होता है और असंख्यात लोकप्रमाण शरीरोंकी एक पुलवि होती है । प्रथम समयमें जितने निगोद जीव

उत्पन्न होते हैं दूसरे समयमें वहीं पर असंख्यातगुणे हीन जीव उत्पन्न होते हैं । तीसरे समयमें उनसे भी असंख्यातगुणे हीन जीव उत्पन्न होते हैं । इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक उत्तरोत्तर असंख्यातगुणे हीन जीव उत्पन्न होते हैं । उसके बाद कमसे कम एक समयका और अधिकसे अधिक आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालका अन्तर पड़ जाता है । पुनः अन्तरके बादके समयमें असंख्यातगुणे हीन जीव उत्पन्न होते हैं और यह क्रम आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक चालू रहता है । इस प्रकार इन निगोद जीवोंकी उत्पत्ति और अन्तरका क्रम कहकर अद्वाअल्पबहुत्व और जीव अल्पबहुत्वका विचार किया गया है । अद्वाअल्पबहुत्वमें सान्तरसमयमें और निरन्तरसमयमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंका अल्पबहुत्व तथा इन कालोंका अल्पबहुत्व विस्तारके साथ बतलाया गया है । जीव अल्पबहुत्वमें कालका आश्रय लेकर जीवोंका अल्पबहुत्व बतलाया गया है । इसके बाद स्कन्ध, अण्डर, आवास और पुलवि-योमें जो बादर और सूक्ष्म निगोद जीव उत्पन्न होते हैं वे सब पर्याप्त ही होते हैं या अपर्याप्त ही होते हैं या मिश्ररूप ही होते हैं इस प्रश्नका समाधान करते हुए प्रतिपादन किया है कि सब बादर निगोद जीव पर्याप्त ही होते हैं, क्योंकि, अपर्याप्तकोंकी आयु कम होनेसे वे पहले मर जाते हैं, इसलिए पर्याप्त जीव ही होते हैं । किन्तु इसके बाद वे मिश्ररूप होते हैं, क्योंकि बादमें पर्याप्त और अपर्याप्त बादर निगोद जीवोंके एक साथ रहनेमें कोई बाधा नहीं आती । किन्तु सूक्ष्म निगोद वर्गणामें सभी सूक्ष्म निगोद जीव मिश्ररूप ही होते हैं, क्योंकि, इनकी उत्पत्तिके प्रदेश और कालका कोई नियम नहीं है ।

इस प्रकार 'जत्थेय मरदि जीवो' इत्यादि गाथाके उत्तरार्धका कथन करके उसके पूर्वार्धका विचार करते हुए बतलाया गया है कि जो बादर निगोद जीव उत्पत्तिके क्रमसे उत्पन्न होते हैं और परस्पर बन्धनके क्रमसे सम्बन्धको प्राप्त होते हैं उनका मरणका क्रमसे ही निर्गम होना है । इनका उत्पत्तिके क्रमसे निर्गमन नहीं होता है, किन्तु मरणके क्रमसे निर्गमन होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । मरणका क्रम क्या है इस प्रश्नका समाधान करते हुए बतलाया है कि वह दो प्रकारका है—यवमध्यक्रम और अयवमध्यक्रम । इनमेंसे पहले अयव-मध्यक्रमका निर्देश करते हैं—सर्वोत्कृष्ट गुणश्रेणिके द्वारा मरनेवाले और सबसे दीर्घकाल द्वारा निर्लेप्यमान होनेवाले जीवोंके अन्तिम समयमें मृत होनेसे बचे हुए निगोदोंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है । यहाँ निगोद शब्द पुलविधाची है । अभिप्राय यह है कि क्षीणकषायके अन्तिम समयमें पूर्वमें मृत हुए जीवोंसे बचे हुए जीवोंकी पुलवियाँ आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होती है । क्षीणकषायके अन्तिम समयमें निगोद जीवोंके शरीर असं-ख्यात लोकप्रमाण होते हैं और एक एक शरीरमें पूर्वमें मरनेसे बचे हुए अनन्त निगोद जीव होते हैं । तथा उनकी आधारमृत पुलवियाँ उक्त प्रमाण होती हैं । यहाँ क्षीणकषायके कालके भीतर वा थूवर आदिमें मरनेवाले जीवोंकी प्ररूपणा चार प्रकारकी है—प्ररूपणा, प्रमाण, श्रेणि और अल्पबहुत्व । प्ररूपणामें बतलाया है कि क्षीणकषायके प्रत्येक जीव मरते हैं । प्रमाणमें बतलाया है कि क्षीणकषायके प्रत्येक समयमें अनन्त जीव मरते हैं । श्रेणि दो प्रकारकी है—अनंतरोपनिधा और परंपरोपनिधा । अनंतरोपनिधामें बतलाया है कि क्षीणकषायके प्रथम समयमें मरनेवाले जीव स्तोक हैं । दूसरे समयमें मरनेवाले जीव विशेष अधिक हैं । इस प्रकार आवलिपृथक्त्व कालतक प्रत्येक

समयमें विशेष अधिक विशेष अधिक जीव मरते हैं । उसके आगे विशेष अधिक मरणके अन्तिम समयतक प्रत्येक समयमें संख्यात भाग अधिक जीव मरते हैं । उसके बाद क्षीणकषायके संख्या— तवेँ भागप्रमाण कालमेंसे आवलिके असंख्यातवेँ भागप्रमाण काल शेष रहनेपर इसके भीतर असंख्यातगुणित क्रमसे गुणश्रेणि मरण होता है । परम्परोपनिषामें बतलाया है कि क्षीणकषायके प्रथम समयमें जितने जीव मरते हैं उससे आवलिके असंख्यातवेँ भागप्रमाण काल जानेपर मरनेवाले जीव दूने हो जाते हैं, इस प्रकार इतना इतना अवस्थित अध्वान जाकर मरनेवाले जीवोंकी संख्या दूनी दूनी होती जाती है और यह क्रम असंख्यातवेँ भाग अधिक मरनेवाले जीवोंके अन्तिम समयके प्राप्त होनेतक जानना चाहिए । उसके बाद अन्तिम समयतक प्रत्येक समयमें असंख्यातगुणे जीव मरते हैं ।

आगे क्षीणकषायके कालमें बादर निगोद जीवके जघन्य आयुप्रमाण कालके शेष रहनेपर बादर निगोद जीव नहीं उत्पन्न होते हैं । इस अर्थको स्पष्ट करनेके लिए आयुओंका अल्पबहुत्व बतलाया गया है । आगे जघन्य और उत्कृष्ट बादर और सूक्ष्म निगोद जीवोंकी पुलवियोंका परिमाण बतलाकर सब निगोदोंकी उत्पत्तिमें कारण महास्कन्धके अवयव आठ पृथिवी, टङ्क, कूट, भवन, विमान, विमानेन्द्रक आदि बतलाये गये हैं । साथ ही यह भी बतलाया गया है कि जब महास्कन्धके स्थानोंका जघन्य पद होता है तब बादर त्रसपर्याप्तकोंका उत्कृष्ट पद होता है और जब बादर त्रसपर्याप्तकोंका जघन्य पद होता है तब मूल महास्कन्धस्थानोंका उत्कृष्ट पद होता है ।

आगे मरणयवमध्य और शमिलायवमध्य आदिका कथन करनेके लिए संदृष्टियां स्थापित करके सब जीवोंमें महादण्डकका कथन किया गया है और संदृष्टियोंमें जो बात दर— साई गई है उसका यहां सूत्रोंद्वारा प्रतिपादन किया गया है । यहां विशेष जानकारीके लिए मूलका स्वाध्याय अपेक्षित है । इस प्रकार इतने कथन द्वारा ' जत्थेय मरइ जीवो ' इस गाथाकी प्ररूपणा समाप्त होती है ।

अब पांच शरीरोंके ग्रहण योग्य कौन वर्गणायें हैं और कौन ग्रहण योग्य नहीं हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए ये चार अनुयोगद्वारा आये हैं— वर्गणाप्ररूपणा, वर्गणानिरूपणा, प्रदेशार्थता और अल्पबहुत्व । वर्गणाप्ररूपणामें पुनः एक प्रदेशी परमाणु पुद्गल द्रव्य वर्गणासे लेकर कार्मणद्रव्यवर्गणा तककी सब वर्गणाओंका नामोल्लेख किया गया है । वर्गणानिरूपणामें इन वर्गणाओंमेंसे एक-एक वर्गणाको लेकर यह वर्गणा ग्रहणप्रायोग्य नहीं है ऐसी पृच्छा करके जो जो वर्गणा ग्रहणप्रायोग्य नहीं है उसे अग्रहणप्रायोग्य बतलाकर अन्तमें यही पृच्छा अनन्ता— नन्त परमाणु पुद्गल द्रव्य वर्गणाके विषयमें करके यह बतलाया गया है कि इसमेंसे कुछ वर्ग— णायें ग्रहणप्रायोग्य हैं और कुछ वर्गणायें ग्रहणप्रायोग्य नहीं हैं । इसका विशेष खुलासा करने हुए वीरसेन स्वामी लिखते हैं कि इस सूत्रमें जघन्य आहारवर्गणासे लेकर महास्कन्धद्रव्य वर्गणा तक सब वर्गणाओंकी अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा संज्ञा है । इनमेंसे आहारवर्गणा तैजसवर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणा और कार्मणशरीरवर्गणा ये पाँच वर्गणायें ग्रहणप्रायोग्य हैं, शेष नहीं । जो पाँच वर्गणायें ग्रहणप्रायोग्य हैं उनमें आहारवर्गणामेंसे औदारिकशरीर वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीर इन तीन शरीरोंका ग्रहण होता है । तैजस वर्गणा— मेंसे तैजसशरीरका ग्रहण होता है । भाषावर्गणामेंसे चार प्रकारकी भाषाओंका ग्रहण होता है ।

मनोवर्गणामेंसे चार प्रकारके मनकी रचना होती है और कर्मणवर्गणामेंसे ज्ञानावरणादि आठ प्रकारके कर्मोंका ग्रहण होता है। इन सूत्रोंकी टीका करते हुए वीरसेन स्वामीने एक बहुत ही महत्वकी बातकी ओर ध्यान आकृष्ट किया है। उनका कहना है कि यद्यपि आहार वर्गणासे औदारिक आदि तीन शरीरोंका निर्माण होता है पर जिन आहारवर्गणाओंसे औदारिकशरीरका निर्माण होता है उनसे वैक्रियिक और आहारक शरीरका निर्माण नहीं होता। जिन आहारवर्गणाओंसे वैक्रियिकशरीरका निर्माण होता है उनसे औदारिक और आहारकशरीरका निर्माण नहीं होता। तथा जिन आहारवर्गणाओंसे आहारकशरीरका निर्माण होता है उनसे औदारिक और वैक्रियिकशरीरका निर्माण नहीं होता। वस्तुतः औदारिक आदि तीन शरीरोंका निर्माण करनेवाली आहारवर्गणायें अलग अलग हैं उनके मध्यमें व्यवधान न होनेसे उनकी एक वर्गणा मानी गई है। इसी प्रकार भाषा आदि वर्गणाओंमें चार भाषाओं, चार मन और आठ कर्मोंकी वर्गणायें भी अलग अलग जाननी चाहिए। इस प्रकरणके जो सूत्र हैं उन्हींके आधारसे उन्होंने यह अर्थ फलित किया है। प्रदेशार्थतामें सब शरीरोंकी प्रदेशार्थता अनन्तानन्त प्रदेशवाली है यह बतलाकर आदिके तीन शरीरोंमें पांच वर्ण, पांच रस, दो गन्ध और आठ स्पर्श बतलाये हैं। तथा अन्तके दो शरीरोंमें पांच वर्ण पांच रस, दो गन्ध और चार स्पर्श बतलाये हैं। आहारकशरीरमें धवल वर्ण होता है ऐसी अवस्थामें यहां पांच वर्ण कंसे बतलाये हैं इसका समाधान करते हुए वीरसेन स्वामी लिखते हैं कि आहारकशरीरके विस्रसोपचयकी अपेक्षा उसका धवल वर्ण कहा जाता है, वंसे उसमें पाँचो वर्ण होते हैं। इसी प्रकार इस शरीरमें अशुभ रस, अशुभ गन्ध और अशुभ स्पर्श अव्यक्त भावसे रहते हैं, या अशुभ रस, अशुभ गन्ध, और अशुभ स्पर्श—वाली वर्गणायें आहारकशरीररूपसे परिणमन करते समय शुभ रूप ही जाती हैं, इसलिए इसमें पांच वर्णोंके समान पांच रस, दो गन्ध और आठस्पर्श भी बतलाये हैं। तथा तैजस और कर्मण स्कन्धमें प्रतिपक्षरूप स्पर्श नहीं होते, इसलिए चार स्पर्श बतलाये हैं। अल्पबहुत्व दो प्रकारका है— प्रदेश अल्पबहुत्व और अवगाहना अल्पबहुत्व। प्रदेशअल्पबहुत्वमें बतलाया है कि औदारिकशरीर द्रव्यवर्गणाके प्रदेश सबसे स्तोक है। उनसे वैक्रियिकशरीर द्रव्यवर्गणाके प्रदेश असंख्यातगुण हैं। उनसे आहारकशरीर द्रव्यवर्गणाके प्रदेश असंख्यातगुण है। उनसे आहारकशरीर द्रव्यवर्गणाके प्रदेश असंख्यातगुण हैं। उनसे तैजसशरीर द्रव्यवर्गणाके प्रदेश अनन्तगुण हैं। उनसे भाषा, मन और कर्मणशरीर द्रव्यवर्गणाके प्रदेश उत्तरोत्तर अनन्तगुण हैं अवगाहना अल्पबहुत्वमें बतलाया है कि कर्मणशरीर द्रव्यवर्गणाकी अवगाहना सबसे स्तोक है। उससे मनोद्रव्यवर्गणाकी अवगाहना असंख्यातगुणी है। उससे भाषाद्रव्यवर्गणाकी अवगाहना असंख्यातगुणी है। उससे आहारकशरीर द्रव्यवर्गणाकी अवगाहना असंख्यातगुणी है। उससे वैक्रियिकशरीर द्रव्यवर्गणाकी अवगाहना असंख्यातगुणी है और उससे औदारिक शरीर द्रव्यवर्गणाकी अवगाहना असंख्यातगुणी है।

बन्धविधान

बन्धके चार भेद हैं—प्रकृतिबन्ध, स्थितिबन्ध, अनुभागबन्ध और प्रदेशबन्ध। इन चारोंका विस्तारसे निरूपण भगवान् भूतबलि भट्टारकने महास्कन्धमें किया है। उसका यहां पर प्ररूपण करनेपर बन्धविधान समाप्त होता है।

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
मंगलाचरण	१	विचार	१८
बन्धनके चार भेद व उनके नाम	१	अजीवभावबन्धके तीन भेद व उनका	
बन्ध, बन्धक, बन्धनीय और बन्धविधान		स्वरूप निर्देश	२२
शब्दोंकी निरुक्ति	१	विपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्धका विचार	२३
बन्ध आदि शब्दोंका लक्षण	२	अविपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्धका	
बन्ध अनुयोगद्वारा		विचार	२४
बन्धके चार भेद	२	तदुभयप्रत्ययिक अजीवभावबन्धका विचार	२६
नामबन्ध आदिमेंसे किसको कौन नय		द्रव्यबन्धके दो भेद	२७
स्वीकार करता है इसका विचार	२	आगमद्रव्यबन्धका विशेष विचार	२७
नामबन्धका विचार	४	नोआगम द्रव्यबन्धके दो भेद	२८
स्थापनाबन्धका विचार	४	वित्तसाबन्धके दो भेद	२८
काष्ठकर्म आदिकी व्याख्या	५	अनादिवित्तसाबन्धके तीन भेद व उनका	
भावबन्धके दो भेद	७	विशेष ऊहापोह	२९
आगम भावबन्धका विचार	७	सादिवित्तसाबन्धका विशेष विचार	३०
आगमके नौ भेद और उनके लक्षण	७	भेदके कारणका निर्देश	३०
उपयोगके आठ भेद और उनके लक्षण	९	कौन पुद्गल नहीं बँधते और कौन पुद्गल	
नोआगम भावबन्धके दो भेद	९	बँधते हैं इस बातका विचार	३१
जीवभावबन्धके तीन भेद व उनके लक्षण	९	कितनी मात्रा हीन व अधिक होने पर	
विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्धका विचार	१०	बन्ध होता है इस बातका विशेष विचार	३२
अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्धके दो भेद	१२	विषम और सम शब्दके अर्थ	३३
जीवत्व आदि तीनका अविपाक प्रत्ययिक		जघन्य गुणवाले पुद्गल नहीं बँधते इस	
जीवभावके भेदोंमें न ग्रहण करनेके		बातका निर्देश	३३
कारणका ऊहापोह	१३	सादिवित्तसाबन्धका उदाहरण सहित	
तत्त्वार्थसूत्रमें जीवत्व आदिकी पारिणामिक		निर्देश	३४
किस अभिप्रायसे कहा है इस बातका		प्रयोगबन्धके दो भेद व प्रयोगबन्धका	
भी निर्देश	१३	लक्षण	३६
असिद्धत्व भावके दो भेद ही भव्यत्व और		नोकर्म बन्धके पाँच भेद व उनका स्वरूप	
अभव्यत्व	१३	निर्देश	३७
औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभाव-		आलापनबन्धका उदाहरणसहित निर्देश	३८
बन्धका विचार	१४	अल्लीवणबन्धका उदाहरणसहित निर्देश	३९
क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्धका-		संश्लेषबन्धका उदाहरण सहित निर्देश	४१
विचार	१५	शरीरबन्धके पाँच भेद	४१
तदुभयअविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्धका			

विषय	पृष्ठ
शरीरोंके परस्पर बन्धसे उत्पन्न होनेवाले	
पन्द्रह अवान्तर भेदोंका निर्देश	४२
शरीरबन्ध के दो भेद	४४
सादि शरीरबन्धका विशेष विचार	४५
अनादि शरीरबन्धका सोदाहरण विचार	४६
कर्मबन्धके विषयमें सूचना	४६

बन्धक अनुयोगद्वारा

गति आदि चौदह मार्गणावाले जीव	
बन्धक हैं इस बातका निर्देश	४७
गति मार्गणाके आश्रयसे बन्धकोंका निर्देश	
करके खुदाबन्धके ग्यारह अनुयोगद्वारोंके	
समान जाननेकी सूचना	४७

बन्धनीय अनुयोगद्वारा

बन्धनीय कौन हैं इस बातका निर्देश	४८
वर्गणाप्ररूपणाके आश्रयसे आठ अनुयोगद्वारोंकी	
सूचना व उनका सयुक्तिक विचार	४९
वर्गणाके सोलह अनुयोगद्वारोंका नामनिर्देश	५०
वर्गणाके दो भेद व उनकी भीमांसा	५१
वर्गणानिक्षेपके छह भेद व निक्षेपकथनका	
प्रयोजन	५१
कौन नय किस निक्षेपको स्वीकार करता है	
इस बातका विचार	५२
वर्गणाद्रव्यसमुदाहारके चौदह अनुयोगद्वारोंका	
नामनिर्देश	५३
वर्गणाके सोलह अनुयोगद्वारोंमेंसे आदिके दो	
का ही कथन क्यों किया है इस	
बातका विचार	५३
वर्गणाद्रव्यसमुदाहारका विशेष रूपसे कथन	
क्यों किया है इस बातका विचार	५४
एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाका	
विचार	५४
द्विप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाका	
विचार	५५
त्रिप्रदेशी आदि परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाओंका	
विचार	५७
आहारद्रव्यवर्गणाका विचार	५९

विषय	पृष्ठ
अग्रहणद्रव्यवर्गणाका विचार	५९
तैजसद्रव्यवर्गणाका विचार	६०
अग्रहणद्रव्यवर्गणाका विचार	६०
भाषाद्रव्यवर्गणाका विचार	६१
अग्रहणद्रव्यवर्गणाका विचार	६२
मनोद्रव्यवर्गणाका विचार	६२
अग्रहणद्रव्यवर्गणाका विचार	६३
कार्मणद्रव्यवर्गणाका विचार	६३
ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाका विचार	६३
ध्रुवस्कन्ध शब्द देनेका प्रयोजन	६४
सान्तरनिरन्तरद्रव्यवर्गणाका विचार	६४
ध्रुवशून्यवर्गणाका विचार	६५
प्रत्येकशरीरवर्गणाका विचार	६५
प्रत्येकशरीरवर्गणाका स्वरूपनिर्देश	६५
प्रत्येकशरीरवर्गणाके जघन्यसे लेकर उत्कृष्ट	
तकके अवान्तर भेदोंका विशेष विचार	६५
ध्रुवशून्यवर्गणाका विचार	८३
बादरनिगोदवर्गणाका विचार	८४
बादरनिगोदवर्गणाके जघन्यसे लेकर	
उत्कृष्ट तकके अवान्तर भेदोंका निर्देश	८४
क्षीणकषाय गुणस्थानमें बादरनिगोद जीवों	
का मरण होकर आगे उनका अभाव	
क्यों हो जाता है इसका विचार	८९
हिंसा और अहिंसाके स्वरूप पर प्रकाश	८९
ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणाका विचार	११२
सूक्ष्मनिगोदवर्गणाका विचार	११३
सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके आधारका निर्देश	११३
सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके जघन्यसे लेकर उत्कृष्ट	
तकके अवान्तर भेदोंका विशेष विचार	११४
ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणाका विचार	११६
महास्कन्धद्रव्यवर्गणाका विचार	११७
सब वर्गणाओंके लानेके लिए गुणकार	
क्या क्या है इस बातका निर्देश	११७
नानाश्रेणिवर्गणाओंकी प्ररूपणा	११८
एकप्रदेशी आदि सब वर्गणायें कैसे उत्पन्न	
होती हैं इस विषयका विशेष ऊहापोह	१२०
नानाश्रेणि शब्दका अर्थ	१३४

विषय	पृष्ठ
चौदह अनुयोगद्वारोंमें से दो का ही कथन	
क्यों किया इसका सयुक्तिक उत्तर	१३४
एकश्रेणि ध्रुवाध्रुवानुगम अनुयोगद्वारके आश्रयसे विचार	१३५
इसी प्रकार नानाश्रेणि ध्रुवाध्रुवानुगमके जाननेकी सूचना	१४०
एकश्रेणि सान्तरनिरन्तरानुगमके आश्रयसे सब वर्गणाओंका विचार	१४०
इसी प्रकार नानाश्रेणि सान्तरनिरन्तरानुगमके जाननेकी सूचना	१४७
एकश्रेणिओजयुग्मानुगमके आश्रयसे सब वर्गणाओंका विचार	१४७
नानाश्रेणिओजयुग्मानुगमके आश्रयसे सब वर्गणाओंका विचार	१४८
एकश्रेणिक्षेत्रानुगम	१४९
नानाश्रेणिक्षेत्रानुगम	१४९
एकश्रेणिस्पर्शवानुगम	१४९
इसी प्रकार नानाश्रेणि स्पर्शवानुगमके जाननेकी सूचनाके साथ विशेष निर्देश	१५०
एकश्रेणिकालानुगम	१५०
इसी प्रकार नानाश्रेणि कालानुगम जाननेकी सूचनाके साथ विशेष निर्देश	१५०
एकश्रेणिअन्तरानुगम	१५१
इसी प्रकार नानाश्रेणिअन्तरानुगम जाननेकी सूचनाके साथ विशेष निर्देश	१५२
एकश्रेणिवर्गणाभावानुगम	१५२
इसी प्रकार नानाश्रेणिवर्गणा भावानुगमके जाननेकी सूचना	१५३
एकश्रेणि नानाश्रेणिवर्गणाउपनयनानुगमके आश्रयसे मतान्तरका निर्देश व उसका परिहार	१५३
एकश्रेणिवर्गणापरिमाणानुगम	१५४
नानाश्रेणिवर्गणापरिमाणानुगम	१५५
एकश्रेणिवर्गणाभागाभागानुगम	१६०
नानाश्रेणिवर्गणाभागाभागानुगम	१६२
एकश्रेणिवर्गणाअल्पबहुत्वानुगम	१६३

विषय	पृष्ठ
नानाश्रेणिवर्गणाअल्पबहुत्वानुगम	१६९
अनन्तरोपनिधाके दो भेद	१७९
द्रव्यार्थतारूप अनन्तरोपनिधाका विचार	१७९
परम्परोपनिधाके दो भेद	१८२
द्रव्यार्थतारूप परम्परोपनिधाका विचार	१८२
इसी प्रसंगसे प्ररूपणा आदि तीन अनुयोग— द्वारोंके आश्रयसे विचार	१८२
प्रदेशार्थतारूप अनन्तरोपनिधाका विचार	१८३
अनन्तरोपनिधामें द्रव्यार्थताकी संदृष्टि	१८४
अनन्तरोपनिधामें प्रदेशार्थताकी संदृष्टि	१८४
प्रदेशोंका आश्रय लेकर यवमध्यसे पूर्व परम्परोपनिधाका विचार	१८८
इसी प्रसंगसे प्ररूपणा आदि तीन अनुयोग— द्वारोंके आश्रयसे विचार	१८९
अवहारके दो भेद	१९०
द्रव्यार्थताकी अपेक्षा अवहारका विचार	१९०
प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अवहारका विचार	१९२
यवमध्यप्ररूपणाके दो भेद	२०१
द्रव्यार्थताकी अपेक्षा विचार	२०१
श्रेणिप्ररूपणाके दो भेद	२०२
अनन्तरोपनिधाके आश्रयसे विचार	२०२
परम्परोपनिधाके आश्रयसे विचार	२०४
इसी प्रसंगसे प्ररूपणा आदि तीन अनुयोग— द्वारोंके आश्रयसे विचार	२०४
उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाका भागहार	२०६
भागाभाग	२०६
अल्पबहुत्व	२०६
प्रदेशार्थताकी अपेक्षा यवमध्यविचार	२०७
पदमीमांसा	२०७
अल्पबहुत्वके तीन भेद	२०८
नानाश्रेणिद्रव्यार्थता अल्पबहुत्वका निर्देश	२०८
नानाश्रेणिप्रदेशार्थता अल्पबहुत्वका निर्देश	२१२
एकश्रेणि-नानाश्रेणि प्रदेशार्थता अल्प- बहुत्वका निर्देश	२१५
बाह्यवर्गणा विचार	
बाह्यवर्गणाकी अन्य प्ररूपणाका प्रारम्भ	२२३
बाह्यवर्गणाके विषयमें विशेष ऊहापोह	२२३

विषय	पृष्ठ
उसके विषयमें चार अनुयोगद्वारोंका नाम निर्देश व स्वरूप कथन	२२४
शरीरिशरीरप्ररूपणा	
जीवोंके दो भेद व उनका स्वरूप निर्देश	२२५
कौन जीव साधारणशरीर हैं और कौन जीव प्रत्येकशरीर हैं इस बातका निर्देश	२२५
साधारण जीवोंका लक्षण निर्देश	२२६
साधारण जीवोंके अनुग्रहणका विचार	२२८
साधारण जीवोंके एकसाथ क्या क्या कार्य होते हैं इस बातका निर्देश	२२९
साधारण जीवोंकी उत्पत्ति और मरणके विषयमें नियम	२३०
दोनों प्रकारके निगोद जीव परस्पर कैसे रहते हैं इस बातका विशेष स्पष्टीकरण	२३१
बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोद जीवोंकी योनिका विचार	२३२
अनन्त जीवोंने निगोदवास नहीं छोड़ा इस बातका संयुक्तिक निर्देश	२३३
एक शरीरमें रहनेवाले निगोद जीवोंका प्रमाण	२३४
संसारि जीवोंका अभाव क्यों नहीं होता इस बातका सहेतुक विचार	२३५
निगोदके दो भेदोंका निर्देश	२३६
शरीरिशरीरप्ररूपणाका सदादि आठ अनु-योगद्वारोंके आश्रयसे कथन करनेकी सूचना	२३७
ओष और आदेशसे सत्प्ररूपणा	२३७
ओष और आदेशसे द्रव्यप्रमाणप्ररूपणा	२४९
ओष और आदेशसे क्षेत्रप्ररूपणा	२५३
ओष और आदेशसे स्पर्शन प्ररूपणा	२५६
ओष और आदेशसे कालप्ररूपणा	२५७
ओष और आदेशसे अन्तरप्ररूपणा	२८४
ओष और आदेशसे भावप्ररूपणा	३०१
ओष और आदेशसे अल्पबहुत्वप्ररूपणा	३०१

विषय	पृष्ठ
शरीरप्ररूपणा	
शरीरप्ररूपणाके छह अनुयोगद्वारोंका नाम-निर्देश और उनकी सार्थकताका विचार	३२१
औदारिक शब्दकी नामनिरुक्ति व ऊहापोह	३२२
वैक्रियिक शब्दकी नामनिरुक्ति व ऊहापोह	३२५
आठ ऋद्धियोंके नाम	३२५
आहारक शब्दकी नामनिरुक्ति व ऊहापोह	३२७
तैजस शब्दकी नामनिरुक्ति व ऊहापोह	३२७
तैजसशरीरके दो भेदोंका विचार	३२८
निसरणरूप तैजसशरीरके दो भेदोंका विचार	३२८
कामंश शब्दकी नामनिरुक्ति व ऊहापोह	३२८
पाँच शरीरोंके प्रदेशोंके प्रमाणका निर्देश	३३०
निषेकप्ररूपणामें छह अनुयोगद्वारोंके नाम	३३१
समुत्कीर्तना	३३१
प्रदेशप्रमाणानुगम	३३६
अनन्तरोपनिधा	३३९
परम्परोपनिधा	३४६
प्रदेशविरच व उसके स्वरूपनिर्देशके साथ सोलह पदवाला दण्डकविधान	३५२
जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिका स्वरूपनिर्देश	३५२
निर्वृत्ति स्थानोंका विचार	३५३
जीवनीयस्थान	३५४
इस विषयमें अल्पबहुत्व	३६१
खुदाभावके दो भेद व उनका स्वरूपनिर्देश	३६२
एक मूर्तमें मनुष्यके कितने श्वासोच्छ्वास होते हैं इस बातका निर्देश	३६२
एक अन्तमूर्तमें कितने क्षुल्लकभवग्रहण होते हैं इस बातका नाम निर्देश	३६२
प्रदेशविरचके छह अनुयोगद्वारोंका नामनिर्देश	३६६
औदारिकशरीरकी अपेक्षा अग्रस्थिति आदि चारका विचार	३६७
अग्रस्थितिका स्वरूप निर्देश	३६७
अग्रस्थितिविशेषका स्वरूप निर्देश	३६७
आहारकके सिवा शेष तीन शरीरोंकी औदारिकके समान जाननेकी सूचना	३६८

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
आहारकशरीरकी अपेक्षा अग्रस्थिति आदि		उत्कृष्ट गुणकार	३९४
चारका विचार	३६९	अधन्योत्कृष्ट गुणकार	३९५
भागभागानुगमके तीन अनुयोगद्वारा	३६०	पदमीमांसाके दो अनुयोगद्वारा	३९७
जघन्यपदकी अपेक्षा औदारिकशरीरका		उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा औदारिक शरीरकी	
विचार	३७०	पदमीमांसा	३९७
उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा औदारिकशरीरका		तीन अनुयोगद्वारोंके आश्रयसे प्रकृत	
विचार	३७२	विषयका उपसंहार करनेकी सूचना	४०५
शेष चार शरीरोंकी अपेक्षा इसी प्रकार		संचयानुगम और उसके तीन अनुयोगद्वारा	४०५
जाननेकी सूचना	३७२	भागहारप्रमाणानुगम व दो मतोंका निर्देश	४०५
अजघन्य-अनुत्कृष्ट पदकी औदारिक		प्रथम उपदेशके अनुसार समयप्रबद्ध	
शरीरका विचार	३७२	प्रमाणानुगम	४०८
शेष चार शरीरोंकी अपेक्षा इसी प्रकार		द्वितीय उपदेशके अनुसार समयप्रबद्ध-	
जाननेकी सूचना	३७३	प्रमाणानुगम	४०८
अल्पबहुत्वके तीन अनुयोगद्वारा	३७३	अनुत्कृष्ट पदकी अपेक्षा औदारिक	
जघन्य पदकी अपेक्षा औदारिकशरीरका		शरीरकी पदमीमांसा	४१०
विचार	३७३	उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा वैक्रियिकशरीरकी	
आहारकके सिवा शेष तीन शरीरोंकी अपेक्षा		पदमीमांसा	४११
इसी प्रकार जाननेकी सूचना	३७७	अनुत्कृष्ट पदकी अपेक्षा वैक्रियिकशरीरकी	
जघन्य पदकी अपेक्षा आहारकशरीरका		पदमीमांसा	४१३
विचार	३७८	उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा आहारकशरीरकी	
उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा औदारिकशरीरका		पदमीमांसा	४१४
विचार	३७०	अनुत्कृष्ट पदकी अपेक्षा आहारकशरीरकी	
आहारकके सिवा शेष तीन शरीरोंकी		पदमीमांसा	४१६
अपेक्षा इसी प्रकार जाननेकी सूचना	३८०	उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा तैजसशरीरकी	
उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा आहारकशरीरका विचार		पदमीमांसा	४१६
जघन्योत्कृष्ट पदकी अपेक्षा औदारिकशरीर		अनुत्कृष्ट पदकी अपेक्षा तैजसशरीरकी	
का विचार	३८२	पदमीमांसा	४२२
आहारकके सिवा शेष तीन शरीरोंकी अपेक्षा		उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा कामणशरीरकी	
इसी प्रकार जाननेकी सूचना	३८४	पदमीमांसा	४२२
जघन्योत्कृष्ट पदकी अपेक्षा आहारकशरीर		जघन्य पदकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी	
का विचार	३८५	पदमीमांसा	४२३
निषेक अल्पबहुत्वके तीन अनुयोगद्वारा	३८७	अजघन्य पदकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी	
जघन्यपद अल्पबहुत्व	३८८	पदमीमांसा	४२४
उत्कृष्टपद अल्पबहुत्व	३८९	जघन्य पदकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी	
जघन्योत्कृष्ट पद अल्पबहुत्व	३९०	पदमीमांसा	४२४
गुणकारके तीन अनुयोगद्वारा	३९२	अजघन्य पदकी अपेक्षा वैक्रियिकशरीरकी	
जघन्य गुणकार	३९२	पदमीमांसा	४२५

विषय	पृष्ठ
जघन्यपदकी अपेक्षा आहारकशरीरकी पदमीमांसा	४२५
अजघन्य पदकी अपेक्षा आहारकशरीरकी पदमीमांसा	४२६
जघन्य पदकी अपेक्षा तैजसशरीरकी पदमीमांसा	४२६
अजघन्य पदकी अपेक्षा तैजसशरीरकी पदमीमांसा	४२८
जघन्य पदकी अपेक्षा कामंणशरीरकी पदमीमांसा	४२८
अजघन्य पदकी अपेक्षा कामंणशरीरकी पदमीमांसा	४२९
अल्पबहुत्व	४२९

शरीरवित्तसोपचयप्ररूपणा

शरीरवित्तसोपचय प्ररूपणाके लह अनु-योगद्वार	४३०
वित्तसोपचयका स्वरूपनिर्देश	४३०
औदारिकशरीरकी अपेक्षा एक प्रदेशमें	
अविभागप्रतिच्छेदोंका प्रमाण निर्देश	४३१
अविभागप्रतिच्छेदोंका स्वरूप निर्देश	४३१
कितने अविभागप्रतिच्छेदोंकी एक वर्गणा होती है इस बातका निर्देश	४३२
कुल वर्गणाओंका प्रमाण निर्देश	४३२
कितनी वर्गणाओंका एक स्पर्धक होता है इस बातका विचार	४३३
कुल स्पर्धकोंका प्रमाण निर्देश	४३३
एक एक स्पर्धकका कितना अन्तर होता है इस बातका निर्देश	४३४
अविभागप्रतिच्छेद कैसे निष्पन्न किये जाते हैं इस बातका विचार	४३४
छेदनाके दस भेद व उनका स्वरूप निर्देश	४३५
पाँच शरीरोंके अविभागप्रतिच्छेदोंका अल्पबहुत्व	४३७
एक एक शरीरपरमाणु पर कितने वित्त-सोपचय होते हैं इस बातका निर्देश	४३८
वित्तसोपचयोंका स्थान विचार	४३९

विषय	पृष्ठ
जीवसे अलग होनेपर उनकी चार प्रकारकी हानिका निर्देश	४४०
द्रव्यहानिकी अपेक्षा औदारिक शरीरकी एकप्रदेशी वर्गणाका विचार	४४१
द्विप्रदेशी आदि वर्गणाओंका विचार	४४२
शेष चार शरीरोंकी अपेक्षा इसी प्रकार जाननेकी सूचना	४४४
क्षेत्रहानिकी अपेक्षा औदारिक शरीरकी एक प्रदेशी वर्गणाका विचार	४४४
द्विप्रदेशी आदि वर्गणाओंका विचार	४४५
शेष चार शरीरोंकी अपेक्षा इसी प्रकार जाननेकी सूचना	४४७
कालहानिकी अपेक्षा औदारिकशरीरके एकप्रदेशी वर्गणाद्रव्यका विचार	४४७
द्विप्रदेशी आदि वर्गणाद्रव्यका विचार	४४८
शेष चार शरीरोंकी अपेक्षा इसी प्रकार जाननेकी सूचना	४४९
भावहानिकी अपेक्षा औदारिकशरीरके एक गुणयुक्त वर्गणा द्रव्यका विचार	४५०
द्विगुणयुक्त आदि वर्गणा द्रव्यका विचार	४५०
द्विगुण शब्दका अर्थ	४५१
चार शरीरोंकी अपेक्षा इसी प्रकार जाननेकी सूचना	४५३
पाँच शरीरोंके आश्रयसे वित्तसोपचय अल्पबहुत्वका कथन	४५३
जीवप्रतिबद्ध वित्तसोपचयका अल्पबहुत्व	४५९
प्रकृत प्ररूपणाको स्पष्ट करनेके लिए तीन अनुयोगद्वारोंका नाम निर्देश	४६२
जीवप्रमाणानुगम	४६३
प्रदेशप्रमाणानुगम	४६३
अल्पबहुत्वके दो भेदोंका नाम निर्देश	४६५
जीव अल्पबहुत्व	४६५
प्रदेश अल्पबहुत्व	४६६

चूलिका

अगला ग्रन्थ चूलिका है इस बातकी प्रतिज्ञा	४६९

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
' जत्थेय मरदि जीवो ' इस गाथाके उत्तरार्धके कथनकी प्रतीक्षा	४६९	स्कन्ध आदिके आश्रयसे सब सूक्ष्मनिगोद मिश्ररूप होते हैं इस बातका निर्देश	४८४
प्रथम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंका प्रमाण	४६९	बादर निगोदोंका मरणक्रमसे निर्गमन होता है इस बातका निर्देश	४८५
द्वितीयादि समयोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंका प्रमाण	४७०	अयवमध्यक्रमसे निर्गमनका विचार	४८७
इस प्रकार कितने कालतक जीव निरन्तर रूपसे उत्पन्न होते हैं इस बातका निर्देश	४७१	क्षीणकषायके कालमें जघन्य आयुमात्र काल शेष रहनेपर बादर निगोद जीव नहीं उत्पन्न होते इस अर्थका ज्ञान करानेके लिए आयुओंके अल्पबहुत्वका कथन	४९१
पुनः अन्तर देकर निरन्तर क्रमसे कितने कालतक जीव उत्पन्न होते हैं इस बातका निर्देश	४७१	गुणश्रेणिमरणके अन्तिम समयमें जघन्य-बादर निगोद वर्गणा होती है इस बातका निर्देश	४९२
अल्पबहुत्वके दो भेदोंका निर्देश	४७४	जघन्य सूक्ष्म निगोद वर्गणाका प्रमाण कथन	४९२
बद्धाअल्पबहुत्व	४७४	उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोदवर्गणाका प्रमाण कथन	४९३
सान्तर समयमें उपक्रमण कालका स्वरूप निर्देश	४७४	उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणाका प्रमाणकथन	४९३
निरन्तर समयमें उपक्रमण कालका स्वरूप निर्देश	४७४	निगोदवर्गणाओंके कारणका निर्देश	४९४
सान्तर समयमें उपक्रमणकाल विशेषका स्वरूप निर्देश	४७५	महास्कन्धके स्थानोंका निर्देश व उनका स्वरूप कथन	४९४
उपक्रमणकालविशेषका स्वरूप निर्देश	४७५	महास्कन्ध वर्गणाका जघन्य व उत्कृष्टभाव किस अवस्थामें होता है इस बातका निर्देश	४९५
सान्तर उपक्रमण जघन्य कालका स्वरूप निर्देश	४७६	मरणयवमध्य और शमिलायवमध्य आदिका कथन करनेके लिए संदृष्टि	४९६
उत्कृष्ट सान्तर उपक्रमणकालका स्वरूप निर्देश	४७६	सब जीवोंमें महादण्डकका निर्देश	५०१
सान्तर उपक्रमणकालका स्वरूप निर्देश	४७७	क्षुल्लकभवके तीन भाग प्रथम त्रिभागका विचार	५०१
सान्तर उपक्रमणकालविशेषका स्वरूप निर्देश	४७७	आधारके तीन प्रकार प्रकारान्तरसे प्रथम त्रिभागका विचार	५०२
निरन्तर उपक्रमणकाल विशेषका स्वरूप निर्देश	४७८	मध्यम त्रिभागका विचार	५०२
अपक्रमणकालका स्वरूप निर्देश	४७९	यवमध्यविचार	५०२
प्रबन्धनकालका स्वरूप निर्देश	४८०	शमिला शब्दका अर्थ	५०३
जीवअल्पबहुत्व विचार	४८१	शमिलामध्यका तात्पर्य	५०३
स्कन्ध आदिके आश्रयसे सब बादर निगोद पर्याप्त होते हैं या मिश्ररूप होते हैं इस बातका निर्देश	४८३	सब यवमध्योंकी यवमध्य और शमिलामध्य ये दो संज्ञायें हैं इस बातका निर्देश	५०३
		आसंक्षेपाद्धाका अर्थ	५०३

विषय	पृष्ठ
आसंशेषाद्धा कहाँसे कहाँ तक होता है	
इस बातका निर्देश	५०३
क्षुल्लकभवग्रहणका स्वरूप निर्देश	५०४
वह कहाँ होता है इस बातका विचार	५०४
जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति कहाँ होती है इस	
बातका निर्देश	५०४
उत्कृष्ट अपर्याप्त निर्वृत्तिके कालका निर्देश	५०४
सूक्ष्मनिगोद जीवोंकी जघन्य अपर्याप्त	
निर्वृत्तिके कालप्रमाणका निर्देश	५०५
इन्हीं जीवोंकी उत्कृष्ट अपर्याप्त निर्वृत्तिके	
कालका निर्देश	५०६
सूक्ष्मनिगोद जीवोंकी उत्कृष्ट अपर्याप्त	
निर्वृत्तिमें होनेवाले आवश्यक	५०६
निल्लपन शब्दका अर्थ	५०७
बादरनिगोद अपर्याप्त जीवोंके निल्लपनस्थान	
कितने होते हैं इस बातका निर्देश	५०८
सूक्ष्मनिगोद अपर्याप्त जीवोंका आयु यवमध्य	
कहाँसे कितना काल जानेपर होता है इस	
बातका विचार	५१०
सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंका आयुयवमध्य	
कहाँसे कितना काल जानेपर होता है इस	
बातका विचार	५११
सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंका मरण	
यवमध्य कहाँसे कितना काल जानेपर होता	
है इस बातका विचार	५११
बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंका मरण	
यवमध्य कहाँसे कितना काल जानेपर होता	
है इस बातका विचार	५१२
सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंके निर्वृत्तिस्थान	
कहाँसे कितना काल जानेपर कितने होते	
हैं इस बातका निर्देश	५१३
बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंके निर्वृत्ति-	
स्थान कहाँसे कितना काल जानेपर कितने	
होते हैं इस बातका निर्देश	५१४
सब जीवोंकी निर्वृत्तिका अन्तर कहाँसे	

विषय	पृष्ठ
कितना काल जानेपर होता है इस	
बातका निर्देश	५१५
प्रकृतमें आवश्यकोंके निर्देशकी प्रतिज्ञा	५१६
तीन शरीरोंके निर्वृत्तिस्थान कहाँसे कितना	
काल जानेपर कितने होते हैं इस बातका	
निर्देश	५१६
वे तीन शरीरोंके निर्वृत्तिस्थान उत्तरोत्तर	
विशेष अधिक होते हैं इस बातका निर्देश	५१७
इन तीन शरीरोंके निर्वृत्तिस्थानोंका	
अल्पबहुत्व	५१८
तीन शरीरोंके इन्द्रिय निर्वृत्तिस्थान कहाँसे	
कितना काल जाने पर कितने होते हैं	
इस बातका निर्देश	५१९
तीन शरीरोंके ये निर्वृत्तिस्थान उत्तरोत्तर	
विशेष अधिक होते हैं इस बातका निर्देश	५२०
इन तीन शरीरोंके निर्वृत्तिस्थानोंका	
अल्पबहुत्व	५२१
तीन शरीरोंके आनापान, भाषा और मन-	
संबन्धी निर्वृत्तिस्थान कहाँसे कितना काल जाने	
पर कितने होते हैं इस बातका निर्देश	५२१
तीन शरीरोंके ये निर्वृत्तिस्थान उत्तरोत्तर	
विशेष अधिक होते हैं इस बातका निर्देश	५२२
इन तीन शरीरोंके इन निर्वृत्तिस्थानोंका	
अल्पबहुत्व	५२५
तीन शरीरोंके निल्लपनस्थान कितना काल जाने	
पर कितने होते हैं इस बातका निर्देश	५२६
निल्लपनस्थानका स्वरूप निर्देश	५२६
शरीरपर्याप्तिका स्वरूप निर्देश	५२७
इन्द्रियपर्याप्तिका स्वरूप निर्देश	५२७
निल्लपनस्थानका स्वरूप निर्देश	५२७
तीन शरीरोंके ये निल्लपनस्थान उत्तरोत्तर	
विशेष अधिक होते हैं इस बातका निर्देश	५२८
तीन शरीरोंके इन निल्लपनस्थानोंका	
अल्पबहुत्व	५२९
प्रकृतमें आवश्यकोंका निर्देश	५२९

विषय	पृष्ठ
सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंके कहांसे कितना जाकर कितने निर्वृत्तिस्थान होते हैं इस बातका निर्देश	५३०
बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंके कहांसे कितना जाकर कितने निर्वृत्तिस्थान होते हैं इस बातका निर्देश	५३१
सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंका कहांसे कितना काल जाने पर आयुधवमध्य होता है इस बातका निर्देश	५३२
बादर निगोद पर्याप्त जीवोंका कहांसे कितना काल जाने पर आयुधवमध्य होता है इस बातका निर्देश	५३३
सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंका कहांसे कितना काल जाने पर मरणयवमध्य होता है इस बातका निर्देश	५३३
बादर निगोद पर्याप्त जीवोंका कहांसे कितना काल जाने पर मरणयवमध्य होता है इस बातका निर्देश	५३४
सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंके कहांसे कितना काल जानेपर कितने निर्लेपनस्थान होते हैं इस बातका निर्देश	५३५
बादर निगोद पर्याप्त जीवोंके कहांसे कितना काल जाने पर कितने निर्लेपनस्थान होते हैं इस बातका निर्देश	५३५
वहीं पर प्रत्येक शरीर पर्याप्तकोंके कितने निर्लेपनस्थान होते हैं इस बातका निर्देश	५३६
इस विषयमें अल्पबहुत्व	५३६
वहाँ एकेन्द्रिय और पञ्चेन्द्रियसंबंधी आवश्यकोंका निर्देश	५३७
बन्धनीय वर्गणाओंके प्रसंगसे चार अनु-योगद्वारोंका नामनिर्देश	५४१
वर्गणाप्ररूपणा	५४२
वर्गणानिरूपणाके प्रसंगसे कौन वर्गणा ग्रहणप्रायोग्य है और कौन वर्गणा ग्रहण-प्रायोग्य नहीं है इस बातका निर्देश	५४३
ग्रहणप्रायोग्यका अर्थ	५४३

विषय	पृष्ठ
अग्रहणप्रायोग्यका अर्थ	५४३
आहारद्रव्यवर्गणाका कार्य निर्देश	५४६
अग्रहणद्रव्यवर्गणाका स्वरूप निर्देश	५४८
तैजसशरीर द्रव्यवर्गणाका कार्य निर्देश	५४९
अग्रहणद्रव्यवर्गणाका स्वरूप निर्देश	५४९
भाषाद्रव्यवर्गणाका कार्य निर्देश	५५०
अग्रहणद्रव्यवर्गणाका स्वरूप निर्देश	५५१
मनोद्रव्यवर्गणाका कार्य निर्देश	५५१
अग्रहणद्रव्यवर्गणाका स्वरूप निर्देश	५५२
कामंजवर्गणाका कार्य निर्देश	५५३
अपने अपने अवान्तर कार्यको करनेवाली ये वर्गणायें अलग अलग हैं इस बातका निर्देश	५५३
औदारिकशरीर वर्गणाओंके प्रदेशार्थताका व वर्णादिकका विचार	५५४
वैक्रियिकशरीरवर्गणाओंके प्रदेशार्थताका व वर्णादिकका विचार	५५६
आहारकशरीरवर्गणाओंके प्रदेशार्थता व वर्णादिकका विचार	५५७
आहारकशरीर धवलवर्णवाला होता है फिर पाँच वर्णवाला क्यों कहा है इस प्रश्नका समाधान इसी प्रकार पाँच रस आदिवाला कहनेके कारणका निर्देश	५५७
तैजसशरीरवर्गणाकी प्रदेशार्थता व वर्णादिकका विचार	५५८
भाषा, मन और कामंजवर्गणाकी प्रदेशार्थता व वर्णादिकका विचार	५५९
प्रकृतमें दो प्रकारके अल्पबहुत्व कहनेकी प्रतिज्ञा	५५९
प्रदेशअल्पबहुत्व विचार	५६०
अवगाहना अल्पबहुत्व विचार	५६२

बन्धविधान

बन्धविधानके चार भेद	५६४
बन्धविधानका विशेष व्याख्यान महाबन्धमें किया है इस बातकी सूचना	५६४



सिरि-भगवंत-पुष्पवंत-भूदबलि-पणीदो

छक्खंडागमो

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइय-धवला-टीका-समण्णिदो

तस्स पंचमे खंडे वग्गणाए

बधणाणुयोगदारं

सिद्धे विउद्धसयले अज्झत्थबहिंत्थबंधणुम्मवके ।

भत्तीए अहं णमिउं पुणो पुणो बंधणं वोच्छं ॥ १ ॥

बंधणे त्ति चउव्विहा कमविभासां— बंधो बंधगा बंधणिज्जं
बंधविहाणे त्ति ॥ १ ॥

बंधो बंधणं, तेण बंधो सिद्धो । बध्नातीति बन्धनः । तदो बंधगाणं गहणं ।
बध्यत इति कर्मसाधने समाश्रीयमाणे बंधणिज्जस्स गहणं । बध्यते अनेनेति करणसाधने

सब पदार्थोंका साक्षात्कार करनेवाले और भीतर तथा बाहरके सब बन्धनोंसे मुक्त
हुए सिद्धोंको बार बार भक्तिपूर्वक नमस्कार करके मैं (ग्रन्थकर्ता) बन्धननामक अनुयोग—
द्वारका कथन करता हूँ ॥ १ ॥

‘ बन्धन ’ इस अनुयोगद्वारमें बन्धनकी क्रमसे चार प्रकारकी विभाषा है—
बन्ध, बन्धक, बन्धनीय और बन्धविधान ॥ १ ॥

बाँधना इसका नाम बंधन है, इससे बंधकी सिद्धि होती है । जो बाँधता है वह बंधन
है, इससे बंधकका ग्रहण होता है । ‘ जो बाँधा जाता है ’ इस प्रकार कर्मसाधनका आश्रय करने-
पर बंधन शब्दसे बधनीयका ग्रहण होता है । ‘ जिसके द्वारा बाँधा जाता है ’ इस प्रकार करण

❖ ताप्रती ‘ कम्मविभासा ’ इति पाठाः ।

शब्दनिष्पत्तौ सत्यां बन्धविधानोपलब्धिः । तेन बंधनस्त चउव्विहा चेव कमवि-
भासा होदि ।

दव्वस्स दव्वेण दव्व-भावणं वा जो संजोगो समवाओ वा सो बंधो णाम ।
बंधस्स दव्व-भावभेदभिण्णस्स जे कत्तारा ते बंधया णाम । बंधपाओगपोंगलदव्वं
बंधणिज्जं णाम । पयडि-ट्टिदि-अणुभाग पदेसभेदभिण्णा बंधवियप्पा बंधविहाणं णाम ।
एदेसु चउसु बंधणेषु ताव बंधपरुवणट्टमुत्तरसुत्तं भणदि ।

जो सो बंधो णाम सो चउव्विहो-णामबंधो ट्टुवणबंधो दव्व-
बंधो भावबंधो चेदि ॥ २ ॥

बंधनयविभासणदाए को णओ के बंधे इच्छदि ॥ ३ ॥

निबखेवं काऊण तदट्टुपरुवणं मोत्तूण बंधनयविभासणा किमट्ठं कीरदे? ण एस
दोसो, अणवगयणयसरुवस्स भावजोवस्स निबखेवट्टुपरुवणाए किज्जंतीए अवुत्ततुल्ल-
त्तप्पसंगादो अण्णाअणविणासणट्ठं परुवणा कीरदे,जदि सा तं ण कुणइ तोसा किफला
साधनमें बन्धन शब्दकी सिद्धि करनेपर उससे बन्धविधानका ग्रहण होता है । इसलिये बन्धनका
विशेष व्याख्यान क्रमसे चार प्रकारका ही होता है ।

विशेषार्थ- यहां व्युत्पत्तिपूर्वक ' बन्धन ' के चार भेद किये गये हैं- बन्ध, बन्धक
बन्धनीय और बन्धविधान । कोई किसीसे बंधता है इससे बन्धकी सिद्धि की गई है । जो
बांधता है वह बन्धक है, और जो बांधता है वह बन्धनीय है । इससे बन्धक और बन्धनीयकी
सिद्धि की गई है । जब कोई वस्तु बंधती है तो वह कितने प्रकारसे बंधती है, इसके द्वारा
बन्धविधानकी सिद्धि की गई है । इस प्रकार बन्धनके चार भेद ही हो सकते हैं, यह उक्त
कथनका तात्पर्य है ।

द्रव्यका द्रव्यके साथ तथा द्रव्य और भावका क्रमसे जो संयोग और समवाय होता है
वह बन्ध कहलाता है । द्रव्य और भावके भेदसे भिन्न दो प्रकारके बन्धके जो कर्ता हैं वे बन्धक
कहलाते हैं । बन्धके योग्य पुद्गल द्रव्य बन्धनीय कहा जाता है । प्रकृति, स्थिति, अनुभाग
और प्रदेशके भेदसे भेदको प्राप्त हुए बन्धके भेदोंको बन्धविधान कहते हैं । इन चार प्रकारके
बन्धनोंमेंसे सर्व प्रथम बन्धका कथन करनेके लिय आगेका सूत्र कहते हैं -

बन्धके चार भेद हैं- नामबन्ध, स्थापनाबन्ध, द्रव्यबन्ध और भावबन्ध ॥ २ ॥

बन्धका नयकी अपेक्षा विशेष विचार करनेपर कौन नय किन बन्धोंको
स्वीकार करता है ॥ ३ ॥

शंका- निक्षेपका निर्देश करनेके बाद उसका निरूपण करना था, किन्तु वैसा न करके
पहले बन्धनका नयकी अपेक्षा विशेष विचार किसलिये किया जाता है ?

समाधान- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, नयके स्वरूपको समझे बिना भव्योंको निक्षे-
पका कथन करनेपर वह अनुक्तके समान प्राप्त होता है, इसलिये अज्ञानका विनाश करनेके लिए
पहले बन्धनका नयकी अपेक्षा विशेष विचार किया गया है । यदि वह अज्ञानका विनाश न करे

✽ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ- का-तप्रतिष्ठा ' अणोणविणासणट्ठं ' इति पाठः ।

होज्ज । जदि एवं, तो बंधणयविभासणा चेव पुव्वं किण्ण परूविदा ? ण, णिक्खेवे अणुद्दिट्ठे संते तमाधारं काऊण भण्णमाणणयविभासणाणुववत्तीदो । तम्हा णिक्खेवे काऊण पच्छा बंधणयविभासणा कीरदे ।

णेगम-ववहार-संगहा सव्वे बंधे ॥ ४ ॥

णेगम-ववहार-संगहणया सव्वे बंधे इच्छन्ति; तेसि विसए चट्ठणमेदेसि संभवादो । सुद्धसंगहणए चट्ठणमेदेसि णिक्खेवाणं संभवो णत्थि त्ति ण वोत्तुं जुत्तं; असुद्धसंग-हमस्सिदूणेदेसि णिक्खेवाणमुवलंभादो । दव्वट्ठिएसु एदेसु णएसु कधं भावणिक्खेवो लब्भइ ? ण, वंजणपज्जायमस्सिदूण भावबंधोवलंभादो ।

उजुसुदो ट्ठवणबंधं णेच्छदि ॥ ५ ॥

कुदो ? तत्थ भावाणं सरिसत्ताभावादो । ण च संकप्पवसेण भावो भावंतरं पडिवज्जदि; एगत्थंभम्मि संकप्पवसेण तिहुवणप्पवेसप्पसंगादो । ण च एवं, तिहुव-णभावाणुवलंभादो ।

सट्ठणओ णामबंधे भावबंधं च इच्छदि ॥ ६ ॥

तो उसका और क्या फल हो सकता है ?

शंका-यदि ऐसा है तो पहले बन्धका नयकी अपेक्षा ही विशेष विचार क्यों नहीं किया?

समाधान-नहीं, क्योंकि, निक्षेपका कथन किये बिना उसे आधार बनाकर नयकी अपेक्षा विशेष व्याख्यान करना नहीं बन सकता, इसलिये निक्षेपका निर्देश करनेके बाद ही बन्धका नयकी अपेक्षा विशेष व्याख्यान किया है ।

नैगम, व्यवहार और संग्रह नय सब बन्धोंको स्वीकार करते हैं ॥ ४ ॥

नैगमनय, व्यवहारनय और संग्रहनय सब बन्धोंको स्वीकार करते हैं ; क्योंकि, इनके विषयरूपसे ये चारों बन्ध सम्भव हैं । यदि कहा जाय कि शुद्ध संग्रहनयमें ये चारों निक्षेप सम्भव नहीं हैं, सो ऐसा कहना ठीक नहीं है ; क्योंकि, अशुद्ध संग्रहनयकी अपेक्षा ये सब निक्षेप उसके निषय बन जाते हैं ।

शंका-ये तीनों द्रव्यार्थिक नय हैं, इसलिये इनके विषयरूपसे भावनिक्षेप कैसे प्राप्त हो सकता है ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, व्यञ्जनपर्यायकी अपेक्षा भावबन्ध इनका विषय बन जाता है ।

ऋजुसूत्रनय स्थापनाबन्धको स्वीकर नहीं करता ॥ ५ ॥

क्योंकि, यह नय पदार्थोंकी सदृशताको स्वीकार नहीं करता । यदि कहा जाय कि संकल्प-वश एक पदार्थ दूसरे पदार्थरूप हो जायगा, सो यह बात भी नहीं है; क्योंकि, ऐसा माननेपर एक खम्भेमें संकल्पवश तीन लोकके प्रवेशका प्रसंग प्राप्त होता है । और ऐसा है नहीं, क्योंकि, उसमें तीन लोकका सद्भाव नहीं पाया जाता ।

शब्दनय नामबन्ध और भावबन्धको स्वीकार करता है ॥ ६ ॥

कथं णामबंधस्स तत्थ संभवो ? ण, णामेण विणा इच्छिदत्थपरवणाए अणुववत्तीदो !

जो सो णामबंधो णाम सो जीवस्स वा अजीवस्स वा जीवाणं वा अजीवाणं वा जीवस्स च अजीवस्स च जीवस्स च अजीवाणं च जीवाणं च अजीवस्स च जीवाणं च अजीवाणं च जस्म णामं कीरदि बंधो त्ति सो सव्वो णामबंधो णाम ॥ ७ ॥

णामस्स पवुत्ती एदेसु अट्टसु चेव; एदेहितो बज्झस्स अण्णस्सानुवलंभादो । एदेसु अट्टसु पवत्तमाणबंधसट्ठो णामबंधो कथं णाम अण्णं पयासेदि ? ण, सुज्ज-मणिचंदादिषु स-परप्पयासस्सुवलंभादो ।

जो सो टुवणबंधो णाम सो बुविहो- सत्भावट्ठवणाबंधो चेव असत्भावट्ठवणाबंधो चेव ॥ ८ ॥

सत्त्वावस्थानाबंधोहितो पुधुभूदट्ठवणबंधाभावादो बुविहो चेव टुवणबंधो होदि । को टुवणबंधो णाम ? अण्णबंधम्मि अण्णबंधस्स सो एसो त्ति बुद्धीए टुवणा

शंका- इन दोनों नयोंमें नामबन्ध कैसे सम्भव है ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, नामके दिना इच्छित पदार्थका कथन नहीं किया जा सकता; इस अपेक्षा नामबन्धको इन दोनों नयोंके विषय स्वीकार किया है ।

जो यह नामबन्ध है वह इस प्रकार है- एक जीव, एक अजीव, बहुत जीव, बहुत अजीव, एक जीव और एक अजीव, एक जीव और बहुत अजीव, बहुत जीव और एक अजीव तथा बहुत जीव और बहुत अजीव; इनमेंसे जिसका बन्ध यह नाम किया जाता है वह सब नामबन्ध है ॥ ७ ॥

नामकी प्रवृत्ति इन आठोंमें ही होती है, क्योंकि, इनके बाहर अन्य पदार्थ नहीं पाया जाता ।

शंका- इन आठमें प्रवृत्त हुआ बन्ध शब्द नामबन्ध होता हुआ अपने आपको कैसे प्रकाशित करता है ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, सूर्य, मणि और चन्द्र आदिमें स्व और परके प्रकाशनकी योग्यता पाई जाती है । आशय यह है कि जैसे सूर्य आदि स्व-परप्रकाशक होते हैं वैसे नाम शब्द भी स्व-परप्रकाशक है ।

स्थापना बन्ध दो प्रकारका है--सद्भावस्थापनाबन्ध और असद्भाव-स्थापनाबन्ध ॥ ८ ॥

सद्भावस्थापनाबन्ध और असद्भावस्थापनाबन्धसे जुदा कोई तीसरा स्थापनाबन्ध नहीं पाया जाता, इसलिये स्थापनाबन्ध दो प्रकारका ही होता है ।

शंका- स्थापनाबन्ध किसे कहते हैं ?

समाधान- अन्य बन्धमें अन्य बन्धकी 'वह यह है' इस प्रकार बुद्धिसे स्थापना करना स्थापनाबन्ध है । आकृतिवाले पदार्थमें सद्भावस्थापना होती है और आकृतिरहित पदार्थमें

⊙ तावतो 'णामबंधो' । कथं णामं अण्णं' इति पाठः ।

ठवणबंधो णाम । आकृतिमति सद्भावस्थापना, अनाकृतिमति तद्विपरीता ।

जो सो सव्भावसव्भावट्ठवणाबंधो णाम तस्स इमो णिहेसो-
कट्ठकम्मेसु वा चित्तकम्मेसु वा पोत्तकम्मेसु वा लेप्पकम्मेसु वा लेण-
कम्मेसु वा सेलकम्मेसु वा गिहकम्मेसु वा भित्तिकम्मेसु वा दंतकम्मेसु
वा भेंडकम्मेसु वा अक्खो वा वराडओ वा जे चामण्णे एवमादिया
सव्भाव-असव्भावट्ठवणाए ठविज्जदि बंधो त्ति सो सव्वो सव्भाव-
असव्भावट्ठवणबंधो णाम ॥ ९ ॥

सीवणि-खड्गसागरुद्धादिसु चक्रबंध-मुरजबंध-विज्जाहरबंध-नागपाबंध-संसारवास-
बंधादीणं जहासरुवेण घडियठवणा सव्भावट्ठवणबंधो णाम । अजहासरुवेण एदेसि
बंधाणं तेसु ठवणा असव्भावट्ठवणबंधो णाम । चित्तारेहितो वण्णविसेसेहि णिप्फ-
णाणि चित्तकम्माणि णाम । वत्थेसु पाण-सालिय-कोसट्टादीहि जाणि वूण-
णकिरियाएणि णिप्पाइदाणि रुवाणि छिपएहि वा कदाणि पोत्तकम्माणि णाम ।
लेप्पयारेहि लेविऊण जाणि णिप्पाइदाणि रुवाणि ताणि लेप्पकम्माणि णाम ।
पत्थरकट्टएहि जाणि पव्वदेसु घडिदाणि रुवाणि ताणि लेणकम्माणि
णाम । तेहि चैव छिण्णसिलासु घडिदरुवाणि सेलकम्माणि णाम ।
असद्भावस्थापना होती है ।

जो वह सद्भावस्थापनाबन्ध और असद्भावस्थापनाबन्ध है उसका निर्देश इस
प्रकार है--- काष्ठकर्मोंमें, पोतकर्मोंमें, लेप्यकर्मोंमें, लयनकर्मोंमें, शैलकर्मोंमें,
गृहकर्मोंमें, भित्तिकर्मोंमें, दन्तकर्मोंमें, भेंडकर्मोंमें; तथा अक्ष या कौडी इनको आदि
लेकर और दूसरे पदार्थ अभेदस्वरूपसे सद्भावस्थापना तथा असद्भावस्थापनामें 'यह
बन्ध है' इस रूपसे स्थापित किये जाते हैं वह सब सद्भावस्थापनाबन्ध और अस-
द्भावस्थापना बन्ध है ॥ ९ ॥

श्रीपर्णी, खैर और साग काष्ठ आदिमें चक्रबन्ध, मुरजबन्ध, विद्याधरबन्ध, नागपाशबन्ध,
और संसारवासबन्ध आदिकी तदाकार स्थापना करना सद्भावस्थापनाबन्ध कहलाता है । इन
बन्धोंकी उन श्रीपर्णी आदि काष्ठोंमें अतदाकार स्थापना करना असद्भावस्थापनाबन्ध कहलाता है ।
चित्रकार रंग विशेषोंसे जो चित्र बनाते हैं वे चित्रकर्म कहलाते हैं । वस्त्रोंमें पाण, सालिय और
कोसट्ट आदि बुनकरीके द्वारा बुनने रूप क्रियासे जो आकार बनाये जाते हैं या छीपा उनपर जो
आकार बनाते हैं वे पोतकर्म कहलाते हैं । लेप्यकार लेपन कर जो आकार बनाते हैं वे लेप्यकर्म
कहलाते हैं । पत्थरफोडा पर्वतोंमें जो आकार धटित करते हैं वे लयनकर्म कहलाते हैं । वे ही छिन्न
शिलाओंमें जो आकार धटित करते हैं वे शैलकर्म कहलाते हैं । मृत्तिकापिण्डके द्वारा प्रासादोंमें जो

अप्रती 'कोसट्टादीहि जाणि वूणणकिरियाए' काप्रती 'कोसट्टादीहि जाणि वूणणकिरियाए
ताप्रती 'कोसट्टादीहि जाणि वूणणकिरियाए' इति पाठः । ❀ अ-आ-काप्रतिषु 'एत्थरुट्टएहि'
सप्रती 'पत्थरुट्टएहि' इति पाठः ।

मट्टियपिडेण पासादेसु घडिदरूवाणि गिहकम्माणि णाम । तेण चेव कुड्डेसु घडिद-
रूवाणि भित्तिकम्माणि णाम । दंतिदंतादिसु घडिदरूवाणि दंतकम्माणि णाम । भेंडेहि
घडिदरूवाणि भेंडकम्माणि णाम । एदाणि दस विह कम्माणि देसामासियाणि । तेण
पत्तकम्म-भिगकम्म-तलवत्तकम्म-तालिवत्तकम्म-भुजवत्तकम्म-सोवणकम्म-मणिवि-
याण-कम्मादीणि वत्तव्वाणि । एदेसु कम्मेसु जहासरूवेण द्रुविदबंधो सव्भावद्रुवणबंधो
णाम । तव्विवरीयसरूवेण द्रुवणाबंधो असव्भावद्रुवणबंधो णाम । एदेसि देसामसियत्तं
कथं णव्वदे ? उवरि भण्णमाण-एवमादिय-वयणादो । अक्खो णाम पासओ, वराडओ
णाम कवडुओ । एदाणि वे वि वयणाणि असव्भावद्रुवणाए ठविदाणि । कुदो एदं
णव्वदे ? अक्खेसु वा वराडएसु वा त्ति सत्तमीयंतणिद्देसाभावादो । एदेसु एदे वा अमा
एयत्तेण ठवणाए बुद्धीए ठविज्जंति बंधो त्ति सो सव्वो ठवणबंधो णाम । ठवणासद्दो
बुद्धिवाचओ त्ति कुदो णव्वदे ? धरणी धारणी द्रुवणा कोट्टा पट्ठि त्ति सुत्तादो ।

आकार घटित करते हैं वे गृहकर्म कहलाते हैं । उसीसे दिवालोंमें जो आकार बनाये जाते हैं वे
भित्तिकर्म कहलाते हैं । हाथीके दांतोंमें जो आकार बनाये जाते हैं वे दन्तकर्म कहलाते हैं ।
भेंडोंसे जो आकार बनाये जाते हैं वे भेंडकर्म कहलाते हैं । ये दसों ही कर्म देशामर्शक हैं । इससे
पत्रकर्म, भृङ्गकर्म, तलवत्त (आभूषण) कर्म, तालिपत्रकर्म, भोजपत्रकर्म, सोनेका कर्म और मणि-
विज्ञानकर्म आदिको ग्रहण करना चाहिए । इन कर्मोंमें तदाकारस्वरूपसे बंधकी स्थापना करना
सद्भावस्थापनाबंध है और अतदाकाररूपसे बंधकी स्थापना करना असद्भावस्थापनाबंध है ।

शंका— इनका देशामर्शकस्थापना कैसे जाना जाता है ?

समाधान— सूत्रमें आगे कहे जानेवाले 'एवमादिय' वचनसे जाना जाता है । अक्ष
पांसेका नाम है और वराटक कौडीका नाम है । ये दोनों ही वचन असद्भावस्थापनाके सूचक हैं ।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— सूत्रमें 'अक्खेसु वा वराडएसु वा' इस प्रकार सप्तम्यन्त वचनका
निर्देश नहीं किया है । इससे जाना जाता है कि ये दोनों वचन असद्भावस्थापनाके सूचक हैं ।

इनमें या ये 'अमा' अर्थात् अभेदरूपसे, स्थापना अर्थात् बुद्धिमें 'बन्ध' इस
प्रकार स्थापित किये जाते हैं इसलिये यह सब स्थापनाबन्ध कहलाता है ।

शंका— स्थापना शब्द बुद्धिका वाचक है, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— 'धरणी, धारणी, स्थापना, कोट्टा और प्रतिष्ठा ये बुद्धिके नाम हैं'
इस सूत्रसे जाना जाता है ।

विशेषार्थ— यहाँ सद्भाव और असद्भावरूप दोनों प्रकारके स्थापनाबन्धकी चर्चा की
गई है । स्थापना एक पदार्थकी दूसरे पदार्थमें होती है । जिसमें स्थापना की जाती है यदि
वह तदाकार होता है तो वह सद्भावस्थापना कहलाती है और यदि अतदाकार होता है तो
वह असद्भावस्थापना कहलाती है । बुद्धिसे 'यह वह ही है' ऐसा एकत्व स्थापित करके
स्थापना की जाती है, ऐसा यहाँ समझना चाहिये ।

✽ अ-काप्रत्योः 'वट्टइपिडेण पासादेसु', आप्रती 'वट्टइपासादेसु' ता. प्रती 'वट्टइपिडेण
पासादेसु' इति पाठः । ✽ प्रकृति अनुयोगद्वारा सू० ४० (पु० १३) ।

जो सो दब्बबंधो णाम सो थप्पो ॥ १० ॥

किमट्ठं थप्पो कीरदि ? बहुवण्णज्जत्तादो ।

जो सो भावबंधो णाम सो दुविहो-- आगमदो भावबंधो चेव णोआगमदो भावबंधो चेव ॥ ११ ॥

एवं दुविहो चेव भावबंधो होदि; आगम-णोआगमेहिंतो वदिरित्तभावाणुवलंभादो ।

जो सो आगमदो भावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो-ठिदं जिदं परिजिदं वायणोवगदं सुत्तसमं अत्थसमं गंथसमं णामसमं घोससमं । जा तत्थ वायणा वा पुच्छणा वा पडिच्छणा वा परियट्ठणा वा अणु-पेहणा वा थय-थुदि-धम्मकहा वा जे चामण्णे एवमादिया उवजोणा भावे त्ति कट्ठु जावदिया उवजुत्ता भावा सो सव्वो आगमदो भावबंधो णाम ॥ १२ ॥

ट्ठिदं जिदं परिजिदं वायणोवगदं सुत्तसमं अत्थसमं गंथसमं णामसमं घोससममिदि णवविहो आगमो । कधमेगो आगमो णवविहत्तं पडिवज्जदे ? लक्खणभेदेण । किं तल्लक्खणं? उच्चदे-अवधूतमात्रं स्थितं नाम । जेण बारह वि अंगाणि अवहारिदाणि सो

द्रव्यबन्ध स्थगित किया जाता है ॥ १० ॥

शंका-किसलिये स्थापित किया जाता है ?

समाधान-क्योंकि, आगे उसका बहुत वर्णन करनेवाले हैं ।

भावबन्ध दो प्रकारका है-आगमभावबन्ध और नोआगमभावबन्ध ॥ ११ ॥

इस प्रकार भावबन्ध दो ही प्रकारका होता है, क्योंकि, आगमभाव और नोआगमभावसे अतिरिक्त अन्य भाव नहीं पाया जाता ।

जो आगमभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है- स्थित, जित, परिजित, वाचनोपगत, सूत्रसम, अर्थसम, ग्रन्थसम, नामसम और घोषसम । इनके विषयमें वाचना, पृच्छना, प्रतीच्छना, परिवर्तना अनुप्रेक्षणा, स्तव, स्तुति, धर्मकथा, तथा इनसे लेकर जो अन्य उपयोग हैं उनमें भावरूपसे जितने उपयुक्त भाव हैं वे सब आगमभावबन्ध है ॥ १२ ॥

स्थित, जित, परिजित, वाचनोपगत, सूत्रसम, अर्थसम, ग्रन्थसम, नामसम और घोषसम; यह नौ प्रकारका आगम है ।

शंका-एक आगमके नौ भेद कैसे हो जाते हैं ?

समाधान-लक्षणके भेदसे एक आगमके नौ भेद हो जाते हैं ।

शंका-वह लक्षण कौन-सा है ?

समाधान-कहते हैं, अवधारणमात्रकी स्थित संज्ञा है । जिसने बारह ही अंगोंको

साह द्विदुवणानं होदि । कथं तस्स द्विदत्तं? अण्णत्थ संचाराभावादो । तं पि कुदो? परेसि करणसत्तीए अभावादो । जो अवगयमत्थं सण्णिमसण्णि चित्तिऊण वोत्तुं समत्थो सो जिदं णाम सुदणानं । जो अवगयबारहअंगो संतो खलणेण विणा अवगयमत्थं वोत्तुं समत्थो सो परिजिदं णाम सुदणानं होदि । ण च एदे वे वि आगमा परपच्चायणक्खमा ; दच्छत्ताभावादो । जो अवगयबारहअंगो संतो परेसि वक्खाणक्खमो सो आगमो वायणोव-गदो णाम । का वाचना ? शिष्याध्यापनं वाचना । सुत्तं सुदकेवली, तेण समं सुदणानं सुत्तसमं । अथवा सुत्तं बारहंगसद्दागमो, आइरियोवदेसेण विणा सुत्तादो चेव जं उत्प-ज्जदि सुदणानं तं सुत्तसमं । अत्थो गणहरदेवो, आगमसुत्तेण विणा सयलसुदणानपज्जाएण परिणदत्तादो । तेण समं सुदणानं अत्थसमं । अथवा अत्थो बीजपदं, तत्तो उत्पण्णं सयलसुदणानमत्थसमं । आइरियाणमुवएसो गंथो, तेण समं गंथसमं । बारहअंगसद्दागम-माइरियपादमूले सोऊण जं उत्पण्णं सुदणानं तं गंथसममिवि वुत्तं होदि । आइरियपाद-मूले बारहंगसद्दागमं सोऊण जस्स अहिल्लप्पत्थविसयं चेव सुदणानं समुत्पण्णं सो णाम-समं । बारहंगसद्दागमं सुणेतस्स जस्स सुदपडिबद्धत्थविसयमेव सुदणानं समुत्पण्णं सो

अवधारित कर लिया है वह साधु स्थित श्रुतज्ञान है ।

शंका-इसकी स्थित संज्ञा क्यों है ?

समाधान-अन्यत्र इसका संचार नहीं होता, इससे उसकी स्थित संज्ञा है ।

शंका-ऐसा भी क्यों है ?

समाधान-क्योंकि, अन्यके साधकतमरूपसे करण होनेकी शक्ति नहीं पाई जाती ।

जो जाने हुए अर्थको धीरे-धीरे विचार कर कहनेके लिये समर्थ होता है वह जित नामका श्रुतज्ञान है । जो बारह अंगोंको जानकर बिना स्खलनके जाने हुए अर्थको कहनेके लिये समर्थ होता है वह परिजित नामका श्रुतज्ञान है । ये दोनों ही आगम अन्यको ज्ञान करानेमें समर्थ नहीं हैं, क्योंकि, इनमें दक्षता नहीं पाई जाती । जो बारह अंगोंको जानकर अन्यके लिये उनका व्याख्यान करनेमें समर्थ है वह वाचनोपगत नामका आगम है ।

शंका वाचना किसे कहते हैं ?

समाधान-शिष्योंको पढ़ाना इसका नाम वाचना है ।

सूत्रका अर्थ श्रुतकेवली है । उसके समान जो श्रुतज्ञान होता है वह सूत्रसम श्रुतज्ञान है । अथवा, सूत्रका अर्थ बारह प्रकारका अंगरूप शब्दागम है । आचार्यके उपदेशके बिना सूत्रसे ही जो श्रुतज्ञान उत्पन्न होता है वह सूत्रसम श्रुतज्ञान है । अर्थ गणवरदेवका नाम है, क्योंकि, वे आगमसूत्रके बिना सकल श्रुतज्ञानरूप पर्यायसे परिणत रहते हैं, इनके समान जो श्रुतज्ञान होता है वह अर्थसम श्रुतज्ञान है । अथवा अर्थ बीजपदको कहते हैं, इससे जो समस्त श्रुतज्ञान उत्पन्न होता है वह ग्रन्थसम श्रुतज्ञान है । आचार्यके उपदेशको ग्रन्थ कहते हैं, इसके समान जो श्रुतज्ञान होता है वह ग्रन्थसम श्रुतज्ञान है । आचार्यके पादमूलमें बारह अंगरूप शब्दागमको सुनकर जो श्रुतज्ञान उत्पन्न होता है वह ग्रन्थसम श्रुतज्ञान है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है । आचार्यके पादमूलमें बारह अंगरूप शब्दागमको सुनकर जिसके कथन करते योग्य अर्थको विषय करनेवाला ही श्रुतज्ञान उत्पन्न हुआ है वह नामसम श्रुतज्ञान है । बारह अंगरूप शब्दागमको सुननेवाले जिसके सुने हुए अर्थसे सम्बन्ध रखनेवाले पदार्थको विषय करनेवाला

घोससमं । एवं णवविहं सुदणानं परूविदं ।

संपहि एत्थ उवओगो वायणा-पुच्छण-पडिच्छण-परियट्ठण-अणुपेहण-त्थय-
थुदि-धम्मकहाभेएण अट्ठविहो । तत्थ परेसि वक्खाणं वायणा णाम । तत्थ अणि-
च्छिदट्ठणं पणवावारो पुच्छणं णाम । आइरिएहि कहिज्जमाणत्थाणं सुणणं पडि-
च्छणं णाम । अवगयत्थस्स हियएण पुणो पुणो परिमलणं परियट्ठणं णाम । सुत्त-
त्थस्स सुदाणुसारेण वितणमणुपेहणं णाम । सव्वसुदणानविसओ उवजोगो थवो
णाम । एंगंगविसओ* एयपुव्वविसओ वा उवजोगो थुदो णाम । वत्थु-अणुयोगा-
विविसओ भावो धम्मकहा णाम । एवमादिया उवजोगा भावे त्ति कट्ट जावदिया
उवजुत्ता भावा सो सव्वो आगमदो भावबंधो णाम ।

जो सो णोआगमदो भावबंधो णाम सो दुविहो--जीवभाव-
बंधो चेव अजीवभावबंधो चेव ॥ १३ ॥

एवं दुविहो चेव णोआगमभावबंधो होदि; जीवाजीववदिरित्तणोआगमभाव-
बंधाभावादो ।

जो सो जीवभावबंधो णाम सो तिविहो--विवागपच्चइयो
जीवभावबंधो चेव अविवागपच्चइओ जीवभावबंधो चेव तदुभयप-
च्चइओ जीवभावबंधो चेव ॥ १४ ॥

श्रुतज्ञान उत्पन्न हुआ है वह घोषसम श्रुतज्ञान है । इस प्रकार नौ प्रकारके श्रुतज्ञानका कथन किया।

इनके विषयमें वाचना, पृच्छना, प्रतीच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षणा, स्तव, स्तुति और धर्मकथाके भेदसे आठ प्रकारका उपयोग होता है । उनमेंसे अन्यके लिये व्याख्यान करना वाचना है । उसमें अनिश्चित अर्थको समझनेके लिये प्रश्न करना पृच्छना है । आचार्य जिन अर्थोंका कथन कर रहे हों उनका सुनना प्रतीच्छना है । जाने हुए अर्थका हृदयसे पुनः पुनः विचार करना परिवर्तना है । सूत्रके अर्थका श्रुतके अनुसार चिन्तन करना अनुप्रेक्षणा है । समस्त श्रुतज्ञानको विषय करनेवाला उपयोग स्तव कहलाता है । एक अंग या एक पूर्वको विषय करनेवाला उपयोग स्तुति कहलाता है । तथा वस्तु और अनुयोगद्वारा आदिको विषय करनेवाला उपयोग धर्मकथा कहलाता है । इत्यादि जितने उपयोग हैं उनमें 'यह भाव है' ऐसा समझ कर जितने उपयुक्त भाव होते हैं वह सब आगम भावबन्ध है ।

नोआगमभावबन्ध दो प्रकारका है-जीवभावबन्ध और अजीवभावबन्ध ॥ १३ ॥

इस तरह दो प्रकारका ही नोआगमभावबन्ध है, क्योंकि, जीव और अजीव इन दो भेदोंके सिवा नोआगमभावबन्ध नहीं पाया जाता ।

जीवभावबन्ध तीन प्रकारका है-विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध, अविपाकप्र-
त्ययिक जीवभावबन्ध और तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध ॥ १४ ॥

* अ-आ- काप्रतिषु 'एवंगयविसओ'; ताप्रती 'एयंगयविसओ', इति पाठ ।

एवं तिविहो चेव जीवभावबंधो होदि, अण्णस्स चउत्थस्स जीवभावस्स अणुवलंभादो । कम्माणमुदओ उदीरणा वा विवागो णाम, विवागो पच्चओ कारणं जस्स भावस्स सो विवागपच्चइओ जीवभावबंधो णाम । कम्माणमुवय-उदीरणा-णमभावो अविवागो णाम । कम्माणमुवससो खओ वा अविवागो ति भणिदं होदि । अविवागो पच्चयो कारणं जस्स भावस्स सो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम । कम्माणमुदय-उदीरणाहितो तदुवसमेण च जो उप्पज्जइ भावो सो तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो णाम ।

जो सो विवागपच्चइओ जीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसोदेवे त्ति वा मणुस्से त्ति वा तिरिक्खे त्ति वा णेरइए त्ति वा इत्थिवेदे त्ति वा पुरिसवेदे त्ति वा णवुंसयवेदे त्ति वा कोहवेदे त्ति वा माणवेदे त्ति वा मायवेदे त्ति वा लोहवेदे त्ति वा रागवेदे त्ति वा दोसवेदे त्ति वा मोहवेदे त्ति वा किण्हलेस्से त्ति वा नीललेस्से त्ति वा काउलेस्से त्ति वा तेउलेस्से त्ति वा पम्मलेस्से त्ति वा सुक्कलेस्से त्ति वा असंजदे त्ति वा अविरदे त्ति वा अण्णणे त्ति वा मिच्छादिट्ठि त्ति वा जे चामण्णे

इस प्रकार तीन प्रकारका ही जीवभावबन्ध है, क्योंकि अन्य चौथा जीवभाव नहीं पाया जाता । कर्मोंके उदय और उदीरणाको विपाक कहते हैं, और विपाक जिस भावका प्रत्यय अर्थात् कारण है उसे विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध कहते हैं । कर्मोंके उदय और उदीरणाके अभावको अविपाक कहते हैं । कर्मोंके उपशम और क्षयको अविपाक कहते हैं, यह उक्त कथनका तात्पर्य है । अविपाक जिस भावका प्रत्यय अर्थात् कारण है उसे अविपाक-प्रत्ययिक जीवभावबन्ध कहते हैं । कर्मोंके उदय और उदीरणासे तथा इनके उपशमसे जो भाव उत्पन्न होता है उसे तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध कहते हैं ।

विशेषार्थ- यहाँ जीवभावबन्धके तीन भेदोंके स्वरूपपर प्रकाश डाला गया है । विपाकका अर्थ उदय और उदीरणा है । अविपाकका अर्थ उपशम और क्षय है, तथा तदुभयका अर्थ क्षयोपशम है । इसमें देशघातिसर्धकोंका उदय और उदीरणा रहती है तथा सर्वघातिसर्धकोंका अनुदय रहता है । क्षयोपशम शब्द द्वारा अनुदय ही कहा गया है क्षय अर्थात् अनुदय ही उपशम ऐसी उसकी वृत्ति है । तदुभयमें विपाक और अविपाक दोनोंका ग्रहण हो जाता है, किन्तु क्षयोपशम शब्द द्वारा उदय और उदीरणा अविवक्षित रहते हैं । अभिप्राय दोनोंका एक है ।

जो विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है--
देवभाव, मनुष्यभाव, तिर्यचभाव, तारकभाव, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद, क्रोधवेद, मानवेद, मायावेद, लोभवेद, रागवेद, दोषवेद, मोहवेद, कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, पीतलेश्या, पद्मलेश्या, शुक्ललेश्या, असंयतभाव, अविरतभाव, अज्ञानभाव और मिथ्यादृष्टिभाव; तथा

एवमादिया कम्मोदयपच्चइया उदयविवागणिप्पण्णा भावा सो सव्वो विवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम ॥ १५ ॥

देवगदिणामकम्मोदएण अणिमादिगुणं णीदो देवभावो होदि । मणुसगदिणाम-
कम्मोदएण अणिमादिगुणवदिरित्तो मणुस्से त्ति भावो होदि । तिरिक्खगइणामकम्मो-
दएण तिरिक्खे त्ति भावो । णिरयगइणामकम्मोदएण णेरइए त्ति भावो । इत्थिकम्मो-
दएण इत्थिवेदो त्ति भावो होदि । पुरिसवेदभावो विवागपच्चइयो; पुरिसवेदोदयज-
णिदत्तादो । णवुंसयवेदभावो विवागपच्चइयो; णवुंसयवेदकम्मोदयजणिदत्तादो । कोध-
माण-माया-लोभभावा विवागपच्चइया; कोध-माण-माया-लोभदव्वकम्मविवागजणि-
दत्तादो । रागो विवागपच्चइयो; माया-लोभ-हस्स-रदि-तिवेदाणं दव्वकम्मोदयजणि-
दत्तादो । दोसो विवागपच्चइयो; कोह-माण-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं दव्वकम्मोदय-
जणिदत्तादो । पंचविहमिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तं सासणसम्मत्तं च मोहो, सो विवागप-
च्चइयो; मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्त-अणंताणुबंधीणं दव्वकम्मोदयजणिदत्तादो । किण्ण-
णील-काउ-तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ विवागपच्चइयाओ अघादिकम्माणं तप्पाओ-
ग्गदव्वकम्मोदएण कसाओदएण च छलेस्साणिप्पत्तीदो । असंजदत्तं विवागपच्चइयं;
संजमघादिकम्माणमुदएण समुप्पण्णत्तादो । अविरदत्तं विवागपच्चइयं देस—

इसी प्रकार कर्मोदयप्रत्ययिक उदयविपाकसे उत्पन्न हुए और जितने भाव हैं वे सब विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध हैं ॥ १५ ॥

देवगति नामकर्मके उदयसे जो अणिमा आदि गुणोंको प्राप्त करता है वह देवभाव है । मनुष्यगति नामकर्मके उदयसे अणिमा आदि गुणोंसे रहित मनुष्यभाव होता है । तिर्यचगति नामकर्मके उदयसे तिर्यचभाव होता है । नरकगति नामकर्मके उदयसे नारकभाव होता है । स्त्रीवेद कर्मके उदयसे स्त्रीवेदरूप भाव होता है । पुरुषवेदभाव विपाकप्रत्ययिक है, क्योंकि, वह पुरुषवेदके उदयसे उत्पन्न होता है । नपुंसकवेदभाव विपाकप्रत्ययिक है, क्योंकि, वह नपुंसकवेद कर्मके उदयसे उत्पन्न होता है । क्रोध, मान, माया और लोभ ये भाव भी विपाकप्रत्ययिक होते हैं; क्योंकि, ये भाव क्रोध, मान, माया और लोभरूप द्रव्यकर्मोंके विपाकसे उत्पन्न होते हैं । राग भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, इसकी उत्पत्ति माया, लोभ, हास्य, रति और तीन वेदरूप द्रव्यकर्मोंके विपाकसे होती है । दोष भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, इसकी उत्पत्ति क्रोध, मान, अरति, शोक, भय और जुगुप्सरूप द्रव्यकर्मके विपाकसे होती है । पाँच प्रकारका मथ्यात्व,, सम्यग्मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व मोह कहलाता है । वह भी विपाकप्रत्ययिक होता है क्योंकि, इसका उत्पत्ति मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और अनतानुबन्धीरूप द्रव्यकर्मके उदयसे होती है । कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म और शुक्ललेश्या भी विपाकप्रत्ययिक होती हैं, क्योंकि, छह लेश्याओंकी उत्पत्ति अघाति कर्मोंमेंसे तत्प्रायोग्य द्रव्यकर्मके उदयसे और कषायके उदयसे होती हैं । असंयतभाव भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, यह संयमका घात करने—

सयलविरह्वाइकम्मोदयजणिदत्तादो । संजम-विरईणं को भेदो ? ससमिदिमह्व-
याणुव्वयाइं संजमो । समिईहि विणा मह्व्वयाणुव्वया विरई । अण्णाणं विवागपच्च
इयं; मिच्छत्तोदयजणिदत्तादो णाणावरणकम्मोदयजणिदत्तादो वा । मिच्छत्तं विवाग-
पच्चइयं; मिच्छत्तोदयजणिदत्तादो । जे च अमी अण्णे च एवमादिआ कम्मोदय--
पच्चइया उदयविवागणिप्पणा सो सव्वो विवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम ।

**जो सो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम सो दुविहो-
उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो चेव खइयो अविवाग-
पच्चइओ जीवभावबंधो चेव ॥ १६ ॥**

वाले कर्मोंके उदयसे उत्पन्न होता है । अविरतभाव भी विपाकप्रत्ययिक है, क्योंकि, यह
देशविरति और सकल विरतिके घातक कर्मोंके उदयसे उत्पन्न होता है ।

शंका--संयम और विरतिमें क्या भेद है ?

समाधान--समितियोंके साथ महाव्रत और अणुव्रत संयम कहलाते हैं और
समितियोंके बिना महाव्रत और अणुव्रत विरति कहलाते हैं । यही इन दोनोंमें भेद है ।

अज्ञानभाव भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, यह मिथ्यात्वके उदयसे अथवा
ज्ञानावरणके उदयसे उत्पन्न होता है । मिथ्यात्व भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, यह
मिथ्यात्वके उदयसे उत्पन्न होता है । इसी प्रकार कर्मोदयप्रत्ययिक उदयविपाकनिष्पन्न और
जितने भाव होते हैं वे सब विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध कहलाते हैं ।

विशेषार्थ--प्रकृतमें प्रत्यय शब्द निमित्तवाची है । यहाँ देवभाव, मनुष्यभाव आदि
जितने भाव गिनाये हैं वे सब विवक्षित कर्मोंके उदय और उदीरणाके निमित्तसे होते हैं,
इसलिये इन्हें विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध कहा है । यहाँ ये कुल चौबीस भाव गिनाये हैं
जब कि तत्त्वार्थसूत्रमें कुल इक्कीस भाव ही गिनाये हैं । तत्त्वार्थसूत्रमें गिनाये गये भावोंमेंसे
असिद्धत्व भाव यहाँ नहीं गिनाया है और यहाँ राग, दोष, मोह और अविरति ये चार भाव
अतिरिक्त गिनाये हैं । इनमेंसे यद्यपि अविरति भावका सामान्यतः असंयतभावमें अन्तर्भाव
किया जा सकता है, पर शेष तीन भावोंके गिनानेमें विशिष्ट दृष्टिकोणकी प्रतीति होती है ।
नोकषायोंके नौ भेद हैं, उनमेंसे रति आदिके उदयसे होनेवाले भावोंका तत्त्वार्थसूत्रमें दर्शन
नहीं होता, जब कि यहाँ इन भावोंका राग और दोषमें अन्तर्भाव हो जाता है । इसी प्रकार
सासादनभाव और सम्यग्मिथ्यात्वभावकी परिगणना भी तत्त्वार्थसूत्रमें नहीं की गई है जब कि
यहाँ इनका अन्तर्भाव मोहमें हो जाता है । एक बात अवश्य है कि यहाँ असिद्धत्व भाव नहीं
गिनाया है, पर इसके साथ यहाँ इसी प्रकार और दूसरे भावोंके ग्रहण करनेकी सूचना अवश्य
की है । इसलिये कोई हानि नहीं है । आशय यह है कि यहाँ औदयिक भावोंका विचार करते
समय उस दृष्टिकोणको अपनाया गया है जिससे प्रायः सभी भावोंका ग्रहण हो जाता है ।

**अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध दो प्रकारका है--औपशमिक अविपाक-
प्रत्ययिक जीवभावबन्ध और क्षाधिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध ॥ १६ ॥**

एवं दुविहो चेव अविवागपच्चइओ जीवभावबंधो होदि । जीव-भवाभव-
त्तादिजीवभावा पारिणामिया वि अत्थि, ते एत्थ किण्ण परूविदा? वुच्चदे-आउआ-
दिपाणाणं धारणं जीवणं णाम । तं च अजोगिचरिमसमयादो उवरि णत्थि, सिद्धेसु
पाणणिबंधणटुकम्माभावादो । तम्हा सिद्धा ण जीवा जीविदुप्पवा इदि । सिद्धाणं पि
जीवत्तं किण्ण इच्छिज्जदे ? ण, उवधारस्स सच्चत्ताभावादो । सिद्धेसु पाणाभावण-
हाणववत्तीदो जीवत्तं ण पारिणामियं, किंतु कम्मविवागजं; यद्यस्य भावाभावानुवि-
धानतो भवति तत्तस्येति वदन्ति तद्विद इति न्यायात् । ततो जीवभावो ओदइओ त्ति
सिद्धं । तच्चत्थे जं जीवभावस्स पारिणामियत्तं परूविदं तं पाणधारणत्तं पडुच्च ण
परूविदं, किंतु चेदणगुणमवलंबिय तत्थ परूवणा कदा । चेण तं पि ण विरुज्जदे ।

अघाइकम्मचउवकोदयजणिदमसिद्धत्तं णाम । तं दुविहं-अणादि-अपज्जवसिदं अणादि-
सपज्जवसिदं चेदि । तत्थ जेसिमसिद्धत्तमणादि-अपज्जवसिदं ते अभव्वा णाम । जेसिम-
वरं ते भव्वजीवा । तदो भव्वत्तमभव्वत्तं च विवागपच्चइयं चेव । तच्चत्थे पारिणामि-
यत्तं परूविदं, तेण सह विरोधो कधं ण जायदे? ण, असिद्धत्तस्स अणादि-अपज्जवसिदत्तं

इस तरह दो प्रकारका ही अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध होता है ।

शंका-जीवत्व, भव्यत्व और अभव्यत्व आदिक जीवभाव पारिणामिक भी हैं, उनका
यहाँ क्यों कथन नहीं किया ?

समाधान-कहते हैं, आयु आदि प्राणोंका धारण करना जीवन है । वह अयोगीके
अन्तिम समयसे आगे नहीं पाया जाता, क्योंकि, सिद्धोंके प्राणोंके कारणभूत आठों कर्मोंका
अभाव है । इसलिये सिद्ध जीव नहीं हैं, अधिकसे अधिक वे जीवितपूर्व कहे जा सकते हैं ।

शंका-सिद्धोंके जीवत्व क्यों नहीं स्वीकार किया जाता है ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, सिद्धोंमें जीवत्व उपचारसे है, और उपचारको सत्य मानना
ठीक नहीं है ।

सिद्धोंमें प्राणोंका अभाव अन्यथा बन नहीं सकता, इससे मालूम पड़ता है कि जीवत्व
पारिणामिक नहीं है । किन्तु वह कर्मके विपाकसे उत्पन्न होता है, क्योंकि, ' जो जिसके सद्भाव
और असद्भावका अविनाभावी होता है वह उसका है, ऐसा कार्य-कारणभावके ज्ञाता कहते हैं '
ऐसा न्याय है । इसलिये जीवभाव औदयिक है, यह सिद्ध होता है । तत्त्वार्थसूत्रमें जीवत्वको जो
पारिणामिक कहा है वह प्राणोंको धारण करनेकी अपेक्षासे नहीं कहा है, किन्तु चैतन्य गुणकी
अपेक्षासे वहाँ वैसा कथन किया है, इसलिये वह कथन भी विरोधको प्राप्त नहीं होता ।

चार अघाति कर्मोंके उदयसे उत्पन्न हुआ असिद्धभाव है । वह दो प्रकारक है- अनादि-
अनन्त और अनादि-सान्त । इनमेंसे जिनके असिद्धभाव अनादि-अनन्त हैं वे अभव्य जीव हैं और
जिनके दूसरे प्रकारका है वे भव्य जीव हैं । इसलिये भव्यत्व और अभव्यत्व ये भी विपाक-
प्रत्ययिक ही हैं ।

शंका-तत्त्वार्थसूत्रमें इन्हें पारिणामिक कहा है, इसलिये इस कथनका उसके साथ विरोध
कैसे नहीं होगा ?

अणादि-सपज्जवसिदत्तं च णिक्कारणमिदि तत्थ तेसि पारिणामियत्तब्भुवगमादो ।

जो सो ओवसमिओ अविवागपच्चइओ जीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो-से उवसंतकोहे उवसंतमाणे उवसंतमाए उवसंतलोहे उव-संतरागे उवसंतदोसे उवसंतमोहे उवसंतकसायवीयरागछदुमत्थे उवस-मियं सम्मत्तं उवसमियं चारित्तं, जे चामण्णे एवमादिया उवसमिया भावा सो सव्वो उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम । १७।

उवसंतकोहे अणियट्टिम्मि जो भावो सो उवसमिओ अविवागपच्चइयो जीवभाव-बंधो; दव्व-भावकोधाणमुवसमेण समुब्भूदत्तादो । उवसंतमाणे जीवे जो भावो सो उव-समियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दव्व-भावमाणाणमुवसमेण समुब्भूदत्तादो । उवसंतमाये जीवे जो भावो सो उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दव्व-भावमायाणमुवसमेण समुब्भूदत्तादो । उवसंतलोभे जीवे जो भावो सो वि उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दव्व-भावलोहाणमुवसमेण समुब्भू-दत्तादो । उवसंतरागे जीवे जो भावो सो उवसमियो अविवागपच्चइयो जीव-भावबंधो; माया-लोभ-हत्स-रदि-तिवेददव्वकम्माणमुवसमेण समुब्भूदत्तादो । उवसंतदोसे जीवे जो भावो सो उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो;

समाधान-नहीं, क्योंकि, असिद्धत्वका अनादि-अनन्तपना और अनादि-सान्तपना निष्कारण है, यह समझकर उन्हें वहाँ पारिणामिक स्वीकार किया गया है ।

जो औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है- उपशान्तक्रोध, उपशान्तमान, उपशान्तमाया, उपशान्तलोभ, उपशान्तराग, उप-शान्तदोष, उपशान्तमोह, उपशान्तकषाय-वीतरागछद्मस्थ, औपशमिक सम्यक्त्व और औपशमिक चारित्र, तथा इनसे लेकर और जितने औपशमिक भाव हैं वह सब औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है ॥ १७ ॥

अतिवृत्तिकरणमें क्रोधके उपशमसे जो भाव होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह द्रव्यक्रोध और भावक्रोधके उपशमसे उत्पन्न होता है । उपशान्तमान जीवके जो भाव होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह द्रव्यमान और भावमानके उपशमसे उत्पन्न होता है । उपशान्तमाया जीवमें जो भाव होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह द्रव्यमाया और भावमायाके उपशमसे उत्पन्न होता है । उपशान्तलोभ जीवमें जो भाव होता है वह भी औपशमिक अविपाक-प्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह द्रव्यलोभ और भावलोभके उपशमसे उत्पन्न होता है; उपशान्तराग जीवमें जो भाव होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह माया, लोभ, हास्य, रति और तीन वेदरूप द्रव्यकर्मके उपशमसे उत्पन्न होता है । उपशान्तदोष जीवमें जो भाव होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है,

कोह-माण-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं दब्बकम्मवसमेण समुब्भूदत्तावो । (उवसंतमोहे जीवे जो भावो सो वि उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबन्धो, अट्ठावीस मोह-णीयपयडीणं दब्बकम्मवसमेण समुब्भूदत्तावो) उवसंतकसायवीयरायछदुमत्थे जीवे जो भावो सो वि उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबन्धो; पणुवीसकसायाणं दब्ब-कम्मवसमेण समुब्भूदत्तावो । जमुवसमियं सम्मत्तं तं पि उवसमियो अविवागपच्च-इयो जीवभावबन्धो; तिविहदंसणमोहणीयदब्बकम्मवसमेण समुप्पत्तीए । जं उवस-मियं चारित्तं तं पि गवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबन्धो; चारित्तमोहणीयस्स देस-सव्ववसमणाए समुब्भूदत्तावो । जे च अमी पुव्वुत्ता भावा अण्णो वा विअे अपुव्व-अणियट्ठि-सुहुमसांपराइय-उवसंतकसाएसु समयं पडि जे उप्पज्जमाणा जीवभावा सो सव्वो उवसमिओ अविवागपच्चइओ जीवभावबन्धो णाम ।

जो सो खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबन्धो णाम तस्स इमो णिहेसो-से खीणकोहे खीणमाणे खीणमाये खीणलोहे खीणरागे खीण-दोसे खीणमोहे खीणकसायवीयरायछदुमत्थे खइयसम्मत्तं खइय-चारित्तं खइया दाणलद्धी खइया लाहलद्धी खइया भोगलद्धी खइया परिभोगलद्धी खइया वीरियलद्धी केवलणाणं केवलदंसणं सिद्धे बुद्धे परिणिव्वुदे सव्वदुवखाणमंतयडे त्ति जे चामण्णे एवमाविया खइया भावा सोसव्वो खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबन्धो णाम ॥१८॥

क्योंकि, वह क्रोध, मान, अरति, शोक, भय और जुगुप्सरूप द्रव्य कर्मोंके उपशमसे उत्पन्न होता है । उपशान्तकषाय-वीतरगच्छस्थ जीवमें जो भाव होता है वह भी औपशमिक अविपाकप्रत्य-यिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह पच्चीस कषायरूप द्रव्यकर्मोंके उपशमसे उत्पन्न होता है । जो औपशमिक सम्यक्त्व है वह भी औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, व तीन प्रकारके दर्शनमोहनीय द्रव्यकर्मके उपशमसे उत्पन्न होता है । जो औपशमिक चारित्र है वह भी औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह चारित्रमोहनीयकी देशोपशमना और सर्वोपशमनासे उत्पन्न होता है । चूंकि ये पूर्वोक्त भाव और दूसरे भी अपूर्वकरण, अनिवृत्ति करण, सूक्ष्मसाम्पराय और उपशान्तकषाय गुणस्थानोंमें प्रत्येक समयमें उत्पन्न होनेवाले जो जीवके भाव हैं वह सब औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है ।

जो क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है- क्षीणक्रोध, क्षीणमान, क्षीणमाया, क्षीणलोभ, क्षीणराग, क्षीणदोष, क्षीणमोह, क्षीण-कषाय-वीतरागच्छस्थ, क्षायिक सम्यक्त्व, क्षायिक चारित्र, क्षायिक दानलब्धि, क्षायिक लाभलब्धि, क्षायिक भोगलब्धि, क्षायिक परिभोगलब्धि, क्षायिक वीर्यलब्धि, केवल-ज्ञान, केवलदर्शन, सिद्ध, बुद्ध, परिनिवृत्त, सर्वदुःख-अन्तकृत्, इसी प्रकार और भी जो दूसरे क्षायिक भाव होते हैं वह सब क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है ॥१८॥

खीणकीहे जीवे जो भावो सो खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम; दब्ब-भावकोहाणं णिरवसेसक्खएण समुप्पणत्तदो । खीणमाणे जीवे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम; दब्ब-भावमाणक्खएण समुप्पत्तीदो । खीण-माणे जीवे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दुविहमायक्ख-एण समुप्पत्तीदो । खीणलोहे जीवे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइओ जीव-भावबंधो; दुविहलोहक्खएण समुप्पत्तीदो । खीणरागे जीवे जो भावो सो अविवाग-पच्चइयो जीवभावबंधो; माय-लोह-हस्स-रदि-तिवेदाणं दुविहकम्मक्खएण समुब्भूद-त्तादो । खीणदोसे जीवे जो भावो सो वि खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; कोह-माण-अरदि सोग-भय-दुगुंछाणं दुविहकम्मक्खएण समुप्पत्तीदो । खीणमोहे जीवे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; अट्ठावीसभेदाभिणमोह-क्खएण समुब्भूदत्तादो । खीणकसायवीदरागछदुमत्थे जीवे जो भावो सो वि खइओ अवि-वागपच्चइयो जीवभावबंधो; पंचवीसकसायाणं णिस्सेसक्खएण समुप्पत्तीदो । जं खइयं सम्मत्तं तं पि खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दंसणमोहक्खएण समु-प्पत्तीदो । जं खइयं चारित्तं तं पि खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, चारि-त्तमोहक्खएण समुप्पत्तीदो । जा खइया दानलब्धि सो वि खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दानंतराइयस्स णिम्मूलक्खएण समुप्पत्तीदो । अरहंता खीणदानंतराइया

क्षीणक्रोध जीवमें जो भाव होता है वह क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह द्रव्य और भाव क्रोधके सर्वथा क्षयमे उत्पन्न होता है । क्षागमान जीवमें जो भाव होता है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह द्रव्यमान और भाव-मानके क्षयसे उत्पन्न होता है । क्षीणमाया जीवमें जो भाव होता है वह भी क्षायिक अविपाक-प्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह दो प्रकारकी मायाके क्षयसे उत्पन्न होता है । क्षीणलोभ जीवमें जो भाव होता है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह दो प्रकारके लोभके क्षयसे उत्पन्न होता है । क्षीणराग जीवमें जो भाव होता है वह भी अविपाक-प्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह दोनों प्रकारके माया, लोभ, हास्य, रति और तीन वेदरूप कर्मोंके क्षयसे उत्पन्न होता है । क्षीणदोष जीवमें जो भाव होता है वह भी क्षायिक अविपाक-प्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह दोनों प्रकारके क्रोध, मान, अरति, शोक, भय और जुगु-प्सरूप कर्मोंके क्षयसे उत्पन्न होता है । क्षीणमोह जीवमें जो भाव होता है वह क्षायिक अवि-पाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह अट्ठाईस प्रकारके मोहनीयके क्षयसे उत्पन्न होता है । क्षीणकषाय-वीतरागछद्मस्थ जीवमें जो भाव होता है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीव-भावबन्ध है, क्योंकि, वह पंचवीस कषायोंके निश्शेष क्षयसे उत्पन्न होता है । जो क्षायिक सम्यक्त्व है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह दर्शनमोहनीयके क्षयसे उत्पन्न होता है । जो क्षायिक चारित्र है, वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह चारित्रमोहनीयके क्षयसे उत्पन्न होता है । जो क्षायिक दानलब्धि है वह भी क्षायिक अवि-पाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह दानान्तरायके निर्मूल क्षयसे उत्पन्न होती है ।

✽ मप्रतिपाठोऽयम् अ-आ-काताप्रतिषु 'समुप्पत्तीए' इति गठः । एवमग्रेऽपि ।

सर्वेति जीवाणमिच्छित्तथे किण्ण देति ? ण, तेसि जीवाणं लाहंताराइयभावादो । जा खइया लाहलद्धी सो खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, लाहंताराइयक्खएण समुप्पत्तीदो । अरहंता जदि खीणलाहंताराइया तो तेसि सव्वत्थोवलंभो किण्ण जायदे ? सच्चं, अत्थि तेसि सव्वत्थोवलंभो, सगायतासेसभुवणत्तादो । जा खइया भोगलद्धी सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, भोगंताराइयक्खएण समुप्पत्तीदो । जा खइया परिभोगलद्धी सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, परिभोगंताराइयक्खएण समुप्पत्तीदो । जदि अरिहंता खीणपरिभोगंताराइया तो किण्ण भोगेति परिभोगेति वा ? ण, खीणकसायाणं उवभोग-परिभोगेहि पओजणाभावादो* । जा खइया विरियलद्धी सो खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, विरियंताराइयक्खएण समुप्पत्तीदो । केवलणाणं केवलदंसणं च खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, केवलणाण-दंसणावरणक्खएण समुप्पत्तीदो । सिद्धे जो भावो सो खइयो अविवागपच्चइयो,

शंका— अरिहन्तोंके दानान्तरायका तो क्षय हो गया है, फिर वे सब जीवोंको इच्छित अर्थ क्यों नहीं देते ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, उन जीवोंके लाभान्तराय कर्मका सञ्जाव पाया जाता है ।

जो क्षायिक लाभलब्धि है वह भी क्षायिक अविपाक प्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह लाभान्तराय कर्मके क्षयसे उत्पन्न होती है ।

शंका— अरिहन्तोंके यदि लाभान्तराय कर्मका क्षय हो गया है तो उनको सब पदार्थोंकी प्राप्ति क्यों नहीं होती ?

समाधान— सत्य है, उन्हें सब पदार्थोंकी प्राप्ति होती है, क्योंकि, उन्होंने अशेष भुवनको अपने आधीन कर लिया हैं ।

जो क्षायिक भोगलब्धि है वह भी जायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह भोगान्तराय कर्मके क्षयसे उत्पन्न होती है । जो क्षायिक परिभोग लब्धि है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह परिभोगान्तराय कर्मके क्षयसे उत्पन्न होती है ।

शंका— यदि अरिहन्तोंके (भोगान्तराय और) परिभोगान्तराय कर्मका क्षय हो गया है तो वे अन्य पदार्थोंका (उपभोग और) परिभोग क्यों नहीं करते ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, जो जीव क्षीणकषाय होते हैं उनका उपभोग-परिभोगसे प्रयोजन नहीं रहता ।

जो क्षायिक वीर्यलब्धि है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह वीर्यान्तराय कर्मके क्षयसे उत्पन्न होती है । केवलज्ञान और केवलदर्शन क्षायिक अविपाक-प्रत्ययिक जीवभावबन्ध हैं, क्योंकि, ये क्रमशः केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरण कर्मके क्षयसे उत्पन्न होते हैं जो सिद्धभाव है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि,

❀ प्रतिष्ठा ' उपभोगे परिभोगेहि य जोजणाभावादो ' इति पाठः ।

अट्ठकम्मवक्खएण समुप्पत्तीदो । बुद्धे जो भावी सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, अंतरंग-बहिरंगावरणवक्खएण समुप्पत्तीदो । परिणिट्ठुदे जो भावी सो वि खइयो अविवागपच्चइओ, असेसकम्मवक्खएण समुप्पत्तीदो । सब्बदुक्खाणमंतयडत्तं पि खइयो अविवागपच्चइओ, सब्बदुक्खएण समुप्पत्तीदो । जे च अमी पुब्बुत्ता भावा अण्णे च समयं पडि समुत्तभूदा सो सब्बो खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम ।

जो सो तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देशो —
 खओवसमियं एइंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं बीइंदियलद्धि त्ति वा
 खओवसमियं तीइंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं चउरिंदियलद्धि त्ति वा
 खओवसमियं पंचिंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं मदिअण्णाणि त्ति वा
 खओवसमियं सुवअण्णाणि त्ति वा खओवसमियं विहंगणाणि त्ति वा
 खओवसमियं आभिनिबोहियणाणि त्ति वा खओवसमियं सुवणाणि त्ति
 त्ति वा खओवसमियं ओहिणाणि त्ति वा खओवसमियं मण—

वह आठों कर्मोंके क्षयसे उत्पन्न होता है । जो बुद्धभाव है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबंध है, क्योंकि, वह अंतरंग और बहिरंग आवरणके क्षयसे उत्पन्न होता है । जो परिनिर्वृत भाव है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक है, क्योंकि, वह अशेष कर्मोंके क्षयसे उत्पन्न होता है । सब दुःखोंका अन्तकृत्व भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक है, क्योंकि, वह सब दुःखोंके क्षयसे उत्पन्न होता । ये पूर्वोक्त भाव और दूसरे भी भाव जो प्रतिसमय उत्पन्न होते हैं वह सब क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबंध है ।

विशेषार्थ— यहाँ क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबंध इक्कीस गिनाये हैं और इनके साथ प्रतिसमय होनेवाले अन्य क्षायिक भावोंकी सूचना की है । तत्त्वार्थसूत्रमें क्षायिक सम्यक्त्व, क्षायिक चारित्र, केवलज्ञान, केवलदर्शन और पाँच क्षायिक लब्धियाँ; ये कुल नौ भाव गिनाये हैं । यहाँ गिनाये गये भावोंमें कुछ ऐसे भाव अवश्य हैं जिनका अलगसे उल्लेख करना यहां आवश्यक है । जैसे सिद्धभाव, सर्वदुःख-अन्तकृद्भाव आदि । शेषका कथंचित् अन्तर्भाव हो जाता है । यद्यपि पाँच लब्धियोंका काम बाह्य सामग्रीकी प्राप्त नहीं है, किन्तु कहीं कहीं उनका काम बाह्य सामग्रीकी प्राप्ति बतलाया गया है, जो उपचार कथन है ।

जो तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबंध है उसका निर्देश इस प्रकार है—
 क्षायोपशमिक एकेन्द्रियलब्धि, क्षायोपशमिक द्वीन्द्रियलब्धि, क्षायोपशमिक त्रीन्द्रियलब्धि, क्षायोपशमिक चतुरिन्द्रियलब्धि, क्षायोपशमिक पञ्चेन्द्रियलब्धि,
 क्षायोपशमिक मत्तज्ञानी, क्षायोपशमिक श्रुताज्ञानी, क्षायोपशमिक विभंगज्ञानी,
 क्षायोपशमिक आभिनिबोधिकज्ञानी, क्षायोपशमिक श्रुतज्ञानी,
 क्षायोपशमिक अवधिज्ञानी, क्षायोपशमिक मनःपर्यय—

पञ्जवणाणि त्ति वा खओवसमियं चक्खुदंसणि त्ति वा खओवसमियं
 अचक्खुदंसणि त्ति वा खओवसमियं ओहिदंसणि त्ति वा खओवसमियं
 सम्मामिच्छत्तलद्धि त्ति वा खओवसमियं सम्मत्तलद्धि त्ति वा खओव-
 समियं संजमासंजमलद्धि त्ति वा खओवसमियं संजमलद्धि त्ति वा खओव-
 समियं दाणलद्धि त्ति वा खओवसमियं लाहलद्धि त्ति वा खओवसमियं
 भोगलद्धि त्ति वा खओवसमियं परिभोगलद्धि त्ति वा खओवसमियं
 वीरियलद्धि त्ति वा खओवसमियं से आचारधरे त्ति वा खओवसमियं
 सूदयडधरे त्ति वा खओवसमियं ठाणधरे त्ति वा खओवसमियं
 समवायधरे त्ति वा खओवसमियं वियाहपण्णत्तिधरे त्ति वा खओव-
 समियं णाहधम्मधरे त्ति वा खओवसमियं उवासयज्जेणधरे त्ति वा
 खओवसमियं अंतयडधरे त्ति वा खओवसमियं अनुत्तारोववादियदस-
 धरे त्ति वा खओवसमियं पण्णवागरणधरे त्ति वा खओवसमियं
 विवागसुत्ताधरे त्ति वा खओवसमियं दिट्ठिवादधरे त्ति वा खओवसमियं
 गणि त्ति वा खओवसमियं वाचगे त्ति वा खओवसमियं दसपुव्वहरे
 त्ति वा खओवसमियं चोद्दसपुव्वहरे त्ति वा जे चामण्णे एवमादिया
 खओवसमियभावा सो सव्वो तदुभयपच्चइओ जीवभावबंधो णाम।१९।

ज्ञानी, क्षायोपशमिक चक्षुदर्शनी, क्षायोपशमिक अचक्षुदर्शनी, क्षायोपशमिक अवधि-
 दर्शनी, क्षायोपशमिक सम्यग्ध्यात्वलब्धि, क्षायोपशमिक सम्यक्त्वलब्धि, क्षायोप-
 शमिक संयमासंयमलब्धि, क्षायोपशमिक संयमलब्धि, क्षायोपशमिक दानलब्धि, क्षायोप-
 शमिक लाभलब्धि, क्षायोपशमिक भोगलब्धि, क्षायोपशमिक परिभोगलब्धि, क्षायोप-
 शमिक वीर्यलब्धि, क्षायोपशमिक आचारधर, क्षायोपशमिक सूत्रकृद्धर, क्षायोपशमिक
 स्थानधर, क्षायोपशमिक समवायधर, क्षायोपशमिक व्याख्याप्रज्ञप्तिधर, क्षायोपशमिक
 नाथधर्मधर, क्षायोपशमिक उपासकाध्ययनधर, क्षायोपशमिक अन्तकृद्धर, क्षायोपशमिक
 अनुत्तरोपपादिकदशधर, क्षायोपशमिक प्रश्नव्याकरणधर, क्षायोपशमिक विपाकसूत्रधर,
 क्षायोपशमिक दृष्टिवादधर, क्षायोपशमिक गणी, क्षायोपशमिक वाचक, क्षायोपशमिक
 दशपूर्वधर, क्षायोपशमिक चतुर्वश पूर्वधर; ये तथा इसी प्रकारके और भी दूसरे जो
 क्षायोपशमिक भाव हैं वह सब तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है ॥ १९ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो उच्चवे । तं जहा-एत्थ सव्वे वा-सद्दा समुच्चयट्ठे दट्ठव्वा ।
 एइंदियलद्धि त्ति एदं च खओवसमियं, पाणिदियावरणखओवसमेण समुप्पत्तीए । बेइं-
 दियलद्धि त्ति एदं पि खओवसमियं, फांसिदियावरणखओवसमेण समुप्पत्तीए ।
 तीइंदियलद्धि त्ति एदं च खओवसमियं, जिब्भा फास-घाणिदियावरणाणं खओवसमेण
 समुप्पत्तीए । चउरिंदियलद्धि त्ति एदं च खओवसमियं, जिब्भा-फास-घाण- चक्खि-
 दियावरणाणं खओवसमेण समुप्पत्तीए । पविंदियलद्धि त्ति एदं च खओवसमियं,
 पंचण्णमिदियावरणाणं खओवसमेण समुप्पत्तीए । मदिअण्णाणि त्ति एदं पि खओव-
 समियं, मदिणाणावरणखओवसमेण समुप्पत्तीए । कुदो एदं मदिअण्णाणि त्तं तदुभयप-
 च्चइयं ? मिच्छत्तस्स सव्वघादिफट्ठयाणमुदएण णाणावरणीयस्स देसघादिफट्ठयाण-
 मुदएण तस्सेव सव्वघादिफट्ठयाणमुदयक्खएण च मदिअण्णाणित्त्पत्तीदो । सुदअ-
 ण्णाणि त्ति तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो, सुदणाणावरणस्स देसघादिफट्ठयाणमुदएण
 मिच्छत्तोदयाणुविद्धेण समुप्पत्तीदो । विहंगणाणि त्ति तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो,
 ओहिणाणावरणदेसघादिफट्ठयाणमुदएण मिच्छत्ताणुविद्धेण समुप्पत्तीदो । आभि-
 णिबोहियणाणाणि त्ति तदुभयपच्चइओ जीवभावबंधो, मदिणाणाणावरणीयस्स
 देसघादिफट्ठयाणमुदएण तिविहसम्मत्तसहाएण तदुप्पत्तीदो । आभिणिबोहियणाणस्स

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यथा-दस सूत्रमें सब 'वा' शब्द समुच्चयरूप अर्थमें
 जानने चाहिये । एकेन्द्रियलब्धि यह भी क्षायोपशमिक है, क्योंकि, वह स्पर्शनइन्द्रियावरण
 कर्मके क्षायोपशमसे उत्पन्न होती है । द्वीन्द्रियलब्धि यह भी क्षायोपशमिक है, क्योंकि, वह
 जिह्वा और स्पर्शन इन्द्रियावरण कर्मके क्षायोपशमसे उत्पन्न होती है । त्रीन्द्रियलब्धि यह भी
 क्षायोपशमिक है, क्योंकि, यह जिह्वा, स्पर्शन और घ्राण इन्द्रियावरण कर्मके क्षायोपशमसे
 उत्पन्न होती है । चतुरिन्द्रियलब्धि यह भी क्षायोपशमिक है, क्योंकि, यह जिह्वा, स्पर्शन, घ्राण
 और चक्षु इन्द्रियावरण कर्मके क्षायोपशमसे उत्पन्न होती है । पचेन्द्रियलब्धि यह भी क्षायो-
 पशमिक है, क्योंकि, यह पाँचों इन्द्रियावरण कर्मके क्षायोपशमसे उत्पन्न होती है । मत्यज्ञानी
 यह भी क्षायोपशमिक है, क्योंकि, यह मतिज्ञानावरण कर्मके क्षायोपशमसे उत्पन्न होता है ।

शका- यह मत्यज्ञानित्व तदुभयप्रत्ययिक कैसे है ?

समाधान- मिथ्यात्वके सर्वघाती स्पर्धकोंका उदय होनेसे तथा ज्ञानावरणीयके देश-
 घाति स्पर्धकोंका उदय होनेसे और उसीके सर्वघाति स्पर्धकोंका उदयक्षय होनेसे मत्यज्ञानित्वकी
 उत्पत्ति होती है, इसलिये वह तदुभयप्रत्ययिक है ।

श्रुतज्ञानी तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, यह मिथ्यात्व कर्मके उदयसे
 युक्त श्रुतज्ञानावरण कर्मके देशघाति स्पर्धकोंके उदयसे उत्पन्न होता है । विभंगज्ञानी तदुभय-
 प्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, मिथ्यात्वसे युक्त अवधिज्ञानावरण कर्मके देशघाति स्पर्ध-
 कोंके उदयसे इसकी उत्पत्ति होती है । आभिनिबोधिकज्ञानी तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है,
 क्योंकि, तीन प्रकारके सम्यक्त्वसे युक्त मतिज्ञानावरणीय कर्मके देशघाति स्पर्धकोंके उदयसे
 इसकी उत्पत्ति होती है ।

उदयपच्चइयत्तं घडदे, मदिणाणावरणीयस्स देसघादिफट्ठयाणमुदएण समुप्पत्तीए ।
 णोवसमियपच्चइयत्तं, उवसमाणुवलभादो? ण, णाणावरणीयसव्वघादिफट्ठयाणमुदया-
 भावेण उवसमसण्णिदेण आभिणिबोहियणाणुप्पत्तिदंसणादो । एवं सुदणाणि-ओहिणाणि
 मणपज्जवणाणि-चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणि-ओहिदंसणिआदीणं वत्तत्वं, विसेसाभावा-
 दो । सम्मामिच्छत्तलद्धि त्ति खओवसमियं, सम्मामिच्छत्तोदयजणिदत्तादो । सम्मामि-
 च्छत्तफट्ठयाणि सव्वघादीणि चेव, कथं तदुदएण समुप्पणं सम्मामिच्छत्तं उभयपच्च-
 इयं होदि? ण, सम्मामिच्छत्तफट्ठयाणमुदयस्स सव्वघावित्ताभावादो । तं कुदो णव्वदे?
 तत्थतणसम्मत्तस्सुप्पत्तीए अण्णहाणुववत्तीदी । सम्मामिच्छत्तदेसघादिफट्ठयाणमुदएण
 तस्सेव सव्वघादिफट्ठयाणमुदयाभावेण उवसमसण्णिदेण सम्मामिच्छत्तमुप्पज्जदि त्ति
 तदुभयपच्चइयत्तं । (सम्मत्तलद्धि त्ति खओवसमियं, सम्मतोदयजणिदत्तादो । सम्मत-
 फट्ठयाणि देसघादीणि चेव, कथं तदुदएण समुप्पणं उभयपच्चइयं होदि?) ण, सम्मत

शंका- आभिनिबोधिकज्ञानके उदयप्रत्ययिकपना बन जाता है, क्योंकि, मतिज्ञानावरण कर्मके देशघाति स्पर्धकोंके उदयसे इसकी उत्पत्ति होती है । पर औपशमिकनिमित्तकपना नहीं बनता, क्योंकि, मतिज्ञानावरण कर्मका उपशम नहीं पाया जाता ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, ज्ञानावरणीय कर्मके सर्वघाति स्पर्धकोंके उपशम संज्ञावाले उदयाभावसे आभिनिबोधिक ज्ञानकी उत्पत्ति देखी जाती है, इसलिये इसका औपशमिकनिमित्तकपना भी बन जाता है ।

इसी प्रकार श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्ययज्ञानी, चक्षुदर्शनी, अचक्षुदर्शनी और अवधिदर्शनी आदिका कथन करना चाहिये, क्योंकि, उपर्युक्त कथनसे इनके कथनमें कोई विशेषता नहीं है ।

सम्यग्मिथ्यात्व लब्धि क्षायोपशमिक है, क्योंकि, वह सम्यग्मिथ्यात्वके उदयसे उत्पन्न होती है ।

शंका- सम्यग्मिथ्यात्व कर्मके स्पर्धक सर्वघाति ही होते हैं, इसलिये इनके उदयसे उत्पन्न हुआ सम्यग्मिथ्यात्व उभयप्रत्ययिक कैसे हो सकता है ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, सम्यग्मिथ्यात्व कर्मके स्पर्धकोंका उदय सर्वघाति नहीं होता ।

शंका- वह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान- क्योंकि, सम्यग्मिथ्यात्वमें सम्यक्त्वरूप अंशकी उत्पत्ति अन्यथा बन नहीं सकती । इससे मालूम पड़ता है कि सम्यग्मिथ्यात्व कर्मके स्पर्धकोंका उदय सर्वघाति नहीं होता ।

सम्यग्मिथ्यात्वके देशघाति स्पर्धकोंके उदयसे और उसीके सर्वघाति स्पर्धकोंके उपशम संज्ञा-वाले उदयाभावसे सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्पत्ति होती है, इसलिये वह तदुभयप्रत्ययिक कहा गया है ।

सम्यक्त्वलब्धि क्षायोपशमिक है, क्योंकि, वह सम्यक्प्रकृतिके उदयसे उत्पन्न होती है ।

शंका- सम्यक्प्रकृतिके स्पर्धक देशघाति ही होते हैं । उसके उदयसे उत्पन्न हुआ सम्यक्त्व उभयप्रत्ययिक कैसे हो सकता है ?

❖ ताप्रती ' ण, (सम्मतलद्धित्ति तदुभयपच्चइयत्तं), सम्मतं- 'इति पाठः ।

देसघादिफट्टयाणमुदएण सम्मत्तुप्पत्तीदो ओदइयं । ओवसमियं पि तं, सब्बघादिफट्ट-
याणमुदयाभावादो । दंसणमोहणीयभेदसम्मत्तफट्टयाणं सब्बघादित्तणेण उवसंताणं
देसघादित्तणेण उदिण्णाणं कारियं वेदगसम्मत्तमिदि तदुभयपच्चइयत्तं उच्चवि त्ति
भणिदं होवि । एसो अत्थो पुब्बिल्लेसु उत्तरिल्लेसु पदेसु जोजेयव्वो, पहाणत्तादो । एवं
संजमासंजम-संजम-दान-लाह-भोग-परिभोग-वीरियलद्धीणं पि तदुभयपच्चइयत्तं परू-
वेयव्वं । आचारधरे त्ति तदुभयपच्चइयो जीवभावबन्धो, आचारसुदणानावरणस्स
देसघादिफट्टयाणं सब्बघादित्तणेण उवसंताणमुदएण आचारसुदुप्पत्तीदो । एवं जणिदूण
वत्तव्वं जाव दिट्ठिवादधरे त्ति वा । एका दशांगविद्गणी । द्वादशांगविद्वाचकः । एवमेदे
खओवसमिया भावा अण्णे वि सुहुमीभूदा तदुभयपच्चइयो जीवभावबन्धो णाम ।

जो सो अजीवभावबन्धो णाम सो तिविहो विवागपच्चइयो
अजीवभावबन्धो चेव अविवागपच्चइयो अजीवभावबन्धो चेव तदुभय-
पच्चइयो अजीवभावबन्धो चेवं ॥ २० ॥

मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगेहितो पुरिसपओगेहि वा जे णिप्पणा अजीवभावा

समाधान- नहीं, क्योंकि सम्यक्त्वके देशघाति स्पर्धकोंके उदयसे सम्यक्त्वकी उत्पत्ति
होती है, इसलिये तो वह औदायिक है । और वह औपशमिक भी है, क्योंकि, वहाँ सर्वघाति
स्पर्धकोंका उदय नहीं पाया जाता ।

सम्यक्प्रकृति दर्शनमोहनीयका एक भेद है । उसके सर्वघातिरूपसे उपशमको प्राप्त हुए
और देशघातिरूपसे उदयको प्राप्त हुए स्पर्धकोंका वेदकसम्यक्त्व कार्य है, इसलिये वह तदुभय-
प्रत्ययिक कहा गया है; यह उक्त कतनका तात्पर्य है । इस अर्थकी पहलुके और आगेके सब
पदोंमें योजना करनी चाहिए, क्योंकि, उभयनिमित्तक भावोंमें इसीकी प्रधानता है ।

इसी प्रकार संयमासंयमलब्धि, संयमलब्धि, दानलब्धि, लाभलब्धि, भोगलब्धि, परि-
भोगलब्धि और वीर्यलब्धिको भी तदुभयप्रत्ययिक कहना चाहिये ।

आचारधर तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, आचारश्रुतज्ञानावरणके सर्वघाति-
रूपसे उपशमको प्राप्त हुए देशघातिस्पर्धकोंके उदयसे आचारश्रुतकी उत्पत्ति होती है इसी प्रकार
दृष्टिवादधर तकके सब पदोंका जातकर व्याख्यान करना चाहिये ।

ग्यारह अंगका ज्ञाता गणी कहलता है और बारह अंगका ज्ञाता वाचक कहलता है ।

इस प्रकार ये क्षायोपशमिक भाव और अति सूक्ष्म दूसरे भी क्षायोपशमिक भाव
तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध हैं ।

विशेषार्थ- यहाँपर क्षायोपशमिकभावके भेद बहुत विस्तारसे किए गए हैं, फिर भी
तत्त्वार्थसूत्रमें इस भावके जितने भेद किए गए हैं उनमें इन सब भावोंका अन्तर्भाव हो जाता है ।

अजीवभावबन्ध तीन प्रकारका है-विपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध, अविपाक-
प्रत्ययिक अजीवभावबन्ध और तदुभयप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध ॥ २० ॥

मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और योगसे या पुरुषके प्रयत्नसे जो अजीवभाव उत्पन्न होते हैं

तेसि विवागपच्चइओ अजीवभावबंधो त्ति सण्णा । जे अजीवभावा मिच्छतादिकार-
णेहि विणा समुप्पण्णा तेसिमविवागपच्चइओ अजीवभावबंधो त्ति सण्णा । जे दोहि
वि कारणेहि समुप्पण्णा तेसि तदुभयपच्चइयो अजीवभावबंधो त्ति सण्णा । एवं
तिविहो चेव अजीवभावबंधो होदि, अण्णस्स असंभवादो ।

जो सो विवागपच्चइयो अजीवभावबंधो णाम तस्स इमो
णिहेसो-पओगपरिणदा वण्णा पओगपरिणदा सद्दा पओगपरिणदा
गंधा पओगपरिणदा रसा पओगपरिणदा फासा पओगपरिणदा गदो
पओगपरिणदा ओगाहणा पओगपरिणदा संठाणा पओगपरिणदा
खंधा पओगपरिणदा खंधदेसा पओगपरिणदा खंधपदेसा जे चामण्णे
एवमादिया पओगपरिणदसंजुत्ता भावा सो सब्बों विवागपच्चइओ
अजीवभावबंधो णाम ॥ २१ ॥

वण्णणामकम्मोदएण ओरालियसरीरखंधेसु जादवण्णा पओगपरिणदा णाम,

उनकी विपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध यह संज्ञा है । जो अजीवभाव मिथ्यात्व आदि कारणोंके
बिना उत्पन्न होते हैं उनकी अविपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध यह संज्ञा है । और जो दोनों ही
कारणोंसे उत्पन्न होते हैं उनकी तदुभयप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध यह संज्ञा है । इस तरह
तीन प्रकारका ही अजीवभावबन्ध होता है, क्योंकि, इनके सिवा अन्य अजीवभावबन्ध
सम्भव नहीं है ।

विशेषार्थ—यहाँ जीवभावबन्धके समान अजीवभावबन्ध भी तीन प्रकारका बतलाया
गया है । यहाँ विपाकसे पुरुषका प्रयत्न या उसके मिथ्यात्व आदि भाव लिये गये हैं । इनके
निमित्तसे पुद्गलकी जो रूप रसादि पर्यायें या दूसरी अवस्थायें होती हैं वे विपाकप्रत्ययिक
अजीवभावबन्ध कहलाते हैं । जो पुरुषके प्रयत्नके बिना पुद्गलके बन्धरूप विविध प्रकारके परि-
णमन होते हैं वे अविपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध कहलाते हैं और तदुभय इन दोनोंरूप होते
हैं । यह उक्त वचनका सार है ।

जो विपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध होता है उसका निर्देश इस प्रकार है—
प्रयोगपरिणत वर्ण, प्रयोगपरिणत शब्द, प्रयोगपरिणत गन्ध, प्रयोगपरिणत रस,
प्रयोगपरिणत स्पर्श, प्रयोगपरिणत गति, प्रयोगपरिणत अवगाहना, प्रयोगपरिणत
संस्थान, प्रयोगपरिणत स्कन्ध, प्रयोगपरिणत स्कन्धदेश और प्रयोगपरिणत स्कन्ध-
प्रदेश; ये और इनसे लेकर जो दूसरे भी प्रयोगपरिणत संयुक्त भाव होते हैं वह सब
विपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध है ॥ २१ ॥

वर्ण नामकर्मके उदयसे औदारिकशरीरके स्कन्धोंमें उत्पन्न हुए वर्ण प्रयोगपरिणत वर्ण हैं

हल्लिहचुण्णजोगेण पूअफल-पण्णचुण्णसंजोगेण वा जणिदवण्णा वि पओअपरिणदा णाम।
संख-वीणा-वंस-भेरी-पटह-झल्लरी-मुडंगसद्दा कंठोद्दादिजणिदसद्दा च पओअपरिणदा ति
भण्णंते । गंधजुत्तिसत्थवुत्तविहाणेण जणिदगंधा पओअपरिणदा णाम । सूअसत्थउत्त-
विहाणेण जणिदरसा पओअपरिणदा रसा णाम रसणामकम्मजणिदरसा वा । फासणा-
मकम्मोदयजणिददुफासा पओअपरिणदा णाम रुवादिपासा^१ वा । कंड-सेल्ल-जंत-
गोफण-वत्थरादीणं गई पओअपरिणदा । कट्टिमजिणभवणादीणमोगाहणा पओअपरि-
णदा । कट्ट-सिला-थंभ-तुलादीणं कट्टिमाणं संठाणा पओअपरिणदा । घट-पिडर-रंजणा-
दीणं पि कट्टिमाणं खंधा पओअपरिणदा । पओअपरिणदाणं खंधाणमद्वं तिभागो वा
पओअपरिणदा^२ खंधदेसा । पओअपरिणदाणं खंधाणं भेदं गदाणं चट्ठुवभागो पंचम-
भागो वा पओअपरिणदा खंधपदेसा । जे च अमी अण्णे च एवमादिया पओअपरिणदा
संजुत्ता भावा सो सव्वो विवागपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम ।

**जो सो अविवागपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम तस्स इमो
णिद्देसो- विस्ससापरिणदा वण्णा विस्ससापरिणदा सद्दा विस्ससापरि-
णदा गंधा विस्ससापरिणदा रसा विस्ससापरिणदा फासा विस्ससा**

या हलदीके और चूनेके योगसे अथवा पूगफल और पर्णचूर्णके योगसे उत्पन्न हुए वर्ण भी प्रयोगपरिणत वर्ण हैं । शंख, वीणा, बांस, भेरी, पटह, झालर और मृदंगके शब्द और कण्ठ, ओष्ठ आदिसे उत्पन्न हुए शब्द भी प्रयोगपरिणत शब्द हैं । गन्ध बनानेकी युक्तिका कथन करनेवाले शास्त्रमें जो विधि कही है उसके अनुसार उत्पन्न किये गये गन्ध प्रयोगपरिणत गन्ध हैं । भोजनशास्त्रमें कही हुई विधिके अनुसार उत्पन्न किये गये रस प्रयोगपरिणत रस हैं या रस नामकर्मके उदयसे उत्पन्न हुए रस प्रयोगपरिणत रस हैं । स्पर्श नामकर्मके उदयसे उत्पन्न हुए आठ प्रकारके स्पर्श प्रयोगपरिणत स्पर्श हैं, अथवा रुई आदिमें सस्कारसे जो आठ प्रकारके स्पर्श उत्पन्न किये जाते हैं वे प्रयोगपरिणत स्पर्श हैं ।

लकड़ी, शैल, यन्त्र, गोफन और पत्थर आदिकी गति प्रयोगपरिणत गति है । कृत्रिम जिनभवन आदिकी अवगाहना प्रयोगपरिणत अवगाहना है । बनाये गये काष्ठ, शिला, स्तम्भ और तराजू आदिके आकार प्रयोगपरिणत संस्थान हैं । बनाये गये घट, पिडर और रंजन आदिके भी स्कन्ध प्रयोगपरिणत स्कन्ध हैं । प्रयोगपरिणत स्कन्धोंका चौथा भाग या तृतीय भाग प्रयोगपरिणत स्कन्धदेश हैं और भेदको प्राप्त हुए प्रयोगपरिणत स्कन्धोंका चौथा भाग या पाँचवाँ भाग प्रयोगपरिणत स्कन्धप्रदेश हैं । ये या इनसे लेकर इसी प्रकारके प्रयोगपरिणत जो दूसरे भी संयुक्त भाव हैं वह सब विपाकप्रत्ययिक अजीव भावबन्ध हैं ।

जो अविपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है-विस्ससा-परिणत वर्ण, विस्ससापरिणत शब्द, विस्ससापरिणत गन्ध, विस्ससापरिणत रस, विस्ससा-

परिणदा गदी विस्ससापरिणदा ओगाहणा विस्ससापरिणदा
 संठाणा विस्ससापरिणदा खंधा विस्ससापरिणदा खंधदेसा
 विस्ससापरिणदा खंधपदेसा जे चामण्णे एवमादिया विस्ससापरिणदा
 संजुत्ता भावा सो सब्बो अविवागपच्चइओ अजीवभावबंधो
 णाम ॥ २२ ॥

अवट्टिमाणं भवण-विमाण-मेरु कुलसेलादीणं वण्णो पुढवि-आउ तेउ-वाऊणमकट्टिम-
 वण्णा च विस्ससापरिणदा णाम । वंसादीणं मुत्तिदव्वणं संघट्टणेण समुट्ठिदा विस्स-
 सापरिणदा सट्ठा । कत्थूरि-कुंकुमागरु-तमालपत्तादीणं जे साभाविया गंधा ते विस्स-
 सापरिणदा गंधा । जंबू-जंवीर-पणसंवादीणं फलाणं पुष्पंकुरादीणं च साभाविया जे
 रसा ते विस्ससापरिणदा रसा । पउमुप्पलादीणं जे साभाविया फासा ते विस्ससाप-
 रिणदा फासा । चंदाइच्चगह-णक्खत्त-ताराणं वाऊणं च जा गदी सा विस्ससाप-
 रिणदा गदी । अकिट्टिमाणं भवणविमाणानं जिणहराणं सिद्धखेत्तागासानं जा
 ओगाहणा सा विस्ससापरिणदा ओगाहणा णाम । गंध रस-फासा जेसु पुब्बुद्धिदा
 ते गंध-रस-फासणामकम्मोदयजणिदा त्ति अविवागपच्चइत्तं ण जुज्जवे?जदि
 एवं तो एदे मोत्तूण पोग्गलाणं जे साभाविया गंध-रस-फासा ते घेत्तव्वा ।

परिणत स्पर्श, विस्ससापरिणत गति, विस्ससापरिणत अवगाहना, विस्ससापरिणत
 संस्थान, विस्ससापरिणत स्कन्ध, विस्ससापरिणत स्कन्धदेश और विस्ससापरिणत
 स्कन्धप्रदेश; ये और इनसे लेकर इसी प्रकारके विस्ससापरिणत जो दूसरे संयुक्त
 भाव हैं वह सब अविपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध है ॥ २२ ॥

अकृत्रिम भवन, विमान, मेरुवर्त और कुलपर्वत आदिके वर्ण या पृथिवी, जल, अग्नि
 और वायुके अकृत्रिम वर्ण विस्ससा परिणत वर्ण हैं । बांस आदि मूर्त द्रव्योंके संघर्षणसे उत्पन्न हुए
 शब्द विस्ससापरिणत शब्द हैं । कस्तूरी, कुंकुम, अगरु और तमालपत्र आदिकी जो स्वाभाविक
 गन्ध होती है वह विस्ससापरिणत गन्ध है । जम्बू, जंवीर, पनस और आम्र आदि फलोंके तथा फूल
 और अंकुर आदिके जो स्वाभाविक रस होते हैं वे विस्ससापरिणत रस हैं । पद्म और उत्पल आदिके
 जो स्वाभाविक स्पर्श होते हैं वे विस्ससापरिणत स्पर्श हैं । चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और ताराओंकी
 तथा वायुकी जो गति होती है वह विस्ससापरिणत गति है । अकृत्रिम भवन, विमान और जिन-
 घर आदि तथा सिद्धक्षेत्रके आकाशकी जो अवगाहना है वह विस्ससापरिणत अवगाहना है ।

शंका-जिन पदार्थोंमें पूर्वनिर्दिष्ट गन्ध, रस और स्पर्श नामकर्मके उदयसे उत्पन्न
 हुए गन्ध, रस और स्पर्श होते हैं वे अविपाकप्रत्ययिक नहीं बन सकते ?

समाधान-यदि ऐसा है तो इन्हें छोड़कर पुद्गलोंके जो स्वाभाविक वर्ण, गन्ध, रस और
 स्पर्श होते हैं वे यहाँपर लेने चाहिये ।

चंदाइच्च-गह-णक्खत्त-ताराणं भवण-विमाण-कुलसेलादीणंच जे साभाविया संठाणा ते विस्ससापरिणदा संठाणा । तेसि चेव चंदाइच्चविवादीणं जे खंधा ते विस्ससा-परिणदा खंधा । मेहादीणं विस्ससापरिणदखंधाणं जाणि खंधाणि ताणि विस्ससा-परिणदा खंधदेसा । मेहिंदहणु-विज्जु चंदक्कादीणं ॐ जे अवयवा ते विस्ससापरिणदा खंधपदेसा । जे च इमे पुव्वहिट्ठा अण्णे च एवमादिया विस्ससापरिणदा संजुत्ता भावा सो सव्वो अविवागपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम ।

जो सो तदुभयपच्चइयो अजीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो पओअपरिणदा वर्णा वर्णा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा सद्दा सद्दा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा गंधा गंधा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा रसा रसा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा फासा फासा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा गदी गदी विस्ससापरिणदा (पओअपरिणदा ओगाहणा ओगाहणा विस्ससापरिणदा) पओअपरि-णदा संठाणा संठाणा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा खंधा खंधा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा खंधदेसा खंधदेसा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा खंधपदेसा खंधपदेसा विस्ससापरिणदा जे चामण्णे एवमादिया पओअ-विस्ससापरिणदा संजुत्ता भावा सो सव्वो तदुभय-पच्चइओ अजीवभावबंधो णाम ॥ २३ ॥

चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारकाओंके तथा भवन, विमान और कुलाचल आदिके जो स्वाभाविक संस्थान होते हैं वे विस्ससापरिणत संस्थान हैं । उन्हीं चन्द्र सूर्यके विम्ब आदिके जो स्कन्ध होते हैं वे विस्ससापरिणत स्कन्ध हैं । स्वभावसे परिणत हुए मेघादिके स्कन्धोंके जो स्कन्ध होते हैं वे विस्ससापरिणत स्कन्धदेश हैं । मेघ, इन्द्रधनुष, बिजली, चन्द्र और सूर्य आदिके जो अवयव होते हैं वे विस्ससापरिणत स्कन्धप्रदेश हैं । ये पूर्वोक्त और इनसे लेकर इसी प्रकारके विस्ससापरिणत और भी जो संयोगको प्राप्त हुए भाव हैं वह सब अविपाकप्रत्ययिक अजीवभावबंध हैं ।

जो तदुभयप्रत्ययिक अजीवभावबंध हैं उसका निर्देश इस प्रकार है—प्रयोग-परिणत वर्ण और विस्ससापरिणत वर्ण, प्रयोगपरिणत शब्द और विस्ससापरिणत शब्द, प्रयोगपरिणत गंध और विस्ससापरिणत गन्ध, प्रयोगपरिणत रस और विस्ससा-परिणत रस, प्रयोगपरिणत स्पर्श और विस्ससापरिणत स्पर्श, प्रयोगपरिणत गति और विस्ससापरिणत गति, (प्रयोगपरिणत अवगाहना और विस्ससापरिणत अवगाहना) प्रयोगपरिणत संस्थान और विस्ससापरिणत संस्थान, प्रयोगपरिणत स्कन्ध, प्रयोगपरिणत स्कन्धदेश और विस्ससापरिणत स्कन्धदेश, प्रयोगपरिणत स्कन्धप्रदेश और विस्ससापरिणत स्कन्धप्रदेश; ये और इनसे लेकर प्रयोग और विस्ससापरिणत जितने भी संयुक्तभाव हैं वह सब तदुभयप्रत्ययिक अजीवभावबंध हैं । २३ ।

एदस्स अत्थो वुच्चदे-पओअपरिणदखंधवण्णेहि विस्ससापरिणदखंधवण्णाणं जो संजोगो सो तदुभयपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम । को एत्थ संबंधो घेप्पदे? संजोग-लक्खणो समवायलक्खणो वा । तत्थ संजोगो दुविहो देसपच्चासत्तिकओ गुणपच्चा-सत्तिकओ चेदि । तत्थ देसपच्चासत्तिकओ णाम दोण्णं दव्वाणमवयवफासं काऊण जमच्छणं सो देसपच्चासत्तिकओ संजोगो । गुणेहि जमण्णोण्णाणुहरणं सो गुणपच्चा-सत्तिकओ संजोगो । समवायसंजोगो सुगमो । एवं सद्-गंध-रस-फासोगाहण-संठाण-गदि-खंध-खंधदेस-खंधपदेसाणं च जहासंभवं दुसंजोगपरूवणा कायव्वा । सुगमं ।

जो सो थप्पो दव्वबंधो णाम सो दुविहो आगमथो दव्वबंधो चेव णोआगमदो दव्वबंधो चेव ॥ २४ ॥

एवं दुविहो चेव दव्वबंधो, अण्णस्सासंभवादो ।

जो सो आगमदो^१ दव्वबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो—ठिबं जिदं परिजिदं वायणोवगदं सुत्तसमं अत्थसमं गंथसमं णामसमं घोससमं । जा तत्थ वायणा वा पुच्छणा वा पडिच्छणा वा परियट्ठणा वा वणुपेहणा वा थय-थुदि-धम्मकहा वा जे चामण्णे एवमादिया अणुवजोगा दव्वे ति

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— प्रयोगपरिणत स्कन्धोंके वर्णोंके साथ विस्ससापरिणत स्कन्धोंके वर्णोंका जो संयोग होता है वह तदुभयप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध है ।

शंका—यहाँ कौनसा सम्बन्ध लिया गया है ?

समाधान—संयोगसम्बन्ध और समवायसम्बन्ध दोनों लिये गये हैं ।

संयोग दो प्रकारका है—देशप्रत्यासत्तिकृत संयोगसम्बन्ध और गुणप्रत्यासत्तिकृत संयोगसम्बन्ध । देशप्रत्यासत्तिकृतका अर्थ है दो द्रव्योंके अवयवोंका सम्बद्ध होकर रहना, यह देश-प्रत्यासत्तिकृत संयोग है । गुणोंके द्वारा जो परस्पर एक दूसरेको ग्रहण करना वह गुणप्रत्यास-त्तिकृत संयोगसम्बन्ध है । समवायसम्बन्ध सुगम है ।

इसी प्रकार शब्द, गन्ध, रस, स्पर्श, अवगाहना, संस्थान, गति, स्कन्ध, स्कन्धदेश और स्कन्धप्रदेश; इनका यथासम्भव द्विसंयोगी कथन करना चाहिये । यह कथन सुगम है ।

जो द्रव्यबन्ध स्थगित कर आये हैं वह दो प्रकारका है—आगम द्रव्यबन्ध और नोआगम द्रव्यबन्ध ॥ २४ ॥

इसप्रकार द्रव्यबन्ध दो प्रकारका ही है, क्योंकि, इसका अन्य भेद सम्भव नहीं है ।

जो आगम द्रव्यबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है— स्थित, जित, परिजित, वाचनोपगत, सूत्रसम, अर्थसम, ग्रन्थसम, नामसम, और घोषसम; इनके विषयमें वाचना, पृच्छना, प्रतीच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षणा, स्तव, स्तुति और धर्मकथा तथा इनसे

कट्टु जावदिया अणुवजूत्ता भावा सो सव्वो आगमदो दव्वबंधो
णाम ॥ २५ ॥

सुगममेदं, बहुसो परूवित्तादो ।

जो सो णोआगमदो दव्वबंधो सो दुविहो- पओअबंधी चेव
विस्ससाबंधो ॥ २६ ॥

एवं णोआगमदो बंधो दुविहो चेव; अण्णस्सासंभवादो ।

जो सो पओअबंधो णाम सो थप्पो ॥ २७ ॥

कुदो ? बहुवण्णज्जत्तादो ।

जो सो विस्ससाबंधो णाम सो दुविहो-सादियविस्ससाबंधो चेव
अणादियविस्ससाबंधो चेव ॥ २८ ॥

एवं साहाविओ बंधो दुविहो चेव; अण्णस्स अणुवलंमादो ।

जो सो सादियविस्ससाबंधो णाम सो थप्पो ॥ २९ ॥

कुदो ? बहुवण्णज्जदो ।

लेकर जो अन्य अनुपयोग हैं उनमें द्रव्य निक्षेप रूपसे जितने अनुपयुक्त भाव हैं
वह सब आगमद्रव्यबन्ध हैं ॥ २५ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, क्योंकि इसका अनेक बार कथन कर आये हैं ।

विशेषार्थ- यहाँ आगमके भेद और उनके उपयोगके प्रकार बतलाकर अनुपयुक्त दशामे
आगमद्रव्यबन्ध कहा है । आशय यह है कि बन्धविषयक शास्त्रके जितने प्रकारके जानकार हैं और
उनके उपयोग हैं वे सब जब अनुपयुक्त दशामें रहते हैं तब उनकी आगमद्रव्यबन्ध संज्ञा होती है ।

जो नोआगमद्रव्यबन्ध है वह दो प्रकारका है- प्रयोगबन्ध और विस्ससाबन्ध ॥ २६ ॥

इस प्रकार नोआगमद्रव्यबन्ध दो ही प्रकारका है, क्योंकि, इसका अन्य भेद सम्भव नहीं है ।

जो प्रयोगबन्ध है वह स्थगित करते हैं ॥ २७ ॥

क्योंकि, आगे इसका बहुत वर्णन करना है ।

जो विस्ससाबन्ध है वह दो प्रकारका है-सादिविस्ससाबन्ध और अनादिविस्स-
साबन्ध ॥ २८ ॥

इस प्रकार विस्ससाबन्ध दो ही प्रकारका है, क्योंकि, इसका अन्य भेद नहीं पाया जाता ।

जो सादि विस्ससाबन्ध है वह स्थगित करते हैं ॥ २९ ॥

क्योंकि, इसका आगे बहुत वर्णन करना है ।

जो सो अणादियविस्ससाबंधो णाम सो तिविहो -- धम्मत्थिया अधम्मत्थिया आगासत्थिया चेदि ॥ ३० ॥

जीवत्थिया पोम्मलत्थिया एत्थ किण्ण परूषिदा? ण, तासि सक्किरियाणं सगम-
णाणं धम्मत्थियादीहि सह अणादियविस्ससाबंधाभावादो । ण तासि पदेसबंधो वि
अणादियो वइससियो अत्थि; पोम्मलत्तण्णहणुववत्तीवो तप्पदेसाणं पि संजोग-विजो-
यसिद्धीए । एक्केवको द्रव्यबंधो तिविहो होदि त्ति जाणावणट्टमुत्तरसुत्तं भणदि—

**धम्मत्थिया धम्मत्थियदेसा धम्मत्थियपदेसा अधम्मत्थिया
अधम्मत्थियदेसा अधम्मत्थियपदेसा आगासत्थिया आगासत्थियदेसा
आगासत्थियपदेसा एवासि* तिण्णं पि अत्थआणमणोणपदेसबंधो
होदि ॥ ३१ ॥**

जो अनादि विस्ससाबन्ध है वह तीन प्रकारका है- धर्मास्तिकविषयक, अधर्मा-
स्तिकविषयक और आकाशास्तिकविषयक ॥ ३० ॥

शका—यहाँ जीवास्तिक और पुद्गलास्तिकविषयक अनादि विस्ससाबन्ध क्यों नहीं कहा?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उनकी अपनी गमन आदि क्रियाओंका धर्मास्तिक आदिके साथ
अनादिसे स्वाभाविक संयोग नहीं पाया जाता । यदि कहा जाय कि उनका प्रदेशबन्ध तो अना-
दिसे स्वाभाविक है सो यह बात भी नहीं है, क्योंकि, यदि ऐसा माना जायगा तो पुद्गलोमें
पुद्गलत्व नहीं बनेगा और पुद्गल तथा जीवोंके प्रदेशोंका भी संयोग और वियोग अनुभव सिद्ध
है, अतः इनका अनादि विस्ससाबन्ध नहीं कहा है ।

विशेषार्थ— यहाँ धर्म, अधर्म और आकाश द्रव्यका अनादि विस्ससाबन्ध बतलाया है ।
प्रश्न यह है कि ऐसा बन्ध पुद्गल और जीवोंका क्यों नहीं कहा । इसका जो समाधान किया है
उसका भाव यह है कि एक तो जीव और पुद्गलकी जो गति, स्थिति और अवगाहन क्रिया होती
है वह बदलती रहती है । दूसरे पुद्गलके परमाणुओंका परस्पर बन्ध भी अनादिकालीन नहीं
बन सकता है । और तीसरे पुद्गलों और जीवोंके प्रदेशोंका संयोग और वियोग भी होता रहता
है । न तो इन दोनों द्रव्योंका अन्यसे संयोग अनादि और वैस्वसिक है और न स्वयं अपने
प्रदेशोंका संयोग भी ऐसा है, इसलिये इनके सम्बन्धको अनादि विस्ससाबन्धमें सम्मिलित नहीं
किया है । माना कि जीवके प्रदेशोंमें विभाग नहीं होता, पर वे सदा धर्मादिक द्रव्योंके समान
एक आकारमें स्थिर नहीं रहते, इसलिये इसका भी अनादि विस्ससाबन्ध नहीं माना है ।

एक एक द्रव्यबन्ध तीन प्रकारका है यह ज्ञान करानेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

**धर्मास्तिक, धर्मास्तिकदेश और धर्मास्तिकप्रदेश; अधर्मास्ति, अधर्मास्तिकदेश
और अधर्मास्तिकप्रदेश तथा आकाशास्तिक, आकाशास्तिकदेश और आकाशास्तिक-
प्रदेश; इन तीनों ही अस्तिकायोंका परस्पर प्रदेशबन्ध होता है ॥ ३१ ॥**

▲ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-काप्रतिषु धम्मत्थिया धम्मत्थियपदेसा अधम्मत्थिया अधम्मत्थियपदेसा
आगासत्थिया आगासत्थियपदेसा एवासि इति पाठः । ताप्रती तु 'धम्मत्थियदेसा' आदीनि कोष्ठकान्तर्गतानि सन्ति ।

सव्वावयसमूहो धम्मत्थिया णाम । एदस्स धम्मत्थियअवयविस्स सगअवयवेहि जो बंधो सो धम्मत्थियबंधो णाम । तस्स अद्धप्पहुडि जाव चदुब्भागं ति सो धम्म-
त्थियदेसो णाम । तेसि धम्मत्थियदेसाणं सगअवयवेहि जो बंधो सो धम्मत्थियदेसबंधो
णाम । तस्सेव चदुब्भागप्पहुडि पदेसा णाम । तेसिमण्णोणमबंधो धम्मत्थियपदेसबंधो
त्ति भण्णदि । एवमधम्मत्थिय-आगासत्थियाणं पि पखुवणा कायव्वा । एदांसि तिण्णं
पि अत्थियाणमण्णोणपदेसबंधो भवदि सो सव्वो अणादियविस्ससाबंधो णाम ।

जो सो थप्पो सादियविस्ससाबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसोवेमादा
णिद्धदा वेमादा ल्हुक्खदा बंधो ॥ ३२ ॥

मादा णाम सरिसत्तं । विगदा मादा विमादा । विमादा णिद्धदा विमादा
ल्हुक्खदा च बंधो होदि, बंधकारणं होदि ति बुत्तं होदि । कथं कारणस्स कज्जवव-
एसो ? कारणे कज्जवयारादो । णिद्धदाए विसरिसत्तं ल्हुक्खदं पेक्खिदूण ल्हुक्खदाए
विसरिसत्तं णिद्धदं पेक्खिदूण घेतव्वं । तेण णिद्धपरमाणूणं ल्हुक्खपरमाणूहि सह बंधो
होदि । ल्हुक्खपरमाणूणं पि णिद्धपरमाणूहि सह बंधो होदि, गुणेण सरिसत्ताभावादो ।

समणिद्धदा समल्हुक्खदा भेदो ॥ ३३ ॥

धर्मद्रव्यके सब अवयवोंके समूहका नाम धर्मास्तिक है । अवयवीरूप इस धर्मास्तिकका
अपने अवयवोंके साथ जो बन्ध है वह धर्मास्तिकबन्ध कहलाता है । इसके आधेसे लेकर चौथे
भाग तकके हिस्सेको धर्मास्तिकदेश कहते हैं । इन धर्मास्तिकके देशोंका अपने अवयवोंके साथ जो
बन्ध है वह धर्मास्तिकदेशबन्ध कहलाता है । और इसीके चौथे भागसे लेकर आगेके सब
अवयव प्रदेश कहलाते हैं । इनका परस्पर जो बन्ध है वह धर्मास्तिकप्रदेशबन्ध कहलाता है ।
इसी प्रकार अधर्मास्तिक और आकाशास्तिकका भी कथन करना चाहिये । इन तीनों ही
अस्तिकायोंका परस्परमें जो प्रदेशबन्ध होता है वह सब अनादि विस्रसाबन्ध है ।

जो सावि विस्रसाबन्ध स्थगित कर आये थे उसका निर्देश इस प्रकारका है—
विसदृश स्निग्धता और विसदृश रूक्षता बन्ध है ॥ ३२ ॥

मादाका अर्थ सदृशता है । जिसमें सदृशता नहीं होती उसे विमादा कहते हैं ।
विसदृश स्निग्धता और विसदृश रूक्षता यह बन्ध है अर्थात् बन्धका कारण है, यह उक्त
कथनका तात्पर्य है ।

शंका-कारणको कार्य क्यों कहा ?

समाधान-कारणमें कार्यका उपचार होनेसे ऐसा कहा है ।

यहाँ स्निग्धतामें विसदृशता रूक्षताकी अपेक्षा और रूक्षतामें विसदृशता स्निग्धताकी
अपेक्षा लेनी चाहिये । इसलिये यह निष्कर्ष निकला कि स्निग्ध परमाणुओंका रूक्ष परमाणुओंके
साथ बन्ध होता है और रूक्ष परमाणुओंका भी स्निग्ध परमाणुओंके साथ बन्ध होता है, क्योंकि,
यहाँ गुणकी अपेक्षा समानता नहीं पाई जाती ।

समान स्निग्धता और समान रूक्षता भेद है ॥ ३३ ॥

समणिद्धदा समल्लुक्खदा च भेदस्स असंजोगस्स कारणं होदि । णिद्धपरमाणूणं णिद्धपरमाणूहि ल्लुक्खपरमाणूणं च ल्लुक्खपरमाणूहि सह बंधो णत्थि ति भणिद होदि । णिद्धपरमाणूहि सह बंधमागदल्लुक्खपरमाणू जदि णिद्धगुणेण परिणदा होति' णिद्धपरमाणू वा ल्लुक्खगुणेण परिणदा, तो णिच्छएण भेदेण होदव्वमिदि घेत्तव्वं । एद अत्थं दोहि वि देत्तेहि परूविदं गाहाए फुडीकरणत्थमुत्तरसुत्तं भणदि—

णिद्धणिद्धा ण बज्झंति ल्लुक्खल्लुक्खा य पोगगला ।

णिद्धल्लुक्खा य बज्झंति रूवारूवी य पोगगला ॥ ३४ ॥

एदिस्से गाहाए पढमद्वेण 'समणिद्धदा समल्लुक्खदा भेदो' ति एदस्स अत्थो परूविदो । णिद्धपरमाणू णिद्धपरमाणूहि ण बज्झंति, णिद्धगुणभावेण समानत्तादो । ल्लुक्खा पोगगला ल्लुक्खपोगगलेहि सह बंधं णागच्छति, ल्लुक्खगुणभावेण समानत्तादो । विदियद्वेण पढमसुत्तद्वं परूवेदि । 'णिद्ध-ल्लुक्खा य बज्झंति' णिद्धा पोगगला ल्लुक्खा पोगगला च परोप्परं बंधमागच्छति, विसरिसत्तादो । णिद्धल्लुक्खपोगगलाणं किं गुणा-विभागपडिच्छेदेहि सरिसाणं बंधो होदि आहो विसरिसाणं बंधो होदि ति पुच्छिदे 'रूवारूवी य पोगगला बज्झंति' ति भणिदं । गुणाविभागपडिच्छेदेहि समाना

समान स्निग्धता और समान रूक्षता भेद अर्थात् असंयोगका कारण होता है । स्निग्ध परमाणुओंका स्निग्ध परमाणुओंके साथ और रूक्ष परमाणुओंका रूक्ष परमाणुओंके साथ बन्ध नहीं होता, यह उक्त कथनका तात्पर्य है । स्निग्ध परमाणुओंके साथ बन्धको प्राप्त हुए रूक्ष परमाणु यदि स्निग्ध गुणरूपसे परिणत होते हैं या स्निग्ध परमाणु रूक्ष गुणरूपसे परिणत होते हैं तो नियमसे उनका भेद हो जाता है, यह अर्थ यहाँ लेना चाहिये । यह अर्थ दोनों ही सूत्रोंके द्वारा कहा गया है । अब गाथा द्वारा इसी अर्थको स्पष्ट करनेके लिये आगेका गाथासूत्र कहते हैं—

स्निग्ध पुद्गल स्निग्ध पुद्गलोंके साथ नहीं बाँधते, रूक्ष पुद्गल रूक्ष पुद्गलोंके साथ नहीं बाँधते । किन्तु सदृश और विसदृश ऐसे स्निग्ध रूक्ष पुद्गल परस्पर बाँधते हैं ॥ ३४ ॥

इस गाथाके पूर्वार्ध द्वारा 'समणिद्धदा समल्लुक्खदा भेदो' इस सूत्रका अर्थ कहा गया है । स्निग्ध परमाणु दूसरे स्निग्ध परमाणुओंके साथ नहीं बाँधते, क्योंकि, स्निग्ध गुणकी अपेक्षा वे समान हैं । रूक्ष पुद्गल दूसरे रूक्ष पुद्गलोंके साथ बन्धको नहीं प्राप्त होते, क्योंकि, रूक्ष गुणकी अपेक्षा वे समान हैं ।

गाथाके उत्तरार्ध द्वारा प्रथम सूत्रका अर्थ कहते हैं—'णिद्धल्लुक्खा य बज्झंति' अर्थात् स्निग्ध पुद्गल और रूक्ष पुद्गल परस्पर बन्धको प्राप्त होते हैं, क्योंकि, इनमें विसदृशता पाई जाती है क्या गुणोंके अविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा समान स्निग्ध और रूक्ष पुद्गलोंका बन्ध होता है या अविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा विसदृश स्निग्ध और रूक्ष पुद्गलोंका बन्ध होता है, ऐसा प्रश्न करने पर 'रूवारूवी य पोगगला बज्झंति' यह कहा है । जो स्निग्ध और रूक्ष गुणोंसे युक्त पुद्गल गुणोंके

❖ अ. काप्रत्ययः 'माणूहि बज्झंति', आप्रत्ययः 'माणूहि बज्झंति' इति पाठः ।

❖ प्रतिषु 'सरिसाणं णिद्धल्लुक्खपोगगलाणं बंधो' इति पाठः ।

जे णिद्धलहुक्खगुणजुत्तपोग्गला ते रूविणो णाम, ते वि वज्झंति । विसरिसा पोग्गला अरूविणो णाम, ते वि बंधमागच्छंति । णिद्धलहुक्खपोग्गलानं गुणाविभागपडिच्छेद-संखाए सरिसाणमसरिसाणं च बंधो होदि त्ति भणिदं होदि ।

वेमादा णिद्धदा वेमादा लहुक्खदा बंधो ॥ ३५ ॥

णिद्धपोग्गलानं णिद्धपोग्गलेहि लहुक्खपोग्गलानं लहुक्खपोग्गलेहि गुणाविभागपडि-च्छेदेहि सरिसाणमसरिसाणं च पुव्विल्लत्थे बंधाभावे संते तेसि पि बंधो अत्थि त्ति जाणावणट्ठं एवस्स सुत्तस्स बिदियो अत्थो वुच्चदे । तं जहा-मादा णाम अविभाग-पडिच्छेदो । किं पमाणं तस्स ? जहण्णगुणवडिदमेत्तो । द्वे मात्रे यस्यां स्निग्धताया-मधिके हीने वा द्विमात्रा* स्निग्धता, सो बंधो बंधकारणं होदि । णिद्धपोग्गला वेअ-विभागपडिच्छेदुत्तरणिद्धपोग्गलेहि वेअविभागपडिच्छेदहीणणिद्धपोग्गलेहि वा वज्झंति† । तिणिणआदिअविभागपडिच्छेदुत्तरपोग्गलेहि तिणिणआदि--अविभागपडिच्छेदुत्तरकमेण परिहीणपोग्गलेहि च बंधो णत्थि त्ति प्रेतव्थं । एवं लहुक्खपोग्गलानं पि लहुक्खपोग्गलेहि सह बंधो वत्तव्वो ।

अविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा समान होते हैं वे रूपी कहलाते हैं । वे भी बंधते हैं । और विसदृश पुद्गल अरूपी कहलाते हैं । वे भी बन्धको प्राप्त होते हैं । स्निग्ध और रूक्ष पुद्गल गुणोंके अविभागप्रतिच्छेदोंकी संख्याकी अपेक्षा चाहे समान हों चाहे असमान हों, उनका परस्पर बन्ध होता है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

द्विमात्रा स्निग्धता और द्विमात्रा रूक्षता (परस्पर) बन्ध है ॥ ३५ ॥

गुणोंके अविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा सदृश और विसदृश ऐसे स्निग्ध पुद्गलोंका स्निग्ध पुद्गलोंके साथ और रूक्ष पुद्गलोंका रूक्ष पुद्गलोंके साथ पूर्वोक्त अर्थके अनुसार बन्धका अभाव प्राप्त होनेपर उनका भी बन्ध होता है, इस बातका ज्ञान करानेके लिये इस सूत्रका दूसरा अर्थ कहते हैं । यथा- मात्राका अर्थ अविभागप्रतिच्छेद है ।

शंका- उसका कितना प्रमाण है ?

समाधान- गुणकी जघन्य वृद्धिमात्र उसका प्रमाण है ।

जिस स्निग्धतामें दो मात्रा अधिक या हीन होती है वह द्विमात्रा स्निग्धता कहलाती है । वह बन्ध है अर्थात् बन्धका कारण है । स्निग्ध पुद्गल दो अविभागप्रतिच्छेद अधिक स्निग्ध पुद्गलोंके साथ या दो अविभागप्रतिच्छेद कम स्निग्ध पुद्गलोंके साथ बंधते हैं । इनका तीन आदि अविभागप्रतिच्छेद अधिक पुद्गलोंके साथ और तीन आदि अविभागप्रतिच्छेद कम पुद्गलोंके साथ बन्ध नहीं होता, यह अर्थ यहाँ लेना चाहिये । इसी प्रकार रूक्ष पुद्गलोंका भी रूक्ष पुद्गलोंके साथ बन्धका कथन करना चाहिये । अब इस अर्थका निश्चय उत्पन्न करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

❀ अ-आ-काप्रतिषु, 'द्विमात्रो' इति पाठः । ❀ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ काताप्रतिषु, -पोग्गले हि ण वज्झंति, इति पाठः ।

एदस्स अत्थस्स णिण्णयजणणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि--

णिद्धस्स णिद्धेण दुरहिण्ण ल्हक्खस्स ल्हक्खेण दुराहिण्ण ।

णिद्धस्स ल्हक्खेण हवेदि बंधो जहण्णवज्जे विसमे समे वा ॥ ३६ ॥

णिद्धस्स पोग्गलस्स अण्णेण णिद्धपोग्गलेण जदि बंधो होदि तो दुराहिण्णेव । ल्हक्खस्स ल्हक्खेण जदि बंधो तो वि दुराहिण्ण बंधो होदि । णिद्धस्स सव्वपोग्गलस्स ल्हक्खेण सव्वेण पोग्गलेण सह बंधो होदि त्ति भणिदे 'विसमे समे वा' । गुणा-विभागपडिच्छेदेहि ल्हक्खपोग्गलेण सरिसो णिद्धपोग्गलो समो णाम। असरिसो विसमो णाम । तत्थ णिद्ध-ल्हक्खेण पोग्गलाणं बंधो होदि (त्ति) सव्वेसि पोग्गलाणं बंधे संपत्ते 'जहण्णवज्जे' त्ति भणिदं । जहण्णगुणाणं णिद्ध-ल्हक्खपोग्गलाणं सत्थाणेण परत्थाणेण वा नत्थि बंधो । एवं गूणविसिद्धाणं पोग्गलाणं बंधो होदि, अण्णारिसाण पोग्गलाणं पुण भेदेण होदव्वं, बंधे विरुद्धगुणसमण्णिदत्तादो ।

स्निग्ध पुद्गलका दो गुण अधिक स्निग्ध पुद्गलके साथ और रुक्ष पुद्गलका दो गुण अधिक रुक्ष पुद्गलके साथ बन्ध होता है । तथा स्निग्ध पुद्गलका रुक्ष पुद्गलके साथ जघन्य गुणके सिवा विषम अथवा सम गुणके रहनेपर बन्ध होता है ॥ ३६ ॥

स्निग्ध पुद्गलका अन्य स्निग्ध पुद्गलके साथ यदि बन्ध होता है तो दो गुण अधिक स्निग्ध पुद्गलके साथ ही होता है । रुक्ष पुद्गलका अन्य रुक्ष पुद्गलके साथ यदि बन्ध होता है तो दो गुण अधिक रुक्ष पुद्गलके साथ ही होता है ।

स्निग्ध सब पुद्गलका रुक्ष सब पुद्गलके साथ जो बन्ध होता है वह किस अवस्थामें होता है, ऐसा पूछनेपर 'विसमे समे वा' यह वचन कहा है गुणके अविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा रुक्ष पुद्गलके साथ सदृश स्निग्ध पुद्गल सम कहलाता है और असदृश स्निग्ध पुद्गल विषम कहलाता है । यहाँ स्निग्ध और रुक्ष गुणके द्वारा पुद्गलोंका बन्ध होता है, इस नियमके अनुसार सब पुद्गलोंका बन्ध प्राप्त होनेपर 'जहण्णवज्जे' यह कहा है । जघन्यगुणवाले स्निग्ध और रुक्ष पुद्गलोंका न तो स्वस्थानकी अपेक्षा बन्ध होता है और न परस्थानकी अपेक्षा ही बन्ध होता है । इस तरह इस प्रकारके गुणविशिष्ट पुद्गलोंका बन्ध होता है और अन्यादृश पुद्गलोंका भेद होता है, क्योंकि, बन्धमें विरुद्ध गुणसे युक्त होना आवश्यक है ।

विशेषार्थ- पुद्गल परमाणुओंके बन्धके विषयमें दो परम्परायें उपलब्ध होती हैं । प्रथम परम्पराका निर्देश यहाँ किया हो है । इसके अनुसार निम्न व्यवस्था फलित होती है ।

क्रमांक	गुणांश	सदृशबन्ध	विसदृशबन्ध
१	जघन्य+जघन्य	नहीं	नहीं
२	जघन्य+एकादिअधिक	नहीं	नहीं
३	जघन्येतर+समजघन्येतर	नहीं	है
४	जघन्येतर+एकाधिकजघन्येतर	नहीं	है
५	जघन्येतर+द्व्यधिकजघन्येतर	है	है
६	जघन्येतर+त्र्यादिअधिकजघन्येतर	नहीं	है

से तं बंधनपरिणामं पप्प से अब्भाणं वा मेहाणं वा संज्झाणं
वा विज्जुणं वा उक्काणं वा कणयाणं वा दिसादाहाणं वा धूमकेदूणं
वा इंदाउहाणं वा से खेत्तं पप्प कालं पप्प उडुं पप्प अयणं पप्प पोग्गलं
पप्प जे चामण्णे एवमाविया अंगमलप्पहुडीणि* बंधनपरिणामेण परि-
णमंति सो सव्वो सादियविस्ससाबंधो णाम ॥ ३७ ॥

से ते जहण्णगुणपोग्गलवदिरित्ता पोग्गला तं बंधनपरिणामं तं बंधकारणणिद्ध-लहुक्ख

दूसरी परम्परा तत्त्वार्थसूत्रकी है । इसके अनुसार निम्न व्यवस्था फलित होती है--

क्रमांक	गुणांश	सदृशबन्ध	विसदृशबन्ध
१	जघन्य+जघन्य	नहीं	नहीं
२	जघन्य+एकादिअधिक	नहीं	नहीं
३	जघन्येतर+समजघन्येतर	नहीं	नहीं
४	जघन्येतर+एकाधिकजघन्येतर	नहीं	नहीं
५	जघन्येतर+द्व्यधिकजघन्येतर	है	है
६	जघन्येतर+त्र्यादिअधिकजघन्येतर	नहीं	नहीं

यद्यपि सर्वार्थसिद्धि और तत्त्वार्थवार्तिकमें 'णिद्धस्स णिद्धेण' इत्यादि गाथा उद्धृत की गई है, पर इस गाथाके उत्तरार्द्धके अर्थमें मतभेद है और यह मतभेद तत्त्वार्थवार्तिकसे स्पष्ट हो जाता है । गाथाके उत्तरार्द्धका शब्दार्थ यह है कि स्निग्धगुणवाले परमाणुका रूक्षगुणवाले परमाणुके साथ सम या विषमगुण होनेपर बंध होता है । मात्र जघन्यगुणवालेका किसी भी अवस्थामें बंध नहीं होता । किन्तु तत्त्वार्थवार्तिकमें 'समे विसमे वा' इस पदमें समका अर्थ तुल्यजातीय और विषमका अर्थ अतुल्यजातीय किया है । तत्त्वार्थवार्तिककारके समक्ष वर्गणा-खण्डके ये सूत्र उपस्थित थे, फिर भी उन्होंने यह अर्थ किया है । तत्त्वार्थसूत्रमें 'बन्धेऽधिकी पारिणामिकी च' यह सूत्र आया है और इस सूत्रसे स्पष्ट प्रतीत होता है कि तत्त्वार्थसूत्रके मतसे तुल्यजातीय और अतुल्यजातीय पुद्गलपरमाणुओंका बन्ध दो अधिक गुणके होनेपर ही होता है । यही कारण है कि तत्त्वार्थवार्तिककारने उक्त गाथांशका उक्त प्रकारसे अर्थ किया है ।

इस प्रकार वे पुद्गल बन्धनपरिणामको प्राप्त होकर विविध प्रकारके अभ्ररूपसे, मेघरूपसे, सन्ध्यारूपसे, बिजलीरूपसे, उल्कारूपसे, कनकरूपसे, दिशावा-
हरूपसे, धूमकेतुरूपसे व इन्द्रधनुषरूपसे, क्षेत्रके अनुसार, कालके अनुसार, ऋतुके अनुसार, अयनके अनुसार और पुद्गलके अनुसार जो बन्धन परिणामरूपसे परिणत होते हैं वह सब सादिविस्ससाबंध है ॥ ३७ ॥

'से ते' अर्थात् जघन्यगुण पुद्गलोंके सिवा वे पुद्गल 'तं बंधनपरिणामं' अर्थात् बंधके कारण

❖ अ-आ-काप्रतिषु 'अयाणं' इति पाठः । ❖ ताप्रती-प्पहुडि (डी) णि इति पाठः ।

गुणपरिणामं पप्प पाविदूण सव्वे णिद्ध-लहुक्खपोगला बंधमागच्छन्ति । णवरि णिद्धाणं णिद्धेहि लहुक्खाणं लहुक्खेहि पोगलेहि णत्थि बंधो । किंतु वेअविभागपडिच्छेदाहियाणं णिद्धपोगलाणं वेअविभागपडिच्छेदहीणणिद्धपोगलेहि अत्थि बंधो । वेअविभागपडिच्छेदाहियलहुक्खपोगलाणं च वेअविभागपडिच्छेदहीणलहुक्खपोगलेहि य सह अत्थि बंधो । एवं बंधं पाविदूण से अब्भाणं वा अवारिसु वा मेहा अब्भा णाम, तेसि-मब्भाणं सरुव्वेण तेसि ते परिणमन्ति । वारिसु वा कसणवण्णा मेहा णाम । उदयत्थवण्णकाले पुव्वावरदिसासु दिसमाणा जासवणकुसुमसंकासा संज्झा णाम । रत्त-धवल-सामवण्णाओ-तेजअहियाओकुवियमुवंगो व्व चलंतसरीरा मेहेसु उवलब्भमाणाओ विज्जूओ णाम । जलंतगिगिण्डो व्व अणेगसंठाणेहि आगा-सादो गिवदंता उक्का णाम । माणुस-पसु-पक्खिमारणीयो तरु-गिरिसिहर-विया-रणीयो असणीयो कणया णाम । उप्पायकाले अग्निणा विणा दावाणलो व्व दिसासु उवलब्भमाणो दिसादाहो णाम । उप्पादकाले चेव धूमलट्ठि व्व आगासे उवलब्भ-माणा धूमकेदू णाम । पंचवण्णा होदूण धनुवागारेण खुट्टागारेण वा पुव्वावरदिसासु उवलब्भमाणा इंदाउहा णाम । एवेसि मेह-संज्झा-विज्जूक्क-कणय-दिसादाह-धूमकेदु-

भूत स्निग्ध और रुक्ष गुणरूप परिणामको प्राप्त होकर सब स्निग्ध और रुक्ष पुद्गल बन्धको प्राप्त होते हैं । किन्तु इतनी विशेषता है कि स्निग्ध पुद्गलोंका स्निग्ध पुद्गलोंके साथ और रुक्ष पुद्गलोंका रुक्ष पुद्गलोंके साथ बन्ध नहीं होता । किन्तु दो अविभागप्रतिच्छेद अधिक स्निग्ध पुद्गलोंका दो अविभागप्रतिच्छेद हीन स्निग्ध पुद्गलोंके साथ बन्ध होता है । तथा दो अविभागप्रतिच्छेद अधिक रुक्ष पुद्गलोंका दो अविभागप्रतिच्छेद हीन रुक्ष पुद्गलोंके साथ बन्ध होता है । इस प्रकार बन्धको प्राप्त होकर वे पुद्गल परिणमन करते हैं । यथा--

वर्षाऋतुके सिवा अन्य समयमें जो मेघ होते हैं उन्हें अभ्र कहते हैं । उन अभ्ररूपसे वे परिणत होते हैं । अथवा वर्षाऋतुमें जो कृष्णवर्णके बादल होते हैं वे मेघ कहलाते हैं । सूर्योदयके समय और सूर्यास्तके समय पूर्वापर दिशाओंमें जो जपा कुसुमके सदृश दिखाई देती है वह सन्ध्या कहलाती है । जो रक्त, धवल और श्यामवर्णकी होती है, जिसमें अत्यधिक तेज होता है, जो कुपित हुए भुजंगके समान चञ्चल शरीरवाली होती है, और जो मेघोंमें उपलब्ध होती है वह विद्युत् कहलाती है । जो जलते हुए अग्निपिण्डके समान अनेक आकारवाली होकर आकाशमें गिरती है वह उल्का कहलाती है । जिससे मनुष्य, पशु और पक्षी मर जाते हैं तथा जो वृक्ष और पर्वतोंके शिखरोंका विदारण करती है ऐसी अशनिको कनक कहते हैं । उत्पात-कालमें अभ्रके बिना दावानलके समान जो दशों दिशाओंमें उपलब्ध होता उसे दिशादाह कहते हैं । उत्पातकालमें ही धूमयष्टिके समान जो आकाशमें उपलब्ध होता है उसे धूमकेतु कहते हैं । जो पाँच वर्णका होकर धनुषाकाररूपसे या त्रुटित आकाररूपसे पूर्वापर दिशाओंमें उपलब्ध होता है उसे इन्द्रायुध कहते हैं । इन मेघ, सन्ध्या, विजली, कनक, दिशादाह, धूमकेतु और इन्द्रायुधके आकाररूपसे वे पुद्गल परिणत

इंशउहाणमागारेण ते परिणमंति । ते कथं परिणमंति त्ति वुत्ते विसिद्धागासदेसो
खेत्तं । सोदुसुण❀ वरिसणेहि उवलविल्लयो कालो❀ । सिसिर-वसंत-णिदाह-वासा--
रत्त-सरदहेमन्ता उड्ड । दिणयरस्य दविल्लणुत्तरगमणमयणं । पूरण-गलनसहावा
पोगगला णाम । खेत्तं कालं उड्ड♥ अयणं पोगगलं च तप्पाओगं पप्प पाविदूण ते
पोगगला तेसिमागारेण परिणमंति, अण्णहा सव्वत्थ सव्वद्धं तेसिमुप्पत्तिप्पसंगादो ।
जे च अभी अण्णे च एवमादिया अंगमलप्पहुडीणि❀ शरीरमलप्पहुडीणि❀ एत्थ
प्पहुडिसण्हं❀ सुज्जचंदगह--णवत्तुवराग--परिवेस--धव्वणयरदओ❀ प्रेतव्वा ।
सा सव्वोसादियविस्ससाबंधो णाम ।

**जो सो थप्पो पओअबंधो णाम सो दुविहो- कम्मबंधो चेद
णोकम्मबंधो चेव ॥ ३८ ॥**

होते हैं । वे किस कारणसे परिणत होते हैं, ऐसा पूछनेपर 'से खेत्तं पप्प' इत्यादि सूत्रवचन कहा
है । विशिष्ट आकाशदेशका नाम क्षेत्र है । शीत, उष्ण और वर्षासे उपलक्षित समयका नाम
काल है । शिशिर, वसन्त, निदाघ, वर्षा, शरद और हेमन्तका नाम ऋतु है । सूर्यका दक्षिण
और उत्तरको गमन करना अयन है जिनका पूरण और गलन स्वभाव है वे पुद्गल कहलाते हैं ।
अपने अपने योग्य क्षेत्र, काल, ऋतु, अयन और पुद्गलको प्राप्त होकर वे पुद्गल उन मेघ
आदिके आकाररूपसे परिणत होते हैं; अन्यथा सर्वत्र और सर्वदा उनकी उत्पत्तिका प्रसंग
आता है । जो ये और अन्य अगमल अर्थात् शरीरमल आदि पदार्थ हैं । यहाँ 'प्रभृति' शब्दसे
सूर्य, चन्द्र, ग्रह और नक्षत्र इनका उपराग तथा परिवेश और गन्धर्वनगर आदि लेने चाहिए ।
यह सब सादि विस्ससाबन्ध है ।

विशेषार्थ--आगमद्रव्यबन्धके सिवा शेष सब बन्ध नोआगमद्रव्यबन्ध कहलाते हैं ।
इसके प्रयोगबन्ध और विस्ससाबन्ध ये दो भेद हैं जिसमें जीवके व्यापारकी अपेक्षा होती है वह
प्रयोगबन्ध कहलाता है और जो जीवके व्यापारके बिना अपनी योग्यतानुसार होता है वह
विस्ससाबन्ध कहलाता है । यहाँ सादिविस्ससाबन्धका विचार किया जा रहा है । यह पुद्गलोंकी
अपनी-अपनी योग्यतानुसार होता है । यों तो जितने भी कार्य होते हैं वे सब अपनी अपनी
योग्यतानुसार ही होते हैं । किन्तु बाह्य निमित्तको ध्यानमें रखकर बन्धके प्रयोगबन्ध और
विस्ससाबन्ध ये भेद किए गए हैं । कर्मबन्ध प्रयोगबन्धमें आता है, पर समयप्राभृतमें इसके
विषयमें लिखा है कि रागादिकका निमित्त पाकर कर्मपुद्गल स्वयं कर्मरूपसे परिणत होते हैं
और कर्मका निमित्त पाकर जीव रागादिकरूपसे परिणमण करता है । समयप्राभृतके उक्त
कथनसे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि बलात् अन्य-अन्यका परिणमन करानेवाला नहीं होता,
किन्तु एक-दूसरेका निमित्त पाकर प्रत्येक द्रव्य स्वयं परिणमन करता है । शेष कथन सुगम है ।

**जो प्रयोगबन्ध स्थगित कर आये हैं वह दो प्रकारका है--कर्मबन्ध और
नोकर्मबन्ध ॥ ३८ ॥**

❀ ता. प्रती 'सोदुसुण' इति पाठः । ❀ अ. प्रती 'काले' इति पाठः । ♥ अ. आ. प्रत्योः 'काल उडु
इति पाठः । ❀ ता. प्रती 'प्पहुडि' (जी) णि' इति पाठः । ❀ ता. प्रती 'प्पहुडीण (णि)' अ. आ. प्रत्यो
'प्पहुडीण' इति पाठः । ❀ अ. आ. प्रत्यो 'सज्जेण' इति पाठः । ❀ अ. आ. ७ त्वोः 'गन्धवणयरदओ' इति पाठः

एवं दुविहो चेव पओअबंधो होदि, अण्णस्स अणुवलंभादो । को पओगबंधो णाम? जीववारेण जो समुप्पणो बंधो सो पओअबंधो णाम ।

जो सो कम्मबंधो णाम सो थप्पो ॥ ३९ ॥

कुदो? बहुवण्णणिज्जत्तादो ॥

जो सो णोकम्मबंधो णाम सो पंचविहो—आलावणबंधो अल्लीवणबंधो संसिलेसबंधो सरीरबंधो सरीरिबंधो चेदि ॥ ४० ॥

एवं णोकम्मबंधो पंचविहो चेव; अण्णस्स अणुवलंभादो । तत्थ आलावणबंधो णाम केरिसो ति वृत्ते वृत्तवे-रज्जु-वरत्त-कट्टवद्वादीहि जं पुधभूदानं दव्वाणं बंधणं सो आलावणबंधो णाम । लेवणविसेसेण जडिदानं ॐ दव्वाणं जो बंधो सो अल्लीवणबंधो णाम । रज्जु-वरत्त-कट्टादीहि विणा अल्लीवणं ॐ विसेसेहि विणा जो चिक्कण-अचिक्कणदव्वाणं चिक्कणदव्वाणं वा परोप्परेण बंधो सो संसिलेसबंधो णाम । पंचण्णं सरीराणमण्णोण्णेण बंधो सो सरीरबंधो णाम । जीवपदेसाणं जीवपदेसेहि पंचसरीरेहि य जो बंधो सो सरीरिबंधो णाम । संपहि आलावणबंधसखुवपखुवणहुमुत्तरसुत्तं भणवि-

इस तरह दो प्रकारका ही प्रयोगबन्ध होता है, क्योंकि, अन्य प्रकारका प्रयोगबन्ध उपलब्ध नहीं होता ।

शंका-प्रयोगबन्ध किसे कहते हैं ?

समाधान-जीवके व्यापार द्वारा जो बन्ध समुत्पन्न होता है उसे प्रयोगबन्ध कहते हैं जो कर्मबन्ध है उसे स्थगित करते हैं ॥ ३९ ॥

क्योंकि, आगे उसका बहुत वर्णन करना है ।

जो नोकर्मबन्ध है वह पाँच प्रकारका है-- आलापनबन्ध, अल्लीवनबन्ध, संश्लेषबन्ध, शरीरबन्ध और शरीरिबन्ध ॥ ४० ॥

इस प्रकार नोकर्मबन्ध पाँच प्रकारका ही होता है, क्योंकि, इनके सिवा अन्य बन्ध उपलब्ध नहीं होता । उनमेंसे आलापनबन्धका क्या स्वरूप है, ऐसा पूछनेपर कहते हैं-रस्सी, वरत्रा (रस्सी विशेष) और काष्ठद्रव्य आदिकसे जो पृथग्भूत द्रव्य बाँधे जाते हैं वह आलापनबन्ध है ।

लेपविशेषसे परस्पर सम्बन्धको प्राप्त हुए द्रव्योंका जो बन्ध होता है वह अल्लीवनबन्ध कहलाता है । रस्सी, वरत्रा और काष्ठ आदिकके बिना तथा अल्लीवनविशेषके बिना जो चिक्कण और अचिक्कण द्रव्योंका अथवा चिक्कण द्रव्योंका परस्पर बन्ध होता है वह संश्लेषबन्ध कहलाता है । पाँच शरीरोंका जो परस्पर बन्ध होता है वह शरीरबन्ध होता है । तथा जीवप्रदेशोंका जीवप्रदेशोंके साथ और पाँच शरीरोंके साथ जो बन्ध होता है वह शरीरिबन्ध कहलाता है । अब आलापनबन्धके स्वरूपका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

✽ ता. आ. प्रत्थी: 'णिज्जत्तादो' इति पाठः । ॐ ता. प्रती ' (लेव) ण विसेसेण जडिदानं '

अ० आ० का० प्रतिष्ठा 'लोयणविसेसेण जडिदानं' इति पाठः । ✽ अ. आ. प्रत्थी: 'अल्लियण' इति पाठः ।

जो सो आलावणबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो-से सगडाणं^१
वा जाणाणं वा जुगाणं वा गड्डीणं^२ वा गिण्णीणं वा रहाणं वा
संदणाणं वा सिवियाणं वा गिहाणं वा पासावाणं वा गोवुराणं वा
तोरणाणं वा से कट्टेण वा लोहेण वा रज्जुणा वा वढ्ढेण वा वढ्ढेण
वा जे चामण्णे एवमादिया अण्णदव्वाणमण्णदव्वेहि आलावियाणं बंधो
होवि सो सब्बो आलावणबंधो णाम ॥ ४१ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे । तं जहा-लोहेण बद्धणेमि-तुंब-महाचक्का लोहबद्धछुह्य-
पेरंता लोणादीणं^३ गरुभसरुव्वहणक्खमा सयडा णाम । समुद्धमज्जे विविहभंडेहि
आवूरिदा संता जे गमणक्खमा वोहिता^४ ते जाणा णाम । गरुवत्तणेण महल्ल-
त्तणेण^५ य जं तुरय-वेसरादीहि वुब्भदि^६ तं जुगं णाम । बहरदोचक्काओ
धण्णादिहल्लअ^७ दव्वभसरुव्वहणक्खमाओ गड्डीओ णाम । फिरक्कीओ गिल्लीयो णाम ।
का फिरक्की णाम ? चुंदेण वट्टुलागारेण घडिदणेमितुंबाधारसरलट्टुकट्टा^८ फिरक्की
णाम । जुद्धे अहिरह-महारहाणं^९ चडणजोग्गा रहा णाम ।

जो आलापनबंध है उसका यह निर्देश है-जो शकटोंका, यानोंका, युगोंका,
गड्डीयोंका, गिल्लियोंका, रथोंका, स्यन्दनोंका, शिविकाओंका, गृहोंका, प्रासादोंका,
गोपुरोंका और तोरणोंका काष्ठसे, लोहसे, रस्सीसे, चमड़ेकी रस्सीसे और दर्मसे जो
बन्ध होता है तथा इनसे लेकर अन्य द्रव्योंसे आलापित अन्य द्रव्योंका जो बन्ध होता
है वह सब आलापन बन्ध है ॥ ४१ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यथा-जिनको धुर, गाड़ोको नाभि और महाचक्र
लोहसे बंधे हुए हैं, जिनके छुह्य पर्यन्त लोहसे बंधे हुए हैं और जो नमक आदि भारी भारको
ढोनेमें समर्थ हैं वे शकट कहलाते हैं । नाना प्रकारके भाण्डोंसे आपूरित होकर भी समुद्रमें
गमन करनेमें समर्थ जो जहाज होते हैं वे यान कहलाते हैं । जो बहुत भारी होनेसे और बहुत
बड़े होनेसे घोड़ा और खच्चर आदिके द्वारा ढोया जाता है वह युग कहलाता है । जिनके दो
चके छोटे हैं और जो धान्य आदि हलके भारके ढोनेमें समर्थ हैं वे गड्डी कहलाती हैं ।
फिरक्कीको गिल्ली कहते हैं ।

शंका- फिरक्की किसे कहते हैं ?

समाधान- जिसकी नाभि और तुम्बकी आधारभूत आठ लकड़ियाँ वर्तुलाकार चुन्दसे
घटित हैं उसे फिरक्की कहते हैं ।

जो युद्धमें अधिरथी और महारथियोंके चढ़ने योग्य होते हैं वे रथ कहलाते हैं । जो

❖ अ आ प्रत्योः 'सदाणं' इति पाठः । ❖ अ आ. प्रत्योः 'गदीणं' इति पाठः । ❖ अ. णा.
प्रत्योः 'लोणादीणं' इति पाठः । ❖ ता अ. आ. प्रतिषु 'वोहिता' इति पाठः । ❖ ता अ. आ. प्रतिषु.
गरुवत्तणेण महल्लत्तणेण इति पाठः । ❖ अ प्रतो 'वुच्चदि' आ प्रतो 'वज्झदि' इति पाठः । ❖ ता
अ. -धा-प्रतिषु '-हल्लह-' इति पाठः । ❖ ता. प्रतो '-कट्टा (९)' इति पाठः । ❖ ता. प्रतो अहिरह (राय)
महारहा (राया) णं' इति पाठः ।

चक्कवट्टि-बलदेवानं चडणजोगा सव्वाउहावुण्णा णिमणपवणवेगा अच्छे भंगे वि चक्क.
घडणगुणेण अपडिहयगमणा संदणा णाम । माणुसेहि वुब्भमाणा सिविया णाम ।
कट्टियाहि बद्धकुड्डा उवरि वंसिकच्छण्णा गिहा णाम । पक्कसइला सइला आवासा
पासादा णाम । पायाराणं वारे घडिदगिहा गोवरं णाम । पुराणं पुराणं पासादाणं
चंदणमालबंधणट्ठं पुरदो टुविदरुक्खविसेसा तोरणं णाम । एदेसि पुव्वुत्ताणं जे बंधा
ते आलावणबंधा णाम । केणेसि बंधो होदि ? कट्ठेण वा लोहेण वा रज्जुणा वा
वम्भेण वा दम्भेण वा । 'वा' सहेण वक्केण वा सुम्भेण वा कट्टियाए वा इच्चे-
वमादि घेत्तव्वं । कट्टादीहि अण्णदम्भेहि अण्णदम्भाणं आलाविदाणं जोइदाणं बंधो
होदि सो सव्वो आलावणबंधो णाम ।

जो सो अल्लीवणबंधो णाम तस्स इमो णिहेसो -- से कडयाणं
वा कुड्डाणं वा गोवरपीडाणं वा पागाराणं वा साडियाणं वा जे
चामण्णे एवमादिया अण्णदम्भाणमण्णदम्भेहि अल्लीविदाणं बंधो होदि
सो सव्वो अल्लीवणबंधो णाम ॥ ४२ ॥

चक्रवर्ती और बलदेवोंके चढ़ने योग्य होते हैं, जो सब आयुधोंसे परिपूर्ण होते हैं, जो पवनके
समान वेगवाले होते हैं और धुरके टूट जाने पर भी जिनके चक्रोंकी इस प्रकारकी रचना होती
है जिस गुणके कारण जिनके गमनागमनमें बाधा नहीं पड़ती वे स्यन्दन कहलाते हैं । जो मनुष्यों
द्वारा उठाकर ले जाई जाती हैं वे शिविका कहलाती हैं । जिनकी भीत लकड़ियोंसे बनाई जाती
है और जिनका छप्पर बाँस और तृणसे छाया जाता है वे गृह कहलाते हैं । ईंटों और पत्थरोंके
बने हुए पत्थरबहुल आवासोंको प्रासाद कहते हैं । कोठोंके दरवाजोंपर जो घर बने होते हैं
वे गोपुर कहलाते हैं । प्रत्येक पुर और प्रासादोंपर वन्दनमाला बाँधनेके लिए आगे जो वृक्ष-
विशेष रखे जाते हैं वे तोरण कहलाते हैं । इन पूर्वोक्त शकट आदिके जो बन्ध होते हैं वे
आलापनबन्ध कहलाते हैं ।

शंका-इनका बन्धन किस पदार्थसे होता है ?

समाधान-काष्ठसे, लोहसे, रस्सीसे, वस्त्रसे और दर्भसे होता है । यहाँ सूत्रमें आये हुए
'वा' शब्दसे वकलेसे, शुम्भ अर्थात् तृणविशेषसे और लकड़ीसे होता है इत्यादि लेना चाहिए ।

काष्ठ आदि अन्य द्रव्योंसे जो आलापित अर्थात् परस्पर सम्बन्धको प्राप्त हुए अन्य
द्रव्योंका बन्ध होता है वह सब आलापनबन्ध है ।

जो अल्लीवणबन्ध है उसका यह निर्देश है-कटकोंका, कुड्डोंका, गोवरपीडोंका,
प्राकारोंका और शाटिकाओंका तथा इनसे लेकर और जो दूसरे पदार्थ हैं उनका जो
बन्ध होता है अर्थात् अन्य द्रव्योंसे सम्बन्धको प्राप्त हुए अन्य द्रव्योंका जो बन्ध
होता है वह सब अल्लीवणबन्ध है ॥ ४२ ॥

(५) आप्रतो 'वुज्झमाणा' इति पाठ । अ. आ. प्रत्योः 'दम्भेण वा सहेण' इति पाठः । ता. अ. आ. प्रतिष् 'सुम्भेण' इति पाठः । प्रतिष् दोहदाण इति पाठः । अ. आ. प्रत्योः 'कटयाणं वा कूटाणं वा' इति पाठः । ता. आ. प्रत्योः 'पासादियाणं' अ० प्रती 'सादियाणं' इति पाठः

बंसकंबीहि अण्णोणजण्णं जे किज्जंति घरावणादिवाराणं ढंकणट्ठं ते कडयाणाम् । जिणहरघरायवणाणं ठविदओलित्तीओ कुड्डाणाम् । कुड्डाणं पोगलबन्धो अल्लीवणबन्धो णाम्, बद्ध-दद्ध-लोह-कट्ट-रज्जुणं बंधेण विणा अल्लियणमेत्ते-णेव बंधुवलंभादो ण च एसो बंधो संसिलेसबंधे पविसदि, ओल्लमट्टियाए चिक्कणगुणाभावादो । छाणेण लेविदूण जाणि पीडाणि किज्जंति ताणि गोवरपीडाणि नामाएदेसि जो बंधो सो वि अल्लीवणबन्धो णाम्, सगदेहादो पुधभूददब्भादिबंधकारणाभावादो । जिणहरादीणं रक्खट्ठं प्पासेसु ठुविदओलित्तीओ पागार णाम् । पक्किट्टाहि घडिदवरंडा वा पागार णाम् । तत्थ वि इट्टाहितो पुधभूदबंधकारणाणव-लंभादो । पुव्वं पासादगोवुरादीणं पक्किट्टा विणिम्मियाणमालावणबन्धो होदि सि पळुविदं । संपहि तेसि चेव अल्लीवणबंधपळुवणं कधं ण विरुज्जदे ? ण, पासाद-गोवुर रक्खणमइयवडादीणं (?) लोहेण लोह-कट्टकोलेहि य बंधं दट्ठण तेसिमालावणबंधपळुवणादो । तत्थ वि कुड्डाणं पुण

बाँसकी कमचियोंके द्वारा परस्पर बूनकर घर और अवन अदिके ढाँकनेके लिए जो बनाई जाती हैं वे कटक अर्थात् चटाई कहलाती हैं । जिनगृह, घर और अवनकी जो भीतें बनाई जाती हैं उन्हें कुड्ड कहते हैं । कुड्डोंका जो पुद्गलबन्ध होता है वह अल्लीवणबन्ध कहलाता है, क्योंकि, वर्ध, दर्भ, लोह, काष्ठ और रस्सीके बन्धके बिना परस्पर मिलाने मात्रसे ही यह बन्ध उपलब्ध होता है । यह बन्ध संश्लेषबन्धमें अन्तर्भूत होता है, यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, गीली मिट्टीमें चिक्कण गुणका अभाव है । गोवरसे लेपकर जो पीड बनाये जाते हैं वे गोवरपीड कहलाते हैं । इनका जो बन्ध होता है वह भी अल्लीवणबन्ध है, क्योंकि, इनके बन्धमें अपनेसे भिन्न दर्भादि बन्धके कारण नहीं उपलब्ध होते । जिनगृह आदिकी रक्षाके लिए पार्श्वमें जो भीतें बनाई जाती हैं वे प्राकार कहलाते हैं अथवा पकी हुई ईंटोंसे जो वरणडा बनाये जाते हैं वे प्राकार कहलाते हैं । यहाँ पर भी ईंटोंसे पृथग्भूत बन्धके कारण नहीं पाये जाते ।

शंका-पहले पकी हुई ईंटोंसे बने हुए प्रासाद और गोपुर आदिका आलापनबन्ध होता है ऐसा कह आये हैं और अब यहाँ उनका ही अल्लीवणबन्ध कह रहे हैं सो यह कथन विरोधको कैसे नहीं प्राप्त होता ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, पहले प्रासाद, गोपुर आदिकका लोहेसे तथा लोह और काष्ठकी कोलोंसे बन्ध देखकर उनका आलापनबन्ध कहा है । परन्तु उनकी भीतोंका तो अल्लीवणबन्ध ही होता है, इसलिए उक्त कथनमें कोई विरोध नहीं है ।

♣ अ-आ- प्रत्योः 'जदणाए' इति पाठः । ♦ ता. प्रती 'द' (ढं) क्कणट्ठं अ. आ. प्रत्योः 'ढंकणट्ठं' इति पाठः । ♠ अ. आ. प्रती 'कडया' इति पाठः । ❀ ता. प्रती 'जिणहरघरायणाणं' अ. प्रती 'जिणाह-रघरायणाणं' आ. प्रती 'जिणहरघरायणाणं' इति पाठः । ♥ अ. आ. प्रत्योः 'पीडाणि' इति पाठः । ❁ ता. अ. आ. प्रतीषु 'ओलित्तीओ' इति पाठः । ☞ ता. प्रती 'पक्किट्टाहि' इति पाठः । ❁ ता. प्रती 'इट्टाहि' इति पाठः । ❁ ता. अ. आ. प्रतीषु कारणमुव-लंभादो इति पाठः । ☞ ता. प्रती 'पक्किट्टा' इति पाठः ।

अल्लीवणबंधो चेव । बहुलियाहिरे परियत्तविसए परिहिज्जमाणाओ साडियाओ[❀] णाम । तासि जो तंतुसंताणबंधो सो अल्लीवणबंधो णाम, तंतुहितो पुधभूदबंधकार-
णाणुवलंभादो । अण्णे एवमादिया त्ति वयणेण नेत्तपट्ट-कप्पाससुत्तविसेसेण वुअ[❀]व-
त्थाणं गहणं कायत्वं । सेसं सुगमं ।

जो सो संसिलेसबंधो णाम तस्स इमो निद्वेसो-जहा कट्ठ-जदूणं
अण्णोण्णसंसिलेसिवाणं बंधो संभवदि सो सव्वो संसिलेसबंधो
णाम ॥ ४३ ॥

जदू णाम लक्खा । लक्खाए कट्टस्स च जो अण्णोण्णसंसिलेसेण बंधो सो संसिलेस-
बंधो णाम । ण च एस बंधो अल्लीवणबंधे पविसदि, पाणिएण जणिदद्वामावादो ।
णालावणबंधे पविसदि; तदो पुधभूदद्ववादिबंधकारणाभावादो । जदुग्गहणमेदमुवल-
क्खणं वज्जलेव-मयणादीणं, चिक्कणद्ववाणं तेण तेसि पि एत्थ गहणं कायत्वं ।

जो सो सरीरबंधो णाम सो पंचविहो-- ओरालियसरीरबंधो
वेउव्वियसरीरबंधो आहारसरीरबंधो तेयासरीरबंधो कम्मइयसरी-
रबंधो चेवि ॥ ४४ ॥

एवं पंचविहो चेव सरीरबंधो होदि, अण्णस्स एदेहितो पुधभूदबंधस्स अणुवलंभादो ।

स्त्रियोंके द्वारा देशविशेषमें जो पहिनी जाती हैं वे शाटिका कहलाती हैं । तथा इनका जो तन्तु सन्तानबन्ध होता है वह अल्लीवणबन्ध है, क्योंकि, इनमें तन्तुओंके सिवा अलगसे बन्धके कारण नहीं उपलब्ध होते । 'अण्णे एवमादिया' इस वचनसे नेत्रपट्ट और कपासके सूतसे बुने हुए वस्त्रोंका ग्रहण करना चाहिए । शेष कथन सुगम है ।

जो संश्लेषबन्ध है उसका यह निर्देश है-जैसे परस्पर संश्लेषको प्राप्त हुए काष्ठ और लाखका बन्ध होता है वह सब संश्लेषबन्ध है ॥ ४३ ॥

जतु लाखको कहते हैं । लाख और काष्ठके परस्पर संश्लेषसे जो बन्ध होता है वह संश्लेषबन्ध है । यह बन्ध अल्लीवणबन्धमें अन्तर्भूत नहीं होता, क्योंकि, यहाँ पानीसे संयोगको प्राप्त हुए द्रव्यका अभाव है । आलापनबन्धमें भी अन्तर्भूत नहीं होता, क्योंकि, इनसे पृथग्भूत द्रव्यादि बन्धके कारण नहीं पाये जाते ।

'जतु' पदका ग्रहण यहाँ वज्जलेप और मैन आदि चिक्कण द्रव्योंका उपलक्षण है । इससे इनका भी यहाँ ग्रहण करना चाहिए ।

जो शरीरबन्ध है वह पाँच प्रकारका है-- औदारिकशरीरबन्ध, वैक्रियिक-
शरीरबन्ध, आहारकशरीरबन्ध, तैजसशरीरबन्ध और कर्मणशरीरबन्ध ॥ ४४ ॥

इस प्रकार पाँच प्रकारका ही शरीरबन्ध होता है, क्योंकि, इनसे पृथग्भूत दूसरा शरीरबन्ध

❀ ता. आ. प्रतिषु 'बुहेलियाहि' इति पाठः । अ-आ- प्रत्योः 'महेलियाहि' इति पाठः ❀ अ. आ. प्रत्योः 'सादियाओ' इति पाठः । ❀ अ. आ. प्रत्योः 'वुडवत्थाण' इति पाठः ।

संपहि एगादिसंजोगे ॐ ओरालियसरीरस्स बंधवियप्पुप्पायणट्टमुत्तरमुत्तं भणदि-

ओरालिय-ओरालियसरीरबंधो ॥ ४५ ॥

ओरालियसरीरणोकम्मखंधाणमणोहि ओरालियसरीरणोकम्मखंधेहि जो बंधो सो ओरालिय-ओरालियसरीरबंधो । एवमेसो एगसंजोगेण एवको चेव भंगो होदि १ । संपहि दुसंजोगभंगपरूवणट्टमुत्तरमुत्तं भणदि-

ओरालिय-तेयासरीरबंधो ॥ ४७ ॥

ओरालियसरीरपोगलाणं तेयासरीरपोगलाणं च एक्कमिह जीवे जो परोप्परेण बंधो सो ओरालिय-तेयासरीरबंधो णाम १ ।

ओरालिय-कम्मइयसरीरबंधो ॥ ४७ ॥

ओरालियखंधाणं कम्मइयखंधाणं च एक्कमिह जीवे द्विदाणं जो बंधो सो ओरालिय-कम्मइयसरीरबंधो णाम २ । ओरालियखंधाणं वेउव्विय-आहारसरीरेहि सह णत्थि बंधो; ओरालियसरीरेण परिणदजीवे सेसदोण्णं सरीराणजभावादो । होदु णाम वेउव्वियसरीरस्स अभावो, तस्स देव-णेइएसु चेव अत्थित्तवंसणादो । आहारसरीरं पुण मणुस्सेसु चेव होदि, तेण ओरालियसरीरेण सह आहारसरीरस्स संबंधेण होदव्वमिदि?

नहीं उपलब्ध होता । अब एकादि संयोगरूप औदारिक शरीरके बन्धविकल्पोंको उत्पन्न करानेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

औदारिक-औदारिकशरीरबंध ॥ ४५ ॥

औदारिकशरीर नोकर्मस्कन्धोंका अन्य औदारिकशरीर नोकर्मस्कन्धोंके साथ जो बन्ध होता है वह औदारिक-औदारिकशरीरबन्ध है । इस प्रकार यह एकसंयोगसे एक ही भंग होता है १ । अब द्विसंयोग भंगका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

औदारिक-तैजसशरीरबन्ध ॥ ४६ ॥

औदारिकशरीरके पुद्गलोंका और तैजसशरीरके पुद्गलोंका एक जीवमें जो परस्परबन्ध होता है वह औदारिक-तैजसशरीरबन्ध है १ ।

औदारिक-कामर्णशरीरबन्ध ॥ ४७ ॥

एक जीवमें स्थित औदारिकस्कन्धोंका और कामर्णस्कन्धोंका जो परस्पर बन्ध होता है वह औदारिक-कामर्णशरीरबन्ध है २ । औदारिकस्कन्धोंका वैक्रियिक और आहारकशरीरके साथ बन्ध नहीं होता, क्योंकि, औदारिक-शरीररूपसे परिणत हुए जीवमें शेष दो शरीरोंका अभाव पाया जाता है ।

शंका- इसके वैक्रियिकशरीरका अभाव भले ही रहा आवे; क्योंकि, उसका देव और नारकियोंके ही अस्तित्व देखा जाता है । किन्तु आहारकशरीर तो मनुष्योंके ही होता है, इसलिए औदारिकशरीरके साथ आहारकशरीरका सम्बन्ध होना चाहिए ?

ॐ अ प्रतो 'संजोगो' इति पाठः । ❀ अ. आ. प्रत्यो: 'सरीराणं' इति पाठः ।

ण, आहारसरीरेण परिणमंताणं ओरालियसरीरस्स उदयाभावेण तेण संबंधाभावाद्दो ।
एवं दुसजोगभंगपरूवणा कदा । संपहि तिसंजोगपरूवणट्टमुत्तरसुत्तं भणदि--

ओरालिय-तेया-कम्मइयसरीरबंधो ॥ ४८ ॥

ओरालिय-तेया-कम्मइयसरीरबंधाणं एक्कम्हि जीवे णिविट्ठाणं जो अण्णोण्णेण
बंधो सो ओरालिय-तेया-कम्मइयसरीरबंधो नात्र । एवं तिसंजोगे एक्को चेव
भंगो १ । संपहि वेउव्वियसरीरस्स एगादिसंजोगभंगपरूवणट्टमुत्तरसुत्तं भणदि-

वेउव्विय-वेउव्वियसरीरबंधो ॥ ४९ ॥

वेउव्विय-तेयासरीरबंधो ॥ ५० ॥

वेउव्विय-कम्मइयसरीरबंधो ॥ ५१ ॥

वेउव्विय-तेया-कम्मइयसरीरबंधो ॥ ५२ ॥

एदाणि चत्तारि वि सुत्ताणि सुगमाणि । आहारसरीरभंगपरूवणट्टमुत्तरसुत्तं भणदि-

आहार-आहारसरीरबंधो ॥ ५३ ॥

आहार-तेयासरीरबंधो ॥ ५४ ॥

आहार-कम्मइयसरीरबंधो ॥ ५५ ॥

समाधान-नहीं, क्योंकि, आहारकशरीररूपसे परिणमन करनेवाले जीवोंके औदारि-
कशरीरका उदय नहीं होनेसे उसके साथ सम्बन्ध नहीं होता ।

इस प्रकार द्विसंयोगी भंगका कथन किया । अब त्रिसंयोगी भंगका कथन करनेके
लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

औदारिक-तैजस-कर्मणशरीरबन्ध ॥ ४८ ॥

एक जीवमें निविष्ट हुए औदारिकशरीर, तैजसशरीर और कर्मणशरीरके स्कन्धोंका जो
परस्पर बन्ध होता है वह औदारिक-तैजस-कर्मणशरीरबन्ध है । इस प्रकार त्रिसंयोगी एक ही भंग
होता है । अब वैक्रियिकशरीरके एकादिसंयोगी भंगोंका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं-

वैक्रियिक-वैक्रियिकशरीरबन्ध ॥ ४९ ॥

वैक्रियिक-तैजसशरीरबन्ध ॥ ५० ॥

वैक्रियिक-कर्मणशरीरबन्ध ॥ ५१ ॥

वैक्रियिक-तैजस-कर्मणशरीरबन्ध ॥ ५२ ॥

ये चारों ही सूत्र सूगम हैं । अब आहारकशरीरके भंगोंका कथन करनेके लिए आगेका
सूत्र कहते हैं--

आहारक-आहारकशरीरबन्ध ॥ ५३ ॥

आहारक-तैजसशरीरबन्ध ॥ ५४ ॥

आहारक-कर्मणशरीरबन्ध ॥ ५५ ॥

आहार-तेया-कम्मइयसरीरबंधो ॥ ५६ ॥

एदाणि चत्तारिवि सुत्ताणि सुगमाणि ॥

तेया-तेयासरीरबंधो ॥ ५७ ॥

तेयासरीर-कम्मइयसरीरबंधो ॥ ५८ ॥

सेसभंगा एत्थ किण्ण पुरुविदा ? न, पुणरुत्तदोसस्संगादो ।

कम्मइय-कम्मइयसरीरबंधो ॥ ५९ ॥

एत्थ एवको चेव भंगो । सेसा भंगा संता वि किमट्ठं न पुरुविदा ? पुब्बं पुरुविदत्तादो ।

सो सव्वो सरीरबंधो णाम ॥ ६० ॥

एसो पण्णारसविहो बंधो सरीरबंधो त्ति घेतव्वो ।

जो सो सरीरबंधो णाम सो दुविहो-सावियसरीरबंधो चेव

अणावियसरीरबंधो चेव ॥ ६१ ॥

एवं दुविहो चेव सरीरबंधो होवि; अण्णस्सासंभवादो ।

आहारक-तेजस-काम्मणशरीरबन्ध ॥ ५६ ॥

ये चार सूत्र भी सुगम हैं ।

तेजस-तेजसशरीरबन्ध ॥ ५७ ॥

तेजसशरीर-काम्मणशरीरबन्ध ॥ ५८ ॥

शंका- शेष भंग यहाँ क्यों नहीं कहे ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, पुनरुक्त दोषका प्रसंग प्राप्त होता है ।

काम्मण-काम्मणशरीरबन्ध ॥ ५९ ॥

यहाँ एक ही भंग होता है ।

शंका- शेष भंग भी होते हैं, फिर वे किसलिए नहीं कहे ?

समाधान- क्योंकि, उनका कथन पहले कर आये हैं ।

वह सब शरीरबन्ध है ॥ ६० ॥

यह पन्द्रह प्रकारका बन्ध शरीरबन्ध है, ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए ।

जो शरीरबन्ध है वह दो प्रकारका है--सावि शरीरबन्ध और अनादि शरीरबन्ध ॥ ६१ ॥

इस प्रकार शरीरबन्ध दो प्रकारका ही होता है, क्योंकि अन्य प्रकारके शरीरबन्धका होना असम्भव है ।

✽ अ० प्रती 'एदाणि चत्तारि सुत्ताणि वि सुगमाणि' आ. प्रती 'एदाणि वि सुत्ताणि सुगमाणि' इति पठः : ✽ प्रतिषु ध्वलान्तर्गतमिदं न सूत्रत्वेनोपलभ्यते ।

जो सो सादियसरीरिबंधो णाम सो जहा सरीरबंधो तहा जेवढवा ॥ ६२ ॥

सरीरी णाम जीवो । तस्स जो बंधो ओरालियादिसरीरेहि सो सरीरिबंधो णाम । तस्स भंगपरुवणा जहा सरीरबंधस्स परुविदा तहा परुवेवढवा । तं जहा—ओरालियसरीरेण सरीरिस्स बंधो । वेउवियसरीरेण सरीरिस्स बंधो । आहार—सरीरेण सरीरिस्स बंधो । तेजइयसरीरेण सरीरिस्स बंधो । कम्मइयसरीरेण सरीरिस्स बंधो । सरीरिणा सरीरस्स बंधो । कधमेसो छट्ठभंगो जुज्जदे? ण, कम्म—णोकम्माणमणादिसंबंधेण मुत्तत्तमुवगयस्स जीवस्स घणलोगमेत्तपदेसस्स जोगवसेण संधार-विसप्पणधम्मियस्स अबयवाणं परतंतलक्खणसंबंधेण छट्ठभंगुप्पत्तीए विरोहाभावावो । एवमेदे छट्ठभंगा ६ । ओरालिय-तेजासरीरेहि सरीरिस्स बंधो, ओरालिय-कम्मइयसरीरेहि सरीरिस्स बंधो, ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरेहि सरीरिस्स बंधो, एवमोरालियसरीरेहि णिरुद्धे तिणिण भंगा ३ । वेउविय-आहारसरीराणं एवं चेव तिणिण तिणिण भंगा परुवेवढवा । तेजा-कम्मइयसरीरेहि सरीरिस्स बंधो १ । एवं तेयासरीरे णिरुद्धे* एवको चेव दुसंजोगभंगो । कम्मइयम्मि दुसंजोगभंगो णत्थि । एवमेदे सोलस सरीरिबंधा १६ ।

जो सादि शरीरिबन्ध हैं वह शरीरबन्धके समान जानना चाहिए ॥ ६२ ॥

शरीरी जीवको कहते हैं । उसका जो औदारिक आदि शरीरोंके साथ बन्ध होता है वह शरीरिबन्ध है । इसके भंगोंका कथन, जिस प्रकार शरीरबन्धके भंगोंका कथन किया है, उस प्रकार करना चाहिए । यथा—औदारिकशरीरके साथ शरीरीका बन्ध, वैक्रियिकशरीरके साथ शरीरीका बन्ध, आहारकशरीरके साथ शरीरीका बन्ध, तैजसशरीरके साथ शरीरीका बन्ध, कामंणशरीरके साथ शरीरीका बन्ध, और शरीरीके साथ शरीरका बन्ध ।

शंका— यहाँ छठवाँ भंग कैसे बन सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, जो कर्म और नोकर्मोंका अनादि सम्बन्ध होनेसे मूर्तपनेको प्राप्त हुआ है और जिसके घनलोकप्रमाण जीवप्रदेश योगके वशसे सकोच और विस्तार धर्मवाले हैं ऐसे जीवके अवयवोंके परतन्त्रलक्षण सम्बन्धसे छठे भंगकी उत्पत्ति होनेमें कोई विरोध नहीं आता,

इस प्रकार ये छह भंग हुए ६ ।

औदारिक-तैजसशरीरोंके साथ शरीरीका बन्ध, औदारिक-कामंण शरीरोंके साथ शरीरीका बन्ध, और औदारिक-तैजस-कामंण शरीरोंके साथ शरीरीका बन्ध; इस प्रकार औदारिकशरीरकी विवक्षा होनेपर तीन भंग होते हैं ३ । वैक्रियिक और आहारक शरीरोंके इसी प्रकार तीन तीन भंग कहने चाहिए । तैजस-कामंण शरीरोंके साथ शरीरीका बन्ध, इस प्रकार तैजसशरीरकी विवक्षा होनेपर द्विसंयोगी एक ही भंग होता है १ । कामंणशरीरमें द्विसंयोगी भंग नहीं होता । इस प्रकार ये सोलह शरीरिबन्ध होते हैं १६ ।

* ता. भा. प्रत्योः 'तेयासरीरिणिद्धे' इति पाठः ।

**जो अणादियसरीरिबंधो णाम यथा अटुण्णं जीवमज्झपदेसाणं
अण्णोणपदेसबंधो भवदि सो सव्वो अणादियमरीरिबंधो णाम ॥ ६३ ॥**

जीवमज्झपदेसाणमटुण्णं पि जो बंधो सो अणादियसरीरिबन्धो होदि ।
किंतु एसो ण पओअबंधो; साभावियत्तादो त्ति वुत्ते- ण एस दोसो; दिट्ठंतदुवारेण
णिहिट्ठत्तादो । जहा अटुण्णं पि जीवमज्झपदेसाणमणादियो बंधो तहा सरीरिस्स जो
पुव्वरहिदबंधो सो अणादियसरीरिबंधो त्ति घेतव्वो । को सो बंधो ? सरीरिस्स
कम्म-णोकम्मसामण्णेण जो बंधो सो अणादियसरीरिबंधो णाम ।

जो सो थप्पो कम्मबंधो णाम यथा कम्मे त्ति तहा णेवव्वं ॥ ६४ ॥

कम्मबंधस्स चउसट्ठिभंगा जहा कम्माणुयोगद्वारे परूविदा तहा परूवेदव्वा ।
एवं संखेवेण परूविदूण बंधो त्ति समत्तमणुयोगद्वारं ।

जो अनादिशरीरिबन्ध है । यथा- जीवके आठ मध्यप्रदेशोंका परस्पर
प्रदेशबन्ध होता है यह सब अनादि शरीरिबन्ध है ॥ ६३ ॥

शंका- जीवके आठ मध्यप्रदेशोंका जो बन्ध है वह अनादिशरीरिबन्ध है, यह ठीक
है; किंतु यह प्रयोगबन्ध नहीं है, क्योंकि, यह स्वाभाविक होता है ?

समाधान- यह कोई दोष नहीं है; क्योंकि दृष्टान्त द्वारा अनादि शरीरिबन्धका
यहाँ निर्देश किया है । जिस प्रकार जीवके आठ मध्यप्रदेशोंका अनादिबन्ध होता है उसी प्रकार
शरीरका जो पूर्व कालकी मर्यादासे रहित बन्ध है वह अनादि शरीरिबन्ध है, ऐसा यहाँ ग्रहण
करना चाहिए ।

शंका- वह बन्ध क्या है ?

समाधान- शरीरका कर्म और लोकर्म सामान्यके साथ जो बन्ध है वह अनादि
शरीरिबन्ध है ।

**जो कर्मबन्ध स्थगित कर आये हैं उसे कर्मअनुयोगद्वारके समान जानना
चाहिए ॥ ६४ ॥**

कर्मबन्धके चौंसठ भंग जिस प्रकार कर्म अनुयोगद्वारमें कहे हैं उसी प्रकार कहने चाहिए ।
इस प्रकार संक्षेपसे कथन करनेपर बन्ध अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

बंधगाणुयोगद्वारं

जे ते बंधगा णाम तेसिमिमो णिद्देशो -- गवि इंदिए काए जोगे
वेदे कसाए णाणे संजमे वंसणे लेस्सा भविय सम्मत्त सण्णि
आहारे चेदि ॥ ६५ ॥

एवं सुत्तं चोद्दसमगणद्वाराणि परुवेदि, अण्णहा बंधगपरुवणाणुववत्तीदो ।
एवेसि मगणद्वाराणं जहा खुद्दाबंधे परुवणा कदा तथा कायव्वा ।

गवियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइया बंधा तिरिक्खा बंधा
देवा बंधा मणुसा बंधा वि अत्थि अबंधा वि अत्थि सिद्धा अबंधा* ।
एवं खुद्दाबंधएक्कारसअणुयोगद्वारं णेयव्वं ॥ ६६ ॥

एत्थ उद्देशे खुद्दाबंधस्स एक्कारसअणुयोगद्वाराणं परुवणा कायव्वा, अम्हेहि
पुण गंथबहुत्तभएण ण कदा ।

एथं महादंडया णेयव्वा ॥ ६७ ॥

एक्कारसअणुयोगद्वाराणं परुवणं कादूण पुणो महादंडयाणं पि परुवणा कायव्वा ।
एवं बंधगे त्ति समत्तमणुयोगद्वारं ।

जो बन्धक हैं उनका यह निर्देश है- गति, इन्द्रिय, काय, योग, वेद, कषाय,
ज्ञान, संयम, दर्शन, लेश्या, भव्यत्व, सम्यक्त्व, संज्ञी और आहार ॥ ६५ ॥

यह सूत्र चौदह मार्गणास्थानोंका प्ररूपण करता है, अन्यथा बन्धकका कथन नहीं बन
सकता । इन मार्गणास्थानोंका जिस प्रकार क्षुल्लकबन्धमें कथन किया है उस प्रकार करता चाहिये ।

गति मार्गणाके अनुवावसे नरकगतिमें नारक जीव बन्धक हैं, तिर्यंच बन्धक
हैं, देव बन्धक हैं, मनुष्य बन्धक भी हैं और अबन्धक भी हैं, सिद्ध अबन्धक हैं ।
इस प्रकार यहाँ क्षुल्लकबन्धके ग्यारह अनुयोगद्वार जानने चाहिए ॥ ६६ ॥

इस स्थानपर क्षुल्लकबन्धके ग्यारह अनुयोगद्वारोंका कथन करना चाहिए । हमने ग्रन्थके
बढ़ जानेके भयसे उनका कथन यहाँ नहीं किया है ।

इसी प्रकार महादण्डक जानने चाहिए ॥ ६७ ॥

ग्यारह अनुयोगद्वारोंका कथन करके अनन्तर महादण्डकोंका भी कथन करना चाहिए ।

विशेषार्थ- यहाँ बन्धकका कथन करना है । पहले यह कथन क्षुल्लकबन्धमें कर आये हैं,
इसलिये यहाँ उसके अनुसार ही इस कथनके करनेकी सूचना की है । क्षुल्लकबन्धमें सर्व प्रथम
'बन्धक' के कथनकी प्रतिज्ञा की है । अनन्तर चौदह मार्गणाओंका नामनिर्देश करके उनमेंसे
प्रत्येक मार्गणामें कौन बन्धक है और कौन अबन्धक है यह बतलाया है । अनन्तर एक जीवकी
अपेक्षा स्वामित्व आदि ग्यारह अनुयोगोंके द्वारा बन्धकका कथन करके अन्तमें महादण्डक दिये
हैं । यहाँ भी इसी प्रकार कथन करनेसे बन्धक अनुयोगद्वार समाप्त होता है यह उक्त कथनका
तात्पर्य है ।

इस प्रकार बन्धक यह अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

❁ आ० प्रती 'वंसणे' इति पाठः । ❁ ता० प्रती 'णेरया' इति पाठः । ❁ अ० आ०
प्रत्योः 'अबंधा' ॥ २ ॥ इति पाठः । ❁ आ० प्रती 'अहेहि' इति पाठः ।

बंधणिज्जाणुयोगद्वारं

जं तं बंधणिज्जं णाम तस्स इममणुगमणं कस्सामो- वेदणअप्पा
पोग्गला, पोग्गला खंधसमुद्दिठां, खंधा वगगणसमुद्दिठां ॥ ६८ ॥

वेद्यन्त इति वेदनाः । जीवादो पुधभूदा कम्म-णोकम्मबंधपाओग्गखंधा बंधणिज्जा
णाम । तेसि कधं वेदणाभावो जुज्जदे ? ण, दव्व-खेत्त-काल-भावेहि वेदणापाओग्गसु
दव्वट्टियणयमस्सिदूण वेदणासद्वपत्तीए अब्भुवगमादो । वेदनात्वपात्मा स्वरूपं येषा ते
वेदनात्मानः पुद्गलाः इह गृहीतव्याः । कुदो ? अण्णेसि बंधणिज्जताभावादो । ते
च बंधणिज्जा पोग्गला खंधसमुद्दिठां, खंधसरूपाअणंतानंतं परमाणुपोग्गलसमुदय-
समागमेण बंधपाओग्गपोग्गलसमुत्पत्तीदो । एदेण एयपदेसिय-दुपदेसियादीणं
पोग्गलाणं बंधणिज्जत्तयडिसेहो कदो । ते च खंधा वगगणसमुद्दिठां; वगगणांहितो
पुधभूदखंधाभावादो । एदेण बंधणिज्जपोग्गलाणं निव्वियप्पत्तपडिसेहो कदो । तेण
बंधणिज्जपरूवणे कीरमाणे वगगणपरूवणा णिच्छएण कायव्वा; अण्णहा तेवीस—
वगगणासु इमा चेव वगगणा बंधपाओग्गा, अण्णाओ बंधपाओग्गाओ ण होति त्ति
अवगमाणुववत्तीदो ।

जो बन्धनीय है उसका इस प्रकार अनुगमन करते हैं— वेदनस्वरूप पुद्गल है,
पुद्गल स्कन्धस्वरूप हैं, और स्कन्ध वर्गणास्वरूप हैं ॥ १ ॥

जो वेदे जाते हैं उन्हें वेदन कहते हैं । जीवसे पृथग्भूत बन्धयोग्य कर्म और नोकर्म
स्कन्ध बन्धनीय कहलाते हैं ।

शंका—वे वेदनरूप कैसे हो सकते हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, जो द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा वेदनायोग्य हैं,
उनमें द्रव्याधिकनयकी अपेक्षा वेदना शब्दकी प्रवृत्ति स्वीकार की गई है ।

वेदनपना जिनका आत्मा अर्थात् स्वरूप है वे वेदनात्मा कहलाते हैं । यहाँ इस पदसे
पुद्गलोंका ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि, अन्य कोई पदार्थ बन्धनीय नहीं हो सकते । वे
बन्धनीय पुद्गल स्कन्धसमुद्दिष्ट अर्थात् स्कन्धस्वरूप कहे गये हैं, क्योंकि, स्कन्धरूप अनन्तानन्त
परमाणुपुद्गलोंके समुदायरूप समागमसे बन्धयोग्य पुद्गल होते हैं । इस पदसे एक प्रदेशी और
दो प्रदेशी आदि वर्गणाओंसे पृथग्भूत स्कन्ध नहीं पाये जाते । इस पदसे बन्धनीय पुद्गल
निव्विकल्प होते हैं इस बातका निषेध किया है । इसलिए बन्धनीयका कथन करते समय
वर्गणाका कथन नियमसे करना चाहिए । अन्यथा तेईस प्रकारकी वर्णणाओंमें ये वर्गणा ही
बन्धयोग्य हैं, अन्य बन्धयोग्य नहीं हैं, यह ज्ञान नहीं हो सकता ।

✽ अ० प्रती 'समुद्दिदा' इति पाठः । ✽ ना० अ० आ० प्रतिष्ठा 'वेदनात्मानः' इति पाठः ।
◆ ता० प्रती '(अ) जंता-' इति पाठः । ☉ अ० प्रती 'बंधपाओग्गपाओग्ग-' इति पाठः । ✽ ता० आ०
प्रत्यो 'अण्णा जो' इति पाठः ।

वर्गणाणमणुगमणट्टदाए तत्थ इमाणि अट्ठ अनुओगद्वाराणि
णादव्वणि भवन्ति- वर्गणा वर्गणदव्वसमुदाहारो अणंतरोवणिधा
परंपरोवणिधा अवहारो जवमज्झं पदमीमांसा अप्पाबहुए त्ति ॥६९॥

संपहि एदेसिमट्टणमणुयोगद्वाराणमत्थपरूवणा कीरदे । तं जहा- तत्थ वर्ग-
णपरूवणा किमट्ठं कीरदे ? एगपरमाणुवर्गणप्पहुडि एगेगपरमाणुत्तरकमेण जाव
महावत्थो त्ति ताव सव्ववर्गणाणमेगसेडिपरूवणट्ठं कीरदे । वर्गणदव्वसमुदाहारो
किमट्टमागदो? पुव्वुत्तवर्गणाणं कि समाणा पोग्गला अण्णे वि अत्थि आहो णत्थि,
काओ वर्गणाओ धुवाओ काओ वा अद्धुवाओ, काओ सांतराओ काओ वा णिरंतराओ
त्ति इच्चादिवर्गणविसेसं चोदहअणुयोगद्वारेहि णाणेगसेडिगयं परूवणट्टमागदो ।
अणंतरोवणिधा किमट्टमागदा? परमाणुदव्ववर्गणाहितो दुपदेसियं दव्ववर्गणा
दव्वट्टपदेसट्टदाहि* कि सरिसा आहो विसरिसा दुपदेसियदव्ववर्गणादो तिपदेसिय-
दव्ववर्गणा दव्वट्टपदेसट्टदाहि (कि) सरिसा आहो विसरिसा एवमणंतरहेट्ठिम-
हेट्ठिमवर्गणाहितो अणंतरउवरिम (उवरिम) वर्गणाणं दव्वपदेसट्टपरूवणट्टमागदा ।
परंपरोवणिधा किमट्टमागदा ? परमाणुपोग्गलदव्ववर्गणादो केददूरं गंतूण दुग्गणा वा

वर्गणाओंका अनुगमन करते समय ये आठ अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं- वर्गणा,
वर्गणाद्रव्यसमुदाहार, अनन्तरोपनिधा, परम्परोपनिधा अवहार, यवमध्य, पदमीमांसा
और अल्पबहुत्व ॥ ६९ ॥

अब इन आठ अनुयोगद्वारोंकी अर्थप्ररूपणा करते हैं । यथा—

शंका— यहाँ वर्गणा अनुयोगद्वारकी प्ररूपणा किसलिए की है ?

समाधान— एक परमाणुरूप वर्गणासे लेकर एक एक परमाणुकी वृद्धिक्रमसे महा-
स्कन्ध तक सब वर्गणाओंकी एक श्रेणि है, इस बातका कथन करनेके लिए वर्गणा अनुयोग-
द्वारकी प्ररूपणा की है ।

शंका— वर्गणाद्रव्यसमुदाहार अनुयोगद्वार किसलिए आया है ?

समाधान— पूर्वोक्त वर्गणाओंके पुद्गल क्या समान हैं या अन्य प्रकार हैं या अन्य
प्रकार नहीं है, कौन वर्गणायें ध्रुव हैं, कौन वर्गणायें अध्रुव हैं, कौन वर्गणायें सान्तर हैं और
कौन वर्गणायें निरन्तर हैं; इस प्रकार चोदह अनुयोगद्वारोंके द्वारा नानाश्रेणिगत और एक-
श्रेणिगत वर्गणाविशेषका कथन करनेके लिए यह अनुयोगद्वार आया है ।

शंका— अनन्तरोपनिधा अनुयोगद्वार किसलिए आया है ?

समाधान— परमाणुद्रव्यवर्गणासे द्विप्रदेशी द्रव्यवर्गणा द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थताकी अपेक्षा
क्या सदृश है या त्रिसदृश है, द्विप्रदेशी द्रव्यवर्गणासे त्रिप्रदेशी द्रव्यवर्गणा द्रव्यार्थता और प्रदेशा-
र्थताकी अपेक्षा क्या सदृश है या विसदृश है, इस प्रकार अनन्तर पूर्व पूर्व वर्गणासे अनन्तर उप-
रिम उपरिम वर्गणाकी द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थताका कथन करनेके लिए यह अनुयोगद्वार आया है ।

शंका— परम्परोपनिधा अनुयोगद्वार किसलिए आया है ?

❖ ताप्रती 'दुपदेहि (सि) य' आ. प्रती 'दुपदेहिय-' इति पाठः ।

❖ अ. प्रती 'दव्वपदेसट्टदाहि' इति पाठः ।

दुग्गुणहीणा वा होंति त्ति पुच्छिदे एत्तियमद्धाणं गंतूण होंति त्ति जाणावणट्टमागदा । अवहारो किमट्टमागदो ? एक्केक्का वर्गणा दव्वट्टपदेसट्टदाहि सव्ववर्गणाणं केवडिओ भागो त्ति जाणावणट्टमागदो । जवमज्झपरूवणा किमट्टमागदा ? विसेसाहियकमेण गच्छमाणाणं वर्गणाणं कम्हि उद्देसे पदेसं पड्डुच्च जवमज्झं होदि किं वा ण होदि त्ति पुच्छिदे एत्तियमद्धाणं गंतूण जवमज्झं होदि त्ति जाणावणट्टमागदा । पदमीमांसा किमट्टमागदा ? सव्ववर्गणाणमुक्कस्साणुक्कस्सजहण्णाजहण्णादिपदानं गवेसण—ट्टमागदा अप्पाबहुगपरूवणा किमट्टमागदा ? तेवोसवर्गणदव्वपदेसट्टदाणं थोवबहुत्तपरूवणट्टमागदा ।

वर्गणा त्ति तत्थ इमाणि वर्गणाए सोलस अणुओगद्वाराणि ॐ—
वर्गणणिकखेवे वर्गणणयविभासणदाए वर्गणपरूवणा वर्गणणिरूवणा,
वर्गणधुवाधुवानुगमो वर्गणसांतरणिरंतराणुगमो वर्गणओजजुम्मा—
णुगमो वर्गणखेत्ताणुगमो वर्गणफोसणाणुगमो वर्गणकालाणु—

समाधान—परमाणुरूप पुद्गलद्रव्यवर्गणासे कितनी दूर जानेपर दूना होता है या द्विगुणाहीन होता है ऐसा पूछनेपर इतना स्थान जाकर दूना या आधा होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए यह अनुयोगद्वारा आया है ।

शंका—अवहारअनुयोगद्वारा किसलिए आया है ?

समाधान—एक एक वर्गणा द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थताकी अपेक्षा सब वर्गणाओंका कितनेवाँ भाग है इस बातका ज्ञान करानेके लिए यह अनुयोगद्वारा आया है ।

शंका—यवमध्यपरूवणा किसलिए आई है ?

समाधान—विशेषाधिकक्रमसे जाती हुई वर्गणाओंका किस स्थानपर प्रदेशोंकी अपेक्षा यवमध्य होता है अथवा नहीं होता है ऐसा पूछनेपर इतना स्थान पर जाकर यवमध्य होता इस बातका ज्ञान करानेके लिए यह अनुयोगद्वारा आया है ।

शंका—पदमीमांसा अनुयोगद्वारा किसलिए आया है ?

समाधान—सब वर्गणाओंके उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य आदि पदोंकी गवेषणा करनेके लिए यह अनुयोगद्वारा आया है ।

शंका—अल्पबहुत्वपरूवणा किसलिए आई है ?

समाधान—तेईस वर्गणाओंकी द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थताके अल्पबहुत्वका कथन करानेके लिए यह परूवणा आई है ।

वर्गणाका प्रकरण है । उसके विषयमें ये सोलह अनुयोगद्वारा होते हैं—वर्गणा-निक्षेप, वर्गणानयविभाषणता, वर्गणापरूवणा, वर्गणानिरूपणा, वर्गणाधुवाधुवानुगम, वर्गणासान्तरनिरन्तरानुगम, वर्गणाओजयुरमानुगम, वर्गणाक्षेत्रानुगम, वर्गणास्पर्शानुगम,

❖ ता. प्रती—‘ हिया (य) कमेण, अ. आ. प्रत्यो: ‘—हियाकमेण ’ इति पाठः ।

⊕ अ. प्रती ‘ सोलसमणिओगद्वाराणि ’ इति पाठः ।

गमो वर्गणअंतराणुगमो वर्गणभावाणुगमो वर्गणउपनयणाणुगमो
वर्गणपरिमाणाणुगमो वर्गणभागाभागाणुगमो वर्गणअप्पाबहुए
त्ति ॥ ७० ॥

संपहि वर्गणा दुविहा—अब्भंतरवर्गणा बाहिरवर्गणा चेदि । जा सा बाहिर-
वर्गणा सा पंचहं सरीराणं चहुहि अणुयोगद्वारेहि उवरि भण्णिहिदिहं । जा सा
अब्भंतरवर्गणा सा दुविहा एगसेडि—णाणासेडिभेएण । तत्थ एगसेडिवर्गणाए इमाणि
सोलस अणुयोगद्वाराणि णादब्बणि भवन्ति । संपहि एवेहि सोलसअणुयोगद्वारेहि
जहाकमेण वर्गणाणमणुगमं कस्सामो—

वर्गणणिवखेवे त्ति छव्विहे वर्गणणिवखेवे— नामवर्गणा द्रव्य-
वर्गणा द्रव्यवर्गणा खेत्तवर्गणा कालवर्गणा भाववर्गणा चेदि ॥ ७१ ॥

निश्चये क्षिपतीति निक्षेपः । सो किमट्ठं कीरदे? प्रकृतं प्ररूपणार्थम् । उक्तंच—

अवगयणिवारणट्ठं पयदस्स परूवणाणिमित्तं च ।

संसयविणासणट्ठं तच्चत्थवधारणट्ठं च ॥ १ ॥

छच्चेव णिवखेवा एत्थ किमट्ठं कदा? ण एस दोसो, छच्चेवे त्ति नियमाभावादो ।

वर्गणाकालानुगम, वर्गणाअंतरानुगम, वर्गणाभावानुगम, वर्गणाउपनयनानुगम, वर्गणा
परिमाणानुगम, वर्गणाभागाभागाणुगम और वर्गणाअल्पबहुत्वानुगम ॥ ७० ॥

वर्गणा दो प्रकारकी है—आभ्यन्तरवर्गणा और बाह्यवर्गणा । जो बाह्यवर्गणा है वह पाँच
शरीरों सम्बन्धी चार अनुयोगद्वारोंके द्वारा आगे कहेंगे । जो आभ्यन्तरवर्गणा है वह एकश्रेणि
और नानाश्रेणिके भेदसे दो प्रकारकी है । उनमेंसे एकश्रेणिवर्गणाके ये सोलह अनुयोगद्वार ज्ञातव्य
हैं । अब इन सोलह अनुयोगद्वारोंके द्वारा यथाक्रमसे वर्गणाओंका विचार करेंगे ।

वर्गणानिक्षेपका प्रकरण है । वर्गणानिक्षेप छह प्रकारका है — नामवर्गणा,
स्थापनावर्गणा, द्रव्यवर्गणा, कालवर्गणा और भाववर्गणा ॥ ७१ ॥

जो निश्चयमें रखता है वह निक्षेप है ।

शंका—वह निक्षेप किसलिये करते हैं ?

समाधान—प्रकृतका निरूपण करनेके लिये । कहा भी है—अप्रकृत अर्थका निराकरण
करनेके लिये, प्रकृत अर्थका कथन करनेके लिये, संशयका विनाश करनेके लिये, और तत्त्वार्थका
निश्चय करनेके लिये निक्षेप किया जाता है ॥ १ ॥

शंका—यहाँ छह ही निक्षेप किसलिये किये गये हैं ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, निक्षेप छह ही होते हैं ऐसा कोई नियम नहीं है ।

वर्गणासदो नामवर्गणा । सो एसो त्ति बुद्धीए वर्गणासरूवेण संकप्पिदत्थो द्रव्यव-
र्गणा । द्रव्यवर्गणा दुविहा आगम-नोआगमद्रव्यवर्गणाभेएण । वर्गणापाहुडजाणओ
अणुवजुत्तो आगमद्रव्यवर्गणा नाम । नोआगमद्रव्यवर्गणा तिविहा जाणुगसरीर-भवि-
तव्वदिरित्त-नोआगमद्रव्यवर्गणाभेएण । जाणुगसरीर-भवियद्रव्यवर्गणाओ सुगमाओ ।
तव्वदिरित्त-द्रव्यवर्गणा दुविहा— कम्मवर्गणा नोकम्मवर्गणा चेदि । तत्थ कम्मव-
र्गणा नाम अट्टकम्मवर्गणधवियप्प । सेसएवकोणवीसवर्गणाओ नोकम्मवर्गणाओ ।
एगागासोगाहणप्पहुडि पदेसुत्तरादिकमेण जाव देसूणघणलोगे त्ति ताव एदाओ खेत्त-
वर्गणाओ । कम्मदव्वं पडुच्च समयाहियावलिप्पहुडि जाव कम्मद्विदि^१ त्ति नोक-
म्मदव्वं पडुच्च एगसमयादि जाव असंखेज्जा लोगा त्ति ताव एदाओ कालवर्गणाओ ।
भाववर्गणा दुविहा आगम-नोआगमभाववर्गणाभेएण । वर्गणापाहुडजाणओ उव-
जुत्तो आगमभाववर्गणा । ओदइयादिपंचणं भावाणं जे भेदा ते नोआगमभावव-
र्गणा । एवं वर्गणाणिवखेवे त्ति समत्तमणुयोगद्वारं^२ ।

वर्गणयविभाषणदाए को णओ काओ वर्गणाओ इच्छदि ।

णैगम-व्यवहार-संगहा सव्वाओ ॥ ७२ ॥

कुडो ? द्रव्यद्विषाणं तिग्गमेदेसि णयाणं विसए छणं णिवखेवाणमत्थित्तं पडि

* वर्गणाशब्द नामवर्गणा है । ' वह यह है ' इस प्रकार बुद्धि द्वारा वर्गणारूपसे संकल्पित अर्थ स्थापनावर्गणा है । द्रव्यवर्गणा दो प्रकारकी है— आगमद्रव्यवर्गणा और नोआगम-द्रव्यवर्गणा । वर्गणाप्राभृतको जाननेवाला किन्तु वर्तमानमें उसके उपयोगसे रहित जीव आगम-द्रव्यवर्गणा है । नोआगमद्रव्यवर्गणा तीन प्रकारकी है— ज्ञायकशरीरनोआगमद्रव्यवर्गणा, भावि-नोआगमद्रव्यवर्गणा और तद्व्यतिरिक्तनोआगमद्रव्यवर्गणा । ज्ञायकशरीर और भाविनोआगम-द्रव्यवर्गणायें सुगम हैं । तद्व्यतिरिक्तनोआगमद्रव्यवर्गणा दो प्रकारकी है— कर्मवर्गणा और नोकर्मवर्गणा । उनमेंसे आठ प्रकारके कर्मस्कन्धोंके भेद कर्मवर्गणा है, तथा शेष उन्नीस प्रकारकी वर्गणायें नोकर्मवर्गणायें हैं । एक आकाशप्रदेशप्रमाण अवगाहनासे लेकर प्रदेशोत्तर आदिके क्रमसे कुछ कम घनलोक तक ये सब क्षेत्रवर्गणायें हैं । कर्मद्रव्यकी अपेक्षा एक समय अधिक तक आवलिसे लेकर उत्कृष्ट कर्मस्थिति तक और नोकर्मद्रव्यकी अपेक्षा एक समयसे लेकर अस-ख्यात लोकप्रमाण काल तक ये सब कालवर्गणायें हैं । भाववर्गणा दो प्रकारकी है— आगमभा-ववर्गणा और नोआगमभाववर्गणा । वर्गणाप्राभृतको जाननेवाला और वर्तमानमें उसके उपयो-गसे युक्त जीव आगमवर्गणा है । औदयिक आदि पाँच भावोंके जो भेद हैं वे सब नोआगमभा-ववर्गणा हैं । इस प्रकार वर्गणानिक्षेप अनुयोगद्वारा समाप्त हुआ ।

वर्गणयविभाषणताका प्रकरण है— कौन नय किन वर्गणाओंको स्वीकार करता है ? नैगम, व्यवहार संग्रहनय सब वर्गणाओंको स्वीकार करते हैं ॥ ७२ ॥

क्योंकि, इन तीनों द्रव्याधिक नयोंके छहों निक्षेप विषय हैं इस बातके स्वीकार करनेमें कोई

❀ ता. प्रती '—पहुडि कम्मद्विदि' इति पाठः । ❀ ता. प्रती '—द्वारं (१)' इति पाठः ।

विरोहाभावादो ।

उजुसुदो द्वुवणवग्गणां णेच्छदि ॥ ७३ ॥

अण्णदव्वस्स संरुप्पवसेण अण्णदव्वस्सरूवावत्तिविरोहादो ।

सद्वणओ णामवग्गणां भाववग्गणां च इच्छदि ॥ ७४ ॥

एदस्स णयस्म वित्ते अण्णेति णिक्खेवाणमभावादो । एत्थ केण णिक्खेवेण पयदं ? णोआगमणोगलदव्वणिक्खेवेण पयदं, जीव-धम्माधम्म-कालागासदव्वेण वर्गणाहि एत्थ पओजणाभावादो ।

वर्गणादव्वसमुदाहारे त्ति तत्थ इमाणि चोद्दस अनुयोगद्वाराणि-
वर्गणापरूषणा वर्गणाणिरूषणा वर्गणाध्रुवाध्रुवानुगमो वर्गणासां-
तरणिरंतरानुगमो वर्गणाओजजुम्मानुगमो वर्गणाखेत्तानुगमो
वर्गणाफोसणानुगमो वर्गणाकालानुगमो वर्गणाअंतरानुगमो वर्ग-
णाभावानुगमो वर्गणाउपनयणानुगमो वर्गणापरिमाणानुगमो वर्ग-
णाभागाभागाणुगमो वर्गणाअल्पाबहुए त्ति ॥ ७५ ॥

वर्गणापरूषणं सोलसेहि अनुयोगद्वारेहि कहामो त्ति पइज्जां काऊण पुणो तत्थ

विरोध नहीं आता ।

ऋजुसूत्रनय स्थापनावर्गणाको स्वीकार नहीं करता ॥ ७३ ॥

क्योंकि, संकल्पवश अन्य द्रव्यका अन्य द्रव्यरूपसे परिवर्तन होनेमें विरोध आता है ।

शब्दनय नामवर्गणा और भाववर्गणाको स्वीकार करता है ॥ ७४ ॥

क्योंकि, इस नयके विषय अन्य निक्षेप नहीं हैं ।

शंका- यहाँ किस निक्षेपका प्रकरण है ?

समाधान-नोआगमपुद्गलद्रव्यनिक्षेपका प्रकरण है; क्योंकि, यहाँपर जीव, धर्म, अधर्म, काल और आकाश द्रव्यवर्गणाओंसे प्रयोजन नहीं है ।

वर्गणाद्रव्यसमुदाहारका प्रकरण है । उसमें ये चौदह अनुयोगद्वार हैं- वर्गणा-
परूषणा, वर्गणानिरूषणा, वर्गणाध्रुवाध्रुवानुगम, वर्गणासान्तर निरन्तरानुगम,
वर्गणाओजयुगानुगम, वर्गणाक्षेत्रानुगम, वर्गणास्पर्शानुगम, वर्गणाकालानुगम,
वर्गणाअन्तरानुगम, वर्गणाभावानुगम, वर्गणाउपनयनानुगम, वर्गणापरिमाणानुगम,
वर्गणाभागाभागाणुगम और वर्गणाअल्पबहुत्वानुगम ॥ ७५ ॥

शंका-वर्गणापरूषणा सोलह अनुयोगद्वारोंके द्वारा करेंगे ऐसी प्रतिज्ञा वरके फिर वहाँ

आइल्लानं दोणं चैव अणुओगद्वाराणं परूवणं काऊण सेसतत्थतणचोद्दसेहि अणुओग-
द्वारेहि वर्गणपरूवणमकाऊण वर्गणद्वयसमुदाहारो किमिदि? वोत्तुमारद्धो ? ण
वर्गणपरूवणा वर्गणाणमेगसेडि भणदि । वर्गणद्वयसमुदाहारो पुण वर्गणाणं जाणेग-
सेडी भणदि, तेण वर्गणद्वयसमुदाहारपरूवणा वर्गणपरूवणाविणाभाविणि ति कट्ठ
वर्गणद्वयसमुदाहारो वोत्तुमादत्तो; * अण्णहा गंथबहुत्तभएण पुणरुत्तदोसप्पसंगादो ।

**वर्गणपरूवणदाए इमा एयपदेसियपरमाणुपोगलद्वयवर्गणा
णाम ॥ ७६ ॥**

एत्थ ताव एगसेडिमस्सिदूण वर्गणपरूवणं कस्सामो-एगपदेसियपोगलद्वयवर्गणा
परमाणुसख्वा; अण्णहा एगपदेसिय ति विसेसणाणुववत्तीए । परमाणू च अपच्चवखो;
'णेव इदिए गेज्झ' * इदि वयणादो । तदो तत्थ इमा इदि पच्चवखणिद्दसो ण घडदे ?
ण, आगमप्रमाणेण सिद्धपरमाणुविसयबोहे पच्चवखे संते पच्चवखणिद्देसोववत्तीए
परियम्मे परमाणू अपदेसो ति वुत्तो, एत्थ पुण परमाणू एयपदेसो ति भणितो
कधमेदेसि सुत्ताणं ण विरोहो ? ण एस दोसो; एगपदेसं मोत्तूण विदियादिपदेसाणं
तत्थ पडिसेहकरणादो । न विद्यन्ते द्वितीयादयः प्रदेशाः यस्मिन् सोऽप्रदेशः परमाणु-
प्रारम्भके दो ही अनुयोगद्वारोंका कथन करके और शेष चौदह अनुयोगद्वारोंके द्वारा वर्गणाका
कथन न करके वर्गणाद्रव्यसमुदाहारका कथन किसलिए किया जा रहा है ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, वर्गणाप्ररूपणा अनुयोगद्वार वर्गणाओंकी एक श्रेणिका कथन
करता है, किन्तु वर्गणाद्रव्यसमुदाहार वर्गणाओंकी नाना और एक श्रेणियोंका कथन करता है,
इसलिए वर्गणाद्रव्यसमुदाहारप्ररूपणा वर्गणाप्ररूपणाकी अविनाभाविनी है ऐसा समझ कर वर्गणा-
द्रव्यसमुदाहारका कथन आरम्भ किया है । अन्यथा ग्रन्थके बहुत बड़ जानेका भय था जिससे
पुनरुक्त दोषका प्रसंग आता ।

वर्गणाकी प्ररूपणा करनेपर यह एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा है । ७६॥

यहाँ सर्व प्रथम श्रेणिका अवलम्बन लेकर वर्गणाका कथन करते हैं--एकप्रदेशी
पुद्गलद्रव्यवर्गणा परमाणुस्वरूप होती है; अन्यथा 'एकप्रदेशी' यह विशेषण नहीं बन सकता ।

शंका-परमाणु अप्रत्यक्ष होता है ; क्योंकि, 'उसका इन्द्रियों द्वारा ग्रहण नहीं होता '
ऐसा सूत्रवचन है । इसलिये उसके लिये सूत्रमें 'इमा' ऐसा प्रत्यक्षनिर्देश नहीं बन सकता ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, आगमप्रमाणसे सिद्ध परमाणुविषयक ज्ञानके प्रत्यक्षरूप होनेपर
'इमा' इस प्रकार प्रत्यक्षनिर्देश बन जाता है ।

शंका-परिकर्ममें परमाणुको अप्रदेशी कहा है परन्तु यहाँपर उसे एकप्रदेशी कहा है,
इसलिये इन दोनों सूत्रोंमें विरोध कैसे नहीं होगा ?

समाधान-यह कोई दोष नहीं है ; क्योंकि, परमाणुके एकप्रदेशको छोड़कर द्वितीयादि
प्रदेश नहीं होते इस बातका परिकर्ममें निषेध किया है । जिसमें द्वितीयादि प्रदेश नहीं है वह

❖ ता. आ. प्रत्योः 'हारी ति किमिदि' इति पाठः ।

❖ अ. प्रती 'मादत्तो' आ. प्रती
'मादत्तादो' इति पाठः । ❖ ता. प्रती 'इदिपगेज्झ' इति पाठः ।

रिति । अन्यथा खरविषाणवत् परमाणोरसत्त्वप्रसङ्गात् । कथं परमाणुस्य पोग्गलत्वं ? अण्णेहि मेलणसत्तिसंभवादो । परमाणूणं परमाणुभावेण सव्वकालमवट्ठाणाभावादो दव्वभावो ण जुज्जदे ? ण, पोग्गलभावेण उत्पाद-विणासवज्जिएण परमाणूणं पि दव्वत्तिसिद्धीदो ।

इमा दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम ॥ ७७ ॥

दोण्णं परमाणूणं अजहण्णणिद्ध-ल्लुक्खगुणाणं समुदयसमागमेण दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा होदि । परमाणूणं समागमो किमेगदेसेण होदि आहो सव्वप्पणा ? ण ताव सव्वप्पणा ; अणंताणं पि परमाणूणं समागमेण परमाणुमेत्तपरमाणुप्पसंगादो । ण च एवं ; सेसासेसवग्गणाणमभावप्पसंगा । ण एगदेसेण समागमो वि परमाणुस्य सावयवत्तप्पसंगादो । ण तं पि ; अणवत्थापसंगादो । णाणवत्था वि ; सयलथूलकज्जाणमणुप्पत्तिसंगादो । ण च एगपदेसाणं दोण्हं परमाणूणं सव्वप्पणा समागमं मोत्तूण एगदेसेण समागमो अत्थि ; विदियादिपदेसाभावादो ति ? एत्थ परिहारो वुच्चदे-दव्वट्ठिय-

अप्रदेश परमाणु है यह उसकी व्युत्पत्ति है । यदि 'अप्रदेश' पदका यह अर्थ न किया जाय तो जिस प्रकार गधेके सींगोंका असत्त्व है उसी प्रकार परमाणुके भी असत्त्वका प्रसंग आता है ।

शंका-- परमाणु पुद्गलरूप है यह बात कैसे सिद्ध होती है ?

समाधान-- उसमें अन्य पुद्गलोंके साथ मिलनेकी शक्ति सम्भव है, इससे सिद्ध होता है कि परमाणु पुद्गलरूप है ।

शंका-- परमाणु सदा काल परमाणुरूपसे अवस्थित नहीं रहते इसलिये उनमें द्रव्यपना नहीं बनता ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, परमाणुओंका पुद्गलरूपसे उत्पाद और विनाश नहीं होता इसलिये उनमें भी द्रव्यपना सिद्ध होता है ।

यह द्विप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा है ॥ ७७ ॥

अजघन्य स्निग्ध और रूक्ष गुणवाले दो परमाणुओंके समुदायसमागमसे द्विप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा होती है ।

शंका-- परमाणुओंका समागम क्या एकदेशेन होता है या सर्वात्मना होता है ? सर्वात्मना तो हो नहीं सकता है, क्योंकि, ऐसा होनेपर अनन्त परमाणुओंका भी यदि समागम हो जाय तो भी परमाणुमात्र परिणाम प्राप्त होता है । पर ऐसा है नहीं, क्योंकि, ऐसा होनेपर परमाणुवर्गणाके सिवा शेष सब वर्गणाओंका अभाव प्राप्त होता है । एकदेशेन समागम भी नहीं बनता, क्योंकि, ऐसा होनेपर परमाणु सावयव प्राप्त होता है । यदि परमाणुको सावयव माना जाता है तो अनवस्था दोष आता है । अनवस्था नहीं आवे यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेपर सब स्थूल कार्योंकी अनुत्पत्तिका प्रसंग आता है । और एक-प्रदेशी दो परमाणुओंके सर्वात्मना समागमको छोड़कर एकदेशेन समागम बन नहीं सकता, क्योंकि, परमाणुके द्वितीयादि प्रदेश नहीं पाये जाते ?

✻ अ प्रतो 'परिमाणत्तप्पसंगादो' इति पाठः ।

णए अवलंबिज्जमाणे दोण्णं परमाणूणं सिया सव्वप्पणा समागमो; निरवयवत्तादो । जे जस्स कज्जस्स आरंभया परमाणू ते तस्स अवयवा होति । तदारद्धकज्जं पि अवयवी होदि । ण च परमाणू अण्णेहिंतो जिप्पज्जदि, तस्स आरंभयागमण्णेसिम-भावादो । भावे वा ण एसो परमाणू; एत्तो सुहुमाणमण्णेसि संभवादो । ण च एग-संखंकिर्याम्म परमाणुम्म विदियादिसंखा अत्थि; एक्कस्स दुब्भावविरोहादो । किं च जदि परमाणुस्स अवयवो अत्थि तो परमाणुणा अवयविगा होदव्वं । ण च एवं; अवयवविभागेण अवयवसंजोगस्स विणासे संते परमाणुस्स अभावप्पसंगादो । ण च एवं; कारणाभावेण सखलथूलकज्जाणं पि अभावप्पसंगादो । ण च कप्पियस-रूवा अवयवा होति; अव्ववत्थापसंगादो । तम्हा परमाणुणा निरवयवेण होदव्वं । तदो सिद्धो सव्वप्पणा परमाणूणं सिया समागमो । ण च निरवयवपरमाणूहिंतो थूलकज्जस्स अणुप्पत्ती; निरवयवाणं पि परमाणूणं सव्वप्पणा समा-गमेण थूलकज्जुप्पत्तीए विरोहासिद्धोदो । पज्जवट्ठियणएँ अवलंबिज्जमाणे सिया एगदेसेण समागमो । ण च परमाणूणमवयवा णत्थि; उवरिमहेट्ठिममज्झि-मोवरिमोवरिमभागाणमभावे परमाणुस्स वि अभावप्पसंगादो । ण च एदे भागा

समाधान-- यहाँ इस शंकाका समाधान करते हैं कि द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर दो परमाणुओंका कथंचित् सर्वात्मना समागम होता है, क्योंकि, परमाणु निरवयव होता है । जो परमाणु जिस कार्यके आरम्भक होते हैं वे उसके अवयव होते हैं और उनके द्वारा आरम्भ किया गया कार्य अवयवी होता है । परमाणु अन्यसे उत्पन्न होता है यह कहना ठीक नहीं है; क्योंकि, उसके आरम्भक अन्य पदार्थ नहीं पाये जाते । और यदि उसके आरम्भक अन्य पदार्थ होते हैं ऐसा माना जाता है तो यह परमाणु नहीं ठहरता, क्योंकि, इस तरह इससे भी सूक्ष्म अन्य पदार्थोंका सद्भाव सिद्ध होता है । एक संख्यावाले परमाणुमें द्वितीयादि संख्या होती है यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, एकको दोरूप माननेमें विरोध आता है । दूसरी बात-- यदि परमाणुके अवयव होते हैं ऐसा माना जाय तो परमाणुको अवयवी होना चाहिये । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, अवयवके विभागद्वारा अवयवोंके संयोगका विनाश होनेपर परमाणुका अभाव प्राप्त होता है । पर ऐसा है नहीं, क्योंकि, कारणका अभाव होनेसे सब स्थूल कार्योंका भी अभाव प्राप्त होता है । परमाणुके कल्पितरूप अवयव होते हैं, यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, इस तरह माननेपर अव्यवस्था प्राप्त होती है । इसलिये परमाणुको निरवयव होना चाहिये । अतः सिद्ध होता है कि परमाणुओंका कथंचित् सर्वात्मना समागम होता है । निरवयव परमाणुओंसे स्थूल कार्यकी उत्पत्ति नहीं बनेगी यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, निरवयव परमाणुओंके सर्वात्मना समागमसे स्थूल कार्यकी उत्पत्ति होनेमें कोई विरोध नहीं आता ।

पर्यायार्थिकनयका अवलम्बन करनेपर कथंचित् एकदेशेन समागम होता है । परमाणुके अवयव नहीं होते यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, यदि उसके उपरिम, अधस्तन, मध्यम और उपरिमोपरिम भाग न हों तो परमाणुका ही अभाव प्राप्त होता है । ये भाग कल्पितरूप होते हैं यह

संकल्पियसरूपा; उड्डाधोमज्झिमभागाणं उवरिमो^१वरिमभागाणं च कप्पणाए विणा उवलंभादो । ण च अवयवाणं सवत्थ विभागेण होदव्वमेवे त्ति णियमो, सयलवत्थूणमभावप्पसंगादो । ण च भिण्णपमाणेज्झाणं भिण्णविसाणं च एयत्तमत्थि, विरोहादो । ण च अवयवेहि परमाणू णारद्धो, अवयवसमूहस्सेव परमाणुत्तदंसणादो । ण च अवयवाणं संजोगविणासेण होदव्वमेवे त्ति णियमो, अण्णादिसंजोगे तदभावादो । तदो सिद्धा दुपदेसियपरमाणुपोगलद्ववगणा । एसा परूवणा उवरि सवत्थ^२परूवेदव्व ।

एवं तिपदेसिय-चदुपदेसिय-पंचपदेसिय-छप्पदेसिय-सत्तपदेसिय-
अट्टपदेसिय-णवपदेसिय-दसपदेसिय-संखेज्जपदेसिय-असंखेज्जपदेसिय-
परित्तपदेसिय-अपरित्तपदेसिय-अणंतपदेसिय-अणंताणंतपदेसियपरमाणु-
पोगलद्ववगणा णाम ॥ ७८ ॥

पुव्वपरूविदएयपदेसियपरमाणुपोगलद्ववगणा^३ एयविद्यप्पा । दुपदेसियपर-

कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, परमाणुमें ऊर्ध्वभाग, अधोभाग और मध्यभाग तथा उपरिमोपरिमभाग कल्पनाके बिना भी उपलब्ध होते हैं । तथा परमाणुके अवयव हैं इसलिये उनका सर्वत्र विभाग ही होना चाहिये ऐसा कोई नियम नहीं है, क्योंकि, इस तरह माननेपर तो सब वस्तुओंके अभावका प्रसंग प्राप्त होता है । जिनका भिन्न भिन्न प्रमाणोंसे ग्रहण होता है, और जो भिन्न भिन्न दिशावाले हैं वे एक हैं यह कहना भी ठीक नहीं है; क्योंकि, ऐसा माननेपर विरोध आता है । अवयवोंसे परमाणु नहीं बना है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, अवयवोंके समूह-रूप ही परमाणु दिखाई देता है । तथा अवयवोंके संयोगका विनाश होना चाहिये यह भी कोई नियम नहीं है, क्योंकि, अनादि संयोगके होनेपर उसका विनाश नहीं होता । इसलिये द्विप्रदेशी परमाणु पुद्गल द्रव्यवर्गणा सिद्ध होती है । यह प्ररूपणा आगे सर्वत्र करनी चाहिये ।

विशेषार्थ— यहाँ प्रसंगसे परमाणु सावयव है कि निरवयव इस बातका विचार किया गया है । परमाणु एक और अखण्ड है, इसलिये तो वह निरवयव माना गया है और उसमें ऊर्ध्वादि भाग होते हैं इसलिये वह सावयव माना गया है । द्रव्याधिकनय अखण्ड द्रव्यको स्वीकार करता है और पर्यायाधिकनय उसके भेदोंको स्वीकार करता है । यही कारण है कि द्रव्याधिकनयकी अपेक्षा परमाणुको निरवयव कहा है और पर्यायाधिकनयकी अपेक्षा सावयव कहा है । परमाणुका यह विश्लेषण केवल बुद्धिका व्यायाम नहीं है, किन्तु वास्तविक है ऐसा यहाँ समझना चाहिये ।

इस प्रकार त्रिप्रदेशी, चतुःप्रदेशी, पञ्चप्रदेशी, षट्प्रदेशी, सप्तप्रदेशी, अष्टप्रदेशी, नवप्रदेशी, दशप्रदेशी, संख्यातप्रदेशी, असंख्यातप्रदेशी, परीतप्रदेशी, अपरीतप्रदेशी, अनन्तप्रदेशी और अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा होती है ॥ ७८ ॥

पहले कही गई एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा एक प्रकारकी होती है । तथा द्विप्रदेशी

❁ अ. आ. प्रत्योः '—परिमो' इति पाठः । ❁ ता. प्रती 'उवरिमसवत्थ' इति पाठः ।

❁ ता. प्रती '—वगणा (ए)' इति पाठः ।

माणुपोग्गलदव्ववर्गणप्पहुडि जाव उक्कस्ससंखेज्जपदेसियदव्ववर्गणे त्ति ताव एसा संखेज्जपदेसियवर्गणा णाम रूवूणक्कस्ससंखेज्जमेत्तवियप्पा । एवमेदाओ दोण्णि वर्गणाओ २ । उक्कस्ससंखेज्जपदेसियपरमाणुपोग्गलवर्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते जहणिया असंखेज्जपदेसियदव्ववर्गणा होदि । पुणो रूवूत्तरकमेण असंखेज्जपदेसियदव्ववर्गणा ताव गच्छंति जाव उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जपदेसियदव्ववर्गणे त्ति । उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जाओ उक्कस्ससंखेज्जे सोहिदे सुद्धसेसम्मि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाओ चेव असंखेज्जपदेसियवर्गणाओ । एदाओ संखेज्जपदेसियवर्गणाहितो असंखेज्जगुणाओ । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । एदाओ सव्वाओ वि तदिया असंखेज्जपदेसियवर्गणा होदि ३ ।

परित्त-अपरित्तवर्गणाओ सुत्तुद्दिट्ठाओ अणंतपदेसियवर्गणासु चेव णिवदंति, अणंत-अणंताणंतेहितो वदिरित्तपरित्त अपरित्ताणमभावादो । तेण तत्तव्विसेसणभावेण परित्तापरित्तणिद्देसो परुवेयव्वो ।

उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववर्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते जहणिया अणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववर्गणा होदि।तदो रूवूत्तरकमेण अभवसिद्धि-एहि अणंतगुणं सिद्धेहितो अणंतगुणहीणमद्धानं गच्छदि । सगजहण्णाओ अणंतपदेसिय-उक्कस्सवर्गणाणंतगुणा। को गुणगारो? अभवसिद्धिएहितो अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिम-

परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणासे लेकर उत्कृष्ट संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा तक यह सब संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा है । इसके एक कम उत्कृष्ट संख्यातभेद होते हैं । इस प्रकार ये दो वर्गणायें हुईं । २ । उत्कृष्ट संख्यातप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर जघन्य असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा होती है । पुनः उत्तरोत्तर एक एकके मिलाने पर असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणायें होती हैं और ये सब उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणाके प्राप्त होने तक होती हैं । उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातमेंसे उत्कृष्ट संख्यातके न्यून करने पर शेषमें जितने रूप (अंक) हैं उतनी ही असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणायें होती हैं । ये संख्यातप्रदेशी वर्गणाओंसे असंख्यातगुणी होती हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यातलोक गुणकार है । ये सब ही तीसरी असंख्यातप्रदेशी वर्गणा है । ३ ।

सूत्रमें कही गई परीतवर्गणायें और अपरीतवर्गणायें अनन्तप्रदेशी वर्गणाओंमें ही सम्मिलित हैं, क्योंकि, अनन्त और अनन्तान्तसे अतिरिक्त परीत और अपरीत संख्या उपलब्ध नहीं होता । इसलिये अनन्तके विशेषणरूपसे ही परीत और अपरीतके निर्देशका कथन करना चाहिये ।

उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातप्रदेशी परमाणुपुद्गल द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर जघन्य अनन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गल द्रव्यवर्गणा होती है । पुनः क्रमसे एक एककी वृद्धि होते हुये अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान आगे जाते हैं । अपने जघन्यसे अनन्तप्रदेशी उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी होती है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है ।

✽ अ. आ. प्रतीः ' तव्विसेसेण- ' इति पा५. ।

भागमेत्तो । परमाणुपोगलद्वयवर्गणसदो ति-चतुपदेसियादिसु सवत्थ जोजेयव्वो, अंतदीवयत्तादो । एवमेसा अणंतपदेसियद्वयवर्गणा चउत्थी ४ । कुदो? एदासिमेयत्तं? अणंतभावेण । एदाओ चत्तारि वि वर्गणाओ अगेउज्जाओ ।

**अणंताणंतपदेसियपरमाणुपोगलद्वयवर्गणाणमुवरि आहार-
द्वयवर्गणा णाम ॥ ७९ ॥**

उक्कस्सअणंतपदेसियद्वयवर्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते जहणिया आहारद्वयवर्गणा होइ । तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुणं सिद्धाणमणं-तभागमेत्तवियप्पे गंतूण समप्पदि । जहण्णादो उक्कस्सिया विसेसाहिया । विसेसो पुण अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागमेत्तो होतो वि आहारउक्कस्स-द्वयवर्गणाए अणंतिमभागो । कथमेदं णव्वदे? अविहद्धाइरियवयणादो । ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरपाओग्गपोगलक्खंआणं आहारद्वयवर्गणा ति सण्णा । एवमेसा पंचमी वर्गणा ५ ।

आहारद्वयवर्गणाणमुवरि अग्रहणद्वयवर्गणा णाम ॥ ८० ॥

उक्कस्सआहारद्वयवर्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते पढमअग्रहणद्वयवर्गणाए

सूत्रमें आया हुआ 'परमाणुपुद्गल द्रव्यवर्गणा' शब्द त्रिप्रदेशी और चतुःप्रदेशी आदि पदोंमें सर्वत्र जोड़ना चाहिये, क्योंकि वह अन्तदीपक है । इस प्रकार यह अनन्तप्रदेशी द्रव्यवर्गणा चौथी है । ४ । ये सब वर्गणायें एक क्यों हैं ? क्योंकि, ये सब अनन्तरूपसे एक हैं । ये चारों ही वर्गणायें अग्राह्य हैं ।

विशेषार्थ—प्रथम परमाणुवर्गणा, दूसरी संख्यातवर्गणा, तीसरी असंख्यातवर्गणा और चौथी अनन्तवर्गणा ये चार प्रकारकी वर्गणायें अग्राह्य हैं । इसका यह आशय है कि जीव द्वारा इनका ग्रहण नहीं होता । शेष कथन सुगम है ।

अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गल द्रव्यवर्गणाके ऊपर आहारद्रव्यवर्गणा है ॥ ७९ ॥

उत्कृष्ट अनन्तप्रदेशी द्रव्यवर्गणायें एक अंकके मिलाने पर जघन्य आहार द्रव्यवर्गणा होती है । फिर एक अधिकके क्रससे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण भेदोंके जाने पर अन्तिम आहार द्रव्यवर्गणा होती है । यह जघन्यसे उत्कृष्ट विशेष अधिक है । विशेषका प्रमाण अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण होता हुआ भी उत्कृष्ट आहार द्रव्यवर्गणाके अनन्तवें भागप्रमाण है ।

शंका यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—अविहद्ध आचार्योंके वचनसे जाना जाता है ।

औदारिक, वैक्रियिक और आहारक शरीरके योग्य पुद्गल स्कन्धोंकी आहारद्रव्यवर्गणा संज्ञा है । इस प्रकार यह पाँचवीं वर्गणा है । ५ ।

आहारद्रव्यवर्गणाके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा है ॥ ८० ॥

उत्कृष्ट आहार द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर प्रथम अग्रहण द्रव्यवर्गणासम्बन्धी

सर्वजहणवर्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमण-
तभागमेत्तद्धाणं गंतूण उक्कस्सिया अगहणदव्ववर्गणा होदि । जहण्णादो उक्कस्सिया
अणंतगुणा । को गुणमारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । एवमेसा
छट्ठी वर्गणा ६ । कधमेदासिद्धि वगणानमेयत्तं ? अगहणभावेण । पंचणं सरी-
राणं भासा-मणणं च अजोगा जे पोगलक्खंधा तेसिमगहणवर्गणा त्ति सण्णा ।

अगहणदव्ववर्गणाणमुवरि तेयादव्ववर्गणा णाम ॥ ८१ ॥

उक्कस्सियाए अगहणदव्ववर्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते सर्वजहणिया तेजा-
दव्ववर्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्त-
मध्दाणं गंतूण उक्कस्सिया तेजइयसरीरदव्ववर्गणा होदि । जहण्णादो उक्कस्सा विसेसा-
हिया । केत्तियमेत्तो विसेसो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । एसा
सत्तमी वर्गणा ७ । एदिस्से पोगलक्खंधा तेजइयसरीरपाओगा तेणेसा गहणवर्गणा ।

तेयादव्ववर्गणाणमुवरि अगहणदव्ववर्गणा णाम ॥ ८२ ॥

तेजइयसरीरउक्कस्सदव्ववर्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते विदियअगहणदव्ववर्ग-
णाए पढमिल्लिया सर्वजहणअगहणदव्ववर्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण अभवसि-
द्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तमध्दाणं गंतूण विदियअगहणदव्ववर्गणाए
सर्वजघन्य वर्गणा होती है । फिर एक एक बढाते हुये अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके
अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर उत्कृष्ट अग्रहण द्रव्यवर्गणा होती है । यह जघन्यसे उत्कृष्ट
अनन्तगुणी होती है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भाग-
प्रमाण गुणकार है । इस प्रकार यह छठी वर्गणा है । ६ ।

शंका— इन वर्गणाओंमें एकत्व कैसे है ?

समाधान— अग्रहणपनेकी अपेक्षा इनमें एकत्व है ।

पाँच शरीर तथा भाषा और मनके अयोग्य जो पुद्गलस्कन्ध हैं उनकी अग्रहण-
वर्गणा संज्ञा है ।

अग्रहणद्रव्यवर्गणाके ऊपर तैजसशरीरद्रव्यवर्गणा है ॥ ८१ ॥

उत्कृष्ट अग्रहण द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलानेपर सबसे जघन्य तैजसशरीर
द्रव्यवर्गणा होती है । पुनः एक एक अधिकके क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें
भागप्रमाण स्थान जाकर उत्कृष्ट तैजसशरीरद्रव्यवर्गणा होती है । यह अपने जघन्यसे उत्कृष्ट
विशेष अधिक है । विशेषका प्रमाण क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें
भागप्रमाण है । यह सातवीं वर्गणा है । ७ । इसके पुद्गलस्कन्ध तैजसशरीरके योग्य होते
हैं, इसलिये यह ग्रहणवर्गणा है ।

तैजसशरीरद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहण द्रव्यवर्गणा है ॥ ८२ ॥

उत्कृष्ट तैजसशरीर द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर दूसरी अग्रहण द्रव्यवर्गणासंबंधी

❀ ता. अ. आ. प्रतिष्ठा '—मेदेसि' इति पाठः ।

इति पाठः ।

❀ अ. आ. प्रत्योः '—सरीरपाओगा'

❀ ता. प्रती '—सरीरदव्व' इति पाठः ।

उक्कस्सिया वग्गणा होदि । सगजहण्णादो सगउक्कस्सवग्गणा अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो एसा अट्टमी वग्गणा ८ । पंचण्णं सरीराणं गहणं पाओग्गा ण होदि त्ति अगहणवग्गणसण्णिदा । जहण्णादो उक्कस्सवग्गणा अणंतगुणे त्ति कुदो णव्वदे ? अविरुद्धाइरियवयणादो ।

अगहणद्वयवग्गणाणमुवरि भासादव्यवग्गणा णाम । ८३ ।

अगहणउक्कस्सव्यवग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते सव्वजहणिया भासादव्यवग्गणा होदि । तदो रुवत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुणं* सिद्धाणमणंतभागमेत्तमद्धानं गंतूण भासादव्यवग्गणाए† उक्कस्सिया दव्यवग्गणा होदि । जहण्णादो उक्कस्सा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तो विसेसो ? सगजहणवग्गणाए अणंतमभागो । को पडिभागो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । एसा णवमी वग्गणा९ । भासादव्यवग्गणाए परमाणुपुद्गलक्खंधा चट्ठणं भासाणं पाओग्गा । पटह‡-भेरी काहलवमज्जणादिसद्धानं पि एसा चेव वग्गणा पाओग्गा । कधं काहलादिसद्धानं भासाववएसो ?

पहली सर्वजघन्य अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है । फिर आगे एक एक अधिकके क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर दूसरी अग्रहणद्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है । यह अपनी जघन्य वर्गणासे अपनी उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । यह आठवीं वर्गणा है । ८ । यह पाँच शरीरोंके ग्रहणयोग्य नहीं है इसलिये इसकी अग्रहण द्रव्यवर्गणा संज्ञा है ।

शंका-जघन्यसे उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-अविरुद्ध आचार्यवचनसे जाना जाता है ।

अग्रहण द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर भाषा द्रव्यवर्गणा है ॥ ८३ ॥

उत्कृष्ट अग्रहण द्रव्यवर्गणामें एक अंकके प्रक्षिप्त करने पर सबसे जघन्य भाषा द्रव्यवर्गणा होती है । इससे आगे एक एक अधिकके क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर भाषा द्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट द्रव्यवर्गणा होती है । यह अपने जघन्यसे उत्कृष्ट विशेष अधिक है । विशेषका प्रमाण कितना है ? अपनी जघन्य वर्गणाका अनन्तवाँ भाग विशेषका प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंका अनन्तवाँ भाग प्रतिभाग है । यह नौवीं वर्गणा है । ९ । भाषा द्रव्यवर्गणाके परमाणुपुद्गलस्कन्ध चारों भाषाओंके योग्य होते हैं तथा ढोल, भेरी, नगारा और मेघका गर्जन आदि शब्दोंके भी योग्य ये ही वर्गणायें होती हैं ।

शंका-नगारा आदिके शब्दोंकी भाषा संज्ञा कैसे है ?

❁ ता. प्रती ' (अ) गहण- ' अ. आ. प्रत्ययः ' अग्रहण- ' इति पाठः । ❁ ता. अ. आ. प्रतिषु ' -गुणो ' इति पाठः । ❁ ता. प्रती ' -वग्गणा (ए-) इति पाठः । ❁ अ. प्रती ' पाओग्गपटह- ' इति पाठः ।

ण, भासो व्व भासे त्ति उवयारेण काह्लादिसद्धानं पि तव्ववएससिद्धोदो ।

भासादव्ववर्गणाणमुवरि अग्रहणदव्ववर्गणा णाम ॥ ८४ ॥

उक्कस्सभासादव्ववर्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते तदियअग्रहणदव्ववर्गणाए सव्वजहणिया वर्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाण-मणंतभागमेत्तमद्धानं गंतूण तदियअग्रहणदव्ववर्गणाए उक्कस्सिया वर्गणा होदि । सगजहणणादो उक्कस्सा अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । एसा दसमी वर्गणा १० । एदिस्से वि पोग्गलक्खंधा ग्रहणपा-ओग्गा ण होति । कुदो ? अण्णहा अग्रहणसण्णाणुववत्तीदो ।

अग्रहणदव्ववर्गणाए उवरि मददव्ववर्गणा णाम ॥ ८५ ॥

तदियाग्रहणदव्वउक्कस्सवर्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते जहणिया मणद-व्ववर्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुणं सिद्धाणमणंतभाग-मेत्तमद्धानं गंतूण उक्कस्सिया मणदव्ववर्गणा होदि । सगजहणणवर्गणादो उक्कस्स-वर्गणा विसेसाहिया । विसेसो पुण सव्वजहणमणदव्ववर्गणाए अणंतमभागो । तस्स को पडिभागो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतमभागो । एसा एक्कार-समी वर्गणा ११ । एदीए वर्गणाए दव्वमणणिव्वत्तणं कीरदे ।

समाधान— नहीं, क्योंकि, भाषाके समान होनेसे भाषा है इस प्रकारके उपचारसे नगारा आदिके शब्दोंकी भी भाषा संज्ञा है ।

भाषा द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहण द्रव्यवर्गणा है ॥ ८४ ॥

उत्कृष्ट भाषा द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर तीसरी अग्रहण द्रव्यवर्गणासम्बन्धी सबसे जघन्य वर्गणा होती है । इसके आगे एक एक अधिकके क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर तीसरी अग्रहणद्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है । यह अपने जघन्यसे उत्कृष्ट अनन्तगुणी होती है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । यह दसवीं वर्गणा है । १० । इसके भी पुद्गलस्कन्ध ग्रहणयोग्य नहीं होते हैं, क्योंकि, ऐसा नहीं माननेपर इसकी अग्रहण संज्ञा नहीं बन सकती है ।

अग्रहण द्रव्यवर्गणाके ऊपर मनोद्रव्यवर्गणा है ॥ ८५ ॥

तीसरी उत्कृष्ट अग्रहण द्रव्य वर्गणामें एक अंकके मिलाने पर जघन्य मनोद्रव्यवर्गणा होती है । फिर आगे एक एक अधिकके क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर उत्कृष्ट मनोद्रव्यवर्गणा होती है । यह अपने जघन्यसे उत्कृष्ट वर्गणा विशेष अधिक है । तथा विशेषका प्रमाण सबसे जघन्य मनोद्रव्यवर्गणाका अनन्तवाँ भाग है । इसका प्रतिभाग क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण प्रतिभाग है । यह ग्यारहवीं वर्गणा है । ११ । इस वर्गणासे द्रव्यमनकी रचना करते हैं ।

❀ ता. प्रती '—दव्ववर्गणाए' इति पाठः ।

'—मणोणिव्वत्तं ण' इति पाठः ।

❀ अ. प्रती '—मणोणिव्वत्तं' आ. प्रती

मणद्ववर्गणाणमुवरि अग्रहणद्ववर्गणा णाम ॥ ८६ ॥

संपहि उक्कस्समणद्ववर्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते चउत्थीए अग्रहण-
द्ववर्गणाए सव्वजहणिया वगणा होदि । तदो पदेसुत्तरादिकमेण अभवसिद्धिएहि
अणंतगुणं सिद्धाणमणंतभागमेत्तमद्धानं गंतूण चउत्थअग्रहणद्ववर्गणाए उक्कस्स-
वगणा होदि । सगजहणवगणादो उक्कस्सिया वगणा अणंतगुणा । को गुणगारो ?
अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतमभागो । एसा बारसमी वगणा १२ ग्रह-
णपाओग्गा ण होदि, अप्पाहियपरिमाणत्तादो ।

अग्रहणद्ववर्गणाणमुवरि कम्मइयद्ववर्गणा णाम ॥ ८७ ॥

चउत्थीए अग्रहणद्ववर्गणाए उक्कस्सद्ववर्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते
सव्वजहणिया कम्मइयपरीरद्ववर्गणा होदि । तदो पदेसुत्तरादिकमेण अभवसि-
द्धिएहि अणंतगुणसिद्धाणमणंतभागमेत्तमद्धानं गंतूण कम्मइयद्ववर्गणाए उक्क-
स्सिया वगणा होदि । सगजहणवगणादो सगुक्कस्सिया वगणा विसेसाहिया ।
केत्तियमेत्तो विसेसो ? जहणकम्मइयवगणाए अणंतमभागो । तस्स को पडिभागो ?
अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतमभागो । एसा तेरसमी वगणा १३ ।
एदिस्से वगणाए पोग्गलवखंधा अट्टकम्मपाओग्गा ।

कम्मइयद्ववर्गणाणमुवरि ध्रुवखंधद्ववर्गणा णाम ॥ ८८ ॥

मनोद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहण द्रव्यवर्गणा है ॥ ८६ ॥

उत्कृष्ट मनोद्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर चौथी अग्रहणद्रव्यवर्गणासम्बन्धी
सबसे जघन्य वर्गणा होती है । इससे आगे एक एक प्रदेशके अधिक क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे
और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर चौथी अग्रहण द्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट
वर्गणा होती है । यह अपनी जघन्य वर्गणासे उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है । गुणकार क्या है ?
अभव्योंसे अनन्तगुण । और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । यह बारहवीं वर्गणा है ।
१२ । यह ग्रहणयोग्य नहीं होती है, क्योंकि, यह न्यूनाधिक परिणामवाली है ।

अग्रहण द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर कर्मण द्रव्यवर्गणा है ॥ ८७ ॥

चौथी अग्रहण द्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट द्रव्यवर्गणामें एक अंकके प्रक्षिप्त करने पर
सबसे जघन्य कर्मणशरीर द्रव्यवर्गणा होती है । आगे एक एक प्रदेश अधिकके क्रमसे अभव्योंसे
अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर कर्मण द्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट
वर्गणा होती है । यह अपनी जघन्य वर्गणासे अपनी उत्कृष्ट वर्गणा विशेष अधिक है । विशे-
षका प्रमाण कितना है । जघन्य कर्मणवर्गणाके अनन्तवें भागप्रमाण है । इसका प्रतिभाग क्या
है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण इसका प्रतिभाग है । यह तेरहवीं
वर्गणा है । १३ । इस वर्गणाके पुद्गलस्कन्ध आठ कर्मोंके योग्य होते हैं ।

कर्मण द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर ध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणा है ॥ ८८ ॥

❁ अ. आ. प्रत्यो: ' -वखंधाद्व- ' इति पाठः ।

एसो ध्रुवक्खंधणिद्देसो अंतदीवओ । तेण हेट्ठिमसव्ववर्गणाओ ध्रुवाओ चेव अंतरविरहिदाओ त्ति घेत्तव्वं । एत्तो प्पहुडि उवरि भण्णमाणसव्ववर्गणासु अग-
हणभावो णिरंतरमणुवट्ठावेदव्वो । संपहि कम्मइयउक्कस्सवर्गणाए एगरूवे पक्खित्ते जहणिया ध्रुवक्खंधदव्ववर्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुण-
मेत्तमद्धाणं गंतूणं ध्रुवक्खंधदव्ववर्गणाए उक्कस्सिया वर्गणा होदि । सगजहण-
वर्गणादो सगुक्कस्सिया वर्गणा अणंतगुणा । को गुणमारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो ।
एसा चोद्दसमो वर्गणा १४ । आहार तेजा* भासा मण-कम्मइयवर्गणाओ चेव एत्थ
परूवेदव्वाओ, बंधणिज्जत्ताओ, ण सेसाओ, तासि बंधणिज्जत्ताभावादो, ण सेसाओ,
तासि बंधणिज्जत्ताभावादो ? ण, सेसवर्गणपरूवणाए विणा बंधणिज्जवर्गणाणं
परूवणोवायाभावादो वदिरेगावगमणेण विणा णिच्छिदण्यपचयपवुत्तीए
अभावादो वा ।

ध्रुवक्खंधदव्ववर्गणाणमुवरि सांतरणिरंतरदव्ववर्गणा णाम । ८९ ।
अंतरेण सह णिरंतरं गच्छदि त्ति सांतरणिरंतरदव्ववर्गणासण्णा एदिस्से अत्थाणुगया ।
संपहि उक्कस्सध्रुवक्खंधवर्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते जहणिया सांतरणिरंतर-
दव्ववर्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तमद्धाणं गंतूणं सांतरणि-
रंतरदव्ववर्गणाए उक्कस्सवर्गणा होदि । सगजहणवर्गणादो सगुक्कस्सवर्गणा

यह ध्रुवस्कन्ध पदका निर्देश अन्तदीपक है । इससे पिछली सब वर्गणायें ध्रुव ही हैं
अर्थात् अन्तरसे रहित हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । यहांसे लेकर आगे कही जानेवाली सब
वर्गणाओंमें अग्रहणपनेकी निरन्तर अनुवृत्ति करनी चाहिए ।

उत्कृष्ट कार्मण वर्गणामें एक अंकके मिलाने पर जघन्य ध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणा होती
है । अनन्तर एक एक अधिकके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान जाकर ध्रुवस्कन्ध द्रव्यव-
र्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है । यह अपने जघन्यसे अपनी उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है ।
गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है । यह चौदहवीं वर्गणा है । १४ ।

शंका-यहाँ पर आहारवर्गणा, तैजसवर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणा और कार्मणवर्गणा
ही कहनी चाहिये, क्योंकि, वे बन्धनीय हैं । शेष वर्गणायें नहीं कहनी चाहिये, क्योंकि, वे
बन्धनीय नहीं हैं ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, शेष वर्गणाओंका कथन किये बिना बन्धनीय वर्गणाओंके कथन
करनेका कोई मार्ग नहीं है । अथवा व्यतिरेकका ज्ञान हुये बिना निश्चित अन्वयके ज्ञानमें प्रवृत्ति
नहीं हो सकती, इसलिये यहाँ बन्धनीय व अबन्धनीय सब वर्गणाओंका निर्देश किया है ।

ध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर सान्तरनिरन्तर द्रव्यवर्गणा है ॥ ८९ ॥

जो वर्गणा अन्तरके साथ निरन्तर जाती है उसकी सान्तर-निरन्तर द्रव्यवर्गणा संज्ञा है ।
यह सार्थक संज्ञा है । उत्कृष्ट ध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर जघन्य सान्तर-
निरन्तर द्रव्यवर्गणा होती है । आगे एक एक अंकके अधिक क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान
जाकर सान्तर-निरन्तर द्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है । यह अपनी जघन्य वर्गणासे

अणंतगुणा । को गुणगारो? सब्बजीवेहि अणंतगुणो । एसा पण्णारसमी वर्गणा १५।
एसा वि अग्रहणवर्गणा चेव, आहार-तेजा-भासा-मण-कम्माणमजोगत्तादो ।

सान्तरणिरंतरद्वयवर्गणाणमुवरि ध्रुवसुण्णवर्गणा णाम ॥ १० ॥

अदीदाणागदवट्टमाणकालेसु एदेण सरूवेण परमाणुपोग्गलसंचयाभावादो
ध्रुवसुण्णद्वयवर्गणा ति अत्थाणुगया सण्णा । संपहि उक्कस्सान्तरणिरंतरद्वयवर्ग-
णाए उवरि परमाणुत्तरो परमाणुपोग्गलवखंधो तिसु वि कालेसु णत्थि । दुपदेसुत्तरो
वि णत्थि । एवं तिपदेसुत्तरादिकमेण सब्बजीवेहि अणंतगुणमेत्तमद्वाणं गंतूण पढम-
ध्रुवसुण्णवर्गणाए उक्कस्सवर्गणा होदि । सगजहण्णवर्गणादो सगुक्कस्सिया वर्गणा
अणंतगुणा । को गुणगारो? सब्बजीवेहि अणंतगुणो । एसा सोलसमी वर्गणा १६
सब्वकालं सुण्णभावेण अवट्टिदा ।

ध्रुवसुण्णद्वयवर्गणाणमुवरि पत्तेयसरीरद्वयवर्गणा णाम ॥ ११ ॥

एक्कस्स जीवस्स एक्कम्हि देहे उवच्चिदकम्म णोकम्मवखंधो पत्तेयसरीरद्वय-
वर्गणा णाम । संपहि उक्कस्सध्रुवसुण्णद्वयवर्गणाए उवरि एगरूवे पविक्खत्ते सब्ब-
जहण्णिया पत्तेयसरीरद्वयवर्गणा होदि । एसा जहण्णिया पत्तेयसरीरद्वयवर्गणा
कस्स होदि ? जो जीवो सुहुमणिगोदअपज्जत्तएसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण

अपनी उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है ।
यह पन्द्रहवीं वर्गणा है । १५ । यह भी अग्रहणवर्गणा ही है; क्योंकि, यह आहार, तैजस, भाषा,
मन और कर्मके अयोग्य है ।

सान्तरनिरन्तरद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर ध्रुवशून्यवर्गणा है ॥ १० ॥

अतीत, अनागत और वर्तमान कालमें इस रूपसे परमाणु पुद्गलोंका संचय नहीं होता,
इसलिये इसकी ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणा यह सार्थक संज्ञा है । उत्कृष्ट सान्तरनिरन्तर द्रव्यवर्गणाके
ऊपर एक परमाणु अधिक परमाणुपुद्गलस्कन्ध तीनों ही कालोंमें नहीं होता, दो प्रदेश अधिक
भी नहीं होता, इस प्रकार तीन प्रदेश अधिक आदिके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान जाकर
प्रथम ध्रुवशून्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है । यह अपनी जघन्य वर्गणासे अपनी
उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है । यह
सोलहवीं वर्गणा है । १६ । जो सर्वदा शून्यरूपसे अवस्थित है ।

ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणा है ॥ ११ ॥

एक एक जीवके एक एक शरीरमें उपचित हुए कर्म और नोकर्मस्कन्धोंकी प्रत्येक-
शरीर द्रव्यवर्गणा संज्ञा है । अब उत्कृष्ट ध्रुवशून्य द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर जघन्य
प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा होती है ।

शंका— यह जघन्य प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणा किसके होती है ?

समाधान— जो जीव सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तिकोंमें पत्यका असंख्यातवां माग कम कर्मस्थिति

✽ श्र. आ. प्रत्यो! '—कालसुण्णभावेण' इति पाठः ।

ऊणियं कम्मट्ठिदि खविद-कम्मंसियलक्खणेण अच्छिदो । पुणो पलिदोवमस्स असंखे-
ज्जदिभागमेत्ताणि संजमासंजमकंडयाणि ततो विसेसाहियाणि सम्मत्त-अणंताणुबंधि-
विसंजोयणकंडयाणि अटुसंजमकंडयाणि चटुक्खुत्तो कमाय-उवसामणं च कादूण पुणो
अपच्छिमे भवगहणे पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववणो । तदो गम्भणिक्खमणाविअ-
टुवस्संतोमृहुत्तम्महियाणम्वरि सम्मत्तं संजमं च जुगवं घेतूणं सजोगिजि मो जादो ।
तदो देसूणपुव्वकोडि सव्वमोराणिय-तेजइयसरीराणं अधट्ठिदिगलणाए णिज्जरं करिय
कम्मइयसरीरस्स गुणसेट्ठिणिज्जरं कादूण चरिमसमयभवसिद्धियो जादो । एवंविहल-
क्खणेणागदअजोगिचरिमसमए सव्वजहणिया पत्तेयसरीरवर्गणा होदि; एदस्स देहे
णिगोदजीवाणमभावादो ।

संपहि एदिस्से वर्गणाए माहप्पज्जाणावणट्ठं ट्ठाणपरूवणं कस्सामो । तं जहा-ओरा-
लिय-तेजा-कम्मइयसरीरपरमाणूणं तिण्णि पुंजे उवरि टुविय तेसि हेट्ठा तेसि चेव विस्स-
सोवचयपुंजे च टुविय पुणो एदेसि छणं जहणपुंजाणम्वरि परमाणुवड्ढावणविहाणं
वुच्चदे-खविदकम्मंसियलक्खणेणागदस्स चरिमसमयभवसिद्धियस्स ओरालियसरीरवि-
स्ससोवचयपुंजम्मि एगविस्ससोवचयपरमाणुमिह वड्ढिदे तमणमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । पुणो
तत्थेव ॐ दोसु परमाणुसु वड्ढिदेसु तदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । तिसु ॐ परमाणुसु वड्ढिदेसु
चउत्थमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । चटुसु विस्ससोवचयपरमाणुपोगलेसु वड्ढिदेसु पंचममपुण-

कालतक क्षपित कर्मांशिकरूपसे रहा । पुनः जिसने पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण संयमासयम-
काण्डक, इनसे कुछ अधिक सम्यक्त्वकाण्डक तथा अनन्तानुबन्धीके विसंयोजनाकाण्डक तथा
आठ संयमकाण्डक करते हुए चारबार कषायकी उपशामना की । पुनः अन्तिम भवको ग्रहण करते
हुए पूर्वकोटिप्रमाण आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ । अनन्तर गर्भनिष्क्रमण कालसे लेकर आठ
वर्ष और अन्तर्मुहूर्तका होनेपर सम्यक्त्व और संयमको एकसाथ प्राप्त करके सयोगी जिन हो
गया । अनन्तर कुछ कम पूर्वकोटि कालतक औदारिक और तैजसशरीरकी अधःस्थितिगलनाके द्वारा
पूरी निर्जरा करके तथा कर्मणशरीरकी गुणश्रेणिनिर्जरा करके अन्तिम समयवर्ती भव्य हो गया ।
इस प्रकार आकर जो अयोगीकेवलीके अन्तिम समयमें स्थित है उसके सबसे जघन्य प्रत्येकशरीर
द्रव्यवर्गणा होती है, क्योंकि, इसके शरीरमें निगोद जीवोंका अभाव है ।

अब इस वर्गणाके माहात्म्यका ज्ञान करानेके लिए स्थानप्ररूपणा करते हैं । यथा- औदा-
रिकशरीर, तैजसशरीर और कर्मणशरीरके परमाणुओंके तीन पुञ्ज ऊपर स्थापित करके और
उनके पहले ही विस्सोपचयोंके पुञ्ज स्थापित करके फिर इन जघन्य छह पुञ्जोंके ऊपर परमाणु-
ओंके बढानेकी विधि कहते हैं । क्षपितकर्मांशिकविधिसे आकर जो अन्तिम समयवर्ती भव्य हुआ है
उसके औदारिकशरीरके विस्सोपचय पुञ्जमें एक विस्सोपचय परमाणुके बढनेपर वह अन्य
अपुनरुक्त स्थान होता है । पुनः उसीमें दो परमाणुओंके बढनेपर तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता
है । तीन परमाणुओंके बढनेपर चौथा अपुनरुक्त स्थान होता है । चार विस्सोपचय परमाणु

❖ अ. प्रती 'कम्मट्ठिदि (बधिय-)' खविद- इति पाठः । ❖ ता. प्रती '-जुगवं घेतूणं' इति स्थाने
'वेत्तूणं जुगवं' इति पाठः । ॐ ता. प्रती. 'तत्थ' इति पाठः । ❖ अ. प्रती 'तदियपुणरुत्त' इति
पाठः । ❖ आ. प्रती 'तमणमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । तिसु' इति पाठः ।

रुत्तट्ठाणं होदि । एवमेगं गुत्तरपरमाणुवड्ढीए वड्ढावेदव्वं जाव ओरालियसरीरविस्स-
सोवचयपुंजम्मि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता परमाणू वड्ढिदा त्ति । एवं वड्ढाविदे ओरा-
लिय-सरीरविस्ससोवचयपुंजम्मि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ताणि अपुणरुत्तट्ठाणाणि
लद्धाणि भवंति । एसा ट्ठाणपरूवणा संभवं पडुच्च कोरदे । को संभवो णाम? इंदो मेरुं
पल्लट्टेदुं समत्थो त्ति एसो संभवो णाम । वत्तिसखवेण एत्तिएसु ट्ठाणेषु सम्पुण्णेषु को
दोसो होदि ? ण, सव्वजीवरासीदो सिद्धाणमणंतगुणत्तप्पसंगादो । ण चुप्पणट्ठाणमेत्ता
सिद्धा अत्थि; अदीदकालस्स असंखेज्जदिभागाणं सिद्धाणं ट्ठाणमेत्तपमाणत्तविरोहादो ।

पुणो अण्णे जीवे❀ खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण सव्वजहण्णपत्तेयसरीरवग्गणाए
उवरि विस्ससोवचएण सह एगपरमाणुणा ओरालियसरीरमब्भहियं कादूणच्छिदे एदं
पि अपुणरुत्तट्ठाणं होदि । कुदो? परमाणुत्तरकमेण पुव्वं वड्ढाविदओरालियसरीरविस्स-
सोवचयपुंजेण सह संपहि अहियएगोरालियसरीरपरमाणुदंसणादो । पुव्वुत्तोरालियस-
रीर-सव्वजहण्णपरमाणुपुंजादो❀ संपहियओरालियसरीरपरमाणुपुंजो परमाणुत्तरो
होदि । पुणो पुव्विल्लक्खवगं मोत्तूण संपहियववगं घेतूण एदस्स ओरालियसरीरविस्स-
सोवचयपुंजम्मि परमाणुत्तर-दुपरमाणुत्तरादि❀कमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तेसु

पुद्गलोंके बढनेपर पाँचवां अपुनरुक्त स्थान होता है । इसप्रकार औदारिकशरीरके विस्ससोपचय-
पुंजमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंकी वृद्धि होनेतक उत्तरोत्तर एक एक परमाणुकी वृद्धि
करनी चाहिए । इस प्रकार वृद्धि करनेपर औदारिकशरीरके विस्ससोपचय पुंजमें सब जीवोंसे
अनन्तगुणे अपुनरुक्त स्थान उपलब्ध होते हैं । यह स्थानप्ररूपणा सम्भव सत्यकी अपेक्षा की है ।

शंका— सम्भवसत्य किसे कहते हैं ?

समाधान— ' इन्द्र मेरुको पलटनेमें समर्थ है । ' इसे सम्भव कहते हैं ।

शंका— व्यक्तरूपसे इतने स्थानोंके उत्पन्न होनेपर क्या दोष उत्पन्न होता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, ऐसा होनेपर सब जीवोंसे सिद्ध अनन्तगुणे प्राप्त होते हैं ।
परन्तु यहाँ जितने स्थान उत्पन्न किये गये हैं उतने सिद्ध हैं नहीं, क्योंकि, सिद्ध अतीत कालके
असंख्यातवें भाग प्रमाण है, इसलिए उन्हे उक्तस्थानप्रमाण माननेमें विरोध आता है ।

पुनः क्षपित कर्मांशिकविधिसे आकर सबसे जघन्य प्रत्येकशरीर वर्गणाके ऊपर विस्ससो-
पचयसहित एक परमाणुसे औदारिकशरीरको अधिक करके अन्य एक जीवके स्थित होनेपर यह
भी अपुनरुक्त स्थान होता है, क्योंकि, उत्तरोत्तर एक परमाणुके क्रमसे पहले बढाए हुए औदारिक-
शरीर विस्ससोपचय पुंजके साथ इस समय औदारिकशरीरका एक परमाणु अधिक देखा जाता है ।
पूर्वोक्त औदारिकशरीरके सबसे जघन्य परमाणुपुंजकी अपेक्षा साम्प्रतिक औदारिकशरीर परमाणु-
पुंज एक परमाणु अधिक है । पुनः पूर्वोक्त क्षपकको छोडकर और साम्प्रतिक क्षपकको ग्रहणकर
इसके औदारिकशरीर विस्ससोपचय पुंजमें एक परमाणु अधिक, दो परमाणु अधिक आदिके क्रमसे

❀ ता. प्रती 'ट्ठाणमेव (त्त) —' अ प्रती 'ट्ठाणमेव—' इति पाठः । ❀ ता. प्रती 'अण्णे जीवे' इति पाठः ।

❀ आ. प्रती '—जहण्णपुंजादो' इति पाठः । ❀ ता. आ. प्रती '—पुंजम्मि परमाणुत्तरादि—' इति पाठः ।

विस्ससोवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ताणि चेव अपुण-
रुत्तट्टाणाणि लब्भंति ।

तदो अण्णे जीवे खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण सव्वजहण्णेण ओरालियसरी-
रपुंजं दुपरमाणुत्तरं कादूण तस्सेव विस्ससोवचयपुंजं पि दोण्णं परमाणूणं विस्सासु-
वचयपुंजेण अहियं कादूणच्छिदे अणंतरहेट्ठिमट्टाणादो संपहियट्टाणं परमाणुत्तरं होदि ।
कारणं पुब्बं व जाणिदूण वत्तव्वं । संपहि उत्पण्णट्टाणस्स ओरालियसरीरविस्सासुव-
चयपुंजम्मि एगपरमाणुपोग्गले वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्टाणं होदि । एवं दो-तिण्णि-
आदि जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ताओरालियविस्ससुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढि-
देसु अणंताणि अपुणरुत्तट्टाणाणि लब्भंति ।

तदो अण्णे जीवे खविदकम्मंसियसव्वजहण्णोराालियसरीरं तिपरमाणुत्तरं कादूण
सव्वजहण्णोराालियसरीरविस्ससुवचयपुंजं तिण्णं परमाणूणं विस्ससोवचएहि अहियं
कादूणच्छिदे अणंतरहेट्ठिमट्टाणादो एगवारेण वड्ढूणागदं संपहियट्टाणं परमाणुत्तरं ।
एवमणेण विहाणेण ओरालियसरीरदोपुंजा वड्ढावेदव्वा जावप्पणो तप्पाओग्गउ-
क्कस्सदव्वपमाणं पत्ता त्ति । णवरि तेजा-कम्मइयसरीराणि सव्वजहण्णाणि चेव ।
एदेसि चदुण्णं वड्ढोए विणा सविस्ससोवचयओरालियसरीरस्सेव कथं वुड्ढी होदि ?
ण, तज्जहण्णाविरोहिउक्कस्सवुड्ढोए एत्थ गहणादो ।

सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्ससोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़नेपर सब जीवोंसे अनन्तगुणे ही
अपुनरुक्त स्थान उपलब्ध होते हैं ।

पुनः क्षपित कर्मांशिक विधिसे आकर सबसे जघन्य औदारिकशरीर पुंजको दो परमाणु
अधिक करके तथा उसीके विस्ससोपचय पुंजको भी विस्ससोपचय पुंजकी अपेक्षा दो परमाणु
अधिक करके अन्य जीवके स्थित होनेपर अनन्तर पिछले स्थानसे साम्प्रतिक स्थान एक परमाणु
अधिक होता है । कारण पहलेके समान जान कर कहना चाहिए । अब इस समय उत्पन्न हुए
स्थानके औदारिकशरीर विस्ससोपचय पुंजमें एक परमाणु पुद्गलके बढ़नेपर अन्य अपुनरुक्त
स्थान होता है । इस प्रकार दो, तीनसे लेकर सब जीवोंसे अनन्तगुणे औदारिक विस्ससोपचय
परमाणु पुद्गलोंके बढ़नेपर अनन्त अपुनरुक्त स्थान उपलब्ध होते हैं ।

अनन्तर क्षपित कर्मांशिकरूपसे प्राप्त सबसे जघन्य औदारिकशरीर पुंजको तीन परमाणु
अधिक करके तथा सबसे जघन्य विस्ससोपचय पुंजमें विस्ससोपचयके तीन परमाणु अधिक करके
स्थित हुए अन्य जीवके अनन्तर पिछले स्थानसे एकबार वृद्धि हो कर प्राप्त हुआ साम्प्रतिक स्थान
एक परमाणु अधिक होता है । इस प्रकार इस विधिसे अपने-अपने तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट द्रव्यके
प्रमाणके प्राप्त होने तक औदारिकशरीरके दो पुंज बढ़ाने चाहिये । इतनी विशेषता है कि इन
सब स्थानोंमें तैजस और कर्मणशरीर सबसे जघन्य रहते हैं ।

शंका-इन चारों (तैजस और कर्मणशरीर तथा उनके विस्ससोपचय) की वृद्धि हुए
बिना अपने विस्ससोपचय सहित औदारिकशरीरकी ही वृद्धि कैसे होती है ?

❁ ता० प्रती ' एगपरमाणुत्तरपोग्गले ' इति पाठः ।

❁ अ० प्रती ' पुंजम्मि ' इति पाठः ।

❁ ता० प्रती ' णे (ए) वमणेण ' अ० आ० प्रत्योः ' णवमणेण ' इति पाठः ।

तदो अण्णो वि जीवो खविदकम्मंसियो विस्ससुवचयंहि सह ओरालियसरीर-
मुक्कस्सं कादूण पुणो तेजइयसरीरसव्वजहण्णविस्ससुवचयपुंजम्मि एगपरमाणुपोग्गले
वड्ढाविदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । तदो अण्णेण जीवेण तेजइयसरीरविस्ससुवचय-
पुंजे दुपरमाणुत्तरे कदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । सविस्ससुवचयमोरालियसरीरं
तप्पाओग्गुक्कस्सतेजइयसरीरपरमाणुपुंजो जहण्णो । सविस्सासुवचयं कम्मइयसरीरं
पि एत्थ जहण्णं चेव ।

पुणो अण्णे जीवे तेजइयसरीरविस्ससुवचयपुंजं तिपरमाणुत्तरं कादूणच्छिदे अण्ण-
मपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं परमाणुत्तरादिकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्ससुवचयं
परमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेषु तदो अण्णम्मिह जीवे खविदकम्मंसिये तथा ओघक्कस्सीकय-
विस्ससुवचयमोरालियसरीरे विस्ससुवचएहि सह जहण्णीकदकम्मइयसरीरे सव्वजहण्ण-
तेजइयसरीरं परमाणुत्तरं कारुण तस्सेव विस्ससुवचयपुंजं एगपरमाणुविस्ससुवचएहि
अब्भहियं कादूणच्छिदे अणंतरट्ठाणादो संपहियट्ठाणं परमाणुत्तरं होदि । कारणं जाणिदूण
वत्तव्वं । एवं वड्ढावेदव्वं जाव तेजइयसरीरदोपुंजा तप्पाओग्गुक्कस्सा जादत्ति । किं तप्पा-
ओग्गुक्कस्सत्तं? जोगवड्ढोए विणा ओकड्डुक्कड्डुणवसेण जत्तियाणं परमाणूणं सविस्ससु-

समाधान-नहीं, क्योंकि इन चारोंके जघन्य रहते हुए उनकी अविरोधी उत्कृष्ट वृद्धि ही
यहाँ ग्रहण की गई है ।

पुनः अन्य क्षपित कर्मांशिक जीवके विस्ससोपचय सहित औदारिकशरीरको उत्कृष्ट करके
अनन्तर तैजसशरीरके सबसे जघन्य विस्ससोपचय पुंजमें एक परमाणु पुद्गलके बढ़ाने पर अन्य
अपुनरुक्त स्थान होता है । अनन्तर अन्य जीवके द्वारा तैजसशरीरके विस्ससोपचय पुंजमें दो
परमाणु अधिक करने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । यहाँ पर विस्ससोपचय सहित औदारिक
शरीर तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट है । तैजसशरीर परमाणु पुंज जघन्य है और विस्ससोपचयसहित कामंण
शरीर भी यहाँ पर जघन्य है ।

पुनः अन्य जीवके तैजस शरीरके विस्ससोपचय परमाणु पुंजको तीन परमाणु अधिक करके
स्थित होने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार परमाणु अधिक आदिके क्रमसे सब
जीवोंसे अनन्तगुणे विस्ससोपचयरूप परमाणु पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर अनन्तर जिसने विस्ससो-
पचयसहित औदारिकशरीरको ओघ उत्कृष्ट किया है और विस्ससोपचयसहित कामंणशरीरको
जघन्य किया है तथा तैजसशरीरको एक परमाणु अधिक करके व उसीके विस्ससोपचयपुंजको
विस्ससोपचयके एक परमाणुसे अधिक करके जो क्षपित कर्मांशिक अन्य जीव स्थित है उसके
अनन्तर स्थानसे साम्प्रतिक स्थान एक परमाणु अधिक होता है । कारणका जानकर कथन करना
चाहिये । इस प्रकार तैजसशरीरके दो पुंज तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट होने तक बढ़ाने चाहिये ।

शंका-यहाँ तत्प्रायोग्य उत्कृष्टसे क्या तात्पर्य है ?

समाधान-योगवृद्धिके बिना उत्कर्षण और अपकर्षणके द्वारा विस्ससोपचयसहित जितने

वचयाणं वड्ढी संभवदि तत्तियमेत्तपरमाणूहि अब्भहियत्तं । जोगादो वड्ढी किं ण धेःपदे? ण, तिण्णं सरीराणमक्कमेण वुड्ढिप्पसंगादो ।

पुणो अण्णो जीवो खविदकम्मंसिओ विस्ससुवचएहि सह ओरालिय-तेजासरी-राणि तप्पाओग्गुक्कस्साणि कादूण कम्मइयसरीरविस्ससुवचया परमाणुत्तरकमेण वड्ढावेदव्वा जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता परमाणू वड्ढिदा त्ति । तदो अण्णो जीवो पुवं व खविदकम्मंसिओ अजोगिचरिमसमए अच्छिदो । ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि ।

पुणो अण्णो जीवो खविदकम्मंसिओ विस्ससुवचयेहि सह तप्पाओग्गुक्कस्सो-कयओरालिय-तेजासरीरो कम्मइयसरीरं पडि खविदकम्मंसिओ अजोगिचरिम-समए कम्मइयसरीरविस्स सुवचयजहण्णपुंजं दुपरमाणुत्तरं कादूण अच्छिदो । ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं कम्मइयसरीरविस्ससोवचया परमाणुत्तरकमेण वड्ढावेदव्वा जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता परमाणू वड्ढिदा त्ति ।

तदो अण्णो जीवो पुवं व खविदकम्मंसिओ अजोगिचरिमसमए कम्मइयसरीरं परमाणुत्तरं कादूण कम्मइयसरीरविस्ससुवचयपुंजं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तपर-परमाणुओंकी वृद्धि सम्भव हो मात्र उतने परमाणु अधिक करना यही यहाँ तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट पदसे तात्पर्य है ।

शंका-योगसे परमाणुओंकी वृद्धि क्यों नहीं ली गई है ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, योगसे परमाणुओंकी वृद्धि ग्रहण करने पर तीनों शरीरोंकी युगपत् वृद्धि प्राप्त होती है ।

पुनः क्षपित कर्मांशिक अन्य एक जीव लीजिये जो विस्ससोपचय सहित औदारिक और तैजसशरीरको तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट करके कर्मणशरीरके विस्ससोपचयमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंकी वृद्धि होने तक एक-एक परमाणु बढ़ाता है । तब पहलेके समान क्षपित कर्मांशिक इस अन्य जीवके अयोगी गुणस्थानके अन्तिम समयमें स्थित होने पर अन्य अपुनरुत्त स्थान होता है ।

पुनः अन्य एक क्षपित कर्मांशिक जीव लीजिये जिसने अपने विस्ससोपचयसहित औदारिक और तैजसशरीरको तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट किया है तथा जो कर्मणशरीरके प्रति क्षपित कर्मांशिक है उसके कर्मणशरीरके विस्ससोपचय जघन्य पुंजमें दोपरमाणु अधिक करके अयोगी गुणस्थानके अन्तिम समयमें स्थित होने पर उस समय अन्य अपुनरुत्त स्थान होता है । इस प्रकार सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंकी वृद्धि होने तक कर्मणशरीरके विस्ससोपचयको एक एक परमाणु द्वारा बढ़ाना चाहिये ।

पुनः क्षपित कर्मांशिक एक अन्य जीव लीजिये जो अयोगी गुणस्थानके अन्तिम समयमें कर्मणशरीरको एक परमाणु अधिक करके तथा कर्मणशरीरके विस्ससोपचय पुंजको सब

माणूहि वड्ढाविय द्विदो❀ । ताधे पुव्विल्लह्णाणादो संपहियट्ठाणं परमाणुत्तरं होदि ।

पुणो पुव्विल्लक्खवग्गं मोत्तूण संपहियक्खवग्गसं कम्मइयसरीरविस्सासुवचयपुंजे एग-
परमाणुणा वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं सब्बजीवेहि अणंतगुणमेत्तपरमाणुपो-
गलेसु कम्मइयसरीरविस्सासुवचयपुंजेहि वड्ढिदेसु तदो अण्णो जीवो पुव्वं व वक्खविद-
कम्मंसिओ अजोगिचरिमत्तमए कम्मइयसरीरं पुव्वं व परमाणुत्तरं काऊण अच्छिदो ।
ताधे अणंतरहेट्ठिमट्ठाणादो संपहियट्ठाणं परमाणुत्तरं होदि । एवं वड्ढावेदव्वं जाव
जोगेण विणा ओकड्डुक्कड्डुणाहि❁ चेव जायमाणवुड्ढीए उक्कस्सवुड्ढि ति ।

पुणो एदेहि छहि दव्वेहि जोगेणेगवारं छसु वि दव्वेसु वड्ढिदव्वमेत्तं वड्ढि-
दूण द्विदो सरिसो । एवमसंखेज्जवारं वड्ढावेदव्वं जाव अजोगिचरिमसमयदव्वं❂
सव्वक्कस्सं जादं❄ ति । तत्थ चरिमवियप्पं भणिस्सामो । तं जहा--

गुणिकम्मंसियो सत्तमाए पुढवीए तेजा-कम्मइयसरीराणि उक्कस्साणि कादूण पुणो
कालं करिय दो-तिण्णिभवग्गह्णाणि तिरिक्खेसुप्पज्जिय पुणो पुव्वकोडाउएसु मणुस्सेसु
उववण्णो । गढभादिअट्ठवस्साणमंतोमुहुत्तभहियाणमुवरि❃ सजोगिजिणो होदूण देसूण-
पुव्वकोडि संजमगुणसेडिणिज्जरं काऊण अजोगिचरिमत्तमए द्विदस्स पत्तेयसरीरवग्गणा

जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंके द्वारा बढाकर स्थित है उसके सब पिछले स्थानसे साम्प्रतिक
स्थान एक परमाणु अधिक होता है ।

पुनः पूर्वाक्त क्षपकको छोडकर साम्प्रतिक क्षपकके कार्मणशरीरके विस्त्रसोपचय पुंजमें
एक परमाणुकी वृद्धि करने पर अन्य अपुनरुत्त स्थान होता है । इस प्रकार कार्मणशरीरके
विस्त्रसोपचय पुंजमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुपुद्गलोंके बढाने पर उस समय पहलेके समान
क्षपितकर्मांशिक जो अन्य जीव अयोगी गुणस्थानके अन्तिम समयमें कार्मणशरीरको पहलेके
समान एक परमाणु अधिक करके स्थित है उसके तब अनन्तर पिछले स्थानसे साम्प्रतिक स्थान
एक परमाणु अधिक होता है । इस प्रकार योगके बिना अपकर्षण-उत्कर्षणके द्वारा ही जो वृद्धि
होती है उससे उत्कृष्ट वृद्धिके होने तक वृद्धि करनी चाहिये ।

पुनः इन छह द्रव्योंके साथ, योगके द्वारा एक बार छहों द्रव्योंमें बढाये हुये द्रव्यके
बराबर वृद्धि करके स्थित हुआ जीव समान है । इस प्रकार अयोगी गुणस्थातके अन्तिम
समयके द्रव्यके सर्वोत्कृष्ट होने तक असंख्यात बार वृद्धि करनी चाहिये । उसमें अन्तिम
विकल्पको बतलाते हैं । यथा--

कोई एक गुणित कर्मांशिक जीव सातवीं पृथिवीमें तैजस और कार्मण शरीरको उत्कृष्ट
करके पुनः मरकर दो-तीन भवतक तिर्यचोंमें उत्पन्न होकर पूर्वकोटिकी आयुवाले मनुष्योंमें
उत्पन्न हुआ । पुनः गर्भसे लेकर अन्तर्मुहूर्त अधिक आठ वर्षका होनेके बाद सयोगी जिन होकर
कुछ कम पूर्वकोटि काल तक संयम गुणश्रेणि निर्जरा करके अयोगी गुणस्थानके अन्तिम समयमें

❀ ता. प्रती (वड्ढावि) वड्ढिदो ' इति पाठः । ❁ ता. प्रती ' -णादि ' इति पाठः । ❂ ता. प्रती
' -दव्वे ' आ. प्रती ' -दव्व ' इति पाठः । ❄ ता. अ. आ. प्रतिषु ' जादे ' इति पाठः । ❃ ता. प्रती
' याण (मु-) वरि ' अ. आ. प्रत्योः ' याणवरि ' इति पाठः ।

पुव्वुत्तपत्तेयसरीर-❀वर्गणाए सह सरिसी होदि । संपहि एत्थ वड्ढी णत्थि; पत्तस-
व्वक्कस्सभावादो ।

संपहि अजोगिदुच्चरिमचरिमसमए लब्धिस्सामो । तं जहा— गुणिदकम्मंसिओ
सत्तमाए पुढवीए तेजा-कम्मइयसरीरवर्गणमुक्कस्सं❀ करेमाणो दुच्चरिमगुणसेडिद-
व्वेण❀ कम्मइय-तेजोरालियसरीराणं दुच्चरिमगोपुच्छाहि य ऊणमुक्कस्सपत्तेयसरीर-
वर्गणं कादूण अजोगिदुच्चरिमसमए अच्छिदस्स चरिमसमयवर्गणाए सह दुच्चरिमस-
मयवर्गणा सरिसी होदि ।

पुणो चरिमसमय अजोगिवर्गणं मोत्तूण दुच्चरिमसमय अजोगिखवगपत्तेयसरीरवर्गणा
पुव्वविहाणेण वड्ढावेदव्वा जावप्पणो उक्कस्सपत्तेयसरीरवर्गणपमाणं पत्ता त्ति । एवं
तिचरिम-चदुच्चरिमादिसमएसु ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं पुध पुध विस्समुवचय-
परमाणू च वड्ढाविय ओदारेदव्वं जाव सजोगिपढमसमओ❀ त्ति । संपहि एत्तो हेट्ठा
ओदारेदुं ण सक्कवे; खीणकसायचरिमसमए वादरणिगोदवर्गणाए उवलंभादो । तेण
सत्तमाए पुढवीए चरिमसमयणेरइयदव्वमस्सिदूण वड्ढि भणिस्सामो । तं जहा—
गुणिदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण सत्तमाए पुढवीए णेरइयचरिमसमए❀ वट्टमाणस्स तेजा-
कम्मइयसरीराणं चत्तारिपुंजेहि पढमसमयसजोगिस्स तेजा कम्मइयसरीराणं चत्तारि
पुंजा विसेसहीणा।पढमसमयसजोगिस्सओ रालिय❀सरीरपरमाणुपोगलपुंजादो णेरइय
स्थित हुआ । उसके प्रत्येक शरीरकी वर्गणा पूर्वोक्त प्रत्येकशरीरकी वर्गणाके समान होती है ।
अब यहाँ पर वृद्धि नहीं है; क्योंकि, इसने सर्वोत्कृष्टपनेको प्राप्त कर लिया है ।

अब अयोगीके द्विचरम समयका आश्रय करके कथन करते हैं । यथा— जिस गुणित-
कर्माशिक जीवने सातवीं पृथिवीमें तैजसशरीर और कर्मणशरीरकी वर्गणाको उत्कृष्ट किया है
और जो द्विचरम गुणश्रेणिद्रव्यसे तथा कर्मण, तैजस, और औदारिकशरीरकी द्विचरम गोपुच्छासे
न्यून उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणाको करके अयोगीके द्विचरम समयमें स्थित है उसके अन्तिम
समयकी वर्गणाके साथ, द्विचरम समयकी वर्गणा समान होती है ।

पुनः अयोगीके अन्तिम समयकी वर्गणाको छोड़कर अयोगीके द्विचरम समयकी क्षपक
प्रत्येकशरीर वर्गणा अपने उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणाके प्रमाणको प्राप्त होने तक पूर्वोक्त विधिसे
बढानी चाहिये । इस प्रकार त्रिचरम, चतुःचरम आदि समयोंमें औदारिक, तैजस और कर्मण
शरीर तथा उनके पृथक्-पृथक् विस्सोपचय परमाणु बढाकर उतारते हुये सयोगी गुणस्थानके
प्रथम समय तक ले जाना चाहिये । अब इससे पीछे उतार कर ले जाना संभव नहीं है; क्योंकि
क्षीणकषायके अन्तिम समयमें वादर निगोद वर्गणा उपलब्ध होती है, इसलिये सातवीं पृथिवीके
अन्तिम समयवर्ती नारकीके द्रव्यका आश्रय करके वृद्धिका कथन करते हैं । यथा—

गुणित कर्माशिक विधिसे आकर सातवीं पृथ्वीमें अन्तिम समयमें विद्यमान नारकीके
तैजसशरीर और कर्मणशरीरके चार पुञ्जोंकी अपेक्षा प्रथम समयवर्ती सयोगी जिनके
तैजसशरीर और कर्मणशरीरके चार पुञ्ज विशेष हीन होते हैं । प्रथम समयवर्ती सयोगी

❀ ता० प्रती 'पुव्वुत्तसरीर-' इति पाठः । ❀ ता० अ० प्रत्योः 'कम्मइयवर्गणमुक्कस्सं' इति पाठः ।

❀ अ० प्रती 'दव्वेणू' इति पाठः । ❀ ता० प्रती 'सजोगिचरिमपढम-' इति पाठः । ❀ आ० प्रती 'तेण
सत्तमाए पुढवीए णेरइयचरिम-', इति पाठः ।

❀ ता० प्रती 'सजोगिस्स तेजा-कम्मइय-ओरालिय-', इति पाठः ।

चरिमसमए वेउव्वियपरमाणुपोगलपुंजो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो । तं कथं परिच्छिज्जदि त्ति वृत्ते बाहिरवगणाए पंचणं सरीराणं वृत्तपदेसप्पाबहुआदो सुत्तादो । तं जहा— सव्वस्थोवं ओरालियसरीरस्स पदेसगं । वेउव्वियसरीरस्स पदेसगमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो । आहारसरीरस्स पदेसगमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो । तेयासरीरस्स पदेसगमणंतगुणं । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि^{*} अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो । कम्मइयसरीरस्स पदेसगमणंतगुणं । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो । एदे गुणगारा कुदो सिद्धा ? अविच्छेदा-इरियवयणादो ।

पढमसमयसजोगिस्स ओरालियसरीरविस्सासुवचयपुंजादो चरिमसमयणेरइयस्स वेउव्वियसरीरविस्सासुवचयपुंजो असंखेज्जगुणो । कुदो एदं णव्वदे ? बाहिरवगणाए पंचणं सरीराणं विस्सासुवचयस्स भणिदप्पाबहुगसुत्तादो । तं जहा— ओरालियसरीरस्स जहण्णस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ थोवो । तस्सेव जहण्णयस्स

जिनके औदारिकशरीर परमाणु पुद्गलपुञ्जसे नारकीके अन्तिम समयमें वैक्रियिक परमाणु-पुद्गलपुञ्ज असंख्यातगुणा होता है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— बाह्य वर्गणा अनुयोगद्वारमें पाँच शरीरोंके कहे गए प्रदेशअल्पबहुत्व सूत्रसे जाना जाता है । यथा— औदारिकशरीरके प्रदेशाग्र सबसे स्तोक हैं । इनसे वैक्रियिकशरीरके प्रदेशाग्र असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इनसे आहारकशरीरके प्रदेशाग्र असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इनसे तैजसशरीरके प्रदेशाग्र अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंका अनन्तवां भाग गुणकार हैं । इनसे कर्मणशरीरके प्रदेशाग्र अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंका अनन्तवां भाग गुणकार है ।

शंका— ये गुणकार किस प्रमाणसे सिद्ध हैं ?

समाधान— अविच्छेद आचार्योंके वचनसे सिद्ध हैं ।

प्रथम समयवर्ती सयोगी जिनके औदारिकशरीरके विस्सोपचय पुञ्जसे अन्तिम समयवर्ती नारकीके वैक्रियिकशरीरका विस्सोपचय पुञ्ज असंख्यातगुणा है ।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— बाह्य वर्गणा अनुयोगद्वारमें पाँच शरीरोंके विस्सोपचयके कहे गए अल्पबहुत्व सूत्रसे जाना जाता है— यथा— जघन्य औदारिकशरीरका जघन्य पदमें जघन्य विस्सोपचय सबसे

उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सामुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स जहणपदे जहणो विस्सामुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सामुवचओ अणंतगुणो । वेउठ्ठियसरीरस्स जहणयस्स जहणपदे जहणओ विस्सामुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव जहणयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सामुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स जहणपदे जहणओ विस्सामुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सामुवचओ अणंतगुणो । आहारसरीरस्स जहणयस्स जहणपदे जहणओ विस्सामुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव जहणयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सामुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स जहणपदे जहणओ विस्सामुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सामुवचओ अणंतगुणो । कम्म-इयसरीरस्स जहणयस्स जहणपदे जहणओ विस्सामुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव जहणयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सामुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स जहणपदे जहणओ विस्सामुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सामुवचओ अणंतगुणो । गुणमारो सव्वस्थ सव्वजीवेहि अणंतगुणो । एदमप्पाबहुगं भुक्कजीवाणं ण जीवसहियाणं ;

स्तोक है । उसी जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्त्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्त्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्त्रसोपचय अनन्तगुणा है । वैक्रियिकशरीरके जघन्यका जघन्य पदमें जघन्य विस्त्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्त्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्त्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्त्रसोपचय अनन्तगुणा है । आहारकशरीरके जघन्यका जघन्य पदमें जघन्य विस्त्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्त्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्त्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्त्रसोपचय अनन्तगुणा है । तैजसशरीरके जघन्यका जघन्य पदमें जघन्य विस्त्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्त्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्त्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्त्रसोपचय अनन्तगुणा है । कार्यणशरीरके जघन्यका जघन्य पदमें जघन्य विस्त्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्त्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्त्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्त्रसोपचय अनन्तगुणा है । गुणकार सर्वत्र सब जीवोंसे अनन्तगुणा है । यह अल्पबहुत्व जो जीवोंसे रहित होते हैं उनका होता है । जो जीवोंसे युक्त होते हैं उनका नहीं होता, अन्यथा

✽ ता० आ० प्रत्योः 'तेयासरीरस्स जहणयस्स उक्कस्सपदे' इति पाठः ।

विस्सासुवचयपहाणुक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणादो विस्सासुवचयपहाणुजहण्णबादर-
निगोदवग्गणाए अणंतगुणहीणत्तप्पसंगादो ।

जीवसहियाणं पुण अप्पाबहुगं उच्चदे-सव्वत्थोवो जहण्णओ ओरालियसरीरस्स
विस्सासुवचओ । तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ?
पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । वेउठ्ठिवयसरीरस्स सव्वम्हि पदेसपिडे सव्वजहण्णओ
विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेडोए असंखेज्जदिभागो । तस्सेव
उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-
भागो । आहारसरीरस्स सव्वम्हि पदेसपिडे सव्वजहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्ज-
गुणो । को गुणगारो ? सेडोए असंखेज्जदिभागो । तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ
असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । तेजइयसरीरस्स
सव्वम्हि पदेसपिडे सव्वजहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । को गुणगारो । अभव-
सिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागमेत्तगुणगारो । तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ
असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कम्मइयसरीरम्हि
पदेसपिडे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । को गुणगारो ? तेजइयगुणगारो ।
तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स
असंखेज्जदिभागो । तेण कारणेण पढमसमयसजोगिस्स ओरालियादिछप्पुंजदव्वेण

विस्सोपचयप्रधान उत्कृष्ट प्रत्येक शरीरवग्गणासे विस्सोपचयप्रधान जघन्य बादर निगोद वर्ग-
णाके अनन्तगुणे हीन होनेका प्रसंग आता है ।

जो जीवोंसे युक्त हैं उनका अल्पबहुत्व आगे कहते हैं—औदारिकशरीरका जघन्य विस्सो-
पचय सबसे स्तोक है । उसीका उत्कृष्ट विस्सोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
पत्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है । वैक्रियिकशरीरके सम्पूर्ण प्रदेशपिण्डमें सबसे
जघन्य विस्सोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग
गुणकार है । उसीका उत्कृष्ट विस्सोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पत्योपमका
असंख्यातवां भाग गुणकार है । आहारकशरीरके सम्पूर्ण प्रदेशपिण्डमें सबसे जघन्य विस्सोपचय
असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणकार है । उसीका
उत्कृष्ट विस्सोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पत्योपमका असंख्यातवां भाग
गुणकार है । तेजसशरीरके सम्पूर्ण प्रदेशपिण्डमें सबसे जघन्य विस्सोपचय अनन्तगुणा है । गुण-
कार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंका अनन्तवां भाग गुणकार है । उसीका उत्कृष्ट
विस्सोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पत्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।
कार्मणशरीरके प्रदेशपिण्डमें जघन्य विस्सोपचय अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ?
तेजसशरीर गुणकार है । उसीका उत्कृष्ट विस्सोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार
क्या है ? पत्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इस कारणसे प्रथम समयवर्ती सयोगी
जिनके औदारिक आदि छह पुञ्ज द्रव्यके साथ वैक्रियिक आदि छह पुञ्जका द्रव्य समान है ।

समाणवेउव्वियादिछप्पुज्जदव्वं । समत्तपुढविचरिरमसमयणेरइयं धेत्तूण पुणो अप्पणो ऊणीकददव्वमेत्थतणछप्पुजेसु पुध पुध वड्ढावेदव्वं ।

संपहि अण्णेण जीवेण वेउव्वियसरीरविस्सासुवचयपुंजे परमाणुत्तरे कदे सजो-
गिपढमसमयउक्कस्सदव्वस्सुवरि परमाणुत्तरं होदूण अण्णमपुणरुत्तट्ठाणमुप्पज्जदि ।
एवमेगेगपरमाणुत्तरकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सासुवचयपरमाणु वेउव्विय-
सरीरविस्ससुवचयपुंजम्मि जाव वड्ढिदा त्ति । तदो अण्णो जीवो वेउव्वियसरीरं
परमाणुत्तरं कादूण तस्सेव विस्सासुवचयपुंजं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्सासुवचएण
अव्वहियं काऊण ट्ठिदो । ताधे पुव्वुप्पणट्ठाणादो संपहियट्ठाणं परमाणुत्तरं होदि ।
कारणं सुगमं । अणेण विहाणेण वेउव्वियसरीरदोपुंजा वड्ढावेदव्वं जावप्पणो
उक्कस्सदव्वपमाणं पत्ता त्ति ।

तदो अण्णो जीवो वेउव्वियसरीरं सगविस्सासोवचएण सह उक्कस्सं करिय पुणो
तेजासरीरविस्ससुवचयपुंजं परमाणुत्तरं कादूणच्छिदो । ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि ।
एवं परमाणुत्तरकमेग ताव वड्ढावेदव्वं जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सासुवचय-
परमाणु तेजासरीरविस्ससुवचयपुंजम्मि वड्ढिदा त्ति । तदो अण्णो जीवो पुव्वणिरुद्ध-
तेजासरीरं परमाणुत्तरं कादूण तस्सेव विस्ससोवचयपुंजं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्त-
विस्ससोवचयेण अव्वहियं कादूणच्छिदो । ताधे तं ठाणमणंतरहेट्ठिमट्ठाणादो परमाणुत्तरं
सातवीं पृथ्वीके अन्तिम समयवर्ती नारकीको ग्रहण करके पुनः अपना अपना कम किया गया
द्रव्य यहाँके छह पुञ्जोंमें पृथक्-पृथक् बढ़ाना चाहिए ।

अब अन्य जीवके द्वारा वैक्रियिकशरीरके विस्सोपचय पुञ्जमें एक परमाणु अधिक
करनेपर सयोगी जिनके प्रथम समयके उत्कृष्ट द्रव्यके ऊपर एक परमाणु अधिक होकर अन्य
अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है । इस प्रकार एक एक परमाणु अधिकके क्रमसे वैक्रियिक-
शरीरके विस्सोपचय पुञ्जमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्सोपचय परमाणु होने तक बढ़ाने
चाहिए । अनन्तर वैक्रियिकशरीरको एक परमाणु अधिक करके तथा उसीके विस्सोपचय
पुञ्जको सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्सोपचय परमाणुओंसे अधिक करके स्थित हुए अन्य जीवके
उस समय पहले उत्पन्न हुए स्थानसे साम्प्रतिक स्थान एक परमाणु अधिक होता है । कारण
सुगम है । इस प्रकार उक्त विधिसे अपने उत्कृष्ट द्रव्यके प्रमाणको प्राप्त होने तक वैक्रि-
यिकशरीरके दो पुञ्ज बढ़ाने चाहिए ।

अनन्तर अपने विस्सोपचयके साथ वैक्रियिकशरीरके द्रव्यको उत्कृष्ट करके पुनः तैजस-
शरीरके विस्सोपचय पुंजको एक परमाणु अधिक करके स्थित हुए एक अन्य जीवके उस
समय अन्य अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है । इस प्रकार तैजसशरीरके विस्सोपचय पुञ्जमें
सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्सोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक एक एक परमाणुकी
उत्तरोत्तर वृद्धि करते जाना चाहिए । अनन्तर पूर्वमें विवक्षित हुए तैजसशरीरको एक परमाणु
अधिक करके तथा उसीके विस्सोपचय पुञ्जको सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्सोपचय
परमाणुओंसे अधिक करके स्थित हुए जीवके प्राप्त हुआ यह स्थान अनन्तर पिछले स्थानसे
एक परमाणु अधिक होता है । इस प्रकार तैजसशरीरके दो पुञ्जोंमें तब तक वृद्धि करते जाना

होदि । एवं ताव तेजासरीरदोपुंजा वड्ढावेदव्वा जाव उक्कस्सा जादा त्ति ।

संपहि अण्णो णेरइओ वेउव्विय-तेजासरीराणि उक्कस्साणि काऊण पुणो कम्म-इयसरीरविस्ससुवचयपुंजं पदेसुत्तरं काऊणच्छिदो ताधे अण्णमपुणरुत्तद्वाणं होदि । एवमेगपदेसुत्तरकमेण ताव वड्ढावेदव्वं जाव सव्वेहि जीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सा-सुवचयपरमाणू कम्मइयसरीरविस्ससुवचयपुंजम्मि वड्ढिदा त्ति । तदो अण्णो जीवो पुव्वणिरुद्धकम्मइयसरीरं परमाणुत्तरं कादूण तस्सेव विस्सासुवचयपुंजं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्ससुवचयेण अब्भहियं कादूणच्छिदो । ताधे एदं द्वाणमणंतरहेट्ठिम-द्वाणादो परमाणुत्तरं होदि । पुणो अणेण विहाणेण कम्मइयसरीरदोपुंजा उक्कस्सा कायव्वा जाव गुणितकम्मसियणारगचरिमसमयसव्वुक्कस्सदव्वे त्ति । वेउव्वियसरीर-विस्ससुवचएहिंतो आहारसरीरस्म विस्ससुवचओ असंखेज्जगुणो । तेण पमत्तसंजदम्मि आहार-तेजा-कम्मइयसरीराणं छप्पुंजे घेतूण पत्तेयसरीरवग्गणा एगजीवविसया किण्ण पळुविदा ? ण, तेजा-कम्मइयसरीराणं चरिमसमयणेरइयं मोत्तूण अण्णत्थ उक्कस्सद-व्वाभावादो । जत्थ तेजा-कम्मइयसरीराणि जहण्णाणि होति तत्थ पत्तेयसरीरवग्गणा सव्वजहण्णा होदि । जत्थ एदेसिमुक्कस्सदव्वाणि लब्भंति तत्थ पत्तेयसरीरवग्गणा उक्कस्सा होदि । ण च मणूस्सेसु पमत्तसंजदेसु पत्तेयसरीरवग्गणा उक्कस्सा होदि ;

चाहिए जव तक ये उत्कृष्टपनेको नहीं प्राप्त हो जाते ।

पुनः एक ऐसा नारकी लो जो वैक्रियिकशरीर और तैजसशरीरको उत्कृष्ट करके पुनः कार्मणशरीरके विस्सोपचय पुञ्जमें एक परमाणु अधिक करके स्थित है । तब अन्य अपुनरुत्त स्थान उत्पन्न होता है । इस प्रकार एक एक परमाणुकी तब तक वृद्धि करते जाना चाहिए जब तक कार्मणशरीरके विस्सोपचय पुञ्जमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्सोपचय परमाणुओंकी वृद्धि नहीं हो जाती । अनन्तर एक ऐसा अन्य जीव लो जो पूर्व निरुद्ध कार्मणशरीरमें एक परमाणु अधिक करके पुनः उसीके विस्सोपचय पुञ्जको सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्सोपचय परमाणुओंसे अधिक करके स्थित है । तब यह स्थान अनन्तर पिछले स्थानसे एक परमाणु अधिक होता है । पुनः इस विधिसे गुणित कर्मांशिक नारकी जीवके अन्तिम समयमें सर्वोत्कृष्ट द्रव्यके प्राप्त होने तक कार्मणशरीरके दोनों पुञ्जोंको उत्कृष्ट करना चाहिए ।

शंका— वैक्रियिकशरीरके विस्सोपचयसे आहारकशरीरका विस्सोपचय असंख्यात-गुणा है, इसलिए प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें आहारक, तैजस और कार्मणशरीरके छह पुञ्ज ग्रहण करके प्रत्येकशरीर वर्गणा एक जीव सम्बन्धी क्यों नहीं कही ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, अन्तिम समयवर्ती नारकीको छोड़कर तैजस और कार्मण-शरीरका अन्यत्र उत्कृष्ट द्रव्य उपलब्ध नहीं होता । जहां पर तैजस और कार्मणशरीर जघन्य होते हैं वहां पर प्रत्येकशरीरवर्गणा सबसे जघन्य होती है और जहां पर इनके उत्कृष्ट द्रव्य उपलब्ध होते हैं वहां पर प्रत्येकशरीर वर्गणा उत्कृष्ट होती है । परन्तु प्रमत्तसंयत मनुष्योंके

❖ ता० आ० प्रत्योः 'अण्णोण्णे ठइओ' इति पाठः ।

इति पाठः ।

❖ ता० अ० आ० प्रतिषु 'सव्वएहि'

❖ अ० आ० प्रत्योः 'जीव' इति पाठः ।

गुणसेडिणिज्जराए अधट्टिदिगलणाए❀ च गलिदत्तेजा-कम्मइयदव्वत्तादो । ण❀ च गलिदत्तेजा-कम्मइयदव्वेहितो आहारसरीरदव्ववर्गणाए बहुत्तमत्थि; तस्स तदणंति-मभागादो । संपहि एत्थ कम्मट्टिदिकालसंचिदो अट्टविहकम्मपदेसकलाओ कम्मइयसरीरं णाम । छावट्टिसागरोवमसंचिदणोकम्मपदेसकलाओ तेजासरीरं णाम । तेत्तीससागरोव-मसंचिद-णोकम्मपदेसकलाओ वेउवियसरीरं णाम । खुद्दाभवग्गहणप्पहुडि जाव तिणिण-पलिदोवमसंचिदपदेसकलाओ ओरालियसरीरं णाम । अंतोमहुत्तसंचिदपदेसकलाओ आहारसरीरं णाम । तेण णेरइयचरिमसमए चेव उक्कस्ससामित्तं दादव्वं ।

प्रत्येकशरीर वर्गणा उत्कृष्ट नहीं होती; क्योंकि, उनके गुणश्रेणि निर्जराके द्वाग और अधः-स्थितिगलनाके द्वारा तैजस और कार्मणशरीरका द्रव्य गलित हो जाता है । यदि कहा जाय कि गलित हुए तैजस और कार्मणशरीरके द्रव्यसे आहारकशरीरकी द्रव्यवर्गणायें बहुत होती हैं सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, यह उनके अन्तर्वे भागप्रमाण होता है । अतः प्रमत्तसंस्त गुणस्थानमें प्रत्येकशरीर वर्गणा उत्कृष्ट नहीं कही ।

यहाँपर कर्मस्थिति कालके भीतर संचित हुए आठ प्रकारका कर्मप्रदेश समुदायकी कार्मणशरीर संज्ञा है । छयासठ सागर कालके भीतर संचित हुए नोकर्मप्रदेश समुदायकी तैजसशरीर संज्ञा है । तेतीस सागर कालके भीतर संचित हुए नोकर्मप्रदेश समुदायकी वैक्रियिक-शरीर संज्ञा है । क्षुल्लकभवग्रहण कालसे लेकर तीन पत्य कालके भीतर संचित हुए नोकर्म-प्रदेश समुदायकी औदारिकशरीर संज्ञा है और अन्तर्मुहूर्त कालके भीतर संचित हुए नोकर्म-प्रदेश समुदायकी आहारकशरीर संज्ञा है, इसलिए नारकी जीवके अन्तिम समयमें ही उत्कृष्ट स्वामित्व देना चाहिए ।

विशेषार्थ— यहाँ पर प्रत्येकशरीर द्रव्य वर्गणाका विचार करते हुए वह एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट किस जीवके होती है इस बातका विस्तारसे निरूपण किया गया है । जिन शरीरोंका स्वामी एक ही जीव होता है और उनके आश्रयसे अन्य जीव नहीं उपलब्ध होते उन शरीरोंके समुदायका नाम प्रत्येकशरीर द्रव्य वर्गणा है । आगममें ऐसे आठ प्रकारके जीव बतलाये हैं जिनके शरीरोंके आश्रयसे अन्य जीव नहीं रहते । वे आठ प्रकारके जीव ये हैं— केवली जिन, देव, नारकी, आहारकशरीर, पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक और वायुकायिक । यहाँ सर्व प्रथम यह देखना है कि इन जीवोंमें जघन्य प्रत्येकशरीर द्रव्य-वर्गणाका स्वामी कौन जीव है और उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाका स्वामी कौन जीव है । जीव दो प्रकारके होते हैं— एक क्षपितकर्मांशिक और दूसरे गुणितकर्मांशिक । जो क्षपितकर्मांशिक जीव होते हैं उनके कर्म वर्गणायें उत्तरोत्तर ह्रस्व होती जाती हैं और अयोगीके अन्तिम समयमें वे सबसे न्यून होती हैं, इसलिये अयोगी जिनके अन्तिम समयमें प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा सबसे जघन्य होती है । यहाँ इस वर्गणासे औदारिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीर तथा इनके विसोपचय इन छह पुञ्जोंका ग्रहण होता है । गुणित कर्मांशिक जीव वे कहलाते हैं जिनके कर्मवर्गणायें उत्तरोत्तर महापरिणामवाली होती जाती हैं और तेतीस सागरकी आयुवाले नारकी जीवके अन्तिम समयमें वे सबसे उत्कृष्ट होती हैं, इसलिये नारकी जीवके अन्तिम समयमें

❀ ता० आ० प्रत्योः ' अवट्टिदिगलणाए ' इति पाठः ।

❀ ता० प्रतो ' च गलिदत्तेजाकम्मइयदव्वत्तादो । ण ' इति पाठो नोपलभ्यते ।

संपहि एगजीवमस्मिदूण णेरइयचरिमसमए वड्ढी णत्थि; पत्तुक्कस्सभावादो । बादरपुढविकाइयपज्जत्तवेजीवे घेतूण लभिस्सामो । तं जहा— गुणिदघोलमाणलक्खणे-
णागदा ॐ वेवादरपुढविकाइयपज्जत्तजीवा अण्णोण्णेण संबद्धसरीरा णारगुक्कस्सपत्तये-
सरीरवग्गणाए पादेवकं कदअद्धदसंचया चरिमसमयणेरइयस्स ॐ वेउव्विय-तेजा-कम्म-
इयसरीरेहि सह सरिसा । जदि वि वेउव्वियसरीरादो ओरालियसरीरमसंखेज्जगुण-
हीणं तो वि सरिसत्तं ण विरुज्झदे; तेजा-कम्मइयसरीरेसु वेउव्वियसरीरस्स

प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा सबसे उत्कृष्ट होती हैं । यहां इस वर्गणासे वैक्रियिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीर तथा इनके विस्त्रसोमचय इन छह पुञ्जोंका ग्रहण होता है । मध्यमें इस वर्गणाके अनेक विकल्प हैं जिनका निर्देश मूलमें किया ही है । यहां जघन्य वर्गणा, एक परमाणु अधिक जघन्य वर्गणा, दो परमाणु अधिक जघन्य वर्गणा इत्यादि क्रमसे वृद्धि करते हुए उत्कृष्ट वर्गणा लानेकी विधि जिस प्रकार मूलमें बतलाई गई है उस प्रकार उसे जान लेना चाहिए । पहले अन्तिम समयवर्ती अयोगी जिनके ही नाना जीवोंका आलम्बन लेकर जघन्य वर्गणामें परमाणुओंकी वृद्धि की गई है । इसके बाद उपान्त्य समयवर्ती अयोगी जिनका आश्रय करके वृद्धि कही गई है और इस प्रकार पीछे लौटकर प्रथम समयवर्ती सयोगी जिन तक आकर वृद्धिका क्रम दिखलाया गया है । इसके बाद देव और देवोंके बाद नारकी जीवोंको स्वीकार करके प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा अपने उत्कृष्ट विकल्प तक उत्पन्न की गई है । प्रथम समयवर्ती सयोगी जिनके बाद आहारकशरीर, पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, और वायुकायिक, जीवोंका ग्रहण इसलिए नहीं किया, क्योंकि, एक जीवकी अपेक्षा इनके जो प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा होती है उसका ग्रहण मध्यम विकल्पोंमें आ जाता है । यहां जघन्य वर्गणासे उत्कृष्ट वर्गणा लाते समय प्रत्येक स्थल पर गुणकार सब जीवोंसे अनन्तगुणा बतलाया गया है सो यह कथन सम्भव सत्यकी अपेक्षासे किया गया जानना चाहिए; क्योंकि प्रत्येक जीवके औदारिकशरीर आदि जघन्य वर्गणासे अपनी औदारिकशरीर आदि उत्कृष्ट वर्गणा व्यक्तरूपसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंके समुच्चयरूप नहीं होती । कारण कि औदारिकशरीर आदि अपनी जघन्य वर्गणासे उत्कृष्ट वर्गणाका गुणकार अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण ही बतलाया है । इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाके स्वामीका विचार किया ।

अब एक जीवका अवलम्बन लेकर नारकीके अन्तिम समयमें वृद्धि नहीं है, क्योंकि, उत्कृष्ट-पनेको प्राप्त हो गया है अतः बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त दो जीवोंका आलम्बन लेकर प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाको प्राप्त करते हैं । यथा-यहां गुणितघोलमान विधिसे आये हुए ऐसे दो बादर पृथिवी-कायिक पर्याप्त जीव लो जिनके शरीर परस्परमें सम्बद्ध हैं और जिनमेंसे प्रत्येकके प्रत्येकशरीर वर्गणाका संचय नारकीके उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणाके संचयसे आधा आधा है । अतएव इन दोनों जीवोंके प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाका संचय अंतिम समयवर्ती नारकी जीवके वैक्रियिक, तैजस और कार्मणशरीरके संचयके समान होता है । यद्यपि वैक्रियिकशरीरसे औदारिकशरीर असंख्यातगुणा हीन होता है तो भी इन दोनों संचयोंके सदृश होनेमें कोई विरोध नहीं आता; क्योंकि तैजस और कार्मणशरीरोंके रहते हुए वैक्रियिकशरीरके अमख्यातवें भागमात्र औदारिकशरीरका

❁ अ० प्रती '—णागद' आ० प्रती '—णागदे', इति पाठः ।

❁ अ० आ० प्रत्योः '—णरइय' इति पाठः ।

असंखेज्जदिभागमेत्तद्ववुवलंभादो । संपहि दोसु जीवेषु द्वियओरालिय-तेजा-कम्म-इयसरीराणं छप्पुंजा पुव्वविहाणेण वड्ढावेदव्वा जाव दोण्णं जीवाणं पाओगउक्कस्स-दव्वं पत्ता त्ति । पुणो तिण्णिबादरपुढविकाइयपज्जत्तजीवा अण्णोणसंबद्धसरीरा दोण्णं बादरपुढविपज्जत्त-जीवाणमुक्कस्सदव्वस्स कयतिभागसंचया एदेहि दोहि वि सरिसा होंति । पुणो ते मोत्तूण इमे घेतूण पुव्वविहाणेण वड्ढावेदव्वा जाव अप्पणो उक्क-स्सपमाणं पत्ता त्ति । पुणो एदेहि तिण्णं दव्वाणं केसि दव्वं सरिसं त्ति वुत्ते वुच्चदे । त जहा- चदुण्णं बादरपुढविकाइयजीवाणं तिण्णं बादरपुढविकाइयउक्कस्सदव्वस्स चदुभ्भागसंचयाणं एगबंधणबद्धाणं दव्वं सरिसं होदि । एदेहि पि दव्वं तेणेव कमेण वड्ढावेदव्वं जाव चदुण्णं जीवाणमुक्कस्सदव्वं पत्तं त्ति । एवं पंच-छ सत्तट्ठ-णव-दस-प्पहुडि जाव तप्पाओगपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तबादरपुढविकाइयपज्जत्त-जीवा त्ति णेदव्वं । पुणो एदेसिमोरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणि कमेण वड्ढाविय पुणो एगबंधणबद्धबादरतेउक्काइयपज्जत्तजीवा दव्वसंचयेण एगबंधणबद्धपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तबादरपुढविकाइयपज्जत्तजीवेहि सरिसा घेतव्वा । पुणो एदे घेतूण पुव्वविहाणेण एदेसिमोरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणि परिवाडीए वड्ढाविय पुणो

द्रव्य उपलब्ध होता है । अब इन दोनों जीवोंमें स्थित औदारिक, तैजस और कामेणशरीरके छह पुञ्जोंको पूर्वोक्त विधिसे तब तक बढ़ाना चाहिए जब तक वे दो जीवोंके योग्य उत्कृष्टपनेको नहीं प्राप्त होते । पुनः बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त तीन ऐसे जीव लो जो परस्परमें शरीरसे संबद्ध हों और जिनमेंसे प्रत्येकका प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्णा संचय दो बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंके उत्कृष्ट संचयके तीसरे भागप्रमाण हो । इसलिए इनका संचय उक्त दो जीवोंके संचयके समान होता है । पुनः उन पूर्वोक्त जीवोंको छोड़कर और इनका अवलम्बन लेकर पूर्वोक्त विधिसे अपने उत्कृष्ट प्रमाणके प्राप्त होने तक द्रव्यकी वृद्धि करनी चाहिए । पुनः इन तीनोंका द्रव्य किनके द्रव्यके समान होता है ऐसा प्रश्न करने पर उत्तर देते हैं । यथा— ऐसे चार बादर पृथिवीकायिक जीव लो जो एक बन्धनबद्ध हैं और जिनमेंसे प्रत्येकको तीन बादर पृथिवीकायिक जीवोंके उत्कृष्ट संचयके चौथे भागप्रमाण द्रव्यका संचय प्राप्त हुआ है, अतएव इन चारोंका संचय उक्त तीनोंके संचयके तुल्य है । इनके भी द्रव्यको उसी क्रमसे बढ़ाना चाहिए जिससे इन चारों जीवोंका द्रव्य उत्कृष्टपनेको प्राप्त हो जाय । इस प्रकार पाँच, छह, सात, आठ, नौ और दससे लेकर तत्प्रा-योग्य पत्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंके होने तक ले जाना चाहिए । पुनः इनके औदारिक, तैजस और कामेणशरीरोंको क्रमसे बढ़ाकर पुनः एक बन्धनबद्ध इतने बादर तेजकायिक पर्याप्त जीव लेने चाहिए जो द्रव्यसंचयकी अपेक्षा एक बन्ध-नबद्ध पत्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंके समान हों । पुनः इनका आश्रय करके पूर्वोक्त विधिसे इनके औदारिक, तैजस और कामेणशरीरोंको आनुपूर्वीसे बढ़ाकर पुनः एक जीवको अधिक करते हुए जब तक एक बन्धनबद्ध बादर

❖ ता०प्रती '—मेत्तदव्व—' आ०प्रती '—मित्तदव्व—' इति पाठः ।

काऊण णेदब्धं[❖] जाय बादरतेउक्काइयपज्जत्तजीवा आवलियवग्गादो असंखेज्जगुण-
मेत्ता कमेण वड्ढाविय एगबंधणवद्वा जादा त्ति । अथवा तप्पाओग्गअसंखेज्जजीवा
एगबंधणवद्वा घेतत्वा । कुदो ? बादरतेउक्काइयपज्जत्तपज्जत्ताणं देवकद[❖]च्छुपा-
दिमु एगागारे एगबंधणवद्धं पडि विरोहाभावादो । ते कत्थ लब्धंति ? वल्लरिदाहे वा
देवकदच्छुए वा महावणदाहे वा लब्धंति । पुणो एदेसिमोरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरेसु
पत्तेयं वड्ढाविदेसु पत्तेयसरीरदब्धवर्गणा उक्कस्सा होदि । जहण्णादो उक्कस्सा असं-
ज्जगुणा । को गुणगारो ? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

पुढवि-आउ-तेउ-वाउकाइया देव-णेरइया आहारसरीरा पमत्तसंजज्ञा सजोगि-अजो-
गिकेवल्लिणो च पत्तेयसरीरा वुच्चंति ; एदेसि णिगोदजीवेहि सह संबंधाभावादो । विग्ग-
हगदीए वट्टमाणा बादर-सुहुमणिगोदजीवा पत्तेयसरीरा ण होति ; णिगोदणाम-कम्मो-
दयसहगदत्तेण विग्गहगदीए वि एगबंधणवद्धाणंतजीवसमूहत्तादो । जदि विग्गहगदीए
वट्टमाणासेस[❖] जीवा पत्तेयसरीरा होति तो पत्तेयवर्गणाओ अणंताओ होज्ज । ण च
एवं, असंखेज्जलोगमेत्ता होति त्ति अविच्छेदाइरियवयणेण अवगदत्तादो । विग्गहगदीए

तेजस्कायिक पर्याप्त जीव आवलिवर्गसे असंख्यातगुणे नहीं हो जाते तब तक इनकी संख्या और
उसी क्रमसे द्रव्यको बढ़ाते हुए ले जाना चाहिए । अथवा एक बन्धनबद्ध तत्प्रायोग्य असंख्यात
जीव लेने चाहिए ; क्योंकि, देवकृत झाड़ियोंमें लगी हुई अग्निमें बादर तेजस्कायिक पर्याप्त और
अपर्याप्त जीवोंके एक स्थानमें एक बन्धनबद्ध होनेमें कोई विरोध नहीं आता ।

शंका-एक बन्धनबद्ध वे जीव कहाँ उपलब्ध होते हैं ?

समाधान-लताओंका दाह होते समय, देवकृत झाड़ियोंमें या महावनका दाह होते समय
एक बन्धनबद्ध उक्त जीव उपलब्ध होते हैं ।

पुनः इनके औदारिक, तैजस और कामर्णशरीरोंके पृथक् पृथक् बढ़ाने पर प्रत्येकशरीर
द्रव्यवर्गणा उत्कृष्ट होती है ! यहां जघन्य वर्गणासे उत्कृष्ट वर्गणा असंख्यातगुणी है । गुणकार
क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

पृथिवीकायिक, जलकायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, देव, नारकी, आहारकशरीरी, प्रमत्त-
संप्रत, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये जीव प्रत्येकशरीरवाले होते हैं, क्योंकि, इनका निगोद
जीवोंके साथ सम्बन्ध नहीं होता । विग्रहगतिमें विद्यमान बादर निगोद जीव और सूक्ष्म निगोद
जीव प्रत्येकशरीरवाले नहीं होते हैं, क्योंकि, निगोद नामकर्मके उदयके साथ गमन होनेके कारण
विग्रहगतिमें भी एक बन्धनबद्ध अनंत जीवोंका समूह पाया जाता है । यदि विग्रहगतिमें वर्तमान
अंशेष जीव प्रत्येकशरीर होते हैं ऐसा माना जाय तो प्रत्येक वर्गणायें अनन्त हो जावें । परन्तु
ऐसा है नहीं ; क्योंकि, वे असंख्यात लोक प्रमाण होती हैं ऐसा अविच्छेदभाषी आचार्योंके वचनोंसे

❖ ता० प्रती 'काऊण पुणो णेदब्धं' इति पाठः ।

❖ ता० प्रती '-क्काइयपज्जत्ताणं व कद-'

इति पाठः । ❖ ता० प्रती 'वट्टमाणा सेस-' इति पाठः ।

सरीरणामकम्मोदयाभावादो ण पत्तेयसरीरत्तं ण साहारणसरीरत्तं । तदो ते पत्तेय-
सरीरबादर-सुहुमणिगोदवर्गणामु ण कत्थ वि पदंति त्ति वुत्ते  वुच्चदे— ण एस दोमो;
विग्रहगदीए बादर-सुहुमणिगोदणामकम्माणमुदयदंसणेण तत्थ वि बादर-सुहुमणिगोद-
दव्ववर्गणामुवल्भादो । एवेहिंतो वदिरत्ता जीवा गहिदसरीरा अगहिदसरीरा वा
पत्तेयसरीरवर्गणा होति । तदो पत्तेयसरीरा असंखेज्जलोगमेत्ता होति त्ति सिद्धं । ते
च एगबंधणवद्धा असंखेज्जलोगमेत्ता होति । कुदो एवं णव्वदि, त्ति वुत्ते ईसिप्पव्वभाराए 
पुढवीए बादरपुढविकाइयजीवा असंखेज्जलोगमेत्ता होदूण सव्वत्थोत्रा । एकम्मिह उवग-
बिंदुम्मिह आउकाइया जीवा असंखेज्जगुणा । एकम्मिह इंगाले तेउवकाइया जीवा असं-
खेज्जगुणा । एकम्मिह जलबुब्बुदे वाउवकाइया जीवा असंखेज्जगुणा त्ति अप्पावहुगसुत्तादो
णव्वदे । तदो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवेहि एगबंधणवद्धेहि उवकस्सिया
एया पत्तेयसरीरवर्गणा होदि त्ति ण घडदे ? ण एस दोमो, ईसिप्पव्वभारसिलेग-जल-
बिंदु-इंगाल-जलबुब्बुदेसु पादेक्कमसंखेज्जलोगमेत्तजीवेसु संतेसु वि तत्थ तेउवकाइय-
पज्जत्तमेत्ताणं चेव जीवाणमेगबंधणवद्धाणमुवल्भादो । एगबंधणवद्धा एत्तिया चेव

जाना जाता है ।

शंका— विग्रहगतिमें शरीर नामकर्मका उदय नहीं होता, इसलिए वहां न तो प्रत्येक-
शरीरपना प्राप्त होता है और न साधारणशरीरपना ही प्राप्त होता है । इसलिये वे प्रत्येक-
शरीर, बादर और सूक्ष्म निगोद वर्गणाओंमेंसे किन्हींमें भी अन्तर्भूत नहीं होती है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, विग्रहगतिमें बादर और सूक्ष्म निगोद
नामकर्मोंका उदय दिखाई देता है । इसलिए वहां पर भी बादर और सूक्ष्म निगोद द्रव्यवर्गणायें
उपलब्ध होती हैं । और इनसे अतिरिक्त जिन्होंने शरीरोंको ग्रहण कर लिया है या नहीं
ग्रहण किया है वे सब जीव प्रत्येकशरीर वर्गणावाले होते हैं ।

इसलिए प्रत्येकशरीर वर्गणायें असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं यह सिद्ध होता है ।

शंका— एक बन्धनवद्ध वे जीव असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं । यदि कहो कि यह
बात किस प्रमाणसे जानी जाती है तो इसका समाधान यह है कि ईषत्प्राग्भार पृथिवीमें बादर
पृथिवीकायिक जीव असंख्यात लोकप्रमाण होते हुए भी सबसे स्तोक होते हैं । इनसे एक
जलबिन्दुमें जलकायिक जीव असंख्यातगुणे होते हैं । इनसे एक अंगारेमें अग्निकायिक जीव
असंख्यातगुणे होते हैं । इनसे एक जलके बुलबुलेमें वायुकायिक जीव असंख्यागुणे होते हैं । इस
प्रकार इस अल्पबहुत्व सूत्रसे यह बात जानी जाती है । इसलिए पत्त्योपमके असंख्यातवें भाग-
प्रमाण एक बन्धनवद्ध जीवोंके अवलम्बनसे एक उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणा होती है यह बात
घटित नहीं होती ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, ईषत्प्राग्भार शिलामें, एक जलबिन्दुमें,
एक अंगारेमें और जलके एक बुलबुलेमें अलग अलग असंख्यात लोकप्रमाण जीवोंके होने पर
भी वहां मात्र तेजस्कायिक पर्याप्त जीव ही एक बन्धनवद्ध उपलब्ध होते हैं ।

होंति अहिया ण होंति त्ति कथं णव्वदे ? अविरुद्धाहरियवयणादो । ते च तेउक्का-
इएसु चेव बहुआ लब्भन्ति ण अण्णत्थ । तेण वल्लरिदाहादिसु एगिगालो चेव
पहाणीकओ । तत्थ गुणितकम्मंसिया सुट्ठु जदि बहुआ होंति तो आवलियाए असं-
खेज्जदिभागमेत्ता चेव, अवसेसा सव्वे अगुणितकम्मंसिया । एसा सत्तरसमी
वगणा १७ अग्गेज्जा सभेयणत्तादो ।

पत्तेयसरीरद्वयवर्गणाणमुवरि ध्रुवसुण्णद्वयवर्गणा णाम । ९२ ।

उक्कस्सपत्तेयसरीरवर्गणाए एगरूवे पक्खित्ते बिदियध्रुवसुण्णद्वयवर्गणाए
सव्वजहणिया ध्रुवसुण्णद्वयवर्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण परिवाडोए सव्व-
जीवेहि अणंतगुणमेत्तध्रुवसुण्णद्वयवर्गणासु गदासु उक्कस्सिया ध्रुवसुण्णद्वयवर्गणा

शंका- एक बन्धनबद्ध इतने ही जीव उपलब्ध होते हैं अधिक नहीं होते हैं यह किस
प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान- अविरुद्ध आचार्योंके वचनोंसे जाना जाता है ।

और वे तैजसकायिकोंमें ही बहुत उपलब्ध होते हैं अन्यत्र नहीं उपलब्ध होते, इसलिए
लता दाह आदिमें एक अंगारा ही प्रधान किया है । वहां गुणितकर्मांशिक जीव यदि बहुत
होते हैं तो आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं । बाकीके सब गुणितकर्मांशिक नहीं होते ।

यह सत्रहवीं वर्गणा है ।

विशेषार्थ- पहले एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा कह आये हैं ।
यहां एक बन्धनबद्ध नाना जीवोंकी अपेक्षा यह वर्गणा बतलाई गई है । जिनका शरीर पृथक्
पृथक् अर्थात् प्रत्येक होकर भी परस्पर जुड़ा हुआ होता है वे एक बन्धनबद्ध जीव माने गये
हैं । ऐसे पृथिवीकायिक जीव पृथक् असंख्यातवें भागप्रमाण हो सकते हैं और अग्निकायिक
जीव इनसे भी अधिक हो सकते हैं जो एक पिण्डमें बद्धनबद्ध रहते हैं और इससे इन सबको
मिलकर एक प्रत्येकवर्गणा बनती है । साधारण शरीरसे इस प्रत्येक शरीरमें बहुत अन्तर होता
है । वहां शरीर एक ही होता है किन्तु यहां सबके अलग अलग शरीर होते हैं । मात्र प्रत्येक-
शरीर एक दूसरेसे सम्बद्ध रहते हैं और इसीसे इन्हें एक बन्धनबद्ध मानकर इनकी एक
वर्गणा मानी गई है । एक तैजसकायिक जीवके औदारिक, तैजस और कर्मणशरीर तथा इनके
विश्वसोपचर्योंका जितना उत्कृष्ट संचय हो सकता हो उसे असंख्यातगुणित आवलिवर्गसे गुणित
करनेपर या तत्प्रायोग्य असंख्यातसे गुणित करनेपर उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाका प्रमाण
आता है । यहां अन्तिम समयवर्ती नारकीके उत्कृष्ट संचयसे आगे की प्रक्रिया द्वारा इसी वर्ग-
णाके उत्पन्न करनेकी विधि कही गई है । यह नाना प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणारूप होकर भी
एक बन्धनबद्ध होनेसे एक प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा मानी गई है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर ध्रुवशून्य वर्गणा है ॥ ९२ ॥

उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणामें एक अंकके मिलाने पर दूसरी ध्रुवशून्य वर्गणा सम्बन्धी सबसे
जघन्य ध्रुवशून्य द्रव्यवर्गणा होती है । अनन्तर एक एक अधिकके क्रमसे आनुपूर्वीसे सब
जीवोंसे अनन्तगुणी ध्रुवशून्य वर्गणाओंके जाने पर उत्कृष्ट ध्रुवशून्यवर्गणा उत्पन्न होती है ।

उप्पज्जदि । सा च जहण्णादो अणंतगुणा । की गुणगारो ? सव्वजीवाणमसंखेज्जदि-
भागो । तं जहा— सव्वजीवरारिं असंखेज्जलोगमेत्तसरीरेहि ओवट्ठिय आवलियाए
असंखेज्जदिभागण असंखेज्जलोगेहि एगजीवोरालिय- तेजा- कम्मइयदव्वेण च गणिय
रुवे अक्खणिदे उक्कस्सधुवसुण्णदव्ववर्गणा होदि । पुणो इममुक्कस्सपत्तेयसरीरवर्ग-
णाए रुवाहियाए अवहिरिदे सव्वजीवरारिसस असंखेज्जदिभागो आगच्छदि त्ति पुव्व-
भणिदगुणगारो चेव होदि त्ति घेतव्वं । एसा अट्ठारसमो वर्गणा १८ एयंतवाइदि-
ट्ठिस्स व्वरं सव्वकालं सुण्णभावेणवट्ठिदा ।

धुवसुण्णदव्ववर्गणाणमुवरि बादरणिगोददव्ववर्गणा णाम ॥ ९३ ॥

उक्कस्सधुवसुण्णदव्ववर्गणाए एगरुवे पक्खित्ते सव्वजहणिया बादरणिगोद-
दव्ववर्गणा होदि । सा कत्थ दिस्सदि ? खीणकसायवरिमसमए । किंविहे खीणकसाए
होदि त्ति वुत्ते वुच्चदे— जो जीवो खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण पुव्वकोडाउएसु
मणुस्सेसु उववण्णो । तदो गब्भादिअट्ठवस्साणमंतोमहुत्तब्भहियाणमुवरि सम्मत्तं संजमं
च जुगवं घेतूण पुणो कम्मस्स उक्कस्सगुणसेडिणिज्जरं देसूणपुव्वकोडिं कादूण अंतो-
महुत्तावसेसे सिज्जदव्वए त्ति खवगसेडिमारुढो । तदो खवगसेडिम्म सव्वधुक्कस्स—

वह जघन्य वर्गणासे अनन्तगुणी है । गुणकार क्या है ? सब जीवोंका असंख्यातवां भागप्रमाण
गुणकार है । यथा— सब जीवराशिको असंख्यात लोकप्रमाण शरीरोंसे भाजित कर पुनः
आवलीके असंख्यातवें भागसे, असंख्यात लोकोंसे और एक जीवके औदारिक, तैजस व
कार्मणशरीरके द्रव्यसे गुणित कर जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करने पर उत्कृष्ट ध्रुवशून्य
द्रव्यवर्गणा होती है । पुनः इसे एक अधिक उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणासे भाजित करने पर
सब जीवराशिका असंख्यातवां भाग आता है । इसलिए पहले कहा गया गुणकार ही होता है
ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए । यह अठारवीं वर्गणा है १८ । एकान्तवादी दृष्टिके समान
यह सदा काल शून्यरूपसे अवस्थित है ।

ध्रुवशून्य द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर बादरनिगोद द्रव्यवर्गणा है ॥ ९३ ॥

उत्कृष्ट ध्रुवशून्य द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर सबसे जघन्य बादर निगोद
द्रव्यवर्गणा होती है ।

शंका— वह कहां दिखाई देती है ?

समाधान— क्षीणकषायके अन्तिम समयमें ।

किस प्रकारके क्षीणकषायमें होती है ऐसा प्रश्न करने पर उत्तर देते हैं— जो जीव क्षपित
कर्मांशिक विधिसे आकर पूर्वकोटिकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ । अनन्तर गर्भसे लेकर
आठ वर्ष और अन्तर्मुहूर्तका होने पर सम्यक्त्व और संयमको युगपत् ग्रहण करके पुनः कुछ
कम पूर्वकोटि काल तक कर्मकी उत्कृष्ट गुणश्रेणि निर्जरा करके सिद्ध होनेके लिए अन्तर्मुहूर्त काल
अवशेष रहने पर क्षपकश्रेणि पर आरोहण किया । अनन्तर क्षपकश्रेणिमें सबसे उत्कृष्ट विशुद्धिके

विसोहीए कम्मणिज्जरं करेमाणस्स खीणकसायस्स पढमसमए अणंता बादरणिगोद-
जीवा मरति । विदियसमए विसेसाहिया जीवा मरति । केत्तिपमेत्तेण विसेसाहिया ?
पढमसमए मदजीवपमाणमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडेदूण तत्थ एगखंडमेत्तेण ।
एवं तदियसमयादिसु विसेसाहिया विसेसाहिया मरति जाव खीणकसायद्धाए पढम-
समयप्पहुडि आवलियपुधत्तं गदं ति । तेण परं संखेज्जदिभागब्बहिया संखेज्जदिभाग-
ब्बहिया मरति जाव खीणकसायद्धाए आवलियाए असंखेज्जदिभागो सेसो ति ।
तदो उवरिमाणंतरसमए असंखेज्जगुणा मरति । एवमसंखेज्जगुणा असंखेज्जगुणा
मरति जाव खीणकसायच्चरिमसमओ ति । गुणगारो पुण सव्वत्थ पलिदोवमस्स असं-
खेज्जदिभागो । विसेसाहियमरणच्चरिमसमए मदजीवे तप्पाओग्गेण पलिदोवमस्स
असंखेज्जदिभागेण गुणिदे गुणसेडिमरणपढमसमए मदजीवपमाणं होदि ति चेत्तव्वं ।
एवमुवरि पि जाणिदूण वत्तव्वं जाव खीणकसायच्चरिमसमओ ति । एसो गुणगारो
समयं पडि मरंतजीवाणमेव परूवेदव्वो, ण पुलवियाणं । तं कधं णव्वदे ? खीणक-
सायच्चरिमसमए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिगोदाणं ति उवरि भण्णमाणच्चू-
लियासुत्तादो । के णिगोदा णाम ? पुलवियाओ णिगोदा ति भणंति ।

द्वारा कर्मनिर्जरा करके क्षीणकषाय हुए इस जीवके प्रथम समयमें अतन्त बादर निगोद जीव मरते हैं । दूसरे समयमें विशेष अधिक जीव मरते हैं । कितने विशेष अधिक जीव मरते हैं ? प्रथम समयमें मरे हुए जीवोंके प्रमाणमें आवलीके असंख्यातवें भागका भाग देने पर जो एक भाग लब्ध आवे उतने विशेष अधिक जीव मरते हैं । इसी प्रकार तीसरे आदि समयोंमें विशेष अधिक विशेष अधिक जीव मरते हैं । यह क्रम क्षीणकषायके प्रथम समयसे लेकर आवलि-
पृथक्कृत काल तक चालू रहता है । इसके आगे संख्यातवां भाग अधिक संख्यातवां भाग अधिक मरते हैं । और यह क्रम क्षीणकषायके कालमें आवलिका असंख्यातवां भाग काल शेष रहने तक चालू रहता है । इसके आगेके लगे हुए समयमें असंख्यातगुण जीव मरते हैं । इस प्रकार क्षीणकषायके अन्तिम समय तक असंख्यातगुण जीव मरते हैं । गुणकार सर्वत्र पल्योपमके असं-
ख्यातवें भागप्रमाण है । विशेषाधिक मरनेके अन्तिम समयमें मरनेवाले जीवोंके प्रमाणको तत्प्रायोग्य पल्योपमके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर गुणश्रेणि क्रमसे मरनेके प्रथम सम-
यमें मरे हुए जीवोंका प्रमाण होता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए । इसी प्रकार आगे भी क्षीणकषायके अन्तिम समय तक जानकर कथन करना चाहिए । यह गुणकार प्रत्येक समयमें मरनेवाले जीवोंका ही कहना चाहिए, पुलवी जीवोंका नहीं ।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— आगे कहे जानेवाले चूलिकाके ' खीणकसायच्चरिमसमए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिगोदाणं ' इस सूत्रसे जाना जाता है ।

शंका— निगोद किन्हें कहते हैं ?

समाधान— पुलवियोंको निगोद कहते हैं ।

संपहि पुलवियाणं एत्थ सरूवपरूवणं कस्सामो । तं जहा - खंधो अंडरं आवासो
पुलविया णिगोदसरीरमिदि पंच होंति । तत्थ बादरणिगोदाणमासयभूदो* बहुएहि
वक्खारएहि सहियो वलंजंतवाणियकच्छउडसमाणो मूलय-थूहल्लयाविववएसहरो खंधो
णाम । ते च खंधा असंखेज्जलोगमेत्ता ; बादरणिगोदपदिट्ठिदाणमसंखेज्जलोगमेत्तसंखुव-
लंभादो । तेसिं खंधाणं ववएसहरो तेसिं* भवानमवयवा वलंजुअकच्छउडपुव्वावर-
भागसमाणा अंडरं णाम । अंडरस्स अंतोद्वियो कच्छउडंडरंतोद्वियवक्खारसमाणो आवासो
णाम । अंडराणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि । एक्केक्कमिह अंडरे असंखेज्जलोगमेत्ता आवासा
होंति । आवासव्वमंतरे संट्ठिदाओ कच्छउडंडरवक्खारंतोद्वियपिसिवियाहि समाणाओ
पुलवियाओ णाम । एक्केक्कमिह आवासे ताओ असंखेज्जलोगमेत्ताओ होंति । एक्के-
क्कमिह एक्केक्कस्से पुलवियाए असंखेज्जलोगमेत्ताणि णिगोदसरीराणि ओरालिय-
तेजा-कम्मइयपोगल्लोवायाणकारणाणि कच्छउडंडरवक्खारपुलवियाए अंतोद्विदव्व-
समाणाणि पुध पुध अणंतानंतोहि णिगोदजीवेहि आउण्णाणि होंति । तिलोग-भरह-
जणवय-गाम-पुरसमाणाणि खंधंडरावासपुलविसरीराणि त्ति वा घेतव्वं ।

पुणो एत्थ खीणकसायसरीरं खंधो णाम ; असंखेज्जलोगमेत्तअंडराणमाधार-
भावादो । तत्थ अंडरंतोद्वियअणंतानंतजीवेसु सुक्कज्झाणेण पडियसमयमसंखेज्जगुणाए

अब यहाँ पर पुलवियोंके स्वरूपका कथन करते हैं । यथा— स्कन्ध, अण्डर, आवास, पुलवी और निगोदशरीर यं पाँच होते हैं । उनमेंसे जो बादर निगोदोंका आश्रयभूत है, बहुत वक्खारोंसे युक्त है तथा वलंजंतवाणिय कच्छउड समान है ऐसे मूली, थूअर और आर्द्रक आदि संज्ञाको धारण करनेवाला स्कन्ध कहलाता है । वे स्कन्ध असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं, क्योंकि, बादर निगोद प्रतिष्ठित जीव असंख्यात लोकप्रमाण पाये जाते हैं । जो उन स्कन्धोंके अवयव है और जो वलंजुअकच्छउडके पूर्वापर भागके समान हैं उन्हें अण्डर कहते हैं । जो अण्डरके भीतर स्थित हैं तथा कच्छउडअण्डरके भीतर स्थित वक्खारके समान हैं उन्हें आवास कहते हैं । अण्डर असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं । तथा एक एक अण्डरमें असंख्यात लोकप्रमाण आवास होते हैं । जो आवासके भीतर स्थित हैं और जो कच्छउडअण्डरवक्खारके भीतर स्थित पिशवियोंके समान हैं उन्हें पुलवि कहते हैं । एक एक आवासमें वे असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं । तथा एक एक आवासकी अलग अलग एक एक पुलविमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोद शरीर होते हैं जो कि औदारिक, तैजस और कार्मण पुद्गलोंके उपादान कारण होते हैं और जो कच्छउडअण्डरवक्खारपुलविके भीतर स्थित द्रव्योंके समान अलग अलग अनन्तानन्त निगोद जीवोंसे आपूर्ण होते हैं । अथवा तीन लोक, भरत, जनपद, ग्राम और पुरके समान स्कन्ध, अण्डर, आवास, पुलवि और शरीर होते हैं ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए ।

पुनः यहाँ पर क्षीणकषाय जीवके शरीरकी स्कन्ध संज्ञा है; क्योंकि, वह असंख्यात लोक-
प्रमाण अण्डरोंका आधारभूत है । वहाँ अण्डरोंके भीतर स्थित हुए अनंतानंत जीवोंमेंसे शुक्ल-

* ता० प्रती '—मास (म) यभूदो ' अ० आ० प्रत्यो: '—मांसमयभूदो , इति पाठः ।

* ता० प्रती '—लोगमेत्तववएसहरा तेसिं ' इति पाठः ।

सेडीए मदेसु खीणकसायचरिमसमए मरमाणजीवा अणंता होंति । होंता वि हेट्ठा दुचरिमसमएसु मदजीवेहिंतो असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागे । खीणकसायचरिमसमयपुलवियाओ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ त्ति सुत्ते भणिदं । जदि पुब्बुत्तरगुणगारो पुलवियाणं होवि तो एदं ण घडदे ; दुचरिमसमए मदजीवपुलवियासु आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तासु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिदासु खीणकसायचरिमसमए पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवीणमुवलंभादो । एक्केक्कम्हि खंधे अंडराणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि । तत्थ एक्केक्कम्हि अंडरे आवासा असंखेज्जलोगमेत्ता । तत्थ एक्केक्कम्हि आवासे पुलवियाओ असंखेज्जलोगमेत्ताओ त्ति पुब्बं पवुविदं । तेण खीणकसायचरिमसमए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ पुलवियाओ अत्थि त्ति ण घडदे । ण च तत्थतणपुलवियाणमसंखेज्जा भागा खीणकसायट्ठाणे णट्ठा त्ति वोत्तुं जुत्तं ; सगसरीरद्वियणिगोदजीवे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिय तत्थ एगखंडम्मि णट्ठे पुलवियाणमसंखेज्जाणं भागाणं विणासविरोहादो । ण च चरिमसमए मदजीवा दुचरिमादिसमएसु मदजीवाणमसंखेज्जदिभागो ; गुणसेडिमरणपरूवणाए सह विरोहादो ? एत्थ परिहारो बुच्चदे— खीणकसायसरीरे उक्कस्सेण जहण्णेण वि  पुलवियाओ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ चेव

ध्यानके द्वारा प्रति समय असंख्यातगुणे श्रेणि रूपसे जीवोंके मरने पर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें मरनेवाले जीव अनन्त होते हैं । इतने होते हुए भी पहले द्विचरम समयमें मरनेवाले जीवोंसे असंख्यातगुणे होते हैं । गुणकार क्या है ? पत्योपमका असंख्यातवं भाग गुणकार है ।

शंका— क्षीणकषायके अन्तिम समयमें पुलवियाँ आवलिके असंख्यातवं भागप्रमाण होती हैं ऐसा सूत्रमें कहा गया है । यदि पूर्वोक्त गुणकार पुलवियोंका होता है तो यह कथन घटित नहीं होता, क्योंकि, द्विचरम समयमें मृत जीवोंकी आवलिके असंख्यातवं भागमात्र पुलवियोंको पत्योपमके असंख्यातवं भागसे गुणित करनेपर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें पत्योपमके असंख्यातवं भागमात्र पुलवियाँ उपलब्ध होती हैं । एक एक स्कन्धमें अण्डर असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं । तथा एक एक अण्डरमें आवास असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं और एक एक आवासमें पुलवियाँ असंख्यात लोकमात्र होती हैं इस प्रकार पहले कह आये हैं । इसलिए क्षीणकषायके अन्तिम समयमें आवलिके असंख्यातवं भागमात्र पुलवियाँ हैं यह वचन घटित नहीं होता है । वहाँकी पुलवियोंका असंख्यात बहुभाग क्षीणकषाय गुणस्थानमें नष्ट हो गया है यह कहना युक्त नहीं है । क्योंकि, अपने शरीरमें स्थित तिगोद जीवोंको पत्योपमके असंख्यातवं भागसे भाजित कर वहाँ लब्ध एक भागके नष्ट होनेपर पुलवियोंके असंख्यात बहुभागका विनाश माननेमें विरोध आता है । अन्तिम समयमें मरे हुए जीव द्विचरम आदि समयोंमें मरे हुए जीवोंके असंख्यातवं भागप्रमाण होते हैं यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, इस कथनका गुणश्रेणि क्रमसे मरण प्ररूपणाके साथ विरोध आता है ।

समाधान— यहाँ इस शंकाका समाधान करते हैं । क्षीणकषाय जीवके शरीरमें उत्कृष्ट

 ता० प्रती ' उक्कस्सेण जहण्णा (ण) वि ' अ० प्रती ' उक्कस्साण जहण्णाण वि ' आ० प्रती ' उक्कस्सेण जहण्णाणं वि ' इति पाठः ।

होति । एगबंधणबद्धाओ* असंखेज्जलोगमेत्ताओ कत्थ वि णत्थि । जहण्णाहियारादो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ चेव पुलवियाओ होति त्ति घेत्तव्वं । ण च पुव्वुत्तवयणेण सह विरोहो, खीणकसायं मोत्तूण अण्णखंधे अवलब्धि तत्थ परूविद-त्तादो । ण च सब्बखंधेसु पुलवियाओ असंखेज्जलोगमेत्ताओ चेव अत्थि त्ति णियमो; णियमा य सुत्तवक्खाणस्सणुवलंभादो❧ ।

संपहि पुलवियाओ अस्सिदूण केहि वि आइरिएहि णिगोदाणं मरणवक्कमो परूविदो, तं वत्तइस्सामो । तं जहा- खीणकसायपढमसमए मरंतपुलवियाओ थोवाओ । विदिय, समए मरंतपुलवियाओ विसेसाहियाओ । तदियसमए विसेसाहियाओ । एवं विसे-साहिया विसेसाहिया जाव आवलिपुधत्तं त्ति । विसेसो पुण आवलियाए असंखेज्जदि-भागपडिभागो । तेण परं संखेज्जभागब्भहियाओ जाव विसेसाहियमरणचरिमसमओ त्ति । तदो गुणसेडिमरणपढमसमए संखेज्जगुणाओ मरंति । एवं संखेज्जगुणाओ संखे-ज्जगुणाओ मरंति जाव खीणकसायकालस्स आवलियाए असंखेज्जदिभागो सेसो त्ति । तेण परमसंखेज्जगुणाओ असंखेज्जगुणाओ मरंति जाव खीणकसायचरिमसमओ त्ति । गुणगारेण पुण असंखेज्जगुणमरणमिह सब्बत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभागेण और जघन्य पुलवियाँ आवलिके असंख्यातवें भागमात्र ही होती हैं । एक बन्धनबद्ध पुलवियाँ असंख्यात लोकमात्र कहीं भी नहीं होतीं । यहाँ जघन्यका अधिकार होनेसे आवलिके असंख्यातवें भागमात्र ही पुलवियाँ होतीं हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिए । पूर्वोक्त वचनके साथ विरोध आता है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, क्षीणकषायको छोड़कर अन्य स्कन्धका अवलम्बन लेकर वहाँ कथन किया है । और सब स्कन्धोंमें पुलवियाँ असंख्यात लोकमात्र ही होती हैं ऐसा कोई नियम नहीं है, क्योंकि, इस प्रकारके नियमको करनेवाले सूत्रका व्याख्यान उपलब्ध नहीं होता ।

अब पुलवियोंका अवलम्बन लेकर कितने ही आचार्य निगोद जीवोंके मरण क्रमका कथन करते हैं उसे बतलाते हैं । यथा-क्षीणकषायके प्रथम समयमें भरनेवाली पुलवियाँ स्तोक हैं । दूसरे समयमें भरनेवाली पुलवियाँ विशत्र अधिक हैं । तीसरे समयमें विशेष अधिक हैं । इस प्रकार आवलि पृथक्त्व काल जाने तक विशेष अधिक विशेष अधिक है । विशेषका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागका प्रतिभाग स्वरूप है । इससे आगे विशेषाधिकके क्रमसे मरण करनेके अन्तिम समय तक संख्यातवें भाग अधिक हैं । अतन्तर गुणश्रेणि रूपसे मरण करनेके प्रथम समयमें संख्यातगुणी मरणको प्राप्त होती हैं । इस प्रकार क्षीणकषायके कालमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल शेष रहने तक संख्यातगुणी संख्यातगुणी मरणको प्राप्त होती हैं । इससे आगे क्षीणकषायके अन्तिम समय तक असंख्यातगुणी असंख्यातगुणी मरणको प्राप्त होती हैं । जहाँ असंख्यातगुणी पुलवियोंका मरण कहा है वहाँ गुणकार आवलिका असंख्यातवां भाग

* ता०आ० प्रत्योः 'एत्थ बंधणबद्धाओ' इति पाठः । ❧ ता०प्रतो 'णियमो, (णियमाय) सुत्तवक्खा (णा-) णामणुवलंभादो ' अ०आ०प्रत्योः ' णियमो, णियमा य सुत्तवक्खाणमणुवलंभादो ' इति पाठः ।

होदव्वं; अण्णहा खीणकसायचरिमसमए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाण-
मणुववत्तीदो । अणेण विहाणेण गंतूण खीणकसायचरिमसमए आवलियाए असंखेज्ज-
दिभागमेत्तपुलवियाओ मदावसिद्धाओ ; हेट्ठा दुचरिमादिसमएसु णट्ठपुलवियाहितो
असंखेज्जगुणाओ उव्वरंति; गुणसेडिमरणणगहाणुववत्तीदो । एसो पुलवियाणमावलि-
याए असंखेज्जदिभागो गुणगारो जो पढिदो सो ण घडदे; खीणकसायचरिमसमए
णट्ठपुलवियाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपमाणत्तप्पसंगादो । कुदो? जहणपरित्ता-
संखेज्जं विरलिय आवलियाए असंखेज्जदिभागं रुवं पडि दादूण अण्णोण्णेण गुणिदे
वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपमाणुप्पत्तीदो ।

किमट्ठमेदे एत्थ मरंति? ज्झाणेण णिगोदजीवुप्पत्तिट्ठिदिकारणणिरोहादो । ज्झाणे-
ण अणंतान्तजीवरासिणिहंतानं कथं णिव्वुई? अप्पमादादो । को अप्पमादो ?
पंच महव्वयाणि पंच समदीयो तिण्णि गुत्तीओ णिस्सेसकसायाभावो च अप्पमादो
णाम । हिंसा णाम पाण-पाणिवियोगो । तं करेताणं कथमहिंसालव्वणपंचमहव्वय-

होना चाहिए, अन्यथा क्षीणकषायके अन्तिम समयमें आवलिके असंख्यातवें भागमात्र पुलवियाँ
उपलब्ध नहीं होतीं । इस विधिसे जाकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जो आवलिके
असंख्यातवें भागमात्र पुलवियाँ मरनेसे अवशिष्ट रहती हैं वे पीछे द्विचरम आदि समयोंमें नष्ट
हुई पुलवियोंसे असंख्यातगुणी शेष रहती हैं । अन्यथा गुणश्रेणि मरण नहीं बन सकता । किन्तु
यहाँ यह जो पुलवियोंका आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार कहा है वह घटित नहीं
होता, क्योंकि, इस कथनसे क्षीणकषायके अन्तिम समयमें नष्ट हुई पुलवियाँ पल्योपमके असं-
ख्यातवें भागप्रमाण प्राप्त होती हैं । कारण कि जघन्य परीतासंख्यातका विरलन कर और
आवलिके असंख्यातवें भागको विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति देकर परस्पर गुणा करने पर
भी पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाणकी उत्पत्ति होती है ।

शंका-ये निगोद जीव यहाँ क्यों मरणको प्राप्त होते हैं ?

समाधान-क्योंकि, ध्यानसे निगोद जीवोंकी उत्पत्ति और उनकी स्थितिके कारणका
निरोध हो जाता है ।

शंका-ध्यानके द्वारा अनन्तानन्त जीवराशिका हनन करनेवाले जीवोंको निवृत्ति कैसे
मिल सकती है ?

समाधान-अप्रमाद होनेसे ।

शंका-अप्रमाद किसे कहते हैं ?

समाधान-पाँच महाव्रत, पाँच समिति, तीन गुप्ति और समस्त कषायोंके अभावका
नाम अप्रमाद है ।

शंका-प्राण और प्राणियोंके नियोगका नाम हिंसा है । उसे करनेवाले जीवोंके अहिंसा
लक्षण पाँच महाव्रत कैसे हो सकते हैं ?

संभवो ? ण, बहिरंगहिंसाए आसवत्ताभावादो । तं कुवो णव्वदे ? तदभावे वि अंत-
रंगहिंसादो चेव सित्थमच्छस्स बंधुवलंभादो । जेण विणा जं ण होदि चेव तं तस्स
कारणं । तम्हा अंतरंगहिंसा चेव सुद्धणएण हिंसा ण बहिरंगा त्ति सिद्धं । ण च
अंतरंगहिंसा एत्थ अत्थि; कसायसंजमाणमभावादो । उत्तं च --

जियदु मरदु व जीवो अयदाचारस्स णिच्छओ बंधो ।

पयदस्स णत्थि बंधो हिंसामेत्तेण समिदीहि ॥ २ ॥

सरवासे दु पदंते जह दढकवचो ण भिज्जहि सरेहि ।

तह समिदीहि ण लिप्पइ साहू काएसु इरियंतो ॥ ३ ॥

जत्थेव चरइ बालो परिहारण्हू वि चरइ तत्थेव ।

वज्झइ सो पुण बालो परिहारण्हू वि मुंचइ सो ॥ ४ ॥

स्वयं ह्यहिंसा स्वयमेव हिंसनं न तत्पराधीनमिह द्वयं भवेत् ।

प्रमादहीनोऽत्र भवत्यहिंसकः प्रमादयुक्तस्तु सदैव हिंसकः ॥ ५ ॥

वियोजयति चासुभिर्न च वधेन संयुज्यते शिव च न परोऽयमदंष्टरुष्मृते विद्यते ।

वधोपनयमभ्युपैति च पराननिघ्नन्नपि त्वयायमतिदुर्गमः प्रशमहेतुरुद्योतितः ॥ ६ ॥

समाधान-- नहीं; क्योंकि, बहिरंग हिंसा आसवरूप नहीं होती ।

शंका-- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- क्योंकि, बहिरंग हिंसाका अभाव होनेपर भी केवल अन्तरङ्ग हिंसासे
सिक्थ मत्स्यके बन्धकी उपलब्धि होती है ।

जिसके बिना जो नहीं होता है वह उसका कारण है, इसलिए शुद्धनयसे अन्तरंग
हिंसा ही हिंसा है, बहिरंग नहीं; यह बात सिद्ध होती है । यहाँ अन्तरंग हिंसा नहीं है;
क्योंकि, कषाय और असंयमका अभाव है । कहा भी है---

चाहे जीव जिओ चाहे मरो, अयत्ताचारपूर्वक प्रवृत्ति करनेवाले जीवके नियमसे बन्ध
होता है, किन्तु जो जीव समितिपूर्वक प्रवृत्ति करता है उसके हिंसा हो जाने मात्रसे बन्ध
नहीं होता ॥ २ ॥

सरोँकी वर्षा होने पर जिस प्रकार दूढ़ कवचवाला व्यक्ति सरोँसे नहीं भिदता है
उसी प्रकार षट्कायिक जीवोंके मध्यमें समितिपूर्वक गमन करनेवाला साधु पापसे लिप्त नहीं
होता है ॥ ३ ॥

जहाँ पर अज्ञानी भ्रमण करता है वहीं पर हिंसाके परिहारकी विधिको जाननेवाला
भी भ्रमण करता है, परन्तु वह अज्ञानी पापसे बँधता है और परिहार विधिका जानकर उससे
मुक्त होता है ॥ ४ ॥

अहिंसा स्वयं होती है और हिंसा भी स्वयं ही होती है । यहाँ ये दोनों पराधीन नहीं
हैं । जो प्रमादहीन है वह अहिंसक है किन्तु जो प्रमादयुक्त है वह सदैव हिंसक है ॥ ५ ॥

कोई प्राणी दूसरेको प्राणोंसे वियुक्त करता है फिर भी वह बंधसे संयुक्त नहीं होता ।

संपहि क्षीणकषायपहमसमयप्पहुडि ताव बादरणिगोदजीवा उत्पज्जंति जाव तेसि चेव जहण्णाउवकालो सेसो ति । तेण परं ण उत्पज्जंति । कुदो ? उत्पण्णाणं जीवणीयकालाभावादो । तेण कारणेण बादरणिगोदजीवा एत्तो प्पहुडि जाव क्षीणकषायचरिमसमओ ति ताव सुद्धा मरंति चेव ।

संपहि क्षीणकषायचरिमसमए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियासु पुध पुध असंखेज्जलोगमेत्तणिगोदसरीरेहि आउण्णासु द्विविअणंताणंतजीवाणं अणं-ताणंतविस्सासुवचयसहियकम्म-णोकम्मसंघाओ सव्वजहणिया बादरणिगोदद्वयवर्गणा होदि ।

संपहि एदिस्से बादरणिगोदद्वयवर्गणाए ट्ठाणपरुवणं कस्सामो । तं जहा— एत्थ ताव अणंताणंतजीवाणं ओरालियसरीरपरमाणुपुंजं विस्सासुवचएहि सह पुध द्विविय पुणो तेसि चेव सव्वेसि जीवाणं सविस्सासुवचय—तेजासरीरपरमाणुपुंजं विस्सासुवचएहि सह कम्मइयसरीरपरमाणुपुंजं च पुध द्विविय एदेसि छण्णं पुंजाण-मुवरि परमाणु वड्ढाविय ट्ठाणुप्पत्ती वुच्चदे—

तथा परोपघातसे जिसकी स्मृति कठोर हो गई है, अर्थात् जो परोपघातका विचार करता है उसका कल्याण नहीं होता । तथा कोई दूसरे जीवोंको नहीं मारता हुआ भी हिंसकपनेको प्राप्त होता है । इस प्रकार हे जिन ! तुमने यह अतिगहन प्रशमका हेतु प्रकाशित किया है, अर्थात् शान्तिका मार्ग बतलाया है ॥ ६ ॥

क्षीणकषायके प्रथम समयसे लेकर बादर निगोद जीव तब तक उत्पन्न होते हैं जब तक क्षीणकषायके कालमें उनका जघन्य आयुका काल शेष रहता है । इसके बाद नहीं उत्पन्न होते; क्योंकि, उत्पन्न होने पर उनके जीवित रहनेका काल नहीं रहता, इसलिए बादर निगोद जीव यहांसे क्षीणकषायके अन्तिम समय तक केवल मरते ही हैं ।

यहां क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जो आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियां हैं जो कि पृथक् पृथक् असंख्यात लोकप्रमाण निगोद शरीरोंसे आपूर्ण हैं उनमें स्थित अनन्तानन्त निगोद जीवोंके जो अनन्तानन्त विस्सोपचयसे युक्त कर्म और नोकर्म संघात है वह सबसे जघन्य बादर निगोद द्रव्यवर्गणा है ।

अब इस बादर निगोद द्रव्यवर्गणाके स्थानोंका कथन करते हैं । यथा— यहां अनन्तानन्त जीवोंके अपने विस्सोपचयके साथ औदारिकशरीर परमाणुपुंजको पृथक् स्थापित करके पुनः उन्हीं सब जीवोंके अपने विस्सोपचय सहित तैजसशरीर परमाणु-पुंजको और अपने विस्सोपचय सहित कार्मणशरीर परमाणुपुंजको पृथक् स्थापित कर इन छह पुंजोंके ऊपर परमाणुओंकी वृद्धि कर स्थानोंकी उत्पत्तिका कथन करते हैं—

❀ ता० प्रती 'जीवणियमकालाभावादो' इति पाठः । ❀ प्रतिष्ठा 'सुद्धा' इति पाठः ।

❀ ता० प्रती 'असंखे०भागमेत्ता पुलवियासु' इति पाठः । ❀ अ० का० प्रत्योः '—सहिदा कम्मणो-कम्मसंघाओ' इति पाठः । ♥ प्रतिष्ठा 'सव्वेहि' इति पाठः । ☉ ता० प्रती 'ट्ठाविय' इति पाठः ।

अण्णो जीवो खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण एगविस्ससुवचएण ओरालिय-
सरीरपुंजमब्भहियं काऊण खीणकसायचरिमसमए द्विदो । एदमणमपुणरुत्तट्ठाण
होदि; अणंतरहेट्ठिमट्ठाणादो एत्थ परमाणुत्तरत्तुवलंभादो । पुणो अण्णो जीवो खवि-
दकम्मंसियलक्खणेणागंतूण खीणकसायचरिमसमए दोहि विस्ससुवचयपरमाणूहि
ओरालियसरीरविस्ससुवचयपुंजमब्भहियं काऊणच्छिदो तदो तमण्णं तदियमपुणरुत्त-
ट्ठाणं होदि । पुणो तीहि विस्ससुवचय परमाणूहि ओरालियसरीरविस्ससुवचयपुंजम-
ब्भहियं काऊण खीणकसायचरिमसमए अच्छिदो ताधे चउत्थमपुणरुत्तट्ठाणमुप्पज्जदि ।
पुणो चदुहि विस्ससुवचएहि परमाणूहि ओरालियसरीरविस्ससुवचयपुंजमब्भहियं
काऊण अण्णो जीवो खीणकसायचरिमसमयमिह द्विदो ताधे पंचममपुणरुत्तट्ठाणमुप्प-
ज्जदि । एवमेगेगपरमाणुत्तरकमेण ताव ट्ठाणाणि उप्पादेदव्वाणि जाव खीणकसायच-
रिमसमयमिह सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता ओरालियविस्ससुवचयपरमाणू वड्ढिदा त्ति ।

पुणो अण्णो जीवो खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण जहण्णदव्वस्सुवरि एगोरालिय-
परमाणुमोरालियसरीरपुंजमिह* वड्ढाविय पुणो ओरालियसरीरविस्ससुवचयपरमा-
णुपमाणविस्ससुवचयपुंजं वड्ढाविय* खीणकसायचरिमसमए द्विदो ताधे अणमपुण-

एक अन्य जीव लो जो क्षपित कर्मांशिक विधिसे आकर एक विस्ससोपचय परमाणुसे
औदारिकशरीरके पुञ्जको अधिक करके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है तो इसके यह
अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है; क्योंकि, अनन्तर पूर्वके स्थानसे यहां एक परमाणु अधिक उपलब्ध
होता है । पुनः एक अन्य जीव लो जो क्षपित कर्मांशिक विधिसे आकर क्षीणकषायके अन्तिम
समयमें दो विस्ससोपचय परमाणुओंसे औदारिकशरीर विस्ससोपचय पुञ्जको अधिक करके
स्थित है तब उसके यह अन्य तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता है । पुनः एक अन्य जीव तीन विस्स-
सोपचय परमाणुओंसे औदारिकशरीर विस्ससोपचय पुञ्जको अधिक करके क्षीणकषायके अन्तिम
समयमें स्थित है उसके तब चौथा अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है । पुनः चार विस्ससोपचय
परमाणुओंसे औदारिकशरीर विस्ससोपचय पुञ्जको अधिक करके जो अन्य जीव क्षीणकषायके
अन्तिम समयमें स्थित है उसके तब पाँचवां अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है । इस प्रकार
उत्तरोत्तर एक एक परमाणुको बढ़ाते हुए क्षीणकषायके अन्तिम समयमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे
औदारिकशरीर विस्ससोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक स्थान उत्पन्न करने चाहिए ।

पुनः एक अन्य जीव लो जो क्षपित कर्मांशिक विधिसे आकर जघन्य द्रव्यके ऊपर
औदारिकशरीर पुञ्जमें एक औदारिकशरीर परमाणुको बढ़ाकर पुनः औदारिकशरीर विस्ससो-
पचय परमाणुप्रमाण विस्ससोपचयपुञ्जको बढ़ाकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है
उसके तब अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है; क्योंकि, जीवोंसे अनन्तगुणे औदारिकशरीर

* ता० प्रती 'सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता । ओरालियविस्ससुवचयपरमाणुमोरालियसरीरपुंजमिह' इति
पाठः । * का० प्रती 'पुणो ओरालियसरीरविस्ससुवचयपुंजमिह पुव्ववड्ढाविदो ओरालियसरीरविस्ससुव-
चयपरमाणुपमाणविस्ससुवचयपुंजमिह वड्ढाविय' आ० का० प्रत्योः 'पुणो ओरालियसरीरविस्ससुवचयपर-
माणुपमाणविस्ससुवचयपुंजमिह पुव्वं वड्ढाविदो ओरालिय० वड्ढाविय' इति पाठः ।

रुतट्ठाणं होदि । कुदो ? अणंतरहेट्ठिमट्ठाणोराणलियविस्ससुवचयपुंजादो एदस्स ट्ठाणस्स ओराणलियसरोरविस्ससुवचयपुंजो सरिसो होदूण एत्थतणओराणलियसरोरपुंजस्स परमाणुत्तरत्तुवलंभादो ।

पुणो एदस्सुवरि एगोराणलियविस्ससुवचयपरमाणूहि वड्ढिदे अणमपुणरुतट्ठाणं होदि । दोसु विस्ससुवचयपरमाणुसु वड्ढिदेसु अणमपुणरुतट्ठाणं होदि । तिसु विस्ससुवचयपरमाणुसु वड्ढिदेसु अणमपुणरुतट्ठाणं होदि । एवमेगुत्तरवड्ढोए ताव वड्ढिदेदव्वं जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्ससुवचयपरमाणू वड्ढिदा त्ति । एवं वड्ढादूणच्छिदे तदो अणो जीवो ओघजहण्णदव्वं दोओराणलियपरमाणूहि दोवारं वड्ढिदविस्ससुवचयेहि य अब्भहियं काऊण खीणकसायवरिमसमए ट्ठिदो ताधे अणमपुणरुतट्ठाणं होदि । एवमेदेण कमेण ताव वड्ढावेदव्वं जाव अभवसिद्धिएहि अणंतगुणासिद्धाणमणंतभागमेत्ता ओराणलियसरोरपरमाणू सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता तेसि विस्ससुवचयपरमाणू च वड्ढिदा त्ति । वड्ढेता वि केवडिया इदि पुच्छिदे एयबादरणिगोदजीवम्म जत्तियविस्ससुवचयसहियओराणलियसरोरपरमाणू अत्थि तत्तियमेत्ता ।

कधमेगो जीवो दोणं जीवाण सविस्साओराणलियसरोरपुंजस्स आहारो होज्ज? ण, एकम्मिह वि जीवे असंखेज्जाणं खविद-कम्मंसियजीवाणमोराणलियसरोरदव्ववलंभादो ।

अनन्तर पूर्वके स्थानके औदारिक विस्ससोपचय पुञ्जके साथ इस स्थानका औदारिकशरीर विस्ससोपचय पुञ्ज समान होकर यहांके औदारिकशरीर पुञ्जमें एक परमाणु अधिक उपलब्ध होता है ।

पुनः इसके ऊपर एक औदारिक विस्ससोपचय परमाणुके बढ़ने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । दो विस्ससोपचय परमाणुओंके बढ़ने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । तीन विस्ससोपचय परमाणुओंके बढ़ने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्ससोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक उत्तरोत्तर एक एक परमाणुको बढ़ाते जाना चाहिए । इस प्रकार बढ़ाकर स्थित होने पर अनन्तर एक अन्य जीव लो जो ओघ जघन्य द्रव्यको दो औदारिक परमाणुओंसे और दो बार बढ़ाए हुए विस्ससोपचयोंसे अधिक करके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है तब अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार इस क्रमसे तब तक बढ़ाते जाना चाहिए जब जाकर अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवे भागमात्र औदारिकशरीर परमाणुओंकी और सब जीवोंसे अनन्तगुणे उन्हींके विस्ससोपचय परमाणुओंकी वृद्धि हो जाती है । बढ़ाते हुए भी कितनी बार बढ़ावे ऐसा प्रश्न करने पर कहते हैं कि एक बादर निगोद जीवके जितने विस्ससोपचयके साथ औदारिकशरीर परमाणु हैं उतनी बार बढ़ावे ।

शंका-एक जीव दो जीवोंके विस्ससोपचयसहित औदारिकशरीर पुञ्जका आधार कैसे हो सकता है ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, एक ही जीवमें असंख्यात क्षपित कर्मांशिक जीवोंका औदारिकशरीर द्रव्य उपलब्ध होता है ।

जदि एक्कम्हि जीवे असंखेज्जाणं जीवाणं दब्बं संभवदि तो बादरणिगोदजहणवरग-
णाए अणंतजीवाणं ओरालियसरीरदोपुंजेसु एगजीवओरालियसरीरदोपुंजा णिच्छएण
संभवन्ति त्ति पुणो किण्ण घेप्पदे ? ण । पुणो अण्णो जीवो पुब्बं वड्डिइदब्बेण ओरा-
लियसरीरमब्भहियं काऊण पुणो तेजइयसरीरविस्सासुवचयपुंजे एगपरमाणुणा वड्डा-
विदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि ; अणंतरहेट्ठिमट्ठाणं पेक्खिय एत्थ परमाणुत्तरत्तुवलंभादो ।
पुणो पुब्बिल्लट्ठाणम्हि बेतेजइयविस्सासुवचयपरमाणुपोगलेसु वड्डिदेसु अण्णमपुणरुत्त-
ट्ठाणं होदि । तिसु तेजइयविस्सासुवचयपरमाणुपोगलेसु वड्डिदेसु अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं
होदि । एवमेगादिएगत्तरकमेण ताव वड्डावेदब्बं जाव सब्बजीवेहि अणंतगुणमेत्ता
तेजइयसरीरविस्सासुवचयपरमाणुवाड्डि त्ति ।

तदो अण्णो जीवो ओरालियसरीरदोपुंजेसु एगजीवओरालियसरीरदोपुंजे वड्डा-
विय तेजासरीरमेगतेजापरमाणुणा अब्भहियं काऊण एगतेजासरीरपरमाणुणा संबं-
धाओग्गअणंतपरमाणु पुब्बं व वड्डाविदमेत्ते तेजइयविस्सासुवचएसु वड्डाविय खीणक-
सायचरिमसमए ट्ठिदो ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । कारणं सुगमं । तदो अण्णो
जीवो तेजासरीरमेगविस्सासुवचयपरमाणुणा अब्भहियं काड्डणच्छिदो ताधे अण्णम-

शंका-- यदि एक जीवमें असंख्यात जीवोंका द्रव्य सम्भव है तो बादर निगोद
जघन्य वर्गणा सम्बन्धी अनन्त जीवोंके औदारिकशरीर सम्बन्धी दो पुञ्जोंमें एक जीव संबंधी
औदारिकशरीरके दो पुञ्ज निश्चयसे सम्भव हैं ऐसा क्यों नहीं ग्रहण करते ?

समाधान-- नहीं ग्रहण करते ।

पुनः एक अन्य जीव लो जो पहले बढाए हुए द्रव्यके साथ औदारिकशरीरको अधिक
करके पुनः तैजसशरीरके विस्त्रसोपचय पुञ्जमें एक परमाणुको बढाकर स्थित है तब उसके अन्य
अपुनरुक्त स्थान होता है, क्योंकि, अनन्तर पूर्वके स्थानको देखते हुए यहां एक परमाणु अधिक
उपलब्ध होता है । पुनः पूर्वोक्त स्थानमें दो तैजसशरीर विस्त्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढाने
पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । तीन तैजसशरीर विस्त्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढाने
पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार एकसे लेकर उत्तरोत्तर एक एक परमाणु तब
तक बढाना चाहिए जब जाकर सब जीवोंसे अनन्तगुणे तैजसशरीर विस्त्रसोपचय परमाणुओंकी
वृद्धि हो लेती है ।

अनन्तर एक अन्य जीव लो जो औदारिकशरीरके दो पुञ्जोंमें एक जीव सम्बन्धी
औदारिकशरीरके दो पुञ्ज बढाकर, तैजसशरीरको एक तैजस परमाणुसे अधिक करके तथा एक
तैजसशरीरके परमाणुसे सम्बन्ध रखने योग्य और पहलेके समान बढाये हुए अनन्त परमाणु-
प्रमाण तैजसशरीर विस्त्रसोपचयोंको बढाकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है तब उसके
अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । कारण सुगम है । अनन्तर एक अन्य जीव लो जो तैजसशरीरको
एक विस्त्रसोपचय परमाणु अधिक करके स्थित है उसके तब अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है ।

पुणरुत्तट्ठाणं होदि । पुणो बेविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । तिसु विस्सासुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवमेगुत्तरकमेण ताव वड्ढावेदव्वं जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणा एगतेजइयपरमाणुसंबंधपाओग्गमेत्ता वड्ढिदा त्ति । तदो अण्णो जीवो बेहि तेजापरमाणूहि तेजासरीरमव्वभहिय काऊण दोण्णितेजासरीरपरमाणुपाओग्गविस्सासुवचयेहि तेजासरीरविस्सासुवचयपुंजमव्वभहियं काऊण खीणकसायचरिमसमए द्विदो ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एदेण कमेण णेदव्वं जाव तेजासरीरपुंजम्मि अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता तेजासरीरपरमाणू सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सासुवचयपरमाणू च वड्ढिदा त्ति । वड्ढंता वि हु केत्तिया त्ति भणिदे एगबादरणिगोदस्स तेजइयसरीरम्मि जत्तिया परमाणू विस्सासुवचयसहिया अत्थि तत्तियमेत्ता ।

पुणो अण्णो जीवो एवं वड्ढिदोरालियतेजासरीरो कम्मइयविस्सासुवचयपुंजम्मि एगपरमाणुमहियं काऊण चरिमसमयखीणकसाई जादो ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । पुणो दोसु कम्मइयविस्सासुवचयपोग्गलेसु वड्ढिदेसु तदियपुणरुत्तट्ठाणं होदि । तिसु विस्सासुवचयपोग्गलेसु वड्ढिदेसु चउत्थमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवमेगुत्तरकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता कम्मइयविस्सासुवचयपरमाणू वड्ढावेदव्वं । एवं जाणिऊण णेयव्वं जाव कम्मइयसरीरपुंजम्मि अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता

पुनः दो विस्सोपचय परमाणु पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । तीन विस्सोपचय परमाणु पुद्गलोंको वृद्धि होने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार एक तैजसशरीर परमाणुसे सम्बन्ध योग्य सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंकी वृद्धि होने तक उत्तरोत्तर एक एक परमाणु बढ़ाना चाहिए । अनन्तर एक अन्य जीव लो जो दो तैजस परमाणुओंसे तैजसशरीरको अधिक करके दो तैजसशरीर परमाणुओंके योग्य विस्सोपचय परमाणुओंसे तैजसशरीर विस्सोपचय पुञ्जको अधिक करके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है तब उसके अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस क्रमसे तैजसशरीर पुञ्जमें अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र तैजसशरीर परमाणुओंकी तथा सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्सोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक ले जाना चाहिए । वृद्धि होते हुए भी कितने परमाणु वृद्धिको प्राप्त होते हैं ऐसा प्रश्न करने पर उत्तर देते हैं कि एक बादर निगोद जीवके तैजसशरीरमें विस्सोपचयसहित जितने परमाणु होते हैं उतने परमाणु वृद्धिको प्राप्त होते हैं ।

पुनः एक अन्य जीव लो जिसने इस प्रकार औदारिकशरीर और तैजसशरीरकी वृद्धि की है तथा जो कामंणशरीर विस्सोपचय पुञ्जमें एक परमाणु अधिक करके अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषायी हुआ है उसके तब अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । पुनः दो कामंण विस्सोपचय पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता है । तीन विस्सोपचय पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर चौथा अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार एकोत्तरके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे कामंण विस्सोपचय परमाणु बढ़ाने चाहिए । इस प्रकार जानकर कामंणशरीर पुञ्जमें अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र कामंणशरीर परमाणुओंकी तथा सब जीवोंसे

कम्मइयपरमाणू सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सामुवचयपरमाणू च वड्ढिदा त्ति ।
होता वि केत्तिया त्ति भणिदे एगजीवम्म जत्तिथा कम्मपरमाणू कम्मइयविस्सामुव-
चयपरमाणूपोगला च अत्थि तत्तियमेत्ता ।

तवो अण्णो जीवो पुव्वविहाणेण आगतूण खीणकसायवरिमत्तमए जहण्णबादर-
णिगोदवर्गणाए उवरि एगजीवमहियं काऊणच्छिदो । संपहि एदं ट्ठाणं पुणरुत्तं होदि;
पुव्विल्लअणंतरहेट्ठिमट्ठाणस्स ओरालिय-तेजा-कम्मइयाणं पुंजेहितो एत्थतण तेमि छपुं-
जाणं सरिसत्तुवलभादो । पुव्विल्लजीवेहितो संपहियवर्गणाए एगो जीवो अहियो त्ति
ट्ठाणमिदमपुणरुत्तमिदि किण्णवुच्चदे? ण; जीवस्स बंधणिज्जववएसाभावादो । पोगलो
हि बंधणिज्जं णाम । ण च जीवो पोगलो; अमुत्तस्स मुत्तभावविरोहादो ।

पुणो अण्णो जीवो संपहियबादरणिगोदवर्गणाए उवरि एगमोरालियसरीरविस्सा-
मुवचयपरमाणुं वड्ढावियं खीणकसायचरिमत्तमए अच्छिदो ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं
होदि । विदियपरमाणुमिह वड्ढिदे विदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । तिसु विस्सामुवचयपर-
माणुपोगलेसु वड्ढिदेसु तदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । चदुसु विस्सामुवचयपरमाणुपो-
गलेसु वड्ढिदेसु चउत्थमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं णेयव्वं जाव सव्वजीवेहि

अनन्तगुणे विस्सोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक ले जाना चाहिए । वृद्धिको प्राप्त होते
हुए कितने वृद्धिको प्राप्त होते हैं ऐसा प्रश्न करने पर कहते हैं कि एक जीवमें जितने
कर्मपरमाणु और कर्मगशरीर विस्सोपचय परमाणु पुद्गल होते हैं उतने परमाणु वृद्धिको
प्राप्त होते हैं ।

अनन्तर एक अन्य जीव लो जो पूर्व विधिसे आकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें
जघन्य बादर निगोद वर्गणाके ऊपर एक जीवको अधिक करके स्थित है । तब यह स्थान पुन-
रुक्त है, क्योंकि, पहलेके अनन्तर पिछले स्थानके औदारिक, तैजस और कर्मणशरीरोंके पुञ्जसे
यहांके उनके छह पुञ्ज सदृश उपलब्ध होते हैं ।

शंका-- पहलेके जीवोंसे सांप्रतिक वर्गणा सम्बन्धी एक जीव अधिक है इसलिए इस
स्थानको अपुनरुक्त क्यों नहीं कहते ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, जीवकी बंधनीय संज्ञा नहीं है । पुद्गलोंकी ही बंधनीय संज्ञा
है । परंतु जीव पुद्गल नहीं हो सकता, क्योंकि, अमूर्तको मूर्तरूप होनेमें विरोध आता है ।

पुनः एक अन्य जीव लो जो साम्प्रतिक बादर निगोद वर्गणाके ऊपर एक औदारिक-
शरीर विस्सोपचय परमाणुको बढाकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है तब अन्य
अपुनरुक्त स्थान होता है । दूसरे परमाणुकी वृद्धि होने पर दूसरा अपुनरुक्त स्थान होता है । तीन
विस्सोपचय परमाणु पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता है । चार विस्सो-
पचय परमाणु पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर चौथा अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार सब

✽ अ०आ०का० प्रतिष्ठा ' पोगले हि ' इति पाठः ।

✽ अ० आ० प्रत्यो; ' परमाणुं हि वड्ढाविय ' का० प्रती ' परमाणुमिहवड्ढाविय ' इति पाठः ।

अणंतगुणमेत्ता ओरालियविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गला वड्ढिदा त्ति । होंता वि ते केत्तियमेत्ता त्ति वुत्ते एगोरालियपरमाणुविस्सासुवचयमेत्ता । एवं वड्ढिदूण द्विदट्ठाणादो एग-ओरालियपरमाणुस्स विस्सासुवचयं वड्ढिदूण द्विदचरिमसमयखीणकसायट्ठाणमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । कारणं सुगमं । एवमणेण विहाणेण ओरालियसरीरवेपुंजा ताव वड्ढावेदव्वा जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्सासुवचयपरमाणू अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता ओरालियपरमाणू च वड्ढिदा त्ति । होंता वि ते केत्तिया त्ति भणिदे एगबादरणिगोदजीवस्स ओरालियसरीरमिह जत्तिया ओरालियपरमाणू तेसि विस्सासुवचयपरमाणू च अत्थि तत्तियमेत्ता । एवं तेजासरीरपुंजो कम्मइयसरीरपुंजो च सविस्सासुवचओ परिवाडोए^० वड्ढावेदव्वो जावेगबादरणिगोदजीवेण संचिदतेजा-कम्मइयसरीराणं चदुपुंजपमाणं पत्तं त्ति । एवं वड्ढिदूण द्विदो च पुणो अण्णो जीवो खीणकसायचरिमसमयजहण्णबादरणिगोदवग्गणं बेहि बादरणिगोदजीवेहि अव्वहियं कादूण खीणकसायचरिमसमए द्विदो च सरिसो; पुव्विल्ल^०ट्ठाणम्मि कमेण वड्ढिदूण द्विददव्वस्स एत्थतणदोजीवेसु उवलंभादो ।

पुव्विल्लजीवं मोत्तूण इमं घेत्तूण एदस्सुवरि पुव्वं व अण्णेगो जीवो वड्ढावेदव्वो ।

विससोपचय परमाणु पुद्गलोंकी वृद्धि होने तक ले जाना चाहिए । होते हुए भी वे कितने होते हैं ऐसा प्रश्न करने पर कहते हैं कि एक औदारिकशरीर परमाणुके विससोपचयमात्र होते हैं । इस प्रकार बढ़ाकर स्थित हुए स्थानसे एक औदारिक परमाणुके विससोपचयको बढ़ाकर स्थित हुआ अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषाय स्थान अपुनरुक्त स्थान होता है । कारण सुगम है । इस प्रकार इस विधिसे औदारिकशरीरके दो पुञ्ज तब तक बढ़ाने चाहिए जब तक सब जीवोंसे अनन्तगुणे विससोपचय परमाणु तथा अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण औदारिकशरीर सम्बन्धी परमाणु वृद्धिको नहीं प्राप्त हो जाते । ऐसा होते हुए भी वे कितने होते हैं ऐसा प्रश्न करने पर कहते हैं कि एक बादर निगोद जीवके औदारिकशरीरमें जितने औदारिकशरीरके परमाणु और उसके विससोपचय परमाणू होते हैं तन्मात्र होते हैं । इसी प्रकार एक बादर निगोद जीवके द्वारा संचित हुए तैजसशरीर और कर्मणशरीरके चार पुञ्जप्रमाण द्रव्यके प्राप्त होने तक अपने अपने विससोपचयके साथ तैजसशरीर पुञ्जको और कर्मणशरीर पुञ्जको आनुपूर्वी क्रमसे बढ़ाना चाहिए । इस प्रकार बढ़ाकर स्थित हुआ जीव तथा क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य बादरनिगोद वर्गणाके दो बादर निगोद जीवोंसे अधिक करके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित हुआ अन्य जीव समान है, क्योंकि, पूर्वोक्त स्थानमें क्रमसे बढ़ाकर स्थित हुआ द्रव्य यहाँके दो जीवोंमें उपलब्ध होता है ।

पहलेके जीवको छोड़कर तथा इसे ग्रहण कर इसके ऊपर पहलेके समान एक अन्य जीव बढ़ाना चाहिए । इस प्रकार स्थान और शास्त्रके अविरोधसे उत्तरोत्तर एक एक जीवको बढ़ाते

❖ ता० प्रती ' च विस्सासुवचओ परिवाडोए ' आ० प्रती ' विस्सासुवचयउवरि वादीए ' इति पाठः ।

❖ ता० प्रती ' द्विदो चरिमसा (च सरिसो), पुव्विल्ल- ' अ० प्रती ' द्विदो चरिमसाहि पुव्विल्ल- '

अ० का० प्रत्योः ' द्विदो चरिम० पुव्विल्ल- ' इति पाठः ।

एवमेवेगुत्तरकमेण द्वाणसमयाविरोहेण अणंताणंतकम्म-णोकम्मपरमाणुयोगलेहि जडि-
दसव्वजीवपदेसां जीवा पलिदोवमसस असंखेज्जदिभागमेत्ता वड्ढावेदव्वा । एवं वड्ढा-
विय पुणो एत्थतणअणंतजीवाणमो रालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं छ पुंजा कमेण वड्ढा-
वेदव्वा जावप्पणो सव्वुक्कस्सपमाणं पत्ता त्ति । एदिस्से चरिमसमयखीणकसायस्स
उक्कस्सबादरणिगोदवगगणाए को सामी ? जीवो गुणिदकम्मंसिया सव्वुक्कस्ससरीरो-
गाहणाए वट्टमाणो चरिमसमयखीणकसाओ सामी । एत्थ उक्कस्सवगगणाए वि आव-
लियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ चेव पुलवियाओ । असंखेज्जलोगमेत्ताओ णत्थि ।
कुदो ? साभावियादो । कत्थ पुण असंखेज्जलोगमेत्तपुलवियाओ ? मूलय-महामच्छ-
थूहल्लयादिसु । एक्केक्कपुलवियाए असंखेज्जलोगमेत्ताणि णिगोदसरीराणि एक्के-
क्कणिगोदसरीरे अणंताणंता णिगोदजीवा अत्थि । पुणो तेसु जीवेषु आवलियाए असं-
खेज्जदिभागमेत्ता चेव गुणिदकम्मंसिया । अवसेसा पुण सव्वे गुणितघोलमाणा चेव ।
एवं वड्ढिदूणच्छिद-खीणकसायचरिमसमए वड्ढी णत्थि । कुदो ? तत्थतणजीवाणं
तेसिमोरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं च सव्वुक्कस्सभाववलंभादो ।

ऐसा खीणकसायस्स चरिमसमए वट्टमाणस्स उक्कस्सबादरणिगोदवगगणा खीण-

हुए अनन्तानन्त कर्म और लोकर्म परमाणु पुद्गलोंसे व्याप्त सब जीव प्रदेश हैं जिनके ऐसे
पत्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण जीव बढ़ाने चाहिए । इस प्रकार बढ़ाकर पुनः यहांके अनन्त
जीवोंके औदारिक, तैजस और कर्मणशरीरोंके क्रमसे छह पुञ्च अपने सर्वोत्कृष्ट प्रमाणको
प्राप्त होने तक बढ़ाने चाहिए ।

शंका-अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषाय जीवके यह जो उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणा होती
है इसका स्वामी कौन जीव है ?

समाधान-जो गुणित कर्मांशिक है और सबसे उत्कृष्ट शरीर अवगाहनासे युक्त है ऐसा
अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषाय जीव उक्त उत्कृष्ट वर्गणाका स्वामी है ।

यहां पर उत्कृष्ट वर्गणाकी पुलवियाँ आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होती हैं,
असंख्यात लोकप्रमाण नहीं होती; क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

शंका-असंख्यात लोकप्रमाण पुलवियाँ कहाँ पर होती हैं ?

समाधान-मूली, महामत्स्य, थूहर और लतादिकार्यें होती हैं ।

एक एक पुलवीमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीर होते हैं और एक एक निगोद
शरीरमें अनन्तानन्त निगोद जीव होते हैं । परन्तु उक्त जीवोंमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण
जीव गुणितकर्मांशिक होते हैं तथा बाकीके सब जीव गुणितघोलमान होते हैं ।

इस प्रकार बढ़ाकर स्थित हुए क्षीणकषायके अन्तिम समयमें और वृद्धि नहीं होती; क्योंकि,
वहाँ स्थित हुए जीवोंके औदारिक, तैजस और कर्मणशरीर सर्वोत्कृष्ट भावको प्राप्त हो गये हैं ।

यह अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषायके उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणा क्षीणकषायके साथ

☼ ता० प्रती 'जणिदसव्वजीवपदेसा' इति पाठः । ♠ अ० आ० का० प्रतिषु 'कथं पुण' इति

पाठः । ☼ ता० प्रती 'एक्केक्कपुलवियासु संखेज्जलोगमेत्ताणि' इति पाठः ।

♣ ता० का० प्रत्योः 'वड्ढिदूण छिद-' इति पाठः ।

कसाएण सह घेत्तव्वा; एगबंधणवद्धत्तादो । खीणकसाओ अणिगोदो कथं बादरणि-
गोदो होदि ? ण, पाधणपदेण तस्स वि बादरणिगोदवगगणाभावेण विरोहाभावादो ।
एदमेगं फड्डयं होदि ।

संपहि बिदियफड्डयपरुवणं कस्सामो । तं जहा - अण्णो जीवो सव्वपयत्तेण
खविदकम्मंसियलवखणं काऊण सव्वजहण्णोरालियसरीरोगाहणाए खीणकसायदुचरि-
मसमए अच्छिदो । एवमच्छिदस्स आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाओ एक्के-
विकस्से पुलवियाए असंखेज्जलोगमेत्ताणि णिगोदसरीराणि होति । एत्थ संपहि खवि-
दकम्मंसियलवखणेणागदजीवा आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव अत्थि । अवसेसा
पुण सव्वे खविदघोलमाणा चेव । कुदो ? खविदकिरियाए एक्कम्हि समए सुट्ठ
जदि जीवा बहुआ होति तो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव होति त्ति णिय-
मुवलंभादो । एदेसिमणंताणं जीवाणमोरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणुपोग्गले तेसिम-
णंताणंतविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गले च घेत्तूण बिदियफड्डयस्स आदो होदि । कुदो ?
पढमफड्डयं पेक्खिदूण अणंताणि ट्टाणाणि अतरिदूणुप्पणत्तादो ।

एत्थ दोणं फड्डयाणमंतरपमाणपरुवणं कस्सामो । तं जहा - खीणकसायचरि-
मसमयसव्वजहण्णबादरणिगोदवगगणजीवेहिंतो तस्सेव चरिमसमयउक्कस्सबादरणि-
गोदवगगण । पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवेहि अब्भहिया । कुदो एदं णव्वदे?

ग्रहण करनी चाहिये, क्योंकि, वह एक बन्धनबद्ध है ।

शका - क्षीणकषाय जीव निगोदपर्यायरूप नहीं है, इसलिए वह बादर निगोद कैसे हो
सकता है ?

समाधान - नहीं, क्योंकि, प्राधान्यपदकी अपेक्षा उसे भी बादर निगोद वर्गणा होनेमें
कोई विरोध नहीं आता ।

यह एक स्वर्धक है ।

अब दूसरे स्पर्धकका कथन करते हैं यथा—अन्य जीव सब प्रकारके प्रयत्नसे क्षपित
कर्मांशिक त्रिधिको करके सबसे जघन्य औदारिक शरीरकी अवगाहना द्वारा क्षीणकषायके
द्विचरम समयमें स्थित हुआ । इस प्रकार स्थित हुए इस जीवके आवलिके असंख्यातवें भाग
मात्र पुलवियां होती हैं । एक एक पुलविमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोद शरीर होते हैं । यहाँ
क्षपित कर्मांशिक त्रिधिसे आए हुए जीव आवलिके असंख्यातवें भाग मात्र ही होते हैं, बाकीके
सब जीव क्षपित घोलमान ही होते हैं; क्योंकि, एक समयमें क्षपित क्रिया करनेवाले यदि बहुत
जीव होते हैं तो आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं, इस प्रकारका नियम पाया जाता
है । इन अनन्त जीवोंके औदारिक, तैजस और कामेण परमाणु पुद्गलोंकी तथा उनके
अनन्तानन्त विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंकी ग्रहण करके स्पर्धकका प्रारम्भ होता है;
क्योंकि, प्रथम स्पर्धकको देखते हुए अनन्त स्थानोंके अन्तरालसे इसकी उत्पत्ति हुई है ।

यहाँ दोनों स्पर्धकोंके अन्तरप्रमाणका कथन करते हैं यथा-क्षीणकषायके अन्तिम समयमें
सबसे जघन्य बादर निगोद वर्गणाके जीवोंसे उसीके अन्तिम समयमें उत्कृष्ट बादर निगोद
वर्गणाके जीव पत्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक होते हैं ।

अविरुद्धाश्चिरियवयणादो । पुणो एदे जीवे अणंताणंतकम्म-णोकम्मपोग्गलेहि उच्चिये अवणिय पुध द्दुविदे अवणिदसेसो जहण्णबादरणिगोदवग्गणापमाणं होदि । पुणो खीण-कसायचरिमसमयजहण्णबादरणिगोदवग्गणजीवेहिंतो तस्सेव दुचरिमसमयजहण्ण-बादरणिगोदवग्गणजीवा विसेसाहिया । केत्तिप्रमेते ण? खीणकसायचरिमसमयजहण्ण-बादरणिगोदवग्गणजीवेसु अणंताणंतेसु पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खडिदेसु एय-खंडमेत्तेण । तम्मि एगखंडे विदियंफड्डयादो अवणिदे उभयत्थ सेसजीवपमाणं सरिसं होवि । संपहि चरिमसमए अवणिदजीवेहिंतो दुचरिमसमए अवणिदजीवा अणंतगुणा । कुदो ? चरिमवग्गणजीवाणमसंखेज्जदिभागे दुचरिमविसेसे सव्वजीवरातिस्स अणंत-पढमवग्गमूलवलंभादो । जेण पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवसहिदचरिमविसे-सादो दुचरिमसमयत्थखीणकसायविसेसो अणंतगुणो तेण तत्थ विसेसे असंखेज्जलो-मेत्तसरोराणि । एक्केक्कम्हि सरोरे द्विदअणंताणंतजीवा अत्थि । एदेसु चरिमविसेस-जीवेसु अवणिदेसु जं सेसं तमणंताणि सव्वजीवरातिपढमवग्गमूलाणि होदि । एत्तिय-मंतरिय उप्पणत्तादो विदियं फड्डयं जादं । जदि अंतरं णत्थि तो एगं चेव* फड्डयं होज्ज; कमवड्ढिदंसादो । एवं फड्डयंतरं जीवाणं चेव ण बादरणिगोदद्वानाणं; तेसि

शंका-यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-अविरुद्धभाषी आचार्योंके वचनसे जाना जाता है ।

पुनः अनन्तानन्त कर्म और नोकर्म पुद्गलोंसे उपचित हुए इन जीवोंको अलग करके पृथक् स्थापित करनेपर अलग करनेसे जो शेष बचता है वह जघन्य बादर निगोद वर्गणाका प्रमाण होता है ।

पुनः क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य बादरनिगोद द्रव्यवर्गणाके जीवोंसे उसीके द्विचरम समयमें जघन्य बादर निगोद द्रव्यवर्गणाके जीव विशेष अधिक होते हैं । कितने विशेष अधिक होते हैं ? क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य बादर निगोद वर्गणाके अनन्तानन्त-जीवोंमें पत्योपमके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर जो एक भाग लब्ध आवे उतने विशेष अधिक होते हैं । इस एक भागको दूसरे स्पर्धकमेंसे घटा देनेपर उभयत्र शेष जीवोंका प्रमाण समान होता है । यहाँ चरम समयमें घटाए हुए जीवोंके द्विचरम समयमें घटाये हुए जीव अनन्तगुणो होते हैं; क्योंकि, चरम वर्गणाके जीवोंसे असंख्यातवें भागप्रमाण द्विचरम विशेषमें सब जीव-राशिके अनन्त प्रथम वर्गमूल उपलब्ध होते हैं । यतः पत्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण जीवोंसे युक्त अन्तिम विशेषसे द्विचरमसमय सम्बन्धी क्षीणकषायका विशेष अनन्तगुणा होता है, इसलिए उस विशेषमें असंख्यात लोकमात्र शरीर होते हैं । तथा एक एक शरीरमें अनन्तानन्त जीव स्थित होते हैं । इनमेंसे चरमविशेष जीवोंके घटा देनेपर जो शेष रहता है वह सब जीवराशिके अनन्त प्रथम वर्गमूल प्रमाण होता है । इतने अन्तरसे उत्पन्न होनेके कारण द्वितीय स्पर्धक हुआ है । यदि अन्तर नहीं मानें तो एक ही स्पर्धक होवे, क्योंकि, कमवृद्धि देखी जाती है । यह स्पर्धकों का अन्तर जीवोंका ही होता है, बादर निगोद स्थानोंका नहीं, क्योंकि, जघन्य स्थानसे लेकर

❖ अ० आ० का० प्रतिष्ठा 'प्रमाणसरिसं' इति पाठः । ❖ ता० अ० प्रत्योः 'एवं चेव' इति पाठः ।

जहण्णट्ठाणप्पट्ठि जावुक्कस्स ठाणे त्ति णिरंतरं वड्ढिदाणमेगं फह्यं मोत्तूण फह्यंतर-
भावादो । भावे वा ध्रुवसुण्णवगगणाओ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ बहुवीयो
वा होति । ण च एदं ; तहाणुवलंभादो । तम्हा दुचरिमजहण्णवगगणा चरिमुक्कस्स-
वगगणादो असंखेज्जगुणहीणा त्ति तत्थ चेवेदिस्से अंतवभावो वत्तव्वो ।

संपहि खीणकसायचरिमखवगं मोत्तूण इमं खीणकसायदुचरिमसमयखवगं घेतूण पुणो
एत्थतणसव्वजीवाणमोरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं छप्पुंजे पुथ पुथ द्विविय ट्ठाणपरू-
वणं सेवीयवक्खाणाइरियपरूविदं वत्तइस्सामो । तं जहा-अण्णो जीवो खविदकम्मंसिय-
लवखणेण आगंतूण खीणकसायदुचरिमसमए एगेगोरालियसरीरविस्ससुवचयपरमाणु-
णा अब्भहियं कादूण अच्छिदो ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । बेविस्ससुवचयपरमा-
णुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु बिदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । तिसु विस्ससुवचयपरमाणुपोग्गलेसु
वड्ढिदेसु तदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । चदुसु विस्ससुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढि-
देसु चउत्थमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं पढमफड्डयमिह वड्ढाविदकममवहारिय
वड्ढावेदव्वं जाव सव्वजहण्णोरालियसरीरपरमाणू अप्पणो उक्कस्सविस्ससुवचयप-
माणं पत्ता त्ति । पुणो सव्वजहण्णतेजासरीरपरमाणूणं विस्ससुवचया एवं चेव वड्ढा-
वेदव्वं जाव अप्पणो उक्कस्सविस्ससुवचयपमाणं पत्ता त्ति । पुणो जहण्णकम्मइय-

उत्कृष्ट स्थान तक निरन्तर वृद्धिको प्राप्त हुए उनका एक स्पर्धकको छोड़कर स्पष्टकान्तर नहीं
होता । यदि दूसरे स्पर्धकका सद्भाव माना जाय तो ध्रुवशून्यवर्गणायें आवलिके असंख्यातवें
भागप्रमाण या बहुत प्राप्त होती हैं । परन्तु ऐसा है नहीं ; क्योंकि, इस प्रकारकी उपलब्धि नहीं
होती । इसलिए द्विचरम जघन्य वर्गणा अन्तिम उत्कृष्ट वर्गणासे असंख्यातगुणी हीन होती है,
अतः उसीमें इसका अन्तर्भाव कहना चाहिए ।

अब क्षीणकषायके अन्तिम समयवर्ती क्षपकको छोड़कर क्षीणकषायके द्विचरम समयवर्ती
इस क्षपकको ग्रहण करके पुनः यहां रहनेवाले सब जीवोंके औदारिक, तैजस और कार्मण-
शरीरोंके छह पुञ्जोंको पृथक् पृथक् स्थापित करके सेवीय व्याख्यानाचार्यके द्वारा कही गई
स्थानप्ररूपणाको बतलाते हैं यथा--

कोई एक अन्य जीव क्षपित कर्माक्षिक विधिसे आकर क्षीणकषायके द्विचरम समयमें
एक एक औदारिकशरीरके विस्ससोपचय परमाणुसे अधिक करके स्थित हुआ तब अन्य
अपुनरुक्त स्थान होता है । दोन विस्ससोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़ाने पर दूसरा अपुनरुक्त
स्थान होता है । तीन विस्ससोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़ाने पर तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता
है । चार विस्ससोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़ाने पर चौथा अपुनरुक्त स्थान होता है । इस
प्रकार प्रथम स्पर्धकमें बढ़ाते हुए क्रमको ध्यानमें रखकर सबसे जघन्य औदारिकशरीर परमाणु-
ओंके अपने उत्कृष्ट विस्ससोपचयके प्रमाणको प्राप्त होने तक बढ़ाना चाहिए । पुनः सबसे जघन्य
तैजसशरीर परमाणुओंके विस्ससोपचय अपने उत्कृष्ट विस्ससोपचयके प्रमाणको प्राप्त होने तक
इसी प्रकार बढ़ाने चाहिए । पुनः जघन्य कार्मणशरीर परमाणुओंके जघन्य विस्ससोपचय अपने

❖ अ० प्रती 'बहुविहो वा' इति पाठः ।

♠ मुद्रित प्रती 'अणंतगुणहीणा' इति पाठः ।

❁ अ० प्रती 'चेवेदिस्से दु अंतवभावो' इति पाठः ।

सरीरपरमाणूणं जहणविस्ससुवचया एवं चेव वड्ढावेदव्वा जावप्पणो उक्कस्सवि-
स्ससुवचयपमाणं पत्ता त्ति । एवं वड्ढाविदे खीणकसायदुच्चरिमसमयखविदकम्मंसिय-
खविदघोलमाणलक्खणेणागदसव्वजीवाणं ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणि विस्स-
सुवचएहि उक्कस्सभावं गदाणि ।

पुणो विस्ससुवचयएसु वड्ढो णत्थि त्ति अण्णो जीवो विस्ससुवचयसहिदेगोरा-
लियपरमाणुणा पुव्वत्तोरालियसरीरमव्वहियं काऊण अच्छिदो ताधे सव्वजीवेहि
अणंतगुणमेत्तद्वाणाणि अंतरिदूणेदं द्वाणमुप्पज्जवि । पुणो णिरंतरमिच्छामो त्ति एग-
परमाणुविस्ससुवचयपमाणेण पुव्वत्तोरालियसरीरपुंजादो परिहीणेण पुव्विहलविस्स-
सुवचयसहिदेएगपरमाणुणा वड्ढाविदे णिरंतरं होदूण अणमपुणरुत्तद्वाणं होदि । चरि-
मफड्डयसमुप्पण्णद्वाणाणि पेक्खिदूण पुण पुणरुत्तं । पुणो एगविस्ससुवचयपरमाणुमिह
वड्ढिदे अणमपुणरुत्तद्वाणं होदि । दोसु परमाणुसु वड्ढिदेसु विदियमपुणरुत्तद्वाणं
होदि । एवं वड्ढावेदव्वं जाव अप्पणो पुव्वमूणीकदा सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता
विस्ससुवचयपरमाणू ओरालियसरीरविस्ससुवचयएसु वड्ढिदा त्ति । पुणो पच्छा
वड्ढिदपरमाणू विस्ससुवचएहि उक्कस्सो कायव्वो । एवं कदे एत्तियाणि चेव अपुण-
रुत्तद्वाणाणि लद्धाणि होति । पुणो एदेण कमेण विस्ससुवचयसहिदमेगेगमोरालिय-
परमाणुं पवेसिय०२ वड्ढावेदव्वं जाव ओरालियसरीरपुंजमि उक्कस्सविस्ससुवचय-
सहिया अमवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता परमाणू वड्ढिदा त्ति ।

उत्कृष्ट विस्ससोपचयके प्रमाणको प्राप्त होने तक बढ़ाना चाहिए । इस प्रकार बढ़ाने पर क्षीण-
कषायके द्विचरम समय सम्बन्धी क्षपित कर्मांशिक और क्षपित घोलमान विधिसे आये हुए सब
जीवोंके औदारिक, तंजस और कार्मणशरीर अपने विस्ससोपचय रूपसे वृद्धिको प्राप्त होते हैं ।

पुनः विस्ससोपचयोंमें वृद्धि नहीं होती, इसलिए एक अन्य जीव लो जो विस्ससोपचयके
साथ औदारिकशरीरके एक परमाणुसे पूर्वोक्त औदारिकशरीरको अधिक करके स्थित है तब
सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थानोंका अन्तर देकर यह स्थान उत्पन्न होता है । पुनः निरन्तर स्थान
लाना चाहते हैं इसलिए पूर्वोक्त औदारिकशरीर पुञ्जमेंसे एक परमाणु विस्ससोपचय प्रमाणसे
होन पूर्वोक्त विस्ससोपचय सहित एक परमाणुकी वृद्धि करने पर निरन्तर रूपसे अन्य
अपुनरुत्त स्थान होता है । किन्तु अन्तिम स्पर्धकमें उत्पन्न हुए स्थानोंको देखते हुए वह पुनरुत्त
होता है । पुनः एक विस्ससोपचय परमाणुकी वृद्धि होने पर अन्य अपुनरुत्त स्थान होता है । दो
परमाणुओंकी वृद्धि होने पर दूसरा अपुनरुत्त स्थान होता है । इस प्रकार अपने अपने पहले
कम किए गए सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्ससोपचय परमाणुओंके औदारिकशरीर विस्ससोपचयोंमें
बढ़ने तक बढ़ाते जाना चाहिए । पुनः पीछे बढ़ाए हुए परमाणुओंको विस्ससोपचयोंसे
उत्कृष्ट करना चाहिए । ऐसा करने पर इतने ही अपुनरुत्त स्थान उपलब्ध होते हैं । पुनः इस
क्रमसे औदारिकशरीर पुञ्जमें उत्कृष्ट विस्ससोपचयके साथ अभव्योंसे अनन्तगुण और सिद्धोंके
अनन्तवें भागमात्र परमाणुओंकी वृद्धि होने तक विस्ससोपचय सहित एक एक औदारिकशरीर

❖ ता० प्रती ' एगपरमाणुणा वड्ढिह वड्ढिदे ' इति पाठः ।

एवं जाणिदूण छप्पि पुंजा परिवाडीए वड्ढावेदब्बा जाव चरिमसमयफड्डयए जीवाण-
मुक्कस्सट्ठाणपमाणं दुचरिमफड्डयजीवाणं छप्पंजा पत्ता त्ति । पुणो एदस्स परमाणुत्त-
रकमेण ओरालियसरीरपुंजस्सुवरि अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता
परमाणू सगविस्ससुवचयसहिदा अपुणरुत्तट्ठाणुप्पत्तिणिमित्ता वड्ढावेदब्बा । वड्ढंता
वि केत्तिया इदि वृत्ते एगबादरणिगोदजीवस्स जत्तिया विस्ससुवचयसहिदोरालियप-
रमाणू संभवन्ति तत्तियमेत्ता ।

तदो अण्णो जीवो पुव्वुत्तोरालियसरीरदब्बमेत्तेगोरालियसरीरमब्भहियं काऊण पुणो
विस्ससुवचयसहिदेगपरमाणूणा तेजासरीरमब्भहियं काऊणच्छिदो ताधे सब्बजीवेहि
अणंतगुणमेत्तट्ठाणाणि अंतरिदूण अणमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । पुणो णिरंतरमिच्छामो
त्ति इममागदपरमाणुं पण्णाए पृथ द्रविय पुणो एदस्स जत्तिया विस्ससुवचयपरमाणू
अत्थि तत्तियमेत्तविस्ससुवचयएहि ऊणतेजइयसरीरपुंजम्मि पुव्वमवणिदपरमाणुन्हि
वड्ढिदे णिरंतरं होदूण अणमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । पुणो एगविस्ससुवचयपरमाणुन्हि
वड्ढिदे अण्णेगमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । दोसु विस्ससुवचयपरमाणुसु वड्ढिदेसु बिदिय-
मपुणरुत्तट्ठाणं होदि । तिसु विस्ससुवचयपरमाणुसु वड्ढिदेसु तदियमपुणरुत्तट्ठाणं
होदि । एवं जाव सब्बजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्ससुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु
एत्तियाणि चेव अपुणरुत्तट्ठाणाणि लद्धाणि होति । पुणो एवं वड्ढावेदब्बं जाव

परमाणुको प्रवेश कराकर बढ़ाना चाहिए । इस प्रकार जानकर लहो पुञ्ज अन्तिम समयवर्ती
स्पर्धक जीवोंके उत्कृष्ट स्थान प्रमाणको द्विचरम समय सम्बन्धी स्पर्धक जीवोंके लह पुञ्ज प्राप्त
होने तक आनुपूर्वी क्रमसे बढ़ाना चाहिए । पुनः इस औदारिकशरीरके पुञ्जके ऊपर एक परमाणु
अधिकके क्रमसे अपने विस्त्रसोपचयसहित अपुनरुक्त स्थानोंको उत्पन्न करनेके लिए अभव्योसे
अनन्तगुणे और सिद्धोंके अन्तर्वे भागप्रमाण परमाणु बढ़ाने चाहिए । बढ़ाते हुए कितने
बढ़ाने चाहिए ऐसा पूछने पर कहते हैं कि एक बादर निगोद जीवके विस्त्रसोपचयसहित जितने
औदारिक परमाणु सम्भव हैं उतने बढ़ाने चाहिए ।

अनन्तर एक अन्य जीव लीजिए जो पूर्वोक्त औदारिक शरीरके द्रव्यमात्र एक औदा-
रिकशरीरको अधिक करके तथा विस्त्रसोपचय सहित एक परमाणुके द्वारा तैजसशरीरको
अधिक करके अवस्थित है तब सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थानोंका अन्तर देकर अन्य अपुनरुक्त
स्थान होता है । पुनः निरन्तर स्थान चाहते हैं इसलिए इस आये हुए परमाणुको बुद्धिके द्वारा
पृथक् स्थापित करके पुनः इसके जितने विस्त्रसोपचय परमाणु हैं उतने विस्त्रसोपचयोंसे रहित
तैजसशरीरके पुञ्जमें पहले अलग किये गये परमाणुके बढ़ाने पर निरन्तर होकर अन्य अपुनरुक्त
स्थान होता है । पुनः एक विस्त्रसोपचय परमाणुके बढ़ने पर अन्य एक अपुनरुक्त स्थान
होता है । दो विस्त्रसोपचय परमाणुओंके बढ़ने पर दूसरा अपुनरुक्त स्थान होता है । तीन
विस्त्रसोपचय परमाणुओंके बढ़ने पर तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार सब जीवोंसे
अनन्तगुणे विस्त्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़ने पर इतने ही अपुनरुक्त स्थान लब्ध होते हैं ।

अभवसिद्धि एहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता तेजापरमाणू सव्वजीवेहि अणंत--
गुणमेत्ता तेजाविस्सासुवचयपरमाणू च वड्ढिदा त्ति । वड्ढंता वि केत्तिया त्ति वुत्ते
एगवादरणिगोदस्स जीवस्स तेजासरीरमिह जत्तिया विस्सासुवचयसंजुत्ता परमाणू
अत्थि तेत्तियमेत्ता ।

पुणो अण्णो जीवो पुव्वेविहाणेणागंतूण खीणकसायदुच्चिरमसमए ओरालिय-
तेजासरीराणि पुव्वुत्तवड्ढिदवद्वेण अहियाणि काऊण पुणो कम्मइयसरीरं विस्सासुव-
चयसंजुत्तेगकम्मपरमाणुणा अवमहियं कादूणच्छिदो ताधे सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्त-
ट्टाणाणि अंतरिदूण अण्णट्टाणमुप्पज्जदि । पुणो गिरंतरमिच्छामो त्ति इममागदवि-
स्सासुवचयसहितपरमाणुं पण्णाए पुध द्विय एगपरमाणुविस्सासुवचयपरमाणेण परि-
हीणकम्मइयसरीरपुंजम्मि पुव्वमवणिदपरमाणुमिह पक्खित्ते परमाणुत्तरं होदूण अण्ण-
मपुणरुत्तट्टाणं होदि । पुणो एगकम्मइयविस्सासुवचयपरमाणुमिह वड्ढिदे अण्णमपुणरु-
त्तट्टाणं होदि । दोसु कम्मइयविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु विदियमपुण-
रुत्तट्टाणं होदि । एवं णेयव्वं जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सासुवचयपरमाणू
वड्ढिदा त्ति । ताधे एत्तियाणि चेव अपुणरुत्तट्टाणाणि लद्धाणि होति । पुणो एवमेगेग-

पुनः इस प्रकार अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण तैजसशरीरके परमाणु
और सब जीवोंसे अनन्तगुणे तैजसशरीरके विस्सोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक बढ़ाते
जाने चाहिए । इसप्रकार बढ़ाते हुए वे कितने हैं ऐसा पूछने पर कहते हैं कि एक वादर निगोद
जीवके तैजसशरीरमें जितने विस्सोपचय सहित परमाणु हैं वे उतने हैं ।

पुनः एक अन्य जीव लीजिए जो पूर्वोक्त विधिसे आकर क्षीणकषायके द्विचरम समयमें
औदारिक और तैजसशरीरको पूर्वोक्त बढ़ हुए द्रव्यसे अधिक करके तथा कर्मणशरीरको
विस्सोपचय सहित एक कर्मपरमाणुसे अधिक करके स्थित है तब सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थानों-
का अन्तर देकर अन्य स्थान उत्पन्न होता है । पुनः निरन्तर स्थान चाहते हैं इसलिए इस आये
हुए विस्सोपचय सहित एक परमाणुको बुद्धिसे अलग स्थापित करके एक परमाणु विस्सोप-
चयक प्रमाणसे हीन कर्मणशरीरके पुञ्जमें पहले निकले हुए परमाणुके मिलाने पर एक
परमाणु अधिक होकर अन्य अपुनरुत्त स्थान होता है । पुनः एक कर्मण विस्सोपचय
परमाणुके बढ़ने पर अन्य अपुनरुत्त स्थान होता है । दो कर्मण विस्सोपचय परमाणु
पुद्गलोंके बढ़ाने पर दूसरा अपुनरुत्त स्थान होता है । इस प्रकार सब जीवोंसे अनन्तगुण
विस्सोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक ले जाना चाहिए । तब इतने ही अपुनरुत्त स्थान
लब्ध होते हैं । पुनः इस प्रकार एक एक विस्सोपचयसहित कर्मपरमाणुका पुनः पुनः प्रवेश

❖ ता० प्रती 'जीवो वि पुव्वे-' इति पाठः । ❖ अ० का० प्रत्योः 'अण्णट्टाण-' इति पाठः ।

❖ ता० आ० का० प्रतिषु 'पुव्ववणिद-' इति पाठः । ❖ ता० प्रती 'परमाणुत्तरं होदूण अण्ण-
मपुणरुत्तट्टाणं होदि । दोसु' इति पाठः ।

विस्सासुवचयसहिदकम्मपरमाणुं पवेसिय प०२ णेयत्वं जाव कम्मइयसरोरपुंजम्मि
अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता कम्मपरमाणू विस्सासुवचयसहिदा
वड्ढिदा त्ति । पुणो एदे वड्ढिदपरमाणू केत्तिया? एगबादरणिगोदजीवस्स कम्मइय-
सरोरम्मि जत्तिया विस्सासुवचयसहियकम्मपरमाणू अत्थि तत्तियमेत्ता । एवं वड्ढिदूण-
च्छिदे पुणो अण्णो जीवो खविदकम्मसियलक्खणं आगंतूण खीणकसायदुचरिम-
समए बादरणिगोदजीवेण अब्भहियं काऊणच्छिदो ताधे पुणरुत्तट्ठाणं होदि; पुवं-
कमेण वड्ढाविदपरमाणूमेत्थ एगजीवम्मि उवलंभादो । पुणो एदस्सुवरि एगपरमाणु-
म्हि वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं पुवं व वड्ढावदेवं जाव अण्णगजीवस्स ओरा-
लियतेजा- कम्मइयसरोरपरमाणू सविस्सासुवचया पविट्ठा त्ति।तदो पुवंविहाणे विदियो
जीवो पवेसियव्वो । एवमेदेण कमेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता जीवा परिवा-
डीए पवेसियव्वो । णवरि खीणकसायचरिमसमए पविट्ठजीवेहिंतो दुचरिमसमए पविट्ठ-
जीवा विसेसाहिया होति । कुदो? चरिम-दुचरिमजीवविसेसाणमेत्थ दंसणादो । केत्तिय-
मेतो विसेसो? चरिमसमयविसेसस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो। एदेसु जीवेसु परमाणुत्तरकमेण
अण्णाणि वि अपुणरुत्तट्ठाणाणि छप्पुंजे अस्सिदूण उप्पादेदव्वाणि जावप्पणो उक्कस्सत्तं
पत्ताणि त्ति । एवं चिराणजीवपरमाणुपोग्गलेसु संपहि पविट्ठजीवपरमाणुपोग्गलेसु
च वड्ढिदेसु दुचरिमसमयबादरणिगोदवरगणा उक्कस्सा होदि । पुणो एत्थ आवलियाए

कराकर कर्मणशरीरके पुञ्जमें अभव्योंसे अनन्तगुणें और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र विस्सोप-
चयसहित कर्मपरमाणुओंकी वृद्धि होने तक ले जाना चाहिए । पुनः ये बड़े हुए परमाणु कितने
हैं? एक बादर निगोद जीवके कर्मणशरीरमें जितने विस्सोपचयसहित कर्मपरमाणु हैं उतने
हैं । इस प्रकार बढ़ाकर स्थित होनेपर पुनः अन्य जीव क्षपितकर्मांशिकविधिसे आकर क्षीण-
कषायके द्विचरम समयमें बादर निगोद जीवसे अधिक कर स्थित है तब पुनरुक्त स्थान होता है।
क्योंकि, पूर्व क्रमसे बढ़ाये हुए परमाणु यहाँ एक जीवमें उपलब्ध होते हैं । पुनः इसके ऊपर एक
परमाणुके बढ़ने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार अन्य एक जीवके औदारिक
तैजस और कर्मणशरीरके परमाणु अपने विस्सोपचयसहित प्रविष्ट होने तक पहलेके समान
बढ़ाना चाहिए । अनन्तर पूर्व विधिसे दूसरा जीव प्रविष्ट करना चाहिए । इस प्रकार इस क्रमसे
पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण जीव क्रमसे प्रविष्ट कराने चाहिए । इतनी विशेषता है कि क्षीण-
कषायके अन्तिम समयमें प्रविष्ट हुए जीवोंसे द्विचरम समयमें प्रविष्ट हुए जीव विशेष अधिक
होते हैं, क्योंकि, चरम और द्विचरम सम्बन्धी जीवोंका विशेष यहाँ दिखाई देता है। विशेषका
प्रमाण क्या है? अन्तिम समयमें जितना विशेष होता है उसका असंख्यातवाँ भाग यहाँ
विशेषका प्रमाण है । इन जीवोंमें एक परमाणु अधिकके क्रमसे अपने उत्कृष्ट स्थानके प्राप्त होने
तक छह पुञ्जोंका आश्रय लेकर अन्य भी अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न करने चाहिए । इस प्रकार
जीवके पुराने परमाणु पुद्गलोंमें तत्काल प्रविष्ट हुए जीव परमाणु पुद्गलोंके बढ़ाने पर द्विचरम



असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाओ । एक्केक्कस्से पुलवियाए असंखेज्जलोगमेत्तबादर-
णिगोदसरीराणि । एक्केक्कम्हि सरीरे अणंताणंतजीवा च संभवन्ति । पुणो एदेसि
जीवाणं मज्जे आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव गुणिदकम्मंसियजीवा । अवसेसा
अणंता सव्वे जीवा गुणिदघोलमाणा । एत्थ खविदकम्मंसिओ खविदघोलमाणो
वा एगो वि णत्थि; उक्कस्सदव्वम्हि तेसिमत्थित्तविरोहादो । एवमेत्तियमेत्तदव्वं
घेत्तूण विदियं जीवफड्डयमुक्कस्सं होदि ।

संपहि तदियं फड्डयं वृत्तदे । तं जहा—एगो जीवो सव्वपयत्तेण ओरालियतेजा—
कम्मइयसरीराणं खविदकम्मंसियलक्खणं काऊण खीणकसायत्तिचरिमसमए अच्छिदो
ताधे जीवेहि अंतरिदूण अण्णस्स तदियजीवफड्डयस्स आदो होदि । संपहि एत्थंतरप-
माणपरूवणं कस्सामो । तं जहा—दुचरिमसमयखीणकसायजहणबादरणिगोदवर्गणादो
तस्सेव उक्कस्सदव्ववर्गणा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तो विसेसो ? पलिदोवमस्स
असंखेज्जदिभागपमाणजीवमेत्तो । पुणो एत्थ अधियजीवमेत्ते अवणिय पुध दूविदे जं
सेसं तं दुचरिमजहणवर्गणपमाणं होदि । पुणो एदम्हादो खीणकसायत्तिचरिमसमय-
वर्गणाए विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? दुचरिमजहणवर्गणं पलिदोवमस्स
असंखेज्जदिभागोण खंडिदे तत्थ एगखंडम्मि जत्तिया जीवा अत्थि

समयकी बादरनिगोदवर्गणा उत्कृष्ट होती है । पुनः यहां आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण
पुलवियां हैं । एक एक पुलविमें असंख्यात लोकप्रमाण बादर निगोद शरीर हैं और एक एक
शरीरमें अनन्तानन्त जीव सम्भव हैं । पुनः इन जीवोंमें गुणितकर्मांशिक जीव आवलिके असं-
ख्यातवें भागप्रमाण ही हैं । बाकीके अनन्त सब जीव गुणितघोलमान हैं । यहाँ क्षपितकर्मांशिक
और क्षपितघोलमान एक भी जीव नहीं है, क्योंकि, उत्कृष्ट द्रव्यमें उनका अस्तित्व होनेमें
विरोध है । इस प्रकार मात्र इतने द्रव्यको ग्रहण कर दूसरा जीव स्पर्धक उत्कृष्ट होता है ।

अब तीसरे स्पर्धकका कथन करते हैं । यथा—एक जीव सब प्रकारके प्रयत्नसे औदारिक,
तैजस और कर्मणशरीरको क्षपितकर्मांशिकरूप करके क्षीणकषायके त्रिचरम समयमें अवस्थित
है तब जीवोंसे अन्तर होकर अन्य तृतीय जीव स्पर्धककी आदि होती है । अब यहां अन्तरके
प्रमाणका कथन करते हैं । यथा—द्विचरम समयमें क्षीणकषायकी जघन्य बादरनिगोदवर्गणासे
उसकी उत्कृष्ट द्रव्यवर्गणा विशेष अधिक होती है । विशेषका प्रमाण क्या है ? पत्यके असं-
ख्यातवें भागप्रमाण जीवोंकी जितनी संख्या है वह विशेषका प्रमाण है । पुनः यहां अधिक
जीवोंके प्रमाणको निकाल कर पृथक् स्थापित कर जो शेष रहे वह द्विचरम समयकी जघन्य
वर्गणाका प्रमाण होता है । पुनः इससे क्षीणकषायकी त्रिचरम समयकी वर्गणामें जीव विशेष
अधिक होते हैं । कितने अधिक होते हैं ? द्विचरम समयकी जघन्य वर्गणाको पत्यके असंख्यातवें
भागसे खण्डित करने पर वहां एक खण्डमें जितने जीव होते हैं, उतने अधिक होते हैं । वहां

❖ ता० प्रती 'सव्वे जीवा, गुणिदघोलमाणा' आ० प्रती 'सव्वे गुणिदघोलमाणा' इति पाठः ।

तत्तियमेत्तेण । केत्तिया पुण तत्थ जीवा अत्थि ? अणंता । कुदो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण अणंतेसु जीवेसु भागे हिंदेसु तत्थ अणंताणं चेव जीवाणमुव-
लंभादो । एत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेसु दुच्चरिमवग्गणउक्कस्सविसेसजीवेसु
अवणिदेसु सेसअणंतजीवा फडुयंतरं होदि । असंखेज्जलोगमेत्ताणि णिगोदसरीराणि ।
एक्केक्कम्हि णिगोदसरीरे अणंताणंता जीवा चउत्थअंतरे अत्थि । एत्तियमंतरिदूण
तदिफडुयस्स आदी होदि । पुणो एत्थ पुव्वविहाणेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभा-
गमेत्तजीवाणमोरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणुपोग्गला अणंताणंतविस्सामुवचयेहि सह
वड्ढावेदव्वा । एवं वड्ढिदे तदियफडुयमुक्कस्संतरं होदि । एवं चउत्थ-पंचम-छट्ठ-सत्तम-
अट्ठम-णवम-दसमादिफडुयाणमंतरपमाणं विस्सामुवचयपरमाणूणं जीवाणु च पवेसण-
विहाणं जाणिदूण ओदारेदव्वं जाव असंखेज्जगुणसेडिमरणपढमसमयो त्ति । एवं वड्ढिदू-
णच्छिदे तदो अण्णो जीवो खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण विसेसाहियमरणचरिमसमए
अच्छिदो । ताधे जीवेहि अंतरिदूण अण्णं फडुयमुप्पज्जदि । पुणो एत्थ अंतरपमाणप-
रूवणं कस्सामो । तं जहा-गुणसेडिमरणपढमसमयजहणफडुयादो तस्सेव उक्कसफडुयं-
विसेसाहियं । विसेसो पुण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता जीवा । आवलियाए
असंखेज्जदिभागमेत्तफडुएसु वड्ढिदसव्वे जीवा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता
चेव होति त्ति कुदो णव्वदे ? अविरुद्धाइरियवयणादो । तेणेत्थ विसेसे एगणिगोद-

कितने जीव हैं? अनन्त जीव है, क्योंकि, पल्यके असंख्यातवें भागका अनन्त जीवोंमें भाग देने पर वहां अनन्त जीव उपलब्ध होते हैं । यहाँ पर पल्यके असंख्यातवें भागमात्र द्विचरम वर्गणाके उत्कृष्ट विशेष जीवोंके निकाल देने पर शेष अनन्त जीव प्रमाण स्पर्धकका अन्तर होता है । निगोद शरीर असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं और एक एक निगोद शरीरमें अनन्तानन्त जीव चौथे अन्तरमें होते हैं । इतना अन्तर देकर तीसरे स्पर्धककी आदि होती है । पुनः यहाँ पूर्व विधिके अनुसार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण जीवोंके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरके परमाणु पुद्गल अनन्तानन्त विस्सोपचयोंके साथ बढ़ाने चाहिए । इस प्रकार बढ़ाने पर तीसरे स्पर्धकका उत्कृष्ट अन्तर होता है । इस प्रकार चौथे, पांचवें, छठे, सातवें, आठवें, नौवें और दसवें आदि स्पर्धकोंके अन्तर प्रमाणको तथा विस्सोपचयसहित परमाणु और जीवोंकी प्रवेश-विधिकी जानकर असंख्यात गुणश्रेणि मरणके प्रथम समयके प्राप्त होने तक उतारना चाहिए । इस प्रकार बढ़ाकर स्थित होने पर तब अन्य जीव क्षपितकर्मांशिक विधिसे आकर विशेषाधिक मरणके अन्तिम समयमें स्थित है तब जीवोंसे अन्तर होकर अन्य स्पर्धक उत्पन्न होता है । पुनः यहाँ अन्तर प्रमाणका कथन करते हैं । यथा-गुणश्रेणिमरणके प्रथम समयके जघन्य स्पर्धकसे उसीका उत्कृष्ट स्पर्धक विशेष अधिक है । विशेष पल्यके असंख्यातवें भागमात्र जीव प्रमाण है ।

शका-आवलिके असंख्यातवें भागमात्र स्पर्धकोंमें बढे हुए सब जीव पल्यके असंख्यातवें भागमात्र ही होते हैं यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान-अविरुद्ध आचार्योंके वचनसे जाना जाता है ।

इसलिए यहाँ पर विशेषमें एक निगोद शरीर भी नहीं है । इस अविक द्रव्यको अलग

सरीरं पि णत्थि । एदमधियदव्वमवणिय पुध ढुवेयव्वं । असंखेज्जगुणसेडिमरणपढम-
समयजहण्णफड्डयादो विसेसाहियमरणचरिमसमयजहण्णफड्डयं विसेसाहियं । केत्तिय-
मेत्तेण ? गुणसेडिमरणपढमसमयजहण्णफड्डयं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडि-
देगखंडमेत्तेण । एदम्हादो पुव्विल्लपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवेसु अवणिदेसु
जं सेसं तं फड्डयंतरं होदि । तत्थ अंतरे असंखेज्जलोगमेत्तणिगोदसरीराणि । एक्के-
वक्कम्हि णिगोदसरीरे अणंताणंता जीवा च अत्थि । पुणो एत्तियमेत्तमंतरिदूण
विसेसाहियमरणचरिमसमयजहण्णफड्डयस्स आदी होदि ।

पुणो एत्थतणछप्पुंजा पुव्विल्लछप्पुंजेहितो असंखेज्जगुणहीणा त्ति कट्ठ परमाणुतर-
कमेण वड्ढावेदव्वा जाव गुणसेडिमरणपढमसमए फड्डयस्स उक्कस्सपमाणं पत्ता त्ति ।
पुणो एदस्सुवरि एगोरालियविस्सासुवचयपरमाणुम्हि वड्ढिदे अणमपुणरुत्तट्ठाणं होदि ।
दोसु परमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु तदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवमेगुत्तरकमेण ताव
वड्ढावेयव्वं जाव खविदकम्मंसियलक्खणेणागदजीवेगपरमाणुस्स विस्सासुवचय-
पुंजस्स पमाणं वड्ढिदे त्ति । एवं वड्ढिदूणच्छिदे तदो अणो जीवो पुव्वविहाणेणागंतूण
विस्सासुवचयसंजुत्तेगपरमाणुणा ओरालियसरीरमव्वहियं काऊण विसेसाहियमरण —
चरिमसमए अच्छिदो ताधे सांतरट्ठाणमण्णमुप्पज्जदि । पुणो णिरंतरट्ठाणे इच्छिज्जमाण

करके पृथक् स्थापित करना चाहिए । असंख्यात गुणश्रेणिमरणके प्रथम समयके जघन्य स्पर्धकसे
विशेष अधिक मरणके अन्तिम समयका जघन्य स्पर्धक विशेष अधिक है । कितना अधिक है ?
गुणश्रेणि मरणके प्रथम समयके जघन्य स्पर्धकको पत्यके असंख्यातवें भागसे खण्डित करने पर
जो एक खण्ड लब्ध आवे उतना अधिक है । इसमेंसे पहलेके पत्यके असंख्यातवें भागमात्र
जीवोंके अलग कर देने पर जो शेष रहता है वह स्पर्धकका अन्तर होता है । उस अन्तरमें
असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीर होते हैं और एक एक निगोदशरीरमें अनन्तानन्त जीव
होते हैं । पुनः इतना मात्र अन्तर देकर विशेष अधिक मरणके अन्तिम समयके जघन्य स्पर्धककी
आदि होती है ।

पुनः यहांके छह पुञ्ज पहलेके छह पुञ्जोंसे असंख्यातगुणे हीन होते हैं ऐसा समझ कर
गुणश्रेणिमरणके प्रथम समयमें उत्कृष्ट प्रमाणके प्राप्त होने तक एक परमाणु अधिकके क्रमसे
बढ़ाना चाहिए । पुनः इसके ऊपर एक औदारिकशरीर विस्सोपचय परमाणु बढ़ने पर अन्य
अपुनरुक्त स्थान होता है । दो परमाणु पुद्गलोंके बढ़ने पर तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता है ।
इस प्रकार क्षपित कर्मांशिक विधिसे आये हुए जीवके एक परमाणुके विस्सोपचय पुञ्जके प्रमाण
तक वृद्धि होने तक एक अधिकके क्रमसे बढ़ाना चाहिए । इस प्रकार बढ़ाकर स्थित होने पर
तब अन्य जीव पूर्व विधिसे आकर विस्सोपचयसहित एक परमाणुमे औदारिकशरीरको अधिक
करके विशेष अधिक मरणके अन्तिम समयमें स्थित है तब अन्य सान्तर स्थान उत्पन्न होता है ।
पुनः निरन्तर अध्वान इच्छित होने पर एक परमाणु विस्सोपचय प्रमाणसे न्यून अवस्थाम
विस्सोपचयसंयुक्त एक परमाणुकी वृद्धि होने पर निरन्तर होकर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता

एगपरमाणुविस्सासुवचयपरमाणेणूणावस्थाए विस्सासुवचयसंजुत्तेगपरमाणुम्हि वड्ढिदे
 णिरंतरं होदूण अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । पुणो अण्णेगोरालियविस्सासुवचयपरमाणु-
 म्हि वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवमेगेगविस्सासुवचयपरमाणू वड्ढावेदव्वा जाव
 सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सासुवचयपरमाणू वड्ढिदा त्ति । एवं वड्ढिदे एत्ति-
 य गि चेव अपुणरुत्तट्ठाणाणि सेचीयादो लद्धाणि होति । एवमणेण विहाणेण विस्सासु-
 वचयसहियएगेगपरमाणू वड्ढावेदव्वा जाव एगबादरणिगोदजीवस्स ओरालियसरी-
 रम्हि जत्तिया ओरालियसरीरविस्सासुवचयसहियपरमाणू अत्थि तत्तियमेत्ता वड्ढिदा
 त्ति । एवं वड्ढिदे पुणो तेजा-कम्मइयपरमाणू विस्सासुवचयसहिया वड्ढावेदव्वा । पुणो
 पुव्वविहाणेणेगो जीवो पवेसियव्वो । एवं जाव पल्लिवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता
 जीवा वड्ढावेदव्वा । पुणो सव्वेसि जीवाणं परमाणुपोगगलेसु विस्सासुवचय० पर-
 माणुपोगगलेसु वड्ढिदेसु विस्सासहियमरणचरिमसमयउक्कस्सफड्डयं । पुणो एत्थ आव-
 लियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाओ एक्केक्कपुलवियाए असंखेज्जलोगमेत्तणि-
 गोदसरीराणि । एक्केक्कम्मि णिगोदसरीरे अणंतानंतजीवा । एक्केक्कस्स जीवस्स
 ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरपरमाणू (सविस्सासुवचय) सव्वजीवेहि अणंतगु-
 णमेत्ता अत्थि । एत्तियमेत्तदव्वं घेत्तूण विस्सासहियमरणचरिमसमयफड्डयं होदि ।
 एवमोदारिदे आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तफड्डयाणि लद्धाणि होति ।
 सपहि एत्तो हेट्ठा ओदारिज्जमाणे एगं चेव फड्डयं होदि । कुदो ?
विस्सासहियमरणचरिमफड्डएण सह सयंभूरमणदीवस्स सयंपहणंगिदस्स

है । पुनः अन्य एक औदारिकशरीर विस्सासोपचय परमाणुकी वृद्धि होने पर अन्य अपुनरुत्त
 स्थान होता है । इस प्रकार सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्सासोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने पर
 एक एक विस्सासोपचय परमाणु बढ़ाना चाहिए । इस प्रकार वृद्धि होने पर सेचीयरूपसे इतने
 ही अपुनरुत्त स्थान लब्ध होते हैं । इस प्रकार एक बादर निगोद जीवके औदारिकशरीरमें
 जितने औदारिकशरीरके विस्सासोपचयसहित परमाणु हैं उतने मात्र वृद्धि होने तक विस्सासोप-
 चयसहित एक एक परमाणु बढ़ाना चाहिए । इस प्रकार वृद्धि होने पर पुनः तैजसशरीर और
 कामंणशरीरके परमाणु विस्सासोपचयसहित बढ़ाने चाहिए । पुनः पूर्व विधिसे एक जीवका
 प्रवेश कराना चाहिए । इस प्रकार पत्थके असंख्यातवें भागमात्र जीव बढ़ाने चाहिए ।
 पुनः सब जीवोंके परमाणु पुद्गलोंके विस्सासोपचयसहित बढ़ने पर विशेष अधिक मरणके अन्तिम
 समयमें उत्कृष्ट स्पर्धक होता है । पुनः यहां आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियां
 हैं । एक एक पुलविमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीर हैं । एक एक निगोद-
 शरीरमें अन्तावन्त जीव हैं और एक एक जीवके औदारिक, तैजस और कामंणशरीरके
 परमाणु विस्सासोपचयसहित सब जीवोंसे अनन्तगुणे हैं । इतने मात्र द्रव्यको ग्रहण कर
 विशेष अधिक मरणके अन्तिम समयका स्पर्धक होता है । इस प्रकार उतारने पर
 आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्पर्धक लब्ध होते हैं । अब इससे नीचे उतारने पर
 एक ही स्पर्धक होता है, क्योंकि, विशेष अधिक मरणके अन्तिम स्पर्धकके साथ स्वयंभू-
 रमण द्वीपके स्वयंप्रभ नगेन्द्रकी वात्स्य दिशामें कर्मभूमिके प्रतिभागमें मूल, धूवर और

बाहिरदिसाए कम्मभूमिपडिभागम्मि मूलयथूहल्लयादिसु सरिसबादरणिगोदवर्गणाए
 हीणाए अहियाए च उवलंभादो । पुणो एदोए सरिसवर्गणं चेतूण तत्थ मूलयथूह-
 ल्लयादिसु एगोरालियविस्सासुवचयपरमाणुम्मि वड्डिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । दोसु
 वड्डिदेसु विवियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवमणंतानंतेसु विस्सासुवचयपरमाणुपुग्गलेसु
 वड्डिदेसु पुव्वविहाणेण तदो एगोरालियपरमाणू सविस्सासुवचय० वड्डावेदव्वो । एवं
 ताव वड्डावेदव्वं जाव विस्सासुवचयसहिदा ओरालियसरीरपरमाणू अभवसिद्धिएहि
 अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता त्ति । पुणो एदेणेव कमेण अणंतानंतविस्सासुवचय-
 सहिदा अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता तेजापरमाणू वड्डा-
 वेदव्वो । पुणो पुव्वविहाणेण कम्मइयसरीरपुंजम्मि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्सासु-
 वचयसहिया अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता कम्मपरमाणू वड्डा-
 वेदव्वो । पुणो पुव्वविहाणेण एगो जीवो पवेसियव्वो । पुणो तस्सेव ओरालिय-तेजा कम्म-
 इयसरीराणि वड्डावेदव्वानि । एवं वड्डाविज्जमाणे अणंतानंतबादरणिगोदजीवेसु
 पविट्ठेसु एगणिगोदसाधारणसरीरं पविसदि । असंखेज्जलोगमेत्तसरीरेसु पविट्ठेसु एगा
 पुलविया पविसदि । पुणो विस्सासुवचयसहियअभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंत-
 भागमेत्तोरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणुपुग्गलेसु वड्डिदेसु एगो जीवो पविसदि । एवम-
 णंतानंतजीवेसु पविट्ठेसु एगं साधारणसरीरं पविसदि । एवमसंखेज्जलोगणिगोद-

लता आदिकमें सदृश बादरनिगोदवर्गणा हीन और अधिक उपलब्ध होती है । पुनः इसके सदृश
 वर्गणाको ग्रहण कर वहां मूल, धूवर और आद्रक आदिकमें एक औदारिक विस्सोपचय
 परमाणु बढ़ने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । दो परमाणुओंके बढ़ने पर दूसरा अपुनरुक्त
 स्थान होता है । इस प्रकार अनन्तानन्त विस्सोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़ने पर पूर्व विधिसे
 अनन्तर एक औदारिक परमाणु विस्सोपचयसहित बढ़ाना चाहिए । इस प्रकार विस्सोपचय-
 सहित औदारिकशरीर परमाणु अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र होने
 तक बढ़ाने चाहिए । पुनः इसी क्रमसे अनन्तानन्त विस्सोपचयसहित अभव्योंसे अनन्तगुणे और
 सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र तैजसशरीर परमाणु बढ़ाने चाहिए । पुनः पूर्व विधिसे कर्मशरीर
 पुञ्जमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्सोपचयसहित अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें
 भागमात्र कर्मपरमाणु बढ़ाने चाहिए । इस प्रकार पूर्व विधिसे एक जीव प्रविष्ट कराना
 चाहिए । पुनः उसीके औदारिक, तैजस और कर्मणशरीर बढ़ाने चाहिए । इस प्रकार बढ़ाने
 पर अनन्तानन्त बादर निगोद जीवोंके प्रविष्ट होने पर एक निगोद साधारणशरीर प्रविष्ट होता
 है । असंख्यात लोकमात्र शरीरोंके प्रविष्ट होने पर एक पुलवी प्रविष्ट होती है । पुनः विस्सोपचय
 सहित अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र औदारिक, तैजस और कर्मणशरीर
 परमाणु पुद्गलोंके बढ़ने पर एक जीव प्रविष्ट होता है । इस प्रकार अनन्तानन्त जीवोंके
 प्रविष्ट होने पर एक साधारणशरीर प्रविष्ट होता है । इस प्रकार असंख्यात लोकप्रमाण निगोद



अ० का० प्रत्योः 'ओरालियसरीरपरमाणू अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता

तेजापरमाणू इति ३४३ ।

सरीरेसु पविट्ठेसु विद्या पुलविया पविसदि। एवं तदिय-चउत्थ-पंचमादि जाव जगसेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियासु वड्डिदासु कम्मभूमिपडिभागसयंभूरमणदीवस्स मूलय-सरीरे जगसेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाओ एगबंधणवड्डाओ घेतूण उक्कस्स-बादरणिगोदवर्गणा होदि । जहण्णादो पुण उक्कस्सबादरणिगोदवर्गणा असंखेज्ज-गुणा । को गुणगारो? जगसेडीए असंखेज्जदिभागो । के वि आइरिया गुणगारो पुण आवलियाए असंखेज्जदिभागो होदि त्ति भणंति, तण्ण घड्डे । कुदो? बादरणिगो-दवर्गणाए उक्कस्सियाए सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं त्ति एदेण चूलिया-सुत्तेण सह विरोहादो । ण च सुत्तविरुद्धमाइरियवयणं पमाणं होदि; अइप्पसंगादो । णिगोदसद्दो पुलवियाणं वाचओ त्ति घेतूण एसा परूवणा परूविदा । संपहि बादर-णिगोदवर्गणाए जहणियाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं त्ति एदस्स चूलियासुत्तस्स के वि आइरिया वक्खाणमेवं कुणंति । जहा-णिगोदाणमिदि वुत्ते घणावलियाए असंखेज्जदिभागो गुणगारो होदि त्ति घेतव्वो । पत्तेयसरीरउक्कस्स-वर्गणं घणावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे जहणिया बादरणिगोदवर्गणाए होदि त्ति भणिवं होदि? एवं वक्खाणं ण घड्डे; सुहुमणिगोदवर्गणा जहणियाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं इदि एत्थ वि घणावलियाए असंखे-ज्जदिभागेण उक्कस्सबादरणिगोदवर्गणाए गुणिदाए जहणसुहुमणिगोदवर्ग-

शरीरोंके प्रविष्ट होने पर दूसरी पुलवी प्रविष्ट होती है। इस प्रकार तीसरी, चौथी और पाँचवीं आदिसे लेकर जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंकी वृद्धि होने पर कर्मभूमि प्रतिभाग स्वयंभूरमण द्वीपकी मूलिके शरीरमें एक बन्धनवद्ध जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियों-को ग्रहण कर उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणा होती है। अपनी जघन्यसे उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणा असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। कितने ही आचार्य गुणकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है ऐसा कहते हैं परन्तु वह घटित नहीं होता क्योंकि, उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणामें निगोदोंका (पुलवियोंका) प्रमाण जगश्रेणिके असंख्यातवें भागमात्र है इस चूलिकासूत्रके साथ विरोध आता है। और सूत्रविरुद्ध आचार्योंका वचन प्रमाण नहीं हो सकता, क्योंकि, ऐसा होने पर अतिप्रसंग दोष आता है। निगोद शब्द पुलवियोंका वाचक है ऐसा ग्रहण करके यह प्ररूपणा की गई है। अब 'बादरणिगोदव-र्गणाए जहणियाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं' इस चूलिकासूत्रका कितने ही आचार्य इस प्रकार व्याख्यान करते हैं। यथा- 'णिगोदाणं' ऐसा कहने पर उसका अर्थ 'निगोद जीव' लेते हैं, पुलवियां नहीं। 'आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो' ऐसा कहने पर घनावलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार होता है ऐसा ग्रहण करते हैं। प्रत्येकशरीर उत्कृष्ट वर्गणाको घनावलिके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर जघन्य बादरनिगोदवर्गणा होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। किन्तु यह व्याख्यान घटित नहीं होता, क्योंकि, 'सुहुमणिगोदवर्गणाए जहणियाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं' यहां भी घनावलिके असंख्यातवें भागसे उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणाके गुणित करने पर जघन्य

णुत्पत्तिप्पसंगादो । ण च एवं; अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो गुणगारो त्ति आइरिय-
परंपरागदुवदेसबलेण सिद्धत्तादो । अथवा आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो
णिगोदाणं इदि एत्थतण्णिगोदसद्दो अंडराणमावासयाणं वा वाचओ त्ति घेतव्वो;
उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणाए असंखेज्जलोगमेत्तपुलवियाओ एगबंधणबद्धाओ अत्थि
त्ति वक्खानण्णहाणुववत्तीदो । ण च रस-रुहिर-मांससरुवंडराणं खंधावयवाणं तत्तो
पुधभावेण अवट्ठाणमत्थि जेणेगवखंधे अणेगबंधणबद्धाणमसंखेज्जलोगमेत्तपुलवियाण
संभवो होज्ज तेणेसो चेवत्थो पहाणो त्ति घेतव्वो । एदम्मि अत्थे घेप्पमाणे अकसाय-
गुणसेडिमरणद्धाए वृत्तगुणगारो ण विरुज्जमदे; असंखेज्जगुणकमेण मदावसिद्ध-
आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिगोदेसु वि असंखेज्जलोगमेत्तपुलवियाणमुव-
लंभादो । एवमेसा एगुणवोसदिमा वर्गणा परुविदा ॥ १६ ॥

बादरणिगोदववग्गणाणमुवरि ध्रुवसुण्णदव्ववग्गणा णामं ॥ ६४

उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणाए उवरि एगरुवे पविखत्ते तदियाए ध्रुवसुण्णवग्गणाए
सव्वजहणिया ध्रुवसुण्णवग्गणा होदि । पुणो एदिस्से उवरि पदेसुत्तरकमेण सव्व-
जीवेहि अणंतगुणमेत्तमद्धाणं गंतूण तदियध्रुवसुण्णवग्गणाए सव्वउक्कस्सवग्गणा होदि ।

सूक्ष्मनिगोदवर्गणाकी उत्पत्तिका प्रसंग आता है । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि गुणकार अङ्गुलके
असंख्यातवें भागप्रमाण है ऐसा आचार्य परम्परासे आये हुए उपदेशके बलसे सिद्ध है अथवा
'आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं' इस प्रकार यहां पर निगोद शब्द अण्डरों और
आवाराकोंका वाचक लेना चाहिए, क्योंकि, ऐसा ग्रहण किये बिना उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणामें
एक बन्धनबद्ध असंख्यात लोकमात्र पुलवियाँ पाई जाती हैं यह व्याख्यान नहीं बन सकती है ।
और स्कन्धोंके अवयवस्वरूप रस, रुधिर तथा मांसरूप अण्डरोंका उससे पृथक् रूपसे अवस्थान
पाया नहीं जाता जिससे एक स्कन्धमें अनेक बन्धनबद्ध असंख्यात लोकप्रमाण पुलवियोंकी
सम्भावना होवे; इसलिए यही अर्थ प्रधान है ऐसा ग्रहणा करना चाहिए । इस अर्थके ग्रहण करने
पर अकषाय गुणश्रेणि मरण कालका उक्त गुणकार विरोधको नहीं प्राप्त होता है, क्योंकि, असं-
ख्यात गुणित क्रमसे मृत जीवोंसे अवशिष्ट रहे आनलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निगोदोंमें भी
असंख्यात लोकप्रमाण पुलवियाँ उल्लब्ध होती हैं । इस प्रकार यह उल्लोसवीं वर्गणा कही गई है ।

बादरनिगोदवर्गणाओंके ऊपर ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणा होती है ॥ ६४ ॥

उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणामें एक अंकके मिलाने पर तीसरी ध्रुवशून्यवर्गणाकी सबसे
जघन्य ध्रुवशून्यवर्गणा होती है । पुनः इसके ऊपर प्रदेश अधिकके क्रमसे सब जीवोंमें अनन्तगुण
स्थान जाकर तीसरी ध्रुवशून्यवर्गणाकी सबसे उत्कृष्ट वर्गणा होती है । अपनी जघन्यसे

⊙ ता० प्रती 'मधा (दा) व सिद्ध' अ० आ० प्रत्योः मधावसिद्ध' इति पाठः । ☼ ता० प्रती
'वग्गणा (णमुवरि ध्रुवसुण्णदव्ववग्गणा) णाम' अ० का० प्रत्योः '—वग्गणाणमुवरि ध्रुवसुण्ण णाम' आ० प्रती
'वग्गणाणमुवरि ध्रुवसुण्णवग्गणा णाम' इति पाठः ।

सगजहण्णादो सगुक्कस्सवगणा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अंगुलस्स असं-
खेज्जविभागो । उक्कस्सबादरणिगोदवगणाए सेडीए असंखेज्जविभागमेत्ताओ पुल-
वियाओ । जहणसुहुमणिगोदवगणाए आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्त पुलवियाओ ।
तदो उक्कस्सबादरणिगोदवगणादो हेट्ठा❀ सुहुमणिगोदजहणवगणाए अंतरेण विणा
होदव्व मिदि ? एत्थ परिहारो वच्चदे-बादरणिगोद उक्कस्सवगणाए सेडीए असं-
खेज्जविभागमेत्त पुलवियासु द्विदजीवेहिंतो सुहुमणिगोदजहणवगणाए आवलियाए असं-
खेज्जविभागमेत्त पुलवियासु द्विदजीवा असंखेज्जगुणा । कुदो ? बादरणिगोदवगणा-
सरीरेहिंतो सुहुमणिगोदवगणासरीराणमंगुलस्स❀ असंखेज्जविभागमेत्तगुणगारव-
लंभादो तत्थतणजीवेहिंतो एत्थतणजीवाणं गुणगारस्स अंगुलस्स असंखेज्जविभाग-
मेत्तसुवलंभादो वा । ण च एत्थ बाह्यमत्थि साहयंत पुण अंगुलस्स असंखेज्जवि-
भागमेत्तगुणगारस्स अण्णहाणुववत्तीदो । एवमेत्ता बीसदिमा वगणा २० परूविदा ।

धुवसुण्णदव्ववगणाणमुवरि सुहुमणिगोदवगणा णाम ॥ ९५ ॥

उक्कस्सधुवसुण्णदव्ववगणाए उवरि एगरुवे पक्खिस्से सव्वजहणिया सुहुम-
णिगोददव्ववगणा णाम होदि । सा पुण जले वा थले वा आगासे वा दिस्सदि;
उत्कृष्ट वर्गणा असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है? अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण
गुणकार है ।

शका-उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणामें जगश्चेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियां होती
हैं । जवन्य सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियां होती हैं । इसलिए
उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणासे नीचे सूक्ष्मनिगोद जवन्य वर्गणा अन्तरके बिना होनी चाहिए?

समाधान-यहां उक्त शंकाका परिहार करते हैं-- बादर निगोद उत्कृष्ट वर्गणाको
जगश्चेणिके असंख्यातवें भागमात्र पुलवियोंमें स्थित जीवोंसे सूक्ष्म निगोद जवन्य वर्गणाको
आवलिके असंख्यातवें भागमात्र पुलवियोंमें स्थित जीव असंख्यातगुणे होते हैं, क्योंकि बादर
निगोदवर्गणाके शरीरोंसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके शरीरोंका गुणकार अङ्गुलके असंख्यातवें भाग-
प्रमाण पाया जाता है । अथवा वहां रहनेवाले जीवोंसे यहां रहनेवाले जीवोंका गुणकार अङ्गुलके
असंख्यातवें भागप्रमाण उपलब्ध होता है । और यहां इसका कोई बाधक भी नहीं है, किन्तु
साधक ही है, अन्यथा अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार नहीं बन सकता है । इस प्रकार
यह बीसवीं वर्गणा कही ।

ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर सूक्ष्मनिगोदवर्गणा होती है ॥ ९५ ॥

उत्कृष्ट ध्रुवशून्यवर्गणामे एक अंकके मिलाने पर सूक्ष्मनिगोदद्रव्यवर्गणा होती है । वह
जलमें, स्थलमें और आकाशमें सर्वत्र दिखलाई देती है, क्योंकि बादरनिगोदवर्गणाके समान

❀ अ० प्रती 'अंगुलस्स असंखेज्जविभागो । उक्कस्सबादरणिगोदवगणादो हेट्ठा' इति पाठः ।

❀ अ० प्रती 'सेडीए असंखेज्जविभागमेत्तपुलवियासु द्विदजीवेहिंतो सुहुमणिगोदवगणासरीराणमंगुलस्स' इति पाठः ।

बादरणिगोदवग्गणाए व एदिस्से देसणियमाभावादो । णवरि एसा सव्वजहणिया सुहुमणिगोदवग्गणा खविदकम्मंसियलक्खणेण खविदघोलमाणलक्खणेण च आगदाणं चेव सुहुमणिगोदजीवाणं होदि ण अण्णेसि; तत्थ दव्वस्स जहणत्तविरोहादो । एत्थ वि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाओ । एक्केक्कस्से पुलवियाए असंखेज्ज-लोगमेत्तणिगोदसरीराणि । एक्केक्कम्हि णिगोदसरीरे अणंतानंतजीवा अत्थि । तेसु जीवेसु खविदकम्मंसियलक्खणेणागदजीवा आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्त चेव । अवसेसा सव्वे खविदघोलमाणा । एदेसिमणंतानंतजीवाणमोरालिय-तेजा-कम्मइय-सरीराणं कम्मणोकम्मविस्सासुवचयपरमाणुपोगले घेतूण सव्वजहणिया सुहुमणिगोदवग्गणा होदि ।

संघि एदिस्से परुवणं कस्समो । तं जहा-ओरालियसरीरम्हि एगविस्सासुव-चयपरमाणुम्हि वड्ढिदे विदियमपुणरुत्तद्वाणं होदि । एवमेगेगविस्सासुवचयपरमाणू वड्ढावेदव्वा जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तद्वाणाणि लद्धूण सव्वजीवाणमोरालिय-सरीराणि विस्सासुवचयेण उक्कस्साणि जादाणि त्ति । पुणो तेसि चेव जीवाणं तेजा-सरीराणमुवरि एगेगविस्सासुवचयपरमाणू वड्ढावेदव्वा जाव सव्वजीवेहि अणंतगुण-मेत्तद्वाणाणि लद्धूण विस्सासुवचयेण तेसि जीवाणं तेजासरीराणि उक्कस्साणि जादाणि त्ति । पुणो तेसि चेव जीवाणं कम्मइयसरीरेसु एगेगविस्सासुवचयपरमाणू वड्ढावेदव्वा जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तद्वाणाणि लद्धूण विस्सासुवचयेण तेसि कम्मइयसरीराणि उक्कस्साणि जादाणि त्ति । तदो अण्णस्स जीवस्स एदेसिमोरालिय-सरीराणमुवरि विस्सासुवचयेण सह वड्ढिदेगपरमाणुस्स सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्त -

इसका देशनियम नहीं है । इतनी विशेषता है कि यह सबसे जघन्य सूक्ष्मनिगोदवर्गणा क्षपित कर्मांशिकविधिसे और क्षपितघोलमानविधिसे आये हुए सूक्ष्म निगोद जीवोंके ही होती हैं, अन्यके नहीं, क्योंकि, वहां जघन्य द्रव्यके होनेमें विरोध है । यहां भी आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियां होती हैं एक एक पुलविमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीर होते हैं और एक एक निगोदशरीरमें अनन्तानन्त जीव होते हैं । उन जीवोंमें क्षपितकर्मांशिक लक्षणमे आये हुए जीव आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं । शेष सब जीव क्षपितघोलमान होते हैं । इन अनन्तानन्त जीवोंके औदारिक, तैजस और कर्मणशरीरोंके कर्म, नोकर्म और विस्सोपचय परमाणु पुद्गलोंको ग्रहण कर सबसे जघन्य सूक्ष्मनिगोदवर्गणा होती है ।

अब इसका कथन करते हैं । यथा-औदारिकशरीरमें एक विस्सोपचय परमाणुके बढ़ने पर दूसरा अपुनरुत्त स्थान होता है । इस प्रकार सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान प्राप्त कर सब जीवोंके औदारिकशरीर विस्सोपचयके द्वारा उत्कृष्ट होने तक एक एक विस्सोपचय परमाणु बढ़ाना चाहिए । पुनः उन्हीं जीवोंके तैजसशरीरोंके ऊपर सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान प्राप्त कर विस्सोपचयके द्वारा उन जीवोंके तैजसशरीर उत्कृष्ट होने तक एक एक विस्सोपचय परमाणु बढ़ाना चाहिए । पुनः उन्हीं जीवोंके कर्मणशरीरोंके ऊपर सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान प्राप्त कर विस्सोपचयके द्वारा उनके कर्मणशरीरोंके उत्कृष्ट होने तक एक एक विस्सोपचय परमाणु बढ़ाना चाहिए । अनन्तर इन औदारिकशरीरोंके ऊपर विस्सोपचयके

ट्टाणाणि अंतरिदूणेदमणं ट्टाणं मृप्यज्जदि । पुणो निरंतरमिच्छामो त्ति इमं विस्सासु-
वचयसहिदएयोरालियपरमाणुं पण्णाए पुध द्रविय पुणो एगपरमाणुविस्सासुवचयमे-
त्तेण परिहीणपुव्विल्लोरालियसरीरपुंजम्हि पुव्वमवणिदपरमाणुम्हि पविस्सत्ते एगपरमा-
णुत्तरं ॥ होदूण अणमपुणरुत्तट्टाणं होदि । पुणो एगविस्सासुवचयपरमाणुम्हि वड्ढिदे
अणमपुणरुत्तट्टाणं होदि । विदियविस्सा० विदियमपुण० । तदियविस्सासु० तदियमपु-
णरुत्तट्टाणं होदि । एवमेगेत्तरकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तओरालियसरीरविस्सा-
सुवचयपरमाणुपोगगलेसु वड्ढिदेसु एत्तियाणि चेव अपुणरुत्तट्टाणाणि लब्भंति । एवं
बादरणिगोदवगगणवड्ढावणविहाणेण ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरेसु विस्सासुवचयस-
हिदअभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तपरमाणुपोगगलेसु वड्ढिदेसु एगो
सुहुमणिगोदजीवो पवेसियव्वो । एवं बादरणिगोदवगगणवड्ढाविदविहाणेण अणंतानंत-
सुहुमणिगोदजीवेसु पविट्ठेसु एगं साहारणं णिगोदसरीरं पविसदि । एवपसंखेज्जलोग-
मेत्तणिगोदसरीरेसु पविट्ठेसु एगा पुलविया पविसदि । एवं आवलियाए असंखेज्जदि-
भागमेत्तपुलवियासु वड्ढिदासु जले थले वा ॥ सुहुमणिगोदवगगणा सत्थानुक्कस्सा होदि ।
पुणो एदीए सुहुमणिगोदवगगणाए सह महामच्छसरीरे सुहुमणिगोदवगगणा सरिसा
लब्भदि । पुणो पुव्विल्लसुहुमणिगोदवगगणं मोत्तूण एदीए सरिसमहामच्छसरीरसुहुम-

साथ बढ़े हुए एक परमाणुसे युक्त अन्य जीवके सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थानोंका अन्तर देकर
यह अन्य स्थान उत्पन्न होता है । पुनः निरन्तर स्थान इच्छित हैं इसलिए इस विस्त्रसोपचयसहित
एक औदारिक परमाणुको बुद्धिके द्वारा पृथक् स्थापित करके पुनः एक परमाणु विस्त्रसोपचय-
मात्रसे हीन पहलेके औदारिकशरीर पुञ्जमें पहले निकाले हुए परमाणुके मिला देने पर एक
परमाणु अधिक होकर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । पुनः एक विस्त्रसोपचय परमाणुकी वृद्धि
होने पर अन्य अपुनरुक्त होता है । दूसरे विस्त्रसोपचय परमाणुके बढ़ने पर दूसरा
अपुनरुक्त स्थान होता है । तीसरे विस्त्रसोपचय परमाणुके बढ़ने पर तीसरा अपुनरुक्त स्थान
होता है । इस प्रकार एक एक परमाणु अधिकके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे औदारिकशरीर
विस्त्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़ने पर इतने ही अपुनरुक्त स्थान होते हैं । इस प्रकार बादर
निगोद वर्गणाकी बढ़ानेकी विधिके अनुसार औदारिक, तैजस और कामणशरीरोंके विस्त्रसोप-
चयसहित अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र परमाणु पुद्गलोंके बढ़ने
पर एक सूक्ष्म निगोद जीवको प्रविष्ट करना चाहिए । इस प्रकार बादरनिगोदवर्गणाके बढ़ानेकी
विधिके अनुसार अनन्तानन्त सूक्ष्म निगोद जीवोंके प्रविष्ट होने पर एक साधारण निगोदशरीर
प्रविष्ट होता है । इस प्रकार असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीरोंके प्रविष्ट होने पर एक पुलवी
प्रविष्ट होती है । इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंके बढ़ने पर जलमें
व स्थलमें सूक्ष्मनिगोदवर्गणा स्वस्थान उत्कृष्ट होती है । पुनः इस सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके साथ महा-
मत्स्यके शरीरमें सूक्ष्मनिगोदवर्गणा समान लब्ध होती है । पुनः पहलेकी सूक्ष्मनिगोद

❁ ता० प्रती '—मण्णहा ट्टाण—' इति पाठः ।

♠ ता० आ० का० प्रतिष्ठा 'पविस्सत्तेपरमा-

णुत्तरं इति पाठः । ॥ ता० प्रती एवं (गं) साहारण—' अ० का० प्रत्योः 'एवं साहारण—' इति पाठः ।

☼ ता० आ० का० प्रतिष्ठा 'जले वा' इति पाठः ।

णिगोदवग्गणं धेत्तूण पुणो एदिस्से उवरि पुब्बविहाणेण आवलियाए असंखेज्जदिभाग-
मेत्तपुलवियासु वड्ढिदासु महामच्छसरीरे छणं जीवणिकायाणमेगबंधनबद्धाणं संघादे
उक्कस्सिया सुहुमणिगोदवग्गणा दिस्सदि । संपहि एत्थ आवलियाए असंखेज्जदि-
भागमेत्तपुलवियाओ । एक्केक्किस्से पुलवियाए असंखेज्जलोगमेत्तणिगोदसरीरे अणं-
ताणंता जीवा च अत्थि । संपहि एत्थ गुणिदकम्मंसियलवखणेणागदजीवा आवलियाए
असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव होंति । सेससव्वजीवा गुणिदघोलमाणा । कुदो साभा-
वियादो । संपहि जहणसुहुमणिगोदवग्गणप्पहुडि जाव सुहुमणिगोदुक्कस्सवग्गणे ति
ताव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तणिरंतरट्ठाणाणि लद्धूण एगं चेव फड्डयं होवि; अंत-
राभावादो संपहि । एत्थतणासेसजीवाणमोरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरकम्मणोकम्म-
विस्सासुवचयसहिदसव्वपरमाणूं धेत्तूण सुहुमणिगोदउक्कस्सवग्गणा होवि । जहण्णादो
उक्कस्सा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एवमेसा
एक्कवीसदिमा वग्गणा । २१ । परूविदा ।

सुहुमणिगोददव्ववग्गणाणमुवरि ध्रुवसुण्णदव्ववग्गणा णाम ॥ ९६ ॥

उक्कस्ससुहुमणिगोददव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते चउत्थोए ध्रुवसुण्णवग्ग-
णाए सव्वजहणवग्गणा होदि । तदो रूवत्तरकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तद्वाणं ♠

वर्गणाको छोड़कर इसके समान महामत्स्यके शरीरकी सूक्ष्मनिगोदवर्गणाको ग्रहण कर पुनः
इसके ऊपर पूर्व विधिके अनुसार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंकी वृद्धि होने पर
महामत्स्यके शरीरमें एक बन्धनबद्ध छह जीव निकायोंके संघातमें उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणा
दिखलाई देती है । यहां आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियां हैं और एक एक
पुलविके असंख्यात लोकप्रमाण निगोद शरीरमें अनन्तानन्त जीव हैं । यहां गुणित कर्मांशिक
लक्षणसे आये हुए जीव आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं शेष सब जीव गुणित
घोलमान होते हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । अब जघन्य सूक्ष्मनिगोदवर्गणासे लेकर उत्कृष्ट
सूक्ष्मनिगोदवर्गणा पर्यन्त सब जीवोंसे अनन्तगुणे निरन्तर स्थान प्राप्त होकर एक ही स्पर्धक
होता है, क्योंकि, मध्यमें कोई अन्तर नहीं है । अब यहांके समस्त जीवोंके औदारिक, तैजस
और कामर्णशरीरके कर्म और नोकर्म विस्सोपचयसहित सब परमाणुओंको ग्रहण करके उत्कृष्ट
सूक्ष्मनिगोदवर्गणा होती है । यहां जघन्य वर्गणासे उत्कृष्ट वर्गणा असंख्यातगुणी है । गुणकार
क्या है? पत्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इस प्रकार यह इक्कीसवीं वर्गणा कही ।

सूक्ष्मनिगोदद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणा होती है ॥ ९६ ॥

उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदद्रव्यवर्गणामें एक अङ्कके मिलाने पर चौथी ध्रुवशून्यवर्गणाकी
सबसे जघन्य वर्गणा होती है । अनन्तर एक अधिकके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान

गंतूण ध्रुवसुण्णद्ववर्गणा उक्कस्सा होदि । जहण्णादो उक्कस्सा असंखेज्जगुणा ।
को गुणगारो ? जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ जगसेडीओ । एवमेसा
बावीसदिमा २२ वर्गणा परूविदा ।

ध्रुवसुण्णवर्गणाणमुवरि महाखंधद्ववर्गणा णाम ॥ ९७ ॥

उक्कस्सध्रुवसुण्णद्ववर्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते सव्वजहणिया महाखंधद्व-
वर्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तमद्वाणं गंतूण उक्क-
स्सिया महाखंधद्ववर्गणा होदि । जहण्णादो उक्कस्सा विसेसाहिया । केत्तियमेतो
विसेसो ? सव्वजहणमहाखंधवर्गणाए पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण अव-
हिरिदाए जं भागं लद्धं तत्तियमेतो विसेसो । एत्थव्वज्जंतीओ गाहाओ । तं जहा--

अणुसंखासंखेज्जा तधणंता वर्गणा अगेज्जाओ ।

आहार-तेज-भासा-मण-कम्मइय-ध्रुवखंधा ॥ ७ ॥

सांतरणिरंतरेदरमुण्णा पत्तेयदेह ध्रुवसुण्णा ।

बादरणिगोदमुण्णा सुहुमा सुण्णा महाखंधो ॥ ८ ॥

अणु संखा संखगुणा परित्तवर्गणमसंखलोगगुणं ।

गुणगारो पंचणं अग्गहणाणं अभव्वणंतगुणो ॥ ९ ॥

आहारतेजभासा मणेण कम्मेण वर्गणाण भवे ।

उक्कस्सस्स विसेसो अभव्वजीवेहि अधियो दु ॥ १० ॥

जाकर उत्कृष्ट ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणा होती है । यह जघन्यसे उत्कृष्ट असंख्यातगुणी है । गुणकार
क्या है ? जगप्रतरका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो कि असंख्यात जगश्चेणिप्रमाण है । इस
प्रकार यह बाईसवीं वर्गणा कही ।

ध्रुवशून्यवर्गणाओंके ऊपर महास्कन्धद्रव्यवर्गणा होती है ॥ ९७ ॥

उत्कृष्ट ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणामें एक अङ्कके मिलाने पर सबसे जघन्य महास्कन्ध द्रव्य-
वर्गणा होती है । अनन्तर एक अधिकके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान जाकर उत्कृष्ट
महास्कन्धद्रव्यवर्गणा होती है । यह जघन्यसे उत्कृष्ट विशेष अधिक है । विशेषका प्रमाण कितना
है ? सबसे जघन्य महास्कन्ध वर्गणामें प्रत्येक असंख्यातवें भागका भाग देने पर जो लब्ध आवे
उतना विशेषका प्रमाण है । यहां उपयोगी पड़नेवाली गाथायें । यथा--

अणुवर्गणा, संख्याताणुवर्गणा, असंख्याताणुवर्गणा, अनन्ताणुवर्गणा, आहारवर्गणा,
अग्राह्यवर्गणा, तेजसवर्गणा, अग्राह्यवर्गणा, भाषावर्गणा, अग्राह्यवर्गणा, मनोवर्गणा, अग्राह्य-
वर्गणा, कार्मणवर्गणा, ध्रुवस्कन्धवर्गणा, सांतरनिरन्तरवर्गणा, शून्यवर्गणा, प्रत्येकशरीरवर्गणा
ध्रुवशून्यवर्गणा, बादरनिगोदवर्गणा, शून्यवर्गणा, सूक्ष्मनिगोदवर्गणा, शून्यवर्गणा और महा-
स्कन्धवर्गणा ॥ ७-८ ॥ इनमें अणुवर्गणा एक है । संख्याताणुवर्गणा संख्यातगुणी है । असं-
ख्याताणुवर्गणा असंख्यातलोकगुणी है । अनन्ताणुवर्गणासहित पाँच अग्राह्यवर्गणाओंका गुणकार
अभव्योंसे अनन्तगुणा है ॥ ९ ॥ आहारवर्गणा, तेजसवर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणा और
कार्मणवर्गणामें अभव्योंसे अनन्तागुणे जीवोंका भाग देने पर जो लब्ध आवे उतना जघन्यसे उत्कृष्ट

❖ अ० प्रती वर्गणा असंखेज्जा' इति पाठः । ❖ अ० का० प्रत्योः 'अग्गहणाणामभव्वणंतगुणो'
इति पाठः ।

ध्रुवखंधसांतराणं ध्रुवसुणस्स य हवेज्ज गुणगारो ।
जीवेहि अणंतगुणो जहणियादो दु उक्कस्से ॥ ११ ॥
पल्लासंखेज्जदिमो भागो पत्तेयदेहगुणगारो ।
सुण्णो अणंता लोमा थूलणिगोदे पुणो वोच्छं ॥ १२ ॥
सेडिअसंखेज्जदिमो भागो सुणस्स अंगुलस्सेव ।
पलिदोवमस्स सुहुमे पदरस्स गुणो दु सुणस्स ॥ १३ ॥
एदेसि गुणगारो जहणियादो दु जागा उक्कस्से ।
साहिअमिह महखंधेऽसंखेज्जदिमो दु पल्लस्स ॥ १४ ॥

एसा एमसेडिवग्गणपरुवणा कदा ।

संपहि णाणासेडिवग्गणपरुवणं वत्तइस्सामो । तं जहा-परमाणुपोग्गलवग्गण-
प्पहुडि जाव सांतरणिरंतरवग्गणाए उक्कस्सवग्गणे त्ति ताव एदासि वग्गणाणं सरिस-
धणियवग्गणाओ अणंतपोग्गलवग्गमूलमेत्तीओ होंति । पुणो पत्तेयसरीरवद्भवग्गणाओ
जहणियाओ खविदकम्मंसियलवक्खणेणागदअजोगिचरिमसमए वट्टमाणकाले चत्तारि
होंति । उक्कस्सियाओ गुणिककम्मंसियलवक्खणेणागदअजोगिचरिमसमए दोण्णि होंति ।
मज्झिमाओ अट्ठ लब्धंति । सव्वक्कस्सियाओ पुण पयत्तेसरीरवग्गणाओ वल्लरिदाहे
महावणदाहे देवकदच्छुए वा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ लब्धंति । वट्टमाण-
काले अजहणअणुक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाओ असंखेज्जलोगमेत्तीओ लब्धंति । बादर-
लानेके लिए विशेषका प्रमाण है ॥ १० ॥ ध्रुवस्कन्धवर्गणा, सान्तरनिरन्तरवर्गणा और प्रथम
ध्रुवशून्यवर्गणामें अपने जघन्यसे उत्कृष्टका प्रमाण लानेके लिए गुणकारका प्रमाण सब जीवोंसे
अनन्तगुणा है ॥ ११ ॥ प्रत्येकशरीरवर्गणाका गुणकार पत्यका असंख्यातवां भाग है । दूसरी
ध्रुवशून्यवर्गणामें गुणकार अनन्त लोक है । स्थूलनिगोद वर्गणाका गुणकार आगे कहते हैं ॥ १२ ॥
इसका गुणकार जमश्रेणिका असंख्यातवां भाग है । तीसरी शून्यवर्गणाका गुणकार अङ्गुलका
असंख्यातवां भाग है । सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें गुणकार पत्यका असंख्यातवां भाग है । चौथी
शून्यवर्गणाका गुणकार जगप्रतरका असंख्यातवां भाग है ॥ १३ ॥ इन सब वर्गणाओंके ये
गुणकार अपने जघन्यसे उत्कृष्ट भेद लानेके लिए जानने चाहिए । तथा महास्कन्धमें अपने
जघन्यसे अपना उत्कृष्ट पत्यका असंख्यातवां भाग अधिक है ॥ १४ ॥

इस प्रकार यह एकश्रेणिवर्गणाकी प्ररूपणा की ।

अब नानाश्रेणिवर्गणाकी प्ररूपणा करते हैं । यथा-परमाणु पुद्गल वर्गणासे लेकर सान्तर
निरन्तरवर्गणाकी उत्कृष्ट वर्गणा तक इन वर्गणाओंकी सदृशधनवाली वर्गणायें अनन्त पुद्गल
वर्गमूलमात्र होती हैं । पुनः जघन्य प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणायें क्षपितकर्मांशिक लक्षणसे आय
हुए अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें वर्तमान कालमें चार होती हैं । तथा उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर
द्रव्यवर्गणायें गुणितकर्मांशिक लक्षणसे आये हुए अयोगिकेवलीके अन्तिम समयमें दो होती
हैं । मध्यम प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणायें आठ प्राप्त होती हैं । सर्वोत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाय
वल्लरीदाहके समय, महावनदाहके समय या देवकृत झाडीमें पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण
प्राप्त होती हैं । वर्तमान कालमें अजघन्य अनुत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणायें असंख्यात लोकप्रमाण

णिगोदवग्गणाओ खीणकसायचरिमसमए जहणियाओ चत्तारि उक्कस्सियाओ दोणिमज्झिमाओ अट्ठ लब्धंति । ओघुक्कस्सियाओ पुण मूलयथूहल्लयादिसु पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ लब्धंति । सव्वुक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाओ सरिसधणियाओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तीयो । बादरणिगोदवग्गणाओ सव्वुक्कस्सियाओ जगपदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ होति त्ति जं भणिदं तमुवरि भण्णमाणजवमज्झपरूवणाए सह विरुज्झदे, तत्थ पत्तेयबादरसुहुमणिगोदवग्गणाओ सरिसधणियाओ जहण्णेण उक्कस्सेण य आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ चेव सव्वत्थ होति त्ति परूविदत्तादो । एत्थ उव्वेसं लद्धूण णिण्णओ कायव्वो ।

महामच्छा सयंभूरमणसमुद्दे वट्टमाणकाले जेण पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता दीसंति तेणूक्कस्सबादरणिगोदवग्गणाए सरिसधणियवग्गणाओ पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ होति त्ति? ण, सव्वमहामच्छेसु उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणा होदि त्ति णियमाभावादो पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तगुणितकम्मंसियाणमभावादो च । गुणितकम्मंसिया एगसमयमिह उक्कस्सेण जेणावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव तेण सरिसधणियवग्गणाओ उक्कस्सट्ठाणे आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ चेवे त्ति घेत्तव्वं । अभवसिद्धिपपाओगजहणट्ठाणे वि खविदकम्मंसियलक्खणेणागदजीवा

प्राप्त होती हैं । बादरनिगोदवर्गणायें क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य चार, उत्कृष्ट दो और मध्यम आठ प्राप्त होती हैं । ओष उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणाएँ मूलक, धूवर और लता आदिकमें जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण प्राप्त होती हैं । सदृश धनवाली सबसे उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणायें पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । सबसे उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणायें जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हैं ऐसा जो कहा है वह आगे कही जानेवाली यव-मध्यपरूपणाके साथ विरोधको प्राप्त होता है, क्योंकि, वहां पर प्रत्येकशरीरवर्गणायें, बादरनिगोदवर्गणायें और सूक्ष्मनिगोदवर्गणायें सर्वत्र जघन्य और उत्कृष्ट आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होती हैं ऐसा कथन किया है सो इस विषयमें उपदेशको प्राप्त करके निर्णय करना चाहिए ।

शंका—स्वयंभूरमण समुद्रमें वर्तमान कालमें यतः जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण महामत्स्य दिखलाई देते हैं, अतः उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणाकी सदृश धनवाली वर्गणायें जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, सब महामत्स्योंमें उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणा होती है ऐसा नियम नहीं है तथा जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणितकर्मांशिक जीवोंका अभाव है, इसलिए भी जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणायें नहीं हो सकतीं । यतः एक समयमें गुणितकर्मांशिक जीव उत्कृष्टरूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं अतः उत्कृष्ट सदृश धनवाली वर्गणायें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होती हैं ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए ।

अभव्यप्रायोग्य जघन्य स्थानमें भी क्षणितकर्मांशिक लक्षणसे आये हुए जीव आवलिके

आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव । तदो जवमज्जपरूवणाए भणिदुवदेसो पहाणो ति घेतव्वो । अजहणमणुक्कस्सबादरणिगोदवर्गणाओ वट्टमाणकाले असंखेज्जलोग-मेत्ताओ लब्धंति । सव्वजहण्णासुहुमणिगोदसरिसधणियवर्गणाओ जले थले आगासे वा आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ होंति । उक्कस्सियाओ पुण सरिसधणियसुहुम-णिगोदवर्गणाओ वट्टमाणकाले आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ होंतीओ महा-मच्छसरीरेसु दिस्संति । अजहणमणुक्कस्ससुहुमणिगोदवर्गणाओ वट्टमाणकाले असं-खेज्जलोगमेत्तीयो होंति । महाखंधववर्गणा पुण वट्टमाणकाले एया चेव महाखंधो णाम । भवणविमाणट्टपुढविमेरुकुलसेलादीणमेगीभावोमहाखंधो । असंखेज्जजोयणाणि अंतरिदूण द्विदाणं कथमेयसं ? ण, एयबंधणवद्धसुहुमेहि पोग्गलक्खंधेहि समवेदान-मंतराभावादो । एसा णाणासेडोए परूवणा कदा । एवं वर्गणापरूवणा समत्ता (१)

वर्गणाणिरूपणिदाए इमा एयपदेसियपरमाणुपोग्गलववर्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥ ९८ ॥

एदं पुच्छासुत्तं । एत्थ ण परमाणुग्रहणं कायव्वं; परमसुहुमत्ताविणाभावि-एयपदेसियग्रहणेणेव तस्स सिद्धोदो ? ण एस दोसो; जेण सव्वाओ वर्गणाओ

असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं । इसलिये यवमध्यपरूपणामें कहा गया उपदेश प्रधान है ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए । अजघन्य अनुत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणाए वर्तमान कालमें असंख्यात लोकप्रमाण उपलब्ध होती हैं । सबसे जघन्य सूक्ष्मनिगोद सदृश धनवाली वर्गणाए जल, स्थल और आकाशमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हैं । परन्तु उत्कृष्ट सदृश धनवाली सूक्ष्मनिगोदवर्गणाए वर्तमान कालमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हुई महामत्स्यके शरीरमें दिखलाई देती हैं । अजघन्य अनुत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणाए वर्तमान कालमें असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं । परन्तु महास्कन्ध वर्गणा वर्तमान कालमें एक ही महास्कन्ध नामवाली होती है ।

शंका- असंख्यात योजनोंका अन्तर देकर स्थित हुए पुद्गलोंका एकत्व कैसे हो सकता है ?

समाधान- नहीं, क्योंकि एकबन्धनवद्ध सूक्ष्म पुद्गलस्कन्धोंसे समवेत पुद्गलोंका अन्तर नहीं पाया जाता ।

यह नानाश्रेणिकी अपेक्षा प्ररूपणा की ।

इस प्रकार वर्गणाप्ररूपणा समाप्त हुई ।

वर्गणानिरूपणाकी अपेक्षा एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या भवेसे होती है, क्या संग्रातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥ ९८ ॥

यह पृच्छासूत्र है ।

शंका- यहाँ परमाणु पदका ग्रहण नहीं करना चाहिए, क्योंकि परम सूक्ष्मत्वके अविनाभावी एकप्रदेशी पदके ग्रहणसे ही उसकी सिद्धि हो जाती है ?

❖ ता० प्रती 'होंति' (ती) अ० आ० का० प्रतिषु: 'होंति' इति पाठः । ☞ ता० प्रती 'एत्थतण' (एत्थ तव ण) परमाणु- अ० आ० का० प्रतिषु 'एत्थतण परमाणु-' इति पाठः ।

परमाणुपोगल्लेहितो चेवृप्पणाओ तेण सव्वासि वर्गणणं परमाणुपोगल्लदव्ववर्गणा त्ति सण्णा । तिससे वर्गणाए एयादिपदेसा जेण विसेसणं तेण दोणं पि गहणं काय-व्वमिदि । खंधाणं विहडणं भेदो णाम । परमाणुपोगल्लसमुदयसमागमो संघादो णाम । भेदं गंतूण पुणो समागमो भेदसंघादो णाम । संपहि एसा एयपदेसियपरमाणुपोगल्ल-दव्ववर्गणा किं भेदेण उत्पज्जवि आहो संघादेण किं वा भेदसंघादेणे त्ति पुच्छा कदा होदि । तण्णिच्छयजणणट्टमुत्तरसुत्तं भणदि--

उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण ॥ ९९ ॥

दुपदेसियादिउपरिमवर्गणणं भेदेणेव एयपदेसिया वर्गणा होवि; सुहुमस्स थूलभेदादो चेव उत्पत्तिदंसणादो । संघादेण भेदसंघादेण वा एयपदेसियपरमाणु-पोगल्लदव्ववर्गणा ण होदि; एदम्हादो हेट्ठा वर्गणणमभावादो ।

इमा दुपदेसियपरमाणुपोगल्लदव्ववर्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥ १०० ॥

सुगमं ।

उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं संघादेण सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥ १०१ ॥

समाधान- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, यतः सब वर्गणायें परमाणु पुद्गलोंसे ही उत्पन्न हुई हैं, अतः सब वर्गणाओं की परमाणु पुद्गलद्रव्यवर्गणा यह संज्ञा है । तथा उस वर्गणाके एकादि प्रदेश यतः विशेषण हैं, अतः एकप्रदेशी और परमाणुपुद्गल इन दोनों पदोंका ग्रहण करना चाहिए ।

स्कन्धोंका विभाग होना भेद है । परमाणुपुद्गलोंका समुदाय समागम होना संघात है । भेदको प्राप्त होकर पुनः समागम होना भेदसंघात है । यह एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे उत्पन्न होती है या संघातसे उत्पन्न होती है या क्या भेद-संघातसे उत्पन्न होती है, इस प्रकार इस सूत्र द्वारा पूछा की गई है । अब उसका निश्चय करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं-

ऊपरके द्रव्योंके भेदसे उत्पन्न होती है ॥ ९९ ॥

द्विप्रदेशी आदि उपरिम वर्गणाओंके भेदसे ही एकप्रदेशी वर्गणा होती है, क्योंकि, सूक्ष्म-की स्थूलके भेदसे ही उत्पत्ति देखी जाती है । संघातसे और भेद-संघातसे एकप्रदेशी परमाणु पुद्गलद्रव्यवर्गणा नहीं होती है, क्योंकि, इससे नीचे अन्य वर्गणाओंका अभाव है ।

यह द्विप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥ १०० ॥

सुगम है ।

ऊपरके द्रव्योंके भेदसे और नीचेके द्रव्योंके संघातसे तथा स्वस्थानमें भेद-संघातसे होती है ॥ १०१ ॥

जेण एयपदेसियपरमाणुपोग्गलाणं दोण्हं समुदयसमागमेण दुपदेसियवर्गणा होदि तेणेसा हेट्टिल्लीणं संघादेण होदि । उवरिल्लीणं भेदेण वि होदि । तं जहा—तिपदेसियवर्गणाए एगपरमाणुपोग्गले विरोहिगुणपादुब्भावेण भेदं गदे दुपदेसियदब्ब-वर्गणा होदि । चदुपदेसियखंधादो दोसु परमाणुपोग्गलेसु विरोहिगुणपादुब्भावेण भेदं गदेसु दुपदेसियवर्गणा हीदि । पंचपदेसियखंधादो तिसु परमाणुपोग्गलेसु भेदं गदेसु दुपदेसियवर्गणा होदि । एवमुवरिमसब्बवर्गणाणं भेदेण दुपदेसियवर्गणाए उप्पत्ती वत्तव्वा । तिपदेसियादिवर्गणाणं भेदेण दुपदेसियवर्गणा उप्पज्जवि त्ति कट्ठ उवरि-ल्लीणं दब्बाणं भेदेण त्ति भणिदं । एयपदेसियवर्गणाणं दोण्हं समुदयसमागमेणैव दुपदेसियवर्गणा समुप्पज्जवि त्ति हेट्टिल्लीणं दब्बाणं संघादेणे त्ति भणिदं । दुपदेसिय-वेखंधा भेदं गंतूण जदा पुब्बसंबद्धपरमाणुणा अण्णेण वा समागममागदा होति तदा दुपदेसियवर्गणासत्थाणेण भेदसंघादेण उप्पण्णे त्ति भण्णदि । दुपदेसियवर्गणा भेद गदा संती एयपदेसियवर्गणा होदि । पुणो ताणं दोण्हं परमाणूणं समुदयसमागमेण उप्पण्णा दुपदेसियवर्गणा हेट्टिल्लीणं दब्बाणं संघादेण समुप्पण्णे त्ति सत्थाणेण भेदसंघादेण दुपदेसियवर्गणाए उप्पत्ती होदि त्ति जं भणिदं तण्ण घडदे ? एत्थ परि-हारो वुत्तव्वा । तं जहा— अवयवविभागो उप्पण्णो संतो अवयवसंजोगविणासं कुणदि णाणुप्पण्णो, णिरहेउअस्स कज्जस्स उप्पत्तिविरोहादो । तदो अवयवविभा-

यतः दो एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलोंके समुदयसमागमसे द्विप्रदेशो वर्गणा होती है, इसलिए यह नीचेकी वर्गणाओंके संघातसे होती है । ऊपरकी वर्गणाओंके भेदसे भी होती है । यथा—त्रिप्रदेशी वर्गणामें एक परमाणु पुद्गलके विरोधी गुणके उत्पन्न होनेसे भेदको प्राप्त होने पर द्विप्रदेशी द्रव्यवर्गणा उत्पन्न होती है । चार प्रदेशी स्कन्धसे दो परमाणु पुद्गलोंके विरोधी गुणके उत्पन्न होनेसे भेदको प्राप्त होनेपर द्विप्रदेशी वर्गणा उत्पन्न होती है । पञ्चप्रदेशी स्कन्ध से तीन परमाणु पुद्गलोंके भेदको प्राप्त होनेपर द्विप्रदेशी वर्गणा उत्पन्न होती है । इस प्रकार उपरिम सब वर्गणाओंके भेदसे द्विप्रदेशी वर्गणाकी उत्पत्ति कहनी चाहिए । त्रिप्रदेशी आदि वर्गणाओंके भेदसे द्विप्रदेशी वर्गणाकी उत्पत्ति होती है ऐसा समझकर 'ऊपरके द्रव्योंके भेदसे' यह वचन कहा है । एकप्रदेशी दो वर्गणाओंके समुदयसमागमसे द्विप्रदेशी वर्गणा उत्पन्न होती है इसलिए 'नीचेके द्रव्योंके संघातसे' यह वचन कहा है । द्विप्रदेशी दो स्कन्ध भेदको प्राप्त होकर जब पूर्व सम्बद्ध परमाणुके साथ या अन्य परमाणुके साथ समागमको प्राप्त होते हैं तब द्विप्रदेशी वर्गणा स्वस्थानमें भेद-संघातसे उत्पन्न होती है ऐसा कहा है ।

शंका-द्विप्रदेशी वर्गणा भेदको प्राप्त होकर एकप्रदेशी वर्गणा होती है । पुनः उन दो परमाणुओंके समुदयसमागमसे उत्पन्न हुई द्विप्रदेशी वर्गणा नीचेके द्रव्योंके संघातसे उत्पन्न हुई है इसलिए स्वस्थानमें भेद-संघातसे द्विप्रदेशी वर्गणा उत्पन्न होती है ऐसा जो कहा है वह नहीं बनता है ?

समाधान—यहां इस शंकाका परिहार करते हैं । यथा— अवयवोंका विभाग उत्पन्न होकर वह अवयवोंके संयोगका विनाश करता है, अनुत्पन्न होकर नहीं, क्योंकि, अहेतुक

गुण्युपपत्तिरसम ए चेव संजोगविणासेण होद्वं; विरोहिगुण्युपत्तीए^१ संतीए संजोगस्स अवट्ठाण^२ विरोहादो । ण च अवयवसंजोगविणासकाले एयपदेसियवर्गणाए उपपत्ती अत्थि; विणासुपपत्तीणमेगद्वविसयाणमक्कमेण वुत्तिविरोहादो । अविरोहे वा जो विणासो सा चेव वुपपत्ती, जा वुपपत्ती सो चेव विणासो ति विणासुपपत्तिववहाराणं संकरो होज्ज । ण च एवं; असांकिणववहारवलंभादो । तदो विभागसमए परमाणुवर्गणाए ण उप्पादो दुपदेसियवर्गणाए भेदो चेवे ति सिद्धो । पुणो एदेसि भेदाणं संघादेण समागदेण दुपदेसियवर्गणा उपपज्जदि ति सत्थाणेण भेदसंघादेण जा दुपदेसियवर्गणाए समुपपत्ती सा पुण्वित्तलभंगेसु णांतवभावं^३ गच्छदि ति सिद्धं । अथवा दुपदेसियवर्गणाए दोसु खंधेसु भेदं गच्छंतसमए चेव अण्णोण्णेण समागमं गंतूण कमेण दुपदेसियवर्गणाओ उपपज्जंति ति भेदसंघादेणुपपत्ती वत्तव्वा । एद-
मत्थपदमुवरि सव्वत्थ वत्तव्वं ।

तिपदेसियपरमाणुपोगलद्वववर्गणा चदु० पंच० छ० सत्त०
अट्ठ० णव० दस० संखेज्ज० असंखेज्ज० परित्त० अपरित्त०

कार्यकी उत्पत्ति होनेमें विरोध है, इसलिए अवयवोंके विभागके उत्पन्न होनेके समय ही संयोग का विनाश होना चाहिए, क्योंकि, विरोधी गुणकी उत्पत्ति होने पर संयोगका अवस्थान होनेमें विरोध है। यदि कहा जाय कि अवयवोंके संयोगके विनाशके समय ही एकप्रदेशी वर्गणाकी उत्पत्ति होती है सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, एक द्रव्यको विषय करनेवाले विनाश और उत्पत्तिकी युगपत् वृत्ति होनेमें विरोध है। यदि विरोध नहीं माना जाता है तो जो विनाश है वही उत्पत्ति हो जायगी और जो उत्पत्ति है वह विनाश हो जायगा, इसलिए विनाश और उत्पत्तिके व्यवहारमें संकर हो जायेगा। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, इन दोनोंका सांकर्य दोषसे रहित होकर व्यवहार उपलब्ध होता है, इसलिए विभागके समयमें परमाणु वर्गणाकी उत्पत्ति नहीं होती, उस समय द्विप्रदेशी वर्गणाका भेद ही होता है यह बात सिद्ध हुई। पुनः इन भेदोंके प्राप्त हुए संघातसे द्विप्रदेशी वर्गणा उत्पन्न होती है, इसलिए स्वस्थानमें भेदसंघातसे जो द्विप्रदेशी वर्गणाकी उत्पत्ति हुई है वह पहलेके भंगोंमें अन्तर्भावको नहीं प्राप्त होती है यह सिद्ध हुआ। अथवा द्विप्रदेशी वर्गणाके दो स्कन्ध भेदको प्राप्त होनेके समयमें ही परस्परमें समागमको प्राप्त होकर क्रमसे द्विप्रदेशी वर्गणायें उत्पन्न होती हैं, इसलिए भेद-संघातसे उत्पत्ति कहनी चाहिए। यह अर्थपद आगे सर्वत्र कहना चाहिए।

त्रिप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा, चारप्रदेशी, पांचप्रदेशी, छहप्रदेशी, सात-
प्रदेशी, आठप्रदेशी, नौप्रदेशी, दसप्रदेशी, संख्यातप्रदेशी, असंख्यातप्रदेशी, परीत-

१ ता० प्रती 'गुण्युपत्तीए संजोगस्स' इति पाठः । २ ता० प्रती 'अव(यव)ट्ठाण-' अ० आ० का० प्रतिषु 'अवयवट्ठाण-' इति पाठः । ३ म० प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु णांतयवभावं ' इति पाठः ।

अणंत० अणंताणंतपदेसियपरमाणुपोगलदव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥ १०२ ॥

सुगममेदं पुच्छासुत्तं ।

उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं संघादेण सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥ १०३ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं, पुव्वं परुविदत्तादो । हेट्ठिल्लुवरिल्लवग्गणाणं भेदसंघादेण अप्पिदवग्गणाणमुप्पत्ती किण्ण वुच्चदे; भेदकाले विणासं मोत्तूण उप्पत्तीए अभावं पडि विसेसाभावादो? ण; तत्थ एवंविधणयाभावादो । अथवा भेदसंघादस्स एवमत्थो वत्तव्वो । तं जहा-भेदसंघादाणं दोण्णं संजोगो सत्थाणं णाम; तम्हि णिरुद्धे उवरिल्लीणं हेट्ठिल्लीणं अप्पिदाणं च दव्वाणं भेदपुरंगमसंघादेण अप्पिदवग्गणुप्पत्तिदं-सणादो । सत्थाणेण भेदसंघादेण उप्पत्ती वुच्चदे । सव्वो वि परमाणुसंघादो भेद-पुरंगमो चेव ति सव्वासि वग्गणाणं भेदसंघादेणेव उप्पत्ती किण्ण वुच्चदे? ण एस दोसो; भेदाणंतरं जो संघादो सो भेदसंघादो णाम ण अंतरिदो; अव्ववत्था-

प्रदेशी, अपरीतप्रदेशी, अनन्तप्रदेशी और अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥ १०२ ॥

यह पूछासूत्र सुगम है ।

ऊपरके द्रव्योंके भेदसे नीचेके द्रव्योंके संघातसे और स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥ १०३ ॥

यह सूत्र भी सुगम है, क्योंकि, पहले व्याख्यान कर आये हैं ।

शंका-नीचे की और ऊपरकी वर्गणाओंके भेद-संघातसे विवक्षित वर्गणाओंकी उत्पत्ति क्यों नहीं कहते, क्योंकि, भेदके समय विनाशको छोड़कर उत्पत्तिके अभावके प्रति कोई विशेषता नहीं है ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, वहां पर इस प्रकारके नयका अभाव है । अथवा भेद-संघातका इस प्रकारका अर्थ कहना चाहिए । यथा-भेद और संघात दोनोंका संयोग स्वस्थान कहलाता है । उसके विवक्षित होने पर ऊपरके, नीचेके और विवक्षित द्रव्योंके भेदपूर्वक संघातसे विवक्षित वर्गणाकी उत्पत्ति देखी जाती है । इसे स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे उत्पत्ति कहते हैं ।

शंका-सभी परमाणुसंघात भेदपूर्वक ही होता है, इसलिए सभी वर्गणाओंकी उत्पत्ति भेद-संघातसे ही क्यों नहीं कहते ?

समाधान-यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, भेदसे अनन्तर जो संघात होता है उसे भेद-संघात कहते हैं । जो अन्तरसे होता है उसकी यह संज्ञा नहीं है, क्योंकि, ऐसा माननेपर

प्पसंगादो* । तम्हा ण सव्ववग्गणाणं भेदसंघादेणुप्पत्ती ।

आहार० अगहण० तेया० अगहण० भासा० अगहण० मण०
अगहण० कम्मइय० धुवक्खंधदव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण
किं भेदसंघादेण ॥ १०४ ॥

सुगमं ।

उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं संघादेण
सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥ १०५ ॥

सुगमं ।

धुवक्खंधदव्ववग्गणाणमुवरि सांतरणिरंतरदव्ववग्गणा णाम किं
भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण । ॥ १०६ ॥

सुगमं ।

सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥ १०७ ॥

तं जहा- ण पत्तेयवादरसुहुमणिगोदवग्गणा भेदेण[✱] होदि; सच्चित्तवग्गणाण-

अव्यवस्थाका प्रसंग आता है । इसलिए सब वर्गणाओंकी उत्पत्ति भेद-संघातसे नहीं होती ।

आहारद्रव्यवर्गणा, अग्रहणद्रव्यवर्गणा, तैजसद्रव्यवर्गणा, अग्रहणद्रव्यवर्गणा,
भाषाद्रव्यवर्गणा, अग्रहणद्रव्यवर्गणा, मनोद्रव्यवर्गणा, अग्रहणद्रव्यवर्गणा, कार्मणद्रव्य-
वर्गणा और ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या
भेद-संघातसे होती है ॥ १०४ ॥

सुगम है ।

ऊपरके द्रव्योंके भेदसे, नीचेके द्रव्योंके संघातसे और स्वस्थानकी अपेक्षा
भेद-संघातसे होती है ॥ १०५ ॥

सुगम है ।

ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर सान्तरनिरन्तरद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती
है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥ १०६ ॥

सुगम है ।

स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥ १०७ ॥

यथा-प्रत्येकशरीर, बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोद वर्गणाओंके भेदसे यह वर्गणा नहीं

* ता० प्रती 'अव्यवस्थाप्पसंगादो' इति पाठा ।

✱ ता० प्रती '-णिगोदवग्गणा (णं) भेदेण'

अ० प्रती 'णिगोदवग्गणाणं भेदेण' आ० प्रती 'णिगोदाणं वग्गणाणं भेदेण इति पाठा ।

सचित्तवर्गणसरूवेण परिणामविरोहादो । ण च सचित्तवर्गणाए कम्म-णोकम्मक्खंधेसु तत्तो विष्फट्टिय सांतरणिरंतरवर्गणाणमायारेण परिणदेसु तब्भेदेणेवेदिस्से समुप्पत्ती; तत्तो विष्फट्टसमए चेव ताहिंतो पुधुभूदखंधाणं सचित्तवर्गणभावविरोहादो । ण महा-खंधभेदेणेदिस्से समुप्पत्ती; महाखंधादो विष्फट्टखंधाणं महाखंधभेदेहिंतो पुधुभूदाणं महाखंधववएसाभावेण तेति तब्भेदत्ताणुववत्तीदो । एदम्मि णए अवलंबिज्जमाणे उवरिल्लीणं वर्गणाणं भेदेण वि होदि त्ति पक्खविदं । दव्वट्टियणए पुण अवलंबिज्जमाणे उवरिल्लीणं भेदेण वि होदि । ध्रुवखंधादीणं संघादेण सांतरणिरंतरवर्गणा ण होदि; दव्वट्टियणयावलंबणादो । सांतरणिरंतरवर्गणा एक्का चेव; तिस्से आयारेण ध्रुवखंध-वर्गणादीणमणंतरं चेव परिणामाभावादो । पज्जवट्टियणए पुण अवलंबिज्जमाणे हेट्ठिल्लीणं संघादेण वि होदि; उक्कस्सध्रुवखंधवर्गणाए एणादिपरमाणुसमागमे सांत-रणिरंतरवर्गणाए समुप्पत्ति पडि विरोहाभावादो । ण विवरीयकप्पणा; सचित्तवर्गण-ट्टाणाणमणुप्पत्तिप्पसंगादो । सांतरणिरंतरवर्गणाए परिणामंतरावत्ती णत्थि त्ति ण वोत्तुं जुत्तं; ध्रुवसुणवर्गणाणमाणंतियप्पसंगादो । ण सत्थाणे चेव परिणामो वि; जहणवर्गणादो परमाणुत्तरवर्गणाए उप्पत्तिविरोहादो सांतरणिरंतरवर्गणाए अभाव-

होती, क्योंकि, सचित्तवर्गणाओंका अचित्तवर्गणारूपसे परिणमन होनेमें विरोध है । यदि कहा जाय कि सचित्तवर्गणाके कर्म और नोकर्मस्कन्धोंके उससे अलग होकर सान्तरनिरन्तर वर्गणारूपसे परिणत होनेपर उनके भेदसे इस वर्गणाकी उत्पत्ति होती है सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, उनसे अलग होनेके समय ही उनसे अलग हुए स्कन्धोंको सचित्त वर्गणा होनेमें विरोध आता है । महास्कन्धके भेदसे इस वर्गणाकी उत्पत्ति होती है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, महास्कन्धसे अलग हुए स्कन्ध यतः महास्कन्धके भेदसे अलग हुए हैं, अतः उनकी महास्कन्ध संज्ञा नहीं हो सकती और इसलिए उनका उससे भेद नहीं बन सकता । इस नयका अवलम्बन करने पर ऊपरकी वर्गणाओंके भेदसे यह वर्गणा नहीं होती है यह कहा गया है । परन्तु द्रव्याधिक नयका अवलम्बन करने पर ऊपरकी वर्गणाओंके भेदसे भी यह वर्गणा होती है । ध्रुवस्कन्ध आदिकके संघात से सान्तरनिरन्तर वर्गणा नहीं होती है, क्योंकि, यहां द्रव्याधिक नयका अवलम्बन लिया गया है । सान्तरनिरन्तर वर्गणा एक ही है, उस रूपसे ध्रुवस्कन्ध वर्गणा आदिका अनन्तर ही परिणामका अभाव है । परन्तु पर्यायाधिक नयका अवलम्बन लेने पर नीचेकी वर्गणाओंके संघातसे भी यह वर्गणा होती है, क्योंकि, उत्कृष्ट ध्रुवस्कन्धवर्गणामें एक आदि परमाणुका समागम होनेपर सान्तरनिरन्तर वर्गणाकी उत्पत्ति होनेमें कोई विरोध नहीं है । यह विपरीत कल्पना भी नहीं है, क्योंकि, ऐसा मानने पर सचित्त-वर्गणास्थानोंकी अनुत्पत्तिका प्रसंग आता है । सान्तरनिरन्तरवर्गणाका दूसरे प्रकारसे परिणमन नहीं होता है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेपर ध्रुवशून्यवर्गणाओंके अनन्त होनेका प्रसंग आता है । केवल स्वस्थानमें ही परिणमन होता है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, जघन्य वर्गणासे एक परमाणुअधिक वर्गणाकी उत्पत्ति होनेमें विरोध आता है, दूसरे

❖ ता० आ० का० प्रतिष्ठा '—खंधादीणं सांतर—' इति पाठः ।

व्यसंगादो च । तम्हा सत्थाणेण भेदसंघादेणेव होदि त्ति घेत्त्वं । अथवा उवरिम—
वर्गणाओ विष्फट्टाओ ध्रुवखंदादिसरुवेणेव जिवदंति; साहावियादो । ध्रुवखंदादि-
हेट्ठिमवर्गणाओ सत्थाणे चेव समागमंति उवरिमवर्गणाहि वा; साहावियादो ।
सांतरणिरंतरवर्गणा पुण सत्थाणे चेव भेदेण संघादेण तदुभयेण वा परिणमदि त्ति
जाणावणट्ठं भेदसंघादेणे त्ति परुविदं ।

**उवरिल्लीणं दब्बाणं भेदेण हेट्ठिल्लीणं दब्बाणं संघादेण
सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥ १०८ ॥**

केसु वि सुत्थपोत्थएसु एसो पाठो । एदस्स सुत्तस्स जहा ध्रुवखंधवर्ग-
णाए तिहि पयारेहि उप्पत्ती परुविदा तहा एत्थ वि परुवेदब्बा; विसेसाभावादो ।
कधं सच्चित्तवर्गणा महाखंधवर्गणा वा सांतरणिरंतरवर्गणसरुवेण परिणमइ? ण,
तदभेदेण आगदवखंधाणं सांतरणिरंतरवर्गणायारेण परिणामुवलंभादो ।

**सांतरणिरंतरदब्बवर्गणाणमुवरि पत्तेयसरीरदब्बवर्गणा णाम
किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥ १०९ ॥**

सान्तरनिरन्तर वर्गणाका अभाव भी प्राप्त होता है, इसलिए स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे
ही यह वर्गणा होती है ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए । अथवा ऊपरकी वर्गणायें टूट कर
ध्रुवस्कन्ध आदि रूपसे ही उनका पतन होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । तथा ध्रुवस्कन्ध
आदि नीचेकी वर्गणायें स्वस्थानमें ही समागमकी प्राप्त होती हैं, अथवा ऊपरकी वर्गणाओंके
साथ समागमकी प्राप्त होती है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । परन्तु सान्तरनिरन्तरवर्गणा स्वस्थानमें
ही भेदसे, संघातसे या तदुभयसे परिणमन करती है इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'भेद-
संघातसे' ऐसा कहा है ।

**ऊपरके द्रव्योंके भेदसे, नीचेके द्रव्योंके संघातसे ओर स्वस्थानकी अपेक्षा
भेद-संघातसे होती है ॥ १०८ ॥**

कितनी ही सूत्र पोथियोंमें यह पाठ है । इस सूत्रकी व्याख्या करते समय जिस प्रकार
ध्रुवस्कन्ध वर्गणाकी तीन प्रकारसे उत्पत्ति कही है उसी प्रकार यहां भी कहनी चाहिए,
क्योंकि, उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है ।

शंका-सच्चित्तवर्गणा या महास्कन्धवर्गणा सान्तरनिरन्तर वर्गणारूपसे कैसे परिणमन
करती है ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, उनके भेद द्वारा आये हुए स्कन्धोंका सान्तरनिरन्तरवर्गणा-
रूपसे परिणमन पाया जाता है ।

**सान्तरनिरन्तरद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती
है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥ १०९ ॥**

❖ ता० प्रती 'सुत्तपोत्त (त्थ) एसु ' अ० आ० का० प्रतिषु 'सुत्तपोत्तएसु' इति पाठः ।

⊙ अ- आ- प्रत्योः 'पादो' इति पाठः ।

सुगमं ।

सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥ ११० ॥

परमाणुवर्गणमादि कादूण जाव सांतरणिरंतरउक्कस्सवर्गणे त्ति ताव एदांसि
वर्गणानं समुदयसमागमेण पत्तेयसरीरवर्गणा ण समुप्पज्जदि । कुदो ? उक्कस्सां-
तरणिरंतरवर्गणाण सखुवं मोत्तूण रुवाहियादिउवरिमवर्गणसखुवेण परिणमणसत्तीए
अभावादो । आहार-तेजा-कम्मइयपरमाणुपोगल  वखंधेसु जोगकसायवसेण पत्तेय-
वर्गणाए बंधमागदेसु अण्णापत्तेयसरीरवर्गणा उप्पज्जदि त्ति हेट्ठिल्लानं दब्बाणं
संघादेण पत्तेयसरीरवर्गणाए  उत्पत्ती किण्ण भण्णदे ? ण, पत्तेयसरीरवर्गणसमाग-
मेण विणा हेट्ठिमवर्गणानं चेव समुदयसमागमेण समुप्पज्जमानपत्तेयसरीरवर्गणा-
णुवलंभादो । किं च जोगवसेण एगबंधणवद्धओरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणुपोगल-
वखंधा अणंतानंत विस्सासुवचएहि उवचिदा । ण ते सव्वे सांतरणिरंतरादिहेट्ठिमवर्ग-
णासु कत्थं वि सरिसधणिया होंति ; पत्तेयवर्गणाए असंखेज्जदिभागत्तादो । ण ते पत्ते-
यसरीरजहण्णवर्गणाए सह सरिसा होंति ; तदसंखे० भागत्तादो । ण ते पुध वर्गणासण्णं
लहंति ; जीवादो पुधभूदकाले तेसिमेगबंधाभावादो । तम्हा हेट्ठिल्लीणं दब्बाणं

यह सूत्र सुगम है ।

स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥ ११० ॥

परमाणुवर्गणासे लेकर सान्तरनिरन्तर उत्कृष्ट वर्गणा तक इन वर्गणाओंके समुदय-
समागमसे प्रत्येकशरीरवर्गणा नहीं उत्पन्न होती है, क्योंकि, उत्कृष्ट सांतरनिरन्तरवर्गणाओंका
अपने स्वरूपको छोड़कर एक अधिक आदि उपरिम वर्गणारूपसे परिणमन करनेकी शक्तिका
अभाव है ।

शंका- आहारद्रव्यवर्गणा, तैजसशरीरद्रव्यवर्गणा और कार्मणशरीरद्रव्यवर्गणाके पुद्गल-
स्कन्धोंके योग और कषायके वशसे प्रत्येकवर्गणारूपसे बन्धको प्राप्त होनेपर उनसे अन्य प्रत्येक
शरीरवर्गणाकी उत्पत्ति होती है, अतः नीचेके द्रव्योंके संघातसे प्रत्येक शरीरवर्गणाकी उत्पत्ति
क्यों नहीं कही जाती ?

समाधान- नहीं, क्योंकि प्रत्येकशरीरवर्गणाके समागमके बिना केवल नीचेकी वर्गणाओं
के समुदयसमागमसे उत्पन्न होनेवाली प्रत्येकशरीरवर्गणायें नहीं उपलब्ध होती । दूसरे, योगके
वशसे एकबन्धनबद्ध औदारिक, तैजस और कार्मण परमाणु पुद्गलस्कन्ध अनन्तानन्त विस्त्रोप-
चयोंसे उपचित होते हैं । परन्तु वे सब सान्तरनिरन्तर आदि नीचेकी वर्गणाओंमें कही भी
सदृशधनवाले नहीं होते, क्योंकि, वे प्रत्येकवर्गणाके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं । वे प्रत्येक-
शरीर जघन्य वर्गणाके सदृश भी नहीं होते, क्योंकि, वे उसके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ।
वे अलग रूपसे वर्गणासंज्ञाको भी नहीं प्राप्त होते, क्योंकि, जीवसे अलग होनेके कालमें उनका

(५) ता० प्रती ' ण (स-) मुप्पज्जदि' अ० आ० का० प्रतिषु 'ण मुप्पज्जदि' इति पाठः ।  ११०
प्रती 'कम्मइयपोगल' इति पाठः :  म० प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु 'बंधमागदेसु अण्णापत्तेयसरीरवर्गणाए'
इति पाठः ।

संघादेण ण पत्तेयसरीरवर्गणा उपपज्जदि त्ति सिद्धं । उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण विणाः पत्तेयसरीरवर्गणा उपपज्जदि, बादर-सुहुमणिगोदवर्गणाणमोरालिय-तेजा-कम्मइयवर्गणक्खंधेसु अधट्ठिदिगलणाए गलिदेसु पत्तेयसरीरवर्गणं बोलेदूण हेट्ठा सांतरणिरंतरादिवर्गणसरूवेण सरिसधणियभावेण अवट्ठाणुवलंभादो । कथमेव णव्वदे ? सत्थाणेण भेदसंघादेणेव पत्तेयसरीरवर्गणा होदि त्ति सुत्तण्णहाणुववत्तीदो ! भेदं गदविदियसमए पत्तेयवर्गणसरूवेण तेसि परिणामो अत्थि त्ति उवरिल्लीण दव्वाणं भेदेण पत्तेयसरीरवर्गणाए उपपत्ती किण्ण वुच्चदे ? ण, उवरिमवर्गणादो आगदपरमाणुपोगलेहि चेव पत्तेयसरीरवर्गणणिपत्तीए अभावादो । बादर-सुहुमणि-गोदवर्गणाहिंतो एगजीवपत्तेयसरीरेसुप्पण्णे संते उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण पत्तेयसरीरवर्गवर्गणाए उपपत्ती किण्ण वुच्चदे ? ण, उवरिल्लीणं वर्गणाणं भेदो णाम विणासो । ण च बादर-सुहुमणिगोदवर्गणाणं मज्झे एया वर्गणा णट्ठा संती पत्तेयसरीरवर्गणासरूवेण परिणमदि; पत्तेयवर्गणाए आणंतियप्पसंगादो । ण च असं—खेज्जलोगमेत्तजीवेहि एया बादरणिगोदवर्गणा सुहुमणिगोदवर्गणा वा णिपपज्जदि; तव्ववर्गणाणमाणंतियत्तप्पसंगादो विप्फट्ठेगजीवस्स बादर-सुहुमणिगोदवर्गणाणमणं—

एक ब्रन्धन नहीं होता । इसलिए नीचेकी वर्गणाओंके संघातसे प्रत्येकशरीरवर्गणा नहीं उत्पन्न होती है यह सिद्ध हुआ ।

ऊपरके द्रव्योंके भेदके बिना प्रत्येकशरीरवर्गणा उत्पन्न होती है, क्योंकि, बादरनिगोदवर्गणा और सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके आदारिक, तैजस और कार्मणवर्गणास्कन्धोंके अधःस्थितिगलनाके द्वारा गलित होने पर प्रत्येकशरीरवर्गणाको उल्लघन कर उनका नीचे सदृशधनरूप सान्तरनिरन्तर आदि वर्गणारूपसे अवस्थान उपलब्ध होता है ।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे ही प्रत्येकशरीरवर्गणा होती है यह सूत्र अन्यथा बन नहीं सकता है, इससे जाना जाता है ।

शंका—भेदको प्राप्त होनेके दूसरे समयमें प्रत्येकशरीरवर्गणारूपसे उनका परिणमन होता है. इसलिए उपरिम द्रव्योंके भेदसे प्रत्येकशरीरवर्गणाका उत्पत्ति क्यों नहीं कहते ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उपरिम वर्गणासे आये हुए परमाणु पुद्गलोंसे ही प्रत्येकशरीरवर्गणाकी निष्पत्तिका अभाव है ।

शंका—बादरनिगोदवर्गणासे और सूक्ष्मनिगोदवर्गणासे एक जीवके प्रत्येकशरीरवालोंमें उत्पन्न होने पर ऊपरके द्रव्योंके भेदसे प्रत्येकशरीरवर्गणाकी उत्पत्ति क्यों नहीं कहते ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, ऊपरकी वर्गणाओंके भेदका नाम ही विनाश है और बादरनिगोदवर्गणा तथा सूक्ष्मनिगोदवर्गणामेंसे एक वर्गणा नष्ट होती हुई प्रत्येकशरीरवर्गणारूपसे नहीं परिणमती, क्योंकि ऐसा होने पर प्रत्येकशरीरवर्गणाएँ अनन्त हो जाँयगी । यदि कहा जाय कि असंख्यात लोकप्रमाण जीवोंके द्वारा एक बादरनिगोदवर्गणा या सूक्ष्मनिगोदवर्गणा उत्पन्न होती है सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, इस प्रकार उन वर्गणाओंके अनन्त होनेका प्रसंग आता है । तथा अलग हुए एक जीवके बादरनिगोदवर्गणाके और सूक्ष्मनिगोद-

❀ आ० प्रती "भेदेण वि ण" इति पाठ; ।

तिमभागद्वस्स तब्भेदत्ताणुववत्तीदो वा । ण च महाखंधवग्गणा णट्ठा संती पत्तेयस-
रीरवग्गणसरूवेण परिणमदि; तिस्से सब्बकालं विणासाभावादो पत्तेयसरीरवग्गणाए
आणंतिपत्तप्पसंगादो णिच्छेयणस्स सचेयणभावेण परिणामविरोहादो वा । तदो पत्तेय-
सरीरवग्गणा उवरिल्लीणं वग्गणाणं भेदेण संघादेण वा ण होदि त्ति सिद्धं । किंतु
सत्थाणेण भेदसंघादेण होदि; पत्तेयवग्गणभेदाणं वग्गणाणं समुदयसमागमेण असमा-
गमेण वा वग्गणुप्पत्तिदंसणादो ।

**पत्तेयसरीरवग्गणाए उवरि वादरणिगोदवग्गणा णाम किं
भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥ १११ ॥**

सुगमं ।

सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥ ११२ ॥

हेट्ठिल्लीणं ताव संघादेण वादरणिगोदवग्गणा ण होदि; णिच्छेयणाणं वग्गणाणं
समुदयसमागमेण सच्चित्तवग्गणुप्पत्तिविरोहादो असंखेज्जलोगमेत्तपत्तेयसरीरवग्गणाणं
समुदयसमागमेण अणंतजीवगब्भेगवादरणिगोदवग्गणाए उत्पत्तिविरोहादो । ण च
उवरिमसच्चित्तवग्गणाए भेदेण होदि; एगमुहुमणिगोदवग्गणजीवाणमक्कमेण सव्वेसि पि

वर्गणाके अनन्तर्वे भागप्रमाण द्रव्यका उस रूपसे भेद भी नहीं बन सकता है । यदि कहा जाय कि
महास्कन्धवर्गणा नष्ट होती हुई प्रत्येकशरीरवर्गणारूपसे परिणमन करती है सो यह कहना भी
ठीक नहीं है, क्योंकि, एक तो उसका सर्वकाल विनाश नहीं होता, दूसरे ऐसा माननेपर प्रत्येक-
शरीरवर्गणाके अनन्त होनेका प्रसंग आता है और तीसरे अचेतनका सचेतनरूपसे परिणमन
होनेमें विरोध है, इसलिए प्रत्येकशरीरवर्गणा उपरिम वर्गणाओंके भेद या संघातसे नहीं उत्पन्न
होती है यह सिद्ध हुआ । किंतु स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे उत्पन्न होती है, क्योंकि, प्रत्येक
वर्गणाके अवान्तर भेदरूप वर्गणाओंके समुदयसमागम या असमागमसे वर्गणाकी उत्पत्ति देखी
जाती है ।

**प्रत्येकशरीरवर्गणाके ऊपर वादरनिगोदवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघा-
तसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥ १११ ॥**

यह सूत्र सुगम है ।

स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥ ११२ ॥

नीचेकी वर्गणाओंके संघातसे तो वादरनिगोदवर्गणा उत्पन्न होती नहीं, क्योंकि, अचेतन
वर्गणाओंके समुदयसमागमसे सचेतन वर्गणाओंकी उत्पत्ति होनेमें विरोध है । तथा असंख्यात
लोकप्रमाण प्रत्येकशरीरवर्गणाओंके समुदयसमागमसे अनन्तजीवगर्भ एक वादरनिगोदवर्गणाकी
उत्पत्ति होनेमें विरोध है । यह कहना उपरिम सच्चित्तवर्गणाके भेदसे यह वर्गणा होती है, ठीक
नहीं है, क्योंकि, एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके सब जीवोंका युगपत् वादरनिगोदवर्गणारूप

बादरणिगोदवर्गणसरूपेण परिणामविरोहादो सुहुमणिगोदेहितो आगतूण बादरणि-
गोदेसु उत्पण्णेहि चेव जीवेहि आरद्धबादरणिगोदवर्गणाए अभावादो वा । कुदो एवं
णव्वदे? उवरित्तलीणं भेदेण णत्थि ति वयणादो । महाखंधव्ववर्गणाए भेदेण
बादरणिगोदवर्गणा ण उत्पज्जदि; तिस्से विणासाभावादो अचित्तस्स सचित्तभावेण
परिणामविरोहादो च । सत्थाणेण भेदसंघादेणेव बादरणिगोदवर्गणा होदि । सुहुम-
णिगोदेहितो पत्तेयसरीरेहितो चेव आगदेहि जीवेहि बादरणिगोदजीवेहि च एगेणा
बादरणिगोदवर्गणा णिप्पज्जदि ति भण्णिदं होदि । बादरणिगोदेहितो जेण सुहुमणि-
गोदा असंखेज्जलोगुणा तेण एगबादरणिगोदवर्गणा सुद्धेहि सुहुमणिगोदेहि चेव
आरद्धे ति भण्णिदे को दोसो? ण, एगसुहुमणिगोदवर्गणद्वियजीवाणमणंतिमभागानं
चेव बादरणिगोदेसु संचारव्वलंभादो ।

**बादरणिगोदवर्गणाणमुवरि सुहुमणिगोदवर्गणा णाम
किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥ ११३ ॥
सुगमं ।**

परिणमन होनेमें विरोध है । तथा जी जीव सूक्ष्म निगोदोंमेंसे आकर बादरनिगोदोंमें उत्पन्न होते हैं उनके द्वारा आरम्भ की गई बादरनिगोदवर्गणाका अभाव है ।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—उपरिम वर्गणाओंके भेदसे नहीं होती इस वचनसे जाना जाता है ।

महास्कन्धद्रव्यवर्गणाके भेदसे बादरनिगोदवर्गणा नहीं उत्पन्न होती है, क्योंकि, एक तो उसका विनाश नहीं होता । दूसरे अचित्तका सचित्तरूपसे परिणमन होनेमें विरोध है । इसलिए स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे ही बादरनिगोदवर्गणा होती है । सूक्ष्म निगोदमेंसे या प्रत्येक-शरीरमेंसे आये हुए जीवोंके द्वारा और बादर निगोद जीवोंके द्वारा एक एक बादरनिगोद-वर्गणा निष्पन्न की जाती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका—यतः बादरनिगोदोंसे सूक्ष्मनिगोद असंख्यात लोकगुणे हैं, अतः एक बादरनिगोद वर्गणा शुद्ध सूक्ष्म निगोदों से आरम्भ होती है यदि ऐसा कहा जाय तो क्या दोष है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें स्थित जीवोंके अनन्तवें भागमात्र जीवोंका ही बादर निगोदोंमें संचार देखा जाता है, अतः एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणासे एक बादर-निगोदवर्गणाका आरम्भ नहीं हो सकता ।

बादरनिगोदद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर सूक्ष्मनिगोदद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥ ११३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

संस्थाणेन भेदसंघादेण ॥ ११४ ॥

ण बादरणिगोदवर्गणाणं संघादेण एगसुहुमणिगोदवर्गणा होदि; एगसुहुम-
णिगोदवर्गणजीवमेत्तबादरणिगोदजीवेहि चेव आरद्धसुहुमणिगोदवर्गणाभावादो ।
तं पि कुदो णव्वदे? हेट्ठिल्लीणं संघादेण ण उप्पज्जदि त्ति वयणादो । बादरणिगो-
दाणं सुहुमणिगोदभावविरोहादो वा बादरणिगोदेहि सुहुमणिगोदवर्गणा णारब्भदि ।
जदि सुहुमो ण बादरो अह बादरो ण सुहुमो त्ति तेण सुहुमणिगोदेहि चेव सुहुम-
णिगोदवर्गवर्गणा आरब्भदि त्ति भणिदं होदि । ण च बादरणिगोदाणं पत्तेय-
सरीराणं वा सुहुमणिगोदेसेसुप्पण्णाणं बादरणिगोदत्तं पत्तेयसरीरत्तं वा अत्थि;
विरुद्धपरिणामाणमक्कमेण वृत्तिविरोहादो । एसत्थो पहाणो पत्तेय-बादरणिगोदवर्ग-
णासु वि वत्तव्वो । महाखंधभेदेण वि सुहुमणिगोदवर्गणा ण होदि; पुव्वत्तदोसप्प-
संगादो । कितु भेदसंघादेण होदि । सुहुमणिगोदव्यवर्गणाणं भेदसंघादेण
सुहुमणिगोदवर्गणा उप्पज्जदि त्ति भणिदं होदि । एविकस्से सुहुमणिगोदवर्गणाए
एगविस्सामुवचयपरमाणुमिह बड्ढिदे अण्णा वर्गणा होदि; एगपरमाणुणा
अहियत्तुवलंभादो । एवमणिच्छिज्जमाने पुव्वं पल्लविदट्ठाणामभावो होज्ज ।
ण च एवं, तम्हा हेट्ठिल्लीणं द्विदीणं दव्वानं समुदय-

स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥ ११४ ॥

बादरनिगोदवर्गणाओंके संघातसे एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणा नहीं होती, क्योंकि, एक
सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें जितने जीव हैं उतने बादर निगोद जीवोंके द्वारा आरम्भ की गई सूक्ष्मनि-
गोदवर्गणाका अभाव है ।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—नीचेकी वर्गणाओंके संघातसे नहीं होती इस वचनसे जाना जाता है ।

अथवा बादर निगोदोंका सूक्ष्म निगोदरूपसे होनेमें विरोध है, इसलिए बादर निगोद सूक्ष्म-
निगोदवर्गणाका आरम्भ नहीं करते । जब कि सूक्ष्म बादर नहीं है और बादर सूक्ष्म नहीं है,
इसलिए सूक्ष्म निगोदोंके द्वारा ही सूक्ष्मनिगोदद्रव्यवर्गणा आरम्भ की जाती है यह उक्त कथनका
तात्पर्य है । बादर निगोद और प्रत्येकशरीर जीवोंके पर कर सूक्ष्म निगोदोंमें उत्पन्न होने पर
उनका बादर निगोदपन और प्रत्येकशरीरपन नहीं रहता, क्योंकि, विरुद्ध परिणामोंकी युगपत्
वृत्ति होनेमें विरोध है । यहां यह अर्थ प्रधान है । इसे प्रत्येकशरीरवर्गणा और बादरनिगोदवर्गणा
में भी कहना चाहिए । महास्कन्धके भेदसे भी सूक्ष्मनिगोदवर्गणा नहीं होती, क्योंकि, पूर्वोक्त
दोषों का प्रसंग आता है । किन्तु भेद-संघातसे होती है । सूक्ष्मनिगोदके अवान्तर भेदरूप वर्गणा-
ओंके भेद-संघातसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणा उत्पन्न होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका—एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें एक विस्सोपचय परमाणुके बढने पर अन्य वर्गणा होती
है, क्योंकि, वहां एक परमाणु अधिक देखा जाता है । ऐसा नहीं मानने पर पहले कहे गये
स्थानोंका अभाव होता है । परन्तु ऐसा है नहीं, इसलिए नीचेकी स्थितिवाले द्रव्योंके समुदय—

❖ ता० प्रती '—वर्गणाभावादो' इति प१३: । अ-आ-प्रत्यो: 'एगवर्गणाभावादो' इति प१४: ।

समागमेण सुहुमणिगोदवर्गणाए होदव्वमिदि । एत्थ परिहारो वृच्चदे- जुत्तमेदं जदि पज्जवट्टियणओ अवलंबिदो होदि । ट्ठाणपरूवणाए पुण ण दोसो; पज्जवट्टियणयावलंबणादो । एत्थ पुण दव्वट्टियणओ अवलंबिदो त्ति परमाणुवड्डीए हाणीए वा ण वर्गणाए अणत्तं कितु जीवाणं समागमेण भेदेण च सच्चित्तवर्गणुप्पत्ती होदि । तेण हेट्ठिल्लोणं दव्वाणं समागमेण सच्चित्तवर्गणाओ ण उत्पज्जंति त्ति भणिदं होदि ।

सुहुमणिगोदवर्गणाणमुवरि महाखंधवव्ववर्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥ ११५ ॥

सुगमं ।

सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥ ११६ ॥

हेट्ठिमाणं संघादेण बिदियमहाखंधवर्गणा ण उत्पज्जदि; तिस्से सब्बद्वमेगवर्गणत्तादो । ण च एगादिपरमाणुपोग्गलेसु वड्ठिदेसु अण्णा वर्गणा होदि; एववर्गणं मोत्तूण तत्थ बिदियवर्गणाणुवलंबादो । कितु भेदसंघादेण होदि; पज्जवट्टियणयावलंबणादो, तं जहा- एगादिअणंतपरमाणुपोग्गलेसु महाखंधादो फट्टियगदेसु भेदेण अण्णा महाखंध

समागमसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणा होनी चाहिए ?

समाधान-इस शंकाका समाधान करते हैं-पर्यायाधिक नयका यदि अवलम्बन लिया जाय तो यह कहना युक्त है । फिर भी स्थानपरूपणामें कोई दोष नहीं है, क्योंकि, वहाँ पर्यायाधिक नयका अवलम्बन लिया गया है । परन्तु यहाँ पर द्रव्याधिक नयका अवलम्बन लिया गया है, इसलिए परमाणुकी वृद्धि और हानिसे वर्गणामें अन्यपना नहीं आता, किन्तु जीवोंके समागम और भेदसे सच्चित्तवर्गणाकी उत्पत्ति होती है, इसलिए नीचेके द्रव्योंके समागमसे सच्चित्तवर्गणायें नहीं उत्पन्न होती यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंके ऊपर महास्कन्धद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥ ११५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥ ११६ ॥

नीचेकी वर्गणाओंके संघातसे दूसरी महास्कन्धवर्गणा नहीं उत्पन्न होती है, क्योंकि, वह सर्वत्र एक वर्गणारूप है । एक आदि परमाणु पुद्गलोंके बढ़नेपर अन्य वर्गणा होती है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, एक वर्गणाको छोड़कर वहाँ दूसरी वर्गणा नहीं पाई जाती । किन्तु वह भेद-संघातसे होती है, क्योंकि, यहाँ पर पर्यायाधिक नयका अवलम्बन लिया गया है । यथा-- महास्कन्धसे एक आदि अनन्त परमाणु पुद्गलोंके विलग होकर चले जानेपर भेदसे

❖ ता० प्रती 'सब्वत्थ एग-' इति पाठः ।
महाखंधादो ' इति पाठः ।

❖ आ० प्रती 'अणंतपोग्गलेसु परमाणुसु

द्ववर्गणा होदि । तत्थेव एगादिअणंतेसु समागदेसु संघादेण अण्णा महाखंधद्वव-
वर्गणा होदि । अवकमेण उवचयावचयेहि वि भेदसंघादेण महाखंधद्ववर्गणा होदि ।
एवं तीहि पयारेहि सव्वत्थ भेदसंघादस्स अत्थपरूवणां कायव्वा । उवरिमाणं
भेदेण हेट्ठा अपुव्ववर्गणुप्पत्ती भेदजणिदा णाम । हेट्ठिमाणं वर्गणाणं समागमेण
सरिसधणियसरूवेण अण्णवर्गणुप्पत्ती संघादजा णाम । ण च एदाओ दो वि एत्थ
अत्थि, वर्गणबहुत्ताभावादो । एवमेगसेडिवर्गणाणिरूवणा समत्ता ।

संपहि णाणासेडिवर्गणाणिरूवणा एवं चेव कायव्वा । का णाणासेडी णाम ?
सरिसधणियाणं मुत्त/हलोलिसमाणवंतीयो णाणासेडि णाम ।

एवं वर्गणाणिरूवणे त्ति समत्तमणुयोगद्वारं ।

चोदससु अणुयोगद्वारेसु दोणमणुयोगद्वाराणं परूवणं काऊण सेसवारसण-
मणुयोगद्वाराणं सुत्तकारेण किमट्ठं परूवणा ण कदा । ण ताव अजाणंतेण ण कदा;
चउवीसअणुयोगद्वारसरूवमहाकम्मपयडिपाहुडपारयस्स भूदबलिभयवंतस्स तदपरि-
ण्णाणविरोहादो । ण विस्सरणालुएण होतेण ण कदा; अप्पमत्तस्स तदसंभवादो

अन्य महास्कन्ध द्रव्यवर्गणा होती है । उसीमें एक आदि अनन्त परमाणु पुद्गलोंके आ जानेपर
संघातसे अन्य महास्कन्ध वर्गणा होती है । तथा एक साथ उपचय और अपचय होनेसे भेद-
संघातसे महास्कन्धद्रव्यवर्गणा होती है । इस प्रकार सर्वत्र तीन प्रकारसे भेद-संघातकी अर्थ
प्ररूपणा करनी चाहिए । उपरिम वर्गणाओंके भेदसे नीचे अपूर्व वर्गणाकी उत्पत्ति भेद जनित
कही जाती है और नीचेकी वर्गणाओंके समागमसे सदृशधनरूपसे अन्य वर्गणाकी उत्पत्ति
संघातज कही जाती है । परन्तु ये दोनों यहाँ पर नहीं हैं, क्योंकि, यहाँ पर बहुत वर्गणाओंका
अभाव है ।

इस प्रकार एकश्रेणिवर्गणानिरूपणा समाप्त हुई ।

नानाश्रेणिवर्गणानिरूपणा इसी प्रकार करनी चाहिए ।

शंका-नानाश्रेणि किसे कहते हैं ?

समाधान-सदृश धनवालोंकी मुक्ताफलोंकी पंक्तिके समान पंक्तिको नानाश्रेणि कहते हैं ।

इस प्रकार वर्गणानिरूपणा अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

शंका-सूत्रकारने चौदह अनुयोगद्वारोंमेंसे दो अनुयोगद्वारोंका कथन करके शेष बारह
अनुयोगद्वारोंका कथन किस लिए नहीं किया है । अज्ञानकार होनेसे नहीं किया है यह
कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, चौबीस अनुयोगद्वारस्वरूप महाकर्मप्रकृति प्राभूतके पारगामी
भगवान् भूतबलिको उनका अज्ञानकार माननेमें विरोध है । विस्मरणशील होनेसे नहीं किया
है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, अप्रमत्तका विस्मरणशील होना सम्भव नहीं है ।

❁ आ० प्रती ' सव्वत्थ भेदपरूवणा ' इति पाठः ।

❁ आ० प्रती ' दोणमणुयोगद्वाराणं

सुत्तकारेण ' इति पाठः ।

ति? न एस दोसो; पुव्वाइरियवक्खाणक्कमजाणावणट्ठं[❖] तप्परूवणाकरणादो किमट्ठमणुयोगद्वारा णाम तम्हि चेव[♣] तत्थतणसयलत्थपरूवणं संखित्तवयणकलावेण कुणंति? वचिजोगासवदुवारेण दुक्कमाणकम्मणिरोहट्ठं ।

तम्हा दोणमणुयोगद्वाराणं पुव्विल्लणं परूवणा देसामासिय त्ति काऊण सेसबारसणमणुयोगद्वाराणं कस्सामो । तं जहा एगसेडिवग्गणाधुवाधुवानुगमेण परमाणुपोगलदव्ववग्गणा किं धुवा किमद्धुवा ? धुवा, अदीदाणागदवट्ठमाणकालेसु एयपदेसियपरमाणुपोगलवग्गणविणासाभावादो । एवं संते एगपरमाणुस्स परमाणु-भावेण सव्वद्वमवट्ठणं पावदि त्ति भणिदे न एस दोसो; एक्कम्हि परमाणुम्हि विणट्ठे वि अण्णेसि तज्जादीणं परमाणूणं संभवेण एयपदेसियवग्गणाए धुवत्तविरोहादो एगसेडिपरूवणाए णाणासेडिपरमाणूणं कथं गहणं कीरदे? न एस दोसो; एगेणैव परमाणुणा एगसेडो[♣] घेप्पदि त्ति नियमाभावादो । दुपदेसियवग्गणप्पहुडि जाव धुव-खंधववग्गणे त्ति ताव एदाओ वग्गणाओ किं धुवाओ किमद्धुवाओ? एत्थ पुव्वं व परूवणा कायव्वा; धुवत्तं पडि भेदाभावादो । सांतरणिरंतरदव्ववग्गणाओ जाअ-

समाधान-यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, पूर्व आचार्योंके व्याख्यानके क्रमका ज्ञान करानेके लिए शेष बारह अनुयोगद्वारोंका कथन नहीं किया है ।

शंका-अनुयोगद्वार वहीपर उसके सकल अर्थका कथन संक्षिप्त वचनकलापके द्वारा किसलिए करते हैं ?

समाधान- वचनयोगरूप आसवके द्वारा प्राप्त होनेवाले कर्मोंका निरोध करनेके लिए अनुयोगद्वार सकल अर्थका संक्षिप्त वचनकलापके द्वारा कथन करते हैं ।

इसलिए पूर्वोक्त दो अनुयोगद्वारोंका कथन देशामर्षक है ऐसा ज्ञान कर शेष बारह अनुयोगद्वारोंका कथन करते हैं । यथा-एकश्रेणीवर्गणा ध्रुवाध्रुवानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गल द्रव्यवर्गणा क्या ध्रुव है या क्या अध्रुव है ? ध्रुव है, क्योंकि, अतीत, अनागत और वर्तमान कालमें एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलवर्गणाका विनाश नहीं होता ।

शंका-ऐसा होने पर एक परमाणुका परमाणुरूपसे सर्वदा अवस्थान प्राप्त होता है?

समाधान-यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, एक परमाणुके नष्ट होनेपर भी तज्जातीय अन्य परमाणुओंके सम्भव होनेसे एकप्रदेशी वर्गणाके ध्रुव होनेमें कोई विरोध नहीं आता ।

शंका-एकश्रेणिकी प्ररूपणामे नानाश्रेणिरूप परमाणुओंका ग्रहण कैसे करते हैं ?

समाधान-यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, इसी परमाणुसे एकश्रेणिका ग्रहण होता है ऐसा कोई नियम नहीं है ।

द्विप्रदेशी वर्गणासे लेकर ध्रुवस्कन्धवर्गणा तक ये वर्गणायें क्या ध्रुव हैं या क्या अध्रुव हैं ? यहां पहलेके समान कथन करना चाहिए, क्योंकि, ध्रुवत्वके प्रति कोई भेद नहीं है । जो

❖ ता० प्रती '—वक्खाणक्कमेजाणावणट्ठं' इति पाठः । ♣ आ० प्रती 'णामहि चेव' इति पाठः ।

❧ प्रतिपु 'सेसबारसणिमणियोग—' इति पाठः । ♣ ता० प्रती 'एगएगसेडो' इति पाठः ।

असुण्णाओ ताओ असुण्णत्तणेण किं धुवाओ किमद्धुवाओ? अद्धुवाओ । कुदो ? असुण्णभावेण सब्बकालं तासिमवट्ठाणाभावादो । एत्थ सरिसधणियक्खंधेसु सध्वेसु विणट्ठेसु वग्गणाभावादो । एक्कम्हि वि खंधे संते वग्गणा अत्थि चेवे त्ति घेत्तवं । सुण्णाओ सुण्णत्तणेण किं धुवाओ किमद्धुवाओ ? अद्धुवाओ । कुदो ? सुण्णाओ णाम परमाणुविरहिद्वग्गणाओ ; तासि सुण्णभावेण अवट्ठाणाभावादो । हेट्ठिमवग्गणाओ संघादेण उवरिमवग्गणाओ भेदेण जं तेण कालेण सुण्णवग्गणमसुण्णं कुणति त्ति भणिदं होदि । सुण्णाओ वि असुण्णाओ वि वग्गणाओ वग्गणादेसेण धुवाओ । को वग्गणादेसो णाम ? वग्गणाणं संभवसामण्णं वग्गणादेसो णाम । तेण वग्गणादेसेण सब्बाओ सब्बकालमत्थि त्ति धुवाओ । पत्तेयसरीरवग्गणाओ जाओ भवसिद्धियपा-ओग्गाओ सजोगि-अजोगीसु लब्धमाणाओ ताओ सुण्णाओ वि असुण्णाओ वि । कुदो ? सब्बजीवेहि अणंतगुणमेत्तसजोगिअजोगिपाओगपत्तेयसरीरवग्गणट्ठाणेसु वट्ठमाणकाले संखेज्जाणं चेव जीवाणमुवलंभादो । ण च संखेज्जेहि जीवेहि सब्ब-जीवेहि अणंतगुणमेत्तपत्तेयसरीरवग्गणट्ठाणाणि वट्ठमाणकाले आवूरिज्जंति ; विरोहादो । एत्थ जाओ सुण्णाओ ताओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ ; सब्बकालमेदोए वग्गणाए सुण्णाए चेव होद्वमिदि णियमाभावादो । जाओ असुण्णाओ ताओ वि असुण्णत्त-णेण अद्धुवाओ ; तासिमेगसरूवेण अवट्ठाणाभावादो ।

सान्तरनिरन्तरद्रव्यवर्गणाएँ अशून्यरूप हैं वे अशून्यरूपसे क्या ध्रुव हैं या क्या अध्रुव हैं ? अध्रुव हैं, क्योंकि, अशून्यरूपसे उनका सदा काल अवस्थान नहीं रहता । सदृश धनवाले सब स्कन्धोंके वितण्ड होनेपर वर्गणाका अभाव होता है । तथा एक भी स्कन्धके रहनेपर वर्गणा है ही ऐसा अर्थ यहां ग्रहण करना चाहिए । शून्य वर्गणाएँ शून्यरूपसे क्या ध्रुव हैं या क्या अध्रुव हैं ? अध्रुव हैं, क्योंकि शून्यका अर्थ है परमाणुओंसे रहित वर्गणायें, किन्तु उनका शून्यरूपसे सदा अवस्थान नहीं रहता । नीचेकी वर्गणाएँ संघातसे और ऊपरकी वर्गणाएँ भेदसे उस कालमें शून्यवर्गणाको अशून्यरूप करती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । शून्य वर्गणाएँ और अशून्य वर्गणाएँ भी वर्गणादेशकी अपेक्षा ध्रुव हैं ।

शंका - वर्गणादेश किसे कहते हैं ?

समाधान - वर्गणाओंके सम्भव सामान्यको वर्गणादेश कहते हैं ।

उस वर्गणादेशकी अपेक्षा सब वर्गणाएँ सर्वदा हैं इसलिए ध्रुव हैं । जो भव्योंके योग्य प्रत्येकशरीरवर्गणाएँ सयोगी और अयोगी जीवोंके प्राप्त होती हैं वे शून्यरूपा भी हैं और अशून्यरूप भी हैं क्योंकि, सब जीवोंसे अनन्तगुणे सयोगी-अयोगीप्रायोभ्य प्रत्येकशरीर वर्गणास्थानोंमेंसे वर्तमान कालमें संख्यात जीव ही उपलब्ध होते हैं । यह कहना कि संख्यात जीव वर्तमान कालमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे प्रत्येकशरीरवर्गणास्थानोंको भर देंगे, ठीक नहीं है, क्योंकि ऐसा होनेमें विरोध आता है । यहां जो वर्गणायें शून्य हैं वे शून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, सर्वदा इस वर्गणाको शून्यरूप ही होनी चाहिए ऐसा कोई नियम नहीं है । जो वर्गणाएँ अशून्यस्वरूप हैं वे अशून्यरूपसे अध्रुव हैं क्योंकि उन वर्गणाओंका एकरूपसे अवस्थान नहीं रहता ।

एदं संभवं पडुच्च परूविदं । वत्ति पडुच्च पुण भणमाणे सजोगि-अजोगि-पाओग्गपत्तेयसरीरवग्गणट्टाणेषु अणंताहि वग्गणाहि सुण्णभावेण अवट्ठिदाहि होदव्वं; तिसु वि कालेषु सजोगि-अजोगीहि अच्छुत्ताणंतट्टाणसंभवादो । अभवसिद्धिपपाओग्गाओ जाओ पत्तेयसरीरवग्गणाओ सुण्णाओ ताओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ; सुण्णाणं पि वग्गणाणं उवरिमहेट्ठिमवग्गणाणं भेदसंघादेण पच्छा असुण्णत्तुवलंभादो । एदं पि संभवं पडुच्च परूविदं । वत्ति पडुच्च पुण गिहालिज्जमाणे सुण्णाओ^१ सुण्णत्तणेण अवट्ठिदाओ अत्थि; पुढवि-आउ-तेउ-वाउकाइएहि देव-णेरइय-सजोगि-अजोगि-जीवेहिय असखेज्जलोगमेत्तेहि सब्बजीवेहि अणंतगुणमेत्तपत्तेयसरीरवग्गणट्टाणाण-मावरणे संभवाभावादो । असुण्णाओ असुण्णत्तणेण अद्धुवाओ; पत्तेयसरीरवग्गणद-व्वाणं वट्ठिहाणीहि विणा सब्बत्थमवट्टाणाभावादो । वग्गणादेसेण पुण पत्तेयसरीरव-ग्गणाओ सव्वाओ धुवाओ होंति; सांतरणिरंतरवग्गणाणं व सब्बेसि पत्तेयसरीरवग्ग-णट्टाणाणं कम्हि वि काले सुण्णत्ताणुवलंभादो ।

बादरणिगोदवग्गणाओ जाओ भवसिद्धिपपाओग्गाओ खीणकसायम्मि लब्भ-माणाओ ताओ सुण्णाओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ; सुण्णाणं सुण्णभावेण सब्बकालम-वट्टाणाभावादो । एदं संभवं पडुच्च परूविदं । वत्ति पडुच्च पुण भणमाणे सुण्णाओ सुण्णत्तणेण धुवाओ अत्थि; संखेज्जाणं खीणकसायाणं सब्बजीवेहि अणंतगुणमेत्तखीण-

यह सम्भवकी अपेक्षा कहा है । परन्तु व्यक्तिकी अपेक्षा कथन करने पर सयोगी और अयोगीप्रायोग्य प्रत्येकशरीरवर्गणास्थानोंमेंसे अनन्त वर्गणार्थे शून्यरूपसे अवस्थित होनी चाहिए, क्योंकि, तीनों ही कालोंमें सयोगी और अयोगी जीवोंके द्वारा नहीं छुए गये अनन्त स्थान सम्भव हैं । तथा अभव्योंके योग्य जो प्रत्येकशरीरवर्गणार्थे शून्यरूप हैं वे शून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, शून्यरूप वर्गणाओंका भी उपरिम और अधस्तन वर्गणाओंके भेद-संघातसे बादमें अशून्यरूपसे अद्भाव पाया जाता है । यह भी सम्भवकी अपेक्षा कहा है । परन्तु व्यक्ति की अपेक्षा देखने पर शून्य वर्गणार्थे शून्यरूपसे अवस्थित हैं, क्योंकि, पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, देव, नारकी, सयोगी और अयोगी इन असंख्यात लोकप्रमाण सब जीवोंके द्वारा अनन्तगुणे प्रत्येकशरीरवर्गणास्थानोंका व्याप्त करना सम्भव नहीं है । अशून्य वर्गणार्थे अशून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, प्रत्येकशरीरवर्गणाद्रव्योंका वृद्धि और हानिके बिना सर्वदा अवस्थान नहीं पाया जाता है । परन्तु वर्गणादेशकी अपेक्षा सब प्रत्येकशरीर वर्गणार्थे ध्रुव हैं, क्योंकि, सान्तरनिरन्तरवर्गणाओंके समान सब प्रत्येकशरीरवर्गणास्थानोंका किसी भी कालमें शून्यपना नहीं पाया जाता ।

बादरनिगोदवर्गणार्थे जो कि भव्योंके योग्य क्षीणकषाय गुणस्थानमें उपलब्ध होती हैं वे शून्यरूप होकर शून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, शून्य वर्गणाओंका शून्यरूपसे सदा अवस्थान नहीं पाया जाता । यह सम्भवकी अपेक्षा कहा है । परन्तु व्यक्तिकी अपेक्षा कथन करने पर शून्य वर्गणार्थे शून्यरूपसे ध्रुव हैं, क्योंकि, संख्यात क्षीणकषाय जीवोंका सब जीवोंसे अनन्तगुणे

कसायपाओग्गबादरणिगोदट्टाणेसु तिसु वि कालेसु वृत्तिविरोहादो । सुण्णाओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ वि अत्थि; सुण्णाणं ट्टाणाणं केसि पि कम्हि वि काले असुण्णत्तुवलंभादो । असुण्णाओ असुण्णत्तणेण अद्धुवाओ; खीणकसायपाओग्गबादरणिगोदवर्गणाणं सव्वकालमवट्टाणाभावादो । भावे वा ण कस्स वि णिव्वई होज्ज; खीणकसायम्मि बादरणिगोदवर्गणाए संतीए केवलणाणुप्पत्तिविरोहादो । अभवसिद्धियपाओग्गाओ जाओ सुण्णाओ ताओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ । कुदो ? सुण्णाणं पि उव-रिमहेट्ठिमवर्गणाणं भेदसंघादेण कालंतरे असुण्णत्तुवलंभादो । एदं संभवं पडुच्च परूविदं । वत्ति पडुच्च पुण भण्णमाणे सुण्णाओ धुवाओ वि अत्थि । कुदो? असंखेज्जलोगमेत्तबादरणिगोदवर्गणाणं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तसेचीयट्टाणेसु अदीदकाले वि वृत्तिविरोहादो । तं जहा एक्कम्हि अदीदसमए जवि असंखेज्जलोगमेत्ताणि बादरणिगोदट्टाणाणि लभंति तो सव्विस्से अदीदट्टाए किं लभामो त्ति फलगुणिदिच्छाए पमाणेणोवट्ठिदाए अदीदकालादो असंखेज्जलोगगुणमेत्ताणि चेव बादरणिगोदवर्गणासु असुण्णट्टाणाणि होति । अण्णाणि सव्वट्टाणाणि सुण्णाणि चेव । तेण सुण्णाओ सुण्णत्तणेण धुवाओ । विग्गहगदीए वट्टमाणा बादरणिगोदजीवा किं बादरणिगोदवर्गणासु पदंति आहो पत्तेयसरीरवर्गणासु त्ति? ण ताव पत्तेयसरीरवर्गणासु पदंति; णिगोदजीवाणं पत्तेयसरीरजीवत्तविरोहादो पत्तेयसरीरवर्गणाए असंखेज्जलोगपमाणत्तं

क्षीणकषायप्रायोग्य बादरनिगोदस्थानोंमें तीनों ही कालोंमें वृत्ति माननेमें विरोध आता है । तथा शून्यवर्गणायें शून्यरूपसे अध्रुव भी हैं, क्योंकि, कोई भी शून्य स्थान किसी भी समय अशून्यरूप होकर उपलब्ध होते हैं । अशून्य वर्गणायें अशून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, क्षीणकषायप्रायोग्य बादरनिगोदवर्गणाओंका सर्वदा अवस्थान नहीं पाया जाता । यदि उनका अवस्थान होता है तो किसी भी जीवको मोक्ष नहीं हो सकता है, क्योंकि, क्षीणकषायमें बादरनिगोदवर्गणाके रहते हुए केवलज्ञानकी उत्पत्ति होनेमें विरोध है । अभव्योंके योग्य जो शून्य वर्गणायें हैं वे शून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, शून्य वर्गणाओंका भी उपरिम और अधस्तन वर्गणाओंके भेद-संघातसे कालान्तरमें अशून्यपना पाया जाता है । यह सम्भवकी अपेक्षा कहा है । परन्तु व्यक्तिकी अपेक्षा कथन करने पर शून्य वर्गणायें ध्रुव भी हैं, क्योंकि असंख्यात् लोकप्रमाण बादरनिगोदवर्गणाओंके सब जीवोंसे अनन्तगुणे सेचीयस्थानोंमें अतीत कालम भी वृत्ति होनेमें विरोध है । खुलासा इस प्रकार है-एक अतीत समयमें यदि असंख्यात् लोकप्रमाण बादर निगोदस्थान पाये जाते हैं तो सब अतीत कालमें कितने प्राप्त होंगे इस प्रकार फलसे गुणित इच्छाकी प्रमाणसे भाजित करनेपर अतीत कालसे असंख्यात् लोकगुणे बादर निगोदवर्गणाओंमें अशून्यस्थान प्राप्त होते हैं । अन्य सब स्थान शून्य ही हैं । इसलिए शून्य वर्गणायें शून्यरूपसे ध्रुव हैं ।

शंका-विग्रहगतिमें विद्यमान बादर निगोद जीव क्या बादरनिगोदवर्गणाओंमें गर्भित हैं या प्रत्येकशरीरवर्गणाओंमें गर्भित हैं? प्रत्येकशरीरवर्गणाओंमें तो गर्भित हो नहीं सकते, क्योंकि, एक तो निगोद जीवोंको प्रत्येकशरीर जीव होनेमें विरोध है, दूसरे, प्रत्येक

मोत्तूण आणंतियप्पसंगादो च । तदो बादरणिगोदवगणाए वट्टमाणकाले अणंताए होदव्वमिदि? ण एस दोसो; विग्गहगदीए वि एगबंधणबद्धअणंताणंतबादरणिगोद-जीवेहि एगबादरणिगोदवगणप्पत्तीदो वट्टमाणकाले बादरणिगोदवगणाओ असंखे-ज्जलोगमेत्ताओ चेवे त्ति घेत्तव्वं सुण्णाओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ वि उवरिमहेट्टिम-वगणाणं भेदसंघादेण सुण्णाणं पि कालंतरे असुण्णत्तुवलंभादो । असुण्णाओ असुण्ण-त्तणेण अद्धुवाओ । कुदो ? वगणाणमेगसरूवेण सव्वद्धमवट्टाणाभावादो । वग-णादेसेण पुण सव्वावो धुवाओ; अणंताणंतवगणाणं सव्वद्धमवलंभादो ।

सुहुमणिगोदवगणाओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ सुण्णवगणाहि सव्वकालं सुण्णत्तणेणैव अच्छिदव्वमिदि णियमाभावादो । एदं संभवं पडुच्च परूविदं । वत्ति पडुच्च पुण भण्णमाणे सुण्णाओ सुण्णत्तणेण धुवाओ वि अत्थि; वट्टमाणकाले असं-खेज्जलोगमेत्तसुहुमणिगोदवगणाहि अदीदकालेण वि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तट्टणा-वूरणं पडि संभवाभावादो । कारणं बादरणिगोदाणं व वत्तव्वं । अद्धुवाओ वि; उवरिमहेट्टिमवगणाणं भेदसंघादेण सुण्णाण पि कालंतरे असुण्णत्तुवलंभादो । असु-णाओ सुहुमणिगोदवगणाओ असुण्णत्तणेण अद्धुवाओ । कुदो? सुहुमणिगोदवगणाण-मवट्टिदसरूवेण अवट्टाणाभावादो ।

शरीरवर्गणाएँ असख्यात लोकमात्र प्रमाणको छोड़कर अनन्त हो जायँगी । इसलिए बादर निगोदवर्गणा वर्तमान कालमें अनन्त होनी चाहिए ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, विग्रहगतिमें भी एक बन्धनमें बँधे हुए अनन्तानन्त बादरनिगोद जीवोंकी एक बादरनिगोदवर्गणा बन जाती है । इसलिए वर्तमान कालमें बादरनिगोदवर्गणाएँ असख्यात लोकप्रमाण ही होती हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिए ।

शून्य वर्गणाएँ शून्यरूपसे अध्रुव भी हैं, क्योंकि, उपरिम और अधस्तन वर्गणाओंके भेद-संघातसे शून्य वर्गणाएँ भी कालान्तरमें अशून्यरूप होकर उपलब्ध होती है । अशून्य वर्गणाएँ अशून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, वर्गणाओंका एकरूपसे सदा अवस्थान नहीं पाया जाता, वर्गणादेशको अपेक्षा तो सब वर्गणाएँ ध्रुव है, क्योंकि, अनन्तानन्त वर्गणाएँ सर्वदा उपलब्ध होती हैं ।

सूक्ष्मनिगोदवर्गणाएँ शून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, शून्य वर्गणाओंका सर्वदा शून्यरूपसे ही रहना चाहिए ऐसा कोई नियम नहीं है । यह सम्भवकी अपेक्षा कहा है । परन्तु व्यक्तिकी अपेक्षा कथन करने पर शून्य वर्गणाएँ शून्यरूपसे ध्रुव भी हैं क्योंकि, वर्तमान कालमें असख्यात लोकप्रमाण सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंके द्वारा पूरे अतीत कालमें भी सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थानोंका पूरा करना सम्भव नहीं है । कारण बादर निगोद जीवोंके समान कहना चाहिए । वे अध्रुव भी हैं, क्योंकि, उपरिम और अधस्तन वर्गणाओंके भेद संघातसे शून्य वर्गणाएँ भी काला-न्तरमें अशून्यरूप होकर उपलब्ध होती हैं । अशून्य सूक्ष्मनिगोदवर्गणाएँ अशून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंका अवस्थितरूपसे अवस्थान नहीं पाया जाता ।

महाखंधद्ववग्गणाओ सुण्णाओ सुणत्तणेण अद्धुवाओ; सुण्णाहि सुण-
भावेणेव अच्छिद्ववमिदि नियमाभावादो । एसो संभवणिद्देसो । वसि पडुच्च पुण
भण्णमाणे सुण्णाओ धुवाओ वि अत्थि; अदीदकाले समयं पडि एक्केक्के महाखंध-
ट्टाणे समुप्पण्णे विसव्वमिह अदीदकाले अदीदकालमेत्ताणि चेव असुण्णट्टाणाणि लद्धूण
सेससव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तमहाखंधसेचीयट्टाणाणि; सुणभावेण अवट्टाणुवलंभादो ।
अद्धुवाओ वि अत्थि; भेदसंघादेण केण वि कालेण सुण्णाणं पि असुणत्तु-वल
भादो । असुण्णाओ असुणत्तणेण अद्धुवाओ । कुदो? महाखंधवग्गणाणमेगसरू-
वेण सव्वकालमवट्टाणाभावादो । एवं चेव णाणासेडिधुवाधुवानुगमो वि वत्तव्वो; विसे-
साभावादो । एवं धुवाधुवानुगमो त्ति समसमणुयोगहारं ।

एगसेडिवग्गणासांतरणिरंतराणुगमेण परमाणुपोगलद्ववग्गणप्पहुडि जाव धुवखं-
धद्ववग्गणे त्ति ताव एदाओ वग्गणाओ कि सांतराओ कि णिरंतराओ कि सांतर-
णिरंतराओ? णिरंतराओ कुदो? अणंतरेण विणा मुत्ताहलोलि व्व अवट्टाणादो । अच्चि-
त्तअद्धुवखंधद्ववग्गणाओ कि सांतराओ कि णिरंतराओ कि सांतरणिरंतराओ?
सांतरणिरंतराओ, कत्थ वि णिरंतरेण कत्थ वि सांतरेण वग्गणाणमवट्टाणुवलंभादो ।
पुणो तिससे सांतरणिरंतरवग्गणाए आइरियाणमविरुद्धवदेसबलेण इमा परवणा

शून्यरूप महास्कन्धद्रव्यवर्गणायें शून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, शून्य वर्गणाओंको शून्य-
रूपसे ही रहना चाहिए ऐसा कोई नियम नहीं है । यह सम्भवकी अपेक्षा निर्देश किया है परन्तु
व्यक्तिकी अपेक्षा कथन करने पर शून्य वर्गणायें ध्रुव भी हैं, क्योंकि, अतीत कालके प्रत्येक समय
में एक एक महास्कन्धस्थानके उत्पन्न होनेपर भी सब अतीत कालमें अतीत कालमात्र ही अशू-
न्यस्थान प्राप्त होकर शेष सब जीवोंसे अनन्तगुणे महास्कन्ध सेचीयस्थान होते हैं, क्योंकि, उनका
शून्यरूपसे अवस्थान पाया जाता है । वे अध्रुव भी हैं, क्योंकि, भेद संघातके द्वारा किसी भी
कालमें शून्य वर्गणायें भी अशून्यरूप होकर उपलब्ध होती है । अशून्य वर्गणायें अशून्यरूपसे अध्रुव
हैं, क्योंकि, महास्कन्धवर्गणाओंका सर्वदा एकरूपसे अवस्थान नहीं पाया जाता । इसी प्रकार
नानाश्रेणिध्रुवाध्रुवानुगमका भी कथन करना चाहिए, क्योंकि, इससे उपमें कोई विशेषता नहीं है ।

इस प्रकार ध्रुवाध्रुवानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

एकश्रेणिवर्गणासान्तरनिरन्तरानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणासे लेकर ध्रुव-
स्कन्धद्रव्यवर्गणा तक क्या सान्त हैं, क्या निरन्तर हैं या क्या सान्तर-निरन्तर हैं? निरन्तर
हैं, क्योंकि, अन्तरके बिना मुक्ताफलोंकी पंक्तिके समान वे अवस्थित हैं । अचित्त अध्रुवस्क-
न्धद्रव्यवर्गणायें क्या सान्तर हैं, क्या निरन्तर हैं या क्या सान्तर-निरन्तर हैं? सान्तर-
निरन्तर हैं, क्योंकि, कहीं पर निरन्तररूपसे और कहीं पर सान्तररूपसे वे वर्गणायें
उपलब्ध होती है । पुनः उस सान्तरनिरन्तवर्गणाकी आचार्योंके विरोधरहित उपदेशके

❖ ता० प्रती 'सांतरणिरंतराओ (कि सांतरणिरंतर) सांतरणिरंतराओ आ० प्रती 'सान्तर-
णिरंतराओ सांतरणिरंतर सांतरणिरंतराओ ' इति पाठः ।

कोरदे । तं जहा - तत्थ जासि ॐ वग्गणाणं दोसु वि पासेसु सुण्णाओ मज्जे एक्का
 चेव वग्गणा असुण्णा तासि द्विविदसलागाओ थोवाओ । जासि दोसु वि पासेसु
 सुण्णाओ होदूण मज्जे गिरंतरं दोहो ॥ असुण्णवग्गणाओ होंति तासि द्विविदसलागाओ
 अणंतगुणाओ जासि दोसु ॥ वि पासेसु सुण्णाओ होदूण मज्जे गिरंतरं तिण्णि तिण्णि
 असुण्णवग्गणाओ होंति तासि द्विविदसलागाओ अणंतगुणाओ । एवं चत्तारि चत्तारि
 पंच पंच छ छ सत्त सत्त अट्ठ अट्ठ णव णव दस दस संखेज्जाओ संखेज्जाओ असंखेज्जाओ
 असंखेज्जाओ गिरंतरवग्गणाओ । एदासिमुच्चिणिदूण द्विविदसलागाओ अणं रहेट्ठिमस-
 लागाहितो पुध पुध अणंतगुणाओ । तदो उभयपासेसु सुण्णाओ होदूण मज्जे जाओ
 गिरंतरमणंताओ वग्गणाओ तासि द्विविदसलागाओ अणंतगुणाओ । एवमणंतानंतवग्ग-
 णाणं द्विविदसलागाओ अणंतरहेट्ठिमहेट्ठिमसलागाहितो अणंतगुणक्कमेण अणंतरद्धानं
 गच्छंति । तदो उवरिमअणंताणं वग्गणाणं उभयदिसासु सुण्णाणं द्विविदसलागाओ अणं-
 तरहेट्ठिमहेट्ठिमसलागाहितो असंखेज्जगुणाओ असंखेज्जगुणाओ होदूण गच्छंति जाव अणं
 तमद्धानं गदं ति । तदो उवरिं संखेज्जगुणाओ संखेज्जगुणाओ होदूण द्विविदसलागाओ गि-
 रंतरं गच्छंति जाव अणं अणंतमद्धानं ॐ गदं ति । तेण परं संखेज्ज ॥ दिभागम्भहियाओ

बलसे यह प्ररूपणा करते हैं । यथा—उनमें जिन वर्गणाओंके दोनों ही पार्श्वभागोंमें शून्य वर्गणायें हैं और मध्यमें एक ही वर्गणा अशून्यरूप है उनकी स्थापित की गई शलाकायें स्तोक हैं । जिन वर्गणाओंके दोनों पार्श्वभागोंमें शून्य वर्गणायें हैं और मध्यमें निरन्तर दो दो अशून्य वर्गणायें हैं उनकी स्थापित की गई शलाकायें अनन्तगुणी हैं । जिन वर्गणाओंके दोनों ही पार्श्वभागोंमें शून्य वर्गणायें हैं और मध्यमें निरन्तर तीन तीन अशून्य वर्गणायें हैं उनकी स्थापित की गई शलाकायें अनन्तगुणी हैं । इस प्रकार चार चार, पाँच पाँच, छह छह, सात सात, आठ आठ, नौ नौ, दस दस, संख्यात संख्यात और असंख्यात असंख्यात जो निरन्तर वर्गणायें हैं उनकी अलग अलग करके स्थापित की गई शलाकायें अनन्तर अधस्तन शलाकाओं से पृथक् पृथक् अनन्तगुणी हैं । अनन्तर दोनों पार्श्वभागोंमें शून्य वर्गणायें होकर मध्यमें जो निरन्तर अनन्त वर्गणायें हैं उनकी स्थापित की गई शलाकायें अनन्तगुणी हैं । इसी प्रकार अनन्तानन्त वर्गणाओंकी स्थापित की गई शलाकायें अनन्तर अधस्तन अधस्तन शलाकाओंसे अनन्तगुणित क्रमसे अनन्तर स्थानकों जाती हैं । तदनन्तर उवरिम अनन्त वर्गणाओंकी दोनों दिशाओं में शून्य वर्गणाओंकी स्थापित की गई शलाकायें अनन्तर अधस्तन अधस्तन शलाकाओंसे असंख्यातगुणी असंख्यातगुणी होकर अनन्त स्थानोंके व्यतीत होनेतक जाती हैं । तदनन्तर आगे स्थापित की गई शलाकायें संख्यातगुणी संख्यातगुणी होकर अन्य अनन्त स्थानोंके व्यतीत होने

❁ ता० प्रती 'तत्थ ता (जा) सि' अ० का० प्रत्योः 'तत्थ जासि' इति पाठः । ❁ म० प्रतिपाठोऽयम् । अ० का० प्रत्योः 'गिरंतरं सांतरगिरंतरं दोहो—' इति पाठः । ❁ ता० प्रती 'अणंतगुणाओ ता (जा) सि' दोसु अ० का० प्रत्योः 'अणंतगुणाओ तासि दोसु' इति पाठः । ❁ ता० प्रती 'जाव अणंतमद्धानं' इति पाठः । ❁ अ आ प्रत्योः 'संखेज्जदि' इति पाठः ।

संखेज्जदिभागव्वहियाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव अणमणंतमद्धानं गदं ति । तेण परमसंखेज्जदिभागव्वहियाओ असंखेज्जदिभागव्वहियाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव अणंतमद्धानं गदं ति । तेण परमणंतभागव्वहियाओ अणंतभागव्वहियाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव एदाओ अणंतमद्धानं गदं ति । तेण परमणंतभागहीणाओ अणंतभागहीणाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव अणं अणंतमद्धानं गदं ति । तेण परमसंखेज्जदिभागहीणाओ असंखेज्जदिभागहीणाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव अणमणंतमद्धानं गदं ति । तेण परं संखेज्जदिभागहीणाओ संखेज्जगुणहीणाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव अणमणंतमद्धानं गदं ति । तेण परं संखेज्जगुणहीणाओ संखेज्जगुणहीणाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव अणं अणंतमद्धानं गदं ति । तेण परमणंतगुणहीणाओ अणंतगुणहीणाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव अणमणंतमद्धानं गदं ति । एवमसुणवग्गणानमेगादिएगुत्तराणं उभयपाससुण्णाणं जाओ द्विदसलागाओ ताओ छव्विहाए वड्ढीए छव्विहाए हाणीए च अवट्ठाणं कुणंति ति घेत्तव्वं । पत्तेयसरीरव्वखंधव्ववग्गणाओ भवसिद्धिपाओगाओ जाओ सजोगि-अजोगीसु लब्धमाणाओ ताओ सांतराओ चैव । कुदो? सव्वजीवेहि अणंत-गुणमेत्तट्ठाणेषु केवलपाओगंमु संखेज्जाणं केवलीणं णिरं रमवट्ठाणविरोहादो । तम्हा

तक जाती हैं । उससे आगे अन्य अनन्त स्थानोंके व्यतीत होने तक संख्यातभाग अधिक संख्यात भाग अधिक होकर निरन्तर शलाकाएँ जाती हैं । उससे आगे अनन्त स्थानोंके व्यतीत होने तक असंख्यातवेंभाग अधिक असंख्यातवेंभाग अधिक होकर निरन्तर शलाकाएँ जाती हैं, उससे आगे अनन्त स्थानोंके जाने तक अनन्तवें भाग अधिक अनन्तवेंभाग अधिक होकर निरन्तर जाती हैं । उससे आगे अन्य अनन्त अध्वानके व्यतीत होनेतक अनन्तवेंभाग हीन अनन्तवेंभाग हीन होकर निरन्तर जाती हैं । उससे आगे अन्य अनन्त अध्वानके व्यतीत होनेतक असंख्यातवें भाग हीन असंख्यातवें भाग हीन होकर निरन्तर जाती हैं । उससे आगे अन्य अनन्त अध्वानके व्यतीत होने तक संख्यातवें भाग हीन संख्यातवें भाग हीन होकर निरन्तर जाती हैं । उससे आगे अन्य अनन्त अध्वानके व्यतीत होने तक संख्यातगुणी हीन संख्यातगुणी हीन होकर निरन्तर जाती हैं । उससे आगे अन्य अनन्त अध्वानके व्यतीत होने तक असंख्यातगुणी हीन असंख्यातगुणी हीन होकर निरन्तर जाती हैं । उससे आगे अन्य अनन्त अध्वानके व्यतीत होने तक अनन्तगुणी हीन अनन्तगुणी हीन होकर निरन्तर जाती हैं । इस प्रकार एकादि एकोत्तर अशून्य वर्गणाओंके उभय पार्श्वमें शून्य वर्गणाओंकी जो स्थापित की गई शलाकायें हैं वे छह प्रकार की वृद्धि और छह प्रकारकी हानिके द्वारा अवस्थान करती हैं ऐसा अर्थ यहाँ ग्रहण करना चाहिए । भव्योंके योग्य जो प्रत्येक शरीरस्कन्धद्रव्यवर्गणायें सयोगी और अयोगी गुणस्थानमें लब्धमान हैं वे सान्तर ही हैं, क्योंकि, सब जीवोंसे अनन्तगुणे केवलप्रायोग्य स्थानोंमें संख्यात केवलियोंके निरन्तर रहनेमें विरोध है । इसलिए वर्तमान कालमें विवक्षित स्थान सान्तर ही हैं । अतीत कालमें भी केवलियोंके द्वारा

वट्टमाणकाले अण्णिवट्टाणाणि सांतराणि चेव । अदीदकाले वि केवलीहि फोसिदपत्ते-
यसरीरवगणट्टाणाणि सांतराणि चेव । कुदो? सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तकेवलपा-
ओगपत्तेयसरीरट्टाणेसु सिद्धेहिं तो असंखेज्जगुणमेत्ताणमेवट्टाणाणं* फासुवलंभादो ।
तं जहा-एकस्स सिद्धस्स जदि देसूणपुव्वकोडिमेत्ताणि* चेव पत्तेयसरीरट्टाणाणि
लभंति तो सव्वेसि सिद्धाणं किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए
सिद्धेहिं तो असंखेज्जगुणमेत्ताणि चेव जीवफोसिदट्टाणाणि लभंति । एवं पि च णत्थि;
सव्वेसि पुव्वकोडिमेत्ताउअभावादो । सव्वेसिमपुणरुत्तट्टाणाणि चेव होति त्ति
णियमाभावादो च ।

पस्समाणे वि सांतराओ । को पस्समाणकालो णाम? एस कालो । कथं तत्थ सांत-
राओ वुच्चदे? सव्वकालमदीदट्टा सव्वजीवरासीए अणंतिमभागो; अण्णहा संसारिजी-
वाणमभावप्पसंगादो । सव्वकालमदीदकालस्स सिद्धा असंखेज्जदिभागो चेव; छम्मास-
मंतरिय णिव्वुइगमणणियमादो । एक्केक्कस्स सिद्धस्स देसूणपुव्वकोडिमेत्ताणि चेव
पत्तेयसरीरट्टाणाणि उक्कस्सेण लभंति; केवलिविहारकालस्स देसूण पुव्वकोडिमेत्तस्सेव
उवलंभादो । तम्हा पस्समाणेहि सांतराओ चेवेत्ति घेत्तव्वं । सेचीयाए पुण सव्वट्टाणाणि
निरंतराणि । एवं चेव ट्टाणं जीवसहिदं होदि एदाणि ण होति चेवे त्ति णियमा-

स्पर्श किये गये प्रत्येकशरीरवर्णणास्थान सान्तर ही हैं, क्योंकि, सब जीवोंसे अनन्तगुणे केवल-
प्रायोग्य प्रत्येकशरीरस्थानोंमें मात्र सिद्धोंसे असंख्यातगुणे स्थानोंका स्पर्श उपलब्ध होता है ।
यथा-एक सिद्धके यदि पूर्वकोटिमात्र प्रत्येकशरीरस्थान उपलब्ध होते हैं तो सब सिद्धोंके कितने
प्राप्त होंगे इस प्रकार फल गुणित इच्छामें प्रमाणका भाग देने पर सिद्धोंसे असंख्यातगुणे स्थान
ही जीवोंके द्वारा स्पर्श किये गये पाये जाते हैं पर यह भी नहीं है, क्योंकि, एक तो सबके एक
पूर्वकोटिप्रमाण आयु नहीं पाई जाती, दूसरे सब जीवों के अपुनरुक्त स्थान ही होते हैं ऐसा कोई
नियम नहीं है ।

दृश्यमान (वर्तमान) कालमें भी सान्तर हैं ।

शंका-दृश्यमान काल किसे कहते हैं ?

समाधान-यह अर्थात् वर्तमान कालको दृश्यमान काल कहते हैं ।

शंका-इसमें वर्णणार्थ सान्तर कैसे कही जाती हैं ?

समाधान-सर्वदा अतीत काल सब जीव राशिके अनन्तवें भागप्रमाण रहता है, अन्यथा
सब जीवोंके अभाव होनेका प्रसंग आता है ।

सिद्ध जीव सर्वदा अतीत कालके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं, क्योंकि, छह
महीनेके अन्तरसे मोक्ष जानेका नियम है । तथा एक एक सिद्ध जीवके उत्कृष्टसे कुछ कम एक
एक पूर्वकोटि कालमात्र प्रत्येकशरीरस्थान प्राप्त होते हैं, क्योंकि, केवलीका विहार काल कुछ
कम एक पूर्वकोटि मात्र ही उपलब्ध होता है । इसलिए पश्यमान कालमें वर्णणार्थ सान्तर ही
होनी है, ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए । परन्तु सेचीयकी अपेक्षा सब स्थान निरन्तर होते
हैं, क्योंकि, यह स्थान ही जीवसहित होता है और ये स्थान जीवसहित नहीं होते हैं ऐसा कोई

भावादो । अभवसिद्धियपाओग्गाओ जाओ पुढविद्यादिचत्तारिकाएसु लब्धमाणाओ ताओ वट्टमाणकाले सांतराओ । कुदो? वट्टमाणकाले पत्तेयसरीरवग्गणाओ उक्कस्सेण असंखेज्जलोगमेत्तीओ चेव होंति त्ति णियमादो । विग्गहगदीए वट्टमाणा अणंता जीवा पत्तेयसरीरवग्गणाए अंतो णिवदंति त्ति पत्तेयसरीरवग्गणाओ अणंता त्ति किण्ण घेप्पदे? ण; णिगोदणामकम्मोदएण बादरणिगोदत्तं सुहुमणिगोदत्तं च पत्ताणं पत्तेयसरीरवग्गणत्तविरोहादो । विग्गहगदीए वट्टमाणानां अणुदिण्णपत्तेयसरीरणामकम्माणं कथं पत्तेयसरीरत्तमिदि चे? ण एस दोसो; पत्तेयसरीरोदयस्स तंतत्ताभावादो । भावे वा खीणकसाओ वि पत्तेयसरीरवग्गणा होज्ज^१; तदुदयसंतं पडि विसेसाभावादो । तदो बादर-सुहुमणिगोदेहि असंबद्धजीवा पत्तेयसरीरवग्गणा त्ति घेतत्वा । ण च बादरसुहुमणिगोदानं विग्गहगदीए वि विच्छिण्णेगजीवो उवलब्भदे; तत्थ वि एगबंधणबद्धअणंतजीवोलंभादो । तत्थ एगजीवे संते को दोसो चे? ण; बादर-सुहुमणिगोदवग्गणान्माणंतियप्पसंगादो । एदं पि णत्थि; असंखेज्जलोगमेत्ताओ चेव होंति त्ति गुरूवदेसादो ।

नियम नहीं है । अभव्योंके योग्य जो पृथिवीकायिक आदि चार स्थावर कायिकोंमें प्राप्त होने-वाली वर्गणायें हैं वे वर्तमानकालमें सान्तर हैं, क्योंकि, वर्तमानकालमें प्रत्येकशरीरवर्गणायें उत्कृष्टरूपसे असंख्यात लोकप्रमाण ही होती हैं ऐसा नियम है ।

शंका-विग्रहगतिमें विद्यमान अनन्त जीव प्रत्येकशरीरवर्गणाके भीतर गर्भित होते हैं, इसलिए प्रत्येकशरीरवर्गणायें अनन्त होती हैं ऐसा क्यों नहीं ग्रहण करते ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, निगोद नामकर्मके उदयसे बादर निगोद और सूक्ष्म निगोद-पनेको प्राप्त हुए जीवोंके प्रत्येकशरीरवर्गणाओंके होनेमें विरोध है ।

शंका-विग्रहगतिमें विद्यमान जीवोंके प्रत्येक शरीर नामकर्मका उदय न होने पर प्रत्येकशरीर कैसे हो सकते हैं ?

समाधान-यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, प्रत्येकशरीरके उदयकी अधीनताका अभाव है । यदि उदयकी अधीनता मानी जाय तो क्षीणकषाय भी प्रत्येकशरीरवर्गणा हो जावे, क्योंकि, उसके उदय और सत्त्वके प्रति वहां कोई विशेषता नहीं है । इसलिए बादर निगोद और सूक्ष्म-निगोदोंसे असम्बद्ध जीव प्रत्येकशरीरवर्गणा होते हैं ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए । यदि कहा जाय कि विग्रहगतिमें भी बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोदका स्वतंत्ररूपसे एक जीव पाया जाता है सो यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि वहां पर भी एक बन्धनमें बाँधे हुए अनन्त जीव पाये जाते हैं ।

शंका-वहां एक जीवके रहनेमें क्या दोष है?

समाधान-नहीं, क्योंकि, ऐसा मानने पर बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंको अनन्तपनेका प्रसंग आता है । किन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, वे असंख्यात लोकप्रमाण ही होती हैं ऐसा गुरूका उपदेश है ।

❁ ता० प्रती 'जीवा पत्तेयसरीरवग्गणा' इति पठ्यते ।

❁ अ० प्रती 'पत्तेयसरीरवग्गणा

होज्ज' इति पाठः ।

ण च असंखेज्जलोगमेत्तपत्तेयसरीरवग्गणाहि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तट्टाणाणि वट्टमाणकाले आवूरिज्जंति; विरोहादो । अदीदकाले वि सांतराणि चेव; अदीदकालादो असंखेज्जगुणेहि अदीदकालुप्पणपत्तेयसरीरट्टाणेहि जीवेहि सव्वट्टाणावूरणविरोहादो । पस्समाणाए वि ण निरंतराओ; सव्वदा अदीदकालस्स सव्वजीवरासीदो अणंतगुणहीणत्तुवलंभादो । सेचीयादो पुण सव्ववग्गणाओ निरंतराओ; एसा चेव संभवदि त्ति नियमाभावादो ।

बादरणिगोदवग्गणाओ भवसिद्धियपाओग्गाओ जाओ खीणकसायकालम्हि लब्धमाणिआओ ताओ वट्टमाणकाले सांतराओ; सव्वजीवेहि* अणंतगुणमेत्तबादरणिगोदवग्गणाणं खीणकसायपाओग्गाणं संखेज्जेहि जीवेहि आवूरणविरोहादो । अदीदकाले फुसणेण सांतराओ; अंतोमुहुत्तगुणिदसिद्धरासिमेत्तट्टाणाणं चेव तीदे काले फोसणुवलंभादो । एवं पस्समाणफोसणं पि वत्तव्वं; विसेसाभावादो । सेचीयादो पुण निरंतराओ । अभवसिद्धियपाओग्गाओ* जाओ मूलयथूहल्लयादिविसयाओ बादरणिगोदवग्गणाओ ताओ वट्टमाणकाले सांतराओ । कुदो ? असंखेज्जलोगमेत्तबादरणिगोदवग्गणाहि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तसव्वट्टाणावूरणसंभवाभावादो । अदीदे

यह कहना कि असंख्यात लोकप्रमाण प्रत्येकशरीरवर्गणार्थे सब जीवोंसे अनन्तगुण स्थानोंको वर्तमानकालमें पूरा करती है, ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध आता है । वे अतीत कालमें भी सान्तर ही हैं, क्योंकि, अतीत कालसे असंख्यातगुणे अतीत कालमें उत्पन्न हुए प्रत्येकशरीरस्थानरूप जीवोंके द्वारा सब स्थानोंके पूरा होनेमें विरोध है । दृश्यमान कालमें भी वे निरन्तर नहीं हैं, क्योंकि, सर्वदा अतीत काल सब जीवराशिसे अनन्तगुणा हीन पाया जाता है । परन्तु सेचीयकी अपेक्षा सब वर्गणार्थे निरन्तर है, क्योंकि, इस अपेक्षासे यही सम्भव है ऐसा कोई नियम नहीं है । अर्थात् सेचीयकी अपेक्षा कोई भी वर्गणा सदा सम्भव हो सकती है, इसलिए सब वर्गणाओंको निरन्तर कहा है ।

भव्योंके योग्य जो बादरनिगोदवर्गणार्थे क्षीणकषायके कालमें लभ्यमान हैं वे वर्तमान कालमें सान्तर है, क्योंकि, सब जीवोंसे अनन्तगुणी क्षीणकषायके योग्य बादरनिगोदवर्गणाओंका संख्यात जीवोंके द्वारा पूरा करनेमें विरोध है । अतीतकालमें स्पर्शनकी अपेक्षा सान्तर है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तगुणित सिद्धराशिप्रमाण स्थानोंका ही अतीत कालमें स्पर्शन उपलब्ध होता है । इसी प्रकार पश्यमान स्पर्शन भी कहना चाहिए, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है । सेचीयकी अपेक्षा तो निरन्तर हैं । मूली, थूवर और आर्द्रक आदिमें रहनेवाली अभव्योंके योग्य जो बादरनिगोदवर्गणार्थे हैं वे वर्तमान कालमें सान्तर हैं, क्योंकि, असंख्यात लोकप्रमाण बादरनिगोदवर्गणाओंके द्वारा सब जीवोंसे अनन्तगुणे सब स्थानोंका पूरा करना सम्भव नहीं है । अतीत कालमें भी बादर

* ता० प्रती 'सांतराओ' (सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तबादरणिगोदवग्गणाओ भवसिद्धियपाओग्गाओ खीणकसायकालम्हि लब्धमाणिआओ ताओ वट्टमाणकाले सांतराओ) सव्वजीवेहि । * अ० का० प्रत्योः 'अभवसिद्धियपाओग्गाओ' इतिपाठः ।

वि काले बादरनिगोदवर्गणाणि सांतराणि चेव । कुदो ? असंखेज्जलोगुणिदअ-
दीदकालमेत्ताणं चेव द्वागाणं तत्थ जीवसहिदाणमुवलंभादो । ण च एवं; सरिसध-
णियाणं पि वर्गणाणं संमवादो । जदि वि अदीदकालेण गुणिदसव्वजीवरासिमेत्ताणि
बादरनिगोदद्वाराणि अदीदकाले उप्पण्णिणं होंति तो सव्वद्वाराणि आवूरिज्जति*;
अदीदकालादो वि सव्वजीवरासीदो वि विस्सामुवचयाणमेगपरमाणुविसयाणमणंतगु-
णत्तादो । पस्समाणाए वि सांतराओ; अदीदकालं मोत्तूण एत्थ सांतरणि रंतरपरु-
वणाए भविस्सकाले दि संववहाराभावादो । भावे वा तस्स अदीदकाले अंतब्भादो
होज्ज; अण्णहा जीवसहिदत्ताणुववत्तीदो । ण च एगजीवेण एगा बादरनिगोदवर्गणा-
णिप्पज्जदि जेण सव्वबादरनिगोदेहि सव्वद्वाराणि तीदाणागदकालेसु आवूरिज्जति;
जह्णिणयाए बादरनिगोदवर्गणाए उक्कस्सपत्तेयसरीरवर्गणादो हेद्दा पादप्पसंगादो ।
सेचीयादो पुण सव्वद्वाराणि णिरंतराणि ।

सुहुमणिगोदवर्गणाओ वट्टमाणकाले सांतराओ; असंखेज्जलोगमेत्तसुहुमणिगोदव-
र्गणाणं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तसेचीयद्वारावूरणसत्तीए अभावादो । अदीदकाले वि
सेचीयद्वाराणि सांतराणि चेव; असंखेज्जलोगगुणिदप्रदीदकालमेत्तसुहुमणिगोदद्वारेहि
अदीदकालुप्पण्णेहि सव्वद्वारावूरणविरोहादो । भविस्सकाले वि सांतराणि

निगोदवर्गणास्थान सान्तर ही है, क्योंकि, असंख्यात लोकगुणित अतीत कालप्रमाण स्थान ही
अतीत कालमें जीवों सहित उपलब्ध होते हैं । परन्तु ऐसा नहीं है, क्योंकि, सदृश धनवाली
भी वर्गणायें सम्भव हैं । यद्यपि अतीत कालसे गुणित सब जीवराशिप्रमाण बादरनिगोद
स्थान अतीत कालमें उत्पन्न होते हैं तो भी सब स्थान व्याप्त कर लिये जाते हैं, क्योंकि, अतीत
कालसे भी और सब जीवराशिसे भी एक परमाणुविषयक त्रिसप्तोच्चय अनन्तगुणे हाते हैं ।
पश्यमान कालमें भी सान्तर हैं, क्योंकि, अतीत कालको छोड़कर यहां पर सान्तरनिरन्तर
प्ररूपणाका भविष्य कालमें भी व्यवहार नहीं होता । यदि होता है तो उसका अतीत कालमें
अन्तर्भाव हो जाता है, अन्यथा वे स्थान जीव सहित नहीं बन सकते । और एक जीवके द्वारा
एक बादरनिगोदवर्गणा नहीं उत्पन्न होती है जिससे सब बादर निगोदोंके द्वारा सब स्थान अतीत
और अनागत कालमें व्याप्त किये जावें, क्योंकि, ऐसा मानने पर जबन्व बादरनिगोदवर्गणाके
उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणासे नीचे होनेका प्रसंग आता है । परन्तु सेचीयकी अपेक्षा सब स्थान
निरन्तर हैं ।

सूक्ष्मनिगोदवर्गणायें वर्तमान कालमें सान्तर हैं, क्योंकि, असंख्यात लोकप्रमाण सूक्ष्मनिगो-
दवर्गणाओंमें सब जीवोंसे अन्तगुणे सेचीयस्थानोंके पूरा करनेकी शक्तिका अभाव है । अतीत
कालमें भी सेचीयस्थान सान्तर ही हैं, क्योंकि, अतीत कालमें उत्पन्न हुए असंख्यात लोकगु-
णित अतीतकालप्रमाण सूक्ष्मनिगोदस्थानोंके द्वारा सब स्थानोंके पूरा करनेमें विरोध है । बाद-
रनिगोदवर्गणाके प्रसंगसे जो क्रम कह आये हैं उसी क्रमसे ये भविष्य कालमें भी सान्तर

बादरणिगोदवगणाए भणिदकमेण । अथवा भविस्सकाले ण तेसि जीवसहिदत्तमत्थि । भावे वा ण सो* भविस्सकालो; वट्टमाणादीदकालेसु तस्संतवभावादो । सेचीयादो पुण निरंतराणि ।

महाखंधद्ववगणा सांतरा; वट्टमाणकाले एयत्तादो । ण च सब्वजीवेहि अणं-तगुणमेत्तमहाखंधट्टाणाणि एक्कवगणाए आवूरिज्जंति; विरोहादो । अदीदे वि काले महाखंधसेचीयट्टाणाणि सांतराणि चेव; अदीदकालमेत्ताणमुक्कस्सेण भूदकालसमुप्प-ण्णट्टाणाणं सब्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तसेचीयट्टाणावूरणसत्तीए अभावादो । भविस्सकाले वि सांतराणि चेव । सेचीयादो पुण निरंतराणि । णाणासेडीए वि एवं चेव सांतर-निरंतरपरूवणा कायव्वा; विसेसाहियाभावादो । एवं सांतरनिरंतराणुगमो त्ति समत्तमणुयोगद्वारं ।

एगसेडिवगणाए ओजजुम्माणुगमं वत्तइस्सामो । तं जहा-ओजो दुविहो-कलि-ओजो तेजोओ जेदि । जुम्मं दुविहं-कदजुम्मं बादरजुम्मं जेदि । जं चदुहि अवहिरिज्ज-माणमेणं एदि सो कलिओजो* । चदुहि अवहिरिज्जमाणे जत्थ तिणिण एंनि सो तेजोओ । जत्थ चत्तारि एंति तं कदजुम्मं । जत्थ दो एंति तं बादरजुम्मं । एदेण अट्टपदेण परमाणुपोगलद्ववगणा कलिओजो, एगत्तादो । संखेज्जपदेसियद्ववगणा है । अथवा भविष्कालमें जीवसहित नहीं हैं । यदि भविष्कालमें भी उन्हें जीव सहित माना जाता है तो वह भविष्काल नहीं है, क्योंकि, उसका वर्तमान और अतीतकालमें अन्तर्भाव हो जाता है । परन्तु सेचीयकी अपेक्षा निरन्तर हैं ।

महास्कन्धद्रव्यवर्गणा सान्तर है, क्योंकि, वर्तमानकालमें वह एक है । एक वर्गणाके द्वारा सब जीवोंमें अनन्तगुणे महास्कन्धस्थान पूरे जाते हैं यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा माननेमें विरोध आता है । अतीतकालमें भी महास्कन्ध सेचीयस्थान सान्तर ही हैं, क्योंकि, उत्कृष्टसे भूतकालमें उत्पन्न हुए अतीत काल मात्र स्थानोंके द्वारा सब जीवोंसे अनन्तगुणे सेचीय स्थानोंके पूरे करनेकी शक्ति का अभाव है । भविष्कालमें भी सान्तर ही हैं । परन्तु सेचीयकी अपेक्षा निरन्तर हैं । नानाश्रेणिकी अपेक्षा भी इसी प्रकार सान्तरनिरन्तरपरूवणा करनी चाहिए, क्योंकि, उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है ।

इस प्रकार सान्तर-निरन्तरानुगम अनूयोगद्वार समाप्त हुआ ।

अब एकश्रेणिवर्गणाकी अपेक्षा ओज-युग्मानुगमको बतलाते हैं । यथा-ओज दो प्रकारका है-कलि ओज और तेजोओ । युग्म दो प्रकारका है-कृतयुग्म और बादरयुग्म । चार का भाग देने पर जिसमें एक शेष रहता है वह कलिओज है । चारका भाग देने पर जहां तीन शेष रहते हैं वह तेजोओ है । जहां चार आते हैं वह कृतयुग्म है और जहां दो आते हैं वह बादर-युग्म है । इस अर्थपदके अनुसार परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा कलिओज है, क्योंकि, इस वर्गणाका प्रमाण एक है । जघन्य संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा बादरयुग्म है, क्योंकि, इस वर्गणाका

* ता० प्रती 'णत्थि सो' इति पाठः । * ता० प्रती '-मेणं एदिस्से काले (एदि सो कलि) ओजो' अ० प्रती '-मेणं' रादि सो कलिओजो' इति पाठः ।

जहणिया बादरजुम्मं; दुसंखत्तादो । उक्कस्सिया तेजोजो; रुवूणकदजुम्मपमाण-
त्तादो । संखेज्जपदेसियसव्ववग्गणसल्लागाओ बादरजुम्मं; रुवूणकदजुम्मपमाणत्तादो
वग्गणाओ पुण चउट्ठाणपदिदाओ । असंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणाओ जहणिया
कदजुम्मं जहणपरित्तासंखेज्जपमाणत्तादो । उक्कस्सिया तेजोजो; रुवूणकदजुम्म-
पमाणत्तादो । असंखेज्जपदेसियवग्गणसल्लागाओ कदजुम्मं; जहणपरित्तासंखेज्जेण
ऊणजहणपरित्ताणंतपमाणत्तादो । वग्गणाओ पुण चउट्ठाणपदिदाओ । एवं सव्वाओ
वग्गणाओ णंदव्वाओ । णवरि महाखंधदव्ववग्गणा जहणिया कदजुम्मं । उक्क-
स्सिया वि कदजुम्मं । महाखंधवग्गणसल्लागाओ कलिओजो वग्गणाओ पुण चउ-
ट्ठाणपदिदाओ ।

णाणासेडिओजजुम्माणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा किमोजो किं जुम्मं?
जहणिया कदजुम्मं । उक्कस्सिया वि कदजुम्मं । कुदो ? एवं णव्वदे ? आइरियपरं-
परागदमुत्ताविरुद्धगुरुवदेसादो । अजहणअणुक्कस्सियाए चत्तारि वियप्पा । एवं
णोयव्वं जाव धुवखंधदव्ववग्गणे त्ति । उवरिमसेसवग्गणासु जहणिया कलिओजो;
एगत्तादो । उक्कस्सिया तेजोजो । मज्झिमाए चत्तारि वियप्पा । णवरि महाखंध-
दव्ववग्गणाए णाणासेडो णत्थि; सव्वकालं सरिसधणियबहुवग्गणाभावादो । एवं
ओजजुम्माणुगमो त्ति समत्तमणुयोगदारं ।

प्रमाण दो है । उत्कृष्ट संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा तेजोज है, क्योंकि, वह एक कम कृतयुग्मप्रमाण
है । संख्यातप्रदेशी सब वर्गणाशलाकार्ये बादरयुग्म है, क्योंकि, वे दो कम कृतयुग्मप्रमाण हैं ।
परन्तु वर्गणार्थे चतुःस्थानपतित हैं । जघन्य असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा कृतयुग्म है, क्योंकि, वह
जघन्य परीतासंख्यातप्रमाण है । उत्कृष्ट असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा तेजोज है, क्योंकि, वह एक
कम कृतयुग्मप्रमाण है । असंख्यातप्रदेशी वर्गणाशलाकार्ये कृतयुग्म है, क्योंकि, वे जघन्य परीत-
संख्यात कम जघन्य परीतान्तप्रमाण हैं । परन्तु वर्गणार्थे चतुःस्थानपतित हैं । इसी प्रकार
सब वर्गणाओंके विषयमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि जघन्य महास्कन्धद्रव्यवर्गणा
कृतयुग्म है तथा उत्कृष्ट महास्कन्धद्रव्यवर्गणा भी कृतयुग्म है महास्कन्धवर्गणाशलाकार्ये कलि-
ओजरूप हैं । परन्तु वर्गणार्थे चतुःस्थानपतित हैं ।

नानाश्रेणिओजयुग्मानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा कथ ओजरूप है या
कथा युग्मरूप है ? जघन्य कृतयुग्मरूप है तथा उत्कृष्ट भी कृतयुग्मरूप है ।

शंका-यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-अचार्य परम्परासे हुए सूत्राविरुद्ध गुरुके उपदेशसे जाना जाता है ।

अजघन्य-अनुत्कृष्ट वर्गणाके चार भेद हैं । इस प्रकार ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणा तक जानना
चाहिए । उपरिम शेष वर्गणाओंमें जघन्य वर्गणा कलिओजरूप है, क्योंकि, वह एक है । उत्कृष्ट
वर्गणा तेजोजरूप हैं और मध्यकी वर्गणार्थे चारों प्रकारकी हैं । इतनी विशेषता है कि महास्कन्ध-
द्रव्यवर्गणाकी नानाश्रेणि नहीं है, क्योंकि, सर्वदा सदृश धनवाली बहुत वर्गणाओंका अभाव है ।

इसप्रकार ओजयुग्मानुगम अनुयोगदार समाप्त हुआ ।

एगसेडिवर्गणखेत्ताणुगमेण परमाणुपोगलदव्ववर्गणा संखेज्जपदेसियदव्ववर्गणाओ च केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जविभागे । असंखेज्जपदेसियदव्ववर्गण-
प्यहुडि जाव सुहुमणिगोदव्ववर्गणे त्ति ताव एदास्सि वर्गणाणमेया सेडो केवडि खेत्ते ?
सव्वलोगे । जले वा थले वा आगासे वा सुहुमणिगोदव्ववर्गणादिसव्ववर्गणाओ संभ-
वंति त्ति तेस्सि सव्वलोगो होदु णाम ण पत्तेयसरीरबादरणिगोदव्ववर्गणाणं ; तेस्सि अट्ठ
पुढवीयो भवणविमाणणि च अस्सिदूण चेव अवट्ठणादो ? ण, सुहुमपुढविआउतेउ-
वाउकाइयाणं पत्तेयसरीराणं सव्वलोगमिह अवट्ठणं पडि विरोहाभावादो मारणंति-
यपदेण उववादेण सव्वलोगमेतखेतुवलंभादो च । महाखंधदव्ववर्गणा केवडि खेत्ते ?
लोगे देसूणे ।

णाणासेडिखेत्ताणुगमेण परमाणुपोगलदव्ववर्गणा केवडि खेत्ते ? सव्वलोगे ।
कुदो ? आणंतियादो । एवं णेयव्वं जाव सांतरणिरंतरवर्गणे त्ति । पत्तेयसरीर-
बादरसुहुमवर्गणाओ केवडि खेत्ते ? सव्वलोगे ; असंखेज्जलोगपमाणत्तादो । महाखंध-
दव्ववर्गणा केवडि खेत्ते ? लोगे देसूणे । एवं खेत्ताणुगमो त्ति समत्तमणुओगद्वारं ।

एगसेडिवर्गणफोसणाणुगमेण परमाणुपोगलदव्ववर्गणाए संखेज्जपदेसियदव्व-

एकश्रेणिवर्गणाक्षेत्रानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाओं और संख्यातप्रदेशी
द्रव्यवर्गणाओंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवे भागप्रमाण क्षेत्र है । असंख्यातप्रदेशी
द्रव्यवर्गणासे लेकर सूक्ष्मनिगोदवर्गणा तक इन वर्गणाओंकी एक श्रेणिका कितना क्षेत्र है ?
सब लोक क्षेत्र है ।

शरा-जलमें, स्थलमें और आकाशमें सूक्ष्मनिगोदवर्गणा आदि सब वर्गणायें सम्भव हैं
इसलिए उनका सब लोकप्रमाण क्षेत्र होओ, परन्तु प्रत्येकशरीरबादरनिगोदवर्गणाओंका सब
लोकप्रमाण क्षेत्र नहीं हो सकता, क्योंकि, वे आठ पृथिवियों और भवनविमानोंका आश्रय लेकर
ही अवस्थित हैं ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, एक तो प्रत्येकशरीरवाले सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म जल-
कायिक, सूक्ष्म अग्निकायिक और सूक्ष्म वायुकायिक जीवोंका सब लोकमें अवस्थान होनेमें कोई
विरोध नहीं आता । दूसरे प्रत्येकशरीरवाले जीवोंका मारणान्तिकपद और उपपादकी अपेक्षा
सब लोकप्रमाण क्षेत्र पाया जाता ।

महास्कन्धद्रव्यवर्गणाका कितना क्षेत्र है? कुछ कम सब लोक क्षेत्र है ।

नानाश्रेणिक्षेत्रानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा कितना क्षेत्र है ? सब
लोकप्रमाण क्षेत्र है, क्योंकि, उसका प्रमाण अनन्त हैं । इसीप्रकार सान्तर-निरन्तरवर्गणा तक
ले जाना चाहिए । प्रत्येकशरीर, बादर और सूक्ष्म वर्गणाओंका कितना क्षेत्र है ? सब
लोकप्रमाण क्षेत्र है, क्योंकि, वे असंख्यात लोकप्रमाण है । महास्कन्धद्रव्यवर्गणाका कितना क्षेत्र
है ? कुछ कम लोकप्रमाण है ।

इस प्रकार क्षेत्रानुगम अनुयोगद्वारा समाप्त हुआ ।

एकश्रेणिवर्गणास्पर्शानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाओं और संख्यातप्रदेशी

वर्गणाहि च केवडियं खेतं फोसिदं ? लोगस असंखेज्जदिभागो सव्वलोगो वा । असंखेज्जपदेसियदव्ववर्गणप्पहुडि जाव सुहुमणिगोदवर्गणे त्ति ताव एदासि वर्गणाणमेगसेडोहि केवडियं खेतं फोसिदं ? अदीदवट्टमाणेण सव्वलोगो । महाखंधदव्ववर्गणाए केवडियं खेतं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोगो देसूणो । अदीदेण सव्वलोगो । एवं णाणासेडिफोसणं पण्वेयव्वं । णवरि परमाणुपोगलदव्ववर्गणप्पहुडि जाव सुहुमणिगोदवर्गणे त्ति ताव एदाहि वर्गणाहि केवडियं खेतं फोसिदं ? सव्वलोगो । महाखंधदव्ववर्गणाए केवडियं खेतं फोसिदं ? लोगो देसूणो सव्वलोगो वा । एवं फोसणाणुगमो त्ति समत्तमणुयोगद्वारं ।

एगसेडिकालाणुगमेण परमाणुपोगलदव्ववर्गणा केवचिरं कालादो होदि ? वर्गणादेसेण सव्वद्धा । दुपदेसियवर्गणप्पहुडि जाव धुवखंधदव्ववर्गणे त्ति ताव पत्तेयं पत्तेयं एवं चेव सव्वत्थ वत्तव्वा । अचित्तअधुवखंधदव्ववर्गणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमयं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोगलपरियट्ठा । एवं णेयव्वं जाव महाखंधदव्ववर्गणे त्ति । पत्तेयसरीर-बादरणिगोद-सुहुमणिगोदवर्गणाण-मोरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणुपोगलेहि तेसि विस्सासुवचयपोगलेहि य भेदसंघादं

द्रव्यवर्गणाओंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और सब लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणासे लेकर सूक्ष्मनिगोद द्रव्यवर्गणा तक इन वर्गणाओंकी श्रेणिने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालमें सब लोकका स्पर्शन किया है । महास्कन्धद्रव्यवर्गणाने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमानमें कुछ कम लोकप्रमाण क्षेत्रका और अतीत कालमें सब लोकका स्पर्शन किया है । इसी प्रकार नानाश्रेणिका स्पर्शन कहना चाहिए । इतनी विशेषता है कि परमाणु-पुद्गलद्रव्यवर्गणासे लेकर सूक्ष्मनिगोदवर्गणा तक इन वर्गणाओंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? सब लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । महास्कन्धद्रव्यवर्गणाने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? कुछ कम लोकप्रमाण क्षेत्रका और सब लोकका स्पर्शन किया ।

इस प्रकार स्पर्शनानुगम अनुयोगद्वारा समाप्त हुआ ।

एकश्रेणिकालानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाका कितना काल है ? वर्गणादेशकी अपेक्षा सब काल है । द्विप्रदेशी वर्गणासे लेकर ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणा तक प्रत्येक वर्गणाका सर्वत्र इसी प्रकार काल कहना चाहिए । अचित्तध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाका कितना काल है ? जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है । इसी प्रकार महास्कन्धद्रव्यवर्गणा तक जानना चाहिए । प्रत्येकशरीर, बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोद वर्गणाओं के औदारिकशरीर, तंजसशरीर और कार्मणशरीरोंके पुद्गलों द्वारा तथा उनके विस्रसोपचयों

❖ अ० का० प्रत्योः ' महाखंधदव्ववर्गणाए केवडियं खेतं फोसिदं, अदीदवट्टमाणेण सव्वलोगो महाखंधदव्ववर्गणाए केवडियं खेतं फोसिदं वट्टमाणेण ' इति पाठः ।

गच्छमाणजीवेहि य पडिसमयमुवचयावचयभावं गच्छमाणानं सरिसधणियाणं वग्ग-
णणमावलियाए असंखेज्जविभागमेत्ताणमसंखेज्जलोगपोगलपरियट्टमेत्तकालवट्ठाणं ण
जुज्जदे । ण च असंखेज्जलोगमेत्तसरिसधणियवग्गणाओ अत्थि; जवमज्जपरूपणाए
सह विरोहादो त्ति । तम्हा एदेसिमेगसेडिवग्गणानं कालो जाणिय वत्तव्वो । एत्ति-
यकालो त्ति ण वयं वोत्तुं समत्था; अलद्धवदेसत्तादो । लद्धवदेसे वि वा धुवलंभादो ।
अथवा णेमो ट्ठाणनिबंधणवग्गणानमुक्कस्सकालो किंतु जीवनिबंधणानं । ण च
एदांसि सेचीयभावेण अणंतकाले परुविज्जमाणे विरोहो अत्थि; तण्णिबंधणानुव-
लंभादो । अह्वा आगमो अतक्कगोयरो त्ति पुव्वित्तलकालो चेव घेत्तव्वो । एवं
णाणासेडिकालाणुगमो वि वत्तव्वो । णवरि परमाणुपोगलदव्ववग्गणप्पहुडि जाव
महाखंधदव्ववग्गणे त्ति ताव वग्गणादेसेण सव्वद्धा । एवं कालाणुगमो त्ति समत्त-
मणुयोगद्वारं ।

एगसेडिवग्गणअंतराणुगमेण परमाणुपोगलदव्ववग्गणाए अंतरं केवचिरं कालादो
होदि? णत्थि अंतरं णिरंतरं । एवं दुपदेसियवग्गणप्पहुडि जावधुवलंधदव्ववग्गणे
त्ति ताव णत्थि अंतरमिदि पत्तेयं पत्तेयं पल्लवेदव्वं । अचित्तअधुवखंधदव्ववग्गणान-
मंतरं केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एगसमये; उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा

द्वारा भेद-संघातको प्राप्त होनेवाले जीवोंके द्वारा प्रत्येक समयमें उच्च और अच्यवभावका प्राप्त
होनेवाली और सदृश धनवाली आकालिके असंख्यातवें भागप्रमाण वगगाओंका असंख्यात लोक
पुद्गलपरिवर्तन काल तक अवस्थान नहीं बन सकता है। असंख्यात लोकप्रमाण सदृश धनवाली
वर्गणायें है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, इस कथनका यवमध्यपरूपणाके साथ विरोध
आता है। इसलिए इन एकश्रेणिवर्गणओंका काल जानकर कहना चाहिए। इतना काल है यह
बात हम कहनेके लिए समर्थ नहीं है, क्योंकि, इस विषयका कोई उपदेश नहीं पाया जाता।
उपदेशके प्राप्त होनेपर भी ध्रुव प्राप्ति है। अथवा यह स्थाननिबन्धन वर्गणओंका उत्कृष्ट काल
नहीं है किन्तु जीवनिबन्धन वर्गणओंका उत्कृष्ट काल है। इनका सेचीयरूपसे अनन्त काल
कहनेपर विरोध आता है यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, उसका कोई कारण उपलब्ध नहीं होता।
अथवा आगम तर्कका विषय नहीं है, इसलिये पहलेका ही काल ग्रहण करना चाहिए। इसी
प्रकार नानाश्रेणिकालानुगमकी अपेक्षा भी कथन करना चाहिए। इतनी विशेषता है कि परमा-
णुपुद्गलद्रव्यवर्गणासे लेकर महास्कन्धद्रव्यवर्गणा तक वर्गणादेशकी अपेक्षा सर्वदा काल है।

इस प्रकार कालानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

एकश्रेणिवर्गणाअन्तरानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाका अन्तरकाल कितना है?
अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है। इसी प्रकार द्विप्रदेशी वर्गणासे लेकर ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणा तक
प्रत्येक वर्गणाका अन्तर नहीं है ऐसा प्रत्येकवर्गणाकी अपेक्षा कथन करना चाहिए। अचित्तअधु-
वस्कन्ध द्रव्यवर्गणाका अन्तरकाल कितना है? जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर

पोग्गलपरियट्ठा । पतेयसरीर-बादरणिगोद-सुहुमणिगोदवर्गणाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेणेगसमओ, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । एवं सेचीयं पडुच्च परूविदं । अत्थदो पुण केसिचि सचित्तअध्रुवक्खंधवर्गणाणमंतराभावेण होदव्वं; अण्णहा अदीदकाले सब्बट्ठाणेषु जीवसंभवप्पसंगावो । ण च एवं; असंखेज्जलोगगुणिदअदीदकालमेत्तट्ठाणाणं पगरिसेणुप्पण्णाणं सब्बट्ठाणावूरण-विरोहादो । एवं महाक्खंधदब्बवर्गणाए वि वत्तव्वं । णाणासेडिवर्गणंतराणुगमो एवं चेव वत्तव्वो । णवरि अचित्तअध्रुवक्खंधदब्बवर्गणाणं णत्थि अंतरं णिरंतरं । सचित्तअध्रुवक्खंधवर्गणाणं पि णत्थि अंतरं; सेचीयत्तणेण सव्वासिमत्थित्तुवलंभादो । एवं महाक्खंधदब्बवर्गणाए वि वत्तव्वं । एवमंतराणुगमो त्ति समत्तमणुयोगद्धारं ।

एगसेडिवर्गणभावानुगमेण परमाणुपोग्गलदब्बवर्गणाए को भावो? ओदइओ पारिणामिओ वा । जे ण जीवेण कदाचि वि परिणमिदा परिणामिदा वि संता जे विणट्ठोदइयभावा तेसि भावो पारिणामिओ । जे पुण अविणट्ठोदइयभावा परमाणु तेसिमोदइओ भावो चेव । एवं दुपदेसियवर्गणप्पहुडि जाव महाक्खंधदब्बवर्गणे त्ति वत्तव्वं । एसा परूवणा एगसरमाणुं पडुच्च परूविदा । खंधं पडुच्च भण्णमाणे दुपदेसि-यादिवर्गणाणं ओदइयो पारिणामिओ ओदइयपारिणामिओ च तिविहो भावो होदि ।

अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गल परिवर्तनप्रमाण है । प्रत्येकशरीर बादरनिगोद और सूक्ष्म-निगोद वर्गणाओंका अन्तरकाल कितना है ? जवन्व अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है । यह सेचीयकी अपेक्षा कथन किया है । वास्तवमें तो किन्हीं सचित्तअध्रुवस्कन्धवर्गणास्थानोंको अन्तरसे रहित होना चाहिए, अन्यथा अतीत कालमें सब स्थानोंमें जीवोंकी सम्भावना प्राप्त होती है । परन्तु ऐसा है नहीं क्योंकि, उत्कृष्टरूपसे उत्पन्न हुए असंख्यात लोकगुणित अतीत कालप्रमाण स्थान सब स्थानोंको पूरा करते हैं ऐसा होनेमें विरोध है । इसीप्रकार महास्कन्धद्रव्यवर्गणाके विषयमें भी कहना चाहिए । नानाश्रेणिवर्गणाअन्तरानुगमकी अपेक्षा इसी प्रकार कहना चाहिए । इतनी विशेषतः है कि अचित्तअध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाओंका अन्तरकाल नहीं है वे निरन्तर हैं । सचित्त अध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाओंका भी अन्तरकाल नहीं है, क्योंकि, सेचीयपनेकी अपेक्षा सबका अस्तित्व पाया जाता है । इसीप्रकार महास्कन्धद्रव्यवर्गणाके विषयमें भी कहना चाहिए ।

इस प्रकार अन्तरानुगम अनुयोगद्वारा समाप्त हुआ ।

एकश्रेणिवर्गणाभावानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाका क्या भाव है ? औदयिक व पारिणामिक भाव है । जिस जीवके द्वारा कभी भी परिणमन नहीं किये गये और परिणमाये गये भी जो औदयिक भावके नाशको प्राप्त हुए हैं उनका पारिणामिक भाव है । परन्तु जिन परमाणुओंका औदयिक भाव नष्ट नहीं हुआ है उनका औदयिक भाव ही है । इस प्रकार द्विप्रदेशी वर्गणासे लेकर महास्कन्धद्रव्यवर्गणा तक कहना चाहिए । यह प्ररूपणा एक परमाणुकी अपेक्षासे की है । स्कन्धकी अपेक्षा कथन करनेपर द्विप्रदेशी आदि वर्गणाओंका औदयिक भाव

सच्चित्तवर्गणाणं पुण भावो मस्सो चेव; तत्थ सुद्धेगभावणुवलंभादो । णाणासेडि-
वर्गणभावो एवं चेव भाणिदव्वो । ओदइयभावेण पोगलानमवट्ठाणं पुण उवकस्सेण
असंखेज्जलोगमेत्तकालप्रमाणं होदि । एवं भावाणुगमो त्ति समत्तमणुयोगद्वारं ।

एगसेडिवर्गणउवणयणाणुगमेण परमाणुपोगलदव्ववर्गणा एया चेव ॥ संखे-
ज्जपदेसियदव्ववर्गणाओ रूवणुवकस्ससंखेज्जमेत्ताओ । असंखेज्जपदेसियदव्ववर्गणाओ
असंखेज्जाओ । जहणपरित्ताणंतादो जहणपरित्तासंखेज्जे सोहिदे सुद्धसेसमेत्ताओ
त्ति भणिदं होदि । आहारवर्गणाए हेट्ठा अणंतपदेसियअग्रहणवर्गणा अणंताओ ।
जहणआहारवर्गणादो जहणपरित्ताणंते सोहिदे सुद्धसेसम्मि जत्तियाणि रूवाणि
तत्तियमेत्ताओ त्ति घेतव्वं । अभवसिद्धिएहि अणंतगुणाओ सिद्धाणमणंतभागमेत्ताओ
त्ति भणिदं होदि । एवं णेयव्वं जाव कम्मइयवर्गणे त्ति । ध्रुवखंधदव्ववर्गणाओ
अणंताओ । जहणध्रुवखंधवर्गणाए जहणसान्तरनिरंतरवर्गणाए सोहिदाए जं
सेसं तत्तियमेत्ताओ त्ति घेतव्वं । एवमपिदजहणवर्गणमुवरिमवर्गणजहणवर्गणाए
सोहिय सुद्धसेसेण वर्गणउवणयो परव्वेदव्वो जाव महाखंधदव्ववर्गणे त्ति । एवं
णाणासेडिवर्गणाउवणयणाणुगमो वत्तव्वो; विसेसाभावादो । एवं वर्गणउवणयणस्स
अत्थं के वि आइरिया भणंति । एसो अत्थो ण घडदे । कुदो ? वर्गण-

पारिणामिक भाव और औदयिक-पारिणामिक भाव इस प्रकार तीन प्रकारका भाव होता है ।
परन्तु सच्चित्तवर्गणाओंका भाव मिश्र ही होता है, क्योंकि, उनमें शुद्ध एक भाव नहीं उपलब्ध
होता । नानाश्रेणिवर्गणाओंका भाव इसी प्रकार कहना चाहिए । परन्तु औदयिकभावके साथ
पुद्गलोंका अवस्थान उत्कृष्टसे असंख्यात लोककालप्रमाण होता है ।

इस प्रकार भावानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

एकश्रेणिवर्गणाउपनयनानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा एक ही है । संख्यात-
प्रदेशी द्रव्यवर्गणायें एक कम उत्कृष्ट संख्यातप्रमाण है । असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणायें
असंख्यात हैं । जघन्य परीतानन्तमेंसे जघन्य परीतासंख्यातके कम करने पर जितना शेष रहे
उतनी हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । आहारवर्गणासे पूर्व अनन्तप्रदेशी अग्रहणवर्गणायें
अनन्त हैं । जघन्य आहारवर्गणामेंसे जघन्य परीतानन्तके कम कर देनेपर शेषमें जो संख्या
प्राप्त हो उतनी हैं ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए । वे अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके
अनन्तवें भागप्रमाण हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । इस प्रकार कर्मणवर्गणा तक जानना
चाहिए । ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणायें अनन्त हैं । जघन्य सान्तरनिरन्तरवर्गणामेंसे जघन्य ध्रुवस्कन्ध-
वर्गणाके घटा देने पर जो शेष रहे उतनी हैं ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए । इस प्रकार विवक्षित
जघन्य वर्गणाको आगेकी वर्गणाकी जघन्य वर्गणामेंसे घटा देने पर जो शेष रहे उतना वर्गणाका
उपनय कहना चाहिए और यह कहना महास्कन्धवर्गणातक करना चाहिए । इसी प्रकार नाना
श्रेणिवर्गणा उपनयनानुगमका कथन करना चाहिए, क्योंकि, उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है ।
इस प्रकार कितने ही आचार्य वर्गणा उपनयनका अर्थ कहते हैं, परन्तु यह अर्थ घटित नहीं होता,

❖ म० प्रती 'वर्गणाए चेव' का० प्रती 'वर्गणाए एया चेव' इति पाठः ।

परिमाणानुगमे भणिससमाणत्तादो । ण च एक्को चेव अत्थो दो वारं उच्चदे ; पुणरुत्तदोसप्पसंगादो । तम्हा वगणुवणयपरुवणा एवं कायव्वा । तं जहा-उक्कस्स-महाखंधदव्ववगणं घेतूण पुणो उक्कस्समहाखंधदव्ववगणप्पहुडि तत्थतणएगेगरूवे वगणं पडि हेट्ठा दिज्जमाणे जाव परमाणुपोग्गलदव्ववगणं ताव गंतूण समप्पवि । एवं महाखंधुवरिमवगणप्पहुडि सेसहेट्ठिमवगणानं पदेसे घेतूण पत्तेयं पत्तेयं वगणुवणयणं वत्तव्वं जाव परमाणुपोग्गलदव्ववगणे ति । किफलो उवणयणानुगमो ? सव्ववगणाओ णिरंतरं रुवाहियकमेण गदाओ ति जानावणफलो । एवं वगणउवणयणानुगमो ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

एगसेडिवगणपरिमाणानुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववगणा एया चेव । संखेज्जपदेसियदव्ववगणाओ रुव्वणुक्कस्ससंखेज्जमेत्ताओ । असंखेज्जपदेसियदव्ववगणाओ असंखेज्जाओ होताओ वि जहणपरित्तासंखेज्जेणूणजहणपरित्तानंतमेत्ताओ आहारवगणाए हेट्ठिमअणंतपदेसियदव्ववगणाओ अणंताओ होताओ वि जहणपरित्तानंतेणूणजहणहारदव्ववगणमेत्ताओ । अभवसिद्धिएहि अणंतगुणाओ सिद्धाणमणंतभागमेत्ताओ ति भणिदं होदि । एवं णेयव्वं जाव कम्मइयवगणे ति । पुणो धुवखंधदव्ववगणप्पहुडि अप्पिदजहणवगणमुवरिमाणंतरजहणवगणाए सोहिंय सुद्धसेसम्मि जत्तियाणि रुवाणि तत्तियाओ वगणाओ होता ति पत्तेयं पत्तेयं वगण-

क्योंकि, वर्गणापरिमाणानुगममें इसका कथन करेंगे । एक ही अर्थ दो बार कहा जा सकता है, यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा होने पर पुनरुक्तदोषका प्रसंग आता है । इसलिए वर्गणा उपनयन प्ररूपणा इस प्रकार करनी चाहिए । यथा—उत्कृष्ट महास्कन्धद्रव्यवर्गणाको ग्रहण कर पुनः उत्कृष्ट महास्कन्धद्रव्यवर्गणासे लेकर उसमेंसे एक एक अंको प्रत्येकवर्गणाके प्रति नीचे देने पर परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा तक जाकर वह समाप्त हो जाती है । इसीप्रकार महास्कन्ध उपरिम वर्गणासे लेकर नीचेकी शेष वर्गणाओंके प्रदेशोंको ग्रहणकर परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा तक अलग अलग प्रत्येक वर्गणाका उपनयन कहना चाहिए । उपनयनानुगमका क्या फल है ? सब वर्गणायें निरन्तर एक अधिकके क्रमसे गई हैं यह जताना इसका फल है ।

इस प्रकार वर्गणाउपनयनानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

एक श्रेणिवर्गणापरिमाणानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा एक ही है । संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणायें एक कम उत्कृष्ट संख्यातप्रमाण हैं । असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणायें असंख्यात होकर भी जघन्य परीतासंख्यात कम जघन्य परीतानन्तप्रमाण है । आहारवर्गणासे पूर्व अनन्तप्रदेशी द्रव्यवर्गणायें अनन्त होती हुई भी जघन्य परीतानन्त कम जघन्य आहारद्रव्यवर्गणाप्रमाण हैं । ये अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवे भागप्रमाण हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । इसी प्रकार कार्मणवर्गणा तक जानना चाहिए । पुनः ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणासे लेकर विवक्षित जघन्य वर्गणाको आगेकी अनन्तर जघन्य वर्गणामेंसे घटाकर शेषमें जितनी संख्या हो उतनी वर्गणायें होती हैं । इस प्रकार महास्कन्धद्रव्य-

❖ अ० प्रती '—परिमाणानुगमे' इति पाठः । ❖ प्रतिष्ठा 'तम्हा' इति स्थाने 'तं जहा' इति पाठः ।

परमाणपरूवणा कायव्वा जाव महाखंधदव्ववग्गणे ति । जवरि धुवक्खंधदव्ववग्गण-
प्पहुडि उवरि सव्वस्थ सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ताओ एगसेडिवग्गणाओ होति ।

संपहि णाणासेडिवग्गणपरिमाणानुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा सरिस-
धणियवग्गणाहि जहणपदे वि उक्कस्सपदे वि केवडिया? अणंता । णाणासेडिजहण-
परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाओ सरिसधणिएहि उक्कस्सपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा
विसेसाहिया । विसेसो पुणो अणंताणि पोग्गलपढमवग्गमूलाणि । दुपदेसियदव्ववग्गणा
सरिसधणिएहि जहणिया उक्कस्सिया वि अणंता । जहणाओ पुण उक्कस्सिया
विसेसाहिया । केत्तियमेत्तो विसेसो ? अणंताणि पोग्गलपढमवग्गमूलाणि । एवं
तिपदेसियवग्गणप्पहुडि एक्केक्कवग्गणं घेतूण जेयव्वं जाव उक्कस्सधुवक्खंधदव्व-
वग्गणे ति । पुणो तिस्से उवरि पढमित्तियाए अच्चित्तअधुवक्खंधदव्ववग्गणाए
सरिसधणियवग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्का वा दो वा
तिणिण वा एवं जाव उक्कस्सेण अणंताओ सरिसधणियवग्गणाओ होति । एवं विदि-
यसांतरणिरंतरवग्गणप्पहुडि पत्तेयं पत्तेयं भणेदूण जेयव्वं जाव सांतरणिरंतरउक्क-
स्सव्ववग्गणे ति । जहणाओ पुण उक्कस्सा अणंतगुणा । को गुणगारो ? सव्व-
जीवेहि अणंतगुणो ।

वर्गणाके प्राप्त होने तक अलग अलग प्रत्येक वर्गणाके प्रमाणका कथन करना चाहिए । इतनी
विशेषता है कि ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणासे लेकर आगे सर्वत्र एकश्रेणिवर्गणायें सब जीवोंसे अन-
न्तगुणी होती हैं ।

अब नानाश्रेणिवर्गणापरिमाणानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा सदृश धन-
नाली वर्गणारूपसे जघन्यपदकी अपेक्षा भी और उत्कृष्टपदकी अपेक्षा भी कितनी है? अनन्त
है । नानाश्रेणि जघन्य परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणासे सदृश धनवाली उत्कृष्ट परमाणुपुद्गलद्रव्य-
वर्गणायें विशेष अधिक हैं । विशेष पुद्गलोंके अनन्त प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । द्विप्रदेशीद्रव्य-
वर्गणा सदृश धनकी अपेक्षा जघन्य भी और उत्कृष्ट भी अनन्त है । परन्तु जघन्यसे उत्कृष्ट
विशेष अधिक है । विशेषका प्रमाण कितना है ? पुद्गलोंके अनन्त प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ।
इस प्रकार त्रिप्रदेशी वर्गणासे लेकर एक एक वर्गणाको ग्रहण कर उत्कृष्ट ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणा
तक ले जाना चाहिए । पुनः उसके ऊपर प्रथम अचित्तअध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणाकी सदृश धन-
वाली वर्गणायें कदाचित् है और कदाचित् नहीं है । यदि है तो एक है, दो है, तीन है इसप्रकार
उत्कृष्टरूपसे सदृश धनवाली वर्गणायें अनन्त हैं । इस प्रकार दूसरी सांतर-निरन्तरवर्गणासे
लेकर अलग अलग प्रत्येक वर्गणाका कथन कर उत्कृष्ट सांतरनिरन्तरद्रव्यवर्गणा तक लेजाना
चाहिए । परन्तु वहां जघन्यसे उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी हैं । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे
अनन्तगुणा गुणकार है ।

❁ ता० प्रती ' - वग्गणाए (ओ) होति ' अ० का० प्रत्योः वग्गणाए होति इति पाठः ।

❁ ता प्रती० - ' धणिएहि परमाणु ' इति पाठः । ❁ ता प्रती० ' जहणाओ उक्कस्सिया पुण विसे-
साहिया ' इति पाठः ।

चटुसु ध्रुवसुण्णदब्बवग्गणासु पोग्गला णत्थि । कुदो ? साभाविद्यादो । पुणो अजोगिच्चरिमसमए पढमिल्लियाए पत्तेयसरीरदब्बवग्गणाए दब्बं सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण खविदकम्मंसिया लक्खणेणागदा चत्तारि होंति । विदियाए वग्गणाए वग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा उक्कस्सेण चत्तारि होंति । एवमेदेण विहाणेण अणंतासु वग्गणासु गदासु तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से दब्बाणि सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा उक्कस्सेण पंच सरिसधणियजीवा होंति । एवमेदाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ । तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से वग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण सरिसधणिया छजोवा लब्भंति । पुणो एदेण कमेण एदाओ अणंताओ वग्गणाओ गदाओ । तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से वग्गणाए वग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण सरिसधणिया सत्तजोवा लब्भंति । पुणो एदाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ । तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से वग्गणाए सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण अट्ठ सरिसधणियजीवा होंति । पुणो एदेणेव कमेण अणंताओ वग्गणाओ गदाओ । तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से वग्गणाए सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा

चार ध्रुवसूयवर्गणाओंमें पुद्गल नहीं हैं क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । पुनः अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें प्राप्त होनेवाली प्रथम प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणा द्रव्य कदाचित् है और कदाचित् नहीं है । यदि है तो एक है, दो है और तीन है, इस प्रकार उत्कृष्ट रूपसे क्षणिककर्मांशिक लक्षणसे आये हुए चार होते हैं । दूसरी वर्गणाकी वर्गणायें कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं । यदि हैं तो एक है, दो है, तीन हैं, इसप्रकार उत्कृष्टरूपसे चार हैं । इसप्रकार इस विधिसे अनन्त वर्गणाओंके जानेपर उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उसके द्रव्य कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं । यदि हैं तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे सदृश धनवाले पाँच जीव होते हैं । इस प्रकार ये भी अनन्त वर्गणायें व्यतीत हो जाती हैं । उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उसकी वर्गणायें कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं । यदि हैं तो एक है, दो है, तीन है, इसप्रकार उत्कृष्ट रूपसे सदृश धनवाले छह जीव प्राप्त होते हैं । पुनः इस क्रमसे ये अनन्त वर्गणायें गत हो जाती हैं । पुनः उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उस वर्गणाकी वर्गणायें कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं । यदि हैं तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इस प्रकार सदृश धनवाले सात जीव प्राप्त होते हैं । पुनः ये भी अनन्त वर्गणायें गत हो जाती हैं । पुनः उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उस वर्गणाकी वर्गणायें कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं । यदि हैं तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे आठ सदृश धनवाले जीव प्राप्त होते हैं । पुनः इसी क्रमसे अनन्त वर्गणायें गत हो जाती हैं । उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उस वर्गणाकी वर्गणायें कदाचित् हैं और

उक्कस्सेण सत्त सरिसधणिया जीवा होंति । एवमेवाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ । तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से वग्गणाए सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण छ जीवा सरिसधणिया होंति । पुणो एवाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ । तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से सरिसधणियवग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण पंच सरिसधणिया जीवा होंति । पुणो एवाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ । तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से सरिसधणियवग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण चत्तारि सरिसधणियजीवा होंति । पुणो एवाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ । तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से सरिसधणियवग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण तिण्णिसरिसधणियजीवा लब्भंति । पुणो एवाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ । तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से दव्वणि सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो उक्कस्सेण सरिसधणिया दो जीवा होंति । तदो परदो जाओ अणंताओ वग्गणाओ तासिमेसेव कम्मो वत्तव्वो जाव भवसिद्धियपाओगवग्गणाणं दुच्चरिमवग्गणे ति । पुणो भवसिद्धियच्चरिमवग्गणाए वग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो जहण्णेण एक्को उक्कस्सेण दो सरिसधणिय-

कदाचित् नहीं है । यदि है तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इसप्रकार उत्कृष्टरूपसे सदृश धनवाले सात जीव हैं । इसप्रकार ये भी अनन्त वर्गणायें गत हो जाती हैं । पुनः उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उस वर्गणाकी वर्गणायें कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं । यदि हैं तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इसप्रकार उत्कृष्टरूपसे धनवाले छह जीव हैं । पुनः ये भी अनन्त वर्गणायें गत हो जाती हैं । तदनन्तर उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उसकी सदृश धनवाली वर्गणायें कदाचित् है और कदाचित् नहीं है । यदि हैं तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इसप्रकार उत्कृष्टरूपसे सदृश धनवाले पाँच जीव हैं । पुनः ये भी अनन्त वर्गणायें गत हो जाती हैं । पुनः उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उसकी सदृश धनवाली वर्गणायें कदाचित् है और कदाचित् नहीं है । यदि है तो एक है, दो है, तीन है, इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे सदृश धनवाली जीव चार है । पुनः ये भी अनन्त वर्गणायें गत हो जाती हैं । उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उसकी सदृश धनवाली वर्गणायें कदाचित् है और कदाचित् नहीं है । यदि है तो एक है, दो है, तीन है, इस प्रकार सदृश धनवाले तीन जीव प्राप्त होते हैं । पुनः ये भी अनन्तर वर्गणायें गत हो जाती हैं । उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उसके द्रव्य कदाचित् है और कदाचित् नहीं है । यदि है तो उत्कृष्टरूपसे सदृश धनवाले दो जीव होते हैं । उससे आगे जो अनन्त वर्गणायें है उनका भव्योंके योग्य वर्गणाओंका द्विचरम वर्गणाके प्राप्त होने तक यही क्रम कहना चाहिए । पुनः भव्योंके योग्य अन्तिम वर्गणाकी वर्गणायें कदाचित् है और कदाचित् नहीं है । यदि है तो जघन्यसे एक है और उत्कृष्ट रूपसे सदृश

जीवा होंति । एवमेसा जवमज्झपरुवणा भवसिद्धियट्टाणेसु सेचीयआइरियउवदेसेण परुविदा ।

तदो जा अणंतरा अभवसिद्धियपाओग्गवग्गणा तिस्से वग्गणाए सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा जा उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ सरिसधणियवग्गणाओ होंति । एवमेदेण पमाणेण अणंतासु वग्गणासु गदासु तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से वग्गणाए सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा जा उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ सरिसधणियवग्गणाओ होंति । जवरि पुव्ववग्गणाहितो विसेसाहियाओ एगवग्गणाए । पुणो एवेण विहाणेण अणंताओ वग्गणाओ गच्छंति । पुणो जा अणंतरउवरिमवग्गणा सा हेट्ठिमवग्गणादो विसेसाहिया एगवग्गणाए । एवं भवसिद्धियवग्गणाणं उत्तविहाणेण णेयव्वं जाव जवमज्झे त्ति । पुणो जवमज्झवग्गणाए वग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ होंति । पुणो एदाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ । तदो परदो अणंतरवग्गणा तिस्से वग्गणाए सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तवग्गणाओ होदूण पुव्ववग्गणाहितो विसेसहीणाओ त्ति । पुणो एदाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ । तदो परदो जा अणंतरवग्गणा धनवाले दो जीव है । इस प्रकार भव्यप्रायोग्य स्थानोंमें यह यवमध्यपरुवणा सेचीय आचार्योंके उपदेशसे कही है ।

इसके बाद जो अनन्तर अभव्यप्रायोग्य वर्गणा है उस वर्गणाकी वर्गणायें कदाचित् है और कदाचित् नहीं हैं । यदि हैं तो एक है, दो हैं इस प्रकार उत्कृष्ट रूपसे सदृश धनवाली वर्गणायें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । इस प्रकार इस प्रमाणसे अनन्त वर्गणाओंके जाने पर उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उस वर्गणाकी वर्गणायें कदाचित् है और कदाचित् नहीं हैं । यदि हैं तो एक है, दो हैं, इस प्रकार उत्कृष्ट रूपसे सदृश धनवाली आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण वर्गणायें हैं । इतनी विशेषता है कि एक वर्गणामें पूर्ववर्गणासे विशेष अधिक है । पुनः इस विधिसे अनन्त वर्गणायें जाती है । पुनः जो अनन्तर उपरिम वर्गणा है वह अघस्तन वर्गणासे एक वर्गणामें विशेष अधिक हैं । इसी प्रकार यवमध्यके प्राप्त होने तक भव्यप्रायोग्य वर्गणाओंको उक्त विधिसे ले जाना चाहिए । पुनः यवमध्यवर्गणाकी वर्गणायें कदाचित् है और कदाचित् नहीं है । यदि हैं तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । पुनः ये भी अनन्त वर्गणायें गत हो जाती हैं । उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उस वर्गणाकी वर्गणायें कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं है । यदि हैं तो एक है, दो हैं तीन हैं इसप्रकार उत्कृष्टरूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होकर भी पूर्वकी वर्गणासे विशेष होत हैं । पुनः ये भी अनन्त वर्गणायें गत हो जाती हैं । उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा हैं उसकी आवलिके असंख्यातवें

तिस्से वर्गणाओ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता होदूण पुव्ववर्गणाहितो विसेस-
हीणाओ । एवं णेयव्वं जा उक्कस्सपत्तेयसरीरदव्ववर्गणे त्ति । उक्कस्सपत्तेयसरीरद-
व्ववर्गणाए वर्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा
जा उक्कस्सेण वल्लरिदाहादिसु आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ सरिसधणिय-
वर्गणाओ वट्टमाणकाले लब्धंति । अदीदकाले वि एक्केक्किस्से वर्गणाए सरिसधणि-
यवर्गणाओ एत्तियाओ चेव होंति; एत्तो अहियाणमेत्थ संभवाभावादो । जधा पत्ते-
यसरीरवर्गणा परूविदा तथा बादरणिगोदवर्गणा वि परूवेदव्वा । जल-थल-आगा-
सादिसु सव्वजहणियाए सुहुमणिगोदवर्गणाए वर्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि ।
जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्ज-
दिभागमेत्ताओ सरिसधणियसुहुमणिगोदवर्गणाओ वट्टमाणकाले होंति । एवमभव-
सिद्धियपाओग्गपत्तेयसरीरवर्गणाणं उत्तविहाणेण णेयव्वं जाव जवमज्जे त्ति । पुणो
जवमज्जे वि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तसरिसधणियवर्गणाओ होंति । पुणो
पत्तेयसरीरवर्गणाविहाणेण उवरि णेयव्वं जाव उक्कस्ससुहुमणिगोदवर्गणे त्ति ।
पत्तेयसरीर-बादर-सुहुमणिगोदवर्गणासु वड्ढिहाणीणं पमाणमेगा चेव वर्गणा; वड्ढीए
अभावसंभवे एगवर्गणवड्ढीए विरोहाभावादो । अदीदकाले पत्तेयसरीर-बादर-सुहुम-
णिगोदवर्गणाओ सरिसधणियाओ अणंताओ किण्ण लब्धंति? ण, एक्कमिह काले

भागप्रमाण वर्गणायें होकर भी पूर्ववर्गणासे विशेष हीन हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर
द्रव्यवर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए । उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाकी वर्गणायें
कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं । यदि हैं तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे
बल्लरी दाह आदिमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सदृश धनवाली वर्गणायें वर्तमान कालमें
प्राप्त होती हैं । अतीत कालमें भी एक एक वर्गणाकी सदृश धनवाली वर्गणायें इतनी ही होती हैं,
क्योंकि, इनसे अधिक यहां पर सम्भव नहीं हैं । जिस प्रकार प्रत्येकशरीरवर्गणाका कथन किया
है उस प्रकार बादरनिगोदवर्गणाका भी कथन करना चाहिए । जल, स्थल और आकाश आदिकमें
सबसे जघन्य सूक्ष्मनिगोदवर्गणाकी वर्गणायें कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं । यदि हैं तो
एक है, दो है, तीन हैं, इसप्रकार उत्कृष्टरूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सदृश धनवाली
सूक्ष्मनिगोदवर्गणायें वर्तमान कालमें हैं । इस प्रकार अभव्यप्रायोग्य प्रत्येकशरीरवर्गणाओंको
उक्तविधिसे यवमध्यके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए । पुनः यवमध्यमें भी आवलिके असंख्या-
तवें भागप्रमाण सदृश धनवाली वर्गणायें हैं । पुनः प्रत्येकशरीरवर्गणाकी विधिसे उत्कृष्ट सूक्ष्म-
निगोद वर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए । प्रत्येकशरीर, बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोद
वर्गणाओंमें वृद्धि और हानिका प्रमाण एक ही वर्गणा है, क्योंकि, वृद्धिका अभाव सम्भव होने
पर एक वृद्धि होनेमें कोई विरोध नहीं आता ।

शंका- अतीत कालमें प्रत्येकशरीर, बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोद वर्गणायें सदृश
धनवाली अनन्त क्यों नहीं प्राप्त होती हैं ?

समानभावेण अच्छिदाओ वग्गणाओ सरिसधणियाओ णाम । ण च एक्कम्हि काले एक्किस्सेव वग्गणाए अणंताणं सरिसधणियाणं संभवो अत्थि; आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्ताओ चेव संभवन्ति त्ति परमगुरूवदेसादो । सव्वजहणियाए महाखंधदव्ववग्गणाए सरिसधणियवग्गणा णियमा णत्थि; अदीदानीगदवट्टमाणकालेसु एक्कम्हि समए एगा चेव महाखंधदव्ववग्गणा होदि त्ति णियमादोरे । एवं णेयव्वं जाव उक्कस्समहाखंधदव्ववग्गणे त्ति । एवं वग्गणपरिमाणानुगमो त्ति समत्त-मणुयोगद्वारं ।

एगसेडिभागाभागानुगमेण परमाणुपोगलदव्ववग्गणा सव्ववग्गणाणं केवडियो भागो? अणंतिमभागो । तं जहा परमाणुपोगलदव्ववग्गणा णाम एगो परमाणू । तेण सव्ववग्गणदव्वे भागे हिदे जं भागलद्धं* तं विरलेदूण सव्ववग्गणदव्वं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स परमाणुपमाणं चेदुदि । तत्थ एगखूवधरिदं परमाणुपोगलदव्ववग्गणा णाम । तदो सिद्धं सा सव्ववग्गणाणमणंतिमभागो त्ति । संखेज्जपदेसियवग्गणप्पहुडि जाव पत्तेयसरीरवग्गणे त्ति ताव एदासि एगसेडिवग्गणसलागाओसव्ववग्गणसलागाणमणंतिमभागो त्ति एवं चेव वत्तव्वं । तदो पत्तेयसरीरवग्गणाए उव-रिमधुवसुण्णवग्गणाओ सव्ववग्गणाणं केवडियो भागो ? असंखेज्जविभागो ।

समाधान- नहीं, क्योंकि, एक कालमें समान भावसे अवस्थित वर्गणायें ही सदृश धन-वाली कहलाती हैं । परन्तु एक कालमें एक ही वर्गणाकी अनन्त सदृश धनवाली वर्गणायें सम्भव नहीं, क्योंकि, आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही वर्गणायें होती हैं ऐसा परमगुरुका उपदेश है ।

सबसे जघन्य महास्कन्धद्रव्यवर्गणाकी सदृश धनवाली वर्गणा नियमसे नहीं है, क्योंकि, अतीत, अनागत और वर्तमान कालमें एक समयमें एकही महास्कन्धद्रव्यवर्गणा होती है ऐसा नियम है । इस प्रकार उत्कृष्ट महास्कन्धद्रव्यवर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए ।

इस प्रकार वर्गणापरिमाणानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

एकश्रेणिभागाभागानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा सब वर्गणाओंके कितने भाग प्रमाण है? अन्तर्वें भागप्रमाण हैं । यथा-परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा एक परमाणुरूप होती है । उसका सब वर्गणाओंके द्रव्यमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका विरलन कर और सब वर्गणाओंके द्रव्यके समान खण्ड करके प्रत्येक विरलनके प्रति देने पर एक एकके प्रति एक एक परमाणु प्राप्त होता है । वहां एक विरलनके प्रति प्राप्त द्रव्य परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा है । इसलिए सिद्ध है कि वह सब वर्गणाओंके अन्तर्वें भागप्रमाण है । संख्यातप्रदेशी वर्गणासे लेकर प्रत्येकशरीरवर्गणा तक इनकी एकश्रेणिवर्गणाशलाकायें सब वर्गणाशलाकाओंके अन्तर्वें भागप्रमाण हैं ऐसा यहां कहना चाहिए । अन्तर प्रत्येकशरीरवर्गणासे उपरिम ध्रुवशून्यवर्गणायें सब वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं? असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । यथा-ध्रुवशून्य वर्गणाकी

तं जहा - ध्रुवसुण्णवर्गणाए चरिमवर्गणं सेडोए असंखेज्जदिभागेण अंगुलस्स असं-
खेज्जदिभागेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण जगपदरस्स असंखेज्जदिभागेण च
गुणिय पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिय जं लद्धं तत्थेव पक्खित्ते सव्ववर्गण-
पमाणं होदि । पुणो ध्रुवसुण्णवर्गणाए वर्गणसल्लागाहि भागे हिदे जं भागं लद्धं तस्स
पमाणमसंखेज्जाणि जगपदराणि । एदेण सव्ववर्गणपमाणे भागे हिदे ध्रुवसुण्णवर्ग-
णपमाणं होदि । तदो ध्रुवसुण्णवर्गणाओ सव्ववर्गणाणमसंखेज्जदिभागो ति सिद्धं ।
वादरणिगोदवर्गणाओ सव्ववर्गणाणं केवडिओ भागो ? असंखेज्जदिभागो । कुदो ?
वादरणिगोदवर्गणाहि सव्ववर्गणपमाणे भागे हिदे अंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण
पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण च गुणिदजगपदरासंखेज्जदिभागस्स सादिरेयस्स
उवलंभादो । वादरणिगोदवर्गणाए उवरिमध्रुवसुण्णवर्गणाओ सव्वेगसेडिवर्गणाणं
केवडिओ भागो ? असंखेज्जदिभागो । कुदो ? ध्रुवसुण्णवर्गणाहि सव्ववर्गणा-
पमाणे भागे हिदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिदजगपदरस्स असंखेज्जदि-
भागुवलंभादो सुहुमणिगोदवर्गणाओ सव्ववर्गणाणं केवडियो भागो ? असंखेज्जदि-
भागो । कुदो ? सुहुमणिगोदवर्गणाहि सव्ववर्गणापमाणे भागे हिदे पदरस्स
असंखेज्जदिभागुवलंभादो । सुहुमणिगोदवर्गणाए उवरिमध्रुवसुण्णवर्गणाओ
सव्ववर्गणाणं केवडिओ भागो ? असंखेज्जदिभागो । कुदो ? सेसवर्गणाहि

अन्तिम वर्गणाओ जगश्रेणिके असंख्यातवें भागसे, अंगुलके असंख्यातवें भागसे, पत्यके
असंख्यातवें भागसे और जगप्रतरके असंख्यातवें भागसे गुणित करके और पत्यके
असंख्यातवें भागका भाग देनेपर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर सब
वर्गणाओंका प्रमाण होता है । पुनः ध्रुवशून्यवर्गणाकी वर्गणाशलाकाओंका भाग देने पर
जो भाग लब्ध आवे उसका प्रमाण असंख्यात जगप्रतर होता है । इसका सब वर्गणाओंके
प्रमाणमें भाग देनेपर ध्रुवशून्यवर्गणाका प्रमाण होता है । इसलिए ध्रुवशून्यवर्गणायें
सब वर्गणाओंके असंख्यातवें भागप्रमाण है यह सिद्ध होता है । वादरणिगोदवर्गणायें सब
वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण है? असंख्यातवें भागप्रमाण है, क्योंकि, वादरणिगोदवर्गणाओंका
सब वर्गणाओंमें भाग देने पर अंगुलके असंख्यातवें भागसे और पत्यके असंख्यातवें भागसे
गुणित साधिक जगप्रतरका असंख्यातवां भाग उपलब्ध होता है । वादरणिगोदवर्गणासे आगेकी
ध्रुवशून्यवर्गणायें सब एकश्रेणिवर्गणाओंके कितने भाग प्रमाण है ? असंख्यातवें भागप्रमाण
है, क्योंकि, ध्रुवशून्यवर्गणाओंका सब वर्गणाओंके प्रमाणमें भाग देनेपर पत्यके असंख्यातवें
भागसे गुणित जगप्रतरका असंख्यातवां भाग उपलब्ध होता है । सूक्ष्मनिगोदवर्गणायें सब
वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण है? असंख्यातवें भागप्रमाण हैं, क्योंकि, सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंका
सब वर्गणाओंके प्रमाणमें भाग देने पर जगप्रतरका असंख्यातवां भाग उपलब्ध होता है । सूक्ष्म-
निगोदवर्गणासे आगेकी ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणायें सब वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं ?
असंख्यातवें भागप्रमाण हैं, क्योंकि, शेष वर्गणाओंका सब वर्गणाओंके द्रव्यमें भाग देने पर

सव्ववग्गणदव्वे भागे हिंदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागुवलंभादो । महाखंधदव्व-
वग्गणाओ सव्ववग्गणाणं केवडियो भागो ? असंखेज्जदिभागो । कुदो ? महाखंध-
दव्ववग्गणाहि सव्ववग्गणपमाणे भागे हिंदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागुवलंभादो ।
चउत्थधुवसुणवग्गणाए चरिमवग्गणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदे तत्थ
एगखंडम्मि जत्तियाणि रुवाणि तत्तियमेत्ताओ महाखंधएगसेडिवग्गणाओ होति त्ति
गुरुवदेसादो वा ।

णाणासेडिवग्गणभागाभागानुगमेण महाखंधणाणासेडिवग्गणाओ णाणासेडिसव्व-
वग्गणाणं केवडियो भागो ? अणंतिमभागो । कुदो ? महाखंधदव्ववग्गणाए एगत्तादो ।
सुहुमणिगोदनाणासेडिवग्गणाओ सव्वणाणसेडिवग्गणाणं केवडियो भागो ? अणंतिम-
भागो । कुदो ? वट्टमाणकाले असंखेज्जलोगमेत्तणाणासेडिसुहुमणिगोदवग्गणाहि णाणा-
सेडिसव्ववग्गणपमाणे भागे हिंदे अणंतरूवुवलंभादो । एवं बादरणिगोदवग्गणाणं पत्ते-
यसरीरवग्गणाणं पि वत्तव्वं ; असंखेज्जलोगमेत्तवग्गणाणमत्थित्तणेण भेदाभावादो ।
सान्तरणिरंतरणाणासेडिवग्गणाओ सव्ववग्गणाणं केवडियो भागो ? अणंतिमभागो । एवं
णेयव्वं जाव असंखेज्जपदेसियवग्गणे त्ति । असंखेज्जपदेसियवग्गणाओ सव्ववग्गणाणं
केवडियो भागो ? असंखेज्जा भागा । संखेज्जपदेसियवग्गणाओ एयपदेसियवग्गणा च
सव्ववग्गणाणं केवडियो भागो ? असंखेज्जदिभागो । कुदो ? एकपदेसियवग्गणायामादो

पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण उपलब्ध होता है । महास्कन्धद्रव्यवर्गणायें सब वर्गणाओंके
कितने भागप्रमाण हैं ? असंख्यातवें भागप्रमाण हैं, क्योंकि, महास्कन्धद्रव्यवर्गणाओंका सब
वर्गणाओंके प्रमाण भाग देने पर पल्यका असंख्यातवां भाग उपलब्ध होता है । अथवा चौथी
ध्रुवशून्यवर्गणाकी अन्तिम वर्गणाको पल्यके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर वहाँ एक
खण्डमें जितने अंक उपलब्ध होते हैं उतनी महास्कन्धएकश्रेणिवर्गणायें होती हैं ऐसा गुरुका
उपदेश है ।

नानाश्रेणिवर्गणाभागाभागानुगमकी अपेक्षा महास्कन्धनानाश्रेणिवर्गणायें नानाश्रेणि सब
वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं ? अनन्तवें भागप्रमाण हैं, क्योंकि, महास्कन्धद्रव्यवर्गणा एक
है । सूक्ष्मनिगोदनानाश्रेणिवर्गणायें सब नानाश्रेणिवर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं ? अनन्तवें
भागप्रमाण हैं, क्योंकि, वर्तमान कालमें असंख्यात लोकप्रमाण नानाश्रेणिसूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंका
नानाश्रेणि सब वर्गणाओंके प्रमाणमें भाग देने पर अनन्त रूप उपलब्ध होते हैं । इसी प्रकार
बादरनिगोदवर्गणाओं और प्रत्येकशरीरवर्गणाओंका भी कथन करना चाहिए, क्योंकि, असंख्यात
लोकप्रमाण वर्गणाओंके अस्तित्वकी अपेक्षा इनमें पूर्व वर्गणाओंसे कोई भेद नहीं है । सान्तर-
निरन्तरनानाश्रेणिवर्गणायें सब वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं ? अनन्तवें भागप्रमाण हैं । इस
प्रकार असंख्यातप्रदेशी वर्गणाके प्राप्त होने तक कथन करना चाहिए । असंख्यातप्रदेशी वर्गणायें
सब वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं ? असंख्यात बहुभागप्रमाण हैं । संख्यातप्रदेशी वर्गणायें
और एकप्रदेशी वर्गणा सब वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं ? असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ।

दुपदेसियवर्गणायामो विसेसहीणो । तस्स को पडिभागो? असंखेज्जा लोगा । एदेण कमेण भागहारस्स अद्धमेत्तं गंतूण दुगुणहाणी होदि त्ति गुरुवदेसादो । एवं वर्गणा-
भागाभागाणुगमो त्ति समत्तमणुयोगद्वारं ।

एगसेडिवर्गणअप्पाबहुगणगमेण सव्वत्थोवा परमाणुयोगलदव्ववर्गणा । कुदो ? एगरूवत्तादो । संखेज्जपदेसियदव्ववर्गणा संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? रूवूणुक-
स्ससंखेज्जयं । असंखेज्जपदेसियवर्गणाओ असंखेज्जगुणाओ । को गुणगारो ? सग-
रासिस्स संखेज्जदिभागमूदअसंखेज्जा लोगा । को पडिभागो? संखेज्जपदेसियवर्ग-
णाओ । आहारदव्ववर्गणाओ अणंतगुणाओ । को गुणगारो? सगरासिस्स असंखेज्ज-
दिभागो । को पडिभागो? असंखेज्जपदेसियदव्ववर्गणाओ । अथवा गुणगारो अभव-
सिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागमेत्तो । तेजादव्ववर्गणाओ अणंतगुणाओ ।
को गुणगारो ? सगरासिस्स अणंतिमभागो । तस्स को पडिभागो? आहारदव्व-
वर्गणाओ । भासादव्ववर्गणाओ अणंतगुणाओ । मणदव्ववर्गणाओ अणंतगुणाओ ।
कम्मइयदव्ववर्गणाओ अणंतगुणाओ । सव्वत्थ अप्पणो हेट्ठिमएगसेडिसव्व-
वर्गणाहि उवरिमएगसेडिसव्ववर्गणासु अवहिरिवासु गुणगाररासी आगच्छदि ।
असंखेज्जपदेसियदव्ववर्गणाए उवरि आहारवर्गणाए हेट्ठा अणंतपदेसियदव्ववर्गणाओ

क्योंकि, एकप्रदेशी वर्गणाके आयामसे द्विप्रदेशी वर्गणाका आयाम विशेष हीन है । उसका प्रति-
भाग क्या है ? असंख्यात लोक उसका प्रतिभाग है । इस क्रमसे भागहारके अर्धभाग तक
जाकर द्विगुणी हानि होती है ऐसा गुरुका उपदेश है ।

इस प्रकार वर्गणाभागाभागाणुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

एकश्रेणिवर्गणाअल्पबहुत्वानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा सबसे स्तोक है,
क्योंकि, उसका प्रमाण एक है । उससे संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा संख्यातगुणी है । गुणकार क्या
है? एक कम उत्कृष्ट संख्यात गुणकार है । उससे असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणायें असंख्यातगुणी
हैं । गुणकार क्या है? अपनी राशिके संख्यातवें भागप्रमाण अर्थात् असंख्यात लोक गुणकार
है । प्रतिभाग क्या है? संख्यातप्रदेशी वर्गणायें प्रतिभाग है । उससे आहारद्रव्यवर्गणायें अनन्त-
गुणी हैं । गुणकार क्या है? अपनी राशिका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है?
असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणायें प्रतिभाग है । अथवा गुणकार अभव्योंसे अनन्तगुणा और
सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है । उससे तैजसशरीरद्रव्यवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । गुणकार
क्या है? अपनी राशिका अनन्तवां भाग गुणकार है । उसका प्रतिभाग क्या है? आहारद्रव्य-
वर्गणायें प्रतिभाग है । उससे भाषाद्रव्यवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । उससे मनोद्रव्यवर्गणायें
अनन्तगुणी हैं । उससे कर्मणद्रव्यवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । सर्वत्र अपनी अपनी पिछली एक-
श्रेणिद्रव्यवर्गणाओंका आगेकी एकश्रेणि सब वर्गणाओंमें भाग देने पर गुणकारराशि उत्पन्न
होती है । असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणाके आगे और आहारशरीरद्रव्यवर्गणाके पूर्व अनन्तप्रदेशी

अणंतगुणाओ । कुदो ? उवरि द्विविदसत्तारिगुणगारेहितो हेट्ठा द्विविदभागहारस्स अणंतगुणस्स आहारहेट्ठिमअग्रहणद्वववर्गणायामुप्पायणट्ठं जहण्णपरित्ताणंतस्स द्विविदगुणगारावो अणंतगुणहीणत्तुवलंभादो । कुदो एदं णव्वदे ? गुरुवदेसादो । तेजइयस्स हेट्ठा आहारद्वववर्गणाए उवरि विदियअग्रहणद्वववर्गणाओ अणंतगुणाओ । तेजइयस्स उवरि भासावर्गणाए हेट्ठा तदियअग्रहणद्वववर्गणाए सव्वएगसेडिववर्गणाओ अणंतगुणाओ । भासावर्गणाए उवरि मणस्स हेट्ठा चउत्थअग्रहणद्वववर्गणाए सव्वएगसेडिववर्गणाओ अणंतगुणाओ । मणस्स उवरि कम्मइयस्स हेट्ठा पंचमअग्रहणद्वववर्गणाए सव्वएगसेडिववर्गणाओ अणंतगुणाओ । गुणगारो सव्वत्थ अभावसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणंतिमभागमेत्तो । पुणो ध्रुवखंधद्वववर्गणाए सव्वएगसेडिववर्गणाओ अणंतगुणाओ । को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । तस्स को पडिभागो ? पंचमअग्रहणवर्गणाओ । अचित्तअध्रुवखंधद्वववर्गणाए सव्वएगसेडिववर्गणाओ अणंतगुणाओ । को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । सांतरणिरंतरवर्गणाए उवरि पत्तेयसरीरवर्गणाए हेट्ठा पढमध्रुवसुण्णवर्गणाए सव्वएगसेडिआगासपदेसवर्गणाओ अणंतगुणाओ । को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । पत्तेयसरीरवर्गणाए सव्वएगसेडिववर्गणाओ असंखेज्जगुणाओ । को गुणगारो ? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

द्रव्यवर्गणायें अनन्तगुणी हैं, क्योंकि, आगे स्थापित किये गये चार गुणकारोंसे पूर्वमें स्थापित किया गया अनन्तगुणा भागहार आहारवर्गणासे पूर्व अग्रहणद्रव्यवर्गणाके आयामके उत्पन्न करनेके लिए जघन्य परीतानन्तके स्थापित किये गये गुणकारसे अनन्तगुणा हीन उपलब्ध होता है ।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— गुरुके उपदेशसे जाना जाता है ।

तैजसशरीरसे पूर्व और आहारद्रव्यवर्गणाके आगे दूसरी अग्रहणद्रव्यवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । तैजसशरीरसे आगे और भाषावर्गणाके पूर्व तीसरी अग्रहणद्रव्यवर्गणाकी सब एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । भाषावर्गणासे आगे और मनोवर्गणासे पूर्व चौथी अग्रहणद्रव्यवर्गणाकी सब एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । मनोवर्गणाके आगे और कर्मणवर्गणाके पूर्व पांचवी अग्रहणद्रव्यवर्गणाकी सब एकश्रेणिद्रव्यवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । गुणकार सर्वत्र अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है । पुनः ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाकी सब एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है । उसका प्रतिभाग क्या है ? पांचवी अग्रहणवर्गणायें प्रतिभाग है । अचित्तअध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाकी सब एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है । सांतर-निरन्तरवर्गणाके आगे और प्रत्येकशरीरवर्गणाके पूर्व प्रथम ध्रुवशून्यवर्गणाकी सब एकश्रेणिआकाशप्रदेशवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है । प्रत्येकशरीरवर्गणाकी सब एकश्रेणिवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं । गुणकार क्या है ? पत्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है । उसका प्रतिभाग क्या है ? प्रथम

तस्स को पडिभागो ? पढमधुवसुणवगगणाओ । पत्तेयसरीरवगगणाए उवरि बादर-
 णिगोदवगगणाए हेट्ठा विदियधुवसुणवगगणाए सव्वएगसेडिआगासपदेसवगगणाओ
 अणंतगुणाओ । को गुणगारो ? अणंता लोगा । तं जहा- एगबादरतेउक्काइयपज्ज-
 त्तजीवं टुविय पुणो एदस्स अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तओरालिय-
 तेजा-कम्मइयपरमाणू सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तसगसगविस्सासुवचएहि गुणिय एग-
 ट्ठं काऊण गुणगारे टुविदे एगजीवस्स दव्वपमाणं होदि । पुणो एदस्स जीवस्स पलि-
 दोवमस्स असंखेज्जदिभागे गुणगारे टुविदे उक्कस्सपत्तेयसरीरवगगणा होदि । पुणो
 एगं बादरणिगोदजीवं टुविय एदस्स पस्से अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंत-
 मेत्तओरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणू सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तसगविस्सासुवचएहि
 गुणिदे एगट्ठीकदे गुणगारभावेण टुविदे एगजीवदव्वं होदि । पुणो एरिसा बादर-
 णिगोदजीवा एगणिगोदसरीरम्हि सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता अत्थि त्ति
 काऊण असंखेज्जलोगोवट्ठिदसव्वजीवरासिणा पुव्वित्तएगजीवदव्वे गुणिदे एग-
 णिगोदसरीरदव्वं होदि । पुणो तम्मि असंखेज्जलोगेहि एगबादरणिगोदवगगणसरी-
 रेहि गुणिदे एगपुलवियाए दव्वं होदि । पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्त—
 पुलवियसलागाहि गुणिदे सव्वजहण्णबादरणिगोदवगगणा होदि । पुणो एत्थ
 एगरूवे अवणिदे उक्कस्सधुवसुणवगगणपमाणं होदि । पुणो एदम्हि

ध्रुवशून्यवर्गणायें प्रतिभाग है । प्रत्येकशरीरवर्गणाके आगे और बादरनिगोदवर्गणाके पूर्व दूसरी
 ध्रुवशून्यवर्गणाकी सब एकश्रेणिआकाशप्रदेशवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । गुणकार क्या है ?
 अनन्त लोक गुणकार है । यथा-- एक बादर अग्निकायिक पर्याप्त जीवको स्थापित कर पुनः
 इसके अभव्योसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण औदारिकशरीर, तैजसशरीर
 और कार्मणशरीरके परमाणुओंको सब जीवोंसे अनन्तगुणे अपने अपने विस्त्रसोपचयोंसे
 गुणित कर और एकत्र कर गुणकाररूपसे स्थापित करने पर एक जीवका द्रव्यप्रमाण होता है ।
 पुनः इसका पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार स्थापित करने पर उत्कृष्ट प्रत्येक-
 शरीरवर्गणा होती है । पुनः एक बादरनिगोद जीवको स्थापित कर इसके पार्श्वमें अभव्योसे
 अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण औदारिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीर
 परमाणुओंको सब जीवोंसे अनन्तगुणे अपने विस्त्रसोपचयोंसे गुणित कर और एकत्र कर
 गुणकाररूपसे स्थापित करनेपर एक जीवका द्रव्य होता है । पुनः इस प्रकार बादरनिगोद जीव
 एक निगोदशरीरमें सब जीवराशिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ऐसा समझ कर असंख्यात लोक
 से भाजित सब जीवराशिसे पहलेके एक जीवद्रव्यके गुणित करने पर एक निगोदशरीरका द्रव्य
 होता है । पुनः उसे असंख्यात लोकप्रमाण एक बादरनिगोदवर्गणाशरीरोंसे गुणित करने पर एक
 पुलविका द्रव्य होता है । पुनः आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलविशलाकाओंसे गुणित
 करने पर सबसे जघन्य बादरनिगोदवर्गणा होती है । पुनः इसमेंसे एक अंकके कम कर देनेपर
 उत्कृष्ट ध्रुवशून्यवर्गणाका प्रमाण होता है । पुनः इसमें उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाका भाग देनेपर

❀ ता० प्रती - 'लोगे वट्ठिदे सव्व-' अ० का० प्रत्यो: - 'लोगोवट्ठिदे सव्व-' इति पाठः ।

उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए भागे हिंदे कम्मणोकम्मविस्सासुवचयसहियउवरिल्लपो-
गलपुंजादो हेट्ठिमपोगलपुंजो सरिसो त्ति अवणिय उवरिल्लआवलियाए असंखेज्ज-
दिभागेण गुणिदअसंखेज्जलोगेहि हेट्ठिल्लअसंखेज्जलोगेसु ओवट्ठिदेसु असंखेज्जा लोगा
लब्धंति । पुणो एदे असंखेज्जे लोगे पुव्विल्लपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिय
एदेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिंदे अणंता लोगा आगच्छंति^१ । पुणो एदेहि सव्व-
क्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए गुणिदाए उक्कस्सधुवसुण्णवग्गणादो हेट्ठिमसव्वधुवसुण्ण-
वग्गणाओ होति ।

एत्थ के वि आइरिया उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणादो उवरिमधुवसुण्णएगसेडी
असंखेज्जगुणा । गुणगारो वि घणावलियाए असंखेज्जदिभागो त्ति भणंति तण्ण घडदे ।
कुदो ? संखेज्जेहि असंखेज्जेहि वा जीवेहि जहण्णबादरणिगोदवग्गणाणुप्पत्तीदो ।
आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाहि विणा जहण्णबादरणिगोदवग्गणा ण
उप्पज्जवि ; बादरणिगोदवग्गणाए जहण्णियाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता
णिगोदाणं त्ति सुत्तणिद्वे सादो । एक्केक्किस्से पुलवियाए सरीरपमाणमसंखेज्जा लोगा ।
एक्केक्कम्हि सरीरे अणंता णिगोदजीवा अणंताणंतकम्मणोकम्मपोगलभारवहिणो
अत्थि, 'प्रत्येकमात्मदेशाः कर्मवियवरनन्तकैबद्धाः' इति वचनात् । तम्हा अणंता लोगा
गुणगारो त्ति एवं चेव घेत्तव्वं । उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए विस्सासुवचयगुणगारो

कर्म और नोकर्मके विस्सोपचय सहित उपरिम पुद्गल पुञ्जमेंसे अधस्तन पुद्गलपुञ्ज सदृश
हैं इसलिए निकाल कर उपरिम आवलिके असंख्यातवें भागसे गुणित असंख्यात लोकोंसे
अधस्तन असंख्यात लोकोंके भाजित करने पर असंख्यात लोक लब्ध आते हैं । पुनः इन असं-
ख्यात लोकोंको पहलेके पत्रके असंख्यातवें भागसे गुणित कर इनका सब जीवराशिमें भाग देने
पर अनन्त लोक आते हैं । पुनः इनसे सर्वोत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाके गुणित करने पर उत्कृष्ट
ध्रुवशून्यरूपसे अधस्तन सब ध्रुवशून्यवर्गणायें होती हैं ।

यहां पर कितने ही आचार्य उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणासे उपरिम ध्रुवशून्यएकश्रेणि
असंख्यातगुणी है और गुणकार भी घनावलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ऐसा कहते हैं, परन्तु
बहु घटित नहीं होता, क्योंकि, संख्यात या असंख्यात जीवोंसे जघन्य बादरणिगोदवर्गणाकी
उत्पत्ति नहीं हो सकती । आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंके बिना जघन्य बादरणिगो-
दवर्गणा नहीं उत्पन्न होती है, क्योंकि, 'बादरणिगोदवग्गणाए जहण्णियाए आवलियाए असंखेज्ज-
दिभागमेत्ता णिगोदाणं' ऐसा सूत्रका निर्देश है । एक एक पुलविमें शरीरोंके प्रमाण असंख्यात
लोक हैं । एक एक शरीरमें अनन्तानन्त कर्म-नोकर्मपुद्गलभारसे युक्त अनन्त निगोद जीव हैं,
क्योंकि, आत्माका प्रत्येक देश अनन्त कर्मपरमाणुओंसे बद्ध है ऐसा वचन है, इसलिए अनन्त
लोक गुणकार है यह वचन ही ग्रहण करना चाहिए ।

शंका-उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाके विस्सोपचयका गुणकार चूंकि अनन्त है और

जेण अणंतो जहण्णबादरणिगोदवगणा च विस्सासुवचएण जहण्णा तेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो गुणगारो ति ण घड्ढे? ण; जहण्णपत्तेयसरीरवगणादो उक्कस्सपत्तेयसरीरवगणाए अणंतगुणत्तप्पसंगादो । ण च एवं गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो चेव होदि ति गुरूवदेसेण अवगदत्तादो । जहण्णादो उक्कस्से विस्सासुवचए गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ति कुदो णव्वदे ? पुढ्वुत्त-विस्सासुवचयअप्पाबहुगादो । तं जहा- सव्वस्थोवो ओरालियसरीरस्स सव्वपदेसपिंडे जहण्णओ विस्सासुवचओ । तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । तदो वेउव्वियसरीरस्स सव्वपदेसपिंडे सव्वजहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्ज-दिभागो । तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलि-दोवमस्स असंखेज्जदिभागो । आहारसरीरस्स सव्वम्हि पदेसपिंडे जहण्णओ विस्सा-सुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो । तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । तेजासरीरस्स सव्वम्हि पदेसपिंडे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ।

जघन्य बादरनिगोदवर्गणा विस्सोपचयसे जघन्य है, अतः गुणकार पत्यके असंख्यातवें भागप्र-माण है यह घटित हो जाता है ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, इस प्रकार जघन्य प्रत्येकशरीरवर्गणासे उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणाके अनन्तगुणे प्राप्त होनेका प्रसंग आता है । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, गुणकार पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण ही है ऐसा गुरुके उपदेशसे जाना जाता है ।

शंका-जघन्यसे उत्कृष्ट विस्सोपचयके प्राप्त होनेमें गुणकार पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-पूर्वोक्त विस्सोपचय अल्पबहुत्वसे जाना जाता है । यथा-औदारिकशरीरके सब प्रदेशपिण्डमें जघन्य विस्सोपचय सबसे थोड़ा है । उससे उसीका उत्कृष्ट विस्सोपचय असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? पत्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है । उससे वैक्रियिकशरीरके सब प्रदेशपिण्डमें सबसे जघन्य विस्सोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणकार है । उससे उसीका उत्कृष्ट विस्सोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पत्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है । उससे आहारकशरीरका सब प्रदेशपिण्डमें जघन्य विस्सोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणकार है । उससे उसीका उत्कृष्ट विस्सोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पत्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है । उससे तैजसशरीरका सब प्रदेशपिण्डमें जघन्य विस्सोपचय अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अभव्योसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण

तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो? पल्लिदोवमस्स असं-
खेज्जदिभागो । कम्मइयसरोरस्स सव्वम्हि पदेसपिडे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणं-
तगुणो । को गुणगारो? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । तस्सेव उक्क-
स्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो
त्ति । बादरणिगोदवर्गणाए सव्वेगसेडिवर्गणाओ असंखेज्जगुणाओ । को गुणगारो ?
सेडोए असंखेज्जदिभागो । कथमेदं णव्वदे? बादरणिगोदवर्गणाए उक्कस्सियाए सेडोए
असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं त्ति चूलियासुत्ताओ णव्वदे । के वि आइरिया^१ असं-
खेज्जपदरावलियाओ गुणगारो त्ति भणंति तण्ण घडदे; चूलियासुत्तेण सह विरो-
हादो । विस्सासुवचयगुणगारं पडुच्च गुणगारो पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो होदि ।
ण च एसो पहाणो; सेडोए असंखेज्जदिभागस्स पुलवियाणं^२ गुणगारस्स पहाणत्तुवलं-
भादो । बादरणिगोदवर्गणाणमुवरि सुहुमणिगोदवर्गणाए हेट्ठा तदियधुवसुण्णवर्गणाए
सव्वेगसेडिआगासपदेसवर्गणाओ असंखेज्जगुणाओ । को गुणगारो ? अंगुलस्स
असंखेज्जदिभागो । कुदो? उक्कस्सबादरणिगोदवर्गणाए जीवेहितो जहण्णसुहुमणिगो-
दवर्गणाजीवाणमंगुलस्स असंखेज्जदिभागगुणगारुवलंभादो । कुदो एदमवग्गमदे ?

गुणकार है । उससे उसीकी उत्कृष्ट विस्सोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है? पल्यके
असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उससे कामणशरीरका सब प्रदेशपिण्डमें जघन्य
विस्सोपचय अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें
भागप्रमाण गुणकार है । उससे उसीका उत्कृष्ट विस्सोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या
है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

बादरनिगोदवर्गणाकी सब एकश्रेणिवर्गणायें असंख्यातगुणीं हैं । गुणकार क्या है ?
जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—‘बादरणिगोदवर्गणाए उक्कस्सियाए सेडोए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगो-
दाणं’ इस चूलिकासूत्रसे जाना जाता है ।

कितने ही आचार्य असंख्यात प्रतरावलिप्रमाण गुणकार है ऐसा कहते हैं, परन्तु वह
घटित नहीं होता, क्योंकि, चूलिकासूत्रके साथ विरोध आता है । यद्यपि विस्सोपचयगुणकारकी
अपेक्षा गुणकार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है, परन्तु यह प्रधान नहीं है, क्योंकि, जगश्रेणिके
असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंके गुणकारकी प्रधानता उपलब्ध होती है ।

बादरनिगोदवर्गणाओंसे आग और सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके पूर्व तीसरी ध्रुवशून्यवर्गणाकी
सब एकश्रेणिआकाशप्रदेशवर्गणायें असंख्यातगुणीं हैं । गुणकार क्या है ? अङ्गुलके असंख्यातवें
भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणाके जीवोंसे जघन्य सूक्ष्मनिगोदवर्ग-
णाके जीवोंका गुणकार अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण पाया जाता है ।

❁ आ० प्रती ‘केत्तिआ आइरिया’ इति पाठः । ❁ म० प्रति पाठोऽयम् । ता० प्रती ‘पुड
(ल) वीयाणं’ अ० का० प्रत्योः ‘पुडवियाणं’ इति पाठः ।

अविरुद्धादिरियवयणादो । सुहुमणिगोदवगणाए सव्वएगसेडिवगणाओ असंखेज्ज-
गुणाओ । को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । महाखंधवगणाए सव्वएग-
सेडिवगणाओ असंखेज्जगुणाओ । को गुणगारो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागो । तं
जहा-सव्वएगसेडिसुहुमणिगोदवगणाओ द्विविय पदरस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिदे
तिस्से चेव उवरिमध्वसुण्णएगसेडिवगणसव्ववगणपमाणं होदि । पुणो तस्स हेट्ठा
पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तभागहारे द्विविदे महाखंधसव्वएगसेडिवगणपमाणं
होदि । पुणो एत्थ सुहुमणिगोदसव्वएगसेडिवगणाहि भागे हिदे पदरस्स असंखेज्जदि-
भागो गुणगारो आगच्छदि ति वेत्तव्वं । सुहुमणिगोदवगणाए उवरि महाखंधदव्व-
वगणाए हेट्ठा चउत्थध्वसुण्णसव्वएगसेडिवगणाओ असंखेज्जगुणाओ । को गुणगारो?
पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कारणं सुगमं । एवमेगसेडिवगणअप्पाबहुअं भणिदं ।

संवहि णाणासेडिवगणप्पाबहुअं भणिस्सामो । तं जहा-सव्वत्थोवा महाखं-
धदव्ववगणाए दव्वा । कुदो? एगतादो । बादरणिगोदवगणाए दव्वा असंखेज्जगुणा ।
को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । तं जहा-बादरणिगोदवगणाओ
वट्टमाणकाले अभवसिद्धियपाओगसव्वजहण्णवगणाए आवलियाए असंखेज्जदिभाग-
मेत्तीयो सरिसधणियाओ लब्भंति । पुणो उवरि समयाविरोहेण विसेसाहियकमेण
गंतूण जवमज्झट्टाणे वि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ सरिसधणियवगणाओ

शंका-यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-आचार्योंके विरोध रहित वचनसे जाना जाता है ।

सूक्ष्मनिगोदवगणाकी सब एकश्रेणिवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं । गुणकार क्या है? पत्यका
असंख्यातवां भागप्रमाण गुणकार है । महास्कन्धवर्गणाकी सब एकश्रेणिवर्गणायें असंख्यातगुणी
हैं । गुणकार क्या है? जगप्रतरका असंख्यातवां भागप्रमाण गुणकार है । यथा-सब एकश्रेणिसूक्ष्म-
निगोदवर्गणाओंको स्थापित कर जगप्रतरके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर उसकी आगेकी
ध्रुवशून्यएकश्रेणिवर्गणाकी सब वर्गणाओंका प्रमाण होता है । पुनः उसके नीचे पत्यके असंख्या-
तवें भागप्रमाण भागहारके स्थापित करने पर महास्कन्ध सब एकश्रेणिवर्गणाओंका प्रमाण होता
है । पुनः यहां सूक्ष्मनिगोद सब एकश्रेणिवर्गणाओंसे भाजित करने पर जगप्रतरके असंख्यातवें
भागप्रमाण गुणकार आता है ऐसा ग्रहण करना चाहिए । सूक्ष्मनिगोदवर्गणासे आगे और
महास्कन्धद्रव्यवर्गणासे पूर्व चौथी ध्रुवशून्य सब एकश्रेणि वर्गणायें असंख्यातगुणी हैं । गुणकार
क्या है ? पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । कारण सुगम है । इसप्रकार एकश्रेणि-
वर्गणाअल्पबहुत्व कहा ।

अब नानाश्रेणिवर्गणाअल्पबहुत्वको कहेंगे । यथा-महास्कन्धद्रव्यवर्गणाके द्रव्य सबसे
स्तोक है, क्योंकि, वह एक है । उनसे बादरनिगोदवर्गणाके द्रव्य असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या
है? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । यथा-बादरनिगोदवर्गणायें वर्तमान कालमें
अभव्यप्रायोग्य सर्व जघन्य वर्गणाके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सदृश धनवाली प्राप्त
होती हैं । पुनः ऊपर आगमाविरुद्ध विशेष अधिक क्रमसे जाती हुई यवमध्यमें भी सदृश धनवाली

लब्धंति । पुणो उवरि समयाविरोहेण विसेसहीणकमेण गंतूण उक्कस्सबादरणिगोद-
वग्गणाओ वि सरिसधणियाओ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ त्ति लब्धंति ।
पुणो एत्थ विसेसाहियकमेण ट्ठिदाओ चेव घेतूण अवराओ मोत्तूण जवमज्झपमाणेण
हेट्ठिमउवरिमदब्बे कदे तिण्णिगुणहाणिमेत्तजवमज्झं होदि । एत्थ एगवग्गणं ट्ठिविय
आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे जवमज्झपमाणं होदि । पुणो एदम्मि तीहि
गुणहाणीहि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताहि गुणिदे सव्वदब्बं होदि । पुणो महा-
वखंधदब्बवग्गणसलागाए ओवट्ठिदे आवलियाए असंखेज्जदिभागो गुणगारो आग-
च्छदि । एसो गुणगारो सेचीयट्ठाणेषु वग्गणावट्ठाणवक्कमजाणावणट्ठं परूविदो ।
एत्थ परमत्थदो पुण गुणगारो असंखेज्जदिलोगमेत्तो होदि । तं जहा- वट्ठमाणकाले
बादरणिगोत्ताणं सयलपुलवियाओ असंखेज्जलोगमेत्ताओ पादेवक्कमसंखेज्जलोगमेत्तसरी-
रेहि आवूरिदाओ अत्थि । कुदो एदं णव्वदे ? अविरुद्धाइरियवयणादो सुत्तसमाणादो ।
पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाहि जदि एगा बादरणिगोदवग्गणा
लब्धदि तो असंखेज्जलोगमेत्तपुलवियासु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए
ओवट्ठिदाए असंखेज्जलोगमेत्ताओ बादरणिगोदवग्गणाओ लब्धंति । तेण महाखंध-
दब्बवग्गणादो बादरणिगोदवग्गणाणं गुणगारो असंखेज्जलोगमेत्तो त्ति सिद्धं ।

आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण प्राप्त होती हैं । पुनः ऊपर समयके अवरोधसे विशेष हीन
क्रमसे जाती हुई सदृश धनवाली उत्कृष्ट बादरणिगोदवर्गणायें भी आवलिके असंख्यातवें भाग-
प्रमाण प्राप्त होती हैं । पुनः यहां पर विशेष अधिकके क्रमसे स्थित वर्गणाओंको ही ग्रहण कर
और दूसरी वर्गणाओंको छोड़कर अधस्तन व उपरिम द्रव्यके यवमध्यके प्रमाणसे करनेपर तीन
गुणहानिप्रमाण यवमध्य होता है । यहां एक वर्गणाको स्थापित कर आवलिके असंख्यातवें भागसे
गुणित करनेपर यवमध्यका प्रमाण होता है । पुनः इसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण तीन
गुणहानियोंसे गुणित करने पर सब द्रव्य होता है । पुनः महास्कन्धद्रव्यवर्गणाशलाकासे भाजित
करनेपर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार आता है । यह गुणकार सेचीयस्थानोंमें
वर्गणाओंके अवस्थानक्रमका ज्ञान करानेके लिए कहा है । परन्तु यहां पर परमार्थसे गुणकार
असंख्यात लोकप्रमाण होता है । यथा— वर्तमान कालमें बादरनिगोदकी सब पुलवियां असंख्यात
लोकप्रमाण होकर प्रत्येक असंख्यात लोकप्रमाण शरीरोंसे आपूरित हैं ।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— सूत्रके समान अविरुद्ध आचार्य वचनसे जाना जाता है ।

पुनः आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंसे यदि एक बादरनिगोदवर्गणा प्राप्त
होती है तो असंख्यात लोकप्रमाण पुलवियोंमें क्या प्राप्त होगा इस प्रकार फलगुणित इच्छाको
प्रमाणसे भाजित करने पर असंख्यात लोकप्रमाण बादरनिगोदवर्गणायें प्राप्त होती हैं । इसलिए
महास्कन्धद्रव्यवर्गणासे बादरनिगोदवर्गणाओंका गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है यह सिद्ध
होता है ।

सुहुमणिगोदवर्गणाए णाणासेडिसव्ववर्गणाओ असंखेज्जगुणाओ । को गुण-
गारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । बादरणिगोदवर्गणाओ जवमज्झवर्गणप-
माणेण कदे तिण्णिगुणहाणिमेत्ताओ होति । सुहुमणिगोदवर्गणाओ वि जवमज्झ-
पमाणेण कदे तिण्णि चेव गुणहाणीयो होति । तम्हा बादरणिगोदवर्गणाहि सह
सुहुमणिगोदवर्गणाओ सरिसाओ त्ति वत्तव्वं । बादरणिगोदवर्गणाहितो सुहुम-
णिगोदवर्गणाओ असंखेज्जगुणाओ त्ति ण घडदे ? एत्थ परिहारो उच्चवे-सरिसाओ
ण होति ; बादरणिगोदजवमज्झसरिसधणियवर्गणाहितो सुहुमणिगोदजवमज्झसरि-
धणियवर्गणाणं तिण्णिगुणहाणीहितो एत्थतणत्तिणं गुणहाणीणं च असंखेज्जगुण-
त्तदंसणादो । कुदो एदं णव्वदे ? असंखेज्जगुणत्तणहाणुववत्तीदो । सामण्यपणाए
पुण गुणगारो असंखेज्जा लोगा । कुदो ? बादरणिगोदजीवेहितो सुहुमणिगोदजीवा
असंखेज्जगुणा । एत्थ गुणगारो असंखेज्जा लोगा । तेण कारणेण बादरणिगोदपुलविया-
हितो सुहुमणिगोदपुलवियाओ असंखेज्जगुणाओ । एत्थ वि गुणगारो असंखेज्जा लोगा ।
आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तसुहुमणिगोदपुलवियाहि जदि एगा सुहुमणिगोदव-
र्गणा लब्भदि तो असंखेज्जलोगमेत्तसुहुमणिगोदपुलवियासु किं लभामो त्ति पमाणेण
फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए असंखेज्जलोगमेत्ता सुहुमणिगोदवर्गणाओ बादरणिगो-
दवर्गणाहितो असंखेज्जगुणाओ लब्भन्ति । तेण कारणेण बादरणिगोदवर्गणाहितो

सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें नानाश्रेणी सब वर्गणायें असंख्यातगुणी हैं । गुणकार क्या है ?
आवलिका असंख्यातवां भागप्रमाण गुणकार है ।

शंका-बादरनिगोदवर्गणायें यवमध्यके प्रमाणसे करने पर तीन गुणहानिप्रमाण होती
हैं । सूक्ष्मनिगोदवर्गणायें भी यवमध्यके प्रमाणसे करने पर तीन ही गुणहानियां होती हैं । इस-
लिए सूक्ष्मनिगोदवर्गणायें बादरनिगोदवर्गणाओंके समान हैं ऐसा कहना चाहिए । बादरनिगोद-
वर्गणाओंसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं यह घटित नहीं होता ?

समाधान-यहाँ इस शंकाका परिहार करते हैं । ये दोनों वर्गणायें समान नहीं होतीं,
क्योंकि, बादरनिगोद यवमध्य सदृश धनवाली वर्गणाओंसे सूक्ष्मनिगोद यवमध्य सदृश धनवाली
वर्गणायें और तीन गुणहानियोंसे यहाँ की तीन गुणहानियां असंख्यातगुणी देखी जाती हैं ।

शंका-यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-अन्यथा असंख्यातगुणत्व नहीं बन सकता, इससे जाना जाता है ।

सामान्यकी विवक्षामें तो गुणकार असंख्यात लोक है, क्योंकि, बादरनिगोद जीवोंसे सूक्ष्म
निगोद जीव असंख्यातगुणे हैं । यहाँ पर गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है । इसलिए बादरनिगोद
पुलवियोंसे सूक्ष्मनिगोद पुलवियां असंख्यातगुणी हैं । यहाँ पर भी गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण
है । आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सूक्ष्मनिगोद पुलवियोंसे यदि एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणा
प्राप्त होती है तो असंख्यात लोकप्रमाण सूक्ष्मनिगोद पुलवियोंसे क्या प्राप्त होगा इस प्रकार फल
गुणित इच्छाको प्रमाणसे भाजित करने पर बादरनिगोदवर्गणाओंसे असंख्यातगुणी असंख्यात
लोकप्रमाण सूक्ष्मनिगोदवर्गणायें प्राप्त होती हैं । इसलिए बादरनिगोदवर्गणाओंसे सूक्ष्मनिगोद-

सुहुमणिगोदवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ त्ति सिद्धं ।

किं च उक्कस्सिया बादरणिगोदवग्गणा सेडोए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाहि निप्पज्जदि । सुहुमणिगोदवग्गणा पुण उक्कस्सिया वि आवलियाए असंखेज्जदि-भागमेत्तपुलवियाहि चेव निप्पज्जदि । एदम्हादो च णव्वदे जहा बादरणिगोदवग्ग-णाहिंतो सुहुमणिगोदवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ त्ति । बादरणिगोदउक्कस्सवग्ग-णाजीवेहिंतो सुहुमणिगोदजहणवग्गणजीवा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो त्ति जेण भणिदं तेण सुहुमणिगोदवग्गणाहिंतो बादरणिगोदवग्गणाणं बहुत्तं किण्ण जायदे ? ण एस दोसो; बादरणिगोदजीवेहिंतो सुहुमणिगोदजीवाणं गुणगारो असंखेज्जा लोगा । तेण जदि एक्कम्हि सुहुमणिगोदसरीरे अच्छमाणजीवाणं गुणगारो एयघणलोगमेत्तो होज्ज तो वि बादरणिगोदवग्गणाहिंतो सुहुमणिगोदवग्ग-णाओ असंखेज्जगुणाओ चेव; जीवगुणगारमाहपुवलंभादो । तेण लद्धासंखेज्जलोगेहि बादरणिगोदवग्गणासु गुणिदासु सुहुमणिगोदवग्गणपमाणं होदि ।

पत्तेयसरीरदव्ववग्गणासु णाणासेडिदव्ववग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ । को गुण-गारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । तं जहा-अभवसिद्धियपाओग्गसव्वजहण-वग्गणाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपत्तेयसरीरसरिसधजियवग्गणाओ लब्भंति । अभवसिद्धियपाओग्गजवमज्जे वि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तसरिस-

वर्गणायें असंख्यातगुणी हें यह सिद्ध हुआ ।

दूसरे उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणा जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंसे निष्पन्न होती है परन्तु सूक्ष्मनिगोदवर्गणा उत्कृष्ट भी आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुल-वियोंसे निष्पन्न होती है, इससे भी जाना जाता है कि बादरनिगोदवर्गणाओंसे सूक्ष्मनिगोदवर्ग-णायें असंख्यातगुणी हैं ।

शंका- बादरनिगोद उत्कृष्ट वर्गणाके जीवोंसे सूक्ष्मनिगोद जघन्य वर्गणाके जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, चूँकि इस प्रकार कहा है इसलिए सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंसे बादरनिगोदवर्गणायें बहुत क्यों नहीं हो जातीं ।

समाधान- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, बादरनिगोद जीवोंसे सूक्ष्मनिगोद जीवोंका गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है, अतः यदि एक सूक्ष्मनिगोद शरीरमें रहनेवाले जीवोंका गुण-कार एक घनलोकप्रमाण होवे तो भी बादरनिगोदवर्गणाओंसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणायें असंख्यात-गुणी ही हैं, क्योंकि, जीवोंके गुणकारकी विपुलता उपलब्ध होती है । इसलिए लब्ध असंख्यात लोकोंसे बादरनिगोदवर्गणाओंके गुणित करनेपर सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंका प्रमाण होता है ।

प्रत्येक शरीरद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणिवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं । गुणकार क्या है? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । यथा- अभव्यप्रायोग्य सबसे जघन्य वर्गणामें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण प्रत्येकशरीर सदृश घनवाली वर्गणायें प्राप्त होती हैं । अभव्य-

धनियवर्गणाओ लब्धंति । उक्कस्सपत्तेयसरीरवर्गणाए वि आवलियाए असंखेज्ज-
दिभागमेत्तसरिस्सधनियवर्गणाओ लब्धंति । पुणो जवमज्झस्स हेट्ठोवरि विसेसाहि-
यहीणवर्गणाओ^१ घेतूण जवमज्झवर्गणप्रमाणेण कदे तिण्णिगुणहाणिमेत्तजवमज्झ-
होदि । णवरि सुहुमणिगोदसरिस्सधनियजवमज्झवर्गणाहितो पत्तेयसरीरसरिस्सध-
यजवमज्झवर्गणाओ असंखेज्जगुणाओ । एत्थ गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो।
तेण कारणेण सुहुमणिगोदवर्गणाहितो पत्तेयसरीरवर्गणाओ असंखेज्जगुणाओ त्ति
सिद्धं । अथवा गुणगारो असंखेज्जा लोणा । बादरणिगोदवर्गणाहितो सुहुमणिगोद-
वर्गणाणमसंखेज्जगुणत्तं होदु णाम; बादरणिगोदजीवेहितो सुहुमणिगोदजीवाणम-
संखेज्जगुणत्तुवलंभादो । कितु एदं ण जुज्जदे सुहुमणिगोदवर्गणाहितो पत्तेयसरीर-
वर्गणाओ असंखेज्जगुणाओ त्ति । कुदो ? असंखेज्जलोगमेत्तपत्तेयसरीरजीवेहितो
सुहुमणिगोदजीवाणमणंतगुणत्तदंसणादो । ण एस दोसो; अणंतानंतजीवेहि सव्वजीव-
रासोए असंखेज्जदिभागमेत्तेहि एगसुहुमणिगोदवर्गणणिप्पत्तीदो । एग-दो-तिण्णिआदि
जा उक्कस्सेण पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेहि चेव जीवेहि पत्तेयसरीराणमेग-
वर्गणुप्पत्तिदंसणादो ? असंखेज्जगुणत्तं ण विरुज्जदे । सव्वमेदं कुदो णव्वदे ?
अविरुद्धाइरियवयणादो ।

प्रायोग्य यवमध्यमे भी आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सदृश धनवाली वर्गणायें प्राप्त होती हैं । उत्कृष्ट प्रत्येक शरीरवर्गणामें भी आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सदृश धनवाली वर्गणायें प्राप्त होती हैं । पुनः यवमध्यके नीचे और ऊपर क्रमसे विशेष अधिक और विशेष हीन वर्ग-
णाओंको ग्रहण कर यवमध्य वर्गणाके प्रमाणसे करने पर तीन गुणहानिप्रमाण यवमध्य होता है। इतनी विशेषता है कि सूक्ष्म निगोद सदृश धनवाली यवमध्यवर्गणाओंसे प्रत्येकशरीर सदृश धनवाली यवमध्य वर्गणायें असंख्यातगुणी हैं । यहां पर गुणकार आवलिके असंख्यातवें भाग-
प्रमाण है । इस कारणसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंसे प्रत्येकशरीरवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं यह सिद्ध हुआ । अथवा गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है ।

शंका— बादरनिगोदवर्गणाओंसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणायें असंख्यातगुणी होवें, क्योंकि, बादर निगोद जीवोंसे सूक्ष्मनिगोद जीव असंख्यातगुणे पाये जाते हैं । किन्तु सूक्ष्मनिगोदवर्ग-
णाओंसे प्रत्येकशरीरवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं यह बात नहीं बनती, क्योंकि, असंख्यात लोकप्रमाण प्रत्येकशरीर जीवोंसे सूक्ष्मनिगोद जीव अनन्तगुणे देखे जाते हैं ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, सब जीवराशिसे असंख्यातवें भागप्रमाण अनन्तानन्त जीवोंसे एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणाकी उत्पत्ति होती है । तथा एक, दो और तीनसे लेकर उत्कृष्ट रूपसे पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण जीवोंसे प्रत्येकशरीर एक वर्गणाकी उत्पत्ति देखी जाती है, इसलिए सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंसे प्रत्येकशरीरवर्गणाओंके असंख्यातगुण होनेमें कोई विरोध नहीं आता ।

शंका—यह सब किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—आचार्योंके विरोध रहित वचनोंसे जाना जाता है ।

❁ ता० प्रती ' विसेसाहियऊणवर्गणाओ ' इति पाठः ।

अचित्तअध्रुवखंधद्ववर्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण—
गारो? सगरासिस्स असंखेज्जदिभागो । तस्स को पडिभागो ? पत्तेयसरीरवर्गणा—
दव्वपडिभागो । एसो गुणगारो सव्वजीवेहि अणंतगुणो । कुदो एदं णव्वदे? सांतर-
णिरंतरवर्गणाणागुणहाणिसलागाणं पि सव्वजीवेहि अणंतगुणत्तुवलंभादो । एदं पि
कुदो णव्वदे ? सव्वजीवेहि अणंतगुणध्रुवखंधद्ववर्गणाणादो सव्वजीवेहि अणं-
तगुणध्रुवसांतरणिरंतरवर्गणाणा अद्वाणमेत्तणाणाणंतगुणहाणिसलागाणमुवलं-
भादो गुणहाणिसलागासु सव्वजीवेहितो अणंतगुणासु संतीसु एदांसि अण्णोण्णम्म-
त्थरासीए णिच्छएण गुणहाणिसलागाहितो अणंतगुणत्तसिद्धोए । किं च जदि वि
सांतरणिरंतरवर्गणासु चरिमवर्गणा सरिसधणिएहि पत्तुक्कस्समावा उवलंभादि तो
वि पत्तेयसरीरवर्गणाहितो सांतरणिरंतरवर्गणाओ अणंतगुणाओ, चरिमाए वि वर्ग-
णाए उक्कस्सेण अणंताणंताणं सरिसधणियाणं वर्गणाणं संभवादो ।

ध्रुवखंधद्ववर्गणाए णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुणगारो? सव्व-
जीवेहि अणंतगुणो दिवडुगुणहाणिगुणिसगणाणागुणहाणिसलागाणमण्णोण्णम्मत्थरासी
तं जहा— सांतरणिरंतरसव्ववर्गणाओ सगपढमवर्गणवमाणेण कीरमाणीयो साविरेय-

अचित्त अध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार
क्या है ? अपनी राशिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उसका प्रतिभाग क्या है ?
प्रत्येकशरीरवर्गणा द्रव्य प्रतिभाग है । यह गुणकार सब जीवोंसे अनन्तगुणा है ।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि, सान्तर-निरन्तरवर्गणाओंकी नानागुणहानिशलाकार्यें भी सब जीवोंसे
अनन्तगुणी पाई जाती हैं । इससे जाना जाता है कि यह गुणकार सब जीवोंसे अनन्तगुणा है ।

शंका—यह भी किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि, सब जीवोंसे अनन्तगुणी ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाओंके अध्वानसे सब
जीवोंसे अनन्तगुणी ध्रुवसान्तर-निरन्तरवर्गणाओंके स्थानमें अध्वानप्रमाण नाना अनन्त गुणहा-
निशलाकार्यें पाई जाती हैं । तथा गुणहानिशलाकाओंके सब जीवोंसे अनन्तगुणी होने पर इनकी
अन्योन्याभ्यस्त राशि नियमसे गुणहानिशलाकाओंसे अनन्तगुणी सिद्ध होती है ।

दूसरे यद्यपि सान्तर-निरन्तरवर्गणाओंमें अन्तिम वर्गणा सदृश धनरूपसे उत्कृष्ट भावको
प्राप्त होकर उपलब्ध होती है तो भी प्रत्येकशरीरवर्गणाओंसे सान्तर-निरन्तरवर्गणायें अनन्तगुणी
हैं, क्योंकि, अन्तिम वर्गणामें भी उत्कृष्टरूपसे सदृश धनवाली अनन्तानन्त वर्गणायें सम्भव हैं ।

ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणामें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? सब
जीवोंसे अनन्तगुणी डेढ गुणहानिगुणित अपनी नाना गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि
गुणकार है । यथा—सान्तर-निरन्तर सब वर्गणायें अपनी प्रथम वर्गणाके प्रमाणसे करने

❀ अ० प्रती 'सव्वजीवेहि सांतरणिरंतरवर्गणाणा अणंतगुणअद्वाण—' इति पाठ ।

पढमवगणमेत्तीयो, वगणं पडि अणंतगुणहीणकमेण गदत्तावो । एवं पुध द्रुविय पुणो सांतरणिरंतरपढमवगणाए ध्रुवखंधगुणहाणिसलागाणमण्णोण्णभत्थरासिणा गुणि—
दाए ध्रुवखंधपढमवगणा होदि । पुणो तिससे पमाणेण ध्रुवखंधसव्ववगणासु कदासु
दिवड्डुगुणहाणिमेत्तपढमवगणाओ होंति । पुणो सांतरणिरंतरवगणाए ध्रुवखंधवग-
णाए दिवड्डुगुणमेत्तपढमवगणासु ओवट्टिज्जमाणासु* दिवड्डुगुणहाणिगुणिदअण्णोण-
भत्थरासी आगच्छदि । एसो सव्वजीवेहि अणंतगुणो ति कथं णव्वदे ? ध्रुवखंध-
वगणद्वानम्मि* सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तगुणहाणिसलामुवलंभादो । तं जहा— असं-
खेज्जलोगमेत्तद्वानम्मि जदि एगा गुणहाणिसलागा लब्भदि तो सव्वजीवेहि अणंत-
गुणमेत्तध्रुवखंधवगणद्वानम्मि किं लभामो ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टि-
ट्टिदाए सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ताओ णाणागुणहाणिसलागाओ लब्भंति । एदासि-
मण्णोण्णभत्थरासिणा दिवड्डुगुणहाणिगुणिदेण सांतरणिरंतरवगणाए गुणिदाए
ध्रुवखंधदव्ववगणाओ होंति ।

कम्मइयवगणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुणगारो ? अब्भव-
सिद्धिएहि अणंतगुणो कम्मइयवगणभंतरणाणामुणहाणिसलागाणमण्णोण्णभत्थरासी
एत्थ गुणगारुप्पायणविहाणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

कम्मइयसरीरस्स हेद्दा अगहणदव्ववगणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा ।

पर साधिक प्रथम वर्गणाप्रमाण होती हैं, क्योंकि, वे प्रत्येक वर्गणाके प्रति अनन्तगुणे हीनक्रमसे
गई हैं । इसे पृथक् स्थापित कर पुनः सान्तरनिरन्तर प्रथम वर्गणाके प्रमाणमें ध्रुवस्कन्धकी
नानागुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशिसे गुणित करनेपर ध्रुवस्कन्धकी प्रथम वर्गणा
होती है । पुनः इसके प्रमाणसे ध्रुवस्कन्धकी सब वर्गणाओंके करनेपर डेढ गुणहानिप्रमाण प्रथम
वर्गणायें होती हैं । पुनः सान्तर-निरन्तरवर्गणाके द्वारा ध्रुवस्कन्धवर्गणाकी डेढ गुणहानिप्रमाण
प्रथम वर्गणाओंके भाजित करनेपर डेढ गुणहानिगुणित अन्योन्याभ्यस्त राशि आती है ।

शंका— यह सब जीवराशिसे अतन्तगुणा है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— क्योंकि, ध्रुवस्कन्धवर्गणास्थानमें सब जीवोंसे अनन्तगुणी गुणहानि-
शलाकायें उपलब्ध होती हैं । यथा— असंख्यात लोकप्रमाण अध्वानमें यदि एक गुणहानिशलाका
प्राप्त होती है तो सब जीवोंसे अनन्तगुणे ध्रुवस्कन्धवर्गणाअध्वानमें कितना प्राप्त होगा इस
प्रकार फलगुणित इच्छामें प्रमाणका भाग देनेपर सब जीवोंसे अनन्तगुणी नानागुणहानिशलाकायें
प्राप्त होती हैं । डेढ गुणहानिगुणित इनकी अन्योन्याभ्यस्त राशिसे सान्तर-निरन्तरवर्गणाके
गुणित करनेपर ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणायें होती हैं ।

कामर्णशरीरवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ?
अभव्योंसे अनन्तगुणी कामर्णवर्गणाओंके भीतर नानागुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि
गुणकार है । यहाँ पर गुणकारके उत्पन्न करनेकी विधि पहलेके समान कहनी चाहिए ।

कामर्णशरीरसे पूर्व अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं ।

को गुणगारो? अभवसिद्धि एहि अणंतगुणो सगअण्णोण्णव्भत्थरासी गुणगारो । कुदो? एदिस्से अगहणदव्ववग्गणाए अभवसिद्धि एहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तणाणा-गुणहाणिसलागुवलंभादो । एदासिमण्णोण्णव्भत्थरासी सिद्धेहि तो किमणंतगुणो कि वा अणंतगुणहीणो होदि त्ति ण णव्वदे, विसिट्ठुवदेसाभावादो ।

मणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुणगारो ? मणदव्व-गुणहाणिसलागाणमण्णोण्णव्भत्थरासी ।

मणदव्ववग्गणाए हेट्ठिमअगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? अगहणगुणहाणिसलागण्णोण्णव्भत्थरासी ।

भासादव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? भासाद-गणगुणहाणिसलागण्णोण्णव्भत्थरासी ।

भासावग्गणाए हेट्ठा तदणंतरअगहणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंत-गुणा । को गुणगारो ? सगगुणहाणिसलागण्णोण्णव्भत्थरासी ।

तेजइयवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? तेजावग्गण-गुणहाणिसलागण्णोण्णव्भत्थरासी ।

तेजइयस्स हेट्ठिमतदणंतरअगहणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुणगारो ? अगहणवग्गणाए गुणहाणिसलागाणमण्णोण्णव्भत्थरासी ।

गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणी अपनी अन्योन्याभ्यस्तराशि गुणकार है, क्योंकि, इस अग्रहणद्रव्यवर्गणाकी अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण नाना गुणहा-निशलाकार्यें पाई जाती हैं । इनकी अन्योन्याभ्यस्तराशि सिद्धोंसे क्या अनन्तगुणी है या अन-न्तगुणी हीन है यह नहीं जाना जाता है, क्योंकि, इस विषयमें विशिष्ट उपदेशका अभाव है ।

मनोद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? मनोद्रव्य-वर्गणाओंकी गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्तराशि गुणकार है ।

मनोद्रव्यवर्गणासे पूर्व अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुण-कार क्या है ? अग्रहण गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त गुणकार है ।

भाषाद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? भाषावर्गणाओंका गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्तराशि गुणकार है ।

भाषावर्गणासे पूर्व उसकी अनन्तरवर्ती अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्तराशि गुणकार है ।

तैजसशरीरवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? तैजसवर्गणाकी गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है ।

तैजसशरीरसे पूर्व उसकी अनन्तरवर्ती अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अग्रहणवर्गणाकी गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है ।



आहारवर्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? आहारवर्गण-
गुणहाणिसलागण्णोणव्वत्थरासी । आहारवर्गणाए हेट्ठा तदणंतरअग्रहणवर्गणासु
णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुणगारो ? अग्रहणवर्गणगुणहाणिसलागण्णो-
णव्वत्थरासी । परमाणुपोगलदव्ववर्गणाए णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को
गुण० ? जहणपरित्ताणंतादो अणंतगुणो । एदस्स कारणं वृच्चदे । तं जहा-
पदमाणुपोगलदव्ववर्गणादो उवरि असंखेज्जलोगमेत्तद्धानं गंतूण तदित्थवर्गणमद्धं
होवि । पुणो वि एत्तियं चेव अद्धाणं गंतूण तदित्थवर्गणा चट्ठभागा होवि । पुणो
अणेण विहाणेण असंखेज्जपदेसियवर्गणाए अब्भंतरे जहणपरित्ताणंतच्छेदणयमेत्त-
गुणहाणीसु गदासु परमाणुवर्गणादो तदित्थवर्गणा जहणपरित्ताणंतगुणहीणा होवि ।

संपहि असंखेज्जपदेसियवर्गणाए उवकस्स असंखेज्जासंखेज्जमेत्तद्धानस्स असंखे-
ज्जविभागम्मि द्विवर्गणादो जदि परमाणुवर्गणा अणंतगुणा होवि तो असंखेज्जपदे-
सियवर्गणाए उवरिमम्मि द्विवर्गणं पेक्खिदूण परमाणुवर्गणा णिच्छएण अणंतगुणा
होवि । त्ति सहहेयव्वं । एवं होवि त्ति कादूण जहणपरित्ताणंतवर्गणापमाणेण उव-
रिमअग्रहणसव्ववर्गणासु गुणिदासु कदासु दिवड्ढगुणहाणिमेत्ताओ होवि पुणो असंखे-
ज्जपदेसियवर्गणगुणहाणिसलागाओ विरलिय बिगुणिय अण्णोणगुणिदरासिणा
अणंतपदेसियपढमवर्गणाए गुणिदाए परमाणुपोगलदव्ववर्गणा होवि । पुणो एदाए

आहारवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं गुणकार क्या है ? आहार-
वर्गणाकी गुणहानिलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्तराशि गुणकार है । आहारवर्गणासे पूर्व उसकी
अनन्तरवर्ती अग्रहणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ?
अग्रहणवर्गणाकी गुणहानिसलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्तराशि गुणकार है । परमाणुपुद्गल
द्रव्यवर्गणाके नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? जघन्य परीतानन्तसे
अनन्तगुणा गुणकार है । इसका कारण कहते हैं । यथा-- परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणासे ऊपर
असंख्यात लोकप्रमाण स्थान जाकर वहांकी वर्गणा अर्धभागप्रमाण होती है । फिर भी इतना
ही स्थान जाकर वहांकी वर्गणा चतुर्थभागप्रमाण होती है । पुनः इस विधिसे असंख्याप्रदेशी
वर्गणाके भीतर जघन्य परीतानन्तकी अर्धच्छेदप्रमाण गुणहानियोंके जाने पर परमाणुवर्गणासे
वहांकी वर्गणा जघन्य परीतानन्तगुणी हीन होती है ।

अब असंख्यातप्रदेशी वर्गणाके उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातप्रमाण स्थानके असंख्यातवें भागमें स्थित
वर्गणासे यदि परमाणुवर्गणा अनन्तगुणी होती है तो असंख्यातप्रदेशी वर्गणाके ऊपर स्थित वर्ग-
णाको देखते हुए परमाणुवर्गणा निश्चयसे अनन्तगुणी होती है ऐसा श्रद्धान करना चाहिए । इस
प्रकार होती है ऐसा समझकर कर जघन्य परीतानन्त वर्गणाके प्रमाणसे उपरिम अग्रहण सब
वर्गणाओंका गुणकार करने पर वे डेढ़ गुणहानिप्रमाण होती हैं । पुनः असंख्यातप्रदेशी
वर्गणाओंकी गुणहानिसलाकाओंका विरलन कर और द्विगुणित कर जो अन्योन्यगुणित
राशि उत्पन्न हो उससे अनन्तप्रदेशी प्रथम वर्गणाके गुणित करने पर परमाणुपुद्गलद्रव्य-

अणंतपदेसियदव्ववर्गणाए ओवट्टिदाए दिवड्डुगुणहाणिणोवट्टियअण्णोण्णव्वत्थरासी आगच्छदि । एदेण अणंतपदेसियअप्पिदव्वगणासु गुणिदासु परमाणुपोगलदव्ववर्गणा होदि । संखेज्जपदेसियसव्ववर्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वं संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? उक्कस्ससंखेज्जयं दूरूवूणं । पुणो एगरूवस्स असंखेज्जभागा च ॥ गुणगारो होदि । तं जहा-परमाणुपोगलदव्ववर्गणाए उक्कस्ससंखेज्जेण गुणिदाए एगपरमाणुपोगलदव्ववर्गणाए तिस्से असंखेज्जदि भागेण च अहियं संखेज्जपदेसियवर्गणाओ होति । पुणो गुणगारम्मि एगरूवे अवणिदे रूवूणक्कस्ससंखेज्जमेताओ परमाणुपोगलदव्ववर्गणाओ होति । पुणो रूवूणक्कस्ससंखेज्जयस्स संकलणाए अवणिदाए अहियगोवुच्छविसेसा होति । संपहि दोगुणहाणिमेत्तगोवुच्छविसेसेसु जदि एगपरमाणुवर्गणा लब्धदि तो रूवूणक्कस्ससंखेज्जयस्स संकलणमेत्तगोवुच्छविसेसेसु किं लभामो ति पमाणेण फलगुणि दिच्छाए ओवट्टिदाए परमाणुवर्गणाए असंखेज्जदिभागो आगच्छदि । पुणो एदं रूवूणक्कस्ससंखेज्जमेत्तगुणगारम्मि अवणियसेसं परमाणुवर्गणाए गुणगारे ट्ठविदे संखेज्जपदेसियसव्ववर्गणाओ होति । परमाणुवर्गणाए एदासु ओवट्टिदासु एकरूवस्स असंखेज्जदिभागेणूयं रूणूणक्कस्ससंखेज्जयं लद्धं होदि । एदमेत्थ गुणगारो । असंखेज्जपदेसियणाणासेडिसव्ववर्गणदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? एगरूवस्स असंखेज्जदिभागेणूयं उक्कस्ससंखेज्जेहि परिहोणदिवड्डुगुणहाणीणं संखेज्जदिभागो को पडिभागो ?

वर्गणा होती है । पुनः इससे अनन्तप्रदेशी द्रव्य वर्गणाके भाजित करनेपर डेढ गुणहानिसे भाजित अन्योन्याभ्यस्तराशि आती है । इससे अनन्तप्रदेशी विवक्षित वर्गणाओंके गुणित करने पर परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा होती है । संख्यातप्रदेशी सब वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य संख्यातगुणे होते हैं । गुणकार क्या है ? दो कम उत्कृष्ट संख्यात गुणकार है । पुनः एक रूपके असंख्यात बहुभाग गुणकार है । यथा- परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाके उत्कृष्ट संख्यातसे गुणित करनेपर एक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा और उसका असंख्यातवां भाग अधिक संख्यात-प्रदेशी द्रव्यवर्गणायें होती हैं । पुनः गुणकारमें से एक अंकके कम करने पर एक कम उत्कृष्ट संख्यातप्रमाण परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणायें होती हैं । पुनः एक कम उत्कृष्ट संख्यातकी संकलनाके घटा देने पर अधिक गोपुच्छविशेष होते हैं । अब दो गुणहानिमात्र गोपुच्छविशेषोंमें यदि एक परमाणुवर्गणा लब्ध होती है तो एक कम उत्कृष्ट संख्यातके संकलनमात्र गोपुच्छविशेषोंमें क्या प्राप्त होगा इस प्रकार फलगुणित इच्छाको प्रमाणसे भाजित करने पर परमाणुवर्गणाका असंख्यातवां भाग आता है । पुनः इसके एक कम उत्कृष्ट संख्यातप्रमाण गुणकारमें से घटाकर शेष रहे द्रव्यको परमाणुवर्गणाका गुणकार स्थापित करने पर संख्यातप्रदेशी सब वर्गणायें होती हैं । परमाणुवर्गणासे इनके भाजित करने पर एकका असंख्यातवां भाग कम एक कम उत्कृष्ट संख्यात लब्ध होता है । यह यहां पर गुणकार है । असंख्यातप्रदेशी नानाश्रेणि सब वर्गणाद्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? एकका असंख्यातवां भाग कम उत्कृष्ट संख्यात हीन डेढ गुणहानियोंका संख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? एकका

❖ मुदितप्रती 'संखेज्जदिभागो च' इति पाठः ।

रूवूणवकस्ससंखेज्जयं एगरूवस्स असंखेज्जवि०भागेण ऊणयं । एत्थ कारणं सुगमं । एवं वगणप्पाबहुगं समत्तं । एवं चोद्देसेहि अनुयोगद्वारेहि वगणाए सह वगणदव्व-समुदाहारो ति समत्तमणुयोगद्वारं ।

संपहि अणंतरोवणिधा णाम जमणुयोगद्वारं तस्स परुवणं कस्सामो । तं जहा--अणंतरोवणिधा दुविहा--दव्वट्टदा पदेसट्टदा । दव्वट्टदाए अणंतरोवणिधा वगणदव्वसमुदाहारे चेव परुविदा ति नेह परुवेदव्वा ? ण, तत्थ अणुसंगेण सूचिदत्तादो । एत्थ पुण ताए चेव अहियारो ति तस्से विसेसिदूण परुवणा कीरदे । परमाणुपोगलदव्ववगणादो दुपदेसियदव्ववगणा विसेसहीणा । विसेसो पुण असंखे-ज्जविभागे । तस्स को पडिभागे? असंखेज्जा लोका । तं जहा-असंखेज्जलोगे विरलेदूण परमाणुपोगलदव्ववगणे समखंडं कादूण दिण्णे एक्केवकस्स रूवस्स वगणाविसेस-पमाणं पावदि । पुणो एत्थ एगरूवधरिदं परमाणुवगणादो सोहिदे सेसं दुपदेसिय-वगणदव्वं होदि । वेरूवधरिदेसु अवणिदेसु तिपदेसियवगणदव्वं होदि । तिण्णि-रूवधरिदेसु परमाणुवगणदव्वादो अवणिदेसु चदुपदेसियवगणदव्वं होदि । एवं विसेसहीणा विसेसहीणा होदूण गच्छंति जाव भागहारस्स अद्धमेत्तवगणाओ उवरि चडिदाओ ति । ताधे तदित्थवगणा दव्वट्टदाए दुगुणहीणा होदि । पुणो एदाए असंख्यातवां भाग कम एक्क कम उत्कृष्ट संख्यात प्रतिभाग है । यहां पर कारण सुगम है । इस प्रकार वर्गणाअल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

इस प्रकार चौदह अनुयोगद्वारों और वर्गणाके साथ वर्गणाद्रव्यसमुदाहार

अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

अब अतन्तरोपनिधा नामका जो अनुयोगद्वार है उसका कथन करते हैं । यथा-अनन्तरोपनिधा दो प्रकारकी है-द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थता ।

शंका-द्रव्यार्थताकी अपेक्षा अतन्तरोपनिधाका वर्गणासमुदाहारमें कथन किया है, इसलिए यहां कथन नहीं करना चाहिए ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, वहां पर अनुसंगसे उसका सूचन किया है । परन्तु यहां पर उसका ही अधिकार है, इसलिए उसका विशेषरूपसे कथन करते हैं ।

परमाणु पुद्गल द्रव्यवर्गणासे द्विप्रदेशी द्रव्यवर्गणा विशेष हीन है । विशेषका प्रमाण असंख्यातवां भाग है । उसका प्रतिभाग क्या है? असंख्यात लोक प्रतिभाग है । यथा-असंख्यात लोकोंका विरलन करके उसपर परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाओंको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति वर्गणाविशेषका प्रमाण प्राप्त होता है; पुनः यहाँ एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको परमाणु वर्गणा द्रव्यमेंसे घटा देनेपर शेष द्विप्रदेशी वर्गणाद्रव्य होता है । दो अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्यको घटा देनेपर त्रिप्रदेशी वर्गणाद्रव्य होता है । तीन विरलन अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्यको परमाणुवर्गणाद्रव्यमें से घटा देनेपर चतुःप्रदेशी वर्गणाद्रव्य होता है । इस प्रकार भागहारके अर्धभाग-प्रमाण वर्गणाओंके उत्तरोत्तर प्राप्त होने तक विशेष हीन विशेष हीन होकर जाते हैं । तब वहांकी वर्गणा द्रव्यार्थताकी अपेक्षा द्विगुणी हीन होती है । पुनः इस द्विगुण हीन वर्गणाका

दुगुणहीणवर्गणाए[❀] पुव्वविरलणाए समखंडं कादूण दिण्णाए रुवं पडि एगेगवर्गणा-
विसेसो पावदि । णवरि पुव्विल्लवर्गणविसेसादो संपहियवर्गणविसेसो दुगुणहीणो ।
पुणो एत्थ एगवर्गणविसेसे अवणिदे तदणंतरवर्गणदव्वं होदि । एवं विसेसहीणक्कमं
जागिदूण णेयव्वं जाव धुवखंधम्मि अणंताओ वर्गणाओ गदाओ त्ति । तदो तिस्से
असंखेज्जभागहीणवर्गणाए जा उवरिमअणंतरवर्गणा सा संखेज्जभागहीणा । तिस्से
को पडिभागो? जहणपरित्तासंखेज्जयस्स अद्धछेदणयाणं संखेज्जविभागो । तं जहा-
जहणपरित्तासंखेज्जद्धछेदणयाणं संखेज्जविभागं विरलेदूण असंखेज्जभागहीणवर्ग-
णाणं चरिमदुगुणहीणवर्गणं समखंडं[❀] कादूण दिण्णे रुवं पडि एगेगवर्गणविसेसो
पावदि । पुणो एत्थ एगरूवधरिदे तत्थ अवणिदे तदणंतरउवरिमवर्गणदव्वपमाणं
होदि । एवं संखेज्जभागहीणा होदूण गच्छंति जाव धुवखंधवर्गणाए अणंताओ वर्ग-
णाओ गदाओ त्ति । तदो तिस्से संखेज्जविभागहीणचरिमवर्गणाए जा उवरिमअणं-
तरवर्गणा सा संखेज्जगुणहीणा।तस्स को पडिभागो? जहणपरित्तासंखेज्जछेदणाणं
संखेज्जविभागो । तं जहा- जहणपरित्तासंखेज्जछेदणाणं संखेज्जभागं विरलेदूण
संखेज्जभागहीणवर्गणाणं चरिमदुगुणहीणवर्गणं समखंडं कादूण दिण्णे तत्थ एगरूव-
धरिदं तदणंतरउवरिमवर्गणपमाणं होदि । एवं णिरंतरकमेण संखेज्जगुणहीणाओ

पूर्व विरलनके प्रति समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक विरलनके प्रति एक एक वर्गणाविशेष प्राप्त होता है । इतनी विशेषता है कि पहलेके वर्गणाविशेषसे साम्प्रतिक वर्गणाविशेष द्विगुण हीन होता है । पुनः यहाँ पर एक वर्गणाविशेषके घटा देनेपर तदनन्तरवर्ती वर्गणाद्रव्य होता है । इस प्रकार ध्रुवस्कन्धमें अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक विशेषहीन क्रमको जानकर ले जाना चाहिए । अनन्तर उस असंख्यात भागहीन वर्गणासे जो आगेकी अनन्तर वर्गणा है वह संख्यात भागहीन है । उसका प्रतिभाग क्या है ? जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके संख्यातवें भागप्रमाण प्रतिभाग है । यथा-जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके संख्यातवें भागका विरलन करके असंख्यात भागहीन वर्गणाओंमेंसे अन्तिम द्विगुणहीन वर्गणाको समान खण्ड करके देयरूपसे देनेपर प्रत्येक विरलन अङ्कके प्रति एक एक वर्गणाविशेष प्राप्त होता है । पुनः यहाँ विरलनमेंसे एक अङ्कके प्रति प्राप्त द्रव्यको उस वर्गणामें से घटा देने पर उसकी अनन्तरवर्ती उपरिम वर्गणा द्रव्यका प्रमाण होता है । इस प्रकार ध्रुवस्कन्ध वर्गणाकी अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक सब वर्गणायें संख्यात भागहीन होकर जाती हैं । अनन्तर उस संख्यातभागहीन अन्तिम वर्गणासे जो आगेकी अनन्तर वर्गणा है वह संख्यातगुणहीन है । उसका प्रतिभाग क्या है ? जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंका संख्यातवां भाग प्रतिभाग है । यथा-जघन्य परीता-संख्यातके अर्धच्छेदोंके संख्यातवें भागका विरलन करके संख्यातभागहीन वर्गणाओंमेंसे अन्तिम द्विगुण हीन वर्गणाको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर वहाँ एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्य तदनन्तर उपरिम वर्गणाका प्रमाण होता है । इस प्रकार ध्रुवस्कन्धमें अन्य अनन्त

❀ ता० प्रती ' एदा दुगुणहीणा वर्गणाए ' आ० प्रती ' एदा दुगुणहीणवर्गणाए ' इति पाठः ।

❀ ता० का० प्रत्योः ' -वर्गणस्म समखंडं ' इति पाठः ।

संखेज्जगुणहीणाओ होदूण गच्छंति जाव धुवखंधम्मि अण्णाओ अणंताओ वग्गणाओ गदाओ ति । पुणो तस्से संखेज्जगुणहीणचरिमवग्गणाए जा उवरिमअणंतरवग्गणा सा असंखेज्जगुणहीणा होदि । तस्स को पडिभागो? असंखेज्जा लोगा । तं जहा-असंखेज्जलोगे विरलेदूण पुणो संखेज्जगुणहीणवग्गणाणं चरिमवग्गणं समखंडं कादूण दिण्णे तत्थ एगरूवधरिदं तदणंतरउवरिमवग्गणपमाणं होदि । एवं निरंतरकमेण असंखेज्जगुणहीणाओ होदूण गच्छंति जाव धुवखंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ ति । तस्से उवरि जाओ अणंतरवग्गणाओ ताओ अणंतगुणहीणाओ होंति । तं जहा-अभवसिद्धिएहि अणंतगुणसिद्धाणमणंतिमभागरासि विरलेदूण पुणो असंखेज्जगुणहीणवग्गणाणं चरिमवग्गणं समखंडं कादूण दिण्णे तदित्थएगरूवधरिदं तदणंतरवग्गणपमाणं होदि । एवमणंतगुणहीणाओ अणंतगुणहीणाओ होदूण गच्छंति जाव धुवखंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ ति । पुणो तस्मुवरिमणंतगुणहीणाओ चेव होंति । णवरि विसेसो अत्थि भागहारगओ । तं जहा-अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतिमभागभाग-हारं* विरलेदूण पुणो पढमअणंतगुणहीणवग्गणाणं चरिमवग्गणं समखंडं कादूण दिण्णे तत्थ एगरूवधरिदं तदणंतरउवरिमवग्गणपमाणं होदि । एवं पुणो वि अणंतगुणहीणाओ अणंतगुणहीणाओ होदूण गच्छंति जाव धुवखंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ

वर्गणाओंके व्यतीत होने तक सब वर्गणायें निरन्तर क्रमसे संख्यातगुणी हीन संख्यातगुणी हीन होकर जाती हैं । पुनः उस संख्यातगुणीन अन्तिम वर्गणासे जो आगेकी अनन्तर वर्गणा है वह असंख्यातगुणी हीन होती है । उसका प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिभाग है । यथा-असंख्यात लोकोंका विरलन करके पुनः संख्यातगुणीन वर्गणाओंमेंसे अन्तिम वर्गणाकी समान खण्ड करके देयरूपसे देनेपर यहाँ एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त द्रव्य तदनन्तर उपरिम वर्गणाका द्रव्य होता है । इस प्रकार ध्रुवस्कन्धमें अन्य अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक सब वर्गणायें निरन्तर क्रमसे असंख्यातगुणी हीन होकर जाती हैं । पुनः उसके ऊपर जो अनन्तर वर्गणायें हैं वे अनन्तगुणीन होती हैं । यथा-अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंसे अनन्तवें भागप्रमाण राशिका विरलन करके पुनः असंख्यातगुणी हीन वर्गणाओंमेंसे अन्तिम वर्गणाके समान खण्ड करके देयरूपसे देनेपर वहाँ एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त द्रव्य तदनन्तर वर्गणाका प्रमाण होता है । इस प्रकार ध्रुवस्कन्धमें अन्य अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक सब वर्गणायें अनन्तगुणी हीन अनन्तगुणीहीन होकर जाती हैं । पुनः इसके आगे सब वर्गणायें अनन्तगुणी हीन ही होती हैं । मात्र भागहारगत कुछ विशेषता है । यथा-अभव्योंसे अनन्तगुण और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण भागहारका विरलन करके पुनः प्रथम अनन्तगुणीन वर्गणाओंमेंसे अन्तिम वर्गणाको समान खण्ड करके देयरूपसे देनेपर वहाँ एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त द्रव्य तदनन्तर आगेकी वर्गणाका प्रमाण होता है । इस प्रकार ध्रुवस्कन्धमें अन्य अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक ये सब वर्गणायें फिर भी अनन्तगुणी हीन अनन्तगुणी हीन होकर जाती हैं ।

❖ ता० अ० प्रत्योः 'भागहारं गओ' इति पाठः ।

❖ ता० प्रती 'मणंतिमभागहारं' अ० प्रती 'मणंतिमभागे भागहारं' इति पाठः ।

गदाओ त्ति । पुणो तत्तो उवरि अणंतगुणहीणाओ चेव होति । णवरि विसेसो भागहारगओ अत्थि । तं जहा-सव्वजीवेहि अणंतगुणहीणं सिद्धाणमणंतगुणं भागहारं विरलेदूण बिदियवारं अणंतगुणहीणवग्गणाणं चरिमवग्गणं समखंडं कादूण दिण्णं तत्थ एगखंडं तदणंतरवग्गणपमाणं होदि । एवमणंतगुणहीणाओ अणंतगुणहीणाओ होदूण गच्छंति जाव सांतरणिरंतरवग्गणाओ णिट्ठिदाओ त्ति । पदेसट्ठदा ताव थप्पा ।

परंपरोवणिघा दुबिहा— दव्वट्ठदाए पदेसट्ठदाए चेव । दव्वट्ठदाए परमाणुदव्व-वग्गणादो असंखेज्जलोगमेत्तद्धाणं गंतूण दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाव धुवखंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ त्ति । असंखेज्जलोगमेत्तभागहारसग अद्धं गंतूण दुगुण-हाणी होवि त्ति भणिदं होदि । तस्सुवरि संखेज्जाओ वग्गणाओ गंतूण दुगुणहाणी होदि । एवं णेयव्वं जाव धुवखंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ त्ति । जहणपरि-त्तासंखेज्जयस्स अद्धच्छेदणाणं संखेज्जदिभागमेत्तद्धाणं गंतूण एत्थ दुगुणहाणी होदि त्ति भणिदं होदि । पुणो उवरि जाणिदूण णेयव्वं जाव धुवखंधम्मि वग्गणाओ णिट्ठिदाओ त्ति । एत्थ तिण्णि अणुयोगद्वाराणि— परूवणा पमाणमप्पाबहुअं चेदि । परूवणदाए अत्थि णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतरसलागाओ एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं पि अत्थि । पमाणमसंखेज्जभागहीणवग्गणाणमेगपदेसगुणहाणिट्ठाणमसंखेज्जा लोगा ।

पुनः उससे ऊपर वर्णणायें अनन्तगुणी हीन ही होती हैं । मात्र यहाँ पर भागहारगत कुछ विशेषता है । यथा—सब जीवोंसे अनन्तगुणे हीन और सिद्धोंसे अनन्तगुणे भागहारका विरलन करके दूसरी बारमें अनन्तगुणहीन वर्गणाओंमेंसे अन्तिम वर्गणाको समान खण्ड करके देयरूपसे वहाँ पर देनेपर जो एक खण्ड प्राप्त होता है वह तदनन्तर वर्गणाका प्रमाण होता है । इस प्रकार सान्तर-निरन्तरवर्गणाओंके समाप्त होने तक ये सब वर्गणायें अनन्तगुणी हीन अनन्तगुणी हीन होकर जाती हैं । यहाँ प्रदेशार्थता स्थगित करते हैं ।

परम्परोपनिष्ठा दो प्रकारकी है—द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थता । द्रव्यार्थताकी अपेक्षा परमाणु द्रव्यवर्गणासे असंख्यात लोकप्रमाण स्थान जाकर द्विगुणहीन द्विगुणहीन वर्गणायें होती हैं जो ध्रुवस्कन्धमें अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक जानती चाहिए । असंख्यात लोकप्रमाण भागहारके अर्धभागप्रमाण स्थान जाने पर द्विगुणी हानि होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । इससे आगे संख्यात वर्गणायें जाकर द्विगुणी हानि होती है । इस प्रकार ध्रुवस्कन्धमें अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक ले जाना चाहिए । जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके संख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर यहाँ द्विगुणी हानि होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । पुनः इससे ऊपर ध्रुवस्कन्धमें सब वर्गणाओंके समाप्त होने तक जानकर ले जाना चाहिए । यहाँ पर तीन अनुयोगद्वार हैं—परूवणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व । परूवणाकी अपेक्षा नानाप्रदेशगुणहानि स्थानान्तरशलाकायें हैं । एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर भी है । प्रमाण—असंख्यात भागहीन वर्ग-णाओंका एकप्रदेशगुणहानि अध्वान असंख्यात लोकप्रमाण है । संख्यातभागहीन वर्गणाओंका

संखेज्जभागहीणवग्गणाणमेगपदेसगुणहाणिअट्ठाणं संखेज्जाओ वग्गणाओ । णाणापदे-
सगुणहाणिसलागाओ उभयत्थ पुण अणंताओ । अप्पाबहुगं—संवत्थोवमेगपदेसगुण-
हाणिट्ठाणंतरं । णाणापदेसगुणहाणिसलागाओ अणंतगुणाओ ।

संपहि पदेसट्ठुदाए अणंतरोवणिघा वृचचदे । तं जहा—परमाणुपोग्गलवग्गण-
पदेसादो दुपदेसियवग्गणपदेसा विसेसाहिया । किच्चूणदुगुणा त्ति भणिदं होदि ।
तिपदेसियवग्गणपदेसा विसेसाहिया । किच्चूणदुभागेण अहिया त्ति भणिदं होदि ।
चदुप्पदेसियवग्गणाए पदेसा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? किच्चूणतिभागेण ।
पंचमपदेसियवग्गणाए पदेसा विसेसाहिया । के० मेत्तेण ? किच्चूणचदुग्गभागेण ।
एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण गच्छंति जाव असंखेज्जा लोगा त्ति
विसेसो पुण संखेज्जपदेसियासु वग्गणासु संखेज्जविभागो । असंखेज्जपदेसियासु
वग्गणासु अणंतरहेट्ठिमवग्गणपदेसाणमसंखेज्जविभागो । असंखेज्जलोगमेतट्ठाणं मंतूण
पदेसजवमज्झं होदि । पुणो जवमज्झस्सुवरि^१ विसेसहीणाओ होदूण वग्गणाओ
गच्छंति जाव धुवखंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ त्ति । विसेसो पुण असंखेज्ज-
विभागो । तस्स को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा । तस्सुवरि संखेज्जभागहीणा
होदूण गच्छंति जाव धुवखंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ त्ति । उवरि जाणि-
दूण णेदव्वां जाव धुवखंधवग्गणाओ समत्ताओ त्ति ।

एकप्रदेशगुणहानि अध्वान संख्यात वर्णणाप्रमाण है । परन्तु दोनों जगह नानाप्रदेशगुणहानि-
शलाकार्ये अनन्त हैं । अल्पबहुत्व—एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर सबसे स्तोक है । इससे नाना-
प्रदेशगुणहानिशलाकार्ये अनन्तगुणी हैं ।

अत्र प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तरोपनिघाका कथन करते हैं । यथा—परमाणु पुद्गल
वर्णणाप्रदेशसे द्विप्रदेशी वर्णणाप्रदेश विशेष अधिक हैं । कुछ कम दूने हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य
है । इनसे त्रिप्रदेशी वर्णणाप्रदेश विशेष अधिक हैं । कुछ कम द्वितीय भागप्रमाण अधिक हैं ।
इनसे चतुःप्रदेशी वर्णणाके प्रदेश विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ? कुछ कम त्रिभाग अधिक
हैं । इससे पञ्चप्रदेशी वर्णणाके प्रदेश विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ? कुछ कम चतुर्थ-
भाग अधिक है । इस प्रकार असंख्यात लोकप्रमाण स्थान जाने तक विशेष अधिक विशेष अधिक
होकर जाते हैं । किन्तु विशेषका प्रमाण संख्यातप्रदेशी वर्णणाओंमें संख्यातवें भागप्रमाण है ।
असंख्यातप्रदेशी वर्णणाओंमें अनन्तर अधस्तन वर्णणाप्रदेशोंके असंख्यातवें भागप्रमाण है । असं-
ख्यात लोकप्रमाण स्थान जाकर प्रदेशयवमध्य होता है । पुनः प्रदेशयवमध्यके ऊपर ध्रुवस्कन्धमें
अनन्त वर्णणाओंके व्यतीत होने तक वर्णणार्थ विशेष हीन होकर जाती हैं । मात्र विशेष असं-
ख्यातवें भागप्रमाण है । उसका प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण प्रतिभाग है । उसके
ऊपर ध्रुवस्कन्धमें अनन्त वर्णणाओंके व्यतीत होने तक सब वर्णणार्थ संख्यातभागहीन होकर
जाती हैं । आगे ध्रुवस्कन्ध वर्णणाओंके समाप्त होने तक जानकर ले जाना चाहिए ।

❁ ता० प्रती मंतूण पदेसजवमज्झस्सुवरि ' इति पाठः ।

संपहि अणंतरोवणिधाए दव्वट्टिदं सदिट्ठिविधि वत्तइस्सामो । तं जहा—
 परमाणुदव्ववर्गणा सदिट्ठीए बेसदछप्पणपमाणा ति २५६ घेतव्वा । पुणो विसे—
 सहीणकमेण णेयव्वं जाव धुवक्खंधम्मि असंखेज्जभागहीणवर्गणाणं चरिमवर्गणे ति ।
 सा वि सदिट्ठीए णव इदि गेण्हियव्वा । सेसं वेयणदव्वविहाणेण भणिदविहाणं
 संभलिदूण वत्तव्वं । णवरि एत्थ गुणहानिअद्धाणं णिसेगभागहारपमाणं च असंखेज्जा
 लोगा । संपहि पदेसट्ठदाए भणमाणाए पुव्वुत्तसदिट्ठिं ट्ठविध तत्थतणपरमाणु—
 योगलदव्ववर्गणाए एगपरमाणुणा गुणिदाए तिस्से पदेसपमाणं होदि । दुपदेसिय—
 दव्ववर्गणाए दोहि गुणिदाए दुपदेसियवर्गणपदेसपमाणं होदि । तिपदेसियदव्ववर्ग—
 णाए तोहि गुणिदाए तिपदेसियवर्गणपदेसपमाणं होदि । चदुपदेसियदव्ववर्गणाए
 चदुहि गुणिदाए चदुपदेसियवर्गणपदेसपमाणं होदि । एवं पंचगुणादिकमेण णेयव्वाओ
 जाव धुवक्खंधवर्गणाओ णिट्ठिदाओ ति । एवं गुणविहाणे कदे दव्वट्ठदाए जं गुण—
 हानिअद्धाणं भणिदं परमाणुवर्गणप्पट्ठि तमुवरि सगलं गंतूण पुणो विदियगुण—
 हाणीए सयलद्धम्मि उवरि चडिदे तम्मि पदेसे दोसु वग्गणट्ठाणेसु एगलद्धाणि
 वेजवमज्झाणि होति । तेसिमेसा सदिट्ठी—

अब अनन्तरोपनिधामे द्रव्यार्थताकी सदृष्टिविधिको बतलाते हैं । यथा—सदृष्टिमें
 परमाणु द्रव्यवर्गणा दोसौ छप्पन २५६ लेनी चाहिए । पुनः ध्रुवस्कन्धमें असंख्यातभागहीन वर्ग—
 णाओंमेंसे अन्तिम वर्गणाके प्राप्त होने तक विशेष हीनक्रमसे ले जाना चाहिए । वह भी सदृष्टिमें
 नौ ९ लेनी चाहिए । शेष वेदनाद्रव्यविधानकी अपेक्षा कही गई विधिको स्मरण करके कहना
 चाहिए । इतनी विशेषता है कि यहाँ पर गुणहानिअध्वान और निषेकभागहारका प्रमाण असं—
 ख्यात लोक है । अब प्रदेशार्थताकी अपेक्षा कथन करने पर पुर्वोक्त सदृष्टिको स्थापित करके वहाँकी
 परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाको एक परमाणुसे गुणित करनेपर उसके प्रदेशोंका प्रमाण होता है ।
 द्विप्रदेशी द्रव्यवर्गणाको दोसे गुणित करने पर द्विप्रदेशी वर्गणाके प्रदेशोंका प्रमाण होता है ।
 त्रिप्रदेशी वर्गणाको तीनसे गुणित करनेपर त्रिप्रदेशी वर्गणाके प्रदेशोंका प्रमाण होता है । चतुः—
 प्रदेशी द्रव्यवर्गणाको चारसे गुणित करनेपर चतुःप्रदेशी वर्गणाके प्रदेशोंका प्रमाण होता है । इस
 प्रकार ध्रुवस्कन्ध वर्गणाओंके समाप्त होनेतक पाँचगुणे आदिके क्रमसे ले जाना चाहिए । इस प्रकार
 गुणनविधिके करने पर द्रव्यार्थताकी अपेक्षा जो परमाणु वर्गणासे लेकर गुणहानिअध्वान कहा है
 वह ऊपर सब जाकर पुनः दूसरी गुणहानिका सकलात् ऊपर जानेपर उस स्थानमें दो वर्गणास्था—
 नोंमें एक साथ लब्ध हुए दो यवमध्य होते हैं । उनकी यह सदृष्टि है (सदृष्टि मूलमें दो है) ।

विशेषार्थ—द्रव्यार्थताकी अपेक्षा सदृष्टि—परमाणुद्रव्यवर्गणा २५६ और अन्तिम वर्गणा
 ९ बतलाई है । इसकी रचना वेदनाद्रव्यविधानकी अपेक्षा इस प्रकार है—

११५२	११५२
११२०	१२००
१०५६	१२३२
९६०	१२४८
८३२	१२४८?
६७२	१२३२
४८०	१२००
२५६	११५२?

संपहि एस्थ पढमगुणहाणिचरिमवगण-विदियगुण-
हाणिपढमवगणाओ संदिट्ठीए अस्थदो च दो वि सरि-
साओ । तदुवरिमवगणाओ जाव जवमज्झं ताव विसे-
साहियाओ त्ति घेतत्वं । पुणो जवमज्झस्सुवरि विसेसहीण-
कमेण णेयत्वं जाव ध्रुवक्खंधवगणाए असंखेज्जभागहीण-
संखेज्जभागहीणदव्ववगणे त्ति । एवं कदे जवमज्झस्स
हेट्ठा असंखेज्जाओ दुगुणवड्ढीयो उप्पज्जति त्ति । संपहि
जवमज्झस्स हेट्ठा गुणहाणीयो दव्वदुवाए दिवडुगुणहाणी-

णमद्वच्छेदणयमेत्ताओ । तं जहा- जवमज्झस्स हेट्ठिमपढमगुणहाणिअट्ठाणादो तद-
णंतरहेट्ठिमगुणहाणिअट्ठाणमद्वं होदि । विदियगुणहाणिअट्ठाणादो तदणंतरहेट्ठिम-

प्रथम गु० हा०	द्वि गु० हा०	तृ० गु०	च० गु०	पं० गु०
१४४	१२८	३६	३२	९
अन्तिम वर्गणा	प्रथम वर्गणा	अन्तिम	प्रथम	अन्तिम
१६०	१२०	४०	३०	१०
१७६	११२	४४	२८	११
१९२	१०४	४८	२६	१२
२०८	९६	५२	२४	१३
२२४	८८	५६	२२	१४
२४०	८०	६०	२०	१५
२५६	७२	६४	१८	१६

इस संदृष्टिमें २५६ परमाणुवर्गणाकी द्रव्यार्थता है, २४० द्विप्रदेशी, २२४ त्रिप्रदेशी, २०८ चतुःप्रदेशी, १९२ पंचप्रदेशी वर्गणाकी द्रव्यार्थता है । इसीप्रकार आगे भी जानना चाहिये । प्रदेशार्थताका प्रमाण जाननेके लिए २५६ को एक से, २४० को दो से, २२४ को तीनसे, २०८ को चारसे गुणा करनेपर २५६, ४८०, ६७२ और ८३२ प्रदेशार्थताका प्रमाण आ जाता है । इसी-प्रकार आगे भी जानकर गुणा करनेसे प्रदेशार्थताका प्रमाण आ जाता है । संदृष्टि मूलमें दी ही है । इसमें १२४८ की यवमध्य संज्ञा है ।

यहाँ पर प्रथम गुणहानिकी अन्तिम वर्गणा और द्वितीय गुणहानिकी प्रथम वर्गणाकी संदृष्टि है । वास्तवमें ये दोनों वर्गणायें समान हैं । इनसे ऊपरकी वर्गणायें यवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष अधिक हैं ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए । पुनः यवमध्यके ऊपर ध्रुवस्कन्धवर्गणाकी असंख्यातभागहीन और संख्यातभागहीन द्रव्यवर्गणाके प्राप्त होने तक विशेषहीन क्रमसे ले जाना चाहिए । ऐसा करनेपर यवमध्यके पूर्व असंख्यात द्विगुणवृद्धियाँ उत्पन्न होती हैं । यवमध्यके पूर्व ये गुणहानियाँ द्रव्यार्थताकी अपेक्षा डेढ़ गुणहानिके अर्धच्छेदप्रमाण होती हैं । यथा-यवम-
ध्यके पूर्व प्रथम गुणहानिअध्वानसे तदनन्तर पूर्वका गुणहानिअध्वान अर्धभागप्रमाण होता

१ म० प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु ' १२४० ' इति पाठः । २ अ० का० प्रत्योः ' ११५६ ' इति पाठः ।

म० प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु ' विदियगुणहाणि- ' इत्यादि वाक्यं नोपलभ्यते ।

तद्वियगुणहाणिअद्धाणमद्धं होदि । एवं पडिलोमेण जेयव्वं जाव परमाणुवर्गणपढम-
गुणहाणि त्ति । अणुलोमेण पुण पढमगुणवड्ढिअद्धाणादो विदियगुणवड्ढिअद्धाणं दुगुणं
होदि । पुणो एवं दुगुणवड्ढिअद्धाणं दुगुणदुगणकमेण गच्छदि जाव जवमज्झं त्ति ।
जदि वि एत्थ जवमज्झादो हेट्ठा गुणहाणिमेत्तोदिण्णसव्ववर्गणपदेसा दुगुणहीणा ण
होति तो वि बुद्धीए दुगुणहीणा त्ति घेतूण परूवणा कदा बालजणपबोहणट्ठं ।
जवमज्झादो उवरि वि एवं चेव बुद्धीए दुगुणहीणत्तं संकप्पिय वत्तव्वं । णवरि
उवरिमगुणहाणिअद्धाणं सव्वत्थ असंखेज्जा लोगा संखेज्जरूवाणि च । उवरिमगुण-
हाणिअद्धाणाणि सव्वत्थ सरिसाणि ण होति, जवमज्झादो उवरि चड्ढिदद्धाणसंक-
लणदुगुणमेत्तपक्खेवाणं सव्वत्थ धुवसरूवेण परिहाणिदंसणादो ।

है । इस प्रकार परमाणुवर्गणाकी प्रथम गुणहानिके प्राप्त होने तक प्रतिलोम विधिसे ले जाना चाहिए । अनुलोमविधिसे तो प्रथम गुणवृद्धिअध्वानसे दूसरा गुणवृद्धिअध्वान दूना होता है । इस प्रकार द्विगुणवृद्धि अध्वान यवमध्यके प्राप्त होने तक दूना दूना होकर गया है । यद्यपि यहा पर यवमध्यसे पूर्व गुणहानिमें प्राप्त हुए सब वर्गणाप्रदेश द्विगुणहीन नहीं होते है तो भी बाल-
जनोंको बोध करानेके लिए बुद्धिसे वे द्विगुणहीन होते हैं ऐसा ग्रहण करके उनकी प्ररूपणा की है । यवमध्यके ऊपर भी इसी प्रकार बुद्धिसे द्विगुणहीनपनेका संकल्प करके कथनकरना चाहिए । इतनी विशेषता है कि सर्वत्र उपरिम गुणहानि अध्वान असंख्यात लोक और संख्यात अंक प्रमाण है । उपरिमगुणहानिअध्वान सर्वत्र सभान नहीं होते हैं, क्योंकि यवमध्यसे जितने स्थान आगे जाते हैं उनके संकलनसे दूने प्रक्षेपोंकी सर्वत्र ध्रुवरूपसे हानि देखी जाती है ।

विशेषार्थ- यहां पर गुणहानिका प्रमाण ८ है, अतः डेढ गुणहानि ($८ \times \frac{१}{२}$) = १२ स्थान जाने पर १२४८ यवमध्य प्राप्त होता है ।

प्रथम गुणहाणि	द्वितीय गुणहाणि	त्रि० गु० हा०	चतु० गु० ही०	पंच० गु० हा०
↑ १४४ × ८ = ११५२ अन्तिम वर्गणा	१२८ × ९ = ११५२ प्रथम वर्गणा	३६ × २४ = ८६४ अन्तिम वर्गणा	३२ × २५ = ८०० प्रथम वर्गणा	६ × ४० = ३६० अन्तिम वर्गणा
१६० × ७ = ११२०	१२० × १० = १२००	४० × २३ = ९२०	३० × २६ = ७८०	१० × ३६ = ३६०
१७६ × ६ = १०५६	११२ × ११ = १२३२	४४ × २२ = ९६८	२८ × २७ = ७५६	११ × ३६ = ४१८
१९२ × ५ = ९६०	१०४ × १२ = १२४८ प्रथम यवमध्य	४८ × २१ = १००८	२६ × २८ = ७२८	१२ × ३७ = ४४४
२०८ × ४ = ८३२	९६ × १३ = १२४८ द्वितीय यवमध्य	५२ × २० = १०४०	२४ × २९ = ६९६	१३ × ३६ = ४६८
२२४ × ३ = ६७२	८८ × १४ = १२३२	५६ × १९ = १०६४	२२ × ३० = ६६०	१४ × ३५ = ४९०
२४० × २ = ४८०	८० × १५ = १२००	६० × १८ = १०८०	२० × ३१ = ६२०	१५ × ३४ = ५१०
२५६ × १ = २५६	७२ × १६ = ११५२	६४ × १७ = १०८८	१८ × ३२ = ५७६	१६ × ३३ = ५२८
↓	↓	↓	↓	↓

प्रथम यवमध्यसे पूर्व १२३२, १२००, ११५२, ११५२, ११२०, १०५६, ९६०, ८३२ व ६७२

जवमज्झादो उवरिमपक्खेवावणयस्स किं पि अत्थपरूवणं* कस्सामो । तं जहा— जवमज्झदव्वे सरूवदिवड्डुगुणहाणीए गुणिदे जवमज्झपदेसगं होदि । पुणो जवमज्झदव्वं टुविय दुरूवाहियदिवड्डुगुणहाणीए गुणिदे जवमज्झदव्वट्टुदाए समहिय-पदेसगं होदि । पुणो जवमज्झदव्वट्टुदादो उवरिमदव्वट्टुदाए एगो पक्खेवो हीणो त्ति दिवड्डुगुणहाणिणा जवमज्झदव्वट्टुदाए ओवट्टुदाए एगो पक्खेवो होदि । पुणो तम्मि दुरूवाहियदिवड्डुगुणहाणिणा गुणिदे रिणपदेसगं होदि । तत्थ दोदव्वट्टुदपक्खेवे घेतूण पुध टुविय सेसगुणगार-भागहारा सरिसा त्ति अवणिदे जवमज्झदव्वट्टुदा होदि । एवं पदेसगं पुठ्विल्लपदेसगम्मि अवणिदे जवमज्झपदेसगादो सरिसं पदेसगं होदि । पुणो तत्थ पुध टुविददव्वट्टुदाए दोपक्खेवमेत्तपदेसेसु अवणिदेसु जवमज्झादो अणंतर-उवरिमवगगणपदेसगं होदि । पुणो जवमज्झादो उवरि तदियाए वगणाए पदेसगं जवमज्झपदेसेहिंतो छहि दव्वट्टुदापक्खेवमेत्तपदेसेहि ऊणं होदि । चउत्थवगणाए पदेसगं बारहेहि ऊणं होदि । एवं चडिदह्माणसंकलणं दुगुणमेत्तदव्वट्टुदपक्खेवेहि ऊणं होदूण वगणाणं पदेसगमुवरि गच्छदि । णवरि जत्थ दव्वट्टुद*पक्खेवा सरिसा

ये ९ स्थान जाकर यवमध्य (निकटतम) आधा ६७२ आता है । द्वितीय यवमध्यसे उत्तर १२३२, १२००, ११५२, १०८८, १०८०, १०६४, १०४०, १००८, ९७८, ९२०, ८६४, ८००, ७८०, ७५६, ७२८, ६९६, ६६०, व ६२० ये १८ स्थान जाकर ६२० यवमध्य का (निकटतम) आधा ६२० आता है । इस प्रकार संदृष्टिके अनुसार प्रदेशार्थमें यवमध्यसे पूर्वकी गुणहानिमें ९ स्थान हैं और उत्तरकी गुणहानिमें (९×२) = १८ स्थान हैं ।

अब यवमध्यसे उपरिम प्रक्षेपोंके निकालनेकी विधिका कुछ कथन करते हैं । यथा— यवमध्यके द्रव्यको एक अधिक डेढ गुणहानिसे गुणित करनेपर यवमध्य प्रदेशाग्र होता है । पुनः यवमध्यके द्रव्यको स्थापित कर दो अधिक डेढ गुणहानिसे गुणित करने पर यवमध्यद्रव्यार्थताकी अपेक्षा एक अधिक प्रदेशाग्र होता है । पुनः यवमध्यद्रव्यार्थतासे उपरिम द्रव्यार्थतामें एक प्रक्षेप हीन है, इसलिए डेढ गुणहानिसे यवमध्यद्रव्यार्थताके भाजित करने पर एक प्रक्षेप होता है । पुनः उसे दो अधिक डेढ गुणहानिसे गुणित करने पर ऋणस्वरूप प्रदेशाग्र होता है । वहाँ द्रव्यार्थताके दो प्रक्षेप लेकर पृथक् स्थापित करके शेष गुणकार और भागहार समान हैं, इसलिए अलग कर देने पर यवमध्यकी द्रव्यार्थता होती है । इस प्रदेशाग्रको पहलेके प्रदेशाग्रमेंसे कम कर देनेपर यवमध्यके प्रदेशाग्रके समान प्रदेशाग्र होता है । पुनः वहाँ पृथक् स्थापित हुई द्रव्यार्थताके दो प्रक्षेप-मात्र प्रदेशोंके अलग करने पर यवमध्यसे अनन्तर उपरिम वर्गणाका प्रदेशाग्र होता है । पुनः यवमध्यसे ऊपर तीसरी वर्गणाका प्रदेशाग्र यवमध्यके प्रदेशोंसे द्रव्यार्थताके छह प्रक्षेपमात्र प्रदेशोंसे हीन होता है । चतुर्थ वर्गणाका प्रदेशाग्र बारह प्रक्षेपमात्र प्रदेशोंसे हीन होता है । इस प्रकार जितने स्थान आगे गये हैं उनके संकलनसे गुणित दूने द्रव्यार्थतारूप प्रक्षेपोंसे हीन होता हुआ वर्गणाओं का प्रदेशाग्र ऊपर जाता है । इतनी विशेषता है कि जहाँ पर द्रव्यार्थताके प्रक्षेप समान

ण होंति तत्थ पुध तेसि संकलणं कादूण सिस्साणं पडिबोहो कायव्वो । एवं जवमज्झस्स उवरि सव्वगुणहाणीणमद्धानमसंखेज्जलोगमेत्तं चेव पुध पुध होवि । होंताओ वि विसेसहीणाओ चेव होंति, सरिसाओ ण होंति, दव्वट्ठद पक्खेवाणं जवमज्झं पेक्खिदूण अवट्ठिदकमेण हाणीए अणुवलंभादो । एदस्स भावत्थो— दव्वट्ठदापक्खेवेसु* अणवट्ठिदरूवेण एगेगगुणहाणिंहि सगसगसरूवेण हीयमाणेसु गुणगारेसु च सव्वत्थ रूवाहियकमेण गच्छमाणेसु गुणहाणिअद्धानाणं सरिसभावस्स कारणं णत्थि । तेण विसरिसं चेव तदद्धानमिदि भणिदं होवि । एवमणंतरोवणिधा समत्ता ।

संपहि पदेसमस्सिदूण परंपरोवणिधा जवमज्झादो हेट्ठा वुच्चदे । तं जहा—

नहीं होते हैं वहाँ उनकी अलगसे संकलना करके शिष्योंको ज्ञान कराना चाहिए । इस प्रकार यवमध्यके ऊपर सब गुणहानियोंका अध्वान पृथक् पृथक् असंख्यात लोकप्रमाण होता है । ऐसा होता हुआ भी विशेष हीन ही होता है सदृश नहीं होता, क्योंकि, यवमध्यको देखते हुए द्रव्यार्थता के प्रक्षेपोंमें अवस्थित क्रमसे हानि उपलब्ध नहीं होती है । इसका आशय यह है कि द्रव्यार्थताके प्रक्षेपोंके अवस्थितरूपसे एक एक गुणहानिमें अपने अपने स्वरूपसे घटने पर और गुणकारोंके सर्वत्र एक अधिकके क्रमसे जाने पर गुणहानिअध्वानोंके सदृशरूप होनेका कारण नहीं है । इससे गुणहानियोंका अध्वान विसदृश ही होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । इस प्रकार अनंतरोपनिधा समाप्त हुई ।

विशेषार्थ—संदृष्टिमें द्वितीय गुणहानिमें द्रव्यार्थताका प्रक्षेप ८ है । इसका दुगुणा १६ है । यवमध्य (१२४८) के पश्चात् प्रथम प्रदेशार्थता १२३२ है जो यवमध्यसे एक दुगुणा प्रक्षेप (८×२) कम है (१२४८ - १२३२ = १६) । दूसरी प्रदेशार्थता १२०० है जो यवमध्य १२४८ से (१+२ = ३) तीन दुगुणे प्रक्षेपों (३×८×२ = ४८) से हीन है । तीसरी प्रदेशार्थता ११५२ है जो यवमध्यसे (१+२+३ = ६) छह दुगुणे प्रक्षेपों (६×८×२ = ९६) अर्थात् (१२४८ - ११५२ = ९६) कम है । चौथी प्रदेशार्थता १०८८ है जो यवमध्यसे (१+२+३+४ = १०) दस दुगुणे प्रक्षेप (१०×१६ = १६०) अर्थात् (१२४८ - १०८८ = १६०) कम है । १०८८ तृतीय गुणहानिकी प्रथम प्रदेशार्थता है और पंचम प्रदेशार्थता १०८० तीसरी गुणहानिकी द्वितीय प्रदेशार्थता है । तीसरी गुणहानिमें द्रव्यार्थता दुगुणा प्रक्षेप (२×४) = ८ है । तीसरी गुणहानिके प्रथम प्रदेशार्थतासे एक स्थान आगे जाने पर १०८० प्रदेशार्थता प्राप्त होती है जो (१०८८ - १०८० = ८) एक दुगुण प्रक्षेप (८) कम है । तीसरी गुणहानिमें प्रथम प्रदेशार्थतासे दो स्थान आगे जाकर १०६४ प्रदेशार्थता है जो प्रथम प्रदेशार्थता १०८८ से (१+२ = ३) तीन दुगुण प्रक्षेप (३×२×४ = २४) अर्थात् (१०८८ - १०६४ = २४) कम है । इसी प्रकार आगे भी संकलन करके द्रव्यार्थताके प्रक्षेपसे गुणा करके हानिका प्रमाण जान लेना चाहिये ।

अब प्रदेशोंका आश्रय लेकर यवमध्यसे नीचे परम्परोपनिधाका कथन करते हैं । यथा—



परमाणुपोगलद्रव्यवर्गणादो दुपदेसियवर्गणा पदेसेगणेन दुगुणा किचूणा । केत्तिय-
मेत्तेण ? दुगुणद्रव्यद्वुदापक्खेवमेत्तेण । तमजोइय दुगुणा चेव त्ति घेत्तव्वं । दुपदेसिय-
वर्गणादो चदुपदेसियवर्गणा किचूणदुगुणा । केत्तियमेत्तेण? अदुपक्खेवमेत्तेण । चदु-
पदेसियवर्गणादो अदुपदेसियवर्गणा दुगुणा किचूणा । केत्तियमेत्तेण ? वत्तीसपक्खेव-
मेत्तेण । एवमुवरि जाणिदूण णेयव्वं जाव जवमज्झं त्ति । णवरि परमाणुवर्गणप्पहुडि
जाव जहणपरित्तासंखेज्जपदेसियवर्गणं पावदि^१ ताव संखेज्जाओ वर्गणाओ गंतूण
दुगुणवड्ढीओ होंति । तेण संखेज्जपदेसियवर्गणासु संखेज्जाओ चेव^२ दुगुणवड्ढीओ
उप्पज्जंति । तस्सुवरि असंखेज्जाओ वर्गणाओ गंतूण दुगुणवड्ढी उप्पज्जदि । एव-
मसंखेज्जाओ दुगुणवड्ढीओ उवरि गंतूण जवमज्झमुप्पज्जदि । जवमज्झादो उवरि
गुणहाणिअट्ठाणमसंखेज्जा लोगा जाव ध्रुवक्खंधम्मि अणंताओ वर्गणाओ गदाओ
त्ति । तस्सुवरि संखेज्जाओ वर्गणाओ गंतूण दुगुणहाणी । एवमेदाओ गुणहाणीयो
गच्छंति जाव ध्रुवक्खंधम्मि अणंताओ वर्गणाओ गदाओ त्ति । उवरि जाणिदूण वत्तव्वं ।

एत्थ तिण्णि अणुयोगद्वाराणि—परूषणा प्रमाणमप्पावहुअं चेदि । परूषणदाए
अत्थि एगपदेसगुणहाणिद्वुणंतरं । णाणापदेसगुणहाणिसलागाओ वि अत्थि । प्रमाणं-

परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणासे द्विप्रदेशी द्रव्यवर्गणा प्रदेशाग्रकी अपेक्षा कुछ कम दूनी है । कितनी
न्यून है ? द्रव्यार्थनाके दूने प्रक्षेपमात्रसे न्यून है । यहां कुछ कमकी विवक्षा न कर दूनी ही है
ऐसा ग्रहण करना चाहिए । द्विप्रदेशी वर्गणासे चतुःप्रदेशी वर्गणा कुछ कम दूनी है । कितनी
न्यून है ? आठ प्रक्षेपमात्र न्यून है । चतुःप्रदेशी वर्गणासे आठप्रदेशी वर्गणा कुछ कम दूनी है ।
कितनी न्यून है ? बत्तीस प्रक्षेपमात्र न्यून है । इस प्रकार यवमध्यके प्राप्त होने तक आगे भी
जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि परमाणुवर्गणासे लेकर जघन्य परीतासंख्यातप्रदेशी
वर्गणाके प्राप्त होने तक जो संख्यात वर्गणायें हैं उतनी वर्गणायें जाकर द्विगुण वृद्धियाँ होती
हैं । इसलिए संख्यातप्रदेशीवर्गणाओंमें संख्यात ही द्विगुणवृद्धियाँ उत्पन्न होती हैं । उसके ऊपर
असंख्यात वर्गणायें जाकर द्विगुणवृद्धि उत्पन्न होती है । इस प्रकार असंख्यात द्विगुणवृद्धियाँ
ऊपर जाकर यवमध्य उत्पन्न होता है । यवमध्यसे ऊपर ध्रुवस्कन्धमें अनन्त वर्गणायें जाने तक
गुणहानि अध्वान असंख्यात लोकप्रमाण होता है । उसके ऊपर संख्यात वर्गणायें जाकर
द्विगुणहानि होती है । इस प्रकार ध्रुवस्कन्धमें अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक ये गुणहा-
नियाँ जाती हैं । इसके आगे जानकर कथन करना चाहिए ।

उदाहरण—अकसंदृष्टिमें परमाणुद्रव्यवर्गणाके प्रदेशाग्र २५६, द्विप्रदेशी द्रव्यवर्गणाके
प्रदेशाग्र ४८० है, प्रक्षेप $१६ \times २५६ \times २ = ५१२, ५१२ - (१६ \times २) = ४८०$ । चतुःप्रदेशी
वर्गणाके प्रदेशाग्र ८३२ है, $४८० \times २ = ९६०, ९६० - (१६ \times ८) = ८३२$ । आठप्रदेशी
वर्गणाके प्रदेशाग्र ११५२ है, $८३२ \times २ = १६६४, १६६४ - (१६ \times ३२) = ११५२$ ।

यहाँ तीन अनुयोगद्वार होते हैं—परूषणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व । परूषणाकी अपेक्षा
एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर है तथा नानाप्रदेशगुणहानिशलाकायें भी हैं । प्रमाण—एकप्रदेश-

❁ ता०प्रती 'वर्गणा पावदि' इति पाठः । ❁ ता०प्रती 'संखेज्जासु चेव' इति पाठः ।

एगपदेसगुणहाणिअद्धानं संखेज्जाहि वर्गणाहि असंखेज्जवर्गणाहि वा होदि । णाणा-
गुणहाणिसलागाओ जवमज्जस्स हेट्ठा असंखेज्जाओ, उवरि अणंताओ होति । अप्पा-
बहुअं— सव्वत्थोवमेगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं । णाणापदेसगुणहाणिसलागाओ अणंत-
गुणाओ । एवं परंपरोपनिधा समत्ता ।

अवहारो दुविहो-दव्वट्ठदाए पदेसट्ठदाए । तत्थ दव्वट्ठदाए परमाणुवर्गणप-
माणेण सव्ववर्गणदव्वं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि ? असंखेज्जलोगमेत्तविवड्डु-
गुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि । तं जहा-पढमगुणहाणिपमाणेण विदिया-
दिसव्वगुणहाणीसु कदासु पढमगुणहाणिपमाणाओ होति । पुणो पढमगुणहाणिदव्वे
परमाणुवर्गणपमाणेण कदे परमाणुवर्गणतिणिणचदुब्भागविकखंभं एगगुणहाणिआ-
यामक्खेत्तं होदि । पुणो विदियादिगुणहाणिदव्वे वि परमाणुवर्गणपमाणेण कदे एदं पि
पुव्विल्लक्खेत्तसमाणं होदि । पुणो एत्थ एगचदुब्भागविकखंभगुणहाणिआयामक्खेत्तं
होदि । तं घेत्तूणं पुव्विल्लक्खेत्तम्मि संधिदे गुणहाणिमेत्ताओ परमाणुवर्गणाओ उत्प-
ज्जंति । पुणो सेसक्खेत्तं मज्झमिह पाडिय पासे संधिदे एत्थ वि गुणहाणिअद्धमेत्तपर-
माणुवर्गणाओ उत्पज्जंति । एवं दिवड्डुगुणहाणिमेत्तपरमाणुवर्गणाओ होति त्ति
दिवड्डुगुणहाणीए परमाणुवर्गणाए गुणिदाए संदिट्ठीए सव्वदव्वपमाणमेत्तियं होदि

गुणहानिअध्वान संख्यात वर्गणाओं और असंख्यात वर्गणाओंका होता है तथा नानागुणहानि-
शलाकायें यवमध्यके नीचे असंख्यात हैं और ऊपर अनन्त हैं । अल्पबहुत्व- एकप्रदेशगुणहानि-
स्थानान्तर सबसे स्तोक है । इससे नानाप्रदेशगुणहानिशलाकायें अनन्तगुणी हैं । इस प्रकार
परम्परोपनिधा समाप्त हुई ।

अवहार दो प्रकारका है- द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थता । उनमेंसे द्रव्यार्थताकी अपेक्षा
परमाणुवर्गणाके प्रमाणसे सब वर्गणाओंका द्रव्य कितने काल द्वारा अपहृत होता है ? असंख्यात
लोकमात्र डेढ गुणहानि स्थानान्तर कालके द्वारा अपहृत होता है । यथा- द्वितीयादि सब गुण-
हानियोंको प्रथम गुणहानिके प्रमाणसे करने परवे सब प्रथम गुणहानिप्रमाण होती हैं । पुनः प्रथम
गुणहानिके द्रव्यको परमाणुवर्गणाके प्रमाणसे करने पर परमाणुवर्गणाका तीन बटे चार भाग-
प्रमाण विस्तारवाला और एक गुणहानिप्रमाण आयामवाला क्षेत्र होता है । पुनः द्वितीय आदि
गुणहानियोंके द्रव्यको भी परमाणुवर्गणाके प्रमाणसे करने पर यह भी पहलेके क्षेत्रके समान
होता है । पुनः यहां एक बटे चार भागप्रमाण विष्कम्भवाला और एक गुणहानिप्रमाण आयाम-
वाला क्षेत्र है उसे ग्रहण कर पहलेके क्षेत्रमें जोड़ देने पर गुणहानिप्रमाण परमाणुवर्गणायें उत्पन्न
होती हैं । पुनः शेष क्षेत्रको बीचमें से फाड़कर पार्श्वभागमें जोड़ने पर यहां भी गुणहानिके
अर्धभागप्रमाण परमाणुवर्गणायें उत्पन्न होती हैं । इस प्रकार डेढ गुणहानिप्रमाण परमाणु-
वर्गणायें होती हैं, इसलिए डेढ गुणहानिसे परमाणुवर्गणाके गुणित करने पर संदृष्टिकी अपेक्षा
सब द्रव्यका प्रमाण इतना ३०७२ होता है । पुनः यहां डेढ गुणहानि १२ से सब द्रव्यके भाजित

❁ ता० का० प्रत्योः 'आयामक्खेत्तं घेत्तूण' इति पाठः ।

३०७२ । पुणो एत्थ दिवड्डुगुणहाणिणा १२ सव्वदव्वे भागे हिदे परमाणुवगणा आगच्छदि २५६ । पुणो दुपदेसियवगणपमाणेण सव्वदव्वं केवचिरेण कालेण अव-
हिरिज्जदि ? सादिरेयदिवड्डुगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि । एवमुवरि
जाणिदूण णेयव्वं । णवरि दिवड्डुगुणहाणिच्छेदणएहि उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जच्छेदण-
एसु भागे हिदेसु जं भागलद्धं तं विरलेदूण उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जच्छेदणएसु समखंडं
कादूण दिण्णेषु एक्केक्कस्स रुवस्स दिवड्डुगुणहाणिच्छेदणयपमाणं पावदि । पुणो
एत्थ रुवूणविरलणमेत्तरुवधरिददिवड्डुगुणहाणिच्छेदणयमेत्तगुणहाणीओ जाव चडंति
ताव असंखेज्जलोगमेत्तकालेण अवहिरिज्जदि । तदुवरि अणतेण कालेण अवहिरि-
ज्जदि । एवं णेयव्वं जाव असंखेज्जभागहीणवगणाणं चरिमवगणे ति ।

तदो संखेज्जभागहीणवगणाणं पढमवगणपमाणेण सव्वदव्वं केवचिरेण कालेण
अवहिरिज्जदि ? अणतेण कालेण अवहिरिज्जदि । तं जहा— संखेज्जभागहीणवगणाणं
पढमवगणाए सव्ववगणदव्वे भागे हिदे जं भागलद्धं तं सलागभूदं ठुवेदूण पुणो
तव्ववगणपमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे सलागमेत्तेण कालेण अवहिरिज्जदि ।
एवं जाणिदूण णेयव्वं जाव महाखंधववगणे ति ॥

करने पर परमाणुवगणा २५६ आती है । पुनः द्विप्रदेशी वर्गणाके प्रमाणके सब द्रव्य कितने
कालके द्वारा अपहृत होता है ? साधिक डेढ गुणहानिस्थानान्तर कालके द्वारा अपहृत होता
है । इसी प्रकार ऊपर भी जानकर ले जाना चाहिए । इतनी विशेषता है कि डेढगुणहानिके
अर्धच्छेदोंसे उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातके अर्धच्छेदोंके भाजित करनेपर जो भाग लब्ध आवे उसका
विरलन करके उस विरलित राशि पर उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातके अर्धच्छेदोंको समान खण्ड
करके देयरूपसे देने पर एक एक विरलन अङ्कके प्रति डेढ गुणहानिके अर्धच्छेदोंका प्रमाण प्राप्त
होता है । पुनः यहां पर एक कम विरलन प्रमाण अङ्कोंके प्रति प्राप्त डेढ गुणहानिके अर्धच्छे-
दोंप्रमाण गुणहानियोंके आगे जाने तक वह असंख्यात लोकप्रमाण कालके द्वारा अपहृत होता
है । उसके आगे अनन्त कालके द्वारा अपहृत होता है । इस प्रकार असंख्यातभागहीन वर्गणा-
ओंमें अन्तिम वर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये ।

उसके बाद संख्यातभागहीन वर्गणाओंकी प्रथम वर्गणाके प्रमाणसे सब द्रव्य कितने
कालके द्वारा अपहृत होता है ? अनन्त कालके द्वारा अपहृत होता है । यथा— संख्यातभागहीन
वर्गणाओंकी प्रथम वर्गणाके प्रमाणसे सब वर्गणाओंके द्रव्यमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे
उसे शलाकारूपसे स्थापित करके पुनः उस वर्गणाके प्रमाणसे सब द्रव्यके भाजित करने पर
शलाकाप्रमाण कालके द्वारा अपहृत होता है । इस प्रकार जानकर महास्कन्धवर्गणाके प्राप्त
होने तक कथन करना चाहिये ।

✽ अ० प्रती '—पमाण होदि । पुणो ' इति पाठः ।

✽ ता० प्रती ' पढमवगणपमाणेण सव्वदव्वं केवचिरेण कालेण अ० ? सव्ववगणदव्वे ' इति पाठः ।

✽ अ० का० प्रत्यो ' महाखंधववगणे ति ' इति पाठः ।

संपहि पदेसट्टदमस्सिदूण अवहारकाले भण्णमाणे ताव सच्चंदव्वं जवमज्झपमाणं कस्सामो । तं जहा- एगपक्खेवे दिवड्डुगुणहाणिगुणिदरूवाहियदिवड्डुगुणहाणिगुणिदे जवमज्झपमाणं होदि

१	८	३	८	३
		२		२

✽ । पुणो एदम्हि गुणहाणिअट्ठेण गुणिदे

एतियं होदि-

१	८	३	८	३	८
		२		२	२

 । एत्थ अधियपक्खेवाणमवणयणं कस्सामो

तं जहा- गुणहाणिअट्ठगच्छड्डुगुणसंकलणासंकलणमेत्तपक्खेवा एत्थाहिया । कुदो ? जवमज्झादो हेट्ठा पक्खेवगुणगारस्स एगुत्तरवड्ढिदंसणादो अट्ठाणगुणगारस्स एगुत्तर-हाणिदंसणादो । ण च गच्छे रूवाहियगच्छेण गुणिदे ड्डुगुणसंकलणं सोत्तूण अणस्स

अब प्रदेशाश्रंताकी अपेक्षा अवहार कालका कथन करने पर सब द्रव्यको यवमध्यके प्रमाणसे करते हैं । यथा- एक प्रक्षेपको डेढ गुणहानिसे गुणित एक अधिक डेढ गुणहानिसे

गुणित करनेपर यवमध्यका प्रमाण होता है-

१	८	३	८	३
		२		२

 (१ + ८ × १/२) × (८ × १/२) =

१३ × १२ = १५६; द्विप्रक्षेप ८ × २ = १६; १५६ × १६ = २४९६; दो यवमध्य १२४८ + १२४८ =

२४९६ । पुनः इसे गुणहानिके अर्धभागसे गुणित करनेपर इतना होता है-

१	८	३	८	३	८
		२		२	२

(गुणहानि (८) का अर्धभाग (४) = ४ है । इस ४ से दो यवमध्य २४९६ को गुणा करनेसे ९९८४ आता है जो द्वितीयगुणहानिका कुल प्रदेशाग्र है; किन्तु इसमें यवमध्यसे पूर्वके बादके तीन तीन निषेकोंके प्रदेशाग्र जो प्रक्षेप यवमध्यकी अपेक्षा हीन हैं वे प्रक्षेप द्वितीय गुणहानिके सर्वप्रदेशाग्रसे अधिक हैं ।

यहाँ अधिक प्रदेशोंका अपनयन करते हैं । यथा- गुणहानिके अर्धभागप्रमाण गच्छके होने संकलनासंकलनप्रमाण प्रक्षेप यहाँ अधिक हैं; क्योंकि, यवमध्यसे पूर्व प्रक्षेपगुणकारकी एकोत्तर वृद्धि देखी जाती है और अध्वानगुणकारकी एकोत्तरहानि देखी जाती है और गच्छको एक अधिक गच्छसे गुणित करनेपर द्विगुणे संकलनको छोड़कर अन्यका आगम सम्भव नहीं है, क्योंकि, उसका निषेध है ।

(एक गुणहानि ८ उसका आधा ४ = ४ है । यहाँपर यह ४ गच्छ है । ४ का संकलन (१ + २ + ३ + ४) = १० है । इसका दूना १० × २ = २० है । अथवा गच्छ ४ को एक अधिक गच्छ (४ + १) = ५ से गुणा करनेपर २० आता है । पर पृ. १८५ की संदृष्टिके देखनेसे ज्ञात होगा कि यवमध्य १२४८ से दूसरा निषेक १२३२ दो प्रक्षेपहीन है, क्योंकि, वहाँपर द्रव्यप्रक्षेपका प्रमाण ८ है । तीसरे निषेकका प्रदेशाग्र १२०० है जो यवमध्यसे ६ प्रक्षेप (६ + ८) = ४८ कम है । चौथे निषेकका प्रदेशाग्र ११५२ है जो यवमध्य १२४८ से १२ प्रक्षेप (१२ × ८) = ९६ कम है ।

✽ अ०का प्रत्यो

०	८	३	८	३
		२		२

 इति पाठः ।

✽ म० प्रतिपाठोऽयम् । ता० प्रती

०	८	३	४	५
		२		२

 अ०का० प्रत्यो

०	८	३	८	३
		२		२

 इति पाठः ।

आगमो अस्थि, विष्पडिसेहादो ।

एत्थ धण-रिणरासीयो आणिय रिणदो धणमवणिय सेसेण हाणी परूवेदव्वा ।

सा वि संकलणासंकलनसुत्तेण एत्तिया होदि

०८	८	८
	२	४

 । एदेसु पक्खेदेसु जव-

मज्झपमाणेण कदेसु एत्तियाणि जवमज्झाणि

८
५४

 । एदेसु अद्धगुणहाणिमेत्तजव-

मज्झेसु अवणिदेसु एत्तियं होदि

८	१३
२७	

 ।

संपहि पढमगुणहाणिदव्वाणयणं दुच्चदे । तं जहा- रुवाहियगुणहाणिमेत्तपक्खेदेसु गुणहाणीए वर्गणेण गुणिदेसु थोरुच्चएण पढमगुणहाणीए दव्वं होदि

०१८८८

 ☉ ।

इस प्रकार $२ + ६ + १२ = २०$ प्रक्षेप आते हैं । ये २० प्रक्षेप ऊपर व नीचे दोनों स्थानोंमें हीन हैं, अतः २० द्विगुण प्रक्षेप हुए । इन २० द्विगुण प्रक्षेपों ($२० \times ८ \times २ = ३२०$) को ९९८४ में से कम करनेपर ($९९८४ - ३२०$) = ९६६४ द्वितीय गुणहानिके प्रदेशाग्रका प्रमाण होता है ।)

यहाँपर धनराशि और ऋणराशिको लाकर तथा ऋणमेंसे धनको कम करके शेषका अवलम्बन लेकर हानिका कथन करना चाहिए । वह भी संकलनासंकलनसूत्रके

अनुसार इतनी होती है-

०८	८	८
	२	४

 । (यह २० की सहनानी है) । इन प्रक्षेपोंको यव-

मध्यके प्रमाणसे करनेपर इतने यवमध्य होते हैं-

८
५४

 (यह $\frac{२०}{१५६}$ की सहनानी है ।) उक्त

प्रमाणको अर्धगुणहानिप्रमाण यवमध्योंमेंसे कम करनेपर इतना होता है

८	१३
२७	

 । (द्वितीय

गुणहानिके प्रदेशाग्र $१५६ \times ४ = ६२४$; $६२४ - २० = ६०४ = १३ \times ४६\frac{२}{३}$ द्विगुणप्रक्षेप) ।

अब प्रथम गुणहानिके द्रव्यको लानेकी विधि कहते हैं । यथा- एक अधिक गुणहानिमात्र प्रक्षेपों को

गुणहानिके वर्गसे गुणित करनेपर स्तोक मानसे प्रथम गुणहानिका द्रव्य होता है-

१	८	८	८

(प्रथम गुणहानिका प्रदेशाग्र = गुणहानि ८ से एक अधिक ($८ + १$) = ९ को गुणहानिका वर्ग (८×८) = ६४ से गुणा करनेपर ५७६ आता है । प्रक्षेपका प्रमाण १६ है । $५७६ \times १६ = ९२१६$ । अथवा $१६ \times ९ \times ८ \times ८ = ११५२ \times ८$ अर्थात् प्रथम गुणहानिके अन्तिम आठ प्रदेश (११५२) $\times ८$ । किन्तु अन्य ७ निषेकोंके प्रदेशाग्र अन्तिम प्रदेशाग्रसे प्रक्षेपहीन हैं, अतः प्रथम गुणहानिके प्रदेशाग्रसे ११५२×८ में कुछ प्रक्षेप बढे हुए हैं ।)

☉ म० प्रतिपाठोऽयम् । ता० प्रती ०८८८, अ०का० प्रत्योः

०८८८	०२	८८८

 इति पाठा ।

संपहि एत्थ वड्ढिदपक्खेवपमाणमेत्तियं होदि $\begin{array}{|c|c|c|} \hline ०२ & ८८८ & \\ \hline & ३ & \\ \hline \end{array}$ (रूवूण) गुणहाणिग-
 च्छदुगुणसंकलणासंकलणपमाणत्तादो । एदम्मि किच्चूणत्तमजोइय पुव्विल्लदव्वादो
 अवणिदे सेसमेत्तियं होदि $\begin{array}{|c|c|c|} \hline ०९८८२ & & \\ \hline & ३ & \\ \hline \end{array}$ । पुणो एदम्मि जवमज्झपमाणेण कदे एत्तियं
 होदि $\begin{array}{|c|c|} \hline ८ & १६ \\ \hline २७ & \\ \hline \end{array}$ । पुणो एदम्मि पढमगुणहाणिदव्वे अद्धगुणहाणिदव्वम्मि मेलाविदे
 एत्तियं होदि $\begin{array}{|c|c|} \hline ८ & २९ \\ \hline २७ & \\ \hline \end{array}$ । जवमज्झादो उवरि अद्धगुणहाणिदव्वमेत्तियं होदि
 $\begin{array}{|c|c|} \hline ०८ & १३ \\ \hline & २७ \\ \hline \end{array}$ । एवं हेट्ठिमदव्वम्मि पक्खित्ते एत्तियं होदि $\begin{array}{|c|c|} \hline ८ & ४२ \\ \hline & २७ \\ \hline \end{array}$ ।

अब यहाँपर बड़े हुए प्रक्षेपोंका प्रमाण इतना होता है— $\begin{array}{|c|c|c|c|} \hline ०२ & ८ & ८ & ८ \\ \hline & ३ & & \\ \hline \end{array}$ (पत्र १८६ के
 विशेषार्थमें देखो— प्रथम गुणहानिके द्विचरम निषेकका प्रदेशाग्र ११२० जो चरम निषेकके
 प्रदेशाग्र ११५२ से दो प्रक्षेप (१६×२ = ३२) हीन है । त्रिचरम निषेकका प्रदेशाग्र १०५६ है जो
 चरम निषेकके प्रदेशाग्रसे ६ प्रक्षेप (१६×६ = ९६) हीन है । इसी प्रकार अन्य पाँच निषेकोंके
 प्रदेशाग्र क्रमसे १२, २०, ३०, ४२ व ५६ प्रक्षेपहीन हैं । इनका जोड़ २+६+१२+२०+३०+
 ४२+५६ = १६८ है । अथवा एक कम गुणहानिप्रमाणका संकलनासंकलन = १+(१+२=३)
 + (१+२+३=६) + (१+२+३+४=१०) + (१+२+३+४+५=१५) + (१+२+
 ३+४+५+६=२१) + (१+२+३+४+५+६+७=२८) = ८४ होता है । इसका दूना
 ८४×२ = १६८ होता है । इस प्रकार १६८ बड़े हुए प्रक्षेप हैं । पूर्वोक्त ५७६ प्रक्षेपोंमें १६८ प्रक्षेप
 घटानेसे ४०८ प्रक्षेप (४०८×१६ = ६५२८) प्रथम गुणहानिके प्रदेशोंका प्रमाण होता है ।
 क्योंकि, वह (एक कम) गुणहानिप्रमाण गच्छके दूने संकलनासंकलन प्रमाण है । इसमें कुछ कम
 की गणना न करके पहलेके द्रव्यमेंसे घटा देनेपर शेष इतना होता है— $\begin{array}{|c|c|c|c|} \hline ०९ & ८ & ८ & ३ \\ \hline & & & ३ \\ \hline \end{array}$ । पुन
 इसे यवमध्यके प्रमाणसे करने पर इतना होता है— $\begin{array}{|c|c|} \hline ८ & १६ \\ \hline २७ & \\ \hline \end{array}$ । पुनः इस प्रथम गुणहानिके
 द्रव्यमें अर्धगुणहानिका द्रव्य मिलाने पर इतना होता है $\begin{array}{|c|c|} \hline ८ & २९ \\ \hline २७ & \\ \hline \end{array}$ । यवमध्यसे ऊपर अर्धगुणहानिका
 द्रव्य इतना होता है— $\begin{array}{|c|c|} \hline ०८ & १३ \\ \hline & २७ \\ \hline \end{array}$ । इसे अधस्तन द्रव्यमें मिला देनेपर इतना होता है— $\begin{array}{|c|c|} \hline ८ & ४२ \\ \hline & २७ \\ \hline \end{array}$

✻ मप्रतिपाठोयम् । ता०प्रती $\begin{array}{|c|c|c|} \hline ० & ८ & ७ \\ \hline & & ३ \\ \hline \end{array}$ अ०प्रती $\begin{array}{|c|c|c|} \hline ०२ & ८ & ८ \\ \hline & & ३ \\ \hline \end{array}$ का०प्रती $\begin{array}{|c|c|c|} \hline २ & ८ & ८ \\ \hline & & ३ \\ \hline \end{array}$

इति पाठः । ✻ म० प्रतिपाठोयम् । प्रतिष्ठा 'पढमगुणहाणिदव्व—' इति पाठः ।

संपहि तदियगुणहाणिदव्वाणयणं कस्सामो । तं जहा- बेगुणहाणिमेत्ततदिय-
गुणहाणिपक्खेवेसु रुवाहियदोगुणहाणीहि गुणिदगुणहाणीए गुणिदेसु थोरुच्चएण

तदियगुणहाणिदव्वं होदि

०८	२	८	२	८
२				

 । एत्थ ऊणपक्खेवपमाणमेत्तियं होदि

०८८८	
२	३

 । एदेसु पुव्वदव्वादो अवणिदेसु एत्तियं होदि

०८८८	११
२	३

 । एव मिह जव-

मज्झपमाणेण कदे एत्तियं होदि

८	२२
२७	

 ।

संपहि चउत्थगुणहाणिदव्वाणयणं वुच्चदे । तं जहा- जवमज्झपक्खेवचउत्थ-

भागे छगुणगुणहाणिघगुणिदे थोरुच्चएण चउत्थगुणहाणिसव्वदव्वं होदि

०८८८	६
	४

 ।

एगगुणहाणिआदिउत्तरगुणहाणिगच्छसंकलणमेत्तगोवुच्छविसेसा च एगादिएगुत्तरगुण-
हाणिगच्छसंकलणासंकलणदुगुणमेत्तगोवुच्छविसेसा च एत्थ फिट्ठंति । तासि पमाणमेदं

अब तृतीय गुणहानिके द्रव्यके लानेकी विधि है । यथा- दो गुणहानिमात्र तृतीय
गुणहानिके प्रक्षेपोंको एक अधिक दो गुणहानियोंसे गुणित गुणहानिसे गुणित करने पर मोटे

तौरपर तृतीय गुणहानिका द्रव्य होता है-

०८	२	८	२	८
२				

 [दोगुणहानि (१६) × प्रक्षेप
(४) × एक अधिक दो गुणहानि (१६ + १ = १७) × गुणहानि (८) = ८७०४ । अर्थात्
तृतीय गुणहानि प्रथम निषेक प्रदेशाग्र (१०८८) गुणित गुणहानि ८ (१०८८ × ८ = ८७०४) ।]

यहां पर न्यून प्रक्षेपोंका प्रमाण इतना है-

०८८८	
२	३

 । (पूर्वोक्त विधिके अनुसार न्यून प्रक्षेपोंका
प्रमाण १६८ है । यहां पर प्रक्षेप (४) है) । इन्हें पहलेके द्रव्यमेंसे घटा देने पर इतना होता
है--

०८८८	११
२	३

 । इसे यवमध्यके प्रमाणसे करने पर इतना होता है-

८	२२
२७	

 ।

अब चतुर्थ गुणहानिके द्रव्यके लानेकी विधि कहते हैं । यथा- यवमध्यके प्रक्षेपके
चतुर्थ भागको छहगुणी गुणहानिके घनसे गुणित करने पर मोटे तौरसे चौथी गुणहानिका
सब द्रव्य होता है-

०८८८	६
	४

 । (यवमध्यका प्रक्षेप (८) का चतुर्थ भाग ($\frac{८}{४} = २$)

को ६ गुणहानिका घन (६ × ८ × ८ × ८) से गुणा करनेसे (२ × ६ × ८ × ८ × ८) = ६१४४
मोटे रूपसे चतुर्थ गुणहानिका प्रदेशाग्र है । अंक संदृष्टिमें इसका प्रमाण ५१६६ है ।
६१४४ - ५६१६ = ५२८ अर्थात् २६४ प्रक्षेप (२) को लानेका विधान कहते हैं) यहां
एक गुणहानि आदि उत्तचय गुणहानि गच्छ संकलनमात्र गोपुच्छविशेष और एकादि एकोत्तर

०८	८८	०८	८८
४	२	४	३

। एदे पक्खेवे पुव्वरासिम्मि पाडिय सेसे जवमज्झपमा --

णेण कदे एत्तियं होदि

८	३१
	३५४

 । उवरिमगुणहाणीसु एत्थतणसंकलनरासी खुवा-
दिरुवत्तरगुणगारेण गुणिज्जमाण गच्छदि । विदिया पुण अवट्टिदा । सव्वत्थ एदेण

अत्थपदेण पंचमगुणहाणिदव्वे अवणिदे एत्तियं होदि

८	४०
	१०८

 । छट्ठगुणहाणि-

दव्वमेत्तियं होदि

८	४९
	२१६

 । सत्तमगुणहाणिदव्वमेत्तियं होदि

८	५८
	४३२

 * ।

अट्ठमगुणहाणिदव्वमेत्तियं होदि

८	६७
	८६४

 । एवं गुणहाणिं पडि गुणहाणिं पडि

अंसा णउत्तरक्रमेण छेदादिद्विगुणक्रमेण गुणहाणीए गुणगारा हीदूण गच्छंति जाव
ध्रुवखंधम्मि असंखेज्जभागहाणीए चरिमगुणहाणि त्ति । तदो एदासि मेलावणविहाणं
मणमाणे यवमध्यादूर्ध्वं पविति विकल्प्य दो सुत्तगाहाओ । तं जहा-

इच्छं विरलिय (दु) गुणिय अण्णोणगुणं पुणो दुपडिरासि ।

काऊण एककरासि उत्तरजुदआदिणा गुणिय ॥ १५ ॥

हानिगच्छ संकलनासंकलनद्विगुणमात्र गोपुच्छविशेष फिट जाते हैं । उनका प्रमाण यह है—

०८	८८	०८	८८
४	२	४	३

। इन प्रक्षेपोंको पूर्व राशिमें से अलग करके शेषको यवमध्यके प्रमाणसे

करनेपर इतना होता है—

८	३१
	५४

 । उपरिम गुणहानियोंमें यहाँकी संकलनराशि एकादि एकोत्तर
गुणकारसे गुणित होकर जाती है । परन्तु दूसरी राशि अवस्थित रहती है । सर्वत्र इस अर्थपदके
अनुसार पञ्चम गुणहानिके द्रव्यके निकाल देने पर इतना होता है—

८	४०
	१०८

 । छटवीं गुण-

हानिका द्रव्य इतना है—

८	४९
	२१६

 । सातवीं गुणहानिका द्रव्य इतना है—

८	५८
	४३२

 । आठवीं

गुणहानिका द्रव्य इतना है—

८	६७
	८६४

 । इस प्रकार ध्रुवस्कन्धमें असंख्यातभागहानिकी अन्तिम
गुणहानिके प्राप्त होने तक गुणहानि गुणहानिके प्रति अंश नवोत्तरक्रमसे और छेदादिद्विगुणक्रमसे
गुणहानिके गुणकार होकर जाते हैं । अनन्तर इनके मिलानेकी विधिका कथन करनेपर यव-
मध्यके ऊपर प्राप्त होता है ऐसा विकल्प करके दो सूत्रगाथायें देते हैं । यथा—

इच्छित गच्छका विरलन कर ओर उस विरलनराशिके प्रत्येक एकको दूना कर परस्पर
गुणा करनेसे जो उत्पन्न हो उसकी दो प्रतिराशियाँ स्थापित कर उनमेंसे एक राशिको उत्तरसहित

* अ० प्रती

८	५९
	४३२

 । इति पाठः ।

उत्तरगुणितं इच्छं उत्तरआदीए संजुदं अवणे ।

सेस हरेज्ज पडिणा आदिमल्लेदद्वगुणिदेण ॥ १६ ॥

एदासि गाहाणमत्थो उच्चदे-इच्छिदगच्छं विरलेत्तुण विगं करिय अण्णोण-
भत्थरासि दुप्पडिरासि करिय एत्थ उत्तरं णव आदी बावीस, एदे मेलिदे एकत्तीस
भवन्ति । एदेहि एक्करासि गुणिय उत्तरगुणितं इच्छं- ति भणिदे इच्छं णवहि गुणि-
ऊण उत्तरआदीय संजुदं अवणे ति भणिदे उत्तरं आदि च तत्थ मेलविद्य पुव्वरा-
सिम्हि अवणेऊण सेसं हरेज्ज पडिणा आदिमल्लेदद्वगुणिदेणे ति भणिदे अवसेसं द्वविद-
पडिरासि सत्तावीसण्हं अद्वेण गुणिय भागे हिदे इच्छिदसंकलणा आगच्छदि ।

तदो एदेण अत्थपदेण दुरूवणगुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण-

भत्थे कदे एत्तियं होदि

९
४

 । एदं (दु) पडिरासि द्वविय एक्करासि इगितीसरू-

वेहि गुणिदे एत्तियं होदि

९	३१
४	

 । पुणो एदम्हि दुरूवणगुणहाणिसलागाओ णव-
गुणाओ आदिउत्तरइगितीसरूवभहियाओ अवणिय पुणो पडिद्विदरासि सत्तावीसण्हं

आदि राशिसे गुणित कर इसमेंसे उत्तर गुणित और उत्तर आदि संयुक्त इच्छाराशिको घटा देनेपर जो शेष रहे उसमें आदिम छेदके अर्धभागसे गुणित प्रतिराशिका भाग देनेपर इच्छित संकलनका प्रमाण आता है ॥ १५-१६ ॥

अब इन गाथाओंका अर्थ कहते हैं- इच्छित गच्छका विरलन कर और उसे दूना कर परस्पर गुणा करने से जो राशि आवे उसकी दो प्रतिराशियाँ स्थापित करे । यहाँ उत्तर नौ और आदि बाईस को मिलानेपर इकतीस होते हैं, इनसे एक राशिको गुणित करे । पुनः 'उत्तरगुणितं इच्छं' ऐसा कहनेपर इच्छाराशिको नौसे गुणित करके और इसमें 'उत्तर आदीय संजुदं अवणे' ऐसा कहनेपर उत्तर और आदिको मिलाकर पूर्वराशिमेंसे घटा कर 'सेसं हरेज्ज पडिणा आदिमल्लेदद्वगुणिदेण' ऐसा कहनेपर जो शेष रहे उसमें पहले स्थापित की गई प्रति-राशिको सत्ताईसके ओषसे गुणित कर भाग देनेपर इच्छितसंकलना आती है ।

अनन्तर इस अर्थपदके अनुसार दो कम गुणहानिशलाकाओंका विरलन कर और दूना कर परस्पर गुणा करनेपर इतना होता है

९
४

 । इसकी दो प्रति राशियाँ स्थापित कर एक

राशिके इकतीससे गुणित करनेपर इतना होता है-

९	३१
४	१

 । पुनः इसमें से नौगुणित तथा आदि-उत्तर इकतीस सहित दो कम गुणहानिशलाकाओंको घटा कर

✻ ता०प्र०

८	५८
४	३२

 इति पाठः ।

अद्वेण गुणिय

६४	२७
४	२

 पुव्वरासिम्हि भागे हिदे किञ्चूनत्तमजोएदूण गुणगारभाग-

हारमवणिदे एत्तियं होदि

६२
२७

 । पुणो एदेण गुणहाणि गुणिदे एत्तियं होदि

८	६२
	२७

 ।

पुणो हेट्ठिमदोगुणहाणिदव्वे पक्खित्ते एत्तियं होदि

८	१०४
	२७

 । भागे हिदे एत्तियं होदि

८	३
	२३
	२७

 । चत्तारिसत्तावीसभागहीणचत्तारिगुणहाणीयो किञ्चूनत्तमजोएदूण अवमज्झ-

पमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे चत्तारिगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि । परमाणुपोगलदव्वपमाणेण सव्वदव्वं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि ? गुणहाणि-वग्गेण सच्चउब्भागदोरुवगुणिदेण । कुदो ? परमाणुपदेसट्ठदाए सव्वदव्वे भागे हिदे सच्चउब्भागदोरुवगुणिदगुणहाणिवग्गुलंभादो । दुपदेसियवग्गणपदेसट्ठदाए पमाणेण सव्वदव्वं केवचिरं कालेण अवहिरिज्जदि ? पुव्वभागहारादो अद्धसादिरेयमेत्तेणकालेण अवहिरिज्जदि । तं जहा- परमाणुवग्गणभागहारस्सद्धं विरलिय सव्वदव्वे समखंडं करिय दिण्णे रुवं पडि दुगणपरमाणुवग्गणपमाणं पावदि । पुणो हेट्ठा दोगुणहाणीयो

पुनः पहले स्थापित की गई प्रतिराशिको सत्ताईसके अर्धभागसे गुणित कर

६४	२७
	२

 और इनका पूर्व राशिमें भाग देने पर कुछ कमकी विवक्षा न कर भागहार और गुणकारका परस्पर अपनयन करने पर इतना होता है-

६२
७२

 । पुनः इससे गुणहानिके गुणित करनेपर इतना होता है-

८	६२
	२७

पुनः अधस्तन दो गुणहानियों का द्रव्य मिलाने पर इतना होता है-

८	१०४
	२७

 । भाग देने पर

इतना होता है ।

८	३
	२३
	२७

 चार बटे सत्ताईस भागहीन चार गुणहानियोंमें कुछ कमकी विवक्षा न

कर यवमध्यके प्रमाणसे सब द्रव्यके अपहृत होनेपर चार गुणहानिस्थानांतर कालके द्वारा अपहृत होता है । परमाणुपुद्गलद्रव्यप्रमाणसे सब द्रव्य कितने कालके द्वारा अपहृत होता है ? चतुर्थ-भागयुक्त दोसे गुणित गुणहानिके वर्गरूप कालके द्वारा अपहृत होता है, क्योंकि, परमाणु प्रदेशार्थतासे सब द्रव्यके भाजित करने पर चतुर्थभागयुक्त दोसे गुणित गुणहानिका वर्ग उपलब्ध होता है। $(३३४४८ \div २५६ = १३० \text{ अर्थात् } ८ \times ८ \times २ + \frac{४}{२})$ द्विप्रदेशीवर्गणा प्रदेशार्थताके प्रमाणसे सब द्रव्य कितने कालके द्वारा अपहृत होता है ? पूर्वभागहारसे साधिक अर्धभागमात्र कालके द्वारा अपहृत होता है । यथा- परमाणुवर्गणाके अर्धभागके अर्धभागका विरलनकर सब द्रव्यको समान खण्डकर देनेपर प्रत्येक एक विरलनके प्रति द्विगुणपरमाणुवर्गणाका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः

✽ ता० प्रती 'पुव्वभागहार दो अद्ध-' इति पाठः ।

विरलिय एगरूवधरिदेसु गोवुच्छविसेसेसु^१ समखंडं करिय दिण्णेसु दोदोगोवुच्छ-
विसेसा रूवं पडि पावेंति, चडिदद्धानसंकलणदुगुणमेतगोवुच्छविसेसुवलंभादो । लद्धं
उवरिमरूवधरिदेसु अवणेदूण तत्पमाणेण कोरमाणे पक्खेवरूवाणं पमाणानुगमं कस्सामो ।
त जहा- हेट्ठिमविरलणरूवणमेतदुगुणगोवुच्छविसेसेसु जदि एगरूवपक्खेवो लब्धं
तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिविच्छाए ओवट्ठिदाए णवण्ह
गुणहाणीणं सोलसमो भागो आगच्छदि । तम्मि पुव्विल्लविरलणाए पक्खित्ते दुपदेसिय-
दब्बभागहारो होदि । तिपदेसियवगणपमाणेण सव्वदब्बं केवच्चिरेण कालेण अव-
हिरिज्जदि ? परमाणुवगणभागहारस्स तिभागेण सादिरेणेण । तं जहा-परमाणु-
वगणभागहारस्स तिभागं विरलिय सव्वदब्बे समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि तिगुण-
परमाणुवगणदब्बपमाणं पावदि । पुणो चडिदद्धानदुगुणसंकलणमेतगोवुच्छविसेसा
वड्ढिदा त्ति तदवणयणट्ठं किरियं कस्सामो । तं जहा- दोगुणहाणीगमद्धं विरलिय
उवरिमगरूवधरिदे समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि चडिदद्धानदुगुणसंकलणमेतप-
क्खेवा पावेंति । तेसु उवरिमरूवधरिदेसु रूवं पडि अवणिदेसु सेसमिच्छिदपमाणं होदि ।

नीचे दो गुणहानियोंका विरलनकर एक विरलनके प्रति प्राप्त गोपुच्छ विशेषोंके समान खण्ड कर
देयरूपसे देनेपर प्रत्येक एक विरलनके प्रति दो दो गोपुच्छ विशेष प्राप्त होते हैं, क्योंकि, यहांपर
जितने स्थान आगे गये हैं उतने संकलनके द्विगुणे गोपुच्छ विशेष उपलब्ध होते हैं । जो लब्ध
आवे उसे उपरिम विरलन अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्यमेंसे कमकर उसके प्रमाणसे करने पर
जो प्रक्षेप अंक आते हैं उनके प्रमाणका अनुगम करते हैं । यथा-- अधस्तन विरलनमेंसे
एक कम द्विगुण गोपुच्छ विशेषोंमें यदि एक अंकका प्रक्षेप लब्ध होता है तो उपरिम
विरलनमें क्या प्राप्त होगा इस प्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिको प्रमाणराशिसे
भाजित करने पर नौ गुणहानियोंका सोलहवां भाग आता है । उसे पूर्व विरलनमें मिला

देने पर द्विप्रदेशी द्रव्यका भागहार होता है ($33 \times 60 \div 40 = 49\frac{1}{2} = 49 + \frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = 49 + \frac{1}{4}$)

त्रिप्रदेशी वर्गणाके प्रमाणसे सब द्रव्य कितने कालके द्वारा अपहृत होता है ? परमाणु
वर्गणाके भागहारके साधिक त्रिभागप्रमाण कालके द्वारा अपहृत होना है । यथा-परमाणुवर्ग-
णाके भागहारके तीसरे भागका विरलन करके उसपर सब द्रव्यके समान भाग करके देयरूपसे
दनेपर प्रत्येक विरलनके प्रति तिगुण परमाणुवर्गणाद्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः जितने
स्थान आगे गये उतने द्विगुणसंकलनमात्र गोपुच्छविशेष बढे हैं, इसलिए उनकी अपनयन
क्रिया करते हैं । यथा-दो गुणहानियोंके अर्धभागका विरलनकर उपरिम एक अङ्कके प्रति प्राप्त
द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे देनेपर प्रत्येक एकके प्रति जितने स्थान आगे गये हैं
उतने द्विगुणसंकलनमात्र प्रक्षेप प्राप्त होते हैं । उन्हें उपरिम विरलनके प्रत्येक अङ्कके प्रति प्राप्त
द्रव्यमेंसे घटा देनेपर शेष इच्छित द्रव्यका प्रमाण होता है । एक कम अधस्तन विरलन जाकर

❁ ता० प्रती ' गोवुच्छविसेसेसु ' अतोऽग्रे ' जदि ' पर्यन्तः पाठस्त्विति ।

हेट्टिमविरलणं रूवूणं गंतूण जदि एगपक्खेवसलागा लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए तिण्णं गुणहाणीणं चउब्भागो लब्भदि । तम्मि उवरिमविरलणाए पक्खित्ते इच्छिददव्वभागहारो होदि ।

चउत्पदेशियदव्वपमाणेण सव्वदव्वं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि ? परमाणुवर्गणभागहारस्स चउब्भागेण सादिरेणेण । तं जहा— परमाणुवर्गणभागहारस्स चउब्भागं विरलेदूण सव्वदव्वे समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि परमाणुवर्गणदव्वं चउग्गुणं पावदि । पुणो चडिदद्वानुगुणसंकलणमेत्तपक्खेवाणं अवणयणं कस्सामो । तं जहा— दोगुणहाणितिभागं विरलिय उवरिमेगरूवधरिदे समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि बारह बारह पक्खेवा पावेति । तेषु उवरिमरूवधरिदेसु अवणिदेसु सेस— मिच्छिदपमाणं होदि । हेट्टिमविरलणं रूवूणं गंतूण जदि एगा पक्खेवसलागा लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए सत्तावोसगुणहाणीणं बत्तीसदिमभागो आगच्छदि । तम्मि उवरिमविरलणाए पक्खित्ते इच्छिददव्वभागहारो होदि । एवं णेयव्वं जाव जवमज्झं ति ।

जवमज्झस्सुवरि अणंतरपमाणेण सव्वदव्वं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि

यदि एक प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार फल-राशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देनेपर तीन गुणहानियोंका चतुर्थ भाग आता है । उसे उपरिम विरलनमें मिलानेपर इच्छित द्रव्यका भागहार होता है ($३३४४८ - ६७२ = ४९ \frac{१}{३} = \frac{१३०}{३} + \frac{३ \times ८}{४} = ४३ \frac{१}{३} + ६ = ४९ \frac{१}{३})$ ।

चतुःप्रदेशी द्रव्यके प्रमाणसे सब द्रव्य कितने कालके द्वारा अपहृत होता है ? परमाणु-वर्गणा भागहारके साधिक चतुर्थ भाग द्वारा अपहृत होता है । यथा— परमाणुवर्गणा भागहारके चतुर्थ भागका विरलन करके उस विरलित राशिपर सब द्रव्यके समान खण्ड करके देयरूपसे देनेपर प्रत्येक विरलन अङ्कके प्रति परमाणुवर्गणाका द्रव्य चौगुना प्राप्त होता है । पुनः जितने स्थान आगे गये हैं । उनके दूनेके संकलनमात्र प्रक्षेपोंका अपनयन करते हैं । यथा— दो गुणहानियोंके त्रिभागका विरलन करके ऊपर एक विरलन अङ्कके प्रति प्राप्त द्रव्यको समान खंड करके देयरूपसे देनेपर प्रत्येक विरलन अंकके प्रति बारह बारह प्रक्षेप प्राप्त होते हैं । उन्हें उपरिम विरलनके प्रति प्राप्त द्रव्यमेंसे घटा देनेपर शेष इच्छित द्रव्यका प्रमाण होता है । एक कम अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एक प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमें क्या प्राप्त होगा, इसप्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देनेपर सत्ताईस गुणहानियोंका बत्तीसवां भाग आता है । उसे उपरिम विरलनमें मिलानेपर इच्छितद्रव्यका भागहार होता है । इस प्रकार यवमध्यके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए ($३३४४८ \div ८३२ = ४० = \frac{१३०}{४} + \frac{२७ \times ८}{३२} = ३२ + ६ \frac{३}{४} = ३९ \frac{३}{४})$ ।

यवमध्यके ऊपर अनन्तर प्रमाणसे सब द्रव्य कितने काल द्वारा अपहृत होता है ? साधिक

जवमज्ज्ञभागहारेण सादिरेयेण, चडिदद्धाणदुगुणसंकलणमेत्तपक्खेवाणं तत्थाभावादो*। तं जहा—जवमज्ज्ञभागहारं विरलिय सव्वदव्वे समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि जवमज्ज्ञपमाणं पावदि। पुणो हेट्ठा गुणहाणिवर्गं सचउब्भागं दोरूवेहि गुणिदं विरलिय जवमज्ज्ञं समखंडं करिय दिण्णे एगेगो पक्खेवो पावदि। पुणो चडिदद्धाण-संकलणाए दुगुणाए ओवट्ठिय विरलिय पुव्वं व जवमज्ज्ञे दिण्णे रूवं पडि अहिय-पक्खेवा होंति। तेसु उवरिमविरलणरूवधरिदेसु इच्छिदपमाणं होदि। हेट्ठिम-विरलणं रूवूणं गंतूण जदि एगा पक्खेवसलागा लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्ठिदाए एगरूवस्स असेखेज्जदिभागो आग-च्छदि। एदस्मि उवरिमविरलणाए पक्खित्ते इच्छिददव्वभागहारो होदि। एवं जाणिदूण णेयव्वं जाव धुवक्खंधदव्वं ति। संपहि सांतरणिरंतरवग्गणाणमवहारो ण सक्कदे णेदुं। कुदो? तव्वग्गणाणं णिरंतरमवट्ठणाभावादो। एवमवहारो त्ति समत्तमणुयोगद्वारं।

जवमज्ज्ञपरूवणा दुविहा—दव्वट्ठदाए पदेसट्ठदाए चेदि। तत्थ दव्वट्ठदाए पत्तेयसरीरवग्गणदाए जवमज्ज्ञपमाणाए कीरमाणाए परूवणादिछअणुयोगद्वाराणि होंति। परूवणाए अभवसिद्धियपाओग्गवग्गणामु जहणियाए वग्गणाए अत्थि वग्गणाओ। एवं णेयव्वं जाव उक्कस्सपत्तेगसरीरवग्गणे त्ति। पमाणं अभवसिद्धिय-

यवमध्य भागहारप्रमाण काल द्वारा अपहृत होता है, क्योंकि, जितने स्थान आगे गये हैं उनके दूनेके संकलनमात्र प्रक्षेपोंका वहां पर अभाव है। यथा—यवमध्यके भागहारका विरलन करके उसपर सब द्रव्यके समान खण्ड करके देयरूपसे देनेपर प्रत्येक विरलन अङ्कके प्रति यवमध्यका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः नीचे (पूर्व) दोसे गुणित चतुर्थ भागसहित गुणहानिके वर्गका विरलन करके उस पर यवमध्यके समान खण्ड करके देने पर एक एक प्रक्षेप प्राप्त होता है। पुनः जितने स्थान आगे गये हैं उनके संकलनके दूनेसे भाजित कर जो लब्ध आवे उस पर पहलेके समान यवमध्यके देने पर प्रत्येक एकके प्रति अधिक प्रक्षेप प्राप्त होते हैं। उन्हें उपरिम विरलनके प्रति प्राप्त द्रव्यमेंसे घटा देने पर इच्छित द्रव्यका प्रमाण होता है। एक कम अधस्तन विरलन मात्र जाकर यदि एक प्रक्षेप शलाका प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देनेपर एक अङ्कका असंख्यातवां भाग आता है। इसे उपरिम विरलनमें मिला देनेपर इच्छित द्रव्यका भागहार होता है। इस प्रकार ध्रुवस्कन्ध द्रव्यके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए। अब सान्तरनिरन्तरवर्गणाओंका भागहार लाना शक्य नहीं है, क्योंकि, उन वर्गणाओंका अन्तरालके बिना अवस्थान नहीं पाया जाता। इस प्रकार अवहार अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

यवमध्यपरूवणा दो प्रकार की है—द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थता। उनमेंसे द्रव्यार्थताकी अपेक्षा प्रत्येकशरीरवर्गणाको यवमध्यके प्रमाणसे करने पर परूवणा आदि छह अनुयोगद्वार होते हैं—परूवणा की अपेक्षा अभव्योंके योग्य वर्गणोंमेंसे जधन्य वर्गणाकी वर्गणायें हैं।

* अ०का० प्रत्योः 'लद्धाभावादो' इति पाठः।

पाओगसव्वजहणवगणट्ठाणे सरिसधणियवगणाओ आवलियाए असंखेज्जदि-
भागमेत्ताओ । एवं णेयव्वं जाव उक्कस्सपत्तेयसरीरवगणे त्ति ।

सेडिपरूवणा दुविहा-अणंतरोवणिधापरंपरोवणिधा चेदि । अणंतरोवणिधाए
अभवसिद्धियपाओगपत्तेयसरीरवगणाणं सव्वजहणियाए वगणाए आवलियाए
असंखे०भागमेत्ताओ सरिसधणियवगणाओ होंति । एवमणंताओ सरिसधणिय-
वगणाओ तत्तियाओ चेव होदूण उवरि गच्छंति । एवं गंतूण तदो एया
पत्तेयसरीरवगणा* अहिया होदि । तं जहा- अवट्ठिदमावलियाए असंखे०भागमेत्त-
भागहारं विरलेदूण सव्वजहणवगणासु आवलियाए असंखे०भागमेत्तासु समखंडं
कादूण दिण्णासु एक्केक्कस्स एगेगपत्तेयसरीरवगणपमाणं पावदि । पुणो एत्थ एगरूव-
धरिदवगणं घेत्तूण पुव्वुत्तावलियाए असंखे०भागमेत्तपत्तेयसरीरवगणाणमुवरि
पक्खित्ते तदणंतर□उवरिमविसेसाहियवगणपमाणं होदि । पुणो पुणो अणेण पमाणेण
अणंतावो वगणाओ उवरि गंतूण तदो एया वगणा अहिया होदि त्ति अधट्ठिद-
विरलणाए बिदियरूवधरिदं घेत्तूण हेट्ठिमवगणाए पक्खित्ते उवरिमवगणा होदि ।
एवमणंताओ वगणाओ तत्तियाओ उवरि गंतूण पुणो एया वगणा अहिया होदि ।
एवं जाणिदूण णेयव्वं जाव पढमदुगुणवड्ढी उत्पण्णे त्ति । सा पुण अवट्ठिदविरलण-

इस प्रकार उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए । प्रमाण-अभव्योंके
याग्य सबसे जघन्य वर्गणास्थानमें सदृश धनवाली वर्गणायें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण
हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाके प्राप्त होनेतक ले जाना चाहिए ।

श्रणिप्ररूपणा दो प्रकारकी है-अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा । अनन्तरोपनिधाकी
अपेक्षा अभव्योंके योग्य प्रत्येकशरीरवर्गणाओंमेंसे सबसे जघन्य वर्गणामें सदृश धनवाली
वर्गणायें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । इस प्रकार अनन्त सदृश धनवाली वर्गणायें
उतनी ही होकर आगे जाती हैं । इस प्रकार जाकर अनन्तर एक प्रत्येकशरीरवर्गणा अधिक
होती है । यथा-आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अवस्थित भागहारका विरलन कर उसपर
आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सबसे जघन्य वर्गणाओंको समान खण्ड करके देनेपर एक एक
विरलनके प्रति एक एक प्रत्येकशरीरवर्गणाका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः यहां एक विरलन अंकके
प्रति प्राप्त वर्गणाको ग्रहण कर उसे पूर्वोक्त आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण प्रत्येक शरीर
वर्गणाओंके ऊपर प्रक्षिप्त करनेपर तदनन्तर उपरिम विशेष अधिक वर्गणाका प्रमाण प्राप्त होता
है । पुनः पुनः इस प्रमाणसे अनन्त वर्गणायें ऊपर जाकर अनन्तर एक वर्गणा अधिक होती है,
इसलिये अवस्थित विरलनके दूसरे विरलन अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको ग्रहण करके उसे अधस्तन
वर्गणामें मिलानेपर उपरिम वर्गणा होती है । इस प्रकार अनन्त वर्गणायें उतनीही ऊपर जाकर
पुनः एक वर्गणा अधिक होती है । इस प्रकार प्रथम द्विगुणवृद्धिके उत्पन्न होने तक जान

⊕ ता०प्रती 'सेडिपरूवणा तहा (दुविहा) अणंतरोपनिधा' अ०का० प्रत्योः 'सेडिपरूवणा तहा
अणंतरोपनिधा' इति पाठः । * ता०प्रती '-वगणा (ए)' अ०का०प्रत्योः '-वगणाए' इति पाठः ।

□ ता०प्रती '-भागमेत्तसु पत्तेयसरीरवगणाणमुवरि पक्खित्ते (सु-) तदणंतर- इति पाठः ।

सर्वरुवधरिदेसु परिवाडीए पविट्ठेसु उत्पज्जदि । पुणो पढमदुगुणवड्ढिवगणपमाणेण अणंताओ वग्गणाओ उवरिं गंतूण तदो एगवारेण बेवग्गणाओ अहियाओ होंति । तं जहा—पुव्वुत्तअवट्ठिदविरलणाए पढमदुगुणवड्ढिं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रुवस्स बे बे पत्तेयसरीरवग्गणाओ पावेंति । पुणो एत्थ एगरुवधरिदे पढमदुगुणवड्ढीए पक्खित्ते विसेसाहियउवरिमवग्गणपमाणं होदि । एवमणंताओ वग्गणाओ समाणाओ होदूण उवरिं गच्छंति । तदो जा उवरिमअणंतरवग्गणा तिससे बे वग्गणाओ अहिया होंति । एवं जाणिदूण णेयव्वं जाव विदियदुगुणवड्ढिं ति । पुणो विदियदुगुणवड्ढिपमाणेण अणंताओ वग्गणाओ गंतूण तदो जा अणंतरउवरिमवग्गणा तत्थ एगवारेण चत्तारि वग्गणाओ अहियाओ होंति । तं जहा—पुव्वुत्तअवट्ठिदविरलणाए विदियदुगुणवड्ढिं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रुवस्स चत्तारि वग्गणाओ पावेंति । पुणो एत्थ एगरुवधरिदं घेतूण पक्खित्ते तदणंतरवग्गणपमाणं होदि । पुणो उवरि जाणिदूण णेयव्वं जाव जवमज्जे ति । पुणो जवमज्जपमाणेण उवरि अणंताओ वग्गणाओ गंतूण तदो जा उवरिमअणंतरवग्गणा तत्थ असंखेज्जाओ वग्गणाओ ज्ञीयंति । तं जहा—जवमज्जस्स हेट्ठिमभागहारं दुगुणं विरलेदूण जवमज्ज समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रुवस्स पक्खेवपमाणं पावदि । पुणो एत्थ एगरुवधरिदमेत्तं जवमज्जस्मि अवणिदे विसेसहीणवग्गणपमाणं होदि । पुणो अणेण पमाणेण अणंताओ वग्गणाओ

कर ले जाना चाहिये । परन्तु वह अवस्थित विरलनके सब विरलन अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्यमें क्रमसे प्रविष्ट होने पर उत्पन्न होती है । पुनः प्रथम द्विगुणवृद्धि वर्गणाके प्रमाणसे अनन्त वर्गणायें ऊपर जाकर अनन्तर एक बारमें दो वर्गणायें अधिक होती हैं । यथा—पूर्वोक्त अवस्थित विरलनके ऊपर प्रथम द्विगुणवृद्धिके समान खण्ड करके देनेपर एक एक विरलन अंकके प्रति दो दो प्रत्येक शरीरवर्गणायें प्राप्त होती हैं । पुनः यहां एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको प्रथम द्विगुण वृद्धिमें मिलाने पर विशेष अधिक उपरिम वर्गणाका प्रमाण प्राप्त होता है । इस प्रकार अनन्त वर्गणायें समान होकर ऊपर जाती हैं । अनन्तर जो उपरिम अनन्तर वर्गणा है उसकी दो वर्गणायें अधिक होती हैं । इस प्रकार दूसरी द्विगुणावृद्धिके प्राप्त होने तक जानकर ले जाना चाहिए । पुनः दूसरी द्विगुणवृद्धिके प्रमाणसे अनन्त वर्गणायें जाकर जो अनन्तर उपरिम वर्गणा है वहां एक साथ चार वर्गणायें अधिक होती हैं । यथा—पूर्वोक्त अवस्थित विरलनके प्रति द्वितीय द्विगुणवृद्धिको समान खण्ड करके देने पर एक एक विरलन अंकके प्रति चार वर्गणायें प्राप्त होती हैं । पुनः यहां एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको ग्रहणकर मिलाने पर तदनन्तर वर्गणाका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः ऊपर यवमध्यके प्राप्त होने तक जानकर ले जाना चाहिए । पुनः यवमध्यके प्रमाणसे ऊपर अनन्त वर्गणायें जाकर उसके बाद जो उपरिम अनन्तर वर्गणा है वहां असंख्यात वर्गणायें गल जाती है । यथा—यवमध्यके दूने अधस्तन भागहारका विरलन करके उस पर यवमध्यके समान खण्ड करके देने पर एक एक विरलन अंकके प्रति प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः यहां एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको यवमध्यपेसे घटा देनेपर विशेष हीन वर्गणाका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः इस प्रमाणसे अनन्त वर्गणायें जाकर जो अनन्तर

गंतूण जा अणंतरवर्गणा तत्थ विदियपक्खेवो ज्ञीयदि । एवं जाणिदूण णेयव्वं जाव पढमदुगुणहीणवर्गणे त्ति । पुणो पढमदुगुणहीणवर्गणपमाणेण अणंताओ वर्गणाओ उवरि गंतूण तदो जा उवरिमवर्गणा तत्थ असंखेज्जाओ वर्गणाओ ज्ञीयंति । उवरि जाणिदूण णेयव्वं । णवरि आवलियाए असंखे०भागमेत्तदुगुणहीणाओ⊙उवरि गंतूण सव्वजहणवर्गणपमाणवर्गणा⊙ होदि । पुणो सव्वजहणवर्गणपमाणेण अणंताओ वर्गणाओ उवरि गंतूण तदो जा अणंतरवर्गणा तत्थ एगा वर्गणा ज्ञीयदि । एवं जाणिदूण णेयव्वं जाव दुगुणहीणजहणवर्गणे त्ति । एत्तो उवरि जधा अणुभागद्वानेसु एगजीवपरिहाणी कदा तथा एत्थ वि काऊण णेयव्वं जावुक्कस्सपत्तेयसरीरवर्गणे त्ति ।

परंपरोपनिधाए अभवसिद्धिपयाओग्गसव्वजहणवर्गणाहितो अणंताओ वर्गणाओ गंतूण दुगुणवड्ढी होदि । एवं दुगुणवड्ढिदा दुगुणवड्ढिदा होदूण गच्छंति जाव जवमज्झंति । तेण परमणंताओ वर्गणाओ गंतूण दुगुणहाणी होदि । एवं दुगुणहीणाओ दुगुणहीणाओ होदूण गच्छंति जाव उक्कस्सपत्तेयसरीरवर्गणे त्ति । एत्थ परूवणादितिण्णअणुयोगद्वाराणि होति । परूवणादाए अत्थि एगवर्गण-गुणहाणि-द्वानंतरं णाणागुणहाणिसलागाओ च । पमाणं-एगपदेसगुणहाणिद्वानंतरं सव्वजीवेहि अणंतगुणं । णाणागुणहाणिसलागाओ जवमज्झादो हेट्ठा उवरि च आवलियाए असंखे०भागमेत्ताओ होति । अत्पाबहुअं-सव्वत्थोवाओ णाणागुणहाणि-

वर्गणा है उसमेंसे द्वितीय प्रक्षेप गलित होता है । इस प्रकार प्रथम द्विगुणहीन वर्गणाके प्राप्त होने तक जान कर ले जाना चाहिए । पुनः प्रथम द्विगुणहीन वर्गणाके प्रमाणसे अनंत वर्गणायें ऊपर जा कर अनन्तर जो उपरिम वर्गणा है वहां असंख्यात वर्गणायें गलित होती हैं । ऊपर जान कर ले जाना चाहिए । इतनी विशेषता है कि आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण द्विगुणहीन वर्गणायें ऊपर जा कर सबसे जघन्य वर्गणाके प्रमाणवाली वर्गणा होती है । पुनः सबसे जघन्य वर्गणाके प्रमाणसे अनन्त वर्गणायें ऊपर जाकर उसके बाद जो अनन्तर वर्गणा है वहाँ एक वर्गणा गलित होती है । इस प्रकार द्विगुणहीन जघन्य वर्गणाके प्राप्त होने तक जानकर ले जाना चाहिए । इससे आगे जिस प्रकार अनुभागस्थानोंमें एक जीवपरिहानि की है उसी प्रकार उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाके प्राप्त होने तक यहां भी करके ले जाना चाहिए ।

परम्परोपनिधाकी अपेक्षा अभव्योंके योग्य सबसे जघन्य वर्गणासे लेकर अनन्त वर्गणायें जाकर द्विगुणवृद्धि होती है । इस प्रकार यवमध्यके प्राप्त होनेतक दूनी दूनी वृद्धि होती जाती है । उसके बाद अनन्त वर्गणायें जाकर द्विगुणहानि होती है । इस प्रकार उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाके प्राप्त होने तक दूनी हानि दूनी हानि होकर जाती है । यहां पर प्ररूपणा आदि तीन अनुयोगद्वार होते हैं । प्ररूपणाकी अपेक्षा एकवर्गणागुणहानिस्थानान्तर है और नानागुणहानिशलाकायें हैं । प्रमाण-एक प्रदेशगुणहानिस्थानान्तर सब जीवोंसे अनन्तगुणा है । नानागुणहानिशलाकायें यवमध्यके नीचे और ऊपर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । अत्पाबहुत्व-नानागुणहानि

सलागाओ । एगवगणं द्विगुणहाणिट्ठाणंतरमणंतगुणं । को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो ।

अवहारो ण सक्कदे णेदुं । कुदो ? णिरंतरवड्ढीए हाणीए वा वगगणाणं गमणाणुवलंभादो । अथवा सरिसघणियवगणाओ छंडेदूणं विसेसाहियवगणाओ चेव घेतूण भण्णमाणे अवहारो सक्कदे वोत्तुं । तं जहा—* जवमज्ज्ञस्सुवरिमअसंखेज्जगुणहाणिदव्वे जवमज्ज्ञपमाणे कीरमाणे दिवड्ढगुणहाणिमेत्ताणि जवमज्ज्ञाणि होति । हेट्ठिम असंखेज्जगुणहाणिदव्वे वि जवमज्ज्ञपमाणेण कीरमाणे दिवड्ढगुणहाणिमेत्तजवमज्ज्ञाणि होति । पुणो दोसु वि दव्वेसु एगट्ठमेलिदेसु तिण्णिगुणहाणिमेत्तजवमज्ज्ञाणि होति । संपहि जवमज्ज्ञपमाणेण सव्वदव्वं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि ? तिण्णिगुणहाणिट्ठाणंतरेण आवल्लिए असंखे भागपमाणेण कालेण अवहिरिज्जदि । संपहि अभवसिद्धियपाओगसव्वजहण्णवगणपमाणेण सव्वदव्वं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि ? असंखेज्जतिण्णि* गुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि । तं जहा—जवमज्ज्ञादो हेट्ठा आवल्लियाए असंखे भागमेत्ताओ णाणागुणहाणिसलागाओ होति । पुणो एदाओ विरल्लिय त्रिगुणिय अण्णोणभत्थे कदे उत्पण्णरासिपमाणं पि आवल्लियाए असंखे भागमेत्तं चेव होदि । कुदो ? जवमज्ज्ञे जहण ट्ठा णे वि आवल्लियाए असंखे भागमेत्ता णं

शलाकार्ये सबसे स्तोक हैं । इनके एकवर्गणाद्विगुणहानिस्थानान्तर अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है ।

अवहार ले जाना शक्य नहीं है, क्योंकि, निरन्तर वृद्धि और निरन्तर हानिरूपसे वर्गणाओंका सिलसिला नहीं उपलब्ध होता है । अथवा सदृश घनवाली वर्गणाओंको छोड़कर विशेषाधिक वर्गणाओंको ही ग्रहण करके कथन करने पर अवहारका कथन करना शक्य है । यथा यवमध्यसे उपरिम असंख्यातगुणहानिके द्रव्यको यवमध्यके प्रमाण करने पर डेढ़ गुणाहानिमात्र यवमध्य होते हैं । अधस्तन असंख्यातगुणहानिके द्रव्योंको भी यवमध्यके प्रमाणसे करनेपर डेढ़ गुणहानिमात्र यवमध्य होते हैं । पुनः दो द्रव्योंको भी इकट्ठा मिलाने पर तीन गुणहानिमात्र यवमध्य होते हैं ! अब यवमध्यके प्रमाणसे सब द्रव्य कितने काल द्वारा अपहृत होता है ? तीन गुणहानिस्थानान्तररूप आवल्लिके असंख्यातवें भागप्रमाण काला द्वारा अपहृत होता है । अब अभव्योंके योग्य सबसे जघन्य वर्गणाके प्रमाणसे सब द्रव्य कितने कालके द्वारा अपहृत होता है ? असंख्यात त्रिगुणहानिस्थानान्तर कालके द्वारा अपहृत होता है । यथा—यवमध्यके नीचे आवल्लिके असंख्यातवें भागप्रमाण नानागुणहानिशलाकार्ये होती हैं । पुनः इनका विरलन कर और द्विगुणित कर परस्पर गुणा करने पर उत्पन्न हुई राशिका प्रमाण भी आवल्लिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होता है, क्योंकि, यवमध्यरूप जघन्य स्थानमें भी आवल्लिके

प्रतिषु 'एवं वगण-' इति पाठः । अ-आ प्रत्योः 'छड्डेदूण' इति पाठः । * म. प्रतिपाठोऽयम् । ता० अ० प्रत्योः 'वोत्तुं जुत्तं जहा' का० प्रती वोत्तुं जुत्तं जहा' इति पाठः । ता० प्रती 'जवमज्ज्ञपमाणेण' कीरमाणे दिवड्ढगुणहाणिमेत्तजवमज्ज्ञाणि होति । पुणो सव्वदव्वं' इति पाठः । * म० प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु 'अवहिरिज्जदि ? असंखेज्ज तिण्णि' इति पाठः ।

चेव वर्गणाणमुवलंभादो । पुणो एदेण तिसु गुणहाणीसु गुणिदासु अभवसिद्धियपाओग्ग-
सव्वजहण्णभागहारो होदि । एवं जाणिदूण णेयव्वं जाव उक्कस्सपत्तेयसरीरवर्गणे त्ति ।

संपहि उक्कस्सपत्तेयसरीरवर्गणाए भागहारो वुच्चदे । तं जहा— जवमज्झादो
उवरिमणाणागुणहाणिसलागाओ आवलियाए असंखे० भागमेत्ताओ होंति । पुणो एदाओ
विरलिय विगं करिय अण्णोण्णगुणिदरासिपमाणं पि आवलियाए असं० भागमेत्तं
होदि । पुणो एदेण अण्णोण्णवभत्थरासिणा तिसु गुणहाणीसु गुणिदासु उक्कस्सपत्तेय-
सरीरवर्गणभागहारो होदि ।

भागाभाग—अभव सिद्धियपाओग्गसव्वजहण्णवर्गणाओ सव्वदव्वस्स केवडियो
भागो ? असंखेज्जदिभागो अणंतिमभागो वा । कुदो ? सयलद्धाणवर्गणग्गहणादो ।
एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सपत्तेयसरीरवर्गणे त्ति ।

अप्पासहुगं—सव्वत्थोवाओ उक्कस्सट्ठाणे पत्तेयसरीरवर्गणाओ । जहण्णट्ठाणे
पत्तेयसरीरवर्गणाओ असंखेज्जगुणाओ* । को गुणगारो ? आवलियाए असंखे० भागो ।
जवमज्झट्ठाणे पत्तेयसरीरवर्गणाओ असंखेज्जगुणाओ । को गुणगारो ? आवलि०
असंखे० भागो । जवमज्झादो हेट्ठा पत्तेयसरीरवर्गणाओ असंखेज्जगुणाओ । को
गुणगारो ? किच्चूणदिवड्डुगुणहाणीयो । जवमज्झस्सुवरिमवर्गणाओ विसेसाहियाओ ।
केत्तियमेत्तेण ? जवमज्झस्सुवरिमजहण्णपत्तेयसरीरसरिसवर्गणाणमुवरिमवर्गणमेत्तेण ।

असंख्यातवें भागप्रमाण ही वर्गणाओंकी उपलब्धि हीती है पुनः इनके द्वारा तीन गुणहानियोंके
गुणित करने पर अभव्योंके योग्य सबसे जघन्य भागहार होता है इस प्रकार जान कर उत्कृष्ट
प्रत्येक शरीरवर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए ।

अब उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाका भागहार कहते हैं । यथा—यवमध्यके ऊपर नाना
गुणहानिशलाकायें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हैं । पुनः इनका विरलन करके और
दूनी करके परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुई राशिका प्रमाण भी आवलिके असंख्यातवें भाग-
प्रमाण होता है । पुनः इस अन्योन्याभ्यस्तराशिसे तीन गुणहानियोंके गुणित करने पर उत्कृष्ट
प्रत्येकशरीरवर्गणाका भागहार होता है ।

भागाभाग—अभव्योंके योग्य सबसे जघन्य वर्गणायें सब द्रव्यके कितने भागप्रमाण हैं ?
असंख्यातवें भागप्रमाण या अनन्तवें भागप्रमाण है, क्योंकि, समस्त अध्वानकी वर्गणाओंको ग्रहण
किया है । इस प्रकार उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए ।

अल्पबहुत्व—उत्कृष्ट स्थानमें प्रत्येकशरीरवर्गणायें सबसे स्तोक हैं । इनके जघन्य स्थानमें
प्रत्येकशरीरवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण
गुणकार है । इनसे यवमध्यस्थानमें प्रत्येकशरीरवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं । गुणकार क्या है ?
आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । इनसे यवमध्यके नीचे प्रत्येकशरीरवर्गणायें
असंख्यातगुणी हैं । गुणकार क्या है ? कुछ कम डेढगुणहानिप्रमाण गुणकार है । इनसे यवमध्यसे
उपरिम वर्गणायें विशेष अधिक हैं । कितनी अधिक हैं ? यवमध्यसे उपरिम जघन्य प्रत्येकशरीर-
वर्गणाओंके समान उपरिम वर्गणाओंके ऊपरवाली वर्गणाओं मात्रसे अधिक हैं । इनसे सब

* तापती— 'वर्गणाओ (जहण्णट्ठाणे) असंखेज्जगुणो' इति पाठः ।

सव्वेसु ट्ठाणेषु वग्गणाओ विसेसाहियाओ । केत्तियमेत्तेण? जवमज्जहेट्ठिमट्ठाणवग्गण-
मेत्तेण । एवं बादरसुहुमणिगोदवग्गणाणं जवमज्जपरूवणाए छणुयोगद्वाराणि
परूवेदव्वणि ।

पदेसट्ठदाए जवमज्जं वुच्चदे । तं जहा—परमाणुवग्गणपदेसेहितो दुपदेसियवग्गण-
पदेसा विसेसाहिया । एवं विसेसाहिया विसेसाहिया जाद दव्वट्ठदाए दिवड्डुगुणहाणि-
ट्ठाणंतरमेत्तमट्ठाणं गंतूण दोसु ट्ठाणेषु जवमज्जं होदि । तत्तो उवरि विसेसहीणा विसेस-
हीणा जाव विसेसहीणवग्गणाओ णिट्ठिदाओ त्ति । एवं जवमज्जे त्ति समत्तमणुयोगद्वारं ।

पदमीमांसाए परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा किमुक्कस्सा अणुक्कस्सा जहण्णा अजहण्णा?
उक्कस्सा वा अणुक्कस्सा वा जहण्णा वा अजहण्णा वा । एवं णेयव्वं जाव धुवक्खंध-
दव्ववग्गणे त्ति । अचित्तअधुवक्खंधदव्ववग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि
अत्थि तो उक्कस्सा वा अणुक्कस्सा वा जहण्णा वाअजहण्णा वा । एवं पत्तेयसरीर-
बादरणिगोदसुहुमणिगोदमहाखंधवग्गणाणं पि वत्तव्वं । णवरि महाखंधवग्गणाए
एयसमयम्मि सरिसधणियवग्गणाओ णत्थि, साभावियादो । परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाए
जहण्णादो उक्कस्सिया विसेसाहिया । विसेसो पुणोअणंतानि पोग्गलपढमवग्गमूलाणि ।

स्थानोंमें वर्गणार्थे विशेष अधिक हैं । कितनी अधिक हैं? यवमध्यसे अधस्तन स्थानकी वर्गणा-
मात्र अधिक हैं । इसी प्रकार बादर निगोदवर्गणा और सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंके यवमध्यका
परूपणा करते समय छह अनुयोगद्वारका कथन करना चाहिए ।

अब प्रदेशार्थताकी अपेक्षा यवमध्यका कथन करते हैं । यथा—परमाणुवर्गणाके प्रदेशोंसे
द्विप्रदेशी वर्गणाके प्रदेश विशेष अधिक हैं । इस प्रकार द्रव्यार्थताकी अपेक्षा डेढगुणहानि
स्थानान्तरमात्र अध्वान जाकर दो स्थानोंमें यवमध्यके प्राप्त होनेतक विशेष अधिक विशेष
अधिक जानना चाहिए । इसके आगे विशेष हीन वर्गणाओंके समाप्त होनेतक विशेष हीन
विशेष हीन जानना चाहिए । इस प्रकार यवमध्य अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

पदमीमांसाकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या उत्कृष्ट होती है, अनुत्कृष्ट होती है,
जघन्य होती है या अजघन्य होती है? उत्कृष्ट होती है, अनुत्कृष्ट होती है, जघन्य होती है और
अजघन्य होती है । इस प्रकार ध्रुवस्कन्धवर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए । अचित्त
अध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणार्थे कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं ? यदि हैं तो उत्कृष्ट होती है,
अनुत्कृष्ट होती हैं, जघन्य होती हैं और अजघन्य होती हैं । इसी प्रकार प्रत्येकशरीरवर्गणा,
बादरनिगोदद्रव्यवर्गणा, सूक्ष्मनिगोदद्रव्यवर्गणा और महास्कन्धवर्गणाओंके विषयमें भी कहना
चाहिए । इतनी विशेषता है कि महास्कन्धवर्गणाकी अपेक्षा एक समयमें सदृश धनवाली
वर्गणार्थे नहीं हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाकी अपेक्षा जघन्यसे उत्कृष्ट
विशेष अधिक है । तथा विशेष पुद्गलके अनन्त प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । उनका प्रतिभाग क्या

(१) ता०प्रती 'उक्कस्सा वा जहण्णा वा' इति पाठः । ॥ म०प्रतिपाठोऽयम् । ता०प्रती 'विसेसाहिया
विसेसाहिया । पुणो' अ०प्रती 'विसेसाहिया विसे० २ । पुणो' का०प्रती 'विसेसाहिया विसेसाहिया पुणो'
इति पाठः ।

तेसी को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा । एवं णेयव्वं जाव धुवक्खंधवग्गणे त्ति । एवं पदमीमांसे त्ति समत्तमणुयोगद्वारं ।

अप्पाबहुगं तिबिहं—णाणासेडिदव्वट्टुदा णाणासेडिपदेसट्टुदा एगसेडिणाणा-सेडिदव्वट्टुपदेसट्टुदा चेदि । संपहि णाणासेडिदव्वट्टुदप्पाबहुगं दुच्चदे । ते जहा—सव्वत्थोवा महाखंधदव्वग्गणाए दव्वा । कुदो ? एयत्तादो । बादरणिगोदवग्गणाए दव्वा णसंखेज्जगुणा* । को गुणगारो ? आवलियाए असंखे०भागो । कुदो ? समाण-वग्गणाओ मोत्तूण विसेसाहियवग्गणाणं चेव गहणादो । अथवा गुणगारो असंखेज्जा लोगा । कुदो ? वट्टमाणकालबादरणिगोदवग्गणाणं गहणादो । बादरणिगोद-वग्गणाओ असंखेज्जलोगमेत्तीयो होंति त्ति कुदो णव्वदे । अविरुद्धाइरियवयणादो जुत्तीए च । तं जहा—एविकस्से वग्गणाए जहण्णेण आवलियाए० असंखे० भागमेत्त-पुलवियाओ होंति, उवकस्सेण सेडोए असंखे०भागमेत्ताओ । एदाओ च ण पउरं लब्भंति । तेण आवलियाए असंखे०भागमेत्तपुलवियाहि वग्गणाणयणं कस्सामो—आवलि० असंखे०भागमेत्तपुलवियाहि जदि एगा बादरणिगोदवग्गणा लब्भदि तो ॐ असंखेज्जलोगमेत्तपुलवियासु केत्तियाओ बादरणिगोदवग्गणाओ लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए असंखेज्जलोगमेत्ताओ बादरणिगोदवग्गणाओ

है ? असंख्यात लोकप्रमाण प्रतिभाग है । इस प्रकार ध्रुवस्कन्धवर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए । इस प्रकार पदमीमांसा अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

अल्पबहुत्व तीन प्रकार का है—नानाश्रेणिद्रव्यार्थता, नानाश्रेणिप्रदेशार्थता और एकश्रेणि-नानाश्रेणिद्रव्यार्थता-प्रदेशार्थता । अब नानाश्रेणिद्रव्यार्थता अल्पबहुत्वको कहते हैं । यथा—महास्कन्धद्रव्यवर्गणाका द्रव्य सबसे स्तोक है, क्योंकि, वह एक है । बादरनिगोदवर्गणाके द्रव्य असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि समान वर्गणाओंको छोडकर विशेष अधिक वर्गणाओंको ही यहाँ पर ग्रहण किया है । अथवा गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है । क्योंकि, वर्तमान कालकी बादरनिगोदवर्गणाओंका ग्रहण किया है ।

शंका— बादरनिगोदवर्गणायें असंख्यात लोकप्रमाण हैं यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—अविरुद्ध आचार्योंके वचनसे और युक्तिसे जाना जाता है । यथा—एक वर्गणामें जघन्यसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलविया होती हैं और उत्कृष्टसे जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हैं । किन्तु ये प्रचुरमात्रामें उपलब्ध नहीं होती हैं, इसलिए आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंके द्वारा वर्गणाओंको लाते हैं—आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंके आलम्बनसे यदि एक बादरनिगोदवर्गणा प्राप्त होती है तो असंख्यात लोकप्रमाण पुलवियोंमें कितनी बादरनिगोदवर्गणायें प्राप्त होगी, इस प्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देनेपर असंख्यात लोकप्रमाण बादरनिगोदवर्गणायें प्राप्त होती

* ता०का०प्रत्योः 'सध्रदव्ववग्गणाए दव्व असंखेज्जगुणा' इति पाठः ।

ॐ अ-आप्रत्योः 'सखेज्ज' इति पाठः ।

लब्धंति । तेण असंखेज्जालोगा गुणगारो त्ति सिद्धं । सुहुमणिगोदवगणाए णाणा-
सेडिसव्वदव्वा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलि० असंखे०भागो कुदो ?
विसेसाहियवगणपमाणादो । उभयत्थ तिण्णिगुणहाणिमेत्तजवमज्जेसु संतेसु
कथं बादरणिगोदवगणाहितो सुहुमणिगोदवगणाणमसंखेज्जगुणत्तं जुज्जदे ? ण,
बादरणिगोदजवमज्जसरिसधणिवगणाहितो सुहुमणिगोदजवमज्जसरिसधणिय-
वगणाणमसंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो ।
कुदो एदं णव्वदे ? अविरुद्धाइरियवयणादो । अथवा गुणगारो असंखेज्जा लोगा ।
कुदो ? वट्टमाणकालसयलवगणगहणादो, बादरणिगोदपुलवियाहितो सुहुम-
णिगोदपुलवियाणमसंखेज्जगुणत्तुवलंभादो को गुण० ? असंखेज्जा लोगा । एदाहि
पुलवियाहितो वगणपमाणं पुव्वं व अःणेयव्वं । पत्तेयसरीरवगणाए णाणासेडिसव्व-
दव्वा असंखेज्जगुणा । को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो कुदो ? विसेसाहिय-
वगणपमाणाए । उभयत्थ तिण्णिगुणहाणिमेत्तजवमज्जेसु संतेसु कथं पत्तेयसरीरवगणा
णमसंखेज्जगुणत्तं ? ण, सुहुमणिगोदगुणहाणीदो पत्तेयसरीरगुणहाणीए असंखेज्ज-

हैं । इसलिये गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है यह बात सिद्ध होती है ।

सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके नानाश्रेणि सब द्रव्य असंख्यात गुणे हैं ? गुणकार क्या है ?
आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि विशेष अधिक वर्गणाओंका प्रमाण लिया
गया है ।

शंका— उभयत्र तीनगुणहानिमात्र यवमध्योंके रहने पर बादरनिगोदवर्गणाओंसे सूक्ष्म-
निगोदवर्गणायें असंख्यातगुणी कैसे बन सकती हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि बादरनिगोद यवमध्य सदृश धनवाली वर्गणाओंसे सूक्ष्मनिगोद
यवमध्य सदृश धनवाली वर्गणायें असंख्यातगुणी उपलब्ध होती हैं ।

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— अविरुद्ध आचार्योंके वचनसे जाना जाता है

अथवा गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है, क्योंकि वर्तमान कालकी सब वर्गणाओंका
ग्रहण किया है । तथा बादरनिगोदपुलवियोंसे सूक्ष्मनिगोदपुलवियां असंख्यातगुणी उपलब्ध होती
हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार है । इन पुलवियोंके आलम्बनसे
वर्गणाओंका प्रमाण पहलेके समान लाना चाहिए । प्रत्येकशरीरवर्गणाके नानाश्रेणि सब द्रव्य
असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या ! आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि
विशेष अधिक वर्गणाओंकी मुख्यता है ।

शंका— उभयत्र तीन गुणहानिप्रमाण यवमध्योंके रहनेपर प्रत्येकशरीरवर्गणायें असंख्यात-
गुणी कैसे हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि सूक्ष्मनिगोदकी गुणहानिसे प्रत्येकशरीरकी गुणहानि असंख्यात-

इति प्रती 'वगणपमाणाए' इति पाठः ।

गुणत्तादो, सरिसधणियवग्गणाणं तव्वग्गणाहितो असंखेज्जगुणत्तादो वा । अथवा गुण-
गारो असंखेज्जा लोका । कुदो ? वट्टमाणासेमवग्गणप्पणादो । सुहुमणिगोदवग्गणाहितो
कथं पत्तेयसरीरवग्गणाणमसंखेज्जगुणत्तं जुज्जदे ? ण, एगजीवेण वि पत्तेयसरीरवग्गणा-
णिप्पत्तीदो, अणंतेहि जीवेहि विणा सुहुमणिगोदवग्गणाणुप्पत्तीदो । सांतरणिरंतर-
वग्गणाए णाणासेडिसव्वदव्वमणंतगुणं । को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो ।
कुदो ? तत्थतणजहण्णवग्गणाए वि उक्कस्सेण अणंतसरिसधणियवग्गणुवलंभादो ।
धुवक्खंधवग्गणाए णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंत-
गुणो । दिवड्डुगुणहाणिगुणिदसगणाणागुणहाणिसलागाणमण्णोण्णब्भत्थरासि त्ति भणिदं
होदि । कम्मइयवग्गणाए णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? कम्मइयवग्गण-
ब्भंतरणाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णेव गुणिदरासी
गुणगारो । कुदो ? धुवक्खंधदव्वे सगपढवग्गणपमाणेण कीरमाणे दिवड्डुगुणहाणि-
मेत्तपढमवग्गणाओ होति । पुणो कम्मइयदव्वे वि सगपढमवग्गणपमाणेण कीरमाणे
दिवड्डुगुणहाणिमेत्तपढमवग्गणाओ उप्पज्जंति । एत्थतणएगमपढमवग्गणाए कम्मइय-
अण्णोण्णब्भत्थरासिमेत्ताओ धुवक्खंधपढमवग्गणाओ होति त्ति अण्णोण्णब्भत्थरासिणा
गुणिदे एत्तियाओ कम्मइयवग्गणाओ धुवक्खंधपढमवग्गणाओ उप्पज्जंति । संपहिय

गुणी है । अथवा उन वर्गणाओंसे सदृश धनवाली वर्गणायें असंख्यातगुणे हैं ।

अथवा गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है, क्योंकि वर्तमान कालकी समस्त वर्गणाओंकी मुख्यता है ।

शंका— सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंसे प्रत्येकशरीरवर्गणायें असंख्यातगुणी कैसे बन सकती हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि एक जीवके द्वाराभी प्रत्येकशरीरवर्गणाकी निष्पत्ति होती है और अनन्त जीवोंके बिना सूक्ष्मनिगोदवर्गणाकी उत्पत्ति नहीं हो सकती ।

सान्तरनिरन्तरवर्गणामें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है, क्योंकि वहाँ की जघन्य वर्गणामेंभी उत्कृष्टसे अनन्त सदृश धनवाली वर्गणायें उपलब्ध होती हैं । ध्रुवस्कन्धवर्गणामें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है । डेढ़ गुणहानिसे गुणित अपनी नाना गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । कर्मण-वर्गणामें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? कामवर्गणाके भीतर नाना गुणहानिशलाओंका विरलन कर दूना कर परस्पर गुणित करनेसे उत्पन्न हुई राशि गुणकार है, क्योंकि ध्रुवस्कन्ध द्रव्यके अपनी प्रथम वर्गणाके प्रमाणसे करनेपर डेढ़ गुणहानिमात्र प्रथम वर्गणायें होती हैं । पुनः कर्मणद्रव्यके भी अपनी प्रथम वर्गणाके प्रमाणसे करने पर डेढ़ गुणहानिमात्र प्रथम वर्गणायें उत्पन्न होती हैं । यहाँकी एक प्रथम वर्गणामें कर्मण अन्योन्याभ्यस्त राशिमात्र ध्रुवस्कन्धकी प्रथम वर्गणायें होती हैं इसलिए अन्योन्याभ्यस्त राशिके गुणित करनेपर इतनी कर्मणवर्गणायें ध्रुवस्कन्ध प्रथम वर्गणायें उत्पन्न होती हैं । अब डेढ़ गुणहानिमात्र ध्रुवस्कन्ध

दिवड्ढमेत्तधुववखंधपढमवग्गणाहि कम्मइयवग्गणासु ओवट्टिदासु अण्णोण्णब्भत्थरासी जेण आगच्छदि तेण पुव्वुत्तगुणगारो सिद्धो । एदमत्थपदमुवरि सव्वत्थ वत्तव्वं । कम्मइयवग्गणाए हेट्ठा अगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? अगहणवग्गणब्भंतरे अभवसिद्धिएहि अणंतगुणाओ सिद्धाणमणंतभागमेत्ताओ गुणहाणि-सलागाओ अत्थि । एदाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासी गुणगारो । मणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? मणदव्ववग्गणब्भंतरे-अण्णोण्णब्भत्थरासी गुणगारो । मणस्स हेट्ठिमअगहणदव्ववग्गणासु णाणासेडि-सव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? अगहणअण्णोण्णब्भत्थरासी गुणगारो । भासा-वग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? भासावग्गणअण्णोण्ण-ब्भत्थरासी गुणगारो । भासाए हेट्ठा अगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? अगहणअण्णोण्णब्भत्थरासी गुणगारो । तेजावग्गणासु णाणासेडि-सव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? तेजावग्गणअण्णोण्णब्भत्थरासी । तेजइयस्स हेट्ठिमअगहणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? अगहण-अण्णोण्णब्भत्थरासी । आहारवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० आहारवग्गणअण्णोण्णब्भत्थरासी । आहारवग्गणाए हेट्ठिमअणंतपदेसिय-अगहणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० अगहण-अण्णोण्णब्भत्थरासी । परमाणुवग्गणाए णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को

प्रथम वर्गणाओंसे कामणवर्गणाओंके भाजित करने पर यतः अन्योन्याभ्यस्त राशि आती है अतः पूर्वोक्त गुणकार सिद्ध होता है । यह अर्थपद आगे सर्वत्र कहना चाहिए । कामणवर्गणासे नीचे अग्रहणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है । अग्रहणवर्गणाके भीतर अभवणोंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणहानिशलाकार्ये हैं । इनका विरलन करके और दूना करके परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुई राशि गुणकार है । मनोद्रव्य-वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? मनोद्रव्यवर्गणाके भीतर स्थित अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । मनोवर्गणासे नीचेकी अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है । अग्रहणवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । भाषावर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? भाषावर्गणाकी अन्यो-न्याभ्यस्त राशि गुणकार है । भाषावर्गणासे नीचे अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अग्रहणवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । तैजसद्रव्य वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? तैजसवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । तैजसवर्गणाके नीचे अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अग्रहणद्रव्यवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । आहारवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आहारवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । आहारवर्गणासे नीचे अनन्तप्रदेशी अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अग्रहणवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । परमाणु-

गुण० ? दिवड्ढोवट्ठिदअसंखेज्जपदेसियवग्गणाणं अण्णोण्णवत्थरासी । अणंते त्ति कथं णव्वदे ? जुत्तीदो । तं जहा-एगगुणहाणीए जहण्णपरित्ताणंते भागे हिदे असंखेज्जपदेसियवग्गणाणं गुणहाणिसलागाओ उप्पज्जंति । एदाओ च जहण्णपरित्ताणंतयस्स अट्ठच्छेदणाहितो असंखेज्जगुणाओ । एदासिमसंखेज्जगुणत्तं कुदो णव्वदे ? गुरुव्वदेसादो । तेणेदाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णवत्थरासिस्स सिद्धमणंतत्तं । संखेज्जपदेसियवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? एगरूवस्स असंखेज्जदिभागेणूणरूवूणकस्ससंखेज्जयं । कुदो ? परमाणुवग्गणादो एगादिएगुत्तरकमेण परिहीणएत्थतणगोवुच्छविसेसेहि एगपरमाणुवग्गणाए असंखेज्जभागुप्पत्तीदो । असंखेज्जपदेसियवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा* असंखेज्जगुणा । को गुण० ? एगरूवस्स असंखे०भागेणूणउवकस्ससंखेज्जेण परिहीणदिवड्ढगुणहाणीए एगरूवस्स असंखे०भागेणूणरूवूणकस्ससंखेज्जेण ओवट्ठिदाए जं लद्धं सो गुणगारो । एवं दव्वट्ठदप्पावहुगं समत्तं ।

संपहि णाणासेडिपदेसट्ठदप्पावहुअं उच्चदे । तं जहा-सव्वत्थोवा पत्तेयसरीर-

वर्गणामें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? डेढसे भाजित असंख्यातप्रदेशी वर्गणाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है ।

शंका- वह अनन्तप्रमाण है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान- युक्तिसे जाना जाता है । यथा-एक गुणहानिका जघन्य परीतानन्तमें भाग देने पर असंख्यातप्रदेशी वर्गणाओंकी गुणहानिशलाकायें उत्पन्न होती हैं । और ये जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंसे असंख्यातगुणी हैं ।

शंका- ये असंख्यातगुणी हैं यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान- गुरुके उपदेशसे ।

इसलिए इनका विरलनकर और दूना कर परस्पर गुणा करने से उत्पन्न हुई राशि अनन्तप्रमाण है यह सिद्ध होता है ।

संख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? एक अंकके असंख्यातवें भागसे न्यून एक कम उत्कृष्ट संख्यात गुणकार है, क्योंकि, परमाणु-वर्गणाकी अपेक्षा एकादि एकोत्तर क्रमसे हीन यहाँके गोपुच्छविशेषोंसे एक परमाणुवर्गणाके असंख्यातवें भागकी उत्पत्ति होती है । असंख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? एक अंकके असंख्यातवें भागसे न्यून उत्कृष्ट संख्यातको डेढगुणहानिमेंसे कम करने पर जो लब्ध आवे उसमें एक अंकके असंख्यातवें भागसे न्यून एक कम उत्कृष्ट संख्यातका भाग देने पर जो लब्ध आवे वह गुणकार है । इस प्रकार द्रव्यार्थता अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब नानाश्रेणि प्रदेशार्थता अल्पबहुत्वका कथन करते हैं । यथा-प्रत्येकशरीरवर्गणाके प्रदेश

* अ०का०प्रत्योः '—वग्गणाणाणासेडिसव्वदव्वा' इति पाठः ।

वग्गणाए पदेसा । कुदो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तएगजीवस्स कम्म-णोकम्मपदेसे
 द्वविय असंखेज्जेहि लोगेहि तेसु गुणिदेसु पत्तेयसरीरवग्गणाणं सव्वपदेसुप्पत्तीए ।
 महाखंधवग्गणाए सव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? अणंता लोगा । कुदो ? उक्कस्स-
 पत्तेयसरीरवग्गणं द्वविय अणंतेहि लोगेहि सेडीए असंखे०भागेण अंगुलस्स असंखे०-
 भागेण पलिदो० असंखे०भागेण जगपदरस्स असंखे०भागेण च गुणिदे महाखंध-
 पदेसपमाणं होदि । पुणो एदम्हि पत्तेयसरीरवग्गणपदेसेहि ओवट्टिदे जं लद्धं तत्थ
 अणंतलोगाणमुवलंभादो । बादरणिगोदवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा असंखेज्जगुणा ।
 को गुण० ? असंखेज्जा लोगा । तं जहा—एगजीवकम्म-णोकम्मपदेसे सव्वजीवेहि
 अणंतगुणे द्वविय सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागेण असंखेज्जेहि लोगेहि च गुणिदे
 बादरणिगोदवग्गणाए पदेसगं होदि । पुणो तम्हि महाखंधवग्गणपदेसगेण भागे
 घेप्पमाणे हेट्ठिमएगजीवपदेसेहि सव्वजीवरासिस्स असंखे०भागेण च उवरिम-
 एगजीवपदेसा सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जभागे च सरिसो त्ति अवणिय
 सेसहेट्ठिमरासिणा सेसुवरिमरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जलोगमेत्तगुणमारो लब्भदि
 तेण असंखेज्जगुणा त्ति भणिदं । सुहुमणिगोदवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा
 असंखेज्जगुणा* । को गुण० ? असंखेज्जालोगा । कुदो बादरणिगोदेहिंतो

सबसे स्तोक हैं, क्योंकि, एक जीवके सब जीवोंसे अनन्तगुणे कर्म और नोकर्मके प्रदेशोंको स्थापित
 कर उन्हें असंख्यात लोकोंसे गुणित करने पर प्रत्येकशरीरवर्गणाओंके सब प्रदेशोंकी उत्पत्ति होती
 है । महास्कन्धवर्गणाके सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अनन्त लोक गुणकार है,
 क्योंकि, उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाको स्थापित करके अनन्त लोकोंसे, जगश्रेणिके असंख्यातवें
 भागसे, अङ्गुलके असंख्यातवें भागसे, पल्यके असंख्यातवें भागसे और जगप्रतरके असंख्यातवें
 भागसे गुणित करने पर महास्कन्धके प्रदेशोंका प्रमाण होता है । पुनः इसमें प्रत्येकशरीरवर्गणाके
 प्रदेशोंका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसमें अनन्त लोक उपलब्ध होते हैं । बादरनिगोदवर्गणाओंमें
 नानाश्रेणि सब प्रदेश असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है ।
 यथा— सब जीवोंसे अनन्तगुणे एक जीवके कर्म और नोकर्मप्रदेशोंको स्थापित करके सब जीव-
 राशिके असंख्यातवें भागसे और असंख्यात लोकोंसे गुणित करने पर बादर निगोदवर्गणाके प्रदेशाग्र
 होते हैं । पुनः उसमें महास्कन्धवर्गणाके प्रदेशोंका भाग ग्रहण करने पर अधस्तन एक जीवके
 प्रदेशोंके साथ और सब जीवराशिके असंख्यातवें भागके साथ उपरिम एक जीवके प्रदेश और
 सब जीवराशिका असंख्यातवां भाग समान है, इसलिए घटा कर शेष अधस्तन राशिका शेष
 उपरिम राशिमें भाग देने पर असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार लब्ध होता है, इसलिए असंख्यातगुणे
 हैं ऐसा कहा है । सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या
 है ? असंख्यात लोक गुणकार है, क्योंकि, बादरनिगोदोंसे सूक्ष्मनिगोद असंख्यातगुणे हैं ।

* ता०प्रती 'सव्वपदेसा (अ-) संखेज्जगुणा' अ०का०प्रत्योः '—सव्वपदेसासंखेज्जगुणा'
 इति पाठः ।

सुहुमणिगोदा असंखेज्जगुणा ? को गुण० ? असंखेज्जा लोणा त्ति जीवट्टाणसुत्ते परूविदत्तादो, उभयत्थ एगजीवपदेसग्गगुणगारस्स समाणत्तादो च । सांतर-णिरंतर-वग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । धुवक्खंधवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । तं जहा—धुवक्खंधचरिमवग्गणाए पदेसेहितो सांतरणिरंतर-वग्गणाए सव्वपदेसाणमणंतगुणहीणत्तुवलंभादो । कुदो ? जेण धुवक्खंधचरिम-वग्गणादव्वट्टदादो सांतरणिरंतरवग्गणाए पढमादिसव्ववग्गणदव्वट्टदाओ अणंतगुण. हीणाओ तेण तासि पदेसगं पि अणंतगुणहीणं चेव । जदि धुवक्खंधचरिमवग्गणा एक्का चेव पदेसगेण अणंतगुणा होदि तो धुवक्खंधसव्ववग्गणाओ णिच्छयेण अणंतगुणाओ होंति त्ति अणुत्तसिद्धं । कम्मइयवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? कम्मइयवग्गणाणं अण्णोण्णभत्थरासी । कम्मइयवग्गणादो हेट्ठिम-अग्रहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? सगअण्णोण्णभत्थरासी । मणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? सगअण्णोण्णभत्थरासी । मणंदो* हेट्ठिमअग्रहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? सगअण्णोण्णभत्थरासी । भासावग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? सगअण्णोण्णभत्थरासी । भासादो हेट्ठिमअग्रहणवग्गणासु

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है ऐसा जीवस्थानसूत्रमें कथन किया है ? तथा दोनों जगह एक जीवके प्रदेशोंका गुणकार समाग है । सांतर-निरन्तरवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणें हैं । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है । ध्रुवस्कन्ध वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणें हैं । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है । यथा—ध्रुवस्कन्धकी अन्तिम वर्गणाके प्रदेशोंसे सांतरनिरन्तरवर्गणाके सब प्रदेश अनन्तगुणे होन उपलब्ध होते हैं, क्योंकि यतः ध्रुवस्कन्धकी अन्तिम वर्गणाकी द्रव्यार्थतासे सांतरनिरन्तरवर्गणाकी प्रथमादि सब वर्गणाओंकी द्रव्यार्थताये अनन्तगुणी हीन हैं, इसलिए उनके प्रदेशाग्र भी अनन्तगुणे हीन ही हैं । यदि ध्रुवस्कन्धकी अन्तिम वर्गणा अकेली ही प्रदेशाग्रकी अपेक्षा अनन्तगुणी है तो ध्रुवस्कन्ध सब वर्गणायें निश्चयसे अनन्तगुणी है यह अनुक्तसिद्ध है । कर्मणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? कर्मणवर्गणाओंको अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । कर्मणवर्गणासे नीचेकी अग्रहणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । मनोद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । भाषावर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार

णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? सगअण्णोण्णव्भत्थरासी । तेजा-
वग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? सगअण्णोण्णव्भत्थरासी ।
तेजइयादो हेट्ठिमअगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ?
सगअण्णोण्णव्भत्थरासी । आहारवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को
गुण० ? सगअण्णोण्णव्भत्थरासी । आहारवग्गणादो हेट्ठिमअणंतपदेसियवग्गणासु
णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? सगअण्णोण्णव्भत्थरासी । परमाणु-
वग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । सुगमं । संखेज्जपदेसियवग्गणासु णाणा-
सेडिसव्वपदेसा असंखेज्जगुणा । असंखेज्जपदेसियवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा
असंखेज्जगुणा । एवं णाणासेडिसव्वपदेसद्वुदप्पाबहुअ ससत्तं ।

एगसेडि-णाणासेडिदव्वद्वु-पदेसद्वुदप्पाबहुअ उच्चदे । तं जहा- दव्वद्वुदाए एग-
सेडिपरमाणुवग्गणा णाणासेडिमहाखंधवग्गणा च दो वि तुल्लाओ थोवाओ । कुदो ?
एगसंखत्तादो । संखेज्जपदेसियवग्गणासु एगसेडिवग्गणाओ संखेज्जगुणाओ । को
गुण० ? रूवूणुक्कस्ससंखेज्जयं । बादरणिगोदवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा असंखेज्ज-
गुणा । को गुण० ? असंखेज्जा लोगा । सुहमणिगोदवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा
असंखेज्जगुणा । को गुण० ? असंखेज्जा लोगा । पत्तेयसरीरवग्गणासु णाणासेडिसव्व-
दव्वा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । असंखेज्जपदेसियवग्गणासु

है । भाषावर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार
क्या है ? अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । तैजसवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश
अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । तैजसवर्गणासे
अधस्तन अग्रहणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी
अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । आहारवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुण-
कार क्या है ? अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । आहारवर्गणासे अधस्तन अनन्तप्रदेशी
वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशि
गुणकार है । परमाणुवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । कारणका कथन सुगम है ।
संख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें
नानाश्रेणि सब प्रदेश असंख्यातगुणे हैं । इस प्रकार नानाश्रेणि सर्व प्रदेशार्थता अल्पबहुत्व
समाप्त हुआ ।

अब एकश्रेणि-नानाश्रेणिद्रव्यार्थता-प्रदेशार्थता अल्पबहुत्वका कथन करते हैं । यथा-
द्रव्यार्थताकी अपेक्षा एकश्रेणि परमाणुवर्गणा और नानाश्रेणि महास्कन्ध वर्गणा दोनों ही तुल्य
हो कर सबसे स्ताक हैं, क्योंकि, ये एक संख्याप्रमाण हैं । संख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें एकश्रेणि-
वर्गणार्थे संख्यातगुणी हैं । गुणकार क्या है ? एक कम उत्कृष्ट संख्यातप्रमाण गुणकार है । बादर
निगोदवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक
गुणकार है । सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या
है ? असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार है । प्रत्येकशरीरवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य असंख्यात-
गुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार है । असंख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें

एगसेडिवर्गणा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । आहारवर्गणासु एगसेडिवर्गणा अणंतगुणा । को गुण० ? आहारेगसेडिवर्गणाए^० असंखे० भागो, अभव्वसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जपदेसियवर्गणपडिभागो । आहारवर्गणादो हेट्ठिमअणंतपदेसियवर्गणासु एगसेडिवर्गणा अणंतगुणा । को गुण० ? अभव्वसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो । पुव्व माहारवर्गणादो उवरि तेजा-भासा-मण-कम्मइयवर्गणाणमेगसेडिवर्गणाओ जहाकमेण अणंतगुणाओ भणिदूण पच्छा आहारवर्गणादो हेट्ठिमअगहणकगणाए एगसेडिवर्गणा अणंतगुणा त्ति भणिदं । एहि पुग आहारएगसेडिवर्गणादो हेट्ठिमअगहणवर्गणाए एगसेडिवर्गणा अणंतगुणा त्ति भणिदं । तेण एदांसि दोणमप्पाबहुगाणं परोप्परविरुद्धाणं एत्थ संभवो ण होदि, किंतु दोणमेक्केणेव होदव्वमिदि ? सच्चमेदमेक्केणेव होदव्वमिदि, किंतु अणेणेव होदव्वमिदि ण वट्टमाणकाले णिच्छओ कादुं सक्किज्जदे, जिण-गणहर-पत्तेयबुद्ध-पण्णसमण-सुदकेवलिआदोणमभावादो । कम्मइयवर्गणादो हेट्ठिमआहारवर्गणादो उवरिमअगहणवर्गणमद्धाणगुणगारेहिंतो आहारादिवर्गणाणं अद्धाणुप्पायणट्ठं दुविदभागहारो अणंतगुणो त्ति के वि आइरिया

एकश्रेणिवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार है । आहारवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । गुणकार क्या है ? आहार एकश्रेणिवर्गणाके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है जो अभव्वोंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यातप्रदेशी वर्गणा प्रतिभाग है । आहारवर्गणासे अधस्तन अनन्तप्रदेशी वर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । गुणकार क्या है ? अभव्वोंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है ।

शंका— पहले आहारवर्गणासे ऊपरकी तैजसवर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणा और कार्मणवर्गणाकी एकश्रेणिवर्गणायें क्रमसे अनन्तगुणी कहकर पश्चात् आहारवर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाकी एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं ऐसा कहा है । परन्तु इस समय आहार एकश्रेणिवर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाकी एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं ऐसा कहा है, इसलिये परस्पर विरुद्ध ये दोनों अल्पबहुत्व यहां पर सम्भव नहीं हैं । किन्तु इन दोनोंमें से कोई एक होना चाहिए ?

समाधान— यह सत्य है कि इन दोनोंमें से कोई एक अल्पबहुत्व होना चाहिए, किन्तु यही अल्पबहुत्व होना चाहिए इसका वर्तमानकालमें निश्चय करना शक्य नहीं हैं, क्योंकि इस समय जिन, गणधर, प्रत्येकबुद्ध, प्रज्ञाश्रमण और श्रुतकेवली आदिका अभाव है । कार्मणवर्गणासे अधस्तन आहार वर्गणासे उपरिम अग्रहणवर्गणाके अध्वानके गुणकारसे आहारादिवर्गणाओंके अध्वानको उत्पन्न करनेके लिए स्थापित भागहार अनन्तगुणा है ऐसा कितनेही आचार्य चाहते

० ता० प्रती- 'ओहारदव्ववर्गणाए' इति पाठः ।

इच्छंति तेसिमहिप्पाएण पुव्विल्लमप्पाबहुगं परुविदं । भागहारेहितो गुणगारा अणंत-
गुणा त्ति के वि आइरिया भणंति । तेसिमहिप्पाएण एदमप्पाबहुगं परुविज्जदे, तेणेसो
ण दोसो । तेजइयवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा । को गुण० ? अभवसिद्धिएहि
अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो । एसो गुणगारो उवरि कम्मइयवग्गणादो हेट्ठिम-
अग्रहणवग्गणा त्ति परुवेदव्वो । तेजइयादो हेट्ठिमअग्रहणवग्गणासु एगसेडिवग्गणा
अणंतगुणा । भासावग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा । भासादो हेट्ठिमअग्रहण-
वग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा । मणवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा ।
मणवग्गणादो हेट्ठिमअग्रहणवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा । कम्मइयवग्गणासु एग-
सेडिवग्गणा अणंतगुणा । कम्मइयादो हेट्ठिमअग्रहणवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा ।
धुवक्खंधवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा । को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो ।
अचित्तअधुवक्खंधवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा । को गुण० ? सव्वजीवेहि
अणंतगुणो । पढमित्तियासु धुवसुण्णवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा । को गुण० ?
सव्वजीवेहि अणंतगुणो । पत्तेयसरीरवग्गणासु एगसेडिवग्गणा असंखेज्जगुणा । को गुण० ?
पल्लिदोवमस्स असंखे० भागो । तासु चेव वग्गणासु पाणासेडिसव्वपदेसा असंखेज्जगुणा ।
को गुण० ? असंखेज्जा लोगा । बिदियधुवसुण्णवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा ।

है, इसलिए उनके अभिप्रायानुसार पहले का अल्पबहुत्व कहा है । तथा भागहारोंसे गुणकार
अनन्तगुणे हैं ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं, इसलिए उनके अभिप्रायानुसार यह अल्पबहुत्व
कहा जा रहा है इसलिए यह कोई दोष नहीं है ।

तैजसवर्गणाओंमें एक श्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । गुणकार क्या है? अभव्योंसे अनन्त-
गुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । यह गुणकार ऊपर कर्मणवर्गणासे
लेकर नीचे अग्रहणवर्गणा तक कहना चाहिए । तैजसवर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाओंमें
एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । भाषावर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । भाषा-
वर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । मनोवर्गणाओंमें
एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । मनोवर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें
अनन्तगुणी हैं । कर्मणवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । कर्मणवर्गणाओंसे
नीचे अग्रहणवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । ध्रुवस्कन्धवर्गणाओंमें एक-
श्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार
है । अचित्तअध्रुवस्कन्धवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । गुणकार क्या है ?
सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है । पहली ध्रुवशून्यवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें
अनन्तगुणी हैं । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है । प्रत्येक
शरीरवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं । गुणकार क्या है ? पत्यके
असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उन्हीं वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश असंख्यातगुणे
हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार है । दूसरी ध्रुवशून्यवर्गणाओंमें

को गुण० ? अणंता लोगा । बादरणिगोदवर्गणासु एगसेडिवर्गणा असंखेज्जगुणा ।
 को गुण० ? सेडोए असंखे०भागो पलिदोवमस्स असंखे०भागेण गुणिदो । तदियधुव-
 सुण्णवर्गणासु एगसेडिवर्गणा असंखेज्जगुणा । को गुण० ? अंगुलस्स असंखे०भागो ।
 सुहुमणिगोदवर्गणासु एगसेडिवर्गणा असंखेज्जगुणा । को गुण० ? पलिदो० असंखे०
 भागो आवलियाए असंखे०भागेण गुणिदो । महाखंधवर्गणासु एगसेडिवर्गणा असंखेज्ज-
 गुणा । को गुण० ? जगपदरस्स असंखे०भागे पलिदो० असंखे०भागेण खंडिदे तत्थ
 एगखंडं गुणगारो । चउत्थधुवसुण्णवर्गणासु एगसेडिवर्गणा असंखे०गुणा । को गुण० ?
 पलिदो० असंखे०भागो । महाखंधवर्गणाए पदेसा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ?
 चउत्थधुवसुण्ण० पलिदो० असंखे०भागेण खंडिय तत्थ एगखंडमेत्तेण । बादरणिगोद-
 वर्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा असंखेज्जगुणा । सुहुमणिगोदवर्गणासु णाणासेडि-
 सव्वपदेसा असंखेज्जगुणा । सांतरणिरंतरवर्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा ।
 को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । तासु चेव णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा ।
 को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । धुवखंधवर्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा
 अणंतगुणा । को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । तं जहा-सांतरणिरंतरवर्गणाए
 दव्वट्टदाए पदेसट्टदाए च पढमवर्गणा चेव पहाणा, सेसवर्गणसव्वपदेसाणं तदणंतिम-

एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । गुणकार क्या है ? अनन्त लोकप्रमाण गुणकार है । बादर-
 निगोदवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें
 भागसे गुणित जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । तीसरी ध्रुवशून्यवर्गणाओंमें
 एकश्रेणिवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं । गुणकार क्या है ? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण
 गुणकार है । सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं । गुणकार क्या है ?
 आवलिके असंख्यातवें भागसे गुणित पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । महास्कन्ध-
 वर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं । गुणकार क्या है ? जगप्रतरके असंख्यातवें
 भागमें पल्यके असंख्यातवें भागका भाग देने पर जो एक भाग लब्ध आवे वह गुणकार है ।
 चौथी ध्रुवशून्यवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं । गुणकार क्या है ? पल्यके
 असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । महास्कन्धवर्गणाके प्रदेश विशेष अधिक हैं । कितने
 अधिक हैं ? चौथी ध्रुवशून्यवर्गणामें पल्यके असंख्यातवें भागका भाग देने पर वहाँ जो एक
 भाग लब्ध आवे उतने अधिक हैं । बादरनिगोदवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश असंख्यातगुणे
 हैं । सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश असंख्यातगुणे हैं । सान्तरनिरन्तरवर्गणाओंमें
 नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है ।
 उन्हींमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा
 गुणकार है । ध्रुवस्कन्धवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? सब
 जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है । यथा-सान्तरनिरन्तरवर्गणामें द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थताकी

⊙ म० प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिष्ठा 'असंखे०भागो पलिदो०' इति पाठः ।

भागत्तादो । ध्रुवक्खंधपढमवग्गणपमाणेण सगसव्वदव्वे कीरमाणे दिवड्ढगुणहाणिमेत्त-
पढमवग्गणाओ होति, समयाविरोहेणुप्पण्णगुणहाणिसलागाओ विरलिय समयाविरुद्ध-
गुणगारेण गुणिय अण्णोण्णभत्थं कादूणुप्पाइदरासिणा ध्रुवक्खंधचरिमवग्गणाए
गुणिदाए पढमवग्गणा होदि त्ति दिवड्ढगुणहाणिगुणियअण्णोण्णभत्थरासिणा ध्रुव-
क्खंधचरिमवग्गणाए गुणिदाए ध्रुवक्खंधसव्वदव्वं होदि । सांतरणिरंतरपढमवग्गणादो
ध्रुवक्खंधचरिमवग्गणा अणंतगुणा । को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो ।
सांतर-णिरंतरपढमवग्गणपदेसुप्पायणट्ठं द्ढुविदसादिरेणहेट्ठिमअट्ठाणमेत्तगुणगारादो ।
ध्रुवक्खंधभंतरअण्णोण्णभत्थरासी अणंतगुणो, तेण सांतरणिरंतरवग्गणपदेसगादो
ध्रुवक्खंधवग्गणदव्वमणंतगुणमिदि सिद्धं । तस्सुवरि ध्रुवक्खंधवग्गणाए पदेसग-
मणंतगुणं । को गुण० ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागमेत्तो ।
तं जहा-ध्रुवक्खंधपढमवग्गणं द्ढुविय दिवड्ढगुणहाणिणा गुणिदे दव्ववग्गं होदि ।
गुणो तं चेव पडिरासिय हेट्ठिमअट्ठाणेण अभवसिद्धिएहितो अणंतगुणेण सिद्धाण-
मणंतिमभागेण गुणिदे ध्रुवक्खंधपदेसगं होदि । ध्रुवक्खंधवग्गणाए एगसेडिअट्ठाणं
सव्वजीवेहि अणंतगुणं ति सव्वजीवेहितो अणंतगुणो गुणगारो किण्ण दिज्जदि ? ण,
पढमगुणहाणिपदेसगस्सेव पहाणत्तदंसणादो विदियगुणहाणिसव्वपदेसगस्स पढम-

अपेक्षा प्रथम वर्गणा ही प्रधान है, क्योंकि, शेष वर्गणाओंके सब प्रदेश उसके अनन्तवें भाग-
प्रमाण हैं । ध्रुवस्कन्ध प्रथम वर्गणाके प्रमाणसे अपने सब द्रव्यके करने पर डेढ़ गुणहानिमात्र
प्रथम वर्गणायें होती हैं । अतः आगमानुसार उत्पन्न हुई गुणहानिशलाकाओंका विरलन कर
और आगमानुसार गुणकारसे गुणित कर तथा परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुई राशिसे ध्रुव-
स्कन्धकी अन्तिम वर्गणाके गुणित करने पर प्रथम वर्गणा होती है इसलिए डेढ़ गुणहानिसे
गुणित अन्योन्याभ्यस्त राशिके द्वारा ध्रुवस्कन्धकी अन्तिम वर्गणाके गुणित करनेपर ध्रुवस्कन्धका
सब द्रव्य होता है । सांतरनिरन्तर प्रथम वर्गणासे ध्रुवस्कन्धकी अन्तिम वर्गणा अनन्तगुणी है ।
गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है, क्योंकि, सांतरनिरन्तर प्रथम वर्गणाके
प्रदेशोंको उत्पन्न करनेके लिए स्थापित साध्विक अधस्तन अध्वानमात्र गुणकार है । ध्रुवस्कन्धके
भीतर अन्योन्याभ्यस्त राशि अनन्तगुणी है, इसलिए सांतरनिरन्तरवर्गणाके प्रदेशाग्रसे
ध्रुवस्कन्धवर्गणाका द्रव्य अनन्तगुणा है यह सिद्ध होता है । इसके ऊपर ध्रुवस्कन्ध वर्गणाके
प्रदेशाग्र अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भाग-
प्रमाण गुणकार है । यथा-ध्रुवस्कन्धकी प्रथम वर्गणाको स्थापित कर डेढ़ गुणहानिसे गुणित
करनेपर द्रव्यका वर्ग होता है । पुनः उसे ही प्रतिराशि बनाकर अभव्योंसे अनन्तगुणे और
सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण अधस्तन अध्वानसे गुणित करनेपर ध्रुवस्कन्धके प्रदेशाग्र होते हैं ।

शंका- ध्रुवस्कन्धवर्गणाका एकश्रेणि अध्वान सब जीवोंसे अनन्तगुणा है, इसलिए सब
जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार क्यों नहीं दिया जाता है ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, प्रथम गुणहानिके प्रदेशाग्रकी ही प्रधानता देखी जाती है । तथा

गुणहाणिपदेसगणे समानसुवलंभादो । ण च हेट्ठिमअद्धाणस्सुवरि एगदोगुणहाणीयो पविखत्ते गुणगारो सव्वजीवेहि अणंतगुणो, गुणहाणिणा गुणिदे वि तदणंतगणत्ता-भावादो । तेण सिद्धं गुणगारो* अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो त्ति । कम्मइयवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगु १ को गुण० ? रुवाहियधुववखंधादो हेट्ठिमसयलद्धाणेणोवट्ठिदकम्मइयदव्वट्ठदअण्णोण्णभत्थरासी । कम्मइयवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणसिद्धाणमणंति-मभागमेत्तकम्मइयवग्गणाए हेट्ठिमअद्धाणं रुवाहियं । कम्मइयवग्गणादो हेट्ठिमअगहण-वग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? कम्मइयवग्गणरुवाहियहेट्ठिम-ट्ठाणेणोवट्ठिदकम्मइयहेट्ठिमअगहणवग्गणाए अण्णोण्णभत्थरासी गुणगारो । तासु चेव पदेसगमणंतगुणं । कोण गुण० ? अगहणवग्गणाए हेट्ठिमअद्धाणं रुवाहियं । तदो मणव-ग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? अगहणवग्गणाए हेट्ठिमसयलद्धा-णेण रुवाहिएणोवट्ठिदमणदव्ववग्गणाए अण्णोण्णभत्थरासी । मणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? मणदव्ववग्गणाए हेट्ठिमसयलद्धाणं रुवाहियं । मणस्स हेट्ठिमअगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? मणस्स हेट्ठिमसयलद्धाणेणोवट्ठिदअगहणवग्गणअण्णोण्णभत्थरासी गुणगारो ।

द्वितीय गुणहानिका सब प्रदेशाग्र प्रथम गुणहानिके प्रदेशाग्रके समान पाया जाता है यदि कहा जाय कि अधस्तन अध्वानके ऊपर एक दो गुणहानियोंको प्रक्षिप्त करनेपर गुणकार सब जीवोंसे अनन्तगुणा पाया जावेगा सो भी कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, गुणहानिसे गुणित करनेपर भी उसके अनन्तगुणे होनेका अभाव है, इसलिय गुणकार अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है यह सिद्ध होता है ।

कार्मणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? एक अधिक ध्रुवस्कन्धके तीचेके सकल अध्वानसे भाजित कार्मणद्रव्यार्थताकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । कार्मणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण कार्मणवर्गणाका एक अधिक अधस्तन अध्वान गुणकार है । कार्मणवर्गणासे अधस्तन अग्रहण वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे है । गुणकार क्या है ? कार्मणवर्गणाके एक अधिक अधस्तन स्थानसे भाजित कार्मणवर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । उन्हींमें प्रदेशाग्र अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अग्रहणवर्गणाका एक अधिक अधस्तन अध्वान गुणकार है । उससे मनोवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अग्रहणवर्गणाके एक अधिक अधस्तन सकल अध्वानसे भाजित मनोद्रव्यवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । मनोद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? मनोद्रव्य-वर्गणाका एक अधिक सकल अध्वान गुणकार है । मनोवर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? मनोवर्गणाके अधस्तन सकल अध्वानसे

* ता० प्रती 'सिद्धो गुणगारो' इति पाठः ।

तासु चैव अग्रहणवर्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? अग्रहण-
वर्गणाए हेट्ठिमसयलद्धाणं रूवाहियं गुणगारो । भासावर्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा
अणंतगुणा । को गुण० ? अग्रहणवर्गणाए हेट्ठिमसव्वद्धाणेण रूवाहिएणोवट्ठिदभासा-
वर्गणअण्णोण्णभत्थरासी गुणगारो । तासु चैव णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा
को गुण० ? भासावर्गणाए हेट्ठिमसव्वद्धाणं रूवाहियं । भासावर्गणाए हेट्ठिमअग्रहण-
वर्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? भासावर्गणाए हेट्ठिम-
अद्धाणेण रूवाहिएणोवट्ठिदअप्पिदागहणवर्गणाए अण्णोण्णभत्थरासी । तासु चैव
णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? अप्पिदअग्रहणवर्गणाए हेट्ठिम-
अद्धाणं रूवाहियं । तेजावर्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ?
उवरिमअग्रहणवर्गणाए हेट्ठिमअद्धाणेण रूवाहिएणोवट्ठिदतेजावर्गणअण्णोण्णभत्थ-
रासी । तासु चैव णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? तेजावर्गणाहेट्ठिमअद्धाणं
रूवाहियं । तेजइयादो हेट्ठिमअग्रहणवर्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को
गुण० ? तेजइयपदेसगुणगारेणोवट्ठिदअप्पिदागहणवर्गणाए अण्णोण्णभत्थरासी । तासु
चैव वर्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? अप्पिदअग्रहणवर्गणाए
हेट्ठिमअद्धाणं रूवाहियं । आहारवर्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ?
उवरिमअग्रहणवर्गणपदेसगुणगारेणोवट्ठिदआहारवर्गणअण्णोण्णभत्थरासी । तासु चैव

भाजित अग्रहणवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । उन्हीं अग्रहण वर्गणाओंमें
नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अग्रहणवर्गणाका एक अधिक अधस्तन
सकल अध्वान गुणकार है । भाषावर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार
क्या है ? अग्रहणवर्गणाके एक अधिक अधस्तन सकल अध्वानसे भाजित भाषावर्गणाकी
अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । उन्हींमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार
क्या है ? भाषावर्गणाका एक अधिक अधस्तन सकल अध्वान गुणकार है । भाषावर्गणाके नीचे
अग्रहणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? भाषावर्गणाके
एक अधिक अधस्तन अध्वानसे भाजित विवक्षित अग्रहणवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्तराशि गुणकार
है । उन्हींमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? विवक्षित अग्रहणवर्गणाका
एक अधिक अधस्तन अध्वान गुणकार है । तैजसवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे
हैं । गुणकार क्या है ? उपरिम अग्रहण वर्गणाके एक अधिक अधस्तन अध्वानसे भाजित तैजस-
वर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । उन्हींमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं ।
गुणकार क्या है ? तैजसवर्गणाका एक अधिक अधस्तन अध्वान गुणकार है । तैजसवर्गणासे
अधस्तन अग्रहणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? तैजस प्रदेश
गुणकारसे भाजित विवक्षित अग्रहणवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । उन्हीं
वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? विवक्षित अग्रहणवर्गणाका
एक अधिक अधस्तन अध्वान गुणकार है । आहारवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे
हैं । गुणकार क्या है ? उपरिम अग्रहणवर्गणाके प्रदेश गुणकारसे भाजित आहारवर्गणाकी

णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? आहारवग्गणहेट्ठिमअद्धाणं रुवाहियं ।
 आहारवग्गणादो हेट्ठिमअणंतपदेसियवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को
 गुण० ? आहारवग्गणपदेसगुणगारेणोवट्ठिदअप्पिदअगहणवग्गणअण्णोण्णभत्थरासी ।
 तासु चेव णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? हेट्ठिमअद्धाणं रुवाहियं ।
 परमाणुवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा सध्वपदेसा च दो वि सरिसा अणंतगुणा । को
 गुण० ? अणंतपदेसियवग्गणाणं पदेसगुणगारेण दिवड्ठगुणहाणिगुणिदेणोवट्ठिदअसंखे-
 ज्जपदेसियवग्गणाणमण्णोण्णभत्थरासी । संखेज्जपदेसियवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा
 संखेज्जगुणा । को गुण० ? एगरूवस्स असंखे० भागेणूणरूवूणक्कस्ससंखेज्जयं । तेसि चेव
 पदेसा संखेज्जगुणा । को गुण० ? संखेज्जरूवाणि । तं जहा-पदेसग्गेण सव्व-
 वग्गणाओ एगगुणदुगुणतिगुणादिकमेण गदाओ त्ति संकप्पिय परमाणुवग्गणपदेसे
 द्विविय उक्कस्ससंखेज्जयस्स संकलणाए गुणिदे सव्ववग्गणाणं पदेसग्गमागच्छदि । पुणो
 गुणगारमिह एगरूवे अवणिदे संखेज्जपदेसियवग्गणपदेसग्गं होदि । पुणो पदेसग्गेण
 एदाओ सरिसाओ ण होंति । विसेसहोणाओ त्ति हीणपदेसपमाणपरूवणं कस्सामो ।
 तं जहा-रूवूणक्कस्ससंखेज्जयस्स संकलणासंकलणमाणिय दुगुणिदे हीणपदेसपमाणं
 पावदि । पुणो दोहि गुणहाणीहि असंखेज्जलोगपमाणाहि ओवट्ठिदे एगरूवस्स असंखे०-
 भागोआगच्छदि । एदम्मि पुव्विल्लसंकलणाए अवणिदे संखेज्जपदेसियवग्गणदव्वं

अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । उन्हीं वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं ।
 गुणकार क्या है ? आहारवर्गणाका एक अधिक अधस्तव अध्वान गुणकार है । आहारवर्गणासे
 नीचे अनन्तप्रदेशी वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आहार-
 वर्गणाके प्रदेश गुणकारसे भाजित विवक्षित अग्रहणवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है ।
 उन्हींमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? एक अधिक अधस्तन अध्वान
 गुणकार है । परमाणुवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य और उनके सब प्रदेश दोनों ही समान
 होकर अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? डेढ़ गुणहानि गुणित अनन्तप्रदेशी वर्गणाओंके प्रदेश-
 गुणकारसे भाजित असंख्यातप्रदेशी वर्गणाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । संख्यात-
 प्रदेशी वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? एकेक
 असंख्यातवें भागसे न्यून एक कम उत्कृष्ट संख्यात गुणकार है । उन्हींके प्रदेश संख्यातगुणे हैं ।
 गुणकार क्या है ? संख्यात अंक गुणकार है । यथा—प्रदेशाग्रकी अपेक्षा सब वर्गणायें एकगुणी,
 द्विगुणी और त्रिगुणी आदि क्रमसे गई हैं ऐसा संकल्प करके परमाणुवर्गणाके प्रदेशोंको स्थापित
 कर उत्कृष्ट संख्यातकी संकलनासे गुणित करने पर सब वर्गणाओंके प्रदेशाग्र आते हैं । पुन-
 गुणकारमेंसे एक अंकके कम कर देने पर संख्यातप्रदेशी वर्गणाके प्रदेशाग्र होते हैं । पुनः प्रदेशा-
 ग्रकी अपेक्षा ये समान नहीं होती हैं किन्तु विशेष हीन होती हैं इसलिए हीन प्रदेशोंके प्रमाणका
 कथन करते हैं । यथा—एक कम उत्कृष्ट संख्यातके संकलनासंकलनको लाकर दूना करने पर हीन
 प्रदेशोंका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः असंख्यात लोकप्रमाण दो गुणहानियों का भाग
 देने पर एक अंकका असंख्यातवां भाग आता है । इसे पहले की संकलनामेंसे घटा देने पर

होदि । एदस्मिन् दब्बदुदाए भागे हिदे संखेज्जरूवाणि लब्धंति । तेण गुणगारो संखेज्जे त्ति सिद्धं । असंखेज्जपदेसियवग्गणासु णाणासेडिसव्वदब्बा असंखेज्जगुणा । को गुण० ? असंखेज्जा लोगा । तेसु चेव णाणासेडिसव्वपदेसा असंखेज्जगुणा । को गुण० ? असंखेज्जा लोगा । एवमप्पाबहुगपरूवणा गदा । अट्ठहि अभुयोगद्वारेहि तेवीस-वग्गणासु परूविदासु अब्भंतरवग्गणा समत्ता होदि ।

तत्थ इमाए बाहिरियाए वग्गणाए अण्णा परूवणा कायव्वा भवदि ॥ ११७ ॥

ओरालियादिपंचण्हं सरीराणं कथं बाहिरिया वग्गणा त्ति सण्णा । ण ताव इंदिय-गोइंदिएहि अगेज्झाणं पोग्गलाणं बाहिरसण्णा, परमाणुआदिवग्गणाणं पि तदविसेसेण बाहिरवग्गणत्तप्पसंगादो । ण ताव जीवपदेसेहि पुधभूदाणि त्ति पंचण्हं सरीराणं बाहिरववएसो, दुद्धोदयाणं व अण्णोण्णाणुगयाणं जीवसरीराणं अब्भंतर-बाहिरभावाणुववत्तीदो । अणंतानंतानं विस्सासुवचयपरमाणूणं मज्जे पंचण्हं सरीराणं परमाणू चेद्विदा त्ति ण तेसि बाहिरसण्णा, विस्सासुवचयवत्थं धाणमंतोद्विदाणं बाहिर-ववएसविरोहादो । तम्हा* बाहिरवग्गणववएसो ण वडद? एत्थ परिहारो उच्चदो । तं

संख्यातप्रदेशी वर्गणाओंका द्रव्य होता है । इसमें द्रव्यार्थताका भाग देने पर संख्यात अंक लब्ध आते हैं । इसलिए गुणकार संख्यात है यह सिद्ध होता है । असंख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें नाना-श्रेणि सब द्रव्य असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उन्हींमें नानाश्रेणि सब प्रदेश असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । इस प्रकार अल्पबहुत्व प्ररूपणा समाप्त हुई । तथा आठ अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर तेईस वर्ग-णाओंकी प्ररूपणा करने पर आभ्यन्तर वर्गणा समाप्त होती है ।

अब वहां इस बाह्य वर्गणाकी अन्य प्ररूपणा कर्तव्य है ॥ ११७ ॥

शंका—औदारिक आदि पांच शरीरोंकी बाह्य वर्गणा संज्ञा कैसे है ? इन्द्रिय और नोइन्द्रियसे अग्राह्य पुद्गलोंकी बाह्य संज्ञा तो हो नहीं सकती, क्योंकि, परमाणु आदि वर्गणाओंमें भी उनसे कोई विशेषता नहीं पाई जाती है, इसलिए उन्हें भी बाह्य वर्गणापनेका प्रसंग प्राप्त होता है । वे जीवप्रदेशोंसे पृथग्भूत हैं, इसलिए पांच शरीरोंकी बाह्य संज्ञा है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, दूध और जलके समान परस्परमें एक दूसरेमें प्रविष्ट हुए जीव और शरीरोंका आभ्यन्तरभाव और बाह्यभाव नहीं बन सकता है । अनन्तानन्त विस्त्रसोपचयरूप परमाणुओंके मध्यमे पांचो शरीरोंके परमाणु अवस्थित हैं इसलिए उनकी बाह्य संज्ञा है सो ऐमा कथन करना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, भीतर स्थित विस्त्रसोपचय स्कन्धोंकी बाह्य संज्ञा होनेमें विरोध आता है । इसलिए बाह्यवर्गणा यह संज्ञा नहीं बनती है ?

समाधान—यहां अब इस शंकाका परिहार करते हैं । यथा—पूर्वोक्त तेईस वर्गणाओंसे

आ०प्रती 'अण्णा परूवणा' इति पाठः । अ०प्रती 'जीवसरीराणमच्चंतर-' इति पाठः ।

* प्रति 'तम्हा' इति स्थाने 'तं जहा' इति पाठः ।

जहा-पुव्वुत्ततेवीसवर्गणाहिंतो पंचसरीराणि पुधभूदाणि त्ति तेसि बाहिरववएसो । तं जहा-ण ताव पंचसरीराणि अचित्तवर्गणासु णिवदंति, सचित्ताणमचित्तभाव-विरोहादो । ण च सचित्तवर्गणासु णिवदंति, विस्सासुवचएहि विणा पंचण्हं सरीराणं परमाणूणं चेव गहणादो । तम्हा पंचण्हं सरीराणं बाहिरवर्गणा त्ति सिद्धा सण्णा । तत्थ इमा परूवणा कायव्वा भवदि-

तत्थ इमाणि चत्तारि अणुयोगद्वाराणि णादव्वाणि भवन्ति-
सरीरिसरीरपरूवणा सरीरपरूवणा सरीरविस्सासुवचयपरूवणा
विस्सासुवचयपरूवणा चेदि ॥ ११८ ॥

सरीरी णाम जीवा । तेसि सरीराणं पत्तेयसाहारणभेयाणं परूवयत्तादो सरीरि-सरीराणं च पत्तेयसाहारणलक्खणाणं परूवणत्तादो वा सरीरिसरीरपरूवणा णाम । पंचण्हं सरीराणं पदेसपमाणं तेसि पदेसणिसेयक्कमं पदेसथोववहुत्तं च परूवेदि त्ति सरीरपरूवणा णाम । पंचण्हं सरीराणं विस्सासुवचयसंबंधकारणणिद्धलहुक्खगुणाण-मोरालिय ॐ-वेउव्विय-आहार-तेजा-कम्मइयपरमाणुविसयाणमविभागपडिच्छेदपरूवणा जत्थ कीरदि सा सरीरविस्सासुवचयपरूवणा णाम । तेसि ॐ चेव परमाणूणं जीवादो मुक्काणं ॥ विस्सासुवचयस्स परूवणा जत्थ कीरदि सा विस्सासुवचयपरूवणा णाम ।

पाँच शरीर पृथग्भूत हैं, इसलिए इनकी बाह्य संज्ञा है। यथा-पाँच शरीर अचित्त वर्गणाओंमें से सम्मिलित किये नहीं जा सकते, क्योंकि, सचित्तोंको अचित्त माननेमें विरोध आता है। उनका सचित्त वर्गणाओंमें भी अन्तर्भाव नहीं होता, क्योंकि, विस्त्रसोपचयोंके बिना पाँच शरीरोंके परमाणुओंका ही सचित्त वर्गणाओंमें ग्रहण किया है। इसलिए पाँचों शरीरोंकी बाह्य वर्गणा यह संज्ञा सिद्ध होती है। उसमें यह प्ररूपणा करने योग्य है-

वहां ये चार अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं-शरीरिशरीरप्ररूपणा, शरीरप्ररूपणा,
शरीरविस्त्रसोपचयप्ररूपणा और विस्त्रसोपचयप्ररूपणा ॥ ११८ ॥

शरीरी जीवोंको कहते हैं। उनके प्रत्येक और साधारण भेदवाले शरीरों का प्ररूपण करनेवाला होनेसे अथवा प्रत्येक और साधारण लक्षणवाले शरीरी और शरीरोंका प्ररूपण-करनेवाला होनेसे शरीरिशरीरप्ररूपणा संज्ञा है। पाँचों शरीरोंके प्रदेशोंके प्रमाणका, उनके प्रदेशोंके निषेक क्रमका और प्रदेशोंके अल्पबहुत्वका कथन करता है, इसलिए शरीरप्ररूपणा संज्ञा है। जिसमें औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, तेजस और कार्मण परमाणुओं को विषय करनेवाले पाँच शरीरोंके विस्त्रसोपचयके सम्बन्धके कारण स्निग्ध और रूक्षगुणोंके अविभागप्रतिच्छेदोंकी प्ररूपणा की जाती है उसकी शरीरविस्त्रसोपचयप्ररूपणा संज्ञा है। तथा जिसमें जीवसे मुक्त हुए उन्हीं परमाणुओंके विस्त्रसोपचयकी प्ररूपणा की जाती है उसकी विस्त्रसोपचयप्ररूपणा संज्ञा है।

ॐ म० प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु 'गुणियमोरालिय-' इति पाठः । ॐ म०प्रती 'तेसि चेव परमाणूणं' इत्यादि वाक्यं पुनरपि निबद्धमस्ति । ॐ म०प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु 'मुक्कमारणं' इति पाठः ।

एदेसि चदुण्हमणुयोगद्वाराणं कमेणेत्थ परूवणा कीरदे—

**सरीरिसरीरपरूवणदाए अत्थि जीवा पत्तेय—साधारण—
सरीरा ॥ ११९ ॥**

एक्कस्सेव जीवस्स जं सरीरं तं पत्तेयसरीरं । तं सरीरं जेसि जीवाणं अत्थि ते पत्तेयसरीरा णाम । बहूणं जीवाणं जमेणं सरीरं तं साहारणसरीरं णाम । तत्थ जे वसंति जीवा ते साहारणसरीरा । अथवा पत्तेयं पुधभूदं सरीरं जेसि ते पत्तेयसरीरा । साहारणं सामण्णं सरीरं जेसि जीवाणं ते साहारणसरीरा । एवं सरीराणि सरीरिणो च दुविहा ॐ चेव होति, तदियस्स अणुवलंभादो ।

**तत्थ जे ते साहारणसरीरा ते णियमा वणप्फदिकाइया ।
अवसेसा पत्तेयसरीरा ॥ १२० ॥**

साहारणसरीरा जीवा वणप्फदिकाइया चेवे त्ति वयणेण साहारणसरीरं वण-
प्फदिकाइएसु णियमिदं । वणप्फदिकाइया पुण अणियदा 'यत् एवकारकरणं ॐ
ततोऽन्यत्रावधारणमिति' वचनात् । तेण वणप्फदिकाइया पत्तेयसरीरा वि अत्थि त्ति
घेतव्वं । अवसेसा पुण जीवा पत्तेयसरीरा चेव ।

अब इन चार अनुयोगद्वारोंका क्रमसे यहां पर कथन करते हैं—

**शरीरिशरीरप्ररूपणाकी अपेक्षा जीव प्रत्येक शरीरवाले और साधारण शरीर-
वाले हैं ॥ ११९ ॥**

एक ही जीवका जो शरीर है उसकी प्रत्येकशरीर संज्ञा है । वह शरीर जिन जीवोंके है वे प्रत्येकशरीर जीव कहलाते हैं । बहुत जीवोंका जो एक शरीर है वह साधारणशरीर कहलाता है । उनमें जो जीव निवास करते हैं वे साधारणशरीर जीव कहलाते हैं । अथवा प्रत्येक अर्थात् पृथग्भूत शरीर जिन जीवोंका है वे प्रत्येकशरीर जीव हैं । तथा साधारण अर्थात् सामान्य शरीर जिन जीवोंका है वे साधारणशरीर जीव कहलाते हैं । इसप्रकार शरीर और शरीरी दो प्रकारके ही होते हैं, क्योंकि, तीसरा प्रकार उपलब्ध नहीं होता ।

**उनमेंसे जो साधारणशरीर जीव हैं वे नियमसे वनस्पतिकायिक होते हैं ।
अवशेष जीव प्रत्येकशरीर हैं ॥ १२० ॥**

साधारणशरीर जीव वनस्पतिकायिक हो होते हैं इस वचनसे साधारणशरीर वनस्पति-
कायिकोंमें नियमित किया गया है । परन्तु वनस्पतिकायिक अनियत हैं, क्योंकि, जहां एवकार
किया जाता है उससे अन्वत्र अवधारण होता है ऐसा वचन है, इसलिए वनस्पतिकायिक प्रत्येक
शरीर भी हैं ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए । परन्तु अवशेष जीव प्रत्येकशरीर ही हैं ।

तत्थ इमं* साहारणलक्खणं भणिदं ॥ १२१ ॥

किमटुं लक्खणपरूवणा कीरदे? ण, लक्खणभेदेण विणा सरीरिसरीराणं भेदो णत्थि त्ति तब्भेदपरूवणटुं तदुत्तीदो । पत्तेयसरीरस्स किण्ण लक्खणं भणिदं? ण, साहारणसरीरस्स लक्खणे कहिदे संते तव्विवरीयलक्खणं पत्तेयसरीरमिदि उवदेसेण विणा तल्लक्खणावगमादो* ।

साहारणमाहारो साहारणमाणपाणगहण च ।

साहारणजीवाणं साहारणलक्खणं भणिदं ॥ १२२ ॥

एदाए सुत्तगाहाए सरीरि-सरीराणंॐ दोण्हं पि लक्खणं परूविदं, एगलक्खणा-वगमेण इयरस्स वि लक्खणावगमादो । सरीरपाओगगपोगलक्खंधगहणमाहारो । सो साहारणं सामण्हं होदि । साहारणमिदि णवुंसयलिंगणिदेसो कथं कदो? किरिया-विसेसेण भावेण । एगजीवे आहारिदे सव्वजीवा आहारिदा त्ति भणिदं होदि, अण्णहा साहारणत्ताणुववत्तीदो, आणो उस्सासो, अवाणोॐ णिस्सासो । तेसिमाणावाणाणं

वहाँ साधारणका यह लक्षण कहा है ॥ १२१ ॥

शंका— लक्षणका कथन किसलिए किया जाता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, लक्षणके भेदके बिना शरीरी और शरीरोंका भेद नहीं हो सकता, इसलिए उनके भेदोंका कथन करनेके लिए लक्षणके भेदका कथन किया है ।

शंका— प्रत्येकशरीरका लक्षण क्यों नहीं कहा है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, साधारणशरीरका लक्षण कह देने पर उससे विपरीत लक्षणवाला प्रत्येकशरीर है इस प्रकार उपदेशके बिना उसके लक्षणका ज्ञान हो जाता है ।

साधारण आहार और साधारण उच्छ्वास-निःश्वासका ग्रहण यह साधारण जीवोंका साधारण लक्षण कहा गया है ॥ १२२ ॥

इस सूत्रगाथा द्वारा शरीरी और शरीर दोनोंका ही लक्षण कहा गया है, क्योंकि, एकके लक्षणका ज्ञान होने पर दूसरेके लक्षणका भी ज्ञान हो जाता है । शरीरके योग्य पुद्गलस्कन्धोंका ग्रहण करना आहार कहलाता है । वह साधारण अर्थात् सामान्य होता है ।

शंका— सूत्रगाथामें 'साहारण' इस प्रकार नपुंसकलिंगका निर्देश किसलिए किया है?

समाधान— क्रिया विशेषरूप भावके दिखलानेके लिए नपुंसकलिंगका निर्देश किया है । एक जीवके आहार करने पर सब जीवोंका आहार हो जाता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है, अन्यथा उसका साधारणपना नहीं बन सकता है ।

'आण' शब्दका अर्थ उच्छ्वास है और 'अवाण' शब्दका अर्थ निःश्वास है । उन आना-

* ता० प्रती तण्ण (त्व) इमं अ० प्रती 'तण्ण इमं' इति पाठः । * अ० प्रती 'तल्लक्खेणा वगमादो' इति पाठः । ॐ आ० प्रती 'सुत्तगाहाए सरीराणं' का० प्रती 'सुत्तगाहाए सरीरसरीराणं' इति पाठः । ॐ ता० का० प्रत्योः 'अवाणो' इति पाठः ।

ग्रहणमुयाणं सव्वजीवाणं साहारणं सामण्णं । केसि जीवाणं सामण्णं ति ॐ भणिदे साहारणजीवाणं । के साहारणजीवा ? एगसरीरणिवासिणो । अण्णसरीर-णिवासिणं अण्णसरीरट्टिएहि साहारणत्तं णत्थि, एगसरीरावासजणिदपच्चासत्तीए अभावादो । एदस्स भावत्थो— सव्वजहण्णेण पज्जत्तिकालेण जदि पुब्बुप्पण्णणिगो-दजीवा सरीरपज्जत्ति-इंदियपज्जत्ति-आहार-आणापाणपज्जत्तीहि पज्जत्तयदा होति । तम्हि सरीरे तेहि समुप्पण्णमंदजोगिणिगोदजीवा वि तेणेव कालेण एदाओ पज्जत्तीओ समार्षेति, अण्णहा आहारग्रहणादीणं* साहारणत्ताणुधवत्तीदो । जदि दीहकालेण पढममुप्पण्णजीवा चत्तारि पज्जत्तीओ समार्षेति तो तम्हि सरीरे पच्छा उप्पण्णजीवा तेणेव कालेण ताओ पज्जत्तीओ समार्षेति ति भणिदं होदि । कथमेणेण जीवेण ग्रहिदो आहारो तवकाले तत्थ अणंताणं जीवाणं जायदे? ण, तेणाहारेण जणिदसत्तीए पच्छा उप्पण्णजीवाणं उप्पण्णपढमसमए चेव उवलंभादो । जदि एवं तो आहारो साहारणो होदि आहारजणिदसत्ती साहारणे ति वत्तव्वं ? ण एस दोसो, कज्जे •कारणोवयारेण आहारजणिदसत्तीए वि आहारववएससिद्धोदो । सरीरिंदियपज्जत्तीणं साहारणत्तं पानका ग्रहण अर्थात् उपादान सब जीवोंके साधारण है अर्थात् सामान्य है । किन जीवोंके साधारण है ऐसा पूछनेपर गाथासूत्रमें 'साधारण जीवोंके' ऐसा कहा है ।

शंका— साधारण जीव कौन हैं ।

समाधान— एक शरीरमें निवास करनेवाले जीव साधारण हैं ।

अन्य शरीरोंमें निवास करनेवाले जीवोंके उससे भिन्न शरीरोंमें निवास करनेवाले जीवोंके साथ साधारणपना नहीं है, क्योंकि, उनमें एक शरीरके आवाससे उत्पन्न हुई प्रत्यासत्तिका अभाव है । इसका अभिप्राय यह है—सबसे जघन्य पर्याप्ति कालकेद्वारा यदि पहले उत्पन्न हुए निगोद जीव शरीरपर्याप्ति, इन्द्रियपर्याप्ति, आहारपर्याप्ति और उच्छ्वासनिःश्वासपर्याप्तिसे पर्याप्ति होते हैं तो उसी शरीरमें उनके साथ उत्पन्न हुए मन्द योगवाले निगोद जीवभी उसी कालके द्वारा इन पर्याप्तियोंको पूरा करते हैं, अन्यथा आहारग्रहण आदिका साधारणपना नहीं बन सकता है । यदि दीर्घकालकेद्वारा पहले उत्पन्न हुए जीव चारों पर्याप्तियोंको प्राप्त करते हैं तो उसी शरीरमें पीछेसे उत्पन्न हुए जीव उसी कालकेद्वारा उन पर्याप्तियोंको पूरा करते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका— एक जीवकेद्वारा ग्रहण किया गया आहार उस कालमें वहां अनन्त जीवोंका कैसे हो सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उस आहारसे उत्पन्न हुई शक्तिका बादमें उत्पन्न हुए जीवोंके उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें ही ग्रहण हो जाता है ।

शंका— यदि ऐसा है तो 'आहार साधारण है' इसके स्थानमें 'आहारजनित शक्ति साधारण है' ऐसा कहना चाहिए ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, कार्यमें कारणका उच्चार कर लेनेसे आहार-जनित शक्तिके भी आहार संज्ञा सिद्ध होता है ।

ॐ म०प्रतिपाठोऽयम् । ता०प्रतौ 'सामण्णेत्ति' अ०का०प्रत्योः 'सामण्णा ति' इति पाठः ।

* आ०प्रतौ 'अण्णहारग्रहणादीणं' इति पाठः ।

किष्ण पुरुविदं ? ण, आहाराणावाणणिद्वेसो देसामासियो त्ति तेसिं पि एत्थेव अंतब्भावादो । एवमेदं साहारणलक्खणं भणिदं । संपहि एदीए गाहाए भणिदत्थस्सेव दढीकरणट्टं उत्तरगाहा भणदि -

एयस्स अनुग्गहणं बहूण साहारणाणमेयस्स ।

एयस्स जं बहूणं समासदो तं पि होदि एयस्स ॥ १२३ ॥

एयस्स निगोदजीवस्स अनुग्गहणं पज्जत्तिणिप्पायणट्टं जं परमाणुपोग्गलग्गहणं निष्पण्णसरीरस्स जं परमाणुपोग्गलग्गहणं वा तं बहूणं साहारणाणं बहूणं साहारण-जीवाणं तत्र शरीरे तस्मिन् काले सतामसतां च भवति । कुदो ? तेणाहारेण जणिद-सत्तीए तत्थतणसव्वजीवेसु अवकमेणुवलंभादो, तेहि परमाणूहि निष्पण्णसरीरावयव-फलस्स सव्वजीवेसु उवलंभादो वा । जदि एगजीवम्हि जोगेणागदपरमाणुपोग्गला तस्सरीरमहिट्ठिदाणं अण्णजीवाणं चेव होंति तो तस्स जोगिल्लजीवस्स तमणुग्गहणं ण होदि, अण्णसंबंधित्तादो ॐ त्ति भणिदे परिहारं भणदि- एयस्स एदस्स वि जीवस्स जोगवंतस्स तमणुग्गहणं होदि । कुदो ? तत्फलस्स एत्थ वि उवलंभादो । कथमेगेण

शंका- शरीरपर्याप्ति और इन्द्रियपर्याप्ति ये सबसे साधारण हैं ऐसा क्यों नहीं कहा ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, गाथासूत्रमें 'आहार' और 'आनापान' पदका ग्रहण देशामर्षक है, इसलिये उनका भी इन्हींमें अन्तर्भाव हो जाता है ।

इस प्रकार यह साधारण लक्षण कहा है । अब इस गाथाद्वारा कहे गये अर्थ को ही दृढ़ करनेके लिए आगेकी गाथा कहते हैं-

एक जीवका जो अनुग्रहण अर्थात् उपकार है वह बहुत साधारण जीवोंका है और इसका भी है । तथा बहुत जीवोंका जो अनुग्रहण है वह मिलकर इस विवक्षित जीवका भी है ॥ १२३ ॥

एक निगोद जीवका अनुग्रहण अर्थात् पर्याप्तियोंको उत्पन्न करनेके लिए जो परमाणु पुद्गलोंका ग्रहण है या निष्पन्न हुए शरीरके जो परमाणु पुद्गलोंका ग्रहण है वह 'बहूण साहारणाण' अर्थात् उस शरीरमें उस कालमें रहनेवाले और नहीं रहनेवाले बहुत साधारण जीवोंका होता है, क्योंकि, उस आहारसे उत्पन्न हुई शक्ति वहाँके सब जीवोंमें युगपत् उपलब्ध होती है । अथवा उन परमाणुओंसे निष्पन्न हुए शरीरके अवयवोंका फल सब जीवोंमें उपलब्ध होता है ।

शंका- यदि एक जीवमें योगसे आये हुए परमाणु पुद्गल उस शरीरमें रहनेवाले अन्य जीवोंके ही होते हैं तो योगवाले उस जीवका वह अनुग्रहण नहीं हो सकता, क्योंकि, उसका सम्बन्ध अन्य जीवोंके साथ पाया जाता है ?

समाधान- अब इस शंकाका परिहार करते हैं- इस एक योगवाले जीवका भी वह अनुग्रहण होता है, क्योंकि, उसका फल इस जीव में भी उपलब्ध होता है ।

वि दत्ताणं पोग्गलाणं फलमण्णे भुजंति? ण एस दोसो, एक्केण वि दत्तधणधण्णाईणं अविहत्तधणभाउआणं धूउपिउपुत्तणत्तुअंताणं च भोत्तुभावदंसणादो । तत्थेव सरीरे गिवसंतजीवाणं जोगेणागदपरमाणुपोग्गला किमेदस्स अप्पिदजीवस्स होति आहो ण होति त्ति भणिदे भणदि- बहूणं जमणुग्गहणं तं समासदो पिडभावेण एयस्स एदस्स वि अप्पिदणिगोदजीवस्स होदि, एगसरीरावासिदअणंतजीवजोगेणागदपरमाणुपोग्गल- कलावजणिदसत्तीए एत्थ उवलंभादो । जदि एवं तो एदेसि बहूणं जीवाणं तमणुग्गहणं ण होदि, तप्फलस्स अण्णत्थ चेव एगमिह जीवे उवलंभादो त्ति भणिदे भणदि- 'एयस्स' एष एकशब्दोऽन्तर्भावितवीप्सार्थः, तेनैकैकस्यापि जीवस्य तदनुग्रहणं भवति, तेभ्योऽन्यजीवेषु शक्योत्पत्तिकाल एव स्वस्मिन्नपि तदुत्पत्तेः ।

समगं वक्कंताणं समगं तंसि सरीरणिप्पती ।

समगं च अणुग्रहणं समगं उत्सासणिस्सासो ॥ १२४ ॥

एकमिह सरीरे जे पढमं चेव उत्पण्णा* अणंता जीवा जे च पच्छा उत्पण्णाते सव्वे समगं वक्कंता णाम । कथं भिण्णकालुत्पण्णाणं जीवाणं समगत्तं जुज्जदे? ण,

शंका- एक जीवकेद्वारा दिये गये पुद्गलोंका फल अन्य जीव कैसे भोगते हैं ?

समाधान- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि एक के द्वारा भी दिये गये धन धान्यादिक को अविभक्त धनवाले भाई, लडकी, पिता, पुत्र और नाती तक के जीव भोगते हुए देखे जाते हैं ।

उसी शरीरमें निवास करनेवाले जीवोंके योगसे आये हुए परमाणुपुद्गल क्या एक विवक्षित जीवके होते हैं या नहीं होते हैं ऐसा पूछने पर कहते हैं- बहुत जीवोंका जो अनुग्रहण है वह मिल कर एक का अर्थात् विवक्षित निगोद जीवका भी होता है, क्योंकि एक शरीरमें निवास करनेवाले अनन्त जीवोंके योगसे आये हुए परमाणु पुद्गल कलापसे उत्पन्न हुई शक्ति इस जीव में पाई जाती है । यदि ऐसा है तो इन बहुत जीवोंका वह अनुग्रहण नहीं होता है, क्योंकि उसका फल अन्यत्र ही एक जीव में उपलब्ध होता है, ऐसा कहने पर कहते हैं- 'एयस्स' यह 'एक' शब्द अन्तर्गमित वीप्सरूप अर्थको लिए हुए है, इसलिये यह फलित हुआ कि एक एक जीव का भी वह अनुग्रहण है, क्योंकि, उन पुद्गलोंसे अन्य जीवों में शक्ति के उत्पन्न होनेके कालमें ही अपनेमें भी उसकी उत्पत्ति होती है ।

एक साथ उत्पन्न होनेवालोंके उनके शरीरकी निष्पत्ति एक साथ होती है, एक साथ अनुग्रहण होता है और एक साथ उच्छ्वास-निश्वास होता है ॥ १२४ ॥

एक शरीरमें जो पहले उत्पन्न हुए अनन्त जीव हैं और बादमें उत्पन्न हुए अनन्त जीव हैं वे सब एक साथ उत्पन्न हुए कहे जाते हैं ।

शंका- भिन्न कालमें उत्पन्न हुए जीवोंका एक साथपना कैसे बन सकता है ?

म० प्रतिपाठोऽयम् । प्रतीषु 'धणभाउवावाण' इति पाठः । अ० का० प्रत्योः धूउपिउ धत्तणत्तुवर्णताण इति पाठः । ता० प्रती 'तमणुग्गहं ण होदि' अ० का० प्रत्योः 'तमणुग्गहणं होदि' इति पाठः । ता० प्रती 'पढमं उत्पण्णा' का० प्रती 'पढमं चे उत्पण्णा' इति पाठः । आ० प्रती 'वक्कंताणाम्' का० प्रती 'वक्कंताण णाम' इति पाठः ।

एगसरीरसंबंधेण तेसिं सव्वेसिं पि समगतं पडि विरोहाभावादो । अथवा समए वक्कताणं ति सुत्तं वत्तव्वं । एक्कमिह समए एक्कसरीरे उप्पण्णसव्वजीवा समए वक्कताणाम् । एक्कमिह सरीरे पच्छा उप्पज्जमाणा जीवा अत्थि, कथं तेसिं पढमसमए चेव उप्पत्ती होदि ? ण, पढमसमए उप्पण्णाणं जीवाणमणुग्गहणफलस्स पच्छा उप्पण्ण-जीवेषु वि उवलंभादो । तम्हा एगणिगोदसरीरे उप्पज्जमानसव्वजीवाणं पढमसमए चेव उप्पत्ती एदेण णाएण जुज्जदे । एवं दोहि पयारेहि समगं वक्कताणं जीवाणं तेसिं सरीरणिप्पत्ती समगं अक्कमेण चेव होदि । समगं च अणुग्गहणं, समुणुग्गहणादो । जेण कारणेण सव्वेसिं जीवाणं परमाणुपोग्गलग्गहणं समगं अक्कमेण होदि तेण आहार-सरीरिदिग्गणिप्पत्ती उस्सासणिस्सासणिप्पत्ती च समगं अक्कमेण होदि, अण्णहा अणुग्गहणस्स साहारणत्तविरोहादो । एगसरीरे उप्पण्णाणंतजीवाणं चत्तारिपज्जत्तीयो अप्पप्पणो द्वाणे समगं समप्पंति । अणुग्गहणस्स साहारणभावादो ति भणिदं होदि ।

जत्थेउ मरइ जीवो तत्थ दु मरणं भवे अणताणं ।

वक्कमइ जत्थ एक्को वक्कमणं तत्थणंतानं ॥ १२५ ॥

समाधान-- नहीं, क्योंकि, एक शरीरके सम्बन्धसे उन जीवोंके भी एकसाथपना होनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

अथवा 'समए वक्कताणं' ऐसा सूत्र कहना चाहिये । एक समयमें एक शरीरमें उत्पन्न हुए सब जीव 'समए वक्कता' कहे जाते हैं ।

शंका-- एक शरीरमें बादमें उत्पन्न हुए जीव हैं ऐसी अवस्थामें उनकी प्रथम समयमेंही उत्पत्ति कैसे हो सकती है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, प्रथम समयमें उत्पन्न हुए जीवोंके अनुग्रहणका फल बादमें उत्पन्न हुए जीवोंमें भी उपलब्ध होता है, इसलिए एक निगोदशरीरमें उत्पन्न होनेवाले सब जीवोंकी प्रथम समयमें ही उत्पत्ति इस न्यायके अनुसार बन जाती है ।

इस प्रकार दोनों प्रकारोंसे एकसाथ उत्पन्न हुए जीवोंके उनके शरीरकी निष्पत्ति समगं अर्थात् अक्रमसे ही होती है । तथा एकसाथ अनुग्रहण होता है, क्योंकि, उनका अनुग्रहण समान है । जिस कारणसे सब जीवोंके परमाणु पुद्गलोंका ग्रहण समगं अर्थात् अक्रमसे होता है, इसलिये आहार, शरीर और इन्द्रियोंकी निष्पत्ति और उच्छ्वास-निःश्वासकी निष्पत्ति समगं अर्थात् अक्रमसे होती है । अन्यथा अनुग्रहणके साधारण होनेमें विरोध आता है । एक शरीरमें उत्पन्न हुए अनन्त जीवोंकी चार पर्याप्तियां अपने अपने स्थानमें एकसाथ समाप्त होती है, क्योंकि, अनुग्रहण साधारणरूप है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

जिस शरीरमें एक जीव मरता है वहाँ अनन्त जीवोंका मरण होता है । और जिस शरीरमें एक जीव उत्पन्न होता है वहाँ अनन्त जीवोंकी उत्पत्ति होती है ॥ २२५ ॥

जत्थ सरीरे एगो जीवो मरदि तत्थ अणंताणं चेव णिगोदजीवाणं मरणं होदि। अवहारणं कुदो लब्भदे ? दु सहस्स^७ अवहारणद्वस्स संबंधादो। संखेज्जा असंखेज्जा वा एक्को वा ण मरंति, णिच्छएण एगसरीरे णिगोदरासिणो अणंता चेव मरंति त्ति भणिदं होदि। जत्थ णिगोदसरीरे एगो जीवो वक्कमदि उप्पज्जदि तत्थ सरीरे अणंताणं चेव णिगोदजीवाणं वक्कमणं उप्पत्ती होदि। एगो वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा एक्कमिह णिगोदसरीरे एक्कमिह समए ण उप्पज्जंति किंतु अणंता चेव उप्पज्जंति त्ति भणिदं होदि। ते च एगबंधणवद्धा चेव होदूण उप्पज्जंति, अण्णहा पत्तेयसरीर-वग्गणाए बादरसुहुमणिगोदवग्गणाए वा आणंतिउप्पसंगादो। ण च एवं, तहाणुवलंभादो। बादरसुहुमणिगोदानमवट्ठाणक्कमपरूवणद्वमुत्तरसुत्तं भणदि-

बादरसुहुमणिगोदा बद्धा पुट्ठा य एयमेएण।

ते हु अणंता जीवा मूलयथूहल्लयादीहि ॥ १२६ ॥

एयसरीरद्विदबादरणिगोदा तत्थद्विदअण्णेहि बादरणिगोदेहि एगसरीरद्विदसुहुमणिगोदा अण्णेहि तत्थ द्विदसुहुमणिगोदेहि बद्धा समवेदा संता अच्छंति। सो च

जिस शरीरमें एक जीव मरता है वहां नियमसे अनन्त निगोद जीवोंका मरण होता है।

शंका— इस स्थलपर अवधारण कहाँसे प्राप्त होता है ?

समाधान— गाथा सूत्रमें आये हुए 'दु' शब्दका अवधारण रूप अर्थके साथ सम्बन्ध है।

संख्यात, असंख्यात या एक जीव नहीं मरते हैं, किन्तु निश्चयसे एक शरीरमें निगोद राशिके अनन्त जीव ही मरते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। तथा जिस निगोद शरीरमें एक जीव वक्कमदि अर्थात् उत्पन्न होता है उस शरीरमें नियमसे अनन्त निगोद जीवोंका 'वक्कमणं' अर्थात् उत्पत्ति होती है। एक, संख्यात और असंख्यात जीव एक निगोदशरीरमें एक समयमें नहीं उत्पन्न होते हैं किन्तु अनन्त जीव ही उत्पन्न होते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। वे एक बन्धनबद्ध होकर ही उत्पन्न होते हैं, अन्यथा प्रत्येक शरीरवर्गणा और बादर व सूक्ष्मनिगोद-वर्गणा अनन्त प्राप्त होनेका प्रसंग आता है। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, वैसी वे पाई नहीं जातीं। अब बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोदके अवस्थानके क्रमका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

बादरनिगोद जीव और सूक्ष्मनिगोद जीव ये परस्परमें बद्ध और स्पृष्ट होकर रहते हैं। तथा वे अनन्त जीव हैं जो मूली, धूवर और आर्द्रक आदिके निमित्तसे होते हैं ॥ १२६ ॥

एक शरीरमें स्थित बादर निगोद जीव वहां स्थित अन्य बादर निगोद जीवोंके साथ तथा एक शरीरमें स्थित सूक्ष्म निगोद जीव वहां स्थित अन्य सूक्ष्म निगोद जीवोंके साथ बद्ध अर्थात्

समवाओ देससव्वसमवायभेएण दुविहो । तत्थ देससमवायपडिसेहट्ठं भणदि-‘पुट्ठा य एयमेएण’ एक्कमेक्केण सव्वावयवेहि पुट्ठा संता चेव ते अच्छंति । णो अबद्धा णो अपुट्ठा च अच्छंति । अवहारणं कुदो लब्भदे ? अवहारणदुहुसदसंबंधादो । ते केत्ति ए त्ति भणिदे संखेज्जा असंखेज्जा वा ण होति किं तु ते जीवा अणंता चेव होति । केण* कारणेण होति त्ति भणिदे ‘मूलयथूहल्लयादीहि’ मूलयथूहल्लयादि-कारणेहि होति । एत्थ आदिसद्देण अण्णे वि वणप्फदिभेदा घेत्तव्वा । एदेण बादर-णिगोदाणं जोणी परुविदा ण सुहुमणिगोदाणं जलथलआगासेसु सव्वत्थ तेसि जोणि-दंसणादो । भावत्थो-मूलयथूहल्लयादीणं सरीराणि* बादरणिगोदाणं जोणी होति । तेण तेसि मूलयथूहल्लयादीणं पत्तेयसरीरजीवाणं बादरणिगोदपदिट्ठिदा त्ति सण्णा । वुत्तं च-

बीजे जोणीभूदे जीवो वक्कमइ सो व अण्णो वा ।

जे वि य मूलादीया ते पत्तेया पढमदाए ॥ १७ ॥

तेण तत्थ मूलयथूहल्लयादीणं मणुसादिसरीरेसु असंखेज्जलोगमेत्ताणि णिगोद-सरीराणि होति । तत्थ एक्केक्कमिह णिगोदसरीरे अणंताणंता बादरसुहुमणिगोदजीवा

समवेत होकर रहते हैं । वह समवाय देशसमवाय और सर्वसमवायके भेदसे दो प्रकारका है । उनमेंसे देशसमवायका प्रतिषेध करनेके लिए कहते हैं-‘पुट्ठा य एयमेएण’ परस्पर सब अवयवों से स्पष्ट होकर ही वे रहते हैं । अबद्ध और अस्पष्ट होकर वे नहीं रहते ।

शंका- अवधारण कैसे प्राप्त होता है ?

समाधान- अवधारणवाची हु शब्दके सम्बन्धसे प्राप्त होता है ।

वे कितने हैं ऐसा पूछने पर कहते हैं-वे संख्यात और असंख्यात नहीं होते हैं किन्तु वे जीव अनन्त ही होते हैं । वे किस कारणसे होते हैं ऐसा पूछने पर कहते हैं कि ‘मूलयथूहल्लयादीहि’ अर्थात् मूली, धूवर और आर्द्रक आदि कारणसे होते हैं । यहाँपर आये हुए ‘आदि’ शब्दसे वनस्पतिके अन्य भेद भी ग्रहण करने चाहिए । इसके द्वारा बादर निगोदोंकी योनि कही गई है, सूक्ष्म निगोदोंकी नहीं, क्योंकि, जल, थल और आकाशमें सर्वत्र उनकी योनि देखी जाती है । भावार्थ यह है-मूली, धूवर और आर्द्रक आदिके शरीर बादर निगोदोंकी योनि होते हैं, इसलिए मूली, धूवर और आर्द्रक आदिके प्रत्येकशरीर जीवोंकी बादरनिगोदप्रतिष्ठित संज्ञा है । कहा भी है--

योनिभूत बीजमें वही जीव उत्पन्न होता है या अन्य जीव उत्पन्न होता है । और जो मूली आदि हैं वे प्रथम अवस्थामें प्रत्येक हैं ॥ १७ ॥

इसलिए वहाँ मूली, धूवर और आर्द्रक आदिक तथा मनुष्यों आदिके शरीरोंमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीर होते हैं । वहाँ एक एक निगोदशरीरमें अनन्तानन्त बादर-

अंका प्रत्योः ‘अवहारणदुसदसंबंधादो’ इति पाठः । * ता० प्रती होति । ‘केण’ इति पाठः । ॐ ता० प्रती ‘भणिदे मूलयथूहल्लयादीहि कारणेहि’ इति पाठः । * ता० प्रती ‘-दीणं (णि) सरीराणि’ इति पाठः ।

पदमसमए उप्पज्जंति । तत्थ चेव विदियसमए असंखेज्जगुणहीणा उप्पज्जंति । एव-
मसंखेज्जगुणहीणाए सेडोए ताव निरंतरमुप्पज्जंति जाव आवलियाए असंखे०भागमेत्त-
कालो ति । पुणो एक्कदोतिणिणिसमए आदि कादूण जावुक्कस्सेण आवलियाए असंखे०-
भागमेत्तकालमंतरिदूण पुणो एगवेतिणिणिसमए आदि कादूण जावुक्कस्सेण आवलियाए
असंखे०भागमेत्तकालं निरंतरं उप्पज्जंति । एवं सांतरनिरंतरकमेण ताव उप्पज्जंति
जाव उप्पत्तीए संभवो अत्थि । एवमेदेण कमेणुप्पणवादरसुहुमणिगोदजीवा एक्कम्हि
सरोरे बद्धा पुट्ठा च होदूण अच्छति ति भणिदं होदि । जीवरासी आयवज्जिदो
सव्वओ तत्तो णिव्वुइमुवगच्छंतजीवाणमुवलंभादो । तदो संसारिजीवाणमभावी होदि
त्ति भणिदे ण होदि । अलद्धतसभावणिगोदजीवाणमणंताणं संभवो होदि ति जाणाव-
णदूणुत्तरसुत्तं भणदि-

अत्थि अणंता जीवा जेहि ण पत्तो तसाण परिणामो ।

भावकलंकअपउरा णिगोदवासं णं* मुंचंति ॥ १७२ ॥

जेहि अदीदकाले कदाचि वि तसपरिणामो ण पत्तो ते तारिसा अणंता जीवा
णियमा अस्थि, अण्णहा संसारे भव्वजीवाणभावावत्तीदो । ण चाभावो, तदभावे

निगोद जीव और सूक्ष्मनिगोद जीव प्रथम समयमें उत्पन्न होते हैं । वहीं पर द्वितीय समयमें
असंख्यातगुणे हीन उत्पन्न होते हैं । इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल व्यतीत
होने तक असंख्यातगुणे हीन श्रेणिरूपसे निरन्तर जीव उत्पन्न होते हैं । पुनः एक, दो और
तीन समयसे लेकर उत्कृष्ट रूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालका अन्तर देकर पुनः
एक, दो और तीन समयसे लेकर उत्कृष्टरूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक
निरन्तर जीव उत्पन्न होते हैं । इस प्रकार सान्तर-निरन्तरक्रमसे तब तक जीव उत्पन्न होते हैं
जब तक उत्पत्ति सम्भव है । इस प्रकार इस क्रमसे उत्पन्न हुए बादरनिगोद जीव और सूक्ष्म-
निगोद जीव एक शरीरमें बद्ध और स्पृष्ट हांकर रहने हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । जीव
राशि आयसे रहित है और व्ययसहित है, क्योंकि, उसमेंसे मोक्षको जानेवाले जीव उपलब्ध
होते हैं । इसलिये संसारी जीवोंका अभाव प्राप्त होता है ऐसा कहनेपर उत्तर देते हैं कि नहीं
होता है, क्योंकि, त्रसभावको नहीं प्राप्त हुए अनन्त निगोद जीव सम्भव हैं, अतः इस बातका
ज्ञान करानेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं -

**जिन्होंने अतीत कालमें त्रसभावको नहीं प्राप्त किया है ऐसे अनन्त जीव हैं,
क्योंकि वे भावकलंकप्रचुर होते हैं, इसलिए निगोदवासको नहीं त्यागते ॥ १२७ ॥**

जिन्होंने अतीत कालमें कदाचित् भी त्रसपरिणाम नहीं प्राप्त किया है वे वैसे अनन्त
जीव नियमसे हैं अन्यथा संसारमें भव्य जीवोंका अभाव प्राप्त होता है । और उनका अभाव है

❖ ता०प्रतो 'भावकलंकअ (ल) पउरा णिगोदजीवा (वास)ण' इति पाठः ।

अभव्वजीवाणं पि अभावावत्तीदो । ण च तं पि, संसारीणमभावापत्तीदो । ण चेदं पि, तदभावे असंसारीणं पि अभावप्पसंगादो । संसारीणमभावे संते कथं असंसारीण-मभावो ? बुच्चदे, तं जहा- संसारीणमभावे संते असंसारिणो वि णत्थि^१, सव्वस्स सपडिवक्खस्स उवलंभण्णहाणुववत्तीदो । तदो सिद्धं अदीदकाले अपत्ततसभावा अणंता जीवा अत्थि ति । एत्थ उवउज्जंती गाहा-

सत्ता सव्वपयत्था सविस्सरूवा अणंतपज्जाया ।

भंगुप्पायधुवत्ता सप्पडिवक्खा हवइ एक्का ॥१८॥

किमट्ठं ते तसपरिणामं^२ ण लहंति? 'भावकलंकसुपउरा' भावकलंकः संक्लेशः, तं लाति आदत्त इति भावकलंकलः^३ । एकेन्द्रियजातावुत्पत्तेहेतुरिति यावत् । तस्य प्राचुर्यात् एत्थतणजीवा णिगोदवासं ण मुंचंति ण छंडंति सि भणिदं होद ।

एगणिगोदसरीरे जीवा दव्वप्पमाणदो विट्ठा ।

सिद्धेहि अणंतगुणा सव्वेण वि तीदकालेण ॥१२८॥

नहीं, क्योंकि, उनका अभाव होनेपर अव्यय जीवोंका भी अभाव प्राप्त होता है । और वह भी नहीं है, क्योंकि, उनका अभाव होने पर संसारी जीवोंका भी अभाव प्राप्त होना है । और यह भी नहीं है, क्योंकि, संसारी जीवोंका अभाव होने पर असंसारी जीवोंके भी अभावका प्रसंग आता है ।

शंका- संसारी जीवोंका अभाव होनेपर असंसारी जीवोंका अभाव कैसे सम्भव है ?

समाधान- अब इस शंकाका समाधान करते हैं । यथा-संसारी जीवोंका अभाव होने पर असंसारी जीव भी नहीं हो सकते, क्योंकि सब सप्रतिपक्ष पदार्थोंकी उपलब्धि अन्यथा नहीं बन सकती ।

इसलिये सिद्ध होता है कि अतीत कालमें त्रसभावको नहीं प्राप्त हुए अनन्त जीव हैं । यहाँ पर उपयुक्त पडनेवाली गाथा कहते हैं-

सत्ता सब पदार्थोंमें स्थित है, सविस्वरूप है, अनन्त पर्याप्तवाली है, व्यय, उत्पाद और ध्रुवत्वसे युक्त है, सप्रतिपक्षरूप है और एक है ॥१८॥

वे त्रसपरिणामको क्यों नहीं प्राप्त करते हैं, इसके समाधानमें सूत्रगाथाके उत्तरार्धमें कहते हैं- 'भावकलंकसुपउरा' भावकलङ्क अर्थात् संक्लेश । उसे 'लाति' अर्थात् ग्रहण करता है वह भावकलंकल कहलाता है । एकेन्द्रियजातिमें उत्पत्तिका हेतु यह उक्त कथनका तात्पर्य है । उसकी प्रचुरता होनेसे यहाँके जीव निगोदवासको नहीं त्यागते हैं अर्थात् नहीं छोड़ते है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

एक निगोदशरीरमे द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा देखे गये जीव सब अतीत कालके द्वारा सिद्ध हुए जीवोंसे भी अनन्तगुणे हैं ॥१२८॥

^१ म०प्रतिपाठोऽयम् । ता०प्रती 'वि अ (ण) थि' अ०का०प्रत्योः 'वि अत्थि' इति पाठः । ^२ अ०प्रती 'तसपरिणामाणं' इति पाठः । ^३ ता०प्रती 'भावकलंकः (कलः) अ०का०प्रत्योः भावकलंकः' इति पाठः ।

संसारिजीवाणमवोच्छेदे एगं हेउ* परूविय विदियहेउपरूवणदुमेदं गाहासुत्त-
मागदं । एक्कमिह णिगोदसरीरे दव्वप्पमाणदो अणंता जीवा अत्थि त्ति णिदिट्ठा ।
जुत्तीए होंता वि०केत्तिया त्ति भणिदे अदीदकाले जे सिद्धा तेहिंतो अणंतगुणा एक्कमिह
णिगोदसरीरे होंति । का सा जुत्ती, जाए एगणिगोदसरीरे अणंता जीवा उवलद्धा ?
सव्वजीवरासीए आणंतियं । जासिं संखाणं आयविरहियाणं वये संते वोच्छेदो० होदि
ताओ संखाओ संखेज्जासंखेज्जसण्णिदाओ । जासिं संखाणं आयविरहियाणं संखेज्जा-
संखेज्जेहि वइज्जमाणाणं पि वोच्छेदो ण होदि तासिमणंतमिदि सणणा । सव्वजीवरासी
वाणंतो तेण सो ण वोच्छिज्जदि, अण्णहा आणंतियविरोहादो । ण च अद्धपोगल-
परियट्ठेण वियहिचारो, तस्स केवलणाणस्स अणंतसण्णिदस्स विसयभावेण अणंतत्त-
सिद्धोदो । ण च मेए माणसण्णा असिद्धा, पत्थेण मिदजवेसु वि पत्थसण्णुवलंभादो ।
सव्वेण अदीदकालेण जे सिद्धा तेहिंतो एगणिगोदसरीरजीवाणमणंतगुणत्तं कुदो णव्वदे ?
जुत्तीदो चेव । तं जहा— असखेज्जलोगमेत्तणिगोदसरीरेसु जदि सव्वजीवरासी लब्भदि
तो एगणिगोदसरीरमिह*किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाएओवट्ठिदाए एग-
णिगोदसरीरजीवाणं पमाणं सव्वजीवरासिस्स असंखे०भागमेत्तं होदि । सिद्धा पुण

ससारी जीवोंकी व्युच्छित्ति कभी नहीं होती इस विषयमें एक हेतुका कथन करके दूसरे
हेतुका कथन करनेके लिए यह गाथासूत्र आया है । एक निगोदशरीरमें द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा
अनन्त जीव है यह पहले दिखला आये है । युक्तिसे होते हुए भी वे कितने हैं ऐसा पूछनेपर
कहते हैं— अतीत कालमें जो सिद्ध हुए हैं उनसे एक निगोदशरीरमें अनन्तगुणे होते हैं ।

शंका— वह कौनसी युक्ति है जिससे एक निगोदशरीरमें अनन्त जीव उपलब्ध होते हैं ?

समाधान— सब जीव राशिका अनन्त होना यही युक्ति है ।

आयरहित जिन संख्याओंका व्यय होनेपर सत्त्वका विच्छेद होता है वे संख्याएँ संख्यात
और असंख्यात संज्ञावाली होती हैं । आयसे रहित जिन संख्याओंका संख्यात और असंख्यात-
रूपसे व्यय होनेपर भी विच्छेद नहीं होता है उनकी अनन्त संज्ञा है और सब जीवराशि अनन्त
है, इसलिए वह विच्छेदको नहीं प्राप्त होती । अन्यथा उसके अनन्त होनेमें विरोध आता है ।
अर्धपुद्गलपरिवर्तनके साथ व्यभिचार आता है यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, अनन्त संज्ञा-
वाले केवलज्ञानका विषय होनेसे उसकी अनन्तरूपसे सिद्धि है । मेयमें मानकी संज्ञा असिद्ध है
यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, प्रस्थसे मापे गये यवोंमें प्रस्थ संज्ञाकी उपलब्धि होती है ।

शंका— सब अतीत कालके द्वारा जो सिद्ध हुए हैं उनसे एक निगोदशरीरके जीव अनन्त-
गुणे हैं यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— युक्तिसेही जाना जाता है । यथा— असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीरोंमें
यदि सब जीवराशि उपलब्ध होती है तो एक निगोद शरीरमें कितनी प्राप्त होगी, इस प्रकार
फलराशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देनेपर एक निगोदशरीरके जीवोंका प्रमाण

* अ०का०प्रत्या. 'एगहेउ' इति पाठः । ॐ अ०का०प्रत्योः 'होतो वि' इति पाठः । ॐ ता०प्रती
'सं वोच्छेदो' इति पाठः । * ता०प्रती 'एकणिगोदजीवसरीरमिह' इति पाठः ।

अदीदकाले समयं पडि जदि वि असंखेज्जलोगमेत्ता सिज्झंति तो वि अदीदकालादो असंखेज्जगुणा चेव । ण च एवं, अदीदकालादो सिद्धाणमसंखे०भागत्तुवलंभादो । अदीदकालादो च सव्वजीवरासी अणंतगुणो कुदो ॐ णव्वदे ? सोलसवदियअप्पा-बहुगादो । तेण सिद्धं सिद्धेहितो एगणिगोदसरीरजीवाणमणंतगुणत्तं । तदो सव्वेण अदीदकालेण एगणिगोदसरीरजीवा वि ण सिज्झंति ति घेतव्वं । तत्थ णिगोदेसु जे द्विदा जीवा ते दुविहा-चउग्गइणिगोदा णिच्चणिगोदा चेदि । तत्थ चउग्गइणिगोदा णाम जे देव-णेरइय-तिरिक्ख-मणुस्सेसूप्पज्जियूण पुणो णिगोदेसु पविसिय अचछंति ते चउग्गइणिगोदा भणंति । तत्थ णिच्चणिगोदा णाम जे सव्वकालं णिगोदेसु चेव अचछंति ते णिच्चणिगोदा णाम । अदीदकाले तसत्तं पत्तजीवा सुट्ठु जदि बहुआ होंति तो अदीदकालादो असंखेज्जगुणं चेव । तं जहा- अंतोमुहुत्तकालेण जदि पदरस्स असंखे०भागमेत्तजीवा तसेसु उप्पज्जमाणा लब्धंति तो अदीदकालमिह केवडिए लभामो ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्ठिदाए अदीदकालादो असंखेज्जगुणो तसरासी ॐ होदि । तेण जाणिज्जदि अदीदकाले तसभावमपत्तजीवाणमत्थितं सिज्झंतेसु जीवेसु संसारिजीवाणं वोच्छेदो च णत्थि ति ।

सब जीवराशिके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है । परन्तु सिद्ध जीव अतीत कालके प्रत्येक समय में यदि असंख्यात लोकप्रमाण सिद्ध होवें तो भी अतीत कालसे असंख्यातगुण ही होंगे । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि सिद्ध जीव अतीत कालके असंख्यातवें भागप्रमाण ही उपलब्धि होते हैं ।

शंका- सब जीवराशि अतीत कालसे अनन्तगुणी है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान- सोलहपदिक अल्पबहुत्वसे जाना जाता है ।

इसलिये सिद्ध हुआ कि सिद्धोंसे एक निगोद शरीरके जीव अनन्तगुणे है । अतएव सभी अतीत कालकेद्वारा एक निगोदशरीरके जीव भी सिद्ध नहीं होते हैं यह ग्रहण करना चाहिए । उन निगोदोंमें जो जीव स्थित हैं वे दो प्रकारके हैं- चतुर्गतिनिगोद और नित्यनिगोद । उनमेंसे पहले चतुर्गतिनिगोद जीवोंका लक्षण कहते हैं- जो देव, नारकी, तिर्यच्च और मनुष्योंमें उत्पन्न होकर पुनः निगोदोंमें प्रवेश करके रहते हैं वे चतुर्गतिनिगोद जीव कहे जाते हैं । अब नित्य-निगोद जीवोंका लक्षण कहते हैं- जो सदा निगोदोंमेंही रहते हैं वे नित्यनिगोद जीव हैं । अतीत कालमें त्रसपनेको प्राप्त हुए जीव यदि बहुत अधिक होते हैं तो अतीत कालसे असंख्यातगुण ही होते हैं । यथा अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा यदि प्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण जीव त्रसोंमें उत्पन्न होते हुए पाये जाते हैं तो अतीत कालमें कितने प्राप्त होंगे, इस प्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देनेपर अतीत कालसे असंख्यातगुणी त्रसराशि होती है । इससे जाना जाता है कि अतीत कालमें त्रसभावको नहीं प्राप्त हुए जीवोंका अस्तित्व है और जीवोंके सिद्ध होनेपर भी संसारी जीवोंका विच्छेद वहीं होता ।

एदेण अट्ठपदेण तत्थ इमाणि अणुयोगद्वाराणि णादव्वाणि भवन्ति—संतपरूपणा दव्वपमाणाणुगमो खेत्ताणुगमो फोसणाणुगमो कालाणुगमो अंतराणुगमो भावाणुगमो अप्पाबहुगाणुगमो चेदि ॥ १२९ ॥

सरीरिसरीरपरूपणाए एदाणि अट्ठ अणुयोगद्वाराणि होंति । अणियोगद्वारेहि बिणा सरीरिसरीरपरूपणा किण्ण कीरदे ? ण, तेहि बिणा सुहेण अत्थावगमा-णुववत्तीदो ।

संतपरूपणदाए दुविहो णिद्देसो— ओघेण आदेसेण ॥ १३० ॥

एवं दुविहो चेव णिद्दे सो होदि, दव्वद्वियपज्जवद्वियभेदेण दुविहाणं चेव सोदा-राणमुवलंभादो । तत्थ दव्वद्वियजणाणुगहट्ठमोघेण पज्जवद्वियजणाणुगहट्ठमादेसेण परूपणा कीरदे । तत्थ संक्खित्तवयणकलावो ओघो णाम । असंक्खित्तवयणकलावो आदेसो ।

ओघेण अत्थ जीवा बिसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा असरीरा ॥ १३१ ॥

विग्रहगदीए वट्टमाणा जीवा चदुगदिया बिसरीरा णाम, तेसि तत्थ तेजा-कम्मइय-

इस अर्थपदके अनुसार यहां ये अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं— सत्परूपणा, द्रव्य-प्रमाणानुगम, क्षेत्रानुगम, स्पर्शनानुगम, कालानुगम, अन्तरानुगम, भावानुगम और अल्पबहुत्वानुगम ॥ १२९ ॥

शरीरिशरीरपरूपणाकी अपेक्षा ये आठ अनुयोगद्वार होते हैं ।

शंका— अनुयोगद्वारोंके बिना शरीरिशरीरपरूपणा क्यों नहीं की जाती है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, उनके बिना सुखपूर्वक अर्थका ज्ञान नही हो सकता है ।

सत्परूपणाकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है— ओघ और आदेश ॥ १३० ॥

इस प्रकार दो प्रकारका ही निर्देश है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिकके भेदसे श्रोता दो ही प्रकारके उपलब्ध होते हैं । उनमेंसे द्रव्यार्थिक जनोंका अनुग्रह करनेके लिए ओघसे और पर्यायार्थिक जनोंका अनुग्रह करनेके लिए आदेशसे प्ररूपणा करते हैं । उन दोनोंमेंसे संक्षिप्त वचन कलापका नाम ओघ है और असंक्षिप्त वचन कलापका नाम आदेश है ।

ओघसे दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले, चार शरीरवाले और शरीररहित जीव हैं ॥ १३१ ॥

विग्रहगतिमें विद्यमान चारों गतिके जीव दो शरीरवाले हैं, क्योंकि, उनके वहां तैजसशरीर

सरीराणं दोण्हं चेव उवलंभादो । तिण्णि सरीराणि जेंसि जीवाणं ते तिसरीरा णाम । के ते ? ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरेहि वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीरेहि वा वट्टमाणा । चत्तारि सरीराणि जेंसि ते चटुसरीरा । के ते ? ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीरेहि ओरालिय-आहार-तेजा-कम्मइयसरीरेहि वा वट्टमाणा । जेंसि सरीरं णत्थि ते असरीरा । के ते ? परिणिव्वा ।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगईए णेरइएसु अत्थि जीवा विसरीरा तिसरीरा ॥१३२॥

विग्रहगदीए णेरइया विसरीरा चेव होंति, तत्थ वेउव्वियसरीरस्स उदयाभावेण तेजा-कम्मइयसरीराणं दोण्हं चेव उदयदंसणादो । पुणो तिसरीरा होंति, तत्थ वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीराणं तिण्णं पि उदयदंसणादो ।

एवं सत्तसु पुढवीसु णेरइया ॥१३३॥

सत्तसु पुढवीसु जे णेरइया तेसि णिरओघभंगो । विसरीर-तिसरीरत्तणेण भेदाभावादो ।

तिरिख्खगदीए तिरिक्ख-पंचिदियतिरिक्ख-पंचिदियतिरिक्ख-पज्जत्त-पंचिदियतिरिक्खजोणिणीसु ओघं ॥१३४॥

और कर्मणशरीर ये दो ही शरीर उपलब्ध होते हैं । जिन जीवोंके तीन शरीर होते हैं वे तीन शरीरवाले जीव कहलाते हैं । वे कौन हैं ? औदारिकशरीर, तंजसशरीर और कर्मणशरीरके साथ अथवा वैक्रियिकशरीर, तंजसशरीर, और कर्मणशरीरके साथ विद्यमान जीव तीन शरीरवाले हैं । चार शरीर जिनके होते हैं वे चार शरीरवाले जीव हैं । वे कौन हैं ? औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर, तंजसशरीर और कर्मणशरीरके साथ अथवा औदारिकशरीर, आहारकशरीर, तंजसशरीर और कर्मणशरीरके साथ विद्यमान जीव चार शरीरवाले होते हैं । जिनके शरीर नहीं हैं वे अशरीरी जीव हैं । वे कौन हैं ? परिनिर्वृत्तिको प्राप्त हुए जीव अशरीरी होते हैं ।

आदेशसे गति मार्गणाके अणुवादसे नरकगतिकी अपेक्षा नारकियोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीव हैं ॥१३२॥

विग्रहगतिकी नारकी दो शरीरवाले होते हैं क्योंकि वहां पर वैक्रियिकशरीरका उदय नहीं होनेसे तंजसशरीर और कर्मणशरीर इन दो शरीरोंका ही उदय देखा जाता है । अनन्तर तीन शरीरवाले होते हैं, क्योंकि वहां वैक्रियिकशरीर, तेजसशरीर और कर्मणशरीर इन तीनों शरीरोंका ही उदय देखा जाता है ।

इसी प्रकार सातों पृथिवियोंमें नारकियोंके जानना चाहिए ॥१३३॥

सातों पृथिवियोंमें जो नारकी हैं उनमें सामान्य नारकियोंके समान भङ्ग है, क्योंकि दो शरीरपने और तीन शरीरपनेकी अपेक्षा उनसे इनमें कोई भेद नहीं है ।

तिर्यश्चगतिकी अपेक्षा तिर्यश्च पन्चेन्द्रियतिर्यश्च, पन्चेन्द्रियतिर्यश्चपर्याप्त और

मूलोघे असरीरा अत्थि, एत्थ ते णत्थि, तेण ओघत्तं ण जुज्जदे? असरीराण-
मभावस्स उवदेसेण विणा अवगम्ममाणत्तादो । अट्ठकम्मकवच्चादो णिग्गया असरीरा
णाम । असेसकम्ममुदयाविणाभावितिरिक्खगइणामकम्मोदइत्ता तिरिक्खा णाम ।
तेणुवदेसाभावे तिरिक्खेसु असरीराभावो सिद्धो त्ति ओघणिदेसो कदो ।

पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्ता अस्थि जीवा बिसरीरा तिसरीरा ॥ १३५ ॥

विगहगदीए बिसरीरा चेव, तत्थ ओरालियसरीरस्स उदयाभावादो, तेजा-
कम्मइयसरीराणं संसारे सव्वत्थ उदयवोच्छेदाभावादो । सरीरगहिदपढमसमयप्पहुडि
तिसरीरा चेव, तत्थ ओरालिय-तेजा-कम्मइयाणं उदयदंसणादो । च्चदुसरीरा पुण
णत्थि, सेसतिरिक्खाणं व विउव्वणसत्तीए अभावादो मणुस्सेसु व तिरिक्खेसु आहार-
सरीराभावादो च ।

मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु ओघं ॥ १३६ ॥

एत्थ असरीराणमभावो तिरिक्खेसु व परूवेदव्वो । सेसं सुगमं ।

पन्चेन्द्रियतिर्यञ्चयोनिनी जीवोंमें ओघके समान भंग है ॥ १३४ ॥

शंका— मूलोघमें अशरीरी जीव है ऐसा कहा है, परन्तु यहां पर वे नहीं हैं, इसलिए ओघपना नहीं बनता है ?

समाधान— यहां पर अशरीरी जीवोंका अभाव उपदेशके बिना अवगम्यमान है । आठ कर्मरूपी कवचसे निकले हुए जीव अशरीरी होते हैं और सप्त कर्मोंके उदयके अविनाभावी तिर्यञ्चगति नामकर्मके उदयसे युक्त जीव तिर्यञ्च कहलाते हैं, इसलिये उपदेशके बिना भी तिर्यञ्चोंमें अशरीरी जीवोंका अभाव सिद्ध होता है, इसलिए वे ओघके समान हैं ऐसा निर्देश किया है ।

पन्चेन्द्रियतिर्यञ्चअपर्याप्त जीव दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले होते हैं

॥ १३५ ॥

विग्रहगतिमें दो शरीरवाले ही होते हैं, क्योंकि वहां पर औदारिक शरीरका उदय नहीं होता तथा तैजसशरीर और कार्मणशरीरकी संसारमें सर्वत्र उदयव्युच्छित्ति नहीं है । ये शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयसे लेकर तीन शरीरवाले ही होते हैं, क्योंकि वहां पर औदारिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरका उदय देखा जाता है । परन्तु चार शरीरवाले नहीं होते, क्योंकि, शेष तिर्यञ्चोंमें जैसी विक्रिया करनेकी शक्ति है वैसी इनमें नहीं है । तथा मनुष्योंमें जैमे आहारकशरीर होता है वैसे तिर्यञ्चोंमें नहीं होता ।

मनुष्यगतिकी अपेक्षा सामान्य मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनियोंमें ओघके समान भंग है ॥ १३६ ॥

यहां अशरीरी जीवोंका अभाव तिर्यञ्चोंके समान कहना चाहिए । शेष कथन सुगम है ।

❖ ता०प्रती 'तिरिक्खेसु (व-) परूवेदव्वो' इति पाठः ।

मणुसअपज्जत्ता अत्थि जीवा विसरीरा तिसरीरा ॥१३७॥

एदस्स अत्थो सुगमो, तिरिक्खअपज्जत्तएसु परूविदत्तादो ।

देवगदीए देवा अत्थि जीवा विसरीरा तिसरीरा ॥१३८॥

विग्गहदीए विसरीरा, अण्णत्थ तिसरीरा । चदुसरीरा णत्थि, देवेसु ओरा-
लियआहारसरीराणमुदयाभावादो । मणुस्सेसु पंचसरीरा किण्ण परूविदा ? ण,
पत्तविउव्वणाणमिसीणं माहारलद्धीए अभावादो ।

एवं भवणवासियप्पहूडि जाव सव्वट्ठसिद्धियविमाण-
वासियदेवा ॥१३९॥

कुदो ? विसरीरत्तणेण तिसरीरत्तणेण च भेदाभावादो ।

इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरेइंदिया तेसिं पज्जत्ता पंचिदियं
पंचिदियपज्जत्ता ओघं ॥१४०॥

मनुष्यअपर्याप्त दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले होते हैं ॥१३७॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, क्योंकि तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंके कथनके समय इसका कथन कर
आये हैं ।

देवगतिकी अपेक्षा देव दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले होते हैं ॥१३८॥

विग्रहगतिकी दो शरीरवाले और अन्यत्र तीन शरीरवाले होते हैं । चार शरीरवाले नहीं
होते, क्योंकि देवोंमें औदारिकशरीर और आहारकशरीरका उदय नहीं होता ।

शंका— मनुष्योंमें पाँच शरीरवाले जीव क्यों नहीं कहे ?

समाधान— नहीं, क्योंकि वैक्रियिकऋद्धिको प्राप्त हुए ऋषियोंके आहारकलब्धिका
अभाव है ।

इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि विमानवासी तकके देवोंमें
जानना चाहिये ॥१३९॥

क्योंकि वहाँ दो शरीरपने और तीन शरीरपनेकी अपेक्षा भेद नहीं है ।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय और उनके पर्याप्त
जीवोंका भङ्ग तथा पञ्चेन्द्रिय और पञ्चेन्द्रियपर्याप्त जीवोंका भङ्ग ओघके समान
है ॥१४०॥

⊙ ता०प्रती 'पत्तविउव्वमिसीण--' इति पाठः । ✽ ता०प्रती पज्जत्ता (पज्जत्ता) 'पंचिदिय--'
अ०का०प्रत्योः 'पज्जत्तापज्जत्ता पंचिदिय--' इति पाठः ।

एत्थ असरीराणमभावो पुब्बं व वत्तव्वो । ओघम्मि आहारसरीरुदओ अत्थि, एत्थं तं णत्थि, तेण ओघत्तं ण जुज्जदे ? ण, ओरालियसरीरुदएण सह उदयमागच्छ-माणवेउव्वियसरीरोदयं पडुच्च एदेसि चदुसरीरत्तणिद्देसो । तत्थ दोहि पयारेहि चदुसरीरत्तं संभवदि, एत्थ ण संभवदि, तदो ओघेण सह अत्थि भेदो त्ति भणिदे ण, जेण केण वि पयारेण संभवमाणचदुसरीरत्तावेक्खाए भेदाभावादो ।

बादरएइंदियअपज्जता सुहुमेइंदिया तेसि पज्जता अपज्जता बीइंदिया तीइंदिया चउरिंदिया तस्सेव पज्जता अपज्जता पंचिंदिय-अपज्जता णेरइयभंगो ॥१४१॥

णेरइयाणं व बिसरीरा तिसरीरा अत्थि त्ति भणिदं होदि । चदुसरीरा णत्थि, एदेसु विउव्वणसरीराभावादो आहारसरीराभावादो च ।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया वणफदिकाइया णिगोदजीवा तेसि बादरा सुहुमा पज्जता अपज्जता बादरवफदिकाइय-पत्तेयसरीरा तेसि पज्जता अपज्जता बादरतेउक्काइयअपज्जता बादर-

यहां पर अशरीरी जीवोंका अभाव पहलेके समान कहना चाहिए ।

शंका— ओघमें आहारशरीरका उदय है और यहां वह नहीं है, इसलिए यहां ओघपना नहीं बनता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि औदारिकशरीरके उदयके साथ उदयको प्राप्त होनेवाले वैक्रियिकशरीरके उदयकी अपेक्षा इनके चार शरीरपनेका निर्देश किया है ।

शंका— वहां दोनों प्रकारसे चार शरीरपना सम्भव है पर यहां सम्भव नहीं है, इसलिए ओघसे यहां भेद है ही ?

समाधान— नहीं, क्योंकि जिस किसी भी प्रकारसे सम्भव चार शरीरपनेकी अपेक्षा भेद नहीं है, इसलिए यहां ओघपना बन जाता है ।

बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त, सूक्ष्म एकेन्द्रिय और उनके पर्याप्त व अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय तथा इन तीनोंके पर्याप्त व अपर्याप्त और पन्चेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंमें नारकियोंमें समान भग्न है ॥१४१॥

नारकियोंके समान दो शरीरवाले और तीनशरीरवाले होते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । चार शरीरवाले नहीं होते, क्योंकि इनमें विक्रिया करनेवाले शरीरका अभाव है और आहारकशरीरका अभाव है ।

कायमार्गणाके अनुवादसे पृथिवीकायिक, जलकायिक, वनस्पतिकायिक, निगोद जीव, उनके बादर और सूक्ष्म तथा पर्याप्त और अपर्याप्त, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर, उनके पर्याप्त और अपर्याप्त, बादर अग्निकायिक अपर्याप्त, बादर

**वाउक्काइयअपज्जत्ता सुहुमतेउकाइय-सुहुमवाउकाइयपज्जत्ता अप-
ज्जत्ता तसकाइयअपज्जत्ता अत्थि जीवा बिसरीरा तिसरीरा ॥१४२॥**

विग्रहगदीए बिसरीरा, अण्णत्थ तिसरीरा । कुदो ? एदेसु वेउव्विय-आहार-
सरीराणमभावादो ।

**तेउक्काइया वाउक्काइया बादरतेउक्काइया-बादरवाउक्काइया
तेसिं पज्जत्ता तसकाइया तसकाइयपज्जत्ता ओघं ॥ १४३ ॥**

एत्थ बिसरीर-तिसरीर-चदुसरीराणमुवलंभादो । कथमेदेसु चदुसरीरसंभवो ?
ण, एत्थ विउव्वमाणजीवाणमुवलंभादो ।

**जोगाणुवादेण पंचमणजोगी पंचवचिजोगी ओरालियकायजोगी
अत्थि जीवा तिसरीरा चदुसरीरा ॥१४४॥**

बिसरीरा णत्थि, विग्रहगईए मण-वचि-ओरालियकायजोगीणमभावादो ।
उत्तरसरीरं विउव्विदाणं कथमोरालियकायजोगो ? ण, उत्तरसरीरस्स विओरालिय-

वायुकायिक अपर्याप्त, सूक्ष्म अग्निकायिक और सूक्ष्म वायुकायिक तथा इनके पर्याप्त
और अपर्याप्त और त्रसकायिक अपर्याप्त जीव दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले
होते हैं ॥ १४२ ॥

विग्रहगतिमें दो शरीरवाले और अन्यत्र तीन शरीरवाले होते हैं, क्योंकि, इनमें
वैक्रियकशरीर और आहारकशरीरका अभाव है ।

अग्निकायिक, वायुकायिक, बादर अग्निकायिक, बादर वायुकायिक, उनके
पर्याप्त, त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त जीवोंमें ओघके समान भंग है ॥१४३॥

इन जीवोंमें दो शरीर, तीन शरीर और चार शरीर उपलब्ध होते हैं ।

शंका- इनमें चार शरीर कैसे सम्भव है ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, इनमें विक्रिया करनेवाले जीव पाये जाते हैं, इसलिए उस समय
चार शरीर सम्भव हैं ।

**योगमार्गणाके अनुवादसे पाँचों मनोयोगी, पाँचों वचनयोगी और औदारिक-
काययोगी जीव तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले होते हैं ॥ १४४ ॥**

इनमें दो शरीरवाले जीव नहीं होते, क्योंकि, विग्रहगतिमें मनोयोगी, वचनयोगी और
औदारिककाययोगी जीवोंका अभाव है ।

शंका- उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवाले जीवोंके औदारिककाययोग कैसे सम्भव है ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, उत्तर शरीर भी औदारिककाय है । यदि कहा जाय कि

❖ अ० प्रती 'तेउक्काइया बादरतेउक्काइया' इति पाठः ।

कायत्तादो । ण च ओरालियसरीरणामकम्मोदयजणिदस्स विक्किरियसरूवस्स ओरालियसरीरत्तं फिट्ठवि, विरोहादो ।

कायजोगी ओघं ॥१४५॥

कुदो ? तत्थ विग्गहगदीए विसरीराणं विउव्विदेसु उट्ठाविदआहारसरीरेसु ०
च चटुसरीराणमण्णत्थ तिसरीराणमुवलंभादो ।

**ओरालियमिस्सकायजोगि - वेउव्वियकायजोगि - वेउव्वियमिस्स-
कायजोगीसु अत्थि जीवा तिसरीरा ॥१४६॥**

एदेसु बिसरीरा णत्थि, विग्गहगदीए अभावादो । चटुसरीरा वि णत्थि
आहारसरीरस्स उदयाभावादो, अपज्जत्तकाले विउव्वणसत्तीए अभावादो च ।
विउव्वमाणदेव-णेरइएसु वि ण चत्तारि सरीराणि, ओरालियसरीरस्सेव वेउव्विय-
सरीरस्स विउव्वणाविउव्वणभेदेण दुविहभावानुवलंभादो । पारिसेसेण तिसरीरा चेव ।

औदारिकशरीर नामकर्मके उदयसे पैदा हुए विक्रियास्वरूप शरीरका औदारिकपना नहीं रहता
सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि ऐसा होनेमें विरोध आता है ।

विशेषार्थ— मनोयोगी और वचनयोगी जीवोंमें औदारिक, वैक्रियिक, तेजस और कर्मण
अथवा औदारिक, अहारक, तैजस और कर्मण इस तरह दो प्रकार से चार शरीर संभव हैं
किन्तु औदारिककाययोगी जीवोंमें औदारिक, वैक्रियिक, तैजस और कर्मण ये चार शरीर ही
संभव हैं, क्योंकि आहारकशरीरके समय औदारिककाययोग नहीं होता, किन्तु मनोयोग व
वचनयोग संभव है ।

काययोगी जीवोंका भंग ओघके समान है ॥१४५॥

क्योंकि वहां विग्रहगतिमें दो शरीर, विक्रिया करनेपर और आहारकशरीरके उत्पन्न
करने पर चार शरीर तथा अन्यत्र तीन शरीर उपलब्ध होते हैं ।

**औदारिकमिश्रकाययोगी, वैक्रियिककाययोगी और वैक्रियिकमिश्रकाययोगी
जीवोंमें तीन शरीरवाले जीव होते हैं ॥१४६॥**

इनमें दो शरीर नहीं होते, क्योंकि विग्रहगतिका अभाव है । चार शरीर भी नहीं होते,
क्योंकि आहारकशरीरका उदय नहीं है तथा अपर्याप्त कालमें विक्रिया करनेकी शक्तिका
अभाव है । विक्रिया करनेवाले देव और नारकियोंमें भी चार शरीर नहीं होते, क्योंकि जिस
प्रकार औदारिकशरीरका विक्रिया और अविक्रियाके भेदसे द्विविधदना उपलब्ध होता है उस
प्रकार वैक्रियिक शरीरका विक्रिया और अविक्रियाके भेदसे द्विविधपना नहीं होता । पारिशेव-
न्याय से ये तीन शरीरवाले ही होते हैं ।

**आहारकायजोगी आहारमिस्सकायजोगी अत्थि जीवा चदु-
सरीरा ॥ १४७ ॥**

तत्थ बिसरीरा णत्थि, विग्गहगदीए अभावादो । ण तिसरीरा वि, ओरालिय-
आहार-तेजा-कम्मइयाणं चदुण्हं सरीराणं तत्थुवलंभादो । ण च ओरालियसरीरस्स
उदओ णत्थि त्ति तत्थाभावो वोत्तुं सक्किज्जदे, तत्थ तदुदयसत्तीए संभवादो ।

कम्मइयकायजोगी णेरइयाणं भंगो ॥ १४८ ॥

होदु णाम एदेसि बिसरीरत्तं, विग्गहगदीए तेजा-कम्मइयसरीराणमुदयदंसणादो,
कथं पुण तिसरीरत्तं ? ण, पदर-लोगपूरणाणं गदकेवलिम्हि तेजा-कम्मइयएहि सह
ओरालियसरीरस्स उवलंभादो ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदा पुरिसवेदा णवुंसयवेदा ओघं ॥ १४९ ॥

तत्थ बिसरीर-तिसरीर-चदुसरीराणमुवलंभादो । इत्थि-णवुंसयवेदेसु आहार-

**आहारक काययोगी और आहारक मिश्रकाययोगी जीव चार शरीरवाले
होते हैं ॥ १४७ ॥**

इन में दो शरीरवाले नहीं होते, क्योंकि, यहाँ विग्रहगतिका अभाव है । तीन शरीरवाले भी
नहीं होते, क्योंकि, आदारिकशरीर, आहारकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीर ये चार
शरीर इनमें पाये जाते हैं । यदि कहा जाय कि आदारिकशरीरका उदय नहीं होता, इसलिए
वहाँ इसका अभाव कहना शक्य है सो ऐसा कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, वहाँ उसके उदय
होने की शक्ति सम्भव है ।

विशेषार्थ— जिस समय प्रमत्तसंयत जीव आहारक शरीरका प्रारम्भ करता है उस समय
से लेकर आहारक शरीरकी क्रिया समाप्त होनेतक उसके आदारिकशरीर नामकर्मका उदय
नहीं होता, इसलिए वहाँ आदारिकशरीर का अभाव नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि, एक तो
उसके आदारिकशरीरके पुनः उदय होनेकी शक्ति विद्यमान है । दूसरे उसके आदारिकशरीरके
उदय का फल आदारिकशरीर पूर्ववत् विद्यमान रहता है, इसलिए आहारककाययोगी और
आहारकमिश्रकाययोगी जीव के चार शरीर कहे हैं ।

कार्मणकाययोगी जीवोंमें नारकियोंके समान भंग है ॥ १४८ ॥

शंका— इनके दो शरीर होंगे, क्योंकि, विग्रहगति में तैजसशरीर और कार्मणशरीरका
उदय देखा जाता है । तीन शरीर कैसे हो सकते हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, प्रतर और लोकपूरण समुद्घातको प्राप्त हुए केवली जिनके
तैजसशरीर और कार्मणशरीर के साथ आदारिकशरीर भी उपलब्ध होता है ।

**वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी और नपुंसकवेदी जीवोंमें ओघके
समान भंग है ॥ १४९ ॥**

क्योंकि, इन जीवोंमें दो शरीर, तीन शरीर और चार शरीर उपलब्ध होते हैं ।

सरीरुदयाभावादो णत्थि चदुसरीरत्तं ? ण, तत्थ वि विउव्विदुत्तरसरीरेसु चदुसरीर-
त्तुवलंभादो ।

कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभ-
कसाई ओघं ॥१५०॥

सुगममेदं, बिसरीर-तिसरीराणं दोपयारेहि चदुसरीराणं च उवलंभादो ।

अवगदवेदा अकसाई अत्थि जीवा तिसरीरा ॥१५१॥

काणि तिण्णि सरीराणि ? ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणि । बिसरीरा
णत्थि, तत्थ अपज्जत्तकालाभावादो । चदुसरीरा वि णत्थि, विउव्वणाहारसरीरुद्धा-
वणवावाराणं तत्थाभावादो ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणी सुदअण्णाणी ओघं ॥१५२॥

कथमेत्थ असरीरत्तं, ण आहारत्तं, ण चदुसरीरत्तं ? ण विउव्वणमस्सिदूण
तदुवलंभादो ।

शंका— स्त्रीवेदी और नपुंसकवेदी जीवोंमें आहारकशरीरका उदय नहीं होनेसे चार
शरीर नहीं होते ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, उनमें भी उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेपर चार शरीर उप-
लब्ध होते हैं ।

कषायमार्गणाके अनुवादसे क्रोधकषायवाले, मानकषायवाले, मायाकषायवाले
और लोभकषायवाले जीवोंमें ओघके समान भंग है ॥१५०॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और दो प्रकारसे चार
शरीरवाले जीव यहाँ उपलब्ध होते हैं ।

अपगतवेदी और अकषायवाले जीव तीन शरीरवाले होते हैं ॥१५१॥

शंका— तीन शरीर कौन हैं ?

समाधान— औदारिक, तैजस और कार्मण ये तीन शरीर हैं ।

दो शरीरवाले जीव नहीं होते, क्योंकि, इनमें अपर्याप्त कालका अभाव है । चार शरीरवाले भी
नहीं होते, क्योंकि, विक्रियारूप और आहारकशरीरके उपस्थापनरूप व्यापारका वहाँ अभाव है ।

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे मत्तज्ज्ञानी और श्रुतज्ञानी जीवोंमें ओघके समान
भंग है ॥१५२॥

शंका— यहाँ अशरीरपना कैसे सम्भव है, आहारकशरीरपना भी नहीं है और चार शरीर-
पना भी नहीं है, इसलिए ओघके समान भंग कैसे हो सकता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, विक्रियाका आश्रय लेकर चार शरीरपनेकी उपलब्धि हो जाती है ।

विभंगणाणी मणपज्जवणाणी अत्थि जीवा तिसरीरा चदुसरीरा

॥ १५३॥

मणपज्जवणाणीसु आहारसरीरस्स उदयाभावादो णत्थि चदुसरीरत्तं ? ण, विउव्वणमस्सिदूण दोसु णाणेसु चदुसरीरत्तुवलंभादो । णत्थि तिसरीरा, अपज्जत्त-काले एदेसि णाणाणमभावादो ।

आभिणी-सुद-ओहिणाणी ओघं । १५४॥

विसरीर-तिसरीर-चदुसरीरभावेण तत्तो भेदाभावादो ।

केवलणाणी अत्थि जीवा तिसरीरा ॥ १५५ ॥

सुगमं ।

संजमाणुवादेण संजदा सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा

संजदासंजदा अत्थि जीवा तिसरीरा चदुसरीरा ॥ १५६॥

विसरीरा णत्थि विग्गहगदीए अणुव्वय-महव्वयाणमभावादो ।

परिहारविसुद्धिसंजदा सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा जहाक्खाद-

विहारसुद्धिसंजदा अत्थि जीवा तिसरीरा ॥ १५७॥

विभग्नज्ञानी और मनःपर्ययज्ञानी जीव तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले होते हैं ॥ १५३॥

शंका— मनःपर्ययज्ञानवाले जीवोंमें आहारकशरीरका उदय नहीं होनेसे चार शरीरपना नहीं बनता ?

समाधान— नहीं, क्योंकि विक्रियाका आश्रय लेकर उक्त दो ज्ञानोंमें चार शरीरपनेकी उपलब्धि होती है ।

मात्र इनमें दो शरीरवाले जीव नहीं है, क्योंकि अपर्याप्त कालमें इन ज्ञानोंका अभाव है ।

आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें ओघके समान भंग है ॥ १५४॥

क्योंकि दो शरीर, तीन शरीर और चार शरीरपनेकी अपेक्षा ओघसे इनमें कोई भेद नहीं है ।

केवलज्ञानी जीव तीन शरीरवाले होते हैं ॥ १५५॥

यह सूत्र सुगम है ।

संयम मार्गणाके अनुवादसे संयत, सामायिकशुद्धिसंयत, छेदोपस्थापनाशुद्धि-संयत और संयतासंयत जीव तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले होते हैं ॥ १५६॥

दो शरीरवाले नहीं होते, क्योंकि विग्रहगतिमें अणुव्रतों और महाव्रतों का अभाव है ।

परिहारशुद्धिसंयत, सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयत, और यथाख्यातविहारशुद्धि-संयत जीव तीन शरीरवाले होते हैं ॥ १५७॥

परिहारसुद्धिसंजदेषु कुदो णत्थि चदुसरीरा? परिहारसुद्धिसंजदस्स विउव्वण-
रिद्धीए आहाररिद्धीए च सह विरोहादो । सेसं सुगमं ।

असंजदा ओघं ॥ १५८ ॥

सुगमं ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी ओहिदंसणी
ओघं ॥ १५९ ॥

सुगमं ।

केवलदंसणी अत्थि जीवा तिसरीरा ॥ १६० ॥

सुगमं ।

लेस्साणुवादेण किणण-णील-काउलेस्सिया तेउ-पम्म-सुक्क-
लेस्सिया ओघं ॥ १६१ ॥

सुगमं ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिया अभवसिद्धिया ओघं ॥ १६२ ॥

सुगमं ।

शंका— परिहारसुद्धिसंयत जीवोंमें चार शरीरवाले क्यों नहीं होते ?

समाधान— परिहारसुद्धिसंयत जीवके विक्रियाकृद्धि और आहारककृद्धिके साथ इस संयमके होनेका विरोध है ।

शेष कथन सुगम है ।

असंयत जीवोंमें ओघके समान भंग है ॥ १५८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनी, अचक्षुदर्शनी और अवधिदर्शनी जीवोंमें
ओघके समान भंग है ॥ १५९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

केवलदर्शनवाले जीव तीन शरीरवाले होते हैं ॥ १६० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले, कापोतलेश्या-
वाले, पीतलेश्यावाले, पद्मलेश्यावाले और शुक्ललेश्यावाले जीवोंमें ओघके समान
भंग है ॥ १६१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्य अभव्य जीवोंमें ओघके समान भंग है ॥ १६२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

समत्ताणुवादेण समाइट्ठी खइयसम्माइट्ठी वेदगसम्माइट्ठी
उवसमसम्माइट्ठी सासणसम्माइट्ठी मिच्छाइट्ठी ओघं ॥१६३॥

विसरीर-तिसरीर-चदुसरीरत्तणेण भेदाभावादो ।

सम्मामिच्छाइट्ठीणं मणजोगिभंगो ॥१६४॥

अपज्जत्तकाले सम्मामिच्छत्ताभावादो ।

सणिणयाणुवादेण सणणी असणणी ओघं ॥१६५॥

सुगमं ।

आहाराणुवादेण आहारामणजोगिभंगो ॥१६६॥

सुगमं ।

अणाहारा कम्मइयभंगो ॥१६७॥

एदं पि सुगमं ।

एवं संतपरूवणा समत्ता ।

एदमणियोगहारं सेसछणमणियोगहारणं जेण आसेयं तेण अस्सिमेत्थ परूवणा

सम्यक्त्व मार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टि, क्षायिकसम्यग्दृष्टि, वेदकसम्यग्दृष्टि
उपशमसम्यग्दृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीवोंमें ओघके समान
भग्न है ॥१६३॥

क्योंकि दो शरीर, तीन शरीर और चार शरीरपनेकी अपेक्षा ओघसे इनमें कोई भेद
नहीं है ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंमें मनोयोगी जीवोंके समान भग्न है ॥१६४॥

क्योंकि अपर्याप्त कालमें सम्यग्मिथ्यात्वका अभाव है ।

संज्ञीमार्गणाके अनुवादसे संज्ञी असंज्ञी जीवोंमें ओघके समान भग्न है ॥१६५॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहार मार्गणाके अनुवादसे आहारक जीवोंमें मनोयोगी जीवोंके समान
भंग है ॥१६६॥

यह सूत्र सुगम है ।

अनाहारक जीवोंमें कार्मणकाययोगी जीवोंके समान भंग है ॥१६७॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

इस प्रकार सत्परूपणा समाप्त हुई ।

यतः यह अनुयोगद्वार शेष छह अनुयोगद्वारोंका आश्रय है, इसलिए उनकी यहां पर

अ० प्रतिपाठोऽयम् । ता० प्रती 'असेयं (आसियं) तेण' अ० प्रती 'आसियं तेण' इति पाठः ।

कायव्वा । तं जहा— दव्वपमाणाणुगमेण दुविहो णिदेसो— ओघेण आदेसेण य । ओघेण बिसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? अणंता । चटुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? असंखेज्जा, पदरस्स असंखे०भागो, असंखेज्जाओ सेडीओ, तासि सेडीणं विक्खंभसूची पलिदो० असंखे०भागमेत्तघणंगुलाणि ।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइयेसु बिसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? पदरस्स असंखे०भागो । एवं सत्तसु पुढवीसु । णवरि बिदियादि जाव सत्तमि त्ति सेडीए असंखे०भागो वत्तव्वो ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु ओघं । पंचिदियतिरिक्ख-पंचिदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिदियतिरिक्खजोणिणीसु बिसरीरा तिसरीरा चटुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा, पदरस्स असंखे०भागो । पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्त-मणुसअपज्जत्त-बीइंदिय तीइंदिय-चउरिंदियाणं तेसि पज्जत्त-अपज्जत्ताणं पंचिदियअपज्जत्त-पुढवि०आउ०बादर पुढवि०-सुहुमपुढवि०-बादर-सुहुमआउ०-पुढवि०आउ०बादर-सुहुम-पज्जत्तअपज्जत्ताणं

प्ररूपणा करनी चाहिए । यथा—द्रव्यप्रमाणानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है— ओघ और आदेश । ओघसे दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं । चार शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं अर्थात् प्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण या असंख्यात जगश्रेणिप्रमाण हैं । उन जगश्रेणियोंकी विक्कंभसूची पत्थके असंख्यातवें भागमात्र घनांगुलप्रमाण है ।

विशेषार्थ— कार्मणकाययोगी जीवोंका प्रमाण अनन्त होनेसे यहाँ दो शरीरवाले जीव अनन्त कहे हैं । तीन शरीरवाले जीव अनन्त हैं यह तो स्पष्ट ही है । रह गये चार शरीरवाले जीव सो पर्याप्त अग्निकायिक और वायुकायिक तथा पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमेंही चार शरीरवाले जीव सम्भव हैं, अतः इनका प्रमाण असंख्यात कहा है । यहा असंख्यातसे क्या लेना चाहिए इस बातका खूलासा क्षत्रकी अपेक्षा किया है ।

आदेशसे गतिमार्गणाके अनुवादसे नरकगतिकी अपेक्षा तारकियोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । इसी प्रकार सातों पृथिवियोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि दूसरीसे लेकर सातवीं पृथिवियोंमें जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण कहने चाहिए ।

तिर्यचगतिकी अपेक्षा तिर्यचोंमें ओघके समान भंग हैं । पंचेन्द्रियतिर्यच, पंचेन्द्रियतिर्यच पर्याप्त और पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिनी जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं अर्थात् जगप्रतरके असंख्यातवें भाग—प्रमाण हैं । पंचेन्द्रियतिर्यचअपर्याप्त, मनुष्य अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय तथा इन तीनोंके पर्याप्त और अपर्याप्त, पंचेन्द्रिय अपर्याप्त, पृथिवीकायिक, जलकायिक, बादर पृथिवीकायिक, सूक्ष्म पृथिवीकायिक, बादर जलकायिक, सूक्ष्म जलकायिक, पृथिवीकायिक बादर पर्याप्त व अपर्याप्त, पृथिवीकायिक सूक्ष्म पर्याप्त व अपर्याप्त, जलकायिक बादर पर्याप्त व अपर्याप्त, जलकायिक सूक्ष्म पर्याप्त व अपर्याप्त, बादर अग्निकायिक अपर्याप्त, बादर वायुकायिक अपर्याप्त, सूक्ष्म अग्निकायिक

बादरतेउ० बादरवाउ० अपज्जत्ताणं सुहुमतेउ० सुहुमवाउ० पज्जत्त-अपज्जत्ताणं बादर-
वणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्त-अपज्जत्ताणं विसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण
केवडिया? असंखेज्जा । (तेउ०-वाउ०-) बादरतेउ०-बादरवाउ० तेसि पज्जत्ताणं
विसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? असंखेज्जा ।

मणुसगदीए मणुस्सेसु विसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? असंखेज्जा,
सेडीए असंखे० भागो चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? संखेज्जा । मणुसपज्जत्त-
मणुसिणीसु विसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? संखेज्जा ।

देवगदीए देवेषु जाव सहस्सारे त्ति ताव णेरइयभंगो । आणद-पाणदप्पहुडि
जाव अवराइदविमाणवासियदेवेषु त्ति विसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा ।
तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।
सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवेषु विसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? संखेज्जा ।

इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरेइंदियपज्जत्ता विसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण
केवडिया? अणंता । चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? असंखेज्जा, पल्लिदो० असंखे०-

व उनके पर्याप्त और अपर्याप्त, सूक्ष्म वायुकायिक व उनके पर्याप्त और अपर्याप्त, बादर वन-
स्पतिकायिक प्रत्येकशरीर व उनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन
शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाण की अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं। अग्निकायिक, वायुकायिक, बादर
अग्निकायिक और बादर वायुकायिक तथा इन दोनोंके पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन
शरीरवाले और चार शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाण की अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं ।

मनुष्यगतिकी अपेक्षा मनुष्योंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी
अपेक्षा कितने हैं । असंख्यात हैं जो जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । चार शरीरवाले
द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं । मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनियोंमें दो शरीरवाले,
तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले द्रव्यप्रमाण की अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं ।

देवगतिकी अपेक्षा सामान्य देवोंसे लेकर सहस्त्रार कल्प तकके देवोंमें नारकियोंके समान
भंग है । आनन्त-प्रागत कल्पसे लेकर अपराजित विमानवासी देवों तक दो शरीरवाले द्रव्यप्रमाण
की अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं । तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं । असंख्यात
हैं जो पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । सर्वार्थसिद्धिविमानवासी देवोंमें दो शरीरवाले और
तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ।

विशेषार्थ— यहाँ सहस्त्रारकल्प तकके देवों का भंग नारकियोंके समान कहा है सो यह
सामान्य कथन है । विशेषरूपसे सौधर्म ऐशान कल्पतकके देव जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण
हैं और सानत्कुमारसे लेकर सहस्त्रार कल्प तकके देव जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण जानने
चाहिए । शेष कथन स्पष्ट ही है ।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय व बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त दो
शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? अनन्त हैं । चार शरीरवाले

भागो । बादरेइंदियअपज्जत्त-सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्ता विसरीरा तिसरीरा दव्व-
पमाणेण केवडिया ? अणंता । वणप्फदिकाइया णिगोदजीवा बादरा सुहुमा तेसि
पज्जत्तापज्जत्ता विसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? अणंता । पंचिदिया
पंचिदियपज्जत्ता तसतसपज्जत्ता पंचिदियतिरिक्खभंगो ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगि-वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सकायजो-
गिविभंगणाणीसु तिसरीरा चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा । णवरि
वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सा चदुसरीरा णत्थि । कायजोगि-णवुंसयवेद-कोध-माण-माया-
लोहकसाइ-मदि-सुदअण्णाणि-असंजद-अचवखुदंसणि-किण्ण-णील--काउलेस्सिय--भव-
सिद्धिय-अभवसिद्धिय-मिच्छाइट्ठि त्ति ओघं । ओरालियकायजोगीसु तिसरीरा दव्व-
पमाणेण केवडिया ? अणंता । चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा ।
ओरालियमिस्सकायजोगीसु तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? अणंता । आहार-
आहारमिस्सकायजोगीसु चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा । कम्मइय-
कायजोगीसु विसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? अणंता । तिसरीरा दव्वपमाणेण
केवडिया ? संखेज्जा ।

द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं जो पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । बादर
एकेन्द्रिय अपर्याप्त, सूक्ष्म एकेन्द्रिय और इनके पर्याप्त व अपर्याप्त दो शरीरवाले और तीन
शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनंत हैं ? वनस्पतिकायिक और निगोद
जीव तथा बादर और सूक्ष्म तथा इनके पर्याप्त और अपर्याप्त दो शरीरवाले और तीन
शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनंत हैं । पंचेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय पर्याप्त, त्रस और
त्रसपर्याप्त जीवोंका भग्न पंचेन्द्रिय तिर्यच्छ्रोत्रोंके समान है ।

योगमार्गणाके अनुवादसे पाँचों मनोयोगी, पाँचों वचनयोगी, वैक्रियिककाययोगी, वैक्रि-
यिकमिश्रकाययोगी और विभंगज्जानी जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले द्रव्यप्रमाण
की अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं । इतनी विशेषता है कि वैक्रियिककाययोगी और वैक्रियि-
कमिश्रकाययोगी जीव चार शरीरवाले नहीं होते । काययोगी, नपुंसकवेदवाले, क्रोधकषायवाले,
मानकषायवाले, मायाकषायवाले, लोभकषायवाले, मत्त्यज्जानी, श्रुताज्जानी, असंयत, अचक्षुदर्शनी,
कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले, काशोतलेश्यावाले भव्य, अभव्य और मिथ्यादृष्टि जीवोंका
भंग ओघके समान है । औदारिककाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने
हैं ? अनंत हैं । चार शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं । औदारिक-
मिश्रकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनंत हैं । आहारक-
काययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी चार शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?
संख्यात हैं । कर्मणकाययोगी जीवोंमें दो शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?
अनंत हैं । तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ।

विशेषार्थ — यहां काययोगी आदि जितनी मार्गणाओंमें ओघके समान भंग कहा है सो
ये सब मार्गणाएँ अनंत संख्यावाली हैं । अतः इनमें ओघके समान दो शरीरवाले, तीन

वेदानुवादेण इत्थि-पुरिसवेद-आभिणि-सुद-ओहिणाणि-चक्खुदंसणि-ओहिदंसणि-तेउ-पम्मलेस्सिय-सम्माइट्ठि-वैदगसम्माइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सण्णीणं तसकाइयभंगो ।

अवगदवेद-अकसाइ-केवलणाणि-परिहार० सुहुमसांपराइय०-जहावखादविहार-सुद्धिसंजद-केवलदंसणीसु तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा । मणपज्जवणा-णिसंजद-सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदेसु तिसरीरा चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा । संजदासंजद-सम्मामिच्छाइट्ठीसु तिसरीरा चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा । सुक्कलेस्सिय-खइयसम्माइट्ठि-उवसमसम्माइट्ठीसु बिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा । तिसरीरा चदुसरीरा दव्वप० के० ? असंखेज्जा । असण्णीसु बिसरीरा तिसरीरा दव्वप० के० ? अणंता । चदुसरीरा दव्वप० के० ? असंखेज्जा ।

आहाराणुवादेण आहारएसु तिसरीरा दव्वप० के० ? अणंता । चदुसरीरा दव्वप० के० ? असंखेज्जा । अणाहारएसु कम्मइयभंगो ।

एवं दव्वपमाणपरूवणा समत्ता ।

शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंकी संख्या बन जानेसे इनमें ओघके समान जाननेकी सूचना की है । शेष कथन सुगम है ।

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेद और पुरुषवेदवाले तथा आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, चक्षुदर्शनी, अवधिदर्शनी, पोतलेश्यावाले, पद्मलेश्यावाले, सम्यग्दृष्टि, वेदकसम्यग्दृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और संज्ञी जीवोंका भग त्रसकायिक जीवोंके समान है ।

विशेषार्थ — इन मार्गणाओंमें एक तो त्रसकायिक जीवोंके समान दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीव होते हैं, दूसरे इनकी संख्या असंख्यात है, इसलिए इनकी प्ररूपणा त्रसकायिक जीवोंके समान जानने की सूचना की है ।

अपगतवेदी, अकषायी, केवलज्ञानी, परिहारविशुद्धिसंयत, सूक्ष्मसाम्परायसंयत, यथाख्या-तविहारशुद्धिसंयत और केवलदर्शनी जीवोंमें तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं । मनःपर्ययज्ञानी, संयत, सामायिकशुद्धिसंयत और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं । संयतासंयत और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले कितने हैं ? असंख्यात हैं । शुक्ललेश्यावाले, क्षायिकसम्यग्दृष्टि और उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंमें दो शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं । तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं । असंज्ञी जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं । चार शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ।

विशेषार्थ — शुक्ललेश्यावाले, क्षायिकसम्यग्दृष्टि और उपशमसम्यग्दृष्टि जीव विग्रहगतिमें संख्यात ही होते हैं, इसलिए इनमें दो शरीरवालोंका प्रमाण संख्यात कहा है । तथा चार शरीरवाले ओघसे ही असंख्यात बतलाये हैं, इसलिए असंज्ञियोंमें चार शरीरवालोंका प्रमाण असंख्यात कहा है । शेष कथन स्पष्ट ही है ।

आहार मार्गणाके अनुवादसे आहारकोंमें तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने

❖ अ० प्रती 'संखेज्जा' इति पाठः ।

खेत्ताणुगमेण दुविहो णिहेसो-ओघेण आदेसेण य। ओघेण बिसरीरा तिसरीरा केवडि खेत्ते^१? सव्वलोगे। चटुसरीरा केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखे० भागे।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु बिसरीरा तिसरीरा केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखे० भागे। एवं सत्तसु पुढवीसु णेयव्वं। तिरिक्खगदीए तिरिक्खकायजो-गि-णवुंसयवेद-कोह-माण-माया-लोहकसाइ-मदि-सुदअण्णाणि-असंजद-अचक्खुदंसणि--किण्ण-गोल-काउलेस्सिय-भवसिद्धिय-अभवसिद्धिय-मिच्छाइट्ठि-असण्णीसु ओघं। पंचि-दियतिरिक्खत्तिग-इत्थि-पुरिसवेद-आभिणि-सुद-ओहिणाणि-चक्खुदंसणि-ओहिदंसणि-तेउ-पम्मलेस्सिय-वेदग-उवसमसम्माइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सण्णीसु बिसरीरा तिसरीरा चटुसरीरा केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखे० भागे। पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्त-हैं? अनन्त हैं। चार शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं। अनाहारकोमें कर्मणकाययोगी जीवोंके समान भंग है।

इस प्रकार द्रव्यप्रमाणपरूपणा समाप्त हुई।

क्षेत्रानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है— ओघ और आदेश। ओघसे दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? सब लोकप्रमाण क्षेत्र है। चार शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है।

विशेषार्थ — दो शरीरवाले कर्मणकाययोगी होते हैं और तीन शरीरवाले प्रायः आहारक होते हैं। इनका क्षेत्र सर्वलोकप्रमाण होनेसे यहां दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका सर्वलोकप्रमाण क्षेत्र कहा है। तथा चार शरीरवाले वे ही होते हैं जो औदारिकशरीरसे या तो विक्रिया कर रहे हैं या आहारक ऋद्धिके उपस्थापक हैं। ऐसे जीव लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें ही पाये जाते हैं, इसलिए ओघसे चार शरीरवालोंका क्षेत्र लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है। यद्यपि बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंका क्षेत्र लोकके संख्यातवें भागप्रमाण कहा है परन्तु उनमें विक्रिया करनेवाले जीव स्वल्प होनेसे उनका वर्तमान क्षेत्र लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण ही प्राप्त होता है। आगे भी इन्हीं विशेषताओंको ध्यानमें रखकर और अपना अपना क्षेत्र जानकर वह ले आना चाहिए। यदि कहीं कोई विशेषता होगी तो उसका हम अलगसे निर्देश करेंगे।

आदेशसे गतिमार्गणाके अनुवादसे नरकगतिकी अपेक्षा नारकियोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है। इस प्रकार सातों पृथिवियोंमें जानना चाहिए। तिर्यचगतिकी अपेक्षा तिर्यचोंमें तथा काययोगी, नपुंसकवेदी, क्रोधकषायवाले, मानकषायवाले, मायाकषायवाले, लोभकषायवाले, मत्त्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयत, अचक्षुदशनी, कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले, कापोतलेश्यावाले, भव्य अमव्य, मिथ्या-दृष्टि और असंज्ञी जीवोंमें ओघके समान भंग है। पंचेन्द्रियतिर्यचत्रिक, स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी, आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, चक्षुदर्शनी, अवधिदर्शनी, पीतलेश्यावाले, पद्म-लेश्यावाले, वेदकसम्यग्दृष्टि, उपशमसम्यग्दृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और संज्ञी जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें

^१ अ० प्रती 'तिसरीरा दव्व० प० के० खेत्ते' इति पाठः।

मणुसअपज्जत्त-सव्वदेव-वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-तप्पज्जत्तापज्जत्तं-पंचिंदिय-तसअपज्जत्ताणं णेरइयभंगो । मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणि-पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्त-तस-तसपज्जत्त-सुक्कलेस्सिय-सम्माइट्ठि-खइयसम्माइट्ठीसु बिसरीरा चदुसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे० भागे । तिसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे० भागे असंखेज्जेसु वा भागेसु सव्वलोगे वा ।

इंदियाणुवादेण एइंदिय-बादरेइंदिय-बादरेइंदियपज्जत्तएसु ओघं । बादरेइंदिय-अपज्जत्त०-सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्त-पुढवि०-आउ०-बादरपुढवि०-बादरआउ०-तद-पज्जत्त-सुहुमपुढवि०-सुहुमआउ०-तप्पज्जत्तापज्जत्त-तेउ०-बादरतेउ०-अपज्जत्त०-सुहुमतेउ०-सुहुमवाउ०-तप्पज्जत्तापज्जत्त-वणप्फदिकाइय-णिगोदजीव-बादर-सुहुमप-ज्जत्तापज्जत्त-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तएसु बिसरीरा तिसरीरा केवडि खेत्ते ? सव्वलोगे । बादरपुढवि०-बादरआउ०-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्त-एसु बिसरीरा तिसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे० भागे । बादरतेउ०पज्जत्तएसु

भागप्रमाण क्षेत्र है । पंचेन्द्रियतिर्यंच अपर्याप्त, मनुष्यअपर्याप्त, सव देव, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और इन तीनोंके पर्याप्त व अपर्याप्त, पंचेन्द्रिय अपर्याप्त और त्रस अपर्याप्त जीवोंमें नारकियोंके समान भंग है । मनुष्यगतिकी अपेक्षा मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त, मनुष्यनी तथा पंचेन्द्रिय पंचेन्द्रिय पर्याप्त, त्रस, त्रसपर्याप्त, शुक्ललेख्यावाले, सम्यग्दृष्टि और क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है । तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सब लोकप्रमाण क्षेत्र है ।

विशेषार्थ — यहां मनुष्य आदि मार्गणाओंमें केवलसमुद्घात सम्भव है इसलिए इस अपेक्षा से तीन शरीरवालोंका क्षेत्र लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सब लोकप्रमाण भी बतलाया है । शेष कथन स्पष्ट ही है ।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें ओघके समान भंग है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त, सूक्ष्म एकेन्द्रिय व पर्याप्त और अपर्याप्त, पृथिवीकायिक, जलकायिक, बादर पृथिवीकायिक, बादर जलकायिक, बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त बादर जलकायिक अपर्याप्त, सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म जलकायिक तथा इन दोनोंके पर्याप्त और अपर्याप्त, अग्निकायिक, बादर अग्निकायिक, बादर अग्निकायिकअपर्याप्त, वायुकायिक, बादर वायुकायिक, बादर वायुकायिक अपर्याप्त, सूक्ष्म अग्निकायिक, सूक्ष्मवायुकायिक तथा इन दोनोंके पर्याप्त और अपर्याप्त, वनस्पतिकायिक, निगोदजीव तथा इनके बादर और सूक्ष्म तथा पर्याप्त और अपर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? सब लोकप्रमाण क्षेत्र है । बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर जलकायिक पर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है । बादर

ॐ अ० का० प्रत्योः ' चउरिंदियतसपज्जत्त- ' इति पाठः ।

बिसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखे०भागे । बादरवाउ-काइयपज्जत्ता चदुसरीरा केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखे०भागे । बिसरीरा तिसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स संखे०भागे❖

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचि०-वेउव्विय०कायजोगि-वेउव्वियमिस्स-कायजोगि-विभंगणाणि-मणपज्जवणाणि-सामाइय-च्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजम-संजमासंज-मसम्मामिच्छाइट्ठीसु तिसरीरा चदुसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे०भागे । णवरि वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सा चदुसरीरा णत्थि।ओरालिय०जोगीसु आहाराणुवादस्स आहारीसु च तिसरीरा केवडि खेत्ते? सव्वलोए । चदुसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे०भागे । ओरालियमिस्सकायजोगीसु तिसरीरा केवडि खेत्ते ? सव्वलोगे । आहार-आहारमिस्सकायजोगीसु चदुसरीरा केवडि खेत्ते?लोगस्स असंखेज्जदिभागे । अणाहार०कम्मइय० जोगीसु बिसरीरा केवडि खेत्ते? सव्वलोगे । तिसरीरा केवडि खेत्ते? लोगस्स असंज्जदिभागे असंखेज्जेसु वा भागेंसु सव्वलोगे वा । णवरि कम्मइय० लोगस्स असंखेज्जदिभागो णत्थि ।

अग्निकायिक पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है । बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंमें चार शरीरवालोंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है । दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? लोकके संख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है ।

विशेषार्थ— बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंका क्षेत्र लोकके संख्यातवें भागप्रमाण होनेसे इनमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका यह क्षेत्र बन जाता है । शेष कथन सुगम है ।

योग मार्मणाके अनुवादसे पाँचो मनोयोगी, पाँचो वचनयोगी, वैक्रियिककाययोगी और वैक्रियिकमिश्रकाययोगी तथा विभग्गज्जानी, मनःपर्ययज्जानी, सामायिकशुद्धिसंयत, छेदोपस्थापना-शुद्धिसंयत, संयतासंयत और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है । इतनी विशेषता है कि वैक्रियिककाययोगी और वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें चार शरीरवाले नहीं है । आदारिक-काययोगी और आहारमार्मणाके अनुवादसे आहारकोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? सब लोकप्रमाण क्षेत्र है । चार शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है । आदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है । सब लोकप्रमाण क्षेत्र है ? आहारककाययोगी और आहारमिश्रकाययोगी जीवोंमें चार शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है । अनाहारकों और कामर्णकाययोगी जीवोंमें दो शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र है । तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है । लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र है । इतनी विशेषता है कि कामर्णकाययोगी जीवोंसे

❖ प्रतिष्ठा 'लोगस्स असंखे०भागे' इति पाठः । ❖ ता०प्रतो 'आ (अणा) हार-' अ०का०प्रत्वोः 'आहार-' इति पाठः ।

अवगदवेद-अकसाइ-केवलणाणि-जहाक्खादविहारसुद्धिसंजद-केवलदंसणीसु
तिसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे०भागे असंखेज्जेसु वा भागेसु सब्बलोगे
वा । एवं संजदाणं । णवरि चदुसरीरा लोग०असंखे०भागे । परिहार०सुहुमसांपराय-
सुद्धिसंजदेसु तिसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे०भागे ।

एवं खेत्ताणुगमो त्ति समत्तमणुयोगद्वारं ।

फोसणाणुगमेण दुविहो णिट्ठेसो-ओघेण आदेसेण य । ओघेण बिसरीर-
तिसरीरएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण सब्बलोगो । चदुसरीरेहि
केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे०भागे अदीदेण सब्बलोगो ।

आदेसेण णिरयगईए णेरइएसु बिसरीर-तिसरीरएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ?
वट्टमाणेण लोगस्स असंखेज्जिभागे, अदीदेण छ चोटसभागा देसूणा । पट्टमाए

लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र नहीं है ।

विशेषार्थ- अनाहारक अवस्था अयोगिकेवलियोंके भी होती है । वहाँ तीन शरीरोंका
सद्भाव बन जाता है, इसलिए तीन शरीरवालोंकी अपेक्षा अनाहारकोंका क्षेत्र लोकके असं-
ख्यातवें भागप्रमाण भी कहा है । परन्तु यह क्षेत्र कर्मणकाययोगी जीवोंमें घटित न होने से
उनमें इसका निषेध किया है ।

अपगतवेदी, अकषायी, केवलज्ञानी, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत और केवलदर्शनी जीवों
में तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात
बहुभागप्रमाण और सब लोकप्रमाण क्षेत्र है । इसी प्रकार संयतोंके जानना चाहिए । इतनी
विशेषता है कि इनमें चार शरीरवालोंका लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है । परिहार-
शुद्धिसंयत और सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयत जीवोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ?
लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है ।

इस प्रकार क्षेत्रानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

स्पर्शानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है- ओघ और आदेश । ओघसे दो शरीर
और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत काल और वर्तमान काल
की अपेक्षा सर्व लोकका स्पर्शन किया है । चार शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया
है ? वर्तमान की अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका और अतीतकालकी अपेक्षा
सर्व लोकका स्पर्शन किया है ।

विशेषार्थ- औदारिकशरीरसे विक्रिया करते समय मारणान्तिक समुद्धात सम्भव है,
इसलिए चार शरीरवालोंका अतीत स्पर्शन सर्व लोकप्रमाण कहा है । आगे भी यह स्पर्शन इसी
प्रकार घटित कर लेना चाहिए । शेष कथन स्पष्ट हो है ।

आदेशसे नरकगतिमें नारकियोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने
क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमानमें लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका और अतीत कालकी

पुढवीए खेतभंगो । विद्यादि जाव समत्तपुढवि त्ति बिसरीरा-तिसरीरएहि केवडियं खेतं फोसिदं? वट्टमाणेण लोगस्स असंखेज्जदिभागो, अदीदेण एक्क-वे-तिण्णि-चत्तारि-पंचच्चोद्दसभागावा देसूणा ?

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु सामण्णतिरिक्ख-कायजोगि-णवुंसयवेद-कोह-माण-माया-लोभकसाइ-मदि-सुदअण्णाणि-असंजद-अच्चखुदंसणि-किण्ण-णील - काउलेस्सिय-भवसिद्धि-अभवसिद्धि-मिच्छाइट्ठि-असण्णीसु ओघभंगो । पंचिदियतिरिक्ख पंचिदिय-तिरिक्खपज्जत्त-पंचिदियतिरिक्खजोणिणीसु बिसरीर-तिसरीर-चदुसरीरेहि केवडियं खेतं फोसिदं? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे०भागो, अदीदेण सब्बलोगो । पंचिदिय तिरिक्खअपज्जत्त-मणुसअपज्जत्त-वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिदियपज्जत्तापज्जत्ता-पंचिदिय अपज्जत्त-तसअपज्जत्तएसु बिसरीर-तिसरीरएहि केवडियं खेतं फोसिदं? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे०भागो, अदीदेण सब्बलोगो ।

मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणी बिसरीर-चदुसरीरएहि केवडियं खेतं फोसिदं? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे०भागो, अदीदेण सब्बलोगो । तिसरीरेहि

अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमें से कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । पहली पृथिवीमें क्षेत्रके समान भंग है । दूसरेसे लेकर सातवीं तककी पृथिवियोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमानकालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका और अतीत कालकी अपेक्षा क्रमसे त्रसनालीके चौदह भागोंमें से कुछ कम एक भाग, कुछ कम दो भाग, कुछ कम तीन भाग, कुछ कम चार भाग, कुछ कम पाँच भाग और कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है ।

तिर्यञ्चगतिकी अपेक्षा तिर्यञ्चोंमें सामान्य तिर्यञ्च तथा काययोगी, नपुंसकवेदी, क्रोध, कषायवाले, मानकषायवाले, मायाकषायवाले, लोभकषायवाले, मत्त्यज्ञाज्ञी, श्रुताज्ञानी, असंयत-अचक्षुदर्शनी, कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले, कापोतलेश्यावाले, भव्य, अभव्य, मिथ्यादृष्टि और असंज्ञी जीवोंमें ओघके समान भंग है । पन्चेन्द्रियतिर्यञ्च, पन्चेन्द्रियतिर्यञ्च पर्याप्त और पन्चेन्द्रियतिर्यञ्चयोनिनी जीवोंमें दो शरीर, तीन शरीर और चार शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । पन्चेन्द्रियतिर्यञ्च अपर्याप्त, मनुष्य, अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय तथा इन तीनोंके पर्याप्त और अपर्याप्त पन्चेन्द्रिय अपर्याप्त और त्रस अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवासे और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है ।

मनुष्यगतिकी अपेक्षा मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यािनियोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्वलोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके

केवडियं खेत्तं फोसिदं? लोगस्स असंखे०भागो असंखेज्जा भागा सच्चलोगो वा ।

देवगदीए देवेसु बिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे०भागो, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा । तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो, अदीदेण अट्ठ णव चोद्दसभागा वा देसूणा । भवण-वासिय-वाणवेंतर-जोदिसियदेवेसु बिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखे०भागो । तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे०भागो, अदीदेण अद्धुट्ठ अट्ठ णव चोद्दसभागा वा देसूणा । सोहम्मीसाणकप्पवासिय-देवेसु बिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो, अदीदेण दिवड्ठ चोद्दसभागा देसूणा । तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो, अदीदेण अट्ठ णव चोद्दसभागा देसूणा । सणक्कुमारप्पहुडि जाव सहस्सारकप्पवासियदेवेसु बिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग०

असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है ।

विशेषार्थ— मनुष्यगतिमें मारणान्तिक समुद्घात और उपपादपदकी अपेक्षा सब लोक-प्रमाण स्पर्शन सम्भव है, इसलिए यहां तीन प्रकारके मनुष्योंमें दो शरीरवाले और चार शरीर-वाले जीवोंका अतीतकालीन स्पर्शन सर्व लोकप्रमाण कहा है । मात्र उपपादपदके समय चार शरीरवाले नहीं होते इतना विशेष जानना चाहिए । शेष कथन स्पष्ट ही है ।

देवगतिकी अपेक्षा देवोंमें दो शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें दो शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम साढ़े तीन भाग, कुछ कम आठ भाग और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । सौधर्म और ऐशान कल्पवासी देवोंमें दो शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम डेढ़ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । सनत्कुमारसे लेकर सहस्रागर कल्प तकके देवोंमें दो शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा

असंखे० भागो, अदीदेण तिण्णि अद्धट्ट चत्तारिं अद्धपंचम पंच चोद्दसभागा देसूणा । तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो०, अदीदेण अद्ध चोद्दसभागा देसूणा । आणद-पाणद-आरण-अच्चुदकप्पवासियदेवेसु बिसरीर-तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो०, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा । णवगेवेज्जविमाणवासियदेवप्पहुडि जाव सब्बट्टसिद्धिविमाणवासियदेवेसु बिसरीर-तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो ।

इंदियाणुवादेण एइंदिय-बादरेइंदिय-बादरेइंदियपज्जत्तएसु बिसरीर-तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणे० सब्बलोगो । चट्टुसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सब्बलोगो । बादरेइंदियपज्जत्त-

लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालिके चौदह भागोंमेंसे कससे कुछ कम तीन भाग, कुछ कम साढ़े तीन भाग, कुछ कम चार भाग, कुछ कम साढ़े चार भाग और कुछ कम पांच भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । आनत प्राणत, आरण और अच्युत कल्पवासी देवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भाग प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । नौ ग्रैवेयेक विमानवासी देवोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देवों तक इनमें दो शरीर-वालों और तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है ।

विशेषार्थ — सब देवोंमें जिसका जो उपपाद पदकी अपेक्षा स्पर्शन बतलाया है वह यहां दो शरीरवालोंका स्पर्शन जानना चाहिए और शेष तीन शरीरवालोंका जानना चाहिए । यहां आनत-प्राणत कल्पोंमें दो शरीरवालोंका भी स्पर्शन त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भाग-प्रमाण कहा है । सो यह सामान्य कथन प्रतीत होता है, क्योंकि कुछ कम साढ़े पांच भाग राजुका अन्तर्भाव कुछ कम छह बटे चौदह भागमें हो जाता है । वास्तवमें इनमें उपपादपदकी अपेक्षा स्पर्शन कुछ कम साढ़े पांच भागप्रमाण बतलाया है अतः यहां दो शरीरवालोंका स्पर्शन भी इतना ही प्राप्त होगा । आगे भी सब स्पर्शन इन विशेषताओंको ध्यानमें रखकर घटित कर लेना चाहिए ।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय बादर एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालों और तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत काल और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्वलोक प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त तथा सूक्ष्म

सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्तएसु बिसरीर-तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्ट-माणे० सव्वलोगो । पंचिदिय-पंचिदियपज्जत्तएसु बिसरीर-तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो । तिसरीरेहि केव० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे० भागो असंखेज्जा भागा* सव्वलोगो वा*, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा वा देसूणा सव्वलोगो वा ।

कायाणुवादेण पुढवि०-आउ०-बादरपुढवि०-बादरआउ०-बादरवणप्फदिपत्तेय-सरीरअपज्जत्त-सुहुमपुढवि०-सुहुमआउ०-तप्पज्जत्तापज्जत्तएसु बिसरीर-तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण सव्वलोगो । बादरपुढवि०-बादरआउ०-बादर-वणप्फदिपत्तेयसरीरपज्जत्तएसु बिसरीरतिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो । तेउ०-वाउ-बादरतेउ०-बादरवाउकाइएसु बिस-रीर-तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणे० सव्वलोगो । चटुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो । बादर-

एकेन्द्रिय और उनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालों और तीस शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत काल और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्वलोक प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें दो शरीरवालों और चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्वलोक प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभाग प्रमाण और सर्वलोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । तथा अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है ।

कायमार्गणके अनुवादसे पृथिवीकायिक और जलकायिक तथा बादर पृथिवीकायिक बादर जलकायिक, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर तथा इन तीनोंके अपर्याप्त, सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म जलकायिक तथा इन दोनोंके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीर और तीन शरीरवाले जीवोंने, कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोक-प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर जलकायिक पर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । अग्निकायिक, वायुकायिक, बादर अग्निकायिक और बादर वायुकायिक जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा

* ता० प्रती ' असंखेज्जा भागा ' इति पाठो नास्ति । * म० प्रतिपाठोऽयम् । अ० का० प्रत्योः चटुसरीरेहि के० खेत्तं फो० ? वट्टमाणेण लोग० संखे० भागो । असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा ' इति पाठः ।
* अ० प्रती ' आउ० बादरआउ० ' इति पाठः ।

तेउक्काइयपज्जत्तएसु बिसरीर-तिसरीर-चडुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सब्बलोगो । बादरवाउ० पज्जत्तएसु चडुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सब्बलोगो । बिसरीर-तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग० संखं० भागो, अदीदेण सब्बलोगो । बादरतेउक्काइय-बादरवाउक्काइयअपज्जत्त-सुहुमतेउ०-सुहुमवाउ०-तप्पज्जत्तापज्जत्ताणं बिसरीर-तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणे० सब्बलोगो । एवं वण-प्फदि-णिगोदजीवाणं तेसिं चैव बादर-सुहुमपज्जत्तापज्जत्ताणं च वत्तव्वं । तस-तसप-ज्जत्ताणं पंचिदियपंचिदियपज्जत्ताणं भंगो ।

जोगणुवादेण पंचवणजोगि-पंचमच्चिजोगीसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो, अदीदेण अट्ट चोद्दसभागा देसूणा सब्बलोगो वा । चडुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सब्बलोगो । ओरालियकायजोगीसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण सब्बलोगो ।

लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । बादर अग्निकायिक पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालों तीन शरीरवालों और चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंमें चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? दो शरीरवालों और तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है । वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । बादर अग्निकायिक अपर्याप्त, बादर वायुकायिक अपर्याप्त तथा सूक्ष्म अग्निकायिक और सूक्ष्म वायुकायिक तथा इन दोनोंके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवालों जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । इसी प्रकार वनस्पतिकायिक और निगोद तथा उनके बादर और सूक्ष्म तथा पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंके कहना चाहिए । त्रस और त्रस पर्याप्त जीवोंका भंग पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीवोंके समान है ।

योगमार्गणाके अनुवादसे पांचों मनोयोगी और वचनयोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । आदारिकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । चार

चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे० भागो, अदीदेण सब्बलोगो । ओरालियमिस्सकायजोगीसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण सब्ब-लोगो । वेउव्वियकायजोगीसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो, अदीदेण अट्ठ तेरह चोद्दसभागा वा देसूणा । वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु तिस-रीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो । आहारआहार-मिस्सकायजोगीसु चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण लोगस्स असंखे० भागो । कम्मइयकायजोगीसु विसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण सब्ब-लोगो । तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागा, सब्बलोगो वा ॐ ।

वेदानुवादेण इत्थिवेद-पुरिसवेदेसु विसरीर-चउसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्ट-माणेण लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सब्बलोगो । तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा सब्बलोगो वा ।

शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । औदारिक मिश्रकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । वैक्रियिककाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है । वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और कुछ कम तेरह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । आहारककाययोगी और आहारकमि-मिश्रकाययोगी जीवोंमें चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । कर्मणका-ययोगी जीवोंमें दो शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है ।

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी जीवोंमें दो शरीरवालों और चार शरीर-वालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भाग-प्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कप आठ बटे चौदह भाग और सर्व लोकप्रमाण

ॐ प्रतिष्ठा ' असंखे० भागो सब्बलोगो वा ' इति पाठः ।

अवगद-अकसाइ-केवलणाणि-जहावखादविहार०केवलदंसणीसु तिसरीरेहि के० खेतं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा ।

णाणाणुवादेण विभंगणाणीसु तिसरीरेहि केवडियं खेतं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग०असंखे०भागो, अदीदेण अट्ट तेरह चौदसभागा वा देसूणा सव्वलोगो वा । चट्ठहि सरीरेहि के० खेतं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण सव्वलोगो । आभिणि-सुद-ओहिणाणीसु चट्ठसरीर-विसरीरेहि के० खेतं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण छ चौदसभागा देसूणा । तिसरीरेहि के०खेतं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण अट्ट चौदसभागा देसूणा । मणपज्जवणाणीसु तिसरीर-चट्ठसरीरेहि के० खेतं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो ।

संजमाणुवादेण संजदेसु तिसरीरेहि के० खेतं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा । चउसरीरेहि के० खेतं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो । सामाइय-छेदोवट्टावणसुद्धिसंजदाणं

क्षेत्रका स्पर्शन किया है । अपगतवेदी, अकषायी, केवलज्ञानी, यथाख्यातविहार विशुद्धिसंयत और केवलदर्शनी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है ।

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे विभंगज्ञानी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ आठ बटे चौदह भाग, कुछ कम तेरह बटे चौदह भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें चार शरीरवाले और दो शरीरवाले जीवोंसे कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीतकालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । मनःपर्यय-ज्ञानी जीवोंमें तीन शरीरवालों और चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है ।

संयममार्गणाके अनुवादसे संयतोंमें तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ! अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवे भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । सामायिकशुद्धिसंयत और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीवोंमें मनःपर्ययज्ञानी

मणपज्जवभंगो । परिहार-सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो । संजदासंजदाणं तिसरीर-चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण छ चोदसभागा देसूणा ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीसु विसरीरा लद्धि पडुच्च अत्थि णिव्वत्ति पडुच्च णत्थि । जदि अत्थि तो तेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सब्बलोगो । तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो, अदीदेण अट्ट चोदसभागा देसूणा सब्बलोगो वा । चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सब्बलोगो । ओहिदंसणीणमोहिणाणिभंगो ।

लेस्साणुवादेण तेउलेस्सिएसु विसरीर-चउसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण दिवडु चोदसभागा देसूणा । तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण अट्ट णव चोदसभागा देसूणा । पम्मलेस्सिएसु चदुसरीरेहि विसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग०

जीवोंके समान भंग है । परिहारशुद्धिसंयत और सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयत जीवोंमें तीन शरीर-वालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमानकालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । सयतासंयतोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भाग-प्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भाग प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है ।

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनवाले जीवोंमें दो शरीरवाले लब्धिकी अपेक्षासे है, हैं, निर्वृत्तिकी अपेक्षासे नहीं हैं । यदि हैं तो उन्होंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवे भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । चार शरीरवाले जीवोंमें कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । अवधिदर्शनवाले जीवोंका भंग अवधिज्ञानवाले जीवोंके समान है ।

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे पीतलेश्यावाले जीवोंमें दो शरीरवालों और चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम डेढ़ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और कुछ कम नौ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । पद्मलेश्यावालोंमें चार शरीरवाले और दो शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा

असंखे० भागो, अदीदेण पंच चोदसभागा देसूणा । तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण अट्ट चोदसभागा देसूणा । सुक्कलेस्सिएसु बिसरीर-चउसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो, अदीदेण छ चोदसभागा देसूणा । तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग असंखे०— भागो, असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा, अदीदेण छ चोदसभागा देसूणा । केवलि— भंगो वा ।

समत्ताणुवादेण सम्माइट्ठीसु बिसरीर-चउसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण छ चोदसभागा देसूणा । तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा, अदीदेण अट्ट चोदसभागा देसूणा केवलिभंगोवा । खइयसम्माइट्ठीसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा, अदीदेण अट्ट चोदसभागा देसूणा केवलिभंगो वा । बिसरीर-चउसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ?

लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम पांच बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । शुक्ललेश्यावालोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभाग प्रमाण और सब लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । तथा अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन है और केवलजानियोंका जो स्पर्शन बतला आये वह भी अतीत कालकी अपेक्षा यहां स्पर्शन जानना चाहिए ।

सम्यक्त्व मार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टि जीवोंमें दो शरीरवालों और चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । तथा अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है और केवलजानियोंके जो स्पर्शन बतलाया है वह स्पर्शन भी अतीत कालकी अपेक्षा यहां जानना चाहिए । धार्मिकसम्यग्दृष्टि जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । तथा अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है और केवलजानियोंके समान भंग है । दो शरीरवालों और

अदीद-वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो । वैदगसम्ममाइट्ठीणमोहिणाणिभंगो । उवसम-
सम्ममाइट्ठीसु बिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? अदीद वट्टमाणे० लोग० असंखे०-
भागो । तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण अट्ठ
चोद्दसभागा देसूणा । सासणसम्ममाइट्ठीसु बिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे०
लोग० असंखे० भागो, अदीदेण एक्कारह चोद्दसभागा देसूणा । तिसरीरेहि के० खेत्तं
फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण बारह चोद्दसभागा वा देसूणा ।
चट्ठसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सत्त चोद्दस-
भागा देसूणा । सम्मामिच्छाइट्ठीसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग०
असंखे० भागो, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा । चट्ठसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं?
अदीद-वट्टमाणे० लोगस्स असंखे० भागो ।

सण्णियाणुवादेण सण्णीणं चक्खुदंसणियभंगो । आहाराणुवादेण आहारीणं ओरा-
लियकायजोगिभंगो ? अणाहारीणं बिसरीराणं कम्मइयभंगो । तिसरीराणं

चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके
असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंका भंग अवधिज्ञानी
जीवोंके समान है। उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंमें दो शरीरवालों और चार शरीरवालोंने कितने
क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान और अतीत कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण
क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी
अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह
भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंमें दो शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका
स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी
अपेक्षा कुछ कम ग्यारह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने
क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत
कालकी अपेक्षा कुछ कम बारह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीर-
वालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण
और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम सात बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।
सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी
अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह
भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है?
अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

विशेषार्थ — सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें चार शरीरवालोंका नीचे कुछ कम पांच राज्ज स्पर्शन
नहीं उपलब्ध होता, क्योंकि, एक तो सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यच और मनुष्य नारकियोंमें तथा
मेरुके नीचे एकेंद्रियोंमें मारणान्तिक समुद्घात नहीं करते। दूसरे नारकी तिर्यचों और मनुष्योंमें
मारणान्तिक समुद्घात करते हुए भी चार शरीरवाले नहीं होते। इसलिए सासादनमें चार
शरीरवालोंका स्पर्शन कुछ कम सात बटे चौदह राज्जप्रमाण कहा है। शेष कथन स्पष्ट ही है।

संज्ञी मार्गणाके अनुवादसे संज्ञियोंका भंग चक्षुदर्शनवाले जीवोंके समान है। आहारमा-
र्गणाके अनुवादसे आहारक जीवोंका भंग औदारिककाययोगी जीवोंके समान है। अनाहारकोंमें

केवलिभंगो । एवं फोसणाणुगमो समत्तो ।

कालाणुगमेण दुविहो णिहेसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण बिसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा । एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्ण समया । तिसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा । एगजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० अंगुलस्स असंखेज्जविभागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उत्सप्पिणिओ । चटुसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा । एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु बिसरीरा केवचिरं कालादो

दो शरीरवालोंका भंग कामणकाययोगी जीवोंके समान है । तीन शरीरवालोंका भंग केवलज्ञानियोंके समान है ।

इस प्रकार स्पर्शानुगम समाप्त हुआ ।

कालानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है— ओघ और आदेश । ओघसे दो शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल तीन समय है । तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो असंख्यात अवसप्पिणी-उत्सप्पिणीके बराबर है । चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ।

विशेषार्थ — कर्मणकाययोगका नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल होनेसे यहां नाना जीवोंकी अपेक्षा दो शरीरवालोंका सर्वदा काल कहा है । इसी प्रकार तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीव भी निरन्तर पाये जाते हैं, इसलिए नाना जीवकी अपेक्षा इनका सर्वदा काल कहा है । तथा एक जीवकी अपेक्षा कर्मणकाययोगका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल तीन समय होनेसे दो शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल तीन समय कहा है । जो आदारिक शरीरके साथ विक्रिया कर रहा है वह एक समय के लिए तीन शरीरवाला होकर यदि द्वितीय समयमें मर कर दो शरीरवाला हो जाता है तो उसके तीन शरीरवालोंका जघन्य काल एक समय प्राप्त होता है । यह देखकर एक जीवकी अपेक्षा तीन शरीरवालोंका जघन्य काल एक समय कहा है । तथा आहारक अवस्थाका उत्कृष्ट काल अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है, इसलिये एक जीवकी अपेक्षा तीन शरीरवालोंका उत्कृष्ट काल उक्त प्रमाण कहा है । किसी जीवने आदारिक शरीरसे विक्रिया प्रारंभ की और दूसरे समयमें मर कर वह दो शरीरवाला हो गया । यह देख कर एक जीवकी अपेक्षा चार शरीरवालों का जघन्य काल एक समय कहा है । तथा एक जीवके विक्रियाका उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है, इसलिए एक जीवकी अपेक्षा चार शरीरवालोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त कहा है । आगे गति आदि मार्ग—णाओंमें इसी प्रकार कालका विचार कर वह घटित कर लेना चाहिए ।

आदेशसे गति मार्गणाके अनुवादसे नरकगतिकी अपेक्षा नारकियोंमें दो शरीरवालोंका

होंति? णाणाजीवं पडुच्च जहं० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे भागो। एगजीवं पडुच्च जहं० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं पडुच्च जहं० दसवाससहस्साणि विसमऊणाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि संपुण्णाणि। पढमपुढविप्पहुडि जाव सत्तमपुढविणेरइएसु बिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च जहं० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो। एगजीवं पडुच्च जहं० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं पडुच्च जहं० दसवाससहस्साणि विसमऊणाणि, उक्क० सागरोवमं संपुण्णं। जहं० सागरोवमं समऊणं, उक्क० तिण्णि सागरोवमाणि संपुण्णाणि। जहं० तिण्णि सागरोवमाणि समऊणाणि, उक्क० सत्त सागरोवमाणि संपुण्णाणि। जहं० सत्त सागरोवमाणि समऊणाणि, उक्क० दस सागरोवमाणि संपुण्णाणि। जहं० दससागरोवमाणि समऊणाणि, उक्क० सत्तारस सागरोवमाणि संपुण्णाणि। जहं० सत्तारस सागरोवमाणि सयऊणाणि, उक्क० बावीसं सागरो० संपुण्णाणि। जहं० बावीसं सागरो० समऊणाणि, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि संपुण्णाणि।

कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम दस हजार वर्ष प्रमाण हैं और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण तेतीस सागर है। पहिली पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तकके नारकियोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा प्रथम पृथिवीमें जघन्य काल दो समय कम दस हजार वर्ष है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण एक सागर है। दूसरी पृथिवीमें जघन्य काल एक समय कम एक सागर है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण तीन सागर है। तीसरी पृथिवीमें जघन्य काल ऊक समय कम तीन सागर है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण सात सागर है। चौथी पृथिवीमें जघन्य काल एक समय कम सात सागर है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण दस सागर है। पांचवी पृथिवीमें जघन्य काल एक समय कम दस सागर है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण सत्रह सागर है। छठी पृथिवीमें जघन्य काल एक समय कम सत्रह सागर है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण बाईस सागर है। सातवीं पृथिवी में जघन्य काल एक समय कम बाईस सागर है और उत्कृष्ट काल तेतीस सागर है।

विशेषार्थ - नरकमें नाना जीव विग्रह गतिसे यदि निरन्तर उत्पन्न हो तो कमसे कम एक समय तक ओर अधिकसे अधिक आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक हो उत्पन्न होते हैं। सामान्यसे ओर प्रत्येक पृथिवीमें यही नियम है, इसलिए यहां सर्वत्र नाना जीवोंकी अपेक्षा दो शरीरवालोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें

अ० प्रती ' उक्क० दससागरोवमाणि समऊणाणि । जहं० इति पाठः ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु बिसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा । एगजीवं पडुच्च जहं एगसमओ, उक्कं तिण्णि समया । तिसरीरा केवचिरं कां होंति? णाणाजीवं पडुं सव्वद्धा। एगजीवं पडुच्च जहं एगसमओ, उक्कं अंगुलस्स असंखे० भागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ । चटुसरीरा केवचिरं कां होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा । एगजीवं प० जहं एगसमओ, उक्कं अंतोमुहुत्तं । पंचिदियतिरिक्ख-पंचिदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिदियतिरिक्खजोणिणीसु बिसरीरा केवचिरं कां होंति? णाणाजीवं प० जहं एगसमओ, उक्कं आवलि० असंखे० भागो। एगजीवं प० जहं एगसमओ, उक्कं बेसमया। तिसरीरा केवचिरं कां होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं प० जहं एगसमओ, उक्कं तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडि-पुधत्तेणभहियाणि। चटुसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जहण्णेण एगसमओ, उक्कं अंतोमुहुत्तं । पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तेसु बिसरीरा केवचिरं कां होंति? णाणाजीवं प० जहं एगसमओ, उक्कं आवलि० असंखे० भागो।

भागप्रमाण कहा है। तथा एक जीव यहां सर्वत्र यदि विग्रहसे उत्पन्न हो तो कमसे कम एक विग्रह और अधिकसे अधिक दो विग्रह लेकर उत्पन्न होता है, इसलिए यहां एक जीवकी अपेक्षा दो शरीरवालोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल दो समय कहा है। विग्रहके इन दो समयोंकी अपनी जघन्य स्थितिमेंसे कम कर देने पर सर्वत्र एक जीवकी अपेक्षा तीन शरीरवालों का जघन्य काल होता है और उत्कृष्ट काल अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण है यह स्पष्टही है। तथा नरकगति निरन्तर मार्गणा है, इसलिए नाना जीवोंकी अपेक्षा तीन शरीरवालोंका काल सर्वदा है यह भी स्पष्ट है।

तिर्यचगतिकी अपेक्षा तिर्यचोर्में दो शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल तीन समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो असंख्यात अवसप्पिणी-उत्सप्पिणी कालप्रमाण है। चार शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। पंचेन्द्रियतिर्यच, पंचेन्द्रियतिर्यच पर्याप्त और पंचेन्द्रियतिर्यच योनिनियोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवका अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक तीन पत्यप्रमाण है। चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। पंचेन्द्रियतिर्यच अपर्याप्तकोंमें दो शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भाग—

एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया । तिसरीरा केवचिरं का० होति ?
णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० खुदाभवगहणं बिसमऊण, उक्क०
अंतोमुहुत्तं संपुणं ।

मणुसगदीए मणुस्सेसु बिसरीरा केवचिरं कालादो होति ? णाणाजीवं पडुच्च जह०
एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो । एगजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क०
बेसमया । तिसरीरा केवचिरं काला० होति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प०
जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणभहियाणि । चडुस-
रीरा केवचिरं का० होति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ,
उक्क० अंतोमुहुत्तं । मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु बिसरीरा केवचिरं का० होति ? णाणा-
जीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया । एगजीवं प० जह० एगसमओ,
उक्क० बेसमया । तिसरीरा केवचिरं का० होति ! णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ।

प्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम क्षुल्लकभवगहण प्रमाण है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है।

विशेषार्थ — पहले ओघसे कालका स्पष्टीकरण कर आए हैं। सामान्य तिर्यंचोंमें उसी प्रकार स्पष्टीकरण कर लेना चाहिए। पंचेन्द्रियतिर्यंच आदिमें भी उसी प्रकार अपनी अपनी विशेषता जानकर कालका स्पष्टीकरण कर लेना चाहिए। तात्पर्य यह है कि जिस मार्गणामें एक जीव और नाना जीवोंकी अपेक्षा अनाहारकोंका जघन्य और उत्कृष्ट जो काल हो वह वहां दो शरीरवाला काल जानना चाहिए। तीन शरीरवालों और चार शरीरवालोंका काल लाते समय कई बातोंका ध्यान रखनेकी आवश्यकता है। यथा—मार्गणाका द्रव्यप्रमाण कितना है और मार्गणा सान्तर है या निरन्तर आदि। ओघसे कालका स्पष्टीकरण करते समय कुछ विशेषताओंका निर्देश किया ही है उन्हें ध्यानमें रखकर यहां और आगे कालका स्पष्टीकरण लेना चाहिए।

मनुष्यगतिकी अपेक्षा मनुष्योंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है ? नानाजीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक तीन पल्य है। चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनियोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक

एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भ-
हियाणि । चटुसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सब्बद्धा । एगजीवं प०
जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुतं । मणुसअपज्जत्तेसु बिसरीरा केवचिरं का० होंति ?
णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० आवलियाए असंखेज्जदिभागो । एगजीवं
पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया । तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणा-
जीवं पडुच्च जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो । एग-
जीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं, उक्क० अंतोमुहुतं संपुण्णं ।

देवगदीए देवेषु बिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ
उक्क० आवलि० असंखे० भागो । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया ।
तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सब्बद्धा । एगजीवं प० जह० दस-
वस्ससहस्साणि बिसमऊणाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि संपुण्णाणि । भवणवा-
सियप्पहुडि जाव सहस्सारकप्पवासियदेवेषु बिसरीरा केवचिरं कालादो होंति ?
णाणाजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो । एग--

जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक तीन पत्य है । चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । मनुष्य अपर्याप्तिकोमें दो शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है । तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट काल पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम क्षुल्लकभवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है ।

विशेषार्थ — मनुष्य अपर्याप्त यह सान्तर मार्गणा है । इसमें निरन्तर यदि जीव पाये जाते हैं तो वे कमसे कम क्षुल्लकभवग्रहणप्रमाण काल तक और अधिक से अधिक पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक रहते हैं । उसके बाद नियमसे अन्तर पड जाता है । इसी विशेषताको ध्यानमें रखकर यहां तीन शरीरवालोंका काल कहा है । शेष कालका स्पष्टीकरण पूर्वमें कही गई विशेषताओंको ध्यानमें रखकर लेना चाहिए ।

देवगतिकी अपेक्षा देवोंमें दो शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है । तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम दस हजार वर्षप्रमाण है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण तेत्तीस सागर है । भव-
नवासियोंसे लेकर सहस्रार कल्पवासी देवों तक दो शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें

जीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया । तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणा-
जीवं प० सब्बद्धा । एगजीवं प० जह० दसवस्ससहस्साणि बिसमऊणाणि, उक्क०
सागरोवमं सादिरेयं । जह० दसवस्ससहस्साणि बिसमऊणाणि, उक्क० पलिदोवमं
सादिरेयं । जह० पलिदोवमस्स अट्टमभागो बिसमऊणो, उक्क० पलिदोवमं सादिरेयं ।
जह० पलिदोवमं सादिरेयं, उक्क० बेसागरोवमाणि सादिरेयाणि । जह० बेसागरो०
सादिरेयाणि, उक्क० सत्त सागरो० सादिरेयाणि । जह० सत्त साग० सादिरेयाणि
उक्क० दस सागरो० सादिरेयाणि । जह० दस सागरो० सादिरेयाणि, उक्क० चोद्दस
सागरोव० सादिरेयाणि । जह० चोद्दस सागरो० सादिरेयाणि, उक्क० सोलस
सागरो० सादिरेयाणि । जह० सोलस सागरो० सादिरेयाणि, उक्क० अट्ठारस
सागरो० सादिरेयाणि । आणद-पाणदप्पहुडि जाव सब्बट्टसिद्धिविमाणवासिय-
देवेषु बिसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च जह० एगसमओ,
उक्क० संखेज्जा समया । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया, ।
तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सब्बद्धा । एगजीवं प० जह०
अट्ठारस सागरोवमाणि सादिरेयाणि, उक्क० बीसं सागरोवमाणि । जह० बीसं सागरो०
समऊणाणि, उक्क० बावीसं सागरोवमाणि । जह० बावीसं सागरो० समऊणाणि,

भागप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय
है । तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक
जीवकी अपेक्षा भवनवासियोंमें जघन्य काल दो समय कम दस हजार वर्षप्रमाण है और
उत्कृष्ट काल साधिक एक सागर है । व्यन्तरोमें जघन्य काल दो समय कम दस हजार वर्षप्रमाण
है और उत्कृष्ट काल साधिक एक पत्यप्रमाण है । ज्योतिषियोंमें जघन्य काल दो समय कम
पत्यका आठवां भागप्रमाण है और उत्कृष्ट काल साधिक एक पत्यप्रमाण है । सौधर्म-ऐशान कल्प
में जघन्य काल साधिक एक पत्य प्रमाण है और उत्कृष्ट काल साधिक दो सागर है । सानत्कुमार
माहेन्द्रमें जघन्य काल साधिक दो सागर है और उत्कृष्ट काल साधिक सात सागर है । ब्रह्म-
ब्रह्मोत्तरमें जघन्य काल साधिक सात सागर है और उत्कृष्ट काल साधिक दस सागर है ।
लान्तव-कापिष्ठमें जघन्य काल साधिक दस सागर है और उत्कृष्ट काल साधिक चौदह सागर है ।
शुक्र महाशुक्रमें जघन्य काल साधिक चौदह सागर है और उत्कृष्ट काल साधिक सोलह सागर
है । शतार-सहस्रारमें जघन्य काल साधिक सोलह सागर है और उत्कृष्ट काल साधिक अठारह
सागर है । आनत-प्राणतसे लेकर सर्वार्थसिद्धिविमानवासो तकके देवोंमें दो शरीरवाले जीवोंका
कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात
समय है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है । तीन
शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी
अपेक्षा आणन-प्राणनमें जघन्य काल साधिक अठारह सागर है और उत्कृष्ट काल बीस सागर
है । आरण-प्रचुननमें जघन्य काल एक समय कम बीस सागर है और उत्कृष्ट काल बाईस

उक्क० तेवीसं सागरोवमाणि । जह० तेवीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० चटुवीसं सागरोवमाणि । जह० चउवीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० पणुवीसं सामरोवमाणि । जह० पणुवीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० छब्बीसं सागरोवमाणि । जह० छब्बीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० सत्तावीसं सागरोवमाणि । जह० सत्तावीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० अट्ठावीसं सागरोवमाणि । जह० अट्ठावीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० एगुणतीसं सागरोवमाणि । जह० एगुणतीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० तीस सागरोवमाणि । जह० तीसं सागरो० समऊणाणि उक्क० एक्कत्तीसं सागरोवमाणि । जह० एक्कत्तीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० बत्तीसं सागरोवमाणि । जह० बत्तीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि । सब्वट्ठे जह० तेत्तीसं सागरो० बिसमऊणाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि संघुणाणि ।

इंदियाणुवादेण एइंदिएसु बिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं षडुच्च सब्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि समया । तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सब्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंगुलस्स असंखे० भागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उत्सप्पिणीओ । चटुसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सब्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं ।

सागर है । प्रथम ग्रैवेयकमें जघन्य काल एक समय कम बाईस सागर है और उत्कृष्ट काल तेईस सागर है । द्वितीय ग्रैवेयकमें जघन्य काल एक समय कम तेईस सागर है और उत्कृष्ट काल चौबीस सागर है । तृतीय ग्रैवेयकमें जघन्य काल एक समय कम चौबीस सागर है और उत्कृष्ट काल पन्चीस सागर है । चतुर्थ ग्रैवेयकमें जघन्य काल एक समय कम पन्चीस सागर है और उत्कृष्ट काल छब्बीस सागर है । पाँचवें ग्रैवेयकमें जघन्य काल एक समय कम छब्बीस सागर है और उत्कृष्ट काल सत्ताईस सागर है । छठे ग्रैवेयकमें जघन्य काल एक समय कम सत्ताईस सागर है और उत्कृष्ट काल अट्ठाईस सागर है । सातवें ग्रैवेयकमें जघन्य काल एक समय कम अट्ठाईस सागर है और उत्कृष्ट काल उनतीस सागर है । आठवें ग्रैवेयक में जघन्य काल एक समय कम उनतीस सागर है और उत्कृष्ट काल तीस सागर है । नौवें ग्रैवेयकमें जघन्य काल एक समय कम तीस सागर है और उत्कृष्ट काल इकतीस सागर है । नौ अनुदिशोंमें जघन्य काल एक समय कम इकतीस सागर है और उत्कृष्ट काल बत्तीस सागर है । चार अनुत्तरविमानोंमें जघन्य काल एक समय कम बत्तीस सागर है और उत्कृष्ट काल तेत्तीस सागर है । सर्वार्थसिद्धिमें जघन्य काल दो समय कम तेत्तीस सागर है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण तेत्तीस सागर है ।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रियोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल तीन समय है । तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो असंख्यात अवसप्पिणी-उत्सप्पिणीके बराबर है । चार शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय

बादरेइंदिएसु बिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क बेसमया । तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जहणुक्कस्सेण एइंदियभंगो । चदुसरीराणं पि एइंदियभंगो । बादरेइंदियपज्जत्तएसु बिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं पडु० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया । तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जाणि वस्स-सहस्साणि । चदुसरीरा ओघं । बादरेइंदियअपज्जत्ता बिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया । तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० खुदाभवग्गहणं बिसमऊणं, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । सुहुमेइंदिया बिसरीरा ओघं । तिसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० खुदाभवग्गहणं तिसमऊणं, उक्क० अंगुलस्स असंखे० भागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उत्सप्पिणीओ । सुहुमेइंदियपज्जत्ता बिसरीरा ओघं । तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं तिसमऊणं, उक्क० अंतोमुहुत्तं । सुहुमेइंदिय-अपज्जत्ता बिसरीरा ओघं । तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा ।

है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । बादर एकेन्द्रियों में दो शरीरवालों का कितना काल है ? नाना जीवों की अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है । तीन शरीरवालों का कितना काल है ? नाना जीवों की अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीव की अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल का भंग एकेन्द्रियों के समान है । चार शरीरवालों के काल का भंग भी एकेन्द्रियों के समान है । बादर एकेन्द्रि पर्याप्तिको में दो शरीर-वालों का कितना काल है ? नाना जीवों की अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है । तीन शरीरवालों का कितना काल है ? नाना जीवों की अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात हजार वर्षप्रमाण है । चार शरीरवालों के काल का भंग ओघ के समान है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तिको में शरीरवालों का कितना काल है ? नाना जीवों की अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है । तीन शरीरवालों का कितना काल है ? नाना जीवों की अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम क्षुल्लकभवग्रहप्रमाण है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । सूक्ष्म एकेन्द्रियों में दो शरीरवालों का काल ओघ के समान है । तीन शरीरवाले जीवों का कितना काल है ? नाना जीवों की अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीव का अपेक्षा जघन्य काल तीन समय कम क्षुल्लकभवग्रहप्रमाण है और उत्कृष्ट काल अंगुल के असंख्यातवें भागप्रमाण है जो असंख्यात अवसप्पिणि-उत्सप्पिणी के बराबर है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तिको में दो शरीरवालों के काल का भंग ओघ के समान है । तीन शरीरवाले जीवों का कितना काल है ? नाना जीवों की अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल तीन समय कम अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तिको में दो शरीरवालों का काल ओघ के समान है ।

एगजीवं प० जह० खुदाभवगहणं तिसमऊणं, उक्क० अंतोमुहुतं । बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय० बिसरीराणं पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ताणं भंगो । तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सब्बद्धा । एगजीवं प० जह० खुदाभवगहणं बिसमऊणं, उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियपज्जत्ताणं पंचिंदिय-तिरिक्खअपज्जत्ताणं भंगो । णवरि तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणा० प० सब्बद्धा । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुतं बिसमऊणं, उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियअपज्जत्ता बिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्कस्सेण आवलियाए असंखे० भागो । एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ उक्क० वेसमया❖ । तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सब्बद्धा । एगजीवं प० जह० खुदाभवगहणं बिसमऊणं, उक्क० अंतोमुहुतं । पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्त० बिसरीराणं बेइंदियभंगो । तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सब्बद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० सागरोवमसहस्सं पुव्वकोडिपुधत्तेणभहियं सागरोवमसदपुधत्तं । चटुसरीरा ओघं । पंचिंदियअपज्जत्ताणं बेइंदियअपज्जत्ताणं भंगो ।

तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल तीन समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवोंमें दो शरीरवालोंका भंग पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंके मान है । तीन शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट काल संख्यात हजार वर्षप्रमाण है । द्वीन्द्रिय पर्याप्त, त्रीन्द्रिय पर्याप्त और चतुरिन्द्रियपर्याप्त जीवोंका भंग पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंके समान है । इतनी विशेषता है कि तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है और उत्कृष्ट काल संख्यात हजार वर्षप्रमाण है । द्वीन्द्रिय अपर्याप्त, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त और चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है । तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त-प्रमाण है । पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका द्वीन्द्रियोंके समान भंग है । तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल क्रमसे पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक एक हजार सागरप्रमाण और सौ सागरपृथक्त्वप्रमाण है । चार शरीरवालोंका भंग ओघके समान है । पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान भंग है ।

❖ प्रतिष्ठा 'उक्क० असंखेज्जणि' इति पाठः ।
समओ, उक्क० वेसमया' इति पाठः ।

❖ अ० का० प्रत्योः 'णाणाजीवं प० जह० एग-

कायाणुवादेण पुढवि०-आउ० बिसरीरा तिसरीरा ओघं। णवरि तिसरीराणं जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं तिसमयूणं। बादरपुढवि०-बादरआउ०-बादरवणप्फदिपत्तेय-सरीरा तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सब्बद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सब्बद्धा। एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं, उक्क० कम्मट्ठिदी। बादरपुढवि-बादरआउ०-बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरपज्जत्त० बिसरीराणं बेइंदियपज्जत्ताणं भंगो। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सब्बद्धा। एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं बिससऊणं उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। बादरपुढवि-बादरआउ०-बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरपज्जत्ता० बिसरीर तिसरीराणं बादरेइंदियअपज्जत्तभंगो। सुहुमपुढवि०-सुहुम-आउ०-सुहुमतेउ०-सुहुमआउ० बिसरीर-तिसरीराणं सुहुमेइंदियभंगो। तेउकाइय-वाउ-का० बिसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा ओघं। बादरतेउकाइय-बादरवाउ० बिसरीर-चदु-सरीराणं बादरेइंदियभंगो। तिसरीराणं बादरपुढविभंगो णवरि एगजीवं प० जह० एग-समओ। बादरतेउ०-बादरवाउ० पज्जत्त० बिसरीराणं बादरपुढविपज्जत्तभंगो।

कायमार्गणाके अनुवादसे पृथिवीकायिक और जलकायिक जीवोंमें दो शरीरवालों और तीन शरीरवालोंका भंग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि तीन शरीरवालोंका जघन्य काल तीन समय कम क्षुद्र भवग्रहप्रमाण है। बादर पृथिवीकायिक बादर जलकायिक और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर जीवोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवको अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहप्रमाण है और उत्कृष्ट काल कर्मस्थितिप्रमाण है। बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर जलकायिक पर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालोंका भंग द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके समान है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवको अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम अन्तर्मूर्त प्रमाण है और उत्कृष्ट काल संख्यात हजार वर्षप्रमाण है। बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त, बादर जलकायिक अपर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंमें समान है। सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म जलकायिक, सूक्ष्म अग्निकायिक, और सूक्ष्म वायुकायिक जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके समान है। अग्निकायिक और वायुकायिकोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग ओघके समान है। बादर अग्निकायिक और बादर वायुकायिकोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग बादर एकेन्द्रियोंके समान है। तीन शरीरवालोंका भंग बादर पृथिवीकायिक जीवोंके समान है। इतनी विशेषता है कि एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है। बादर अग्निकायिक पर्याप्त और बादर वायुकायिक पर्याप्तकोंमें दो शरीरवाले जीवोंका भंग बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तकोंमें

तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं ५० सव्वद्धा । एगजीवं ५० जह० एग-
समओ, उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । चदुसरीरा ओघं । बादरतेउकाइय-
बादरवाउ० अपज्जत्त० बिसरीर-तिसरीराणं बादरेइंदियअपज्जत्तभंगो । वणप्फदिका-
इय० बिसरीर-तिसरीरा ओघं । बादरवणप्फदिकाइय० बिसरीर-तिसरीराणं बादरेइं-
दियभंगो । बादरवणप्फदिकाइयपज्जत्त० बिसरीर-तिसरीराणं बादरेइंदियपज्जत्तभंगो ।
णवरि एदेसु तिसु वि तिसरीराणमेगसमओ णत्थि । बादरवणप्फदि० अपज्जत्त० बिसरीर
तिसरीराणं (बादरेइंदियअपज्जत्तभंगो । सुहुमवणप्फदि० सुहुमणिगोद बिसरीर-तिस-
रीराणं) सुहुमेइंदियभंगो । सुहुमवणप्फदि-सुहुमणिगोदजीवपज्जत्त० बिसरीर-तिसरी-
राणं सुहुमेइंदियपज्जत्तभंगो । सुहुमवणप्फदि-सुहुमणिगोदजीवपज्जत्ताणं सुहुमेइंदियअ-
पज्जत्तभंगो । तसकाइय-तसकाइयपज्जत्त० बिसरीर तिसरीर-चदुसरीराणं पंचिदिय-
पंचिदियपज्जत्ताणं भंगो । णवरि विसेसो सगट्ठिदी भणिदव्वा । तसअपज्जत्ताणं पंचि-
दियअपज्जत्ताणं भंगो ।

जोगाणुवादेण पंचमण०-पंचवचि० तिसरीरा चदुसरीरा केवचिरं कालादो होंति ?
णाणाजीवं ५० सव्वद्धा । एगजीवं ५० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । काय-
जोगीसु बिसरीर-तिसरीर-चदुसरीरा ओघं । ओरालियकायजोगीसु तिसरीरा

समान है । तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है ?
एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात हजार वर्षप्रमाण है।
चार शरीरवालोंका भंग ओघके समान है । बादर अग्निकायिक अपर्याप्त और बादर वायुका-
यिक अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग बादर एकेन्द्रिय अपर्या-
प्तकोंके समान है । वनस्पतिकायिकोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग ओघके
समान है । बादर वनस्पतिकायिकोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग बादर एके-
न्द्रियोंके समान है । बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तकोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका
भंग बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके समान है । इतनी विशेषता है कि इन तीनों ही वनस्पतिकायिकोंमें
तीन शरीरवालोंका एक समय काल नहीं है । बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तकोंमें दो शरीर-
वाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान है । सूक्ष्म वनस्प-
तिकायिकोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके समान है ।
सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त और सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरी-
रवाले जीवोंका भंग सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान है । त्रसकायिक और त्रसकायिक
पर्याप्तकोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग पंचेन्द्रिय और
पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके समान है । इतनी विशेषता है कि अपनी स्थिति कहनी चाहिए । त्रस
अपर्याप्तकोंका भंग पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान है ।

योगमार्गणाके अनुवादसे पाँचों मनोयोगी और पाँचों वचनयोगी जीवोंमें तीन शरीरवाले
और चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक
जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । काययोगी जीवोंमें

केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बावीसं वस्ससहस्साणि अंतोमुहुत्तूणाणि । चदुसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । ओरालियमिस्सकायजोगीसु तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । वेउव्वियकायजोगीसु तिसरीराणं मणजोगिभंगो । वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं पडुच्च जह० अंतोमुहुत्तं विसमऊणं, उक्क० पलिदोवमस्स असंखे० भागो । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं विसमऊणं । तं पुण सव्वट्ठे उप्पण्णस्स होदि । उक्क० अंतोमुहुत्तं । तं गुण सत्तमाए पुढवीए उप्पण्णस्स होदि । आहारकायजोगीसु चदुसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । आहारमिस्सकायजोगीसु चदुसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । एगजीवं प० जहण्णुक्क० अंतोमुहुत्तं । कम्मइयकायजोगीसु विसरीरा ओघं । तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जह० तिण्णि समया, उक्क० असंखेज्जा समया । एगजीवं प० जहण्णुक्क० तिण्णि समया ।

दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग ओघके समान है । औदारिक-काययोगियोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त कम बाईस हजार वर्षप्रमाण है । चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । औदारिक मिश्रकाययोगियोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । वैक्रियिककाययोगियोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका भंग मनोयोगी जीवोंके समान है । वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम अन्तर्मुहूर्त है जो सर्वार्थसिद्धिमें उत्पन्न होनेवालेके होता है? तथा उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त जो सातवां पृथिवीमें उत्पन्न होनेवालेके होता है । आहारकाययोगियोंमें चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । आहारकमिश्रकाययोगियोंमें चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । कर्मणकाययोगी जीवोंमें दो शरीरवालोंका भंग ओघके समान है । तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल तीन समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल तीन समय है ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदे बिसरीराणं पंचिदियपज्जत्तभंगो । तिसरीराणं केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० पलि-
दोवमसदपुधत्तं । चदुसरीरा ओघं । एवं पुरिसवेदाणं । उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं ।
णवंसयवेदा ओघं । अवगदवेदा तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प०
सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा ।

कसायाणुवादेण कोध माण-माया-लोभकसाइसु बिसरीरा चदुसरीरा ओघं ।
तिसरीराणं मणोजोगिभंगो । अकसाईणमवगदवेदभंगो ।

णाणाणुवादेण मदि-सुदअण्णाणीसु बिसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा ओघं । विहं-
गणाणी० तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह०
एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तूणत्तेत्तीससागरोवमाणि । चदुसरीरा ओघं । आभिणि-
सुद-ओहिणाणीसु बिसरीराणं पुरिसवेदभंगो । तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणा-
जीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० छावट्टिसागरोवमाणि सा-
दिरेयाणि । तं जहा- एगो मिच्छाइट्ठी दव्वलिगी अंतोमुहुत्तव्वभहियअट्टारस

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेदी जीवोंमें दो शरीरवालोंका भंग पंचेद्रिय पर्याप्तकोंके
समान है । तीन शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक
जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल सौ पत्य पृथक्त्वप्रमाण है । चार
शरीरवालोंका भंग ओघके समान है । इसी प्रकार पुरुषवेदी जीवोंके जानना चाहिए । इतनी
विशेषता है कि इनमें तीन शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट काल सौ सागरपृथक्त्व-
प्रमाण है । नपूसकवेदी जीवोंका भंग ओघके समान है । अपगतवेदी जीवोंमें तीन शरीरवालोंका
कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक
समय है और उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है ।

कषायमार्गणाके अनुवादसे क्रोधकषायवाले, मानकषायवाले, मायाकषायवाले और लोभ-
कषायवाले जीवोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग ओघके समान है । तीन
शरीरवाले जीवोंका भंग मनोयोगी जीवोंके समान है । अकषायी जीवोंका भंग अपगतवेदवाले
जीवोंके समान है ।

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे मत्तज्ज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीर-
वाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग ओघके समान है । विभंगज्ञानियोंमें तीन शरीरवाले
जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवका अपेक्षा जघन्य
काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त कम तेतीस सागर है । चार शरीरवालोंके
कालका भंग ओघके समान है । अभिनीबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें दो शरी-
रवाले जीवोंके भंग पुरुषवेदी जीवोंके समान है । तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ?
नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और
उत्कृष्ट काल साधिक छयासठ सागर है । यथा- एक मिथ्यादृष्टि द्रव्यलिगी अन्तर्मुहूर्त अधिक

सागरोवमाणि देवाउअं बंधिदूण आणद-पाणदकप्पवासियदेवेसु उववण्णो, छहि पज्जतोहि पज्जत्तयदो होदूण अट्टारससागरोवमाणं बहि तिण्णि-वि करणाणि कादूण उवसमसम्मत्तं घेत्तूण वेदगं पडिवण्णो । पुणो अट्टारससागरोवमाणि सम्मत्तमणुपालेदूण अविणट्टेहि तोहि णाणेहि कालं कादूण पुव्वकोडाउओ मणुस्सो जादो । पुणो तिणाणी चेव होदूण पुव्वकोडीए ऊणवीससागरोवमट्ठिदीओ देवो जादो । तत्तो चुदो पुव्वकोडाउओ मणुस्सो जादो । पुणो दोपुव्वकोडीहि ऊणअट्टावीससागरोवमट्ठिदीओ देवो होदूण पुणो पुव्वकोडाउओ मणुस्सो जादो । पुणो तेत्तीसाउअं बंधिदूण अंतोमुहुत्तावसेसे खइयसम्माइट्ठी होदूण सव्वट्ठे उववण्णो । तदो पुव्वकोडाउओ मणुस्सो होदूण अंतोमुहुत्तावसेसे सिज्झिदव्वए त्ति केवलणाणी जादो । एवमुवसमसम्मत्तंतोमुहुत्तेण पुव्वकोडिअब्भहियतेत्तीससागरोवमेहि सादिरेयाणि छावट्ठिसागरोवमाणि । चदुसरीरा ओघं । मणपज्जवणाणीसु तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उवक० पुव्वकोडी देसूणा । चदुसरीरा ओघं । केवलणाणी० अवगदवेदभंगो । णवरि एगसमओ णत्थि ।

संजमाणुवादेण संजदेसु तिसरीराणमवगदवेदभंगो । चदुसरीरा ओघं । सामाइय-

अठारह सागर प्रमाण देवायुका बन्ध करके आनत-प्राणत कल्पवासी देवोंमें उत्पन्न हुआ । छह पर्याप्तियोंसे पर्याप्त होकर अठारह सागरके बाहर तीनों ही करणोंको करके उपशमसम्यक्त्वको ग्रहण करके वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ । पुनः अठारह सागर काल तक सम्यक्त्वका अनुपालन करके विनाशको नहीं प्राप्त हुए तीन ज्ञानोंके साथ मरकर पूर्वकोटिकी आयुवाला मनुष्य हुआ । पुनः तीनों ही ज्ञानवाला होकर पूर्वकोटिसे कम बीस सागरकी स्थितिवाला देव हुआ । वहाँसे च्युत होकर पूर्वकोटिकी आयुवाला मनुष्य हुआ । पुनः दो पूर्वकोटि कम अट्ठाईस सागरकी आयुवाला देव होकर पुनः पूर्वकोटिकी आयुवाला मनुष्य हुआ । पुनः तेतीस सागरप्रमाण आयुका बन्ध करके अन्तर्मुहूर्त काल शेष रहने पर क्षायिक सम्यग्दृष्टि होकर सर्वार्थसिद्धिमें उत्पन्न हुआ । अनन्तर पूर्वकोटिकी आयुवाला मनुष्य होकर अन्तर्मुहूर्त काल शेष रहनेपर सिद्ध होनेवाला है इसलिए केवलज्ञानी हो गया । इस प्रकार उपशमसम्यक्त्वके अन्तर्मुहूर्त और साधिक पूर्वकोटि तेतीस सागर अधिक छयासठ सागरकाल प्राप्त होता है । चार शरीरवाले जीवोंके कालका भंग ओघके समान हैं । मनःपर्ययज्ञानी जीवोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है । चार शरीरवालोंके कालका भंग ओघके समान है । केवलज्ञानी जीवोंमें अपगतवेदवाले जीवोंके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि एक समय काल नहीं है ।

संयममाणेणाके अनुवादसे संयतोंमें तीन शरीरवालोंमें अदगत वेपवाले जीवोंके समान भंग है । चार शरीरवाले जीवोंका कालका भंग ओघके समान है । सामायिकसंयत और छेदो-

❖ अ० प्रती '—सागरोवमाणं अभिहं तिण्णि' इति पाठः ।

छेदोवट्टावणसंजदेसु तिसरीर-चदुसरीराणं मणपज्जवभंगो । परिहारसंजदेसु तिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा । सुहुमसांपराइय० तिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं प० जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । एगजीवं प० जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । जहावखाद० अवगदवेदभंगो । संजदासंजदा तिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा । सा वि तिरिक्खेसु तिहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणा कादूण घत्तव्वा । चदुसरीरा ओघं । असंजदाणं मदिअण्णाणिभंगो ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीणं तसपज्जत्तभंगो । अचक्खुदंसणी० ओघं । ओहि-दंसणीणमोहिणाणी० भंगो । केवलदंसणीणं केवलणाणी० भंगो ।

लेस्साणुवादेण किण्ह-णील-काउलेस्सिएसु बिसरीरा चदुसरीरा ओघं । तिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि साविरेयाणि, सत्तसागरो० साविरे०

पस्थापनासंयत जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भंग मनःपर्यय-ज्ञानी जीवोंके समान है । परिहारविशुद्धिसंयतोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नानाजीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है । सूक्ष्मसांपरायसंयतोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । यथाख्यातसंयतोंमें अपगतवेदवाले जीवोंके समान भंग है । संयतासंयतोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्वकोटि है । वह भी तिर्यञ्चोंमें तीन अन्तर्मुहूर्त कम करके ग्रहण करना चाहिए । चार शरीरवालोंका भंग ओघके समान है । असंयतोंमें मृत्युज्ञानी जीवोंके समान भंग है ।

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनवाले जीवोंका भंग त्रसपर्याप्त जीवोंके समान है । अचक्षुदर्शनवाले जीवोंमें ओघके समान भंग है । अवधिदर्शनवाले जीवोंका भंग अवधिज्ञानी जीवोंके समान है । तथा केवलदर्शनवाले जीवोंमें केवलज्ञानी जीवोंके समान भंग है ।

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले और कापोतलेश्यावाले जीवोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भंग ओघके समान है । तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल कृष्णलेश्यामें साधिक तेत्तीस सागर, नीललेश्यामें साधिक सत्रह सागर तथा कापोत लेश्यामें साधिक सात सागर है । यहाँ साधिकका प्रमाण दो अंतर्मुहूर्त

● म० प्रतिपाठोऽयम् । ता० प्रती ' केवलदंसणीए (सु) केवलणाणी० ' अ० का० प्रत्योः

' केवलदंसणीए केवलणाणी० ' इति पाठः ।

सत्तसागरो० सादिरे० । अदिरेगस्स पमाणं वे अंतोमहुत्ताणि । तेउ-पम्मलेस्सिएसु बिस-
रीराणं णारगभंगो । तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं
प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसागरोवमाणि सादिरेयाणि, अट्टारससागरो० सादिरे-
याणि । चटुसरीरा ओघं । सुक्कलेस्सिएसु बिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं
प० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क०
बेसमया । तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह०
एगसमओ, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । चटुसरीरा ओघ ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिय-अभवसिद्धियाणमोघो । सम्भत्ताणुवादेण सम्माइट्ठी०
बिसरीर-तिसरीर-चटुसरीराणमाभिणि० भंगो । खड्डयसम्माइट्ठी० बिसरीर-तिसरीर-
चटुसरीराणं सुक्कलेस्सियभंगो । वेदगसम्माइट्ठी० बिसरीर-चटुसराराणं सम्माइट्ठि-
भंगो । तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एग-
समओ, उक्क० छावट्टिसागरोवमाणि । उवसमसम्माइट्ठी० बिसरीराणं सुक्कलेस्सिय-
भंगो । तिसरीरा चटुसरीरा केवचिर का० होंति? णाणाजीवं प० जह० अंतोमहुत्तं,
उक्क० पलिदो० असखे० भागो । एगजावं प० जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमहुत्त ।

है । पीतलेश्यावाले और पद्मलेश्यावाले जीवोंमें दो शरीरवाले जीवोंके कालका भंग नारकियोंके
समान है । तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है ।
एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पीतलेश्यामें साधिक दो सागर
तथा पद्मलेश्यामें साधिक अठारह सागर है । चार शरीरवालोंके कालका भंग ओघके समान
है । शुक्ललेश्यावाले जीवोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य
काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक
समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है । तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना
जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट
काल साधिक तेत्तीस सागर है । चार शरीरवालोंका काल ओघके समान है ।

भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्यों और अभव्योंका भंग ओघके समान है । सम्यक्त्व
मार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके
कालका भंग आभिनिबोधकज्ञानी जीवोंके समान है । क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवाले, तीन
शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भंग शुक्ललेश्यावाले जीवोंके समान है । वेदक-
सम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भंग सम्मद्दृष्ट जीवोंके
समान है । तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है ।
एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल छयासठ सागर है ।
उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवाले जीवोंके कालका भंग शुक्ललेश्यावाले जीवोंके समान है ।
तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा
जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । एक जीवकी

सासणसम्माइठ्ठी० बिसरीराणं सम्माइठ्ठिभंगो । तिसरीरा चदुसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० छ आवलियाओ । सम्मामिच्छाइठ्ठी० तिसरीरा चदुसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० दोण्हं पि पलिदो० असंखे० भागो । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । चदुसरीराणं कथमेगसमओ ? सम्मामिच्छत्तद्वाए एगसमयावसेसाए विउव्विदाणमेगसमओ । मिच्छाइठ्ठी० बिसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा ओघं ।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु बिसरीर-तिसरीर-चदुसरीराणं पंचिदियपज्जत्तभंगो । असण्णी० तिसरीर-तिसरीर-चदुसरीराणमोघं । णेवसण्णि-णेवअसण्णीसु तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सब्बद्वा । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं,

अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवाले जीवोंके कालका भंग सम्यग्दृष्टियोंके समान है । तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल छह आवलिप्रमाण है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दोनोंका पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ।

शका-- चार शरीरवालोंका एक समय काल कैसे है ?

समाधान-- सम्यग्मिथ्यात्वके कालमें एक समय शेष रहने पर विक्रिया करनेवालोंके एक समय काल प्राप्त होता है ।

मिथ्यादृष्टि जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भंग ओघके समान है ।

विशेषार्थ -- उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें नाना जीवोंकी अपेक्षा तीन शरीरवालोंका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है यह तो स्पष्ट ही है, क्योंकि, जो उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त करता है वह अन्तर्मुहूर्त काल तक उसके साथ नियमसे रहता है । यहाँ उपशमश्रेणिसे नीचे उपशमसम्यक्त्वके साथ मरण नहीं होता इसलिए तथा जो इसके कालमें विक्रिया करके चार शरीरवाला होता है उसके अन्तर्मुहूर्त कालके पहले उपशमसम्यक्त्वसे पतन नहीं होता, इसलिए उपशमसम्यक्त्वमें चार शरीरवालोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त कहा है । शेष कथन सुगम है ।

संज्ञी मार्गणाके अनुवादसे संज्ञियोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भंग पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके समान है । असंज्ञी जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भंग ओघके समान है । न संज्ञी और न असंज्ञी जीवोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका काल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा

उक्क० पुव्वकोडी देसूणा ।

आहाराणुवादेण आहारी० तिसरीर-चदुसरीरा ओघं । अणाहारी० बिसरीरा ओघं । तिसरीरा केवचिरं का० होति ? णाणाजीवं प० जह० तिणिण समया, उक्क० अंतोमुहुत्तं । एगजीवं प० जह० तिणिण समया, उक्क० अंतोमुहुत्तं । एवं कालाणुयोगद्वारं समत्तं ।

अंतराणुगमेण दुविहो णिद्देसो-ओघेण आदेसेण य । ओघेण बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होति ? णाणाजीवं प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० खुद्दामवगहणं तिसमऊणं, उक्क० अंगुलस्स असंखे० भागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उत्सप्पिणीओ । तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजीवं प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजीवे प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० अणंतकालमसंखेज्जा पोगलपरियट्ठा ।

काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्व-कोटिप्रमाण है ।

आहारमार्गणाके अनुवासे आहारकोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भंग ओघके समान है । अनाहारक जीवोंमें दो शरीरवालोंके कालका भंग ओघके समान है । तीन शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल तीन समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल तीन समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ।

इस प्रकार कालानुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

अन्तराणुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है--ओघ और आदेश । ओघसे दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है । नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर तीन समय कम क्षुल्लक भवगहणप्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो असंख्यात अवसप्पिणी-उत्सप्पिणीके बराबर है । तीन शरीरवाले जीवोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । चार शरीरवाले जीवोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंका अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है ।

विशेषार्थ--दो शरीरवाले अनाहारक होते हैं और अनाहारक जीवोंका कभी अभाव नहीं होता, इसलिए नाना जीवोंकी अपेक्षा दो शरीरवाले जीवोंके अन्तरका निषेध किया है । एक

❖ ता० प्रती चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजीवं पटुच्च णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं पटुच्च ज० एगसमओ उक्क० अंतोमुहुत्तं । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजीवं प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० इति पाठः ।

आदेसेण गवियाणुवादेण निरयगवीए णेरइएसु निसरीराणमंतरं केवचिरं का० होवि ?
 णाणाजीवं ५० जह० एगसमओ, उवक० चटुवीसमुहुत्ता । एगजीवं ५० णत्थि अंतरं ।
 तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होवि ? णाणेगजीवं ५० णत्थि अंतरं । पढमादि जाव
 सत्तमपुढवि स्ति ताव बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होवि ? णाणाजीवे ५० जह०
 सव्वासि पुढवीणमेगसमओ, उवक० अडदालीसं मुहुत्ता पक्खी मासो बेमासा चत्तारिमासा
 छम्मासा बारसमासा । एगजीवं ५० णत्थि अंतरं निरंतरं । तिसरीराणमसमयदो वि
 जीवोंकी अपेक्षा दो शरीरवालोंका जघन्य अन्तर तीन समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण प्राप्त
 होता है, क्योंकि, अपर्याप्त जीवकी जघन्य भवस्थितिमेंसे अनाहारकके तीन समय कम कर देने
 पर शेष काल आहारक अवस्थाका बच रहता है । इसके बाद वह जीव पुनः अनाहारक हो सकता
 है । तथा उत्कृष्ट अन्तरकाल अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है, क्योंकि, यदि कोई जीव
 निरन्तर आहारक रहता है तो इतने काल तक ही वह आहारक रहता है । इसके पूर्व और बादमें
 वह नियमसे अनाहारक होता है । तीन शरीरवाले जीव भी निरन्तर पाये जाते हैं, इसलिए ओघसे
 नाना जीवोंकी अपेक्षा इनके अन्तरकालका निषेध किया है । तथा दो शरीरवालोंका जघन्य काल
 एक समय और चार शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त पहले बतला
 आये है । वही यहाँ एक जीवकी अपेक्षा तीन शरीरवालोंका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल
 जानना चाहिए । यदि तीन शरीरवाला एक समयके लिए दो शरीरवाला होकर पुनः तीन शरीर-
 वाला हो जाता है तो जघन्य अन्तर एक समय प्राप्त होता है और तीन शरीरवाला अन्तर्मुहूर्तके
 लिए चार शरीरवाला होकर पुनः तीन शरीरवाला हो जाता है तो उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त
 प्राप्त होता है । यह उक्त कथनका तात्पर्य है । चार शरीरवाले नाना जीव भी निरन्तर पाये जाते
 हैं, इसलिए नाना जीवोंकी अपेक्षा चार शरीरवालोंके अन्तरकालका निषेध किया है । तथा
 विक्रिया करके उसका उपसहार करनेके बाद या आहारक शरीरको उत्पन्न करनेके बाद पुनः
 विक्रिया या आहारक शरीरको उत्पत्ति अन्तर्मुहूर्त कालका अन्तर पडे बिना नहीं हो सकती,
 इसलिए एक जीवकी अपेक्षा चार शरीरवालोंका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त कहा है । और जो
 जीव अग्निकायिक पर्याप्त और वायुकायिक पर्याप्त अवस्थाको छोड़कर अनन्त काल तक निरन्तर
 एकेन्द्रियोंमें परिभ्रमण करता रहता है उसके इतने काल तक चार शरीरकी उत्पत्ति नहीं होती,
 इसलिए एक जीवकी अपेक्षा चार शरीरवालोंका उत्कृष्ट अन्तर अनन्त कालप्रमाण कहा है ।

आदेशसे गति मार्गणाके अनुवादसे नरकगतिकी अपेक्षा नारकियोंमें दो शरीरवालोंका
 अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर
 चौबीस मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल
 कितना है ? नाना जीव और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । पहली पृथिवीसे लेकर
 सातवीं पृथिवी तकके नारकियोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है । नाना जीवोंकी
 अपेक्षा सब पृथिवीयोंमें जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर पहली पृथिवीमें
 अडतालीस मुहूर्त, दूसरी पृथिवीमें एक पक्ष, तीसरी पृथिवीमें एक मास, चौथी पृथिवीमें दो मास,
 पाँचवीं पृथिवीमें चार मास, छठी पृथिवीमें छह मास और सातवीं पृथिवीमें बारह मास है । एक
 जीवकी अपेक्षा अन्तर काल नहीं है निरन्तर है । तीन शरीरवालोंका नाना और एक जीव

णत्थि अंतरं निरंतरं ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु विसरीर-तिसरीर-चदुसरीराणमोघं । पंचिदियति-
रिक्ख-पंचिदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिदियतिरिक्खजोणिणीसु विसरीराणमंतरं केवचिरं
का० होदि ? णाणाजीवं प० जह० तिण्णं पि एगसमओ, उक्क० पढमाणमंतोमुहुत्तं,
विदिय-तदीयाणं चदुवीसमुहुत्ता । एगजीवं प० जह० खुद्दामवग्गहणं विसमऊणं
अंतोमुहुत्तं विसमऊणं, उक्क० अपज्जत्तअंतोमुहुत्तब्भहियपुव्वकोडिपुधत्तं विदिय-तदि-
यतिरिक्खाणं संपुण्णं पुव्वकोडिपुधत्तं । तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणा-
जीवं पडुच्च णत्थि अंतरं निरंतरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं ।
चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजीवं प० णत्थि अंतरं निरंतरं । एग-
जीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० तिण्णं पलिवोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि ।

दोनों प्रकारसे भी अन्तर नहीं हैं निरन्तर है ।

विशेषार्थ-- नरकमें यदि विग्रहगतिसे उत्पन्न होता है तो प्रारंभके एक या दो समय तक जीव दो शरीरवाला रहता है और उसके बाद तीन शरीरवाला हो जाता है । जो अपनी पर्यायके अन्त तक तीन शरीरवाला ही रहता है । तथा नरकसे निकलकर पुनः नरकमें जीव नहीं उत्पन्न होता, इसलिए तो यहाँ एक जीवकी अपेक्षा दो शरीरवालों और तीन शरीरवालोंके अन्तर कालका निषेध किया है । तथा नरकगतिका कभी अभाव नहीं होता, इसलिए नाना जीवोंकी अपेक्षा तीन शरीरवालोंके अन्तरकालका निषेध किया है । परन्तु यह सम्भव है कि नरकमें या प्रथमादि नरकोंमें कोई जीव कमसे कम एक समय तक न उत्पन्न हो, इसलिए सर्वत्र दो शरीर-वालोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय कहा है और सामान्यसे नरकमें अधिकसे अधिक चौबीस मूहूर्त तक कोई जीव नहीं उत्पन्न होता । तथा प्रथमादि नरकोंमें अधिकसे अधिक कमसे अडतालीस मूहूर्त, एक पक्ष, एक माह, दो माह, चार माह, छह माह और एक वर्ष तक नहीं उत्पन्न होता, इसलिए नाना जीवोंकी अपेक्षा दो शरीरवालोंका सामान्यसे नरकमें और प्रथमादि नरकोंमें उत्कृष्ट अन्तर उक्त कालप्रमाण कहा है ।

तिर्यञ्चगतिमें तिर्यञ्चोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भग्न ओषके समान है । पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च पर्याप्त और पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च योनितियोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा तीनोंका ही जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अंतर प्रथमका अंतर्मुहूर्त है तथा द्वितीय और तृतीयका चौबीस मूहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंमें दो समय कम क्षल्लक भवग्रहणप्रमाण और शेष दो में दो समय कम अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंमें अपर्याप्तकोंका अंतर्मुहूर्त मिलाकर पूर्वकोटि पृथक्त्वप्रमाण तथा दूसरे और तीसरे प्रकारके तिर्यञ्चोंमें सम्पूर्ण पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अंतर पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक तीन पक्षप्रमाण है । पञ्चेन्द्रिय

पंचिद्वयतिरिक्खअपज्जत्तं । विसरीराणमंतरं केवचिरं कां होदि ? णाणाजी० प० जहं । एगसमओ, उक्क० अंतोमूहुत्तं । एगजीवं प० जहं । खुद्दाभवग्गहणं विसमऊणं, उक्कस्सेण पण्णारस अंतोमूहुत्ताणि । तिसरीराणमंतरं केवचिरं कां होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जहं । एगसमओ, उक्क० बेसमया ।

मणुसगदीए मणुस्सेसु मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु विसरीराणमंतरं केवचिरं कां होदि ? णाणाजी० प० जहं । तिण्णं पि एगसमओ, उक्क० चटुवीस मूहुत्ता । एगजीवं प० जहं । खुद्दाभवग्गहणं विसमऊणं अंतोमूहुत्तं विसमऊणं, उक्क० पुब्बकोडिपुधत्तं । तिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जहं । एगसमओ, उक्क० अंतोमूहुत्तं । चटुसरीराणमंतरं । केवचिरं कां होदि ? णाणाजी० पडुक्क णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जहं । अंतोमूहुत्तं, उक्क० तिण्णि पलिदो । पुब्बकोडिपुधत्तेणम्महियाणि । मणुसअपज्जत्तं ।

तिर्यञ्च अपर्याप्तिकोमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर पन्द्रह अन्तर्मुहूर्त है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर दो समय है ।

विशेषार्थ-सामान्य तिर्यञ्चोंका भंग ओषके समान है यह स्पष्ट ही है । पञ्चेन्द्रिय-र्यञ्च आदिमें दो शरीरवाले आदिका अन्तर घटित करते समय तिर्यञ्च तिर्यञ्चोंमें उत्पन्न होते हैं इस बातको ध्यानमें रखकर अन्तरको घटित करना चाहिए । यहाँ जो विशेष बात कहनी है वह यह कि पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च पर्याप्त, पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिनी और पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त जीवोंमें लगातार यदि कोई जाव उत्पन्न न हो तो अधिकसे अधिक प्रथममें अन्तर्मुहूर्त काल तक, दूसरे-तोसरे भेदमें चौबीस मुहूर्त तक और अन्तके भेदमें अन्तर्मुहूर्त तक नहीं उत्पन्न होता । इन सबमें नहीं उत्पन्न होनेका काल कमसे कम एक समय है यह स्पष्ट ही है । यही कारण है कि इनमें नाना जीवोंकी अपेक्षा दो शरीरवालोंका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अपने अपने अनुत्पत्तिके काल प्रमाण कहा है । इसी प्रकार आगे भी अपनी अपनी विशेषताका विचार कर अन्तरकाल घटित कर लेना चाहिए ।

मनुष्यगतिकी अपेक्षा मनुष्योंमें मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनियामोंमें दो शरीरवालों का अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा तीनोंका ही जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर चौबीस मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर प्रथममें दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण और शेष दोमें दो समय कम अन्तर्मुहूर्त प्रमाण और उत्कृष्ट अन्तर पूर्वकोटि-पृथक्त्वप्रमाण है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर पूर्वकोटि-

बिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होवि ? णाणाजी० प० जहण्ण० एगसमओ, उवकस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागो । एगजीवं प० जहण्णेण खट्वाभवगहणं बिसमऊणं, उवकस्सेण सत्त अंतोमूहुत्ताणि । तिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होवि ? णाणाजी० प० जहण्णेण एगसमओ, उवकस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागो । एगजीवं प० जहण्णेण एगसमओ उवकस्सेण वेसमया ।

देवगदीए देवेसु बिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होवि ? णाणाजी० प० जहण्णेण एगसमओ, उवकस्सेण चटुवीसं मूहुत्तं । एगजीवं प० णत्थि अंतरं । तिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होवि ? णाणेगजीवे प० णत्थि अंतरं । भवणवासिय-प्पहुडि जाव सव्वट्टुसिद्धिविमाणवासियदेवा त्ति बिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होवि ? णाणाजीवे प० जहण्णेण सव्वेसिमेगसमओ, उवकस्सेण भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसिय-सोहमीसाणदेवाणं अड्ढालीस मूहुत्ता सणक्कुमार-माहिदे पक्खो बम्ह-बम्हुत्तर-लान्तव-काविट्ठेवेसु मासो सुक्कमहासुक्क-सवर-सहस्सारकप्पवासियदेवेसु वे मासा आणद-पाणददेवेसु चत्तारि मासा

पृथक्त्व अधिक तीन पत्य है । मनुष्य अपर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका अंतरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अंतर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम क्षूलक भवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर सात अन्तर्मुहूर्त है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर दो समय है ।

विशेषार्थ-- पहले अपर्याप्त पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंमें एक जीवकी अपेक्षा दो शरीरवालोंका उत्कृष्ट अन्तर पन्द्रह अन्तर्मुहूर्त कह आये हैं और यहाँ सात अन्तर्मुहूर्त प्रमाण ही कहा है । सो इसका कारण यह है कि तिर्यञ्च संज्ञी और असंज्ञी दो प्रकारके होते हैं, इसलिए वहाँ संज्ञीके आठ असंज्ञीके आठ इस प्रकार सोलह भवोंको ग्रहण कर उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त किया गया है । पर मनुष्योंमें संज्ञी ही होते हैं, इसलिए सज्जियोंके आठ भवोंका ग्रहण कर उत्कृष्ट अन्तर लाया गया है । यहाँ दोनों स्थलों पर भवग्रहणके प्रारम्भमें और अन्तिम भवके ग्रहण करनेके प्रारम्भमें दो शरीरवाला उत्पन्न कराकर यह अन्तरकाल लाना चाहिए ।

देवगतिकी अपेक्षा देवोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर चौवास मूहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीव और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । भवनवासियोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धिविमानवासी तकके देवोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर सबका एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी और सौघर्म-ऐशानकल्पके देवोंमें अड्ढालीस मूहूर्त, सन्तकुमार-माहेन्द्रमें एक पक्ष, ब्रह्म ब्रह्मोत्तर, लान्तव और काविष्ठमें एक माह, शुक, महाशुक, शतार और सहस्सार कल्पवासी देवोंमें दो माह, आनत और प्राणतके देवोंमें

आरणच्चुददेवेसु छम्मासा णवगेवज्जदेवेसु बारसमासा णवअणुदिस-चत्तारिअणुत्तर-
विमाणवासियदेवेसु वासपुधत्तं सब्बट्ठे पलिदोवमस्स संखे०भागो ॥ एगजीवं प०
णत्थि अंतरं । तिसरीराणमंतरं णाणेगजीवे पडुच्च उभयदो वि णत्थि अंतरं णिरंतरं ।

इंदियाणुवादेण एइंदिया ओघं । णवरि चदुसरीराणं एगजीवं पडुच्च उक्कस्सेण
पलिदो० असंखे०भागो, वेउत्तियसंतकम्मियाणं चेव उत्तरसरीरविउक्कणणियमदं-
सणादो । बादरेइंदिय० बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि
अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० खूद्दामवग्गहणं बिसमऊणं, उक्क० अंगुलस्स
असंखे०भागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उत्सप्पिणीओ । तिसरीरा ओघं । चदुसरीराण-

चार माह, आरण और अच्युतके देवोंमें छह माह, नौ ग्रैवेयकके देवोंमें बारह माह, नौ
अनुदिश और चार अनुत्तरविमानवासी देवोंमें वर्षपृथक्त्व और सर्वार्थसिद्धिमें पत्यके असंख्या-
तवें भागप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल
कितना है ? नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा दोनों प्रकारसे अन्तरकाल नहीं है,
निरन्तर है ।

विशेषार्थ-- षट्खण्डागम कृतिअनुयोगद्वारमें अन्तरपरूवणाके समय भी देवों और
उनके अवान्तर भेदोंमें इस अन्तरकालका निर्देश किया है पर वहाँ भवनत्रिकके अडतालीस
मूहूतं सौधर्मादिकमें एक पक्ष, सनत्कुमारद्विकमें एक माह, ब्रह्मोत्तर आदि चारमें दो महिना,
शुक्र आदिचारमें चार महिना, आनत आदि चारमें छह महिना, नौ ग्रैवेयकोंमें बारह महिना
अनुदिशों और अनुत्तरविमानोंमें वर्षपृथक्त्व और सर्वार्थसिद्धिमें पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण
उत्कृष्ट अन्तर कहा है । यहाँ कहे गये अन्तरसे उसमें कहीं कहीं फरक आता है सो जानकर
इसका निर्णय करना चाहिए । यह सम्भव है कि इस विषयमें दो उपदेश मिलते हों और
उनमेंसे एकका संकलन वहाँ किया हो और दूसरेका यहां । जो भी हो, हमें यहां सब प्रति-
योंमें यह पाठ मिला है, इसलिए उसे वैसा ही रखा है ।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रियोंका भंग ओघके समान है । इतनी विशेषता है
कि चार शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है,
क्योंकि, त्रैक्रियिकसत्कर्मवालोंके ही उत्तर शरीरकी विक्रियाका नियम देखा जाता है । बादर
एकेन्द्रियोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल
नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम क्षुल्लकभवग्रहणप्रमाण
है और उत्कृष्ट अन्तर अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो असंख्यात अवसप्पिणी-उत्स-
प्पिणीके बराबर है । तीन शरीरवालोंका भंग ओघके समान है । चार शरीरवालोंका अन्तर-

● उक्कस्सेण भवणवासिय-वाणवेत्तर-जोदिसियाणं पादेक्क अडतालीस महुत्ता । सोहम्मीसाणे पक्खो ।
सणक्कुमार-माहिदे मासी । बह्व-बह्वोत्तर-लांतव-काविट्ठे वेमासा । सुक्क-महसुक्क-सदार-सहससारम्मि
चत्तारिमासा । आणद-पाणद-आरणच्चुदेसु छम्मासा । णवगेवज्जेसु बारसमासा । अणुदिसादि जाव अव-
राइद त्ति वासपुधत्तं । सब्बट्ठे पलिदोवमस्स असंखेज्जिभागो । प० खं, पु० ९, पृ० ४०८ ।

मंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं पडुच्च जह० खुद्दाभवग्गहणं अंतोमुहुत्तं वा, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो । बादरेइंदिय-पज्जत्त० बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं बिसमऊणं, उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । तिसरीरा ओघं । चटुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एग-जीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । बादरेइंदियअपज्जत्त० बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एग-जीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं, उक्क० अंतोमुहुत्तं । तिसरीराणं पंचिविय-तिरिक्खअपज्जत्तमंगो । सुहुमेइंदिय० बिसरीरा ओघं । तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० तिणिण समया । सुहुमेइंदियपज्जत्त० बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं तिसमऊणं, उक्क० अंतो-मुहुत्तं । सुहुमेइंदियअपज्जत्त० बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं तिसमऊणं, उक्क० अंतोमुहुत्तं ।

काल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर पत्त्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार वर्षप्रमाण है । तीन शरीरवालोंका भंग ओघके समान है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार वर्षप्रमाण है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम क्षुल्लकभवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । तीन शरीरवालोंका भंग पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंके समान है । सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें दो शरीरवालोंका भंग ओघके समान है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर तीन समय है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर तीन समय कम अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर तीन समय कम क्षुल्लकभवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । उक्त दोनों

❖ ता० का० प्रत्योः ' जह० अंतोमुहुत्तं उक्क० ' इति पाठः ।

दोणं पि तिसरीराणं अंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं
 णिरंतरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि समया । बेइंदिय-तेइंदिय-
 चउरिदिएसु तेसि पज्जत्तेसु च बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प०
 जह० सव्वेसिमेगसमओ, उक्क० आदिमतिथिम्हि अंतोमहुत्तं तिण्हं पज्जत्ताणं चदुवीस-
 महुत्ता । एगजीवं प० जह० खुद्दामवग्गहणं बिसमऊणं अंतोमहुत्तं बिसमऊणं, उक्क०
 संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । तिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी०
 प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया । बेइंदिय-तेइंदिय-
 चउरिदिअपज्जत्त० बिसरीर-तिसरीराणं पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तमंगो । पंचिदिय-
 पंचिदियपज्जत्त० बिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च
 जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमहुत्तं चदुवीसमहुत्ता । एगजीवं प० जह० खुद्दामव-
 ग्गहणं बिसमऊणं अंतोमहुत्तं बिसमऊणं उक्क० सागरोवमसहस्सं पुव्वकोडिपुध-
 तेणम्महियसागरोवमसदपुधत्तं । तिसरीरा ओघं । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का०
 होदि ? णाणाजीवं प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमहुत्तं उक्क० साग-
 रोवमसहस्सं पुव्वकोडिपुधत्तेणम्महियं सागरोवमसदपुधत्तं । पंचिदियअपज्जत्ताणं

ही जीवोंमें तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है, नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट तीन समय है । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और इन तीनोंके पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर सभीका एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर प्रारम्भके तीनोंमें अन्तर्मुहूर्त तथा तीनों पर्याप्तकोंमें चौबीस मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर प्रारम्भके तीनोंमें दो समय कम क्षुल्लकभवग्रहणप्रमाण और अन्तके तीनोंमें दो समय कम अन्तर्मुहूर्त है तथा उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार वर्षप्रमाण है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर दो समय है । द्वीन्द्रिय अपर्याप्त, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त और चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालों और तीन शरीरवालोंका भग पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंके समान है । पञ्चेन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर पञ्चेन्द्रियोंमें अन्तर्मुहूर्त और पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें चौबीस मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर पञ्चेन्द्रियोंमें दो समय कम क्षुल्लकभवग्रहणप्रमाण और पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें दो समय कम अन्तर्मुहूर्त । तथा उत्कृष्ट अन्तर पञ्चेन्द्रियोंमें पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक एक हजार सागर और पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें सौ सागर पृथक्त्वप्रमाण है । तीन शरीरवालोंका भग ओघके समान है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है । और उत्कृष्ट अन्तरकाल पञ्चेन्द्रियोंमें पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक एक हजार सागर और पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें सौ सागर पृथक्त्वप्रमाण

पञ्चिद्वयतिरिवत्तपञ्जत्तभंगो ।

कायाणुवादेण पुढवि०-आउ० बिसरीर-तिसरीराणं सुहुमेइंदियभंगो । बादर-
पुढवि०-बादरआउ०-बादरवणप्फविपत्तेयसरीर० बिसरीराणमंतरं केवचिरं का०
होवि ? णाणाजी० प० णत्थि अन्तरं णिरन्तरं । एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं
बिसमऊणं, उक्कस्सेण कम्मट्ठिदी । तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होवि ? णाणाजी०
प० णत्थि अन्तरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया । बादरपुढवि०-
बादरआउ०-बादरवणप्फवि०-पत्तेयसरीरपञ्जत्त० बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होवि ?
णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं
बिसमऊणं, उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । तिसरीराणं वेइंदियपञ्जत्तभंगो ।
बादरपुढवि०-बादरआउ०-बादरवणप्फवि० पत्तेयसरीरपञ्जत्त० बिसरीर-तिसरीराणं

है । पञ्चेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका भंग पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च अपर्याप्तकोंके समान है ।

विशेषार्थ— एकेन्द्रियोंमें चार शरीरोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण क्यों है इस बातके समर्थनमें वीरसेन स्वामीका कहना है कि जिनके वैक्रियिकशरीर आदि चार प्रकृतियोंकी सत्ता है वे ही विक्रिया करते हैं, अन्य नहीं । सामान्य नियम यह है कि जिन एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके देवगतिद्विक, नरकगतिद्विक और वैक्रियिकचतुष्ककी सत्ता होती है वे इनकी नियमसे उद्वेलना करते हैं और उद्वेलनामें जघन्य और उत्कृष्ट काल पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण लगता है । इसका मतलब यह हुआ कि एकेन्द्रियोंमें वैक्रियिकशरीर आदि की सत्ता अधिकसे अधिक पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक ही हो सकती है । और जब यह नियम मान लिया गया कि वैक्रियिकशरीरके सत्त्वके रहते हुए ही मनुष्य और तिर्यञ्च विक्रिया करते हैं तब उक्त कालके प्रारम्भमें और अन्तमें विक्रिया कराके ही यह अन्तर लाया जा सकता है । यही कारण कि यहाँ एकेन्द्रियोंमें उनकी काय-स्थिति अधिक होने पर भी एक जीवकी अपेक्षा चार शरीरवालोंका उत्कृष्ट अन्तर पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है ।

कायमार्गणाके अनुवादसे पृथिवीकायिक और जलकायिक जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके समान है । बादर पृथिवीकायिक, बादर जलकायिक और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीरजीवोंमें दो शरीरवालोंका अंतरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट अंतर कर्मस्थिति प्रमाण है । तीन शरीरवालोंका अंतरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर दो समय है । बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर जलकायिक पर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालोंका अंतरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार वर्ष है । तीन शरीरवालोंका भंग द्वीन्द्रियपर्याप्तकोंके समान है । बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त, बादर जलकायिक अपर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और

बादरेइंदियअपज्जत्तभंगो । तेउ०-वाउ० बिसरीर-तिसरीर-चदुसरीरा ओघं । णवरि
 विसैसो जत्थ चदुसरीराणमणंतकालो तत्थ पलिदो० असंखे० भागो वत्तव्वो । बादर-
 तेउ०-बादरवाउ० बिसरीराणं बादरपुढविभंगो । तिसरीरा ओघं । चदुसरीराणमंतरं
 केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं,
 उक्क० पलिदो० असंखे० भागो । बादरतेउक्काइयपज्जत्त० बिसरीराणमंतरं केवचि०
 का० होदि? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० चदुवीसमुहुत्ता । एगजीवं प० जह०
 अतोमुहुत्तं बिसमऊणं, उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । तिसरीरा ओघं । चदु-
 सरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प०
 जह० अंतोमु०, उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। बादरवाउक्काइयपज्जत्त० बिसरी-
 राणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह०
 अतोमुहुत्तं बिसमऊणं, उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । तिसरीरा ओघं । चदु-
 सरीराणमंतरं के० का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह०
 अतोमुहुत्तं, उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । बादरतेउ० बादरवाउ० अपज्जत्ताणं
 बादरपुढवि०अपज्जत्तभंगो, सुहुमपुढवि०-सुहुमआउ०-सुहुमतेउ०-सुहुमवाउ०-पज्जत्ता-

तीन शरीरवाले जीवोंका भंग बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान है । अग्निकायिक और वायु-
 कायिक जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग ओघके समान
 है । इतना विशेष है कि जहाँ पर चार शरीरवालोंका उत्कृष्ट अन्तर अनन्त काल कहा है वहाँ पत्य
 के असंख्यातवें भागप्रमाण कहना चाहिए । बादर अग्निकायिक और बादर वायुकायिक जीवोंमें
 दो शरीरवालोंका भंग बादर पृथिवीकायिक जीवोंके समान है तथा तीन शरीरवालोंका भंग
 ओघके समान है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल
 नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर पत्यके असंख्यातवें
 भागप्रमाण है । बादर अग्निकायिक पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है? नाना
 जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर चौबीस मूहूर्त है । एक जीवकी
 अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार वर्ष है ।
 तीन शरीरवालोंका भंग ओघके समान है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना
 जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और
 उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार वर्ष है । बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालोंका
 अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य
 अन्तर दो समय कम अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार वर्ष है । तीन शरीरवालोंका
 भंग ओघके समान है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा
 अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर संख्यात
 हजार वर्ष है । बादर अग्निकायिक अपर्याप्त और बादर वायुकायिक अपर्याप्त जीवोंमें बादर
 पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीवोंके समान भंग है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म जलकायिक, सूक्ष्म
 अग्निकायिक और सूक्ष्म वायुकायिक तथा इनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंका भंग सूक्ष्म

पञ्जत्ताणं सुहुमेइंदियपञ्जत्तापञ्जत्तभंगो । वणप्फदिकाइय० बिसरीरा तिसरीरा ओघं । बादरवणप्फदिकाइय० बिसरीर-तिसरीराणं बादरेइंदियभंगो । बादरवणप्फदिकाइयपञ्जत्त० बिसरीर-तिसरीराणं बादरेइंदियपञ्जत्तभंगो । बादरवणप्फदियपञ्जत्ताणं बादरेइंदियअपञ्जत्तभंगो । सुहुमवणप्फदियपञ्जत्तापञ्जत्ताणं देहुमेइंदियपञ्जत्तापञ्जत्तभंगो । णिगोदजीवा बिसरीरा तिसरीरा ओघं । बादरणिगोदजीव० बिसरीर-तिसरीराणं बादरेइंदियभंगो । बादरणिगोदजीवपञ्जत्त० बिसरीर-तिसरीराणं बादरेइंदियपञ्जत्तभंगो । बादरणिगोदजीवअपञ्जत्ताणं बादरेइंदियअपञ्जत्तभंगो । सुहुमणिगोदपञ्जत्तापञ्जत्ताणं सुहुमेइंदियपञ्जत्तापञ्जत्तभंगो । तस० तस०पञ्जत्ताणं पंचिदियपञ्जत्ताणं भंगो । णवरि विसेसो सगट्ठिदी भाणियवा । तसअपञ्जत्ताणं पंचिदियअपञ्जत्तभंगो ।

जोगाणुवादेण पंचमण० पंचवचि० तिसरीर-चदुसरीराणमंतरं णाणेगजीवे पडुच्च उभयदो णत्थि । कायजोगि० बिसरीर-तिसरीर-चदुसरीरा ओघं । णवरि चदुसरीर० एयजीवस्स उक्क० पलिदो० असंखे०भागो । ओरालियकायजोगि० तिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजी० पडुच्च णत्थि अंतरं । एगजोवं प० जहण्णुक्कस्सेण

एकेन्द्रिय और उनके पर्याप्त व अपर्याप्त जीवोंके समान है । वनस्पतिकायिक जीवोंमें दो शरीर वाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग ओघके समान है । बादर वनस्पतिकायिकोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग बादर एकेन्द्रियोंके समान है । बादर वनस्पति-कायिक पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके समान है । बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवोंमें बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके समान भंग है । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक और उनके पर्याप्त व अपर्याप्त जीवोंका भंग सूक्ष्म एकेन्द्रिय और उनके पर्याप्त व अपर्याप्त जीवोंके समान है । निगोद जीवोंमें दो शरीर-वाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग ओघके समान है । बादर निगोद जीवोंमें दो शरीर-वाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग बादर एकेन्द्रियोंके समान है । बादर निगोद पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके समान है । बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंका भंग बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान है । सूक्ष्म-निगोद तथा उनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंका भंग सूक्ष्म एकेन्द्रिय तथा उनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंके समान है । त्रस और त्रस पर्याप्त जीवोंका भंग पञ्चेन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय-पर्याप्त जीवोंके समान है । इतना विशेष है कि अपनी अपनी स्थिति कहनी चाहिए । त्रस अपर्याप्तकोंका भंग पञ्चेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान है ।

योग मार्मणाके अनुवादसे पाँचों मनोयोगी पाँचों वचनयोगी जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका अन्तरकाल नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा दोनों प्रकारसे नहीं है । काययोगी जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग ओघके समान है । इतनी विशेषता है कि चार शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अंतर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । औदारिककाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंका अन्तर-काल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और

अंतोमूहत्तं । चतुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमूहत्तं, उक्क० तिण्णि वाससहस्साणि देसूणाणि । ओरालिध-
मिस्सकायजोगि० तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणेगजी० प० णत्थि अंतरं । वेउच्चियकायजोगि० तिसरीराणं णाणेगजी० प० उभयदो णत्थि अंतरं । वेउच्चिय-
मिस्स० तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगमसओ,
उक्क० बारसमुहत्ता । एगजीवं प० उभयदो णत्थि अंतरं । आहारदुग्गस्स चतुसरी-
राणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगमसओ, उक्क० वास-
पुधत्तं । एगजीवं प० णत्थि अंतरं । कम्मइयकायजोगि० विसरीराणमंतरं णाणेगजी०
प० उभयदो णत्थि अंतरं । तिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी० प०
जह० एगमसओ, उक्क० वासपुधत्तं । एगजीवं प० णत्थि अंतरं ।

उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम तीन हजार वर्षप्रमाण है । औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंका अन्तर काल कितना है ? नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । वैक्रियिककाय-
योगी जीवोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा उभयतः अन्तर-
काल नहीं है । वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना-
जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर बारह मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा उभयतः अन्तरकाल नहीं है । आहारकद्विकमें चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व प्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । कामंणकाययोगी जीवोंमें दो शरीरवालोंका अन्तर काल नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा उभयतः अन्तरकाल नहीं है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व-प्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है ।

विशेषार्थ-— पहले ओघसे चार शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर अनंत काल कह आये हैं सो वहाँ किसी एक योग और एक इन्द्रियकी प्रधानता न होने से वह अन्तर बन जाता है । किन्तु यहाँ काययोगमें वह घटित नहीं होता, क्योंकि, काययोगका अधिक काल तक सद्भाव एकेन्द्रियोंके होता है और एकेन्द्रियोंमें चार शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर पत्यके असंख्यातवे भागप्रमाण पहले घटित करके बतला आये हैं इसलिए यहाँ भी वह उतना ही कहा है । तथा औदारिककाययोगके रहते हुए चार शरीरोंकी प्राप्ति यदि हो तो वह जघन्य और उत्कृष्ट रूपसे अन्तर्मुहूर्त काल तक नियम से होती है, इसलिए इसमें तीन शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त कहा है । यद्यपि नरक में और देवोंमें अधिकसे अधिक काल तक कोई जीव उत्पन्न न हो तो चौबीस मुहूर्त तक नहीं उत्पन्न होता पर सम्मिलित रूपसे विचार करने पर अधिकसे अधिक काल तक कोई नरकगति या देवगतिमें उत्पन्न न हो तो बारह मुहूर्त तक नहीं उत्पन्न होता, इसलिए वैक्रियिकमिश्रकाय-
योगमें तीन शरीरवालोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर बारह मुहूर्त कहा है । कामंण-

वेदाणुवादेण इत्थिवेदेसु बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० चट्ठवीसमुहुत्ता । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं बिसमऊणं उक्क० पल्लिवमसदपुधत्तं । तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । चट्ठसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० अंतो-मुहुत्तं, उक्क० पल्लिवमसदपुधत्तं । एवं पुरिसवेवसस । णवरि जत्थ पल्लिवमसद-पुधत्तं तत्थ सागरोधमसदपुधत्तं वत्तव्वं । णवुंसयवेदेसु तिसरीरा तिसरीरा चट्ठसरीरा ओघं । अवगह्वेद० तिसरीराणं णाणेगजीवे प० उभयदो णत्थि अंतरं ।

कसायाणुवादेण कोध-माण-माया-लोभकसाई० बिसरीर-चट्ठसरीराणमंतरं णाणेगजी० प० उभयदो णत्थि अंतरं । तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । अकसाईणमवगह्वेदमणो ।

णाणाणुवादेण मदि-सुदअण्णाणि० बिसरीरा तिसरीरा चट्ठसरीरा ओघं ।

काययोगियोंमें तीन शरीरवालोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल केवलिसमुद्घातकी अपेक्षा से बतलाया है । तात्पर्य यह है कि केवली जीव एक समयके अन्तरसे भी केवलिसमुद्घात कर सकते हैं और अधिकसे अधिक काल तक यदि कोई जीव केवलिसमुद्घातको न प्राप्त हो तो वर्ष पृथक्त्व काल तक नहीं प्राप्त होता । शेष कथन स्पष्ट ही है ।

वेदमार्गणाके अनुवाद से स्त्रीवेदवालोंमें दो शरीरवालोंका अंतरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर चौबीस मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर सौ पत्य पृथक्त्वप्रमाण है । तीन शरीरवालोंका अंतरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अंतरकाल नहीं है । एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर सौ पत्य पृथक्त्वप्रमाण है । इसी प्रकार पुरुषवेदी जीवोंके जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि जहां सौ पत्य पृथक्त्वप्रमाण अन्तर कहा है वहां सौ सागर पृथक्त्वप्रमाण अन्तर कहना चाहिए । नपुंसकवेदी जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीर-वाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग ओघके समान है । अपगतवेदी जीवोंमें तीन शरीर-वालोंका नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा उभयतः अन्तरकाल नहीं है ।

कषायमार्गणाके अनुवादसे क्रोधकषायवाले, मानकषायवाले, मायाकषायवाले और लोभ-कषायवाले जीवोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा उभयतः अन्तरकाल नहीं है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । अकषायी जीवोंमें अपगतवेदी जीवोंके समान भंग है ।

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे मत्त्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन

विभंगणाणी० तिसरीर-चदुसरीराणं णाणेगजीवे प० णत्थि अंतरं । आभिणि-सुव-
ओहिणाणी० बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० जह० एगसमओ,
उक्क० मासपुधत्तं । ओहिणाणीसु वासपुधत्तं । एगजीवं प० जह० वासपुधत्तं, उक्क०
छावट्टिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । तिसरीरा ओघं । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का०
होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं उक्क० छावट्टि-
सागरोवमाणि सादिरेयाणि । मणपज्जवणाणी० तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि?
णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं । चदुसरीराण-
मंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० अंतो-
मुहुत्तं, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा । केवलणाणीणमवगदवेदभंगो ।

संजमाण्वावेण संजदेसु तिसरीर-चदुसरीराणं मणपज्जवभंगो । सामाइयच्छे-
दोवट्ठावणसुद्धिसंजद० तिसरीर-चदुसरीराणं पि एवं चेव वत्तव्वं । परिहारसुद्धि-
संजदेसु तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणेगजी० प० उमयदो वि णत्थि
अंतरं । सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० ❀

शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग ओघके समान है ? विभंगज्ञानी जीवोंमें तीन
शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल
नहीं है । आभिनिबोधकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें दो शरीरवालोंका अन्तर-
काल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर
प्रारम्भके दो ज्ञानोंमें मासपृथक्त्व तथा अवधिज्ञानमें वर्षपृथक्त्वप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा
जघन्य अन्तर वर्षपृथक्त्वप्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर सादिक छ्यासठ सागर है । तीन शरीर-
वालोंका भंग ओघके समान है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी
अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अंतर
साधिक छ्यासठ सागर है । मनःपर्ययज्ञानी जीवोंमें तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना
है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट
अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा
अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर
कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है । केवलज्ञानियोंका भंग अपगतवेदी जीवोंके समान है ।

संयममार्गणाके अनुवादसे संयतोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग
मनःपर्ययज्ञानियोंके समान है । सामायिकशुद्धिसंयत और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीवोंमें तीन
शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग इसी प्रकार कहना चाहिए । परिहारविशुद्धि-
संयतोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवों और एक जीवकी
अपेक्षा उभयतः अन्तरकाल नहीं है । सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयतोंमें तीन शरीरवालोंका अन्त-
रकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर

प० जहण्णेण एगसमओ, उक्क० छम्मासा । एगजीवं प० णत्थि अंतरं जहाक्खाव-
सुद्धिसंजव० तिसरीराणं केवलणाणी० भंगो । संजदासंजदाणं मणपउजवणाणी०
भंगो । असंजदा ओघं ।

वंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीणं तसपउजत्तभंगो । अचक्खुदंसणी० ओघं ।
ओहिदंसणीणमोहिणाणी० भंगो । केवलदंसणीणं केवलणाणी० भंगो ।

लेस्साणुवादेण किण्ण-णील-काउलेस्सिएसु बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ?
णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जहण्णेण सत्तरससागरोवमाणि बिसम-
ऊणाणि सत्तसागरो० बिसमऊणाणि दसवस्ससहस्साणि बिसमऊणाणि उक्कस्सेण
तेत्तीससागरोवमाणि समऊणाणि सत्तसागरो० समऊणाणि सत्तसागरो० समऊणाणि ।
तिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं निरंतरं ।
एगजीवं प० जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमु० । चदुसरीराणमभयवो
णत्थि अंतरं । तेउलेस्सिएसु बिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी०
प० जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अडवालीसमुहुत्ता । एगजीवं प० जहण्णेण
पलिदोवमं साविरेयं उक्कस्सेण बेसागरोवमाणि साविरेयाणि । तिसरीराणमंतरं
केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीव प०
जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्त । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो
छह महीना है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । यथारूपात्शुद्धिसंयतोंमें तीन
शरीरवालोंका भंग केवलज्ञानियोंके समान है । संयतासंयतोंका भंग मनःप्रययज्ञानियोंके समान
है । असंयतोंका भंग ओघके समान है ।

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनवाले जीवोंका भंग त्रसपर्याप्तकोंके समान है ।
अचक्षुदर्शनवाले जीवोंका भंग ओघके समान है । अवधिदर्शनवाले जीवोंका भंग अवधिज्ञानि-
योंके समान है । केवलदर्शनवाले जीवोंका भंग केवलज्ञानियोंके समान है ।

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले और कापोतलेश्यावाले
जीवोंमें दो शरीरवाले जीवोंका अंतरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अंतरकाल नहीं
है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर कृष्णलेश्यामें दो समय कम सत्रह सागर, नीललेश्यामें
दो समय कम सात सागर और कापोतलेश्यामें दो समय कम दस हजार वर्षप्रमाण है । तथा
उत्कृष्ट अन्तर कृष्णलेश्यामें एक समय कम तेत्तीस सागर, नीललेश्यामें एक समय कम सत्रह
सागर और कापोतलेश्यामें एक समय कम सात सागर है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल
कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य
अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । चार शरीरवालोंका उभयतः अंतरकाल
नहीं है । पीतलेश्यावालोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा
जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अडतालीस मूहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा
जघन्य अन्तर साधिक एक पल्य है और उत्कृष्ट अंतर साधिक दो सागर है । तीन शरीरवालोंका
अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य
अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । चार शरीरवालोंका अंतरकाल कितना

होदि ? णाणाजी० प० उभयदो णत्थि अंतरं । पम्मलेस्सिएसु बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० पक्खो । एगजीवं प० जह० बेसागरो० साविरेयाणि, उक्क० अट्टारससागरो० साविरेयाणि । तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमूहुत्तं । चदुसरीराणमंतरं णाणेगजी० प० उभयदो णत्थि । सुक्कलेस्सिएसु बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० चत्तारि मासा । एगजीवं प० जह० अट्टारससागरोवमाणि साविरेयाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि समऊणाणि । तिसरीर-चदुसरीराणं तेउलेस्सियमंगो । भवियाणुवादेण भवसिद्धिया अभवसिद्धिया ओघं ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठीणमोहिणाणी० भंगो । खइयसम्माइट्ठी० बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० वासपुधत्तं । एगजीवं प० जह० चदुरासीदिवस्ससहस्साणि बिसमऊणाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरो० समऊणाणि । तिसरीरा ओघं । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमूहुत्तं, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि साविरेयाणि । वेदगसम्माइट्ठी० बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प०

है ? नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा उभयतः अंतरकाल नहीं है । पद्मलेख्यावाले जीवोंमें दो शरीरवालोंका अंतरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अंतर एक समय है और उत्कृष्ट अंतर एक पक्ष है । एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर साधिक दो सागर है और उत्कृष्ट अंतर साधिक अठारह सागर है । तीन शरीरवालोंका अंतरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अंतरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर एक समय है और उत्कृष्ट अंतर अन्तर्मुहूर्त है । चार शरीरवालोंका अंतरकाल नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा उभयतः नहीं है । शुक्ललेख्यावालोंमें दो शरीरवालोंका अंतरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अंतर एक समय है और उत्कृष्ट अंतर चार महीना है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर साधिक अठारह सागर है और उत्कृष्ट अंतर एक समय कम तेतीस सागर है । तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग पीतलेख्यावाले जीवोंके समान है । भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्योंमें और अभव्योंमें ओघके समान भंग है ।

सम्यक्त्व मार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टियोंका भंग अवधिज्ञानियोंके समान है । क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवालोंका अंतरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अंतर एक समय है और उत्कृष्ट अंतर वर्षपृथक्त्वप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर दो समय कम चौरासी हजार वर्षप्रमाण है और उत्कृष्ट अंतर एक समय कम तेतीस सागर है । तीन शरीरवालोंका भंग ओघके समान है । चार शरीरवालोंका अंतरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अंतरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अंतर साधिक तेतीस सागर है । वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवालोंका अंतरकाल

अ० का० प्रत्योः 'ओघं तिसरीराणमंतरं' इति पाठः ।

जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण मासपुधत्तं । एगजीवं प० जहण्णेण वासपुधत्तं उक्कस्सेण छावट्टिसागरोवमाणि देसूणाणि । तिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं गिरंतरं । एगजीवं प० जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं गिरंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० छावट्टिसागरोवमाणि देसूणाणि । उवसमसम्माइट्ठी० बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ उक्क० वासपुधत्तं । एगजीवं प० णत्थि अंतरं । तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण सत्तरादिवियाणि । एगजीवं प० जह० एगसमओ उक्क० अंतोमुहुत्तं । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० सत्तरादिवियाणि । एगजीवं प० णत्थि अंतरं । सासणसम्माइट्ठी० बिसरीर-तिसरीर-चदुसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी० प० जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदो० असंखे-ज्जदिभागो । एगजीवं प० णत्थि अंतरं । सम्मामिच्छाइट्ठी० तिसरीर-चदुसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी० प० जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदो० असंखेज्जदिभागो । एगजीवं प० णत्थि अंतरं । मिच्छाइट्ठी० ओघं ।

कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर मास-पृथक्त्वप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर वर्षपृथक्त्वप्रमाण है और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम छयासठ सागर है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम छयासठ सागर है । उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवालोंका अन्तर-काल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अंतर एक समय है और उत्कृष्ट अंतर वर्ष-पृथक्त्वप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अंतर सात रात-दिन है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अंतर अन्तर्मुहूर्त है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर सात रातदिन है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर पत्यके असंख्या-तर्वे भागप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर पत्यके असंख्यातर्वे भागप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । मिथ्यादृष्टियोंका भंग ओघके समान है ।

सण्णियाणुवादेण सण्णीणं पुरिसवेवभंगो । असण्णी० ओघं । जेव सण्णि-
असण्णि० तिसरीराणं णाणेगजीवे प० उभयदो णत्थि अंतरं ।

आहाराणुवादेण आहारिणो तिसरीरा चदुसरीरा ओघं । णवरि चदुसरीराणं
उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जविभागो । अणाहाराणं कम्मइयभंगो । णवरि जम्हि
वासपुधतमंतरं तम्हि छम्मासा ।

य मंतराणुयोगद्वारं समत्तं ।

भावाणुगमेण दुविहो णिद्देसो-ओघेण आदेसेण य । ओघेण तिसरीर-
तिसरीर-चदुसरीराणं को भावो ? ओवइओ भावो । एवं जेयत्वं जावं अणा-
हारए त्ति ।

एवं भावाणुयोगद्वारं समत्तं ।

अप्पाबहुगाणुगमेण दुविहो णिद्देसो ओघेण आदेसेण य । १६८।

कुदो ? वक्कट्ठिय-पज्जवट्ठियभेदेण दुविहाणं चेव सिस्साणमवलंभादो ।

ओघेण सत्त्वत्थोवा चदुसरीरा ॥ १६९ ॥

कुदो ? पलिवोवमस्स असंखे० भागमेत्तघणंगुलेहि गुणिवजगसेडिपमाणत्तादो ।

संज्ञी मार्गणाके अनुवादसे संज्ञियोंका भंग पुरुषवेदी जीवोंके समान है । असंज्ञियोंका
भंग ओघके समान है । न संज्ञी न असंज्ञी जीवोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका नाना जीवों और
एक जीवकी अपेक्षा उभयतः अन्तरकाल नहीं है ।

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारकोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका
भंग ओघके समान है । इतनी विशेषता है कि चार शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट
अन्तर अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है । अनाहारकोंका भंग कर्मणकाययोगियोंके समान है ।
इतनी विशेषता है कि जहाँ वर्षपृथक्त्व अन्तर है वहाँ छह महीना अन्तर कहना चाहिए ।

विशेषार्थः— अयोगकेवलीका उत्कृष्ट अन्तर छह माह है, इसलिए अनाहारकोंमें तीन
शरीरवालोंका उत्कृष्ट अन्तर छह महीना कहा है ।

इस प्रकार अन्तरानुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

भावानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है— ओघ और आदेश । ओघसे दो शरी-
रवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कौन भाव है ? ओदयिक भाव है ।
इस प्रकार अनाहारक मार्गणा तक ले जाना चाहिए ।

इस प्रकार भावानुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

अल्पबहुत्वानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है— ओघ और आदेश । १६८ ।

क्योंकि, द्रव्याधिक और पर्यायाधिकके भेदसे दो प्रकारके ही शिष्य उपलब्ध होते हैं ।

ओघसे चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं ॥ १६९ ॥

क्योंकि, ये पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण घनांगुलोंसे गुणित जगश्रेणिप्रमाण होते हैं ।

असरीरा अणंतगुणा ॥१७०॥

को गुणगारो ? सिद्धाणमसंखे०भागो । खो पडिभागो ? चटुसरीरजीवा पडिभागो ॥

विसरीरा अणंतगुणा ॥१७१॥

कुदो ? अंतोमहुत्तेण खंडिवसव्वजीवरासिपमाणत्तादो । को गुणगारो ? सव्व-जीवरासिस्स अणंतिमभागो । को पडिभागो ? अंतोमहुत्तगुणिवसिद्धरासी ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥१७२॥

को गुणगारो ? अंतोमहुत्तं ।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु सव्वत्थोवा विसरीरा ॥१७३॥

कुदो ? णेरइयरासि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिवएयखंडपमाणत्तादो ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥१७४॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । असंखेज्जवासाउएसु पलिदो-वमस्स असंखेज्जदिभागो ।

उनसे अशरीरी जीव अनन्तगुणे हैं ॥ १७० ॥

गुणकार क्या है ? सिद्धोंका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? चार शरीरवाले जीवोंका प्रमाण प्रतिभाग है ।

उनसे दो शरीरवाले जीव अनन्तगुणे हैं ॥ १७१ ॥

क्योंकि, सब जीवराशिमें अन्तर्मुहूर्तका भाग देने पर जो लब्ध आवे उतना इनका प्रमाण है । गुणकार क्या है ? सब जीवराशिका अनन्तवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अन्तर्मुहूर्तसे गुणित सिद्धराशि प्रतिभाग है ।

उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ १७२ ॥

गुणकार क्या है ? अन्तर्मुहूर्तप्रमाण गुणकार है ।

आदेशकी अपेक्षा गतिमार्गणाके अनुवादसे नरकगतिकी अपेक्षा नारकियोंमें दो शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं ॥ १७३ ॥

क्योंकि, नारकराशिमें आवलिके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर जो लब्ध आवे तत्प्रमाण वहाँ दो शरीरवाले जीव हैं ।

उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ १७४ ॥

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । तथा असंख्यात वर्षकी आयुवालोंमें पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

❁ प्रतिष् ' चटुसरीरजीवपडिभागो ' इति पाठः ।

एवं जाव सत्तसु पुढवीसु ॥ १७५ ॥

सत्तसु पुढवीसु पत्तेयं पत्तेयं अप्पाबहुअपरूवणे कीरमाणे जहा णिरओघम्हि वत्तं तथा वत्तव्वं ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु ओघं ॥ १७६ ॥

जहा मूलोघम्हि अप्पाबहुअपरूवणा कदा तथा तिरिक्खेसु कायव्वा । णवरि असरीरा णत्थि । तं जहा- सव्वत्थोवा चदुसरीरा । बिसरीरा अणंतगुणा । को गुणगारो ? बिसरीराणमसंखे० भागो । को पडि० ? चदुसरीररासी । तिसरीरा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जावलियाओ ।

पंचिंद्रियतिरिक्खं-पंचिंद्रियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंद्रियतिरिक्ख-जोणिणीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा ॥ १७७ ॥

कुदो ? पल्लो० असंखे० भागमेत्तघणंगुलेहि गुणिवजगसेडिपमाणत्तावो ।

बिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥ १७८ ॥

को गुणगारो ? सेडिए असंखे० भागो । तस्स को पडिभागो ? चदुसरीरविक्खंभ-

इसी प्रकार सातों पृथिवियोंमें जानना चाहिए ॥ १७५ ॥

अलग अलग प्रत्येक पृथिवीमें अल्पबहुत्वका कथन करने पर जिस प्रकार सामान्य नारकियोंमें कहा है उस प्रकार कहना चाहिए ।

तिर्य्यगगतिकी अपेक्षा तिर्य्यचोमें ओघके समान भंग है ॥ १७६ ॥

जिस प्रकार मूलोघमें अल्पबहुत्वप्ररूपणा की है उस प्रकार तिर्य्यचोमें करनी चाहिए । इतनी विशेषता है कि यहाँ अशरीरी जीव नहीं है । यथा- चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? दो शरीरवालोंके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? चार शरीरवालोंकी राशि प्रतिभाग है । उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात आवलियाँ गुणकार है ।

पंचेंद्रिय तिर्य्यच, पंचेंद्रिय तिर्य्यच पर्याप्त और पंचेंद्रिय तिर्य्यच योनिनियोंमें चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं ॥ १७७ ॥

क्योंकि, पत्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण घनांगुलोंसे जगश्रेणिके गुणित करनेपर जो लब्ध आवे उतना यहाँ चार शरीरवालोंका प्रमाण है ।

उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ १७८ ॥

गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उसका प्रतिभाग

❁ ता० प्रतीसूत्रानंतर ' सत्तसु पुढवीसु ' इति पाठो नास्ति ।

❁ अ० प्रती ' पंचिंद्रियतिरिक्ख- ' इति पाठो नास्ति ।

सूचीए गुणिसगसगअवहारकालो ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥१७९॥

को गुण० ? आवलि० असंखे० भागो । कुदो ? आवलियाए असंखे० भागमेत्त-
उवक्कमणकालेण सगसगरासीए ओवट्ठिदाए बिसरीराणं पमाणुप्पत्तीदो । विग्गहग-
दोए चेव उप्पज्जमाणा नहुगा ण उज्जुगदीए, उज्जुवाए गदीए उप्पज्जमाणोपदेसस्स
थोवत्तुवलंभादो । के वि आइरिया उज्जुगदीए उप्पज्जमाणा जीवा बहुभा त्ति भणंति
तेसिमहिप्पाएण गुणगारो पलिदो० असंखे० भागो होदि । एदमत्थपदं सब्बमग्ग-
णासु परूवेयव्वं ।

पंचिवियतिरिक्खअपज्जत्ता णेरइयाणं भंगो ॥१८०॥

जहा णेरइयाणमप्पावहुगं परूविदं तहा एत्थ वि परूवेयव्वं । तं जहा—
सब्वत्थोवा बिसरीरा । तिसरीरा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए
असंखे० भागो । पलिदो० असंखे० भागो गुणगारो त्ति सब्बमग्गणासु के वि आइरिया
भणंति, तण्ण धडदे । कुदो ? संखेज्जावलियाहि सब्बजीवरासिम्मि ओवट्ठिदे कम्मइयरा-
सिपमाणागमणक्खणहाणुववत्तीदो । जदि उप्पज्जमाणजीवाणमसंखेज्जो भागो विग्गहं

क्या है ? अपने अपने अवहारकाल को चार शरीरवालोंकी विष्कंभसूचीसे गुणित करने पर जो
लब्ध आवे उतना प्रतिभाग है ।

उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥१७९॥

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, आवलिके
असंख्यातवें भागप्रमाण उपक्रमण कालसे अपनी अपनी राशिके भाजित करने पर दो शरीर
वालोंका प्रमाण उत्पन्न होता है । विग्रहगतिसे ही उत्पन्न होनेवाले जीव बहुत हैं, ऋजुगतिसे
नहीं, क्योंकि, ऋजुगतिसे उत्पन्न होनेवाले जीव स्तोक हैं ऐसा उपदेश पाया जाता है । कितने
ही आचार्य ऋजुगतिसे उत्पन्न होनेवाले जीव बहुत हैं ऐसा कहते हैं, इसलिए उनके अभिप्रायसे
गुणकार पत्त्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है । यह अर्थपद सब मार्गणाओंमें कहना
चाहिए ।

पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंमें नारकियोंके समान भंग है ॥१८०॥

जिसप्रकार नारकियोंका अल्पबहुत्व कहा है उसीप्रकार यहां भी कहना चाहिए । यथा—
दो शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार
क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । सब मार्गणाओंमें पत्त्योपमके
असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ऐसा भी कितने ही आचार्य कथन करते हैं किन्तु वह घटित
नहीं होता, क्योंकि, संख्यात आवलियोंसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर कामंणराशिका
प्रमाण आता है, अन्यथा वह बन नहीं सकता है । यदि उत्पन्न होनेवाले जीवोंकी असंख्यातवें

कुणदि तो पलिदो० असंखे० भागेण गुणिवसंखेज्जावलियाओ सव्वजीवरासिस्स भाग-
हारो होज्ज । ण च एवं, तहाणुवलंभादो तम्हा असंखे० भागो चेव उज्जुगदीए उप्प-
ज्जदि ति घेत्थं ।

मणुसगदीए मणुसा पंचिदियतिरिक्खाणं भंगो ॥ १८१ ॥

तं जहा- सव्वत्थोवा चटुसरीरा, संखेज्जपमाणत्तादो । विसरीरा असंखेज्ज-
गुणा । को गुण० ? विसरीराणं संखे० भागो । तस्स को पडिभागो ? चटुसरीरसं-
खेज्जजीवा । अथवा गुणगारो सेडीए असंखे० भागो । तिसरीरा असंखेज्जगुणा । को
गुण० ? आवलि० असंखे० भागो । पलिदो० असंखे० भागो गुणगारो होदि ति०
पुत्थं व परूवेयत्थं ।

मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु सव्वत्थोवा चटुसरीरा ॥ १८२ ॥

विउत्तवमाणानमाहारसरीरेण परिणमंताणं अइथोवत्तवंसणादो ।

विसरीरा संखेज्जगुणा ॥ १८३ ॥

विउत्तवमाणजीवेहितो विग्गहगदीए उप्पज्जमाणजीवाणं संखेज्जगुणत्तुवलंभादो ।

भागप्रमाण जीवराशि विग्रह करती है तो पत्थके असंख्यातवें भागसे संख्यात आवलियोंके
गुणित करने पर समस्त जीवराशिका भागहार होवे । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, उस
प्रकार भागहार नहीं उपलब्ध होता, इसलिए असंख्यातवें भागप्रमाण राशि ही ऋजुगतिसे
उत्पन्न होती है ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए ।

मनुष्यगतिकी अपेक्षा मनुष्योमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोके समान भङ्ग है ॥ १८१ ॥

यथा- चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं, क्योंकि, उनका प्रमाण संख्यात है ।
उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? दो शरीरवालोंके संख्यातवें
भागप्रमाण गुणकार है । उसका प्रतिभाग क्या है ? चार शरीरवाले संख्यात जीव प्रतिभाग
है । अथवा गुणकार जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । उनसे तीन शरीरवाले जीव असं-
ख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । पत्थोपमके
असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ऐसा पहलेके समान कहना चाहिए ।

मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनियोंमें चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं ॥ १८२ ॥

क्योंकि, विक्रिया करनेवाले और आहारक शरीररूपसे परिणत हुए मनुष्य अति स्तोक
देखे जाते हैं ।

उनसे दो शरीरवाले मनुष्य संख्यातगुणे हैं ॥ १८३ ॥

क्योंकि, विक्रिया करनेवाले जीवोंसे विग्रहगतिसे उत्पन्न होनेवाले उक्त मनुष्य संख्या-
तगुणे उपलब्ध होते हैं ।

तिसरीरा संखेज्जगुणा ॥ १८४ ॥

सुगम ।

मणुसअपज्जत्तो पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तभंगो ॥ १८५ ॥

तं जहा- सव्वत्थोवा विसरीरा । तिसरीरा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ?

आवलियाए असंखे०भागो ।

देवगदीए देवा सव्वत्थोवा विसरीरा ॥ १८६ ॥

कुदो ? सगरासी आवलि० असंखे०भागेण खंडिवेय (खंड-) पमाणत्तादो ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥ १८७ ॥

को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो । कुदो ? संखेज्जवासाउअदेवेसु उप्पज्ज-
माणजीवाणं बहुत्तुवलंभादो ।

**एवं भवणवासियप्पहुडि जाव अवराइदविमाणवासियदेवा त्ति
णेयव्वं ॥ १८८ ॥**

णवरि जोइसियप्पहुडि जाव सदर-सहस्सारदेवेसु गुणगारो पलिदो० असंखे०-
भागो होदि, तत्थ संखेज्जवासाउआणमभावादो । आणद-पाणदप्पहुडि जाव अवराइदं

उनसे तीन शरीरवाले मनुष्य संख्यातगुणे हैं ॥ १८४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मनुष्य अपर्याप्तिकोंमें पंचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्तिकोंके समान भंग है । १८५ ।

यथा- दो शरीरवाले सबसे स्तोक हैं । उनसे तीन शरीरवाले असंख्यातगुणे हैं ।
गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

देवगतिकी अपेक्षा दो शरीरवाले देव सबसे स्तोक हैं । १८६ ।

क्योंकि, अपनी राशिकी आवलिके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो एक भाग
लब्ध आवे तत्प्रमाण दो शरीरवाले देव है ।

उनसे तीन शरीरवाले देव असंख्यातगुणे हैं । १८७ ।

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है क्योंकि, संख्यात
वर्षकी आयुवाले देवोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव बहुत पाये जाते हैं ।

**इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर अपराजित विमानवासी तकके देवोंमें
जानना चाहिए । १८८ ।**

इतनी विशेषता है कि ज्योतिषियोंसे लेकर शतार सहस्सार कल्प तकके देवोंमें गुणकार
पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है, क्योंकि, वहां पर संख्यात वर्षकी आयुवाले देवोंका अभाव

❖ ता० प्रती ' देवा (वेसु) सव्वत्थोवा ' इति पाठः ।

❖ ता० प्रती ' सगरासी (सि) आवलि ' इति पाठः ।

ति जेण विसरीरा तत्थ संखेज्जा तेण तत्थ वि गुणगारो पल्लिदोवमस्स असंखे० भागो ।

सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा सव्वत्थोवा विसरीरा ॥ १८९ ॥

सुगमं ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥ १९० ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरएइंदियपज्जत्ता ओघं ॥ १९१ ॥

कुवो ? सव्वत्थोवा चटुसरीरा । विसरीरा अणंतगुणा । तिसरीरा असंखेज्ज-
गुणा त्ति भेदाभावादो ।

बादरेइंदियअपज्जत्ता सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्ता बीइंदिय-
तीइंदिय-चउरिंदियपज्जत्ता अपज्जत्ता पंचिंदियअपज्जत्ता सव्वत्थोवा
विसरीरा ॥ १९२ ॥

विग्रहगदीए सगसगरासीणमसंखे० भागस्स उत्पत्तिदंसणावो । णवरि णिरंतर-
रासीसु सगसगट्ठिदीए सगसगदब्बे भागे हिंदे एगसमयसंचिदविसरीराणं पमाणं होवि ।

है । आनत-प्राणत कल्पसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें यतः दो शरीरवाले वहां
संख्यात हैं अतः वहां भी गुणकार पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

सर्वार्थसिद्धिविमानवासी दो शरीरवाले देव सबसे स्तोक हैं ॥ १८९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उनसे तीन शरीरवाले संख्यातगुणे हैं । १९० ।

गुणकार क्या है । संख्यात समय गुणकार है ।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय-
पर्याप्तकोंका भङ्ग ओघके समान है ॥ १९१ ॥

क्योंकि, उनमें चार शरीरवाले सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले अनन्तगुणे हैं
और उनसे तीन शरीरवाले असंख्यातगुणे हैं, इस दृष्टिसे कोई भेद नहीं है ।

बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त, सूक्ष्म एकेन्द्रिय और उनके पर्याप्त और अपर्याप्त,
द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय तथा उनके पर्याप्त और अपर्याप्त और पञ्चे-
न्द्रिय अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले सबसे स्तोक हैं ॥ १९२ ॥

क्योंकि, विग्रहगतिमें अपनी अपनी राशिके असंख्यातवें भागप्रमाण जीवोंकी उत्पत्ति देखी
जाती है । इतनी विशेषता है कि निरन्तर राशियोंमें अपनी अपनी स्थितिका अपने अपने द्रव्यमें

सांतराणं निरंतरवक्कमणकालसहिदंतरेण सगट्टिविमोवट्टिय निरंतरवक्कमणकालेण गुणिदे सव्वक्कमणकालो होदि तेण सगसगदव्वे भागे हिदे एगसमयसंचिविसरीरं जीवपमाणं होदि ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥ १९३ ॥

को गुण० ? निरंतररासीसु संखेज्जावलियाओ । अण्णत्थ आवलि० असंखे० भागो ।

पंचिविय-पंचिवियपज्जत्ता मणुसगदिभंगो ॥ १९४ ॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चटुसरीरा । विसरीरा असंखे० गुणा । तिसरीरा असंखेज्जगुणा इच्चेदेहि भेदाभावादो । पज्जवट्टियणए पुण अवलंबिदे अत्थि भेदो कुदो ? मणुस्सेसु संखेज्जाणं चटुसरीराणं पंचिविएसु असंखेज्जाणमुवलंभादो ।

**कायाणुवादेण पृढविकाइया आउकाइया वणप्फविकाइया निगो-
वजीवा बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरवणप्फविकाइयपत्तेय-
सरीरा पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरतेउकाइय-बादरवाउकाइयअपज्जत्ता
सुहुमतेउकाइय-सुहुमवाउकाइयपज्जत्ता अपज्जत्ता तसकाइयअपज्जत्ता**

भाग देनेपर एक समयमें संचित हुए दो शरीरवालोंका प्रमाण होता है । सांतरराशियोंमें निरंतर उपक्रमण कालसे सहित अन्तरसे अपनी स्थितिको भाजित कर जो लब्ध आवे उसे निरन्तर उपक्रमण कालसे गुणित करने पर सब उपक्रमणकालका प्रमाण होता है, पुनः उससे अपने अपने द्रव्यके भाजित करने पर एक समयमें संचित हुए दो शरीरवाले जीवोंका प्रमाण होता है ।

उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ १९३ ॥

गुणकार क्या है ? निरन्तर राशियोंमें संख्यात आवलियां गुणकार है । अन्यत्र आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

पञ्चेन्द्रिय और पञ्चेन्द्रियपर्याप्तकोंमें मनुष्यगतिके समान भङ्ग है ॥ १९४ ॥

क्योंकि, चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यात-गुणे हैं और उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं, इस अल्पबहुत्वसे यहाँ कोई भेद नहीं है । परन्तु पर्यायाधिकनयका अवलम्बन करने पर भेद है ही, क्योंकि, चार शरीरवाले जीव मनुष्योंमें संख्यात और पञ्चेन्द्रियोंमें असंख्यात उपलब्ध होते हैं ।

कायमार्गणाके अनुवादसे पृथिवीकायिक, जलकायिक, वनस्पतिकायिक, निगोद-जीव, उनके बादर और सूक्ष्म तथा पर्याप्त और अपर्याप्त, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर तथा उनके पर्याप्त और अपर्याप्त, बादर अग्निकायिक अपर्याप्त, बादर वायुकायिक अपर्याप्त, सूक्ष्म अग्निकायिक और वायुकायिक तथा उनके पर्याप्त

❖ प्रतिष्ठा - सच्चिदसरीर- इति पाठः ।

सव्वत्थोवा विसरीरा ॥ १९५ ॥

सगसगरासिम्हि संखेज्जावलयमेत्तमज्झिमट्टिदीए भागे हिदे सगसगविसरीर-
पमाणप्पत्तीदो । तसकाइयअपज्जत्तएसु आवलियाए असंखे०भागेण सगरासिम्हि
ओवट्टिदे विसरीराणमुप्पत्तिदंसणादो ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥ १९६ ॥

को गुण०? आवलि० असंखे०भागो । तसअपज्जत्तएसु अण्णत्थ संखेज्जा-
वलियाओ ।

**तेउकाइय-वाउकाइय-बादरतेउकाइय-बादरवाउकाइयपज्जत्ता
तसकाइया तसकाइयपज्जत्ता पंचिदियपज्जत्तभंगो ॥ १९७ ॥**

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । विसरीरा असंखेज्जगुणा । तिसरीरा असं-
खे०गुणा इच्छेदेहि तत्तो भेदाभावादो । गुणगारेण दव्वपमाणेण च भेदो अत्थि सो
एत्थ ण विवक्खिदो । सो च भेदो जाणिय परूवेयव्वो ।

**जोगाणुवादेण पंचमणजोगि--पंचवचिजोगीसु सव्वत्थोवा
चदुसरीरा ॥ १९८ ॥**

और अपर्याप्त तथा त्रसकायिक अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले सबसे
स्तोक हैं ॥ १९५ ॥

क्योंकि, अपनी अपनी राशिमें संख्यात आवलिप्रमाण मध्यम स्थितिका भाग देने पर
अपने अपने दो शरीरवालोंका प्रमाण उत्पन्न होता है । त्रसकायिक अपर्याप्तकोंमें आवलिके
असंख्यातवें भागसे अपनी राशिके भाजित करने पर दो शरीरवालोंकी उत्पत्ति देखी जाती है ।

उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ १९६ ॥

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । अन्यत्र त्रसअ-
पर्याप्तकोंमें संख्यात आवलियां गुणकार है ।

अग्निकायिक, वायुकायिक, बादर अग्निकायिक, बादर अग्निकायिकपर्याप्त,
बादर वायुकायिक और बादर वायुकायिकपर्याप्त, त्रसकायिक और त्रसकायिक—
पर्याप्त जीवोंमें पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंके समान भङ्ग हैं ॥ १९७ ॥

क्योंकि, चार शरीरवाले सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले असंख्यातगुणे हैं और
उनसे तीन शरीरवाले असंख्यातगुणे हैं इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा उनसे इनमें कोई भेद नहीं
है । गुणकार और द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा यद्यपि भेद है परन्तु उनकी यहां विवक्षा नहीं है ।
तथा उस भेदको जानकर कहना चाहिए ।

**योगमार्गणाके अनुवादसे पाँचों मनोयोगी और पाँचों वचनयोगी जीवोंमें चार
शरीरवाले सबसे स्तोक हैं ॥ १९८ ॥**

कुदो ? पलिदोवमस्स असंखे० भागमेत्तघणंगुलेहि गुणिदजगसेडिपमाणत्तादो ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥ १९९ ॥

को गुण० ? सेडोए असंखे० भागो ।

कायजोगी ओघं ॥ २०० ॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । विसरीरा अणंतगुणा । तिसरीरा असंखे०-
गुणा इच्छेदेहि भेदाभावादो ।

ओरालियकायजोगीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा ॥ २०१ ॥

कुदो ? पलिदो० असंखे० भागमेत्तघणंगुलेहि गुणिदजगसेडिपमाणत्तादो ।

तिसरीरा अणंतगुणा ॥ २०२ ॥

को गुण? अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि ।

ओरालियमिस्सकायजोगि-वेउव्वियकायजोगि-वेउव्वियमिस्स-
कायजोगि-आहारकायजोगि-आहारमिस्सकायजोगीसु णत्थि अप्पा-
बहुअं ॥ २०३ ॥

कुदो ? एगपदत्तादो ।

क्योंकि, पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण घनाङ्गुलोंसे जगश्रेणिको गुणित करने पर जो
लब्ध आवे तत्प्रमाण चार शरीरवाले जीव हैं ।

उनसे तीन शरीरवाले असंख्यातगुणे हैं ॥ १९९ ॥

गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

काययोगवाले जीवोंमें ओघके समान भंग है ॥ २०० ॥

क्योंकि, चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव अनन्तगुणे
हैं और उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा ओघसे इनमें
कोई भेद नहीं है ।

औदारिककाययोगी जीवोंमें चार शरीरवाले सबसे स्तोक हैं ॥ २०१ ॥

क्योंकि, पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण घनाङ्गुलोंसे जगश्रेणिको गुणित करने पर
जो लब्ध आवे तत्प्रमाण चार शरीरवाले जीव हैं ।

उनसे तीन शरीरवाले अनन्तगुणे हैं ॥ २०२ ॥

गुणकार क्या है ? सब जीव राशिके अनन्त प्रथम वर्गमूलप्रमाण गुणकार है ।

औदारिकमिश्रकाययोगी, वैक्रियिककाययोगी, वैक्रियिकमिश्रकाययोगी, आहा-
रकाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी जीवोंमें अल्पबहुत्व नहीं है ॥ २०३ ॥

क्योंकि, इनमें एक ही पद है ।

कम्मइयकायजोगीसु सव्वत्थोवा तिसरीरा ॥ २०४ ॥

कुदो ? पवर-लोगपूरणगदसजोगीणं संखेज्जाणं चेव उवलंभादो ।

विसरीरा अणंतगुणा ॥ २०५ ॥

को गुणं ? अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेद-पुरिसवेदा पंचिवियभंगो ॥ २०६ ॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । विसरीरा असंखेज्जगुणा । तिसरीरा असं-
खेज्जगुणा इच्छेदेहि भेदाभावादो ।

**णवुंसयवेदा कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई माय-
कसाई लोभकसाई ओघं ॥ २०७ ॥**

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । विसरीरा अणंतगुणा । तिसरीरा असं-
खेज्जगुणा इच्छेदेहि भेदाभावादो ।

अवगदवेद-अकसाईणं णत्थि अप्पाबहुमं ॥ २०८ ॥

कामर्णकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवाले सबसे स्तोक हैं । २०४ ।

क्योंकि, प्रतर और लोकपूरण अवस्थाको प्राप्त हुए संयोगिकेवली संख्यात ही उपलब्ध होते हैं।

उनसे दो शरीरवाले अनन्तगुणे हैं । २०५ ।

गुणकार क्या है ? सब जीवराशिके अनन्त प्रथम वर्गमूलप्रमाण गुणकार है ।

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेदवाले और पुरुषवेदवाले जीवोंमें पंचेन्द्रियोंके समान भंग है । २०६ ।

क्योंकि, चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यात-
गुणे हैं और उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा इनमें कोई भेद नहीं है ।

नपुंसकवेदवाले जीवों तथा कषाय मार्गणाके अनुवादसे क्रोधकषायवाले,
मानकषायवाले, मायाकषायवाले और लोभकषायवाले जीवोंमें ओघके समान
भंग है । २०७ ।

क्योंकि, चार शरीरवाले सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव अनन्तगुणे हैं
और उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा ओघसे इनमें कोई
भेद नहीं है ।

अपगतवेदी और अकषायी जीवोंमें अल्पबहुत्व नहीं है । २०८ ।

कुदो ? एगपवत्तादो ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणी ओघं ॥२०९॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । विसरीरा अणंतगुणा । तिसरीरा असंखे-
गुणा इच्चेदेहि विसेसाभावादो ।

विहंगणाणी सव्वत्थोवा* चदुसरीरा ॥२१०॥

कुदो ? पलिदो० असंखे० भागेण गुणिदघणंगुलमेत्तजगसेडिपमाणतिरिक्खविभंग
णाणीणमसंखे० भागत्तादो ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥२११॥

को गुणगारो ? सेडीए असंखे० भागो ।

आभिणि-सुद-ओहिणाणीसु पंचिदियपज्जत्ताणं भंगो ॥२१२॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । विसरीरा असंखेज्जगुणा । को गुण० ?
आवलियाए असंखे० भागो । तिसरीरा असंखे० गुणा । को गुण० ? आवलि० असंखे-

क्योंकि, इनमें एक ही पद है ।

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे मत्तज्ज्ञानी और श्रुतज्ञानी जीवोंमें ओघके समान
भङ्ग है ॥ २०९ ॥

क्योंकि, चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव अतन्तगुण
हैं और उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुण हैं इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा ओघसे इनमें
कोई भेद नहीं है ।

विभङ्गज्ञानी जीवोंमें चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं ॥ २१० ॥

क्योंकि, पल्लके असंख्यातवें भागप्रमाण घनाङ्गुलोंसे जगश्रेणिके गुणित करने पर जो
लब्ध आवे तत्प्रमाण चार शरीरवाले जीव हैं ।

उनसे तीन शरीरवाले असंख्यातगुण हैं ॥ २११ ॥

गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

आभिनिबोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त-
कोंके समान भङ्ग है ॥ २१२ ॥

क्योंकि, चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यातगुण
हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उनसे तीन शरीरवाले

* ता० प्रती ' -सुदअण्णाणीसु ओघं- ' इति पाठः ।

* ता० प्रती ' विहंगणाणीसु सव्वत्थोवा ' इति पाठः ।

भागो इच्छेदेसु पदेसु असंखेज्जगुणत्तणेण भेदाभावादो, दव्व गुणगारगयभेदाणं विवक्खामावादो ।

मणपज्जवणाणीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा ॥ २१३ ॥

विउव्वमाणमणपज्जवणाणि संजदाणं सुट्ठं थोवत्तुवलंभादो ।

तिसरीरा संखेज्जगुणा ॥ २१४ ॥

को गुण० ? संखेज्जा समया ।

केवलणाणीसु णत्थि अप्पाबहुगं ॥ २१५ ॥

कुदो ? एगपदत्तादो ।

**संजमाणुवादेण संजदा सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा मण-
पज्जवणाणिभंगो ॥ २१६ ॥**

सव्वत्थोवा चदुसरीरा । तिसरीरा संखेज्जगुणा इच्छेदेहि भेदाभावादो ।

**परिहारसुद्धिसंजद-सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजद-जहाक्खादविहार-
सुद्धिसंजदाणं णत्थि अप्पाबहुगं ॥ २१७ ॥**

जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है इत्यादि पदोंमें असंख्यातगुणेपनेकी अपेक्षा पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंसे इनमें कोई भेद नहीं है । तथा द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा और गुणकारकी अपेक्षा रहनेवाले भेदकी यहां विवक्षा नहीं है ।

मनःपर्ययज्ञानियोंमें चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं ॥ २१३ ॥

क्योंकि, विक्रिया करनेवाले मनःपर्ययज्ञानी संयत जीव बहुत ही स्तोक पाये जाते हैं ।

उनसे तीन शरीरवाले जीव संख्यातगुणे हैं ॥ २१४ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है ।

केवलज्ञानियोंमें अल्पबहुत्व नहीं है ॥ २१५ ॥

क्योंकि, उनमें एक ही पद पाया जाता है ।

**संयममार्गणाके अनुवादसे संयत, सामायिकशुद्धिसंयत और छेदोपस्थापना-
शुद्धिसंयत जीवोंमें मनःपर्ययज्ञानियोंके समान भङ्ग है ॥ २१६ ॥**

क्योंकि, चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे तीन शरीरवाले जीव संख्यातगुणे हैं इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा मनःपर्ययज्ञानियोंसे इनमें कोई भेद नहीं है ।

**परिहारशुद्धिसंयत, सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयत और यथाख्यातविहारशुद्धि-
संयत जीवोंका अल्पबहुत्व नहीं है ॥ २१७ ॥**

❖ ता०प्रती 'माणम (मणपज्जव) णाणि' अ०का० प्रत्योः 'माणमणाणि' इति पाठः ।

❖ ता०प्रती 'तिसरीरा (अ) संखेज्जगुणा' अ०का० प्रत्योः 'तिसरीरा असंखेज्जगुणा' इति पाठः ।

❖ ता०प्रती 'चदुसरीरा । वि (ति) सरीरा' अ०का० प्रत्योः 'चदुसरीरा विसरीरा' इति पाठः ।

कुदो ? एगपदत्तादो ।

संजदासंजदा विभंगणाणिभंगो ॥ २१८ ॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । तिसरीरा असंखे०गुणा । को गुणगारो ? आवलि० असंखे०भागो इच्चेदेसु असंखेज्जगुणत्तणेण भेदाभावादो ।

असंजद-अचक्खुदंसणी ओघं ॥ २१९ ॥

लेस्साणुवादेण किण्ण-णील-काउलेस्सिया भवियाणुवादेण भवसिद्धिय-अभवसिद्धिया ओघं ॥ २२० ॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । विसरीरा अणंतगुणा । तिसरीरा असंखे०-गुणा । को गुण० ? संखेज्जावलियाओ इच्चेदेण भेदाभावादो ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणी ओहिदंसणी तेउलेस्सिया पम्म-लेस्सिया पंचिदियपज्जत्ताणं भंगो ॥ २२१ ॥

कुदो ? पदसंखाए असंखेज्जगुणत्तणेण च भेदाभावादो । अत्थदो पुण अत्थि

क्योंकि, इन मार्गणाओंमें एक ही पद है ।

संयतासंयतोंमें विभङ्गज्ञानियोंके समान भंग है ॥ २१८ ॥

क्योंकि, चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्या-तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । इस प्रकार इनमें असंख्यातगुणत्वकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है ।

असंयत और अचक्षुदर्शनवाले जीवोंका भंग ओघके समान है ॥ २१९ ॥

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे कृष्णलेश्यावाले नीललेश्यावाले और कापीत-लेश्यावाले तथा भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्य और अभव्य जीवोंमें ओघके समान भंग है ॥ २२० ॥

क्योंकि, चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव अनन्तगुणे हैं और उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात आव-लियां गुणकार है । इस प्रकार इस अत्यबहुत्वकी अपेक्षा यहां कोई भेद नहीं है ।

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनवाले और अवधिदर्शनवाले तथा पीतलेश्या-वाले और पद्मलेश्यावाले जीवोंमें पञ्चेन्द्रियपर्याप्तकोंके समान भंग है ॥ २२१ ॥

क्योंकि, पदोंकी संख्या और असंख्यातगुणत्वकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है । अर्थकी

✽ म०प्रतिपाठोऽयम् । ता० प्रती सूत्रमिदं पृथक् नोपलभ्यते । अ० प्रती अस्मिन् सूत्रे ' ओघं ' इति पाठः तथा का० प्रती ' असंजद ' इति पाठो नोपलभ्यते ।

भेदो । तं जहा— चक्खुदंसणीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा । विसरीरा असंखेज्जगुणा । को गुण० ? सेडीए असंखे० भागो । तिसरीरा असंखे० गुणा । को गुणगारो । आवलि० असंखे० भागो । ओहिदंसणीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा । विसरीरा असंखेज्जगुणा । को गुण० ? आवलि० असंखे० भागो । तिसरीरा असंखे० गुणा । को गुण० ? आवलि० असंखे० भागो । तेउलेस्सिएसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा । विसरीरा असंखेज्जगुणा । को गुण० ? आवलि० असंखे० भागो । अहवा गुणगारो ण णव्वदे, विसिट्ठवएसामावादो । तिसरीरा असंखे० गुणा । को गुण० ? सेडीए असंखे० भागो । एवं पम्मलेस्सियाणं ।

केवलदंसणीणं णत्थि अण्णाबहुगं ॥ २२२ ॥

कुदो ? एगपदत्तादो ।

सुक्कलेस्सिया सव्वत्थोवा विसरीरा ॥ २२३ ॥

कुदो ? संखेज्जत्तादो ।

चदुसरीरा असंखेज्जगुणा ॥ २२४ ॥

अपेक्षा तो भेद है ही । यथा— चक्षुदर्शनवालोंमें चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । अवधिदर्शनवालोंमें चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । पीतलेश्यावालोंमें चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । अथवा गुणकारका ज्ञान नहीं है, क्योंकि, इस विषयमें विशिष्ट उप-देशका अभाव है । उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है । जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । इसी प्रकार पद्मलेश्यावालोंके जानना चाहिए ।

केवलदर्शनवालोंमें अल्पबहुत्व नहीं है ॥ २२२ ॥

क्योंकि, इनमें एक ही पद है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें दो शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं ॥ २२३ ॥

क्योंकि, इनका प्रमाण संख्यात है ।

उनसे चार शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ २२४ ॥

❖ का० प्रती ' ओहिदंसणीसु ' इत आरम्भ ' तेउलेस्सिएसु ' इति यावत् पाठो नोपलभ्यते ।

❖ ता० प्रती ' चदुसरीरा । ति (वि) सरीरा ' इति पाठः ।

❖ ता० प्रती ' असंखे० भागो । ति (वि) सरीरा ' इति पाठः ।

को गुण० ? पलितोवमस्स असंखे०भागस्स संखे०भागो ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥ २२५ ॥

को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो ।

सम्मत्ताणुवावेण सम्माइट्ठी वेदगसम्माइट्ठी सासणसम्मा-
इट्ठीपंचिदियपज्जत्तभंगो ॥ २२६ ॥

कुदो? सव्वत्थोवा चटुसरीरा । विसरीरा असंखे०गुणा । को गुण०? आवलि०
असंखे०भागो । तिसरीरा असंखे०गुणा । को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो ति
पदसंखाए असंखेज्जगुणत्तणेण च भेदाभावादो ।

खइयसम्माइट्ठी उवसमसम्माइट्ठी सव्वत्थोवा विसरीरा । २२७।

कुदो ? संखेज्जत्तादो ।

चटुसरीरा असंखेज्जगुणा ॥ २२८ ॥

को गुण० ? पलितो० असंखे० भागो ।

गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ २२५ ॥

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

सम्यक्त्व मार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टि, वेदकसम्यग्दृष्टि और सासादन-
सम्यग्दृष्टि जीवोंमें पंचेन्द्रिय पर्याप्तियोंके समान भंग है ॥ २२६ ॥

क्योंकि, चार शरीरवाले सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले असंख्यातगुणे हैं ।
गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उनसे तीन शरीरवाले
असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है इस प्रकार
पदसंख्या और असंख्यातगुणत्वकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है ।

शायिकसम्यग्दृष्टि और उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंमें दो शरीरवाले जीव सबसे
स्तोक हैं ॥ २२७ ॥

क्योंकि, इनका प्रमाण संख्यात है ।

उनसे चार शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ २२८ ॥

गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

तिसरीरा असंखेउजगुणा ॥ २२९ ॥

को गुण० ? आवलि० असंखे० भागो ।

सम्मामिच्छाइट्ठी संजदासंजदाणं भंगो ॥ २३० ॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । तिसरीरा असंखे० गुणा । को गुण० ? आवलि० असंखे० भागो इच्चेवेहि भेदाभावादो ।

मिच्छाइट्ठी ओघं ॥ २३१ ॥

सव्वत्थोवा चदुसरीरा । विसरीरा अणंतगुणा । तिसरीरा असंखे० गुणा इच्चेवेहि भेदाभावादो ।

सण्णियाणुवादेण सण्णी पंचिन्द्रियपज्जत्ताणं भंगो ॥ २३२ ॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । विसरीरा असंखे० गुणा । को गुण० ? सेढीए असंखे० भागो । तिसरीरा असंखे० गुणा । को गुण० ? आवलि० असंखे० भागो इच्चेवेहि भेदाभावादो ।

उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ २२९ ॥

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंमें संयतासंयतीके समान भङ्ग है । २३० ।

क्योंकि, चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है इस प्रकार इसकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है ।

मिथ्यादृष्टियोंमें ओघके समान भङ्ग है । २३१ ।

क्योंकि, चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव अनन्तगुणे हैं । उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं इस प्रकार इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा ओघसे इनमें कोई भेद नहीं है ।

संज्ञी मार्गणाके अनुवादसे संज्ञियोंमें पञ्चेन्द्रियपर्याप्तकोंके समान भङ्ग है । २३२ ।

क्योंकि, चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । इस प्रकार इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंसे संज्ञी जीवोंमें कोई भेद नहीं है ।

असण्णी ओघं ॥ २३३ ॥

सुगममेदं ।

आहाराणुवादेण आहारएसु ओरालियकायजोगिभंगो ॥ २३४ ॥

सव्वत्थोवा चदुसरीरा । तिसरीरा अणंतगुणा इच्चेदेहि भेदाभावादो ।

अणाहारा कम्मइयकायजोगिभंगो ॥ २३५ ॥

सव्वत्थोवा तिसरीरा । विसरीरा अणंतगुणा इच्चेदेहि भेदाभावादो ।

एवमप्पाबहुए समत्ते सरीरिसरीरपरूवणा त्ति समत्तमणुयोगदारं ।

असंज्ञियोंमें ओघके समान भंग है ॥२३३॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारक जीवोंमें औदारिककाययोगी जीवोंके समान भंग है ॥२३४॥

क्योंकि, चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे तीन शरीरवाले जीव अनन्त-गुणे हैं । इस प्रकार इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा औदारिककाययोगियोंसे आहारक जीवोंमें कोई भेद नहीं है ।

अनाहारक जीवोंमें कामंणकाययोगी जीवोंके समान भंग है ॥२३५॥

क्योंकि, तीन शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव अनन्तगुणे हैं । इस प्रकार इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा कामंणकाययोगी जीवोंसे अनाहारक जीवोंमें कोई भेद नहीं है ।

विशेषार्थ— बाह्य वर्गणाके मुख्य भेद चार हैं— शरीरिशरीरपरूपणा, शरीरपरूपणा, शरीर-वित्तसोपचयपरूपणा और वित्तसोपचयपरूपणा । साधारणतः संसारी जीवोंके कुल पाँच शरीर होते हैं । उनका जीवोंके साथ कथन करना कि किस जीवके किस अपेक्षासे कितने शरीर होते हैं इसे शरीरिशरीरपरूपणा कहते हैं । यहाँ इसी अनुयोगद्वारका सत्, संख्या आदि आठ अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर विवेचन किया गया है । साधारणतः यहाँ यही बात बीजरूपमें बतलानी है कि ये पाँच शरीर किस नियमके साथ कितने होते हैं । यह तो सामान्य नियम है कि सब संसारी जीवोंके तैजसशरीर और कामंणशरीर निरन्तर बना रहता है । इन दो शरीरोंका अयोगिकेवलिके अन्तिम समय तक अभाव नहीं होता । इसका अर्थ यह नहीं कि अनादि काल पहले जीवके साथ जिस तैजस और कामंणशरीरका सम्बन्ध था उसीका आज भी सम्बन्ध बना हुआ है । अभिप्राय यह है कि बन्धसन्ततिका विच्छेद न होनेसे इन दोनों शरीरोंका संसारमें कभी अभाव नहीं होता । अब शेष रहे तीन शरीर-औदारिकशरीर वैक्रियिकशरीर आहारकशरीर सो ये किसके और कबसे होते हैं इस बातका पहले यहाँ

पर निर्णय कर लेना आवश्यक प्रतीत होता है। निश्चित नियम यह है कि जीव विग्रहगतिमें अनाहारक होता है। वर्तमान पर्यायिका वियोग होकर उत्तर पर्यायिके शरीरके ग्रहणके लिए जीवकी गति दो प्रकारकी होती है— एक ऋजुगति और दूसरी विग्रहगति। ऋजुगतिका अर्थ मोड़े रहित गतिसे है और विग्रहगतिका अर्थ मोड़ेवाली गतिसे है। जो जीव वर्तमान पर्यायिका त्याग कर ऋजुगतिसे दूसरी पर्यायिके शरीरको ग्रहण करनेके लिए गमन करता है वह अनाहारक नहीं होता, क्योंकि, यहां पर शरीरका त्याग होकर उत्तर पर्यायिके शरीरके ग्रहणमें कालभेद उपलब्ध नहीं होता। अब रहा मोड़ेवाली गतिका विचार, सो उसमें पूर्व पर्यायिके त्यागके साथ ही यद्यपि उत्तर पर्यायिकी प्राप्ति हो जाती है परन्तु उत्तर पर्यायिकी अवस्थितिके लिए शरीरका ग्रहण जब तक जीव मोड़ोंको पार नहीं करता तब तक नहीं होता, इसलिए यह सिद्धान्त स्थिर होता है कि जीव विग्रहगतिमें कमसे कम दो शरीरवाला होता है। उन दो शरीरोंके नाम तैजसशरीर और कार्मणशरीर हैं और ये ही अनादि सम्बन्धवाले हैं। हम पहले कह आये हैं कि विग्रहगतिमें जीव अनाहारक रहता है। यहां अनाहारकसे तात्पर्य है कि ऐसा जीव औदारिक, वैक्रियिक और आहारक इन तीन शरीरों और छह पर्याप्तियोंके योग्य पुद्गलोंको नहीं ग्रहण करता। विग्रहगतिमें स्थित जीव एक तो इन तीन शरीरोंके योग्य पुद्गलोंको ग्रहण नहीं करता, इसलिए उसके इनमेंसे किसी भी एक शरीरकी सत्ता नहीं होती। दूसरे, पूर्व पर्यायिके ग्रहण किये गये शरीरका उसी पर्यायिके त्यागके साथ त्याग हो जाता है, इसलिए भी उसके इन तीन शरीरोंमेंसे किसी एक शरीरकी सत्ता नहीं होती। अब यह देखना है कि ये तीन शरीर किस जीवके किस क्रमसे उपलब्ध होते हैं। इस सम्बन्धमें साधारण नियम यह है कि तिर्यचों और मनुष्योंके जब औदारिक-शरीर नामकर्मका उदय होता है, तब इन पर्यायिकोंके मिलने पर आहारक होनेके प्रथम समयसे इस जीवके औदारिकशरीर पाया जाता है। देवों और नारकियोंके वैक्रियिकशरीर नामकर्मका उदय होता है, इसलिए इनके भवग्रहण करने पर आहारक होनेके प्रथम समयसे लेकर वैक्रियिक-शरीर उपलब्ध होता है। तथा प्रमत्तसंयत जीवके आहारक ऋद्धिकी प्राप्ति होनेपर आहारकशरीर नामकर्मके उदयसे कारण— विशेषके सद्भावमें अन्तर्मुहूर्त काल तक आहारक शरीर उपलब्ध होता है। इसप्रकार अधिकारी भेदसे यह तो जात हो जाता है कि किसके कबसे लेकर कितने शरीर होते हैं। यदि तिर्यच और मनुष्य हैं तो आहारक होनेके पूर्व उसके तैजस और कार्मण ये दो शरीर उपलब्ध होंगे और आहारक होनेके प्रथम समयसे लेकर उसके औदारिक, तैजस और कार्मण शरीर ये तीन शरीर अवश्य ही उपलब्ध होंगे। यदि देव और नारकी हैं तो आहारक होनेके पूर्व उसके तैजस और कार्मण, ये दो शरीर उपलब्ध होंगे और आहारक होनेके प्रथम समयसे लेकर वैक्रियिक, तैजस और कार्मण ये तीन शरीर उपलब्ध होंगे। इस प्रकार अधिकारी भेदसे तीन शरीर किस प्रकार पाये जाते हैं इसका विचार किया। अब चार शरीर किसके किस प्रकार सम्भव हैं इसका विचार करना है। पहले हम यह तो कह ही आये हैं कि किसी प्रमत्त-संयत जीवके योग्य सामग्रीके सद्भावमें अन्तर्मुहूर्त काल तक आहारकशरीरकी प्राप्ति संभव है। इसका यह अर्थ हुआ कि मनुष्य होनेके नाते उसके औदारिक, तैजस और कार्मण ये तीन शरीर तो पाये ही जाते हैं साथ ही उसके चौथा आहारकशरीर भी हो जाता है। यह कैसे होता है इसका खुलासा इस प्रकार है— कि जब किसी प्रमत्तसंयत जीवकी तत्त्वविषयक सूक्ष्म शंका होती

है और जिस क्षेत्रमें वह है वहाँ उसका परिहार होना सम्भव नहीं होता या जब किसी तीर्थ-करको निष्क्रमण आदि कल्याणककी प्राप्ति होती है और देवादिके आने जानेसे इसकी सूचना मिलने पर वह प्रमत्तसंयत जीव वन्दनाके लिए जाना चाहता है या इसी प्रकारका अन्य कारण मिलने पर वह प्रमत्तसंयत जीव आहारक ऋद्धिके सद्भावमें आहारकशरीर नामकर्मके उदयसे औदारिक शरीरसे भिन्न आहारकशरीरको उत्पन्न करता है और वह आहारकशरीर उक्त प्रयोजनकी पूर्ति कर विघटित हो जाता है । जिस समय आहारकशरीर उत्पन्न होकर अपना कार्य करता है उस समय औदारिकशरीर नामकर्मका उदय नहीं रहता और औदारिककाययोग भी नहीं होता । उतने काल तक औदारिकशरीर बना अवश्य रहता है और पूरी तरहसे जीवका उससे सम्बन्ध विच्छेद भी नहीं होता पर क्रियाका प्रयोजक वह नहीं होता । इस प्रकार ऐसे जीवके औदारिक, आहारक, तैजस और कर्मण ये चार शरीर होते हैं । चार शरीरोंकी प्राप्तिका दूसरा प्रकार यह है कि पर्याप्त अग्निकायिक और पर्याप्त वायुकायिक जीव तथा पंचेन्द्रिय पर्याप्त तीर्थच और मनुष्य औदारिकशरीरके रहते हुए भी विक्रिया करते हैं । इनके वैक्रियिकशरीर नामकर्मका उदय न होकर औदारिकशरीरकी ही यद्यपि यह विशेषता होती है फिर भी विक्रिया रूप गुणको देखकर इसकी वैक्रियिकशरीर संज्ञा है । साथ ही यह ऐसे ही जीवके होता है जिसके वैक्रियिकशरीर चतुष्ककी सत्ता होती है । श्वेताम्बर कर्मसाहित्यमें तो उस समय वैक्रियिकशरीर चतुष्कका उदय तक माना गया है । इस प्रकार इन जीवोंके औदारिक, वैक्रियिक, तैजस और कर्मण ये चार शरीर बन जाते हैं । पाँच शरीर किसी एक के सम्भव नहीं हैं, क्योंकि, वैक्रियिक और आहारकशरीरकी प्राप्ति एक साथ नहीं होती । इस प्रकार गति आदि मार्गणाओंमें किस प्रकार किस मार्गणामें कितने शरीर होते हैं यह धटित कर लेना चाहिए । यहाँ एक विशेष बातका निर्देश करना है वह यह कि केवली जिन केवलिसमुद्घातके समय तीन समय तक अनाहारक होते हैं और अयोगिकेवली भी अनाहारक होते हैं फिर भी उनके औदारिक, तैजस और कर्मण ये तीन शरीर उपलब्ध होते हैं । कारण स्पष्ट है । आठ अनुयोगद्वारोंके अन्तमें सब विशेषताओंका संक्षेपमें ज्ञान करानेके अभिप्रायसे इतना निर्देश किया है ।

इस प्रकार अल्पबहुत्वके समाप्त होनेपर शरीरशरीरप्ररूपणा

नामक अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।



सरीरपरुवणा

सरीरपरुवणदाए तत्थ इमाणि छ अणुयोगद्वाराणि— णाम—
णिरुत्ती पदेसपमाणानुगमो णिसेयपरुवणा गुणगारो पदमीमांसा
अप्पाबहुए त्ति ॥ २३६ ॥

णामणिरुत्ती किमट्ठं वृच्चदे ? पंचणं सरीराणं णामाणि गोण्णाणि
णोअगोण्णाणि त्ति जाणावणट्ठं । पदेसपमाणानुगमो किमट्ठं परुविज्जदे ? ण
पंचणं सरीराणं पदेसपमाणे अणवगए संते तेसिमवगमाणुववत्तीवो । णिसेय—
परुवणा किमट्ठं वृच्चदे ? पंचणं सरीराणं समयपबद्धाणं पदेसपिण्डस्स बंधमागच्छं-
तस्स कालो सरिसो ण होदि किंतु विसरिसो होदि । एक्केक्ककालविसेसे एत्तिया
एत्तिया परमाणु होंति त्ति जाणावणट्ठं च णिसेयपरुवणा कीरवे । जहण्णवत्तादो
उक्कत्तसदव्वमेवदियगुणं होदि त्ति जाणावणट्ठं पंचणं सरीराणं पदेसमाहप्पजाणा—

शरीरपरुपणाकी अपेक्षा वहां ये छह अनुयोगद्वार होते हैं— नामनिरुक्ति,
प्रदेशप्रमाणानुगम, निषेकपरुपणा, गुणकार, पदमीमांसा और अल्पबहुत्व ॥ २३६ ॥

नामनिरुक्तिका कथन किसलिए करते हैं ? पाँच शरीरोंके नाम गौण्य हैं नोगौण्य नहीं हैं
इस बातका ज्ञान करानेके लिए नामनिरुक्ति अधिकार आया है । प्रदेशप्रमाणानुगमका कथन
किसलिए करते हैं ? पाँच शरीरोंके प्रदेशोंके प्रमाणका ज्ञान नहीं होने पर उनका ज्ञान नहीं हो
सकता, इसलिए प्रदेशप्रमाणानुगम अधिकार आया है । निषेकपरुपणा किसलिए करते हैं ? पाँच
शरीरोंके समयप्रबद्धोंके प्रदेशपिण्डका बंध होने पर उसका काल सदृश नहीं है किंतु विसदृश है
तथा एक एक काल विशेषमें इतने परमाणु होते हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए निषेक-
परुपणा करते हैं । जघन्य द्रव्यसे उत्कृष्ट द्रव्य इतना गुणा है इस बातका ज्ञान करानेके लिए
और पाँच शरीरोंके प्रदेशोंके माहात्म्यको जाननेके लिए गुणकार अधिकारका कथन करते हैं ।



वणट्ठं च गुणगारो वुच्चदे । जहण्णक्कस्सादिपदपरिवणट्ठं पदमीमांसा वुच्चदे ।
पंचण्णं सरीराण पदेसग्गथोवत्तहुत्तजाणावणट्ठमप्पाबहुअं वुच्चदे । एदेहि छहि अणु-
योगद्वारेहि विणा सरीरपरूवणाणुववत्तीदो । एत्थ एदेहि परूवणा कीरदे—

णामणिरुत्तीए उरालमिदि ओरालियं ॥ २३७ ॥

उरालं थूलं वट्ठं महल्लमिदि* एयट्ठो । कुदो उरालत्तं? ओगाहणाए । सेस-
सरीराणं ओगाहणादो एदस्स सरीरस्स ओगाहणा बहुआ त्ति ओरालियसरीरमुराले
त्ति गहिदं । कुदो बहुत्तमवगम्मदे? महामच्छोरालियसरीरस्स पंचजोयणसदविवक्खंभेण
जोयणसहस्सायामदंसणावो । 'इदि' सद्दो हेतु-विवक्खाणमुववत्तीदो उरालमेव ओरालि-
यमिदि सिद्धं† । अथवा सेससरीराणं वर्गणोगाहणादो ओरालियसरीरस्स वर्गण-
ओगाहणा बहुआ त्ति ओरालियवर्गणाणमुरालमिदि सण्णा । ओरालियवर्गणोगाह-
णाए बहुत्तं कुदो णव्वदे ? चूलियअप्पावहुआदो । तं जहा— सव्वत्थोवाओ

जघन्यपद और उत्कृष्टपद आदिकी परीक्षा करनेके लिए पदमीमांसा अधिकारका कथन करते हैं । पाँच शरीरोंके प्रदेशोंका अल्पबहुत्व जाननेके लिए अल्पबहुत्व अधिकारका कथन करते हैं । इन छह अनुयोगद्वारोंके बिना शरीरपरूवणा नहीं हो सकती, इसलिए यहाँ इनके द्वारा परूवणा करते हैं—

नामनिरुक्तिकी अपेक्षा उराल है इसलिए औदारिक है ॥ २३८ ॥

उराल, स्थूल, और महान् ये एकार्थवाची शब्द हैं ।

शंका— यह उराल क्या है ?

समाधान— अवगाहनाकी अपेक्षा उराल है । शेष शरीरोंकी अवगाहनामे इस शरीरकी अवगाहना बहुत है, इसलिए औदारिकशरीर उराल है ऐसा ग्रहण किया है ।

शंका— इसकी अवगाहनाके बहुत्वका ज्ञान कैसे होता है ?

समाधान— क्योंकि, महामत्स्यका औदारिकशरीर पाँचसौ योजन विस्तारवाला और एक हजार योजन आयामवाला देखा जाता है ।

सूत्रमें आया हुआ ' इति ' शब्द हेतुवाची और विवक्षावाची बन जाता है, इस-
लिए उराल ओरालिय है ऐसी उसकी निरुक्ति सिद्ध होती है । अथवा शेष शरीरोंकी वर्ग-
णाओंकी अवगाहनाकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी वर्गणाओंकी अवगाहना बहुत है इसलिए
औदारिकशरीरकी वर्गणाओंकी उराल ऐसी संज्ञा है ।

शंका—औदारिकशरीरकी वर्गणाओंकी अवगाहना बहुत है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—चूलिकाके अल्पबहुत्वसे जाना जाता है । यथा—कर्मणशरीरको द्रव्यवर्गणायें

* म० प्रतिपाठोऽयम् । ता० का० प्रत्यो ' बहुल्लमिदि ' इति पाठः ।
तसद्धा ' इति पाठः ।

† प्रतिषु ' ओरालियं

कम्मइयसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए । मणदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ । भासादव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ । तेयासरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ । आहारसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखे०गुणाओ । वेउव्वियसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ । ओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखे०गुणाओ त्ति । एदेहि उरालेहि पोग्गलेहि भवमिदि ओरालियं अथवा उरालं जेट्ठं पहाणमिदि एयट्ठो । उदारसद्दादो उरालसद्दणिप्फत्तीए कथमोरालियसरीरस्स महल्लत्तं ? णिव्वड्ढगमणहेदुअट्ठारस सीलसहस्सुप्पत्तिणिमित्तभावादो । तम्हि उराले भवमोरालियं । अथवा उरालमेव ओरालियमिदि घेत्तव्वं । ओरालियसरीरमोगाहणाए चेव सेससरीरेहिंतो महल्लं, ण पदेसग्गेण विस्सामुवचएहि वा त्ति कथं णव्वदे ? सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स णाणासमयसंचिदपदेसा । वेउव्विययरीरस्स णाणासमयसंचिदपदेसा असंखे०गुणा । को गुण० ? सेडीए असंखे०भागो आहारसरीरस्स णाणासमयसंचिदपदेसा असंखे०गुणा । को गुण० ? सेडीए असंखे०भागो । तेजासरीरस्स णाणासमयसंचिदपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? अमवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । कम्मइयसरीरस्स

अवगाहनाकी अपेक्षा सबसे स्तोक हैं । मनोद्रव्यवर्णणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं । भाषाद्रव्यवर्णणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं । तैजसशरीरद्रव्यवर्णणायें अवगाहना की अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं । आहारकशरीरद्रव्यवर्णणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं । वैक्रियिकशरीरद्रव्यवर्णणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं । औदारिकशरीरद्रव्यवर्णणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ।

इन उराल पुद्गलोंसे हुआ है, इसलिए औदारिक है । अथवा उराल, ज्येष्ठ और प्रधान ये एकार्थवाची शब्द हैं ।

शंका- उदार शब्दसे उराल शब्दकी निष्पत्ति होनेपर औदारिकशरीरकी महत्ता कैसे बनती है ?

समाधान- क्योंकि यह निर्वृत्तिगमनका हेतु है और अठारह हजार शीलोंकी उत्पत्तिका निमित्त है, इसलिए इसकी महत्ता बन जाती है ।

उस उरालमें जो होता है वह औदारिक है । अथवा उराल ही औदारिक है ऐसा ग्रहण करना चाहिए ।

शंका- औदारिकशरीर अवगाहनाकी अपेक्षा ही शेष शरीरोंसे महान् है, प्रदेशाग्र और विस्त्रसोपचर्योंकी अपेक्षासे नहीं यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान- औदारिकशरीरके नाना समयोंमें संचित हुए प्रदेश सबसे स्तोक हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरके नाना समयोंमें संचित हुए प्रदेश असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उनसे आहारकशरीरके नाना समयों में संचित हुए प्रदेश असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उनसे तैजसशरीरके नाना समयोंमें संचित हुए प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । उनसे कार्मणशरीरके

णाणासमयसंचिदपदेसा अणंतगुणा । को गुण०? अभवसिद्धि एहि अणंतगुणो सिद्धाण-
मणंतभागो । विस्सासुवचयं पडुच्च सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स जहण्णो विस्सासु-
वचओ । तस्सेव्वकस्सओ असंखे०गुणो । को गुण०? पल्लिदो० असंखे०भागो ।
वेउव्वियसरीरस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । को गुण०? सव्वजीवेहि
अणंतगुणो । तस्सेव उव्वकस्सओ असंखे०गुणो । को गुण०? पल्लिदो० असंखे०भागो ।
आहारसरीरस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । को गुण०? सव्वजीवेहि
अणंतगुणो । तस्सेव उव्वकस्सओ विस्सासुवचओ असंखे०गुणो । को गुण०? पल्लिदो०
असंखेज्जदिभागो । तेजासरीरस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । को गुण०?
सव्वजीवेहि अणंतगुणो । तस्सेव्वकस्सओ विस्सासुवचओ असंखे०गुणो । को गुण०?
पल्लिदो० असंखे०भागो । कम्मइयसरीरस्स जहण्णस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ
अणंतगुणो । को गुण०? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । तस्सेव उव्वकस्सओ विस्सासुवचओ
असंखे०गुणो । को गुण०? पल्लिदो० असंखे०भागो, एदम्हादो अप्पाबहुगादो णव्वदे सुत्तेण
विणा एदं कुदो णव्वदे? बंधणगणाविभागपडिच्छेदप्पाबहुअसुत्तसिद्धत्तादो । तं जहा-
सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा । वेउव्वियसरीरस्स अविभागप-
डिच्छेदा अणंतगुणा । आहारसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा । तेयासरीरस्स

नाना समयोंमें संचित हुए प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और
सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । विस्सोपचयकी अपेक्षा औदारिकशरीरका जघन्य
विस्सोपचय सबसे स्तोक है । उससे उसीका उत्कृष्ट विस्सोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार
क्या है ? पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उससे वैक्रियिकशरीरका जघन्य विस्स-
ोपचय अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है । उससे उसीका
उत्कृष्ट विस्सोपचय अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार
है । उससे आहारकशरीरका जघन्य विस्सोपचय अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे
अनन्तगुणा गुणकार है । उससे उसीका उत्कृष्ट विस्सोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या
है ? पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उससे तैजसशरीरका जघन्य विस्सोपचय
अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है । उससे उसीका उत्कृष्ट
विस्सोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।
उससे कर्मणशरीरके जघन्यका जघन्य विस्सोपचय अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे
अनन्तगुणा गुणकार है । उससे उसीके उत्कृष्ट विस्सोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या
है ? पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । इसे अल्पबहुत्वसे जाना जाता है ।

शंका— सूत्रके बिना यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— यह अल्पबहुत्व बन्धनगुणके अविभागप्रतिच्छेदोंके अल्पबहुत्वका प्रतिपादन
करनेवाले सूत्रसे सिद्ध है । यथा औदारिकशरीरके अविभागप्रतिच्छेद सबसे स्तोक है । उनसे
वैक्रियिकशरीरके अविभागप्रतिच्छेद अनन्तगुणे हैं । उनसे आहारकशरीरके अविभागप्रतिच्छेद

❀ ता० प्रती '— सरीरस्स जहण्णओ ' इति पाठः ।

अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा । कम्मइयसरीरस्स अविभागपडिच्छेज्ज अणंतगुणा । एवं कारणस्सप्पाबहुअं विस्सामुवचयाणं कथं होदि ? ण, विस्सामुवचयमहिकिच्च परूविदअप्पाबहुअस्स अण्णहाभावविरोहादो । जहण्णादो उक्कस्सस्स असंखेज्जगुणत्तं कुवो सिद्धं ? अण्णहा जहणपत्तेयसरीरवग्गणादो उक्कस्सियाओ अणंतगुणत्तप्पसंगादो । ण च एदं, उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए हेट्ठा जहण्णबादरणिगोदवग्गणाए उत्पत्तिप्पसंगादो । जहण्णविस्सामुवचयादो सत्थाणुक्कस्सविस्सामुवचओ अणंतगुणो त्ति सुत्तेण कथं णेवस्स विरोहो ? ण, जीवमुक्कपंचसरीरपरमाणुद्विदविस्सामुवचयमहिकिच्च तवप्पबहुअपउत्तीए । तदो ओरालियसरीरस्स ओगाहणादो चेव थूलत्तं घेतव्वं ।

विविहइडिदगुणजुत्तमिदि वेउद्वियं ॥ २३८ ॥

अणिमा महिमा लहिमा पत्ती पागम्भं ईसित्तं वसित्तं कामरूवित्तमिच्चेवमादियाओ अणेयविहाओ इद्धीओ णाम । एदेहि इद्धिगुणेहि जुत्तमिदि काऊण वेउद्वियं त्ति भणिदं ।

अनन्तगुणे हैं । उनसे तैजसशरीरके अविभागप्रतिच्छेद अनन्तगुणे हैं । उनसे कामंशरीरके अविभागप्रतिच्छेद अनन्तगुणे हैं ।

शंका-- यह कारणसम्बन्धी अल्पबहुत्व विस्रसोपचयोंका कैसे हो सकता है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, विस्रसोपचयको अधिकृत कर प्ररूपित किये गये अल्प-बहुत्वके अन्यथारूप होनेमें विरोध है ।

शंका-- अपने जघन्यसे अपना उत्कृष्ट असंख्यातगुणा है यह किस प्रमाणसे सिद्ध है ?

समाधान-- यदि ऐसा न माना जावे तो जघन्य प्रत्येकशरीरवर्गणासे उत्कृष्ट वर्ग-णाके अनन्त गुणे होनेका प्रसंग आता है । परन्तु यह है नहीं, क्योंकि, यह होनेपर उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणासे नीचे जघन्य बादर निगोदवर्गणाकी उत्पत्तिका प्रसंग आता है ।

शंका-- जघन्य विस्रसोपचयसे स्वस्थानमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है इस सूत्रके साथ इस व्याख्यानका विरोध कैसे नहीं है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, जीवमुक्त पाँच शरीरोंके परमाणुओंपर स्थित हुए विस्रसोपचयको अधिकृत करके उस अल्पबहुत्वकी प्रवृत्ति होती है ।

इसलिए ओदारिकशरीरका अवगाहनाकी अपेक्षा ही स्थूलपना ग्रहण करना चाहिए ।

विविध गुणऋद्धियोंसे युक्त है, इसलिए वैक्रियिक हैं ॥ २३८ ॥

अणिमा, महिमा, लहिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशत्व, वशित्व और कामरूपित्व इत्यादि अनेक प्रकारकी ऋद्धियाँ हैं । इन ऋद्धिगुणोंसे युक्त है ऐसा समझकर वैक्रियिक है ऐसा कहा है ।

निपुणाणं वा निण्णाणं वा सुहुमाणं वा आहारवद्वाणं सुहुमवरमिदि* आहारयं ॥२३९॥

असंजमबहुलदा आणाकणिट्टदा सगखेत्ते केवलिविरहो त्ति एवेहि तोहि कारणेहि साहु आहारसरीरं पडिवज्जंति । जल-थल-आगासेसु अक्कमेण सुहुमजीवेहि दुप्परिहरणज्जेहि आऊरिदेसु असंजमबहुलदा होदि । तप्परिहरणट्ठं हंसांसधवल-मप्पडिहयं आहारवग्गणावखंधेहि निम्मिदं हत्थमेत्तस्सेहं आहारसरीरं साहु पडि-वज्जंति । तेणेदमाहारपडिवज्जणमसंजवबहुलदाणिमित्तमिदि भण्णदि । अण्णा सिद्धंतो आगमो इदि एयट्ठो । तिस्से कणिट्टदा सगखेत्ते थोवत्तं आणाकणिट्टदा णाम । एवं बिदियं कारणं । आगमं मोत्तूण अण्णपमाणाणं गोयरमइक्कमिदूण ट्टिदेसु वव्वपज्जा-एसु संदेहे समुप्पण्णे सगसंदेहविणासणट्ठं परखेत्तट्टियसुवकेवलि-केवलीणं वा पादमूलं गच्छामि त्ति चितविदूण आहारसरीरेण परिणमिय गिरि-सरि सायर मेरु कुलसेल-पायालाणं गंतूण विणएण पुच्छिय विणट्टसंदेहा होदूण पडिणियत्तिदूण आगच्छंति त्ति भणिदं होइ । परखेत्तमिह महामुणीणं केवलणाणुप्पत्ती परिणिब्बाणममणं परिणिवख-मणं वा तित्थयराणं तवियं कारणं । विउव्वणरिद्धिविरहिदा आहारलद्धिसंपण्णा साहु ओहिणाणेण सुदणाणेण वा देवागमचित्तेण वा केवलणाणुप्पत्तिमवगंतूण वंदणाभत्तीए

निपुण, स्निग्ध और सूक्ष्म आहारद्रव्योंमें सूक्ष्मतर है, इसलिए आहारक है ॥२३९॥

असंयमबहुलता, आज्ञाकनिष्ठता और अपने क्षेत्रमें केवलिविरह इस प्रकार इन तीन कार-णोंसे साधु आहारकशरीरको प्राप्त होते हैं । जल, स्थल और आकाशके एक साथ दुष्परिहार्य सूक्ष्म जीवोंसे आपूरित होने पर असंयमबहुलता होती है । उसका परिहर करनेके लिए साधु हंस और वस्त्रके समान धवल, अप्रतिहत, आहारवर्णोंके स्कन्धोंसे निर्मित और एक हाथप्रमाण उत्स-धवाले आहारकशरीरको प्राप्त होते हैं । इसलिए यह आहारकशरीरका प्राप्त करना असंयमब-हुलतानिमित्तक कहा जाता है । आज्ञा, सिद्धान्त और आगम ये एकार्थवाची शब्द हैं । उसकी कनि-ष्ठता अर्थात् अपने क्षेत्रमें उसका थोड़ा होना आज्ञाकनिष्ठता कहलाती है । यह द्वितीय कारण है । आगमको छोड़कर द्रव्य और पर्यायोंके अन्य प्रमाणको विषय न होने पर तथा उनमें सन्देह होनेपर अपने सन्देहको दूर करनेके लिए परक्षेत्रमें स्थित श्रुतकेवली कीर केवलीके पादमूलमें जाता हूँ ऐसा विचार कर आहारकशरीररूपसे परिणमन करके गिरि, नदी, सागर, मेरुपर्वत, कुलाचल और पातालमें केवली और श्रुतकेवलीके पास जाकर तथा विनयसे पूछकर सन्देहसे रहित होकर लौट आते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । परक्षेत्रमें महामुनियोंके केवलज्ञानकी उत्पत्ति और परिनिर्वाणगमन तथा तीर्थंङ्करीके परिनिष्क्रमणकल्याणक यह तीसरा कारण है । विक्रियाकृद्धिसे रहित और आहारकलब्धिसे युक्त साधु अवधिज्ञानसे या श्रुतज्ञानसे या देवोंके आगमनके विचारसे केवलज्ञानकी उत्पत्ति जानकर वन्दनाभक्तिसे जाता हूँ ऐसा विचार कर

❀ म० प्रतिपाठोऽयम् प्रतिषु ' -दव्वाणं वा सुहुमवरमिदि ' इति पाठः ।

गच्छामि त्ति चित्तिदूण आहारशरीरेण परिणमिय तप्पदेसं गंतूण तेसि केवलीणमण्णेसि च जिण-जिणहराणं वंदणं काऊण आगच्छंति त्ति भणिदं होदि । एदाणि तिणिण वि कारणाणि अस्सिऊण घेप्पणाणआहारशरीरस्स णामणिरुत्ती वुच्चदे । तं जहा-
णिउणा अण्हा मउआरे त्ति भणिदं होदि । णिण्हा धवला सुगंधा सुट्ठु सुंदरा त्ति भणिदं होदि । अप्पडिहया सुहुमा णाम । आहारदव्वाणं मज्जे णिउणदरं णिण्णदरं खंधं आहारशरीरेणियाणदठ आहरदि घेण्हदि त्ति आहारयं । णिण्ण-णिण्णाणं कथं सुहुमदरत्तं ? ण, ॐ पढमावत्थं पेक्खिदूण तरतमपच्चयविसयाणं सुहुमदरत्तं पडि विरोहामावाधो । अथवा आहारकद्रव्याणि प्रमाणानि, तेषां निपुणानां मध्ये अति-
निपुणं निष्णातानामतिनिष्णातं सूक्ष्माणामतिसूक्ष्ममाहरति परिछिन्नत्तीत्याहारकम् । पंचवण्णाणमाहारशरीरपरमाणूणं कथं सुक्किलत्तं जुज्जदे ? ण, विस्सासुवचयवण्ण पडुच्च धवलत्तुवलंभादो ।

तेय्यपहगुणजुत्तमिदि तेजइयं ॥ २४० ॥

शरीरस्कन्धस्य पद्मरागमणिवर्णस्तेजः, शरीरान्निर्गतश्चैरश्मिकलापः प्रभा, तत्र भवं

आहारकशरीररूपसे परिणमन कर उस प्रदेशमें जाकर उन केवलियोंकी और दूसरे जिनों व जिनालयोंकी वन्दना करके वापिस आते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । इन तीनों ही कारणोंका अबलम्बन लेकर ग्रहण किये जानेवाले आहारकशरीरकी नामनिश्चित कहते हैं । यथा- निपुण अर्थात् अण्हा और मृदु यह उक्त कथनका तात्पर्य है । स्निग्ध अर्थात् धवल, सुगन्ध, सुष्ठु और सुन्दर यह उक्त कथनका तात्पर्य है । अप्रतिहतका नाम सूक्ष्म है । आहार-द्रव्योंमेंसे आहारकशरीरको उत्पन्न करनेके लिए निपुणतर और स्निग्धतर स्कन्धको आहरण करता है अर्थात् ग्रहण करता है, इसलिए आहारक कहलाता है ।

शंका-- निपुण और स्निग्ध सूक्ष्मतर कैसे हो सकता है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, प्रथम अवस्थाको देखते हुए तर और तम प्रत्ययके विषयभूत पदार्थोंके सूक्ष्मतर होनेमें कोई विरोध नहीं आता ।

अथवा आहारकद्रव्य प्रमाण है । उनमेंसे निपुणोंमें अतिनिपुण, निष्णातोंमें अतिनिष्णात और सूक्ष्मोंमें अतिसूक्ष्मको आहरण करता है अर्थात् जानता है, इसलिए आहारक कहलाता है ।

शंका-- आहारकशरीरके परमाणु पाँच वर्णवाले हैं । उनमें केवल शुक्लपना कैसे बन सकता है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, विस्रसोपचयके वर्णकी अपेक्षा धवलपना उपलब्ध होता है ।

तेज और प्रभारूप गुणसे युक्त है इसलिए तेजस है ॥ २४० ॥

शरीरस्कन्धके पद्मराग मणिके समान वर्णका नाम तेज है । तथा शरीरसे निकली हुई

❖ अ०प्रतो ' अण्हा मउआ ' इति पाठः । ॐ म०प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु ' सुहुमदरं तण्ण ' इति पाठः । अ-आ-प्रत्योः ' विनिर्गत ' इति पाठः ।

तेजसं शरीरम् । तेजःप्रभागुणयुक्तमिति यावत् । तं तेजइयसरीरं निस्सरणप्ययमणि-
स्सरणप्यं चेवि दुविहं । तत्थ जं तं निस्सरणप्यं तं दुविहं—सुहमसुहं चेहि । संज-
दस्स उग्गचरित्तस्स दयापुरंगमअणुकंपावरिवस्स इच्छाए दक्खिणांसादो हंससंख-
वण्णं निस्सरिदूण मारीदिरमरवाहिवेयणादुब्भक्खवसग्गादिपसमणदुवारेण सव्व-
जीवाणं संजदस्स य जं सुहमुप्पादयदि तं सुहं णाम । कोधं गदस्स संजदस्स वामं-
सादो वारहजोयणायामेण णवजोयणविकलंभेण सूचिअंगुलस्स सखेज्जदिभागभेत्तबा-
हल्लेण जासवणकुसुमवण्णेण निस्सरिदूण सगक्खेत्तभंतरद्वियसत्तविणासं काऊण
पुणो पविसमाणं तं जं चेव संजदमावूरेदि ❀ तमसुहं णाम । जं तमनिस्सरणप्यं
तेजइयसरीरं तं भुत्तण्णपाणपाचयं ❀ होदूण अच्छवि अंतो ।

सव्वकम्माणं परूहणुप्पादयं सुहदुक्खाणं बीजमिदि कम्मइयं । २४१।

कर्माणि प्ररोहन्ति अस्मिन्निति प्ररोहणं कार्मणशरीरम् । कूष्माण्डफलस्य
वृन्तवत्❀ सकलकर्मधारं कार्मणशरीरमिति यावत् । न केवलं सर्वकर्मोत्पत्तेराधार
एव किं तु सकलकर्मणामुत्पादकमपि कार्मणशरीर, तेन विना तदुत्पत्तेरभावात् । तत
एव सुख-दुःखानां तद् बीजमपि, तेन विना तदसत्त्वाद् । एतेन नामकर्मावयवस्य

रश्मिकलापका नाम प्रभा है । इसमें जो हुआ है वह तैजसशरीर है । तेज और प्रभा गुणसे
युक्त तैजसशरीर है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । वह तैजसशरीर निःसरणात्मक और अतिः-
सरणात्मक इस तरह दो प्रकारका है । उसमें जो निःसरणात्मक तैजसशरीर है वह दो प्रकारका
है— शुभ और अशुभ । उग्र चारित्रवाले तथा दयापूर्वक अनुकम्पासे आपूरित संयतके इच्छा
होनेपर दाहिने कंधेसे हंस और शंखके वर्णवाला शरीर निकलकर मारी, दिरमर, व्याधि,
वेदना, दुर्भिक्ष और उपसर्ग आदिके प्रशमनद्वारा सब जीवों और सयतके जो सुख उत्पन्न करता
है वह शुभ कहलाता है । तथा क्रोधको प्राप्त हुए संयतके वाम कंधेसे बारह योजन लम्बा, नौ
योजन चौड़ा और सूच्यंगुलके सख्यातर्वे भागप्रमाण मोटा तथा जपाकुसुमके रंगवाला शरीर
निकल कर अपने क्षत्रके भीतर स्थित हुए जीवोंका विनाश करके पुनः प्रवेश करते हुए जो
उसी सयतको व्याप्त करता है वह अशुभ तैजसशरीर है । जो अतिःसरणात्मक तैजसशरीर है
वह भुक्त अन्न-पानका पाचक होकर भीतर स्थित रहता है ।

**सब कर्मोंका प्ररोहण अर्थात् आधार, उत्पादक और सुख-दुःखका बीज है
इसलिए कार्मणशरीर है ॥ २४१॥**

कर्म इसमें उगते हैं इसलिए कार्मणशरीर प्ररोहण कहलाता है । कूष्माण्डफलके वृन्तके
समान कार्मणशरीर सब कर्मोंका आधार है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । कार्मणशरीर केवल
सब कर्मोंकी उत्पत्तिका आधार ही नहीं है । किन्तु सब कर्मोंका उत्पादक भी है, क्योंकि, उसके
बिना उनकी उत्पत्ति नहीं होती । इसलिए वह सुखों और दुःखोंका भी बीज है, क्योंकि, उसके बिना

❀ ता० प्रती 'संजद मारेदि' इति पाठः । ❀ ता० प्रती '—सरीरं भुत्तण्णपाणपाचयं' का० प्रती

'—सरीरं तं भुत्तण्णपाणपाचयं' इति पाठः । ❀ ता० प्रती 'वृन्तवत्' इति पाठः ।

शरीरस्य प्ररूपणा कृता । साम्प्रतमष्टकर्मकलापस्य कार्मणशरीरस्य लक्षणप्रतिपाद-
कत्वेन सूत्रमिव व्याख्यायते । तद्यथा- भविष्यत्सर्वकर्मणां प्ररोहणमुत्पादकं त्रिका-
लगोचराशेषसुख-दुःखानां बीजं चेति^{XX} अष्टकर्मकलापं कार्मणशरीरम् । कर्मणि
भवं कार्मणं कर्मैव वा कार्मणमिति कार्मणशब्दव्युत्पत्तेः ।

एवं णामणिरुत्ति ति समत्तमणुयोगद्वारं ।

उनका सत्त्व नहीं होता । इस द्वारा नामकर्मके अवयवरूप कार्मणशरीरकी प्ररूपणा की है । अब
आठों कर्मोंके कलापरूप कार्मणशरीरके लक्षणके प्रतिपादकपनेकी अपेक्षा इस सूत्रका व्याख्यान
करते हैं । यथा- आगामी सब कर्मोंका प्ररोहण, उत्पादक और त्रिकाल विषयक समस्त सुख-
दुःखका बीज है इसलिए आठों कर्मोंका समुदाय कार्मणशरीर है, क्योंकि, कर्ममें हुआ इसलिए
कार्मण है, अथवा कर्म ही कार्मण है इस प्रकार यह कार्मण शब्दकी व्युत्पत्ति है ।

विशेषार्थ-- शब्दके व्युत्पत्तिलभ्य अर्थको निरुक्ति द्वारा प्रकट किया जाता है । यहाँ
सर्व प्रथम पाँचों शरीरोंकी निरुक्ति दिखलाई गई है । यथा औदारिक शब्द उदार शब्दसे, वैक्रि-
यिक शब्द विक्रिया शब्दसे, आहारक शब्द आहारसे, तैजस शब्द तैजसे और कार्मण शब्द
कर्मसे बना है । उदार, उराल, महत् और स्थूल ये एकार्थवाची शब्द हैं । औदारिकशरीर
अवगाहनाकी अपेक्षा अन्य शरीरोंसे बड़ा है प्रदेशोंकी अपेक्षा नहीं, इसलिए इसकी औदारिक संज्ञा
है । यद्यपि सूक्ष्म एकेन्द्रियका औदारिकशरीरकी अवगाहनाकी अपेक्षा सूक्ष्म देखा जाता है फिर
भी सब शरीरोंकी ध्यानमें लेकर विचार करने पर सबसे बड़ा यही शरीर सिद्ध होता है, इसलिए
इसकी औदारिक संज्ञा है । अणिमा आदि जो आठ प्रकारकी ऋद्धियाँ हैं वे वैक्रियिकशरीरमें पाई
जाती हैं । उनके कारण यह शरीर छोटा, बड़ा, हलका, भारी आदि विविध प्रकारकी विक्रिया
करनेमें समर्थ होता है, इसलिए इस शरीरको वैक्रियिक कहते हैं । जो शरीर वैक्रियिकशरीर
नामकर्मके उदयसे देवी और नारकियोंके होता है उसमें भी यह विशेषता पायी जाती है और जो
शरीर मनुष्यों और तिर्यञ्चोंके विक्रिया रूप प्रयोगविशेषके कारण होता है उसमें भी यह विशेषता
पाई जाती है । आहारकशरीरकी प्राप्ति प्रमत्तसंयतके होती है । इसका यह अर्थ है कि यह
शरीर अपने कारण कूटके अनुसार यदि होगा तो प्रमत्तसंयतके ही होगा, अन्यके नहीं । एक
तो यह शरीर आहार द्रव्यमेंसे सुन्दर, सुगन्ध और स्निग्ध आदि गुणोंसे युक्त वर्गणाओंसे बनता
है, इसलिए इसकी आहारक संज्ञा है । दूसरे यह अतिसूक्ष्म आदि गुणयुक्त अर्थको आहरण
करनेमें अर्थात् जाननेमें समर्थ है, इसलिए इसकी आहारक संज्ञा है । तैजस शरीर दो प्रकारका
होता है- निकलनेवाला और नहीं निकलनेवाला । निकलनेवाला तैजसशरीर शुभ और अशुभ
दो प्रकारका होता है । यह दोनों प्रकारका तैजसशरीर संयतके होता है । तथा नहीं निकलने
वाला तैजसशरीर भुक्त अन्नपान के पाचनमें समर्थ होता है । यह तेज और प्रभा गुणसे युक्त
होता है, इसलिए इसे तैजस कहते हैं । नामकर्मकी ९३ प्रकृतियोंमें एक कार्मणशरीर प्रकृति है ।
उसके उदयसे ज्ञानावरणादि कर्म कार्मण संज्ञाको प्राप्त होते हैं । अथवा य सब ज्ञानावरणादि कर्म
ही हैं, इसलिए इनकी कार्मण संज्ञा है । इस प्रकार औदारिक आदि पाँच शरीर हैं । इनके ये

पदेसपमाणाणुगमेण ओरालियसरीरस्स केवडियं पदेसग्गं ॥२४२॥

सेससरीरपडिसेहट्ठो ओरालियसरीरणिहेसो । संखेज्जा-संखेज्जाणंतसंखाओ तिण्णि णवणवभेदाओ केवडिए त्ति णिहेसो सो अवेक्खवे । द्विदि-अणुभागादिपडि-सेहफलो पदेसग्गणिहेसो । सेसं सुग्गं ।

अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागा ॥ २४३ ॥

एदमोरालियसरीरस्स जहण्णेण उक्कस्सेण य पदेसग्गपमाणं सुत्तं परूवेदि । विस्सासुवचयेहि सह घेप्पमाणे सव्वजीवेहि अणंतगुणा ओरालियपरमाणू होंति त्ति भणिदे ण, ओरालियसरीरणामकम्मोदएण जीवम्म संबद्धपोगलाणं चेव ओरालिय-सरीरत्तम्भुवग्गमादो । ण च तत्थतणविस्सासुवचओ ओरालियणामकम्मजणिदो, ओरालियणोक्कम्मणिद्ध त्हुवखगुणेण तत्थ तेसि संबंधादो । तम्हा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता चेव ओरालियसरीरपरमाणू होंति त्ति घेत्तव्वं ।

एवं चदुण्हं सरीराणं ॥ २४४ ॥

औदारिक आदि नाम गौण्य अर्थात् सार्थक नाम हैं । यहां इनकी नामनिरुक्ति कहनेका यही अभिप्राय है ।

इस प्रकार नामनिरुक्ति अनुयोगद्वारा समाप्त हुआ ।

प्रदेशप्रमाणानुगमकी अपेक्षा औदारिकशरीरके कितने प्रदेशाग्र हैं ॥ २४२ ॥

शेष शरीरोंका प्रतिषेध करनेके लिए 'औदारिकशरीर' पदका निर्देश किया है । 'कितना है' पदका निर्देश नौ नौ भेदरूप संख्यात, असंख्यात और अनन्त इन तीन संख्या-ओंकी अपेक्षा करता है । स्थिति और अनुभाग आदिका निषेध करता प्रदेशाग्र पदके निर्देशका फल है । शेष कथन सुग्गं है ।

अभन्योसे अनन्तगणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ २४३ ॥

यह सूत्र औदारिकशरीरके जघन्य और उत्कृष्ट प्रदेशप्रमाणका कथन करता है ।

शंका - विस्ससोपचयोंके साथ ग्रहण करनेपर औदारिकशरीरके परमाणु सब जीवोंसे अनन्तगुणे होते हैं ?

समाधान - नहीं, क्योंकि औदारिकशरीर नामकर्मके उदयसे जीवमें सम्बन्धकी प्राप्त हुए पुद्गलोंको ही औदारिकशरीररूपसे स्वीकार किया गया है । किंतु वहाँ रहनेवाला विस्ससोपचय औदारिकशरीर नामकर्मके उदयसे नहीं उत्पन्न हुआ है, क्योंकि औदारिक नोकर्मके स्निग्ध और रक्षगुणके कारण वहाँ विस्ससोपचय परमाणुओंका सम्बन्ध हुआ है । इसलिए सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण ही औदारिकशरीरके परमाणु होते हैं ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए ।

इसी प्रकार चार शरीरोंके प्रदेशाग्र होते हैं ॥ २४४ ॥

जहा ओरालियसरीरस्स परमाणुपमाणं भणिदं तथा सेसच्चदुण्णं सरीराणं परमाणुपमाणं वत्तव्वं, अभवसिद्धिर्एहिती अणंतगुणत्तणेण सिद्धेहिती अणंतगुण—हीणत्तणेण भेदाभावादो । एवं पदेसपमाणाणुगमो समत्तमणुयोगद्वारं ।

णिसेयपरूवणदाए तत्थ इमाणि छ अणुयोगद्वाराणि णादव्वाणि भवन्ति—समुक्कित्तणा पदेसपमाणाणुगमो अणंतरोवणिधा परंपरोव—णिधा पदेसविरओ अप्पाबहुए त्ति ॥२४५॥

एदाणि छ चेव अणुयोगद्वाराणि एत्थ होंति अण्णेसिमसंभवादो । एदेसि छण्हं पि जहाकमेण अणुयोगद्वाराणं परूवणा कीरदे—

समुक्कित्तणदाए ओरालिय—वेउव्विय—आहारसरीरिणा तेणेव पढमसमयआहारएण पढमसमयतव्वभवत्थेण ओरालिय—वेउव्विय—आहारसरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसगं णिसित्तं तं जीवे किंचि एगसमयमच्छदि किंचि बिसमयमच्छदि किंचि तिसमयमच्छदि एवं जाव उक्कस्सेण तिण्णिपलिदोवमाणि तेत्तीससागरोवमाणि अंतोमुहुत्तां ॥२४६॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरके परमाणुओंका प्रमाण कहा है उसी प्रकार शेष चार शरीरोंके परमाणुओंका प्रमाण कहना चाहिए, क्योंकि, अभव्योंसे अनन्तगुणत्व और सिद्धोंसे अनन्तगुणहीनत्वकी अपेक्षा औदारिकशरीरके परमाणुओंसे शेष चार शरीरोंके परमाणुओंमें कोई भेद नहीं है । इसप्रकार प्रदेशप्रमाणानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

निषेकप्ररूपणाकी अपेक्षा वहां ये छह अनुयोगद्वार ज्ञातव्य — हैं समुत्कीर्तना, प्रदेशप्रमाणानुगम, अनन्तरोपनिधा, परम्परोपनिधा प्रदेशविरच और अल्प-बहुत्व ॥ २४५ ॥

यहाँ ये छह ही अनुयोगद्वार होते हैं, क्योंकि, अन्य अनुयोगद्वार यहाँ सम्भव नहीं हैं । अब क्रमसे इन छहों अनुयोगद्वारोंका कथन करते हैं—

समुत्कीर्तनाकी अपेक्षा जो औदारिकशरीरवाला, वैक्रियिकशरीरवाला और आहारकशरीरवाला जीव है, प्रथम समयमें आहारक हुए और प्रथम समयमें तद्बुवस्थ हुए उसी जीवके द्वारा औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीररूपसे जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें बांधे गये हैं उनमेंसे कुछ प्रदेशाग्र जीवमें एक समय तक रहते हैं, कुछ दो समय तक रहते हैं, कुछ तीन समय तक रहते हैं । इस प्रकार क्रमसे उत्कृष्ट रूपसे तीन पत्य, तेत्तीस सागर और अन्तर्मुहूर्त तक रहते हैं ॥ २४६ ॥

एत्थ ताव ओरालियसरीरमस्सिदूण सुत्तत्थपरुवणं कस्सामो । तं जहा—
 ओरालियसरीरमेवस्स अत्थि त्ति ओरालियसरीरो तेण ओरालियसरीरिणा । पढम-
 समए चेव आहारो सरीरपाओग्गपोग्गलगहणं जस्स सो पढमसमयआहारओ तेण
 पढमसमयआहारएण । पढमसमयओरालियसरीरिणा त्ति भणिदं होदि । तेणेव गहणं
 किमट्ठं कीरदे ? ओरालियसरीरो चेव ओरालियसरीरस्स पदेसरचणं कुणदि ण
 अण्णसरीरिणो त्ति जानावणट्ठं । तम्हि भवे द्विदो त्ति तब्भवत्थो पढमसमओ च
 तब्भवत्थो च पढमसमयतब्भवत्थो तेण पढमसमयतब्भवत्थेण । अविग्गहगदीए उप्प-
 ण्णेणे त्ति भणिदं होदि, अण्णहा पढमसमयतब्भवत्थस्स पढमसमयआहारयत्तविरो-
 हादो । तेण जीवेण ओरालियसरीरत्ताए ओरालियसरीरसरुवेण जं पढमसमए पदे-
 सगं णिसित्तं पढमसमयबद्धपदेसगं त्ति भणिदं होदि । तं जीवे किंचि एगसमयमच्छदि,
 णोकम्मस्स आबाधाभावेण पढमसमए णिसित्तस्स बिदियसमए चेव परिसदणुवलं-
 भादो* । किमट्ठमेत्थ णत्थि आबाधा ? साभावियादो । किंचि विसमयमच्छदि
 बिदियद्विदोए णिसित्तस्स तदियसमए चेव अकम्मभावुवलंभादो । किंचि तिसमय-
 मच्छदि, तदियद्विदोए णिसित्तस्स चउत्थसमए अकम्मपरिणामदंसणादो । एवं जाव

यहाँ सर्वप्रथम औदारिकशरीरका आश्रय लेकर सूत्रके अर्थका कथन करते हैं । यथा—
 औदारिकशरीर जिसके होता है वह औदारिकशरीरी कहलाता है, उस औदारिकशरीरके द्वारा ।
 प्रथम समयमें ही आहार अर्थात् शरीरके योग्य पुद्गलोंका ग्रहण जिसके होता है वह प्रथम
 समयवर्ती आहारक कहलाता है, उस प्रथम समयवर्ती आहारके द्वारा । प्रथम समयवर्ती
 औदारिकशरीरवाले जीवके द्वारा यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका--सूत्रमें ' तेणेव ' पदका ग्रहण किसलिए किया है ?

समाधान--औदारिकशरीरवाला ही औदारिकशरीरकी प्रदेशरचना करता है अन्य
 शरीरवाले नहीं इस बातका ज्ञान करानेके लिए ' तेणेव ' पदका ग्रहण किया है ।

उस भवमें जो स्थित है वह तद्भवस्थ कहलाता है । प्रथम समयवर्ती जो तद्भवस्थ वह
 प्रथम समयमें तद्भवस्थ है, उस प्रथम समयवाले तद्भवस्थके द्वारा । अविग्रहगतिसे उत्पन्न हुए
 जीवके द्वारा यह उक्त कथनका तात्पर्य है, क्योंकि, ऐसा नहीं मानने पर प्रथम समयमें तद्भवस्थ
 हुए जीवका प्रथम समयमें आहारक होनेमें विरोध है । उस जीवके द्वारा ' ओरालियसरीरत्ताए'
 अर्थात् औदारिकशरीररूपसे जो प्रथम समय प्रदेशाग्र निषिक्त किया है । अर्थात् प्रथम समयमें
 जो प्रदेशाग्र बाँधा गया है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । वह जीवमें कुछ एक समय तक रहता
 है, क्योंकि, नोकर्मकी आबाधा नहीं होनेसे प्रथम समयमें निषिक्त हुए प्रदेशाग्रका दूसरे समयमें
 ही क्षय देखा जाता है ।

शंका--यहाँ आबाधा किस कारणसे नहीं है ?

समाधान--क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

कुछ दो समय तक रहता है, क्योंकि, जो द्वितीय स्थितिमें निषिक्त हुआ है उसका तीसरे
 समयमें ही अकर्मपना देखा जाता है । कुछ तीन समय तक रहता है, क्योंकि, तृतीय स्थितिमें

❀ आ० प्रती ' परिसदाणुवलंभादो ' इति पाठः ।

उक्कस्सेण किञ्चि तिण्णि पल्लिवमाणि अच्छदि, तदुवरिमसमए तस्स अकम्मभाव-
दंसणादो । एवं वेउव्वियसरीरस्स वि वत्तव्वं । णवरि तत्थ किञ्चि तेत्तीसं सागरो-
वमाणि उक्कस्सेण अच्छदि ति वत्तव्वं । एवमाहारसरीरस्स वि समुक्कितणा
कायव्वा । णवरि एवं जाव उक्कस्सेण अंतोमुत्तमच्छदि ति वत्तव्वं । बिदिद्यादि-
समएसु वि एवं चेव पदेसरचना कायव्वा ।

निषिक्त हुए प्रदेशाग्रका चतुर्थ समयमें अकर्मरूप परिणाम देखा जाता है । इस प्रकार उत्कृष्ट-
रूपसे कुछ तीन पत्य काल तक रहता है, क्योंकि, उससे अगले समयमें उसका अकर्मभाव
देखा जाता है । इसी प्रकार वैक्रियिकशरीरका भी कथन करना चाहिए । इतनी विशेषता
है कि वहाँ कुछ उत्कृष्ट रूपसे तेतीस सागर काल तक रहता है ऐसा कथन करना चाहिए ।
इसी प्रकार आहारकशरीरकी समुत्कीर्तनाका भी कथन करना चाहिए । इनकी विशेषता है की
इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे वह अन्तर्मुहूर्त काल तक रहता है ऐसा यहाँ कथन करना चाहिए ।
द्वितीय आदि समयोंमें भी इसी प्रकार प्रदेश रचना करनी चाहिए ।

विशेषार्थः-- जिस शरीरके प्रथमादि समयोंमें जितने परमाणु मिलते हैं उनका अपनी
अपनी आयुस्थितिके अनुसार बटवारा होकर उनमेंसे जिनकी जितनी स्थिति पडती है उतने
काल तक वे रहते हैं । उदाहरणार्थ तीन पत्यकी आयुवाले किसी मनुष्यने प्रथम समयमें ही
तद्भवस्थ होकर औदारिकशरीरके परमाणुओंको ग्रहण करके उन्हें तीन पत्यके जितने समय हैं
उनमें बाँट दिया तो इनमेंसे जिनकी स्थिति एक समय है वे एक समय तक रह कर निर्जीर्ण
हो जाते हैं । जिनकी स्थिति दो समय है वे दो समय तक रह कर निर्जीर्ण हो जाते हैं । इसी
प्रकार क्रमसे एक एक समय बढ़ते हुए तीन पत्यके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिए । यह
प्रथम समयमें ग्रहण किये गये परमाणुओंकी अपेक्षासे विवेचन किया है । आहारक होनेके दूसरे
समयमें जिन परमाणुओंका ग्रहण होता है उनकी निषेक रचना प्रथम समयसे नहीं होती,
क्योंकि, इनके लिए प्रथम समय गत हो चुका है । इसी प्रकार तृतीयादि समयोंमें ग्रहण किये
गये परमाणुओंके विषयमें भी जानना चाहिए । यहाँ दो बातें ख़ासरूपसे समझनेकी हैं । प्रथम
तो यह कि नोकर्मकी आबाधा नहीं होती, इसलिए इसकी निषेक रचना उसी समयसे होती
है जिस समयमें उसको ग्रहण किया है । और दूसरी बात यह कि नोकर्मकी स्थिति भुज्यमान
आयुके अनुसार होती है और इसलिए जिसकी जितनी भवस्थिति होती है या शेष रहती है
ग्रहण किये गये नोकर्मकी उतनी ही स्थिति पडती है ।

विशेष खुलासा इस प्रकार है- जो औदारिक आदि तीन शरीरोंके लिए वर्गणार्थ आती
हैं उनमेंसे जिसकी जितनी स्थिति है उसके अनुसार उनकी निषेक रचना होती है । निषेक शब्द
नि उपसर्ग पूर्वक सिच् धातुसे बना है जिसका अर्थ सिञ्चन करना है । अर्थात् अपनी अपनी
स्थितिके प्रत्येक समयमें वर्गणाओंको देना निषेक रचना है । यहाँ सर्व प्रथम औदारिक और
वैक्रियिक इन दो शरीरोंकी निषेक रचनाके सम्बन्धमें विचार करना है । जो जीव एक पर्यायको
छोड़कर दूसरी पर्यायको ग्रहण करता है वह यदि विग्रहगतिमें स्थित होता है तो उसके विग्रह-
गतिमें रहते हुए अपनी अपनी पर्यायके अनुसार औदारिक आदि तीन शरीरके योग्य वर्गणाओंका
ग्रहण नहीं होता, क्योंकि, उसके यथासम्भव औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीर नामकर्मका
उदय नहीं होता । किन्तु जब ऐसा जीव यथासम्भव एक, दो या तीन मोडोंको पारकर
अवस्थित होता है तब उसके इन नामकर्मोंका उदय होता है और तभी यह जीव इन शरीरोंके योग्य
वर्गणाओंको ग्रहण करता है । अर्थात् यदि वह मनुष्य और तिर्यंच है तो उसके औदारिकशरीर

नामकर्मका उदय होता है और इसलिए वह औदारिकशरीरके योग्य नोकर्मवर्गणाओंको ग्रहण करता है। तथा यदि देव और नारकी है तो उसके वैक्रियिकशरीर नामकर्मका उदय होता है और इसलिए वह वैक्रियिकशरीरके योग्य नोकर्मवर्गणाओंको ग्रहण करता है। सूत्रमें प्रथम समय आहारक और प्रथम समय तद्भवस्थ कहनेका यही तात्पर्य है। अब देखना है कि इस प्रकार जो औदारिक और वैक्रियिकशरीरके योग्य वर्गणाओंका प्रथमादि समयोंमें ग्रहण होता है उनकी निषेकरचना किस प्रकार होती है। सूत्रमें कहा है कि प्रथम समयमें जो वर्गणायें ग्रहण की हैं उनमेंसे कुछको प्रथम समयमें निषिक्त करता है, कुछको द्वितीय समयमें निषिक्त करता है। इस प्रकार प्रत्येक समयमें निषिक्त करता हुआ अपनी अपनी स्थितिके अन्तिम समय तक निषिक्त करता है और फिर इसके बाद सूत्रमें औदारिकशरीरकी उत्कृष्ट स्थिति तीन पत्य और वैक्रियिकशरीरकी उत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागर बतलाई है सो इसका इतना ही अभिप्राय है कि मनुष्यों और तिर्यचोंके क्षुल्लकभवग्रहणसे लेकर तीन पत्यके भीतर तथा देव और नारकियोंके दस हजार वर्षसे लेकर तेतीस सागरसे भीतर जिसकी जितनी आयुके अनुसार भवस्थिति हो उसके अनुसार उसके शरीरके लिए ग्रहण किये गये परमाणुओंकी निषेकरचना होती है। उदाहरणार्थ कोई मनुष्य सौ वर्षकी आयु लेकर ऋजुगतिसे उत्पन्न हुआ तो उसके प्रथम समयमें औदारिकशरीरकी जिन वर्गणाओंका ग्रहण होगा उनमेंसे कुछ वर्गणाओंकी एक समय स्थिति पड़ेगी, कुछ वर्गणाओंकी दो समय स्थिति पड़ेगी और कुछ वर्गणाओंकी तीन समय, कुछकी चार समय आदिसे लेकर सौ वर्ष प्रमाण स्थिति पड़ेगी। कर्मवर्गणाओंके ग्रहण होने पर आबाधा कालको छोड़कर उनकी अपनी स्थितिके अनुसार निषेक रचना होती है उस प्रकार इन दो शरीरोंकी बात नहीं है, क्योंकि, इनका भोग प्रथम समयसे ही होने लगता है, इसलिए स्वभावतः निषेक रचना भी इसी क्रमसे होती है। यह तो प्रथम समयमें ग्रहण किये गये पुद्गलोंका विचार हुआ। द्वितीयादि समयोंमें जो नोकर्म वर्गणायें आती हैं उनकी निषेक रचना भी इसी प्रकार जाननी चाहिए। मात्र वहाँ आयुमें एक समय आदि कम हुआ है इसलिए उनकी निषेक रचना जिस समयमें जितनी स्थिति शेष रहती है उसके अनुसार होती है। अर्थात् उक्त मनुष्य दूसरे समयमें औदारिकशरीरके योग्य जिन वर्गणाओंका ग्रहण करेगा उनकी निषेक रचना एक समय कम सौ वर्षके जितने समय होंगे तत्प्रमाण करेगा। इसी प्रकार सर्वत्र जानना चाहिए। यह तो औदारिक और वैक्रियिकशरीर के सम्बन्धमें विचार हुआ। आहारकशरीरकी निषेकरचना तो इसी प्रकार होती है। मात्र इसके निषेकोंकी रचना भवस्थिति कालप्रमाण न होकर आहारकशरीरके अवस्थितिकालप्रमाण होती है, क्योंकि, आहारकशरीरका ग्रहण प्रथम समयवर्ती आहारक और प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ जीव नहीं करता। किन्तु इसकी प्राप्ति संयत जीवके होती है, इसलिए जिस समयसे संयत जीव आहारकशरीरके योग्य पुद्गलोंको ग्रहण करता है उस समयसे लेकर आहारकशरीरके समाप्तिकाल तक जो अन्तर्मुहूर्त काल लगता है उतने समयोंमें इस शरीरके योग्य पुद्गलोंकी निषेक रचना करता है। शेष सब व्यवस्था पूर्ववत् जाननी चाहिए। यहाँ इतना विशेष समझना चाहिए कि यद्यपि संयत जीव आहारकशरीरको उत्पन्न करते समय नवीन पर्याय धारण नहीं करता फिर भी उसका उतने काल तक औदारिकशरीरसे योगक्रियाका सम्पर्क छूट कर आहारकशरीरसे संपर्क स्थापित होता है। उसी प्रकार छह पर्याप्तियोंकी पूर्णता आदि विधि होती है, इसलिए इसके एक तरहसे अन्य पर्यायका ग्रहण ही है। यही देखकर इस शरीरकी निषेक रचना का विधान करते हुए भी प्रथम समयमें आहारक हुआ और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुआ यह विशेषण लगाया है। इस प्रकार

तेयासरीरिणा तेयासरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसगं णिसित्तं तं जीवे किंचि एगसमयमच्छदि किंचि विसमयमच्छदि किंचि तिसमयमच्छदि एवं जाव उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि ॥२४७॥

एगजोगमकाऊण किमट्ठं पुधभूदमेदं सुत्तं वुच्चदे ? ण, पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण णिसेगरचना कीरवे त्ति एत्थ णियमाभावादो । अणाविसंसारे हिडंतस्स जीवस्स जत्थ कत्थ वि ट्ठाइडूण तेजइयसरीरमेत्तपदेसरचणुवलंभादो । सेसं सुगमं, पुव्वसुत्तत्थेण विसेसाभावादो ।

कम्मइयसरीरिणा कम्मइयसरीरत्ताए जं पदेसगं णिसित्तं तं किंचि जीवे समउत्तरावलियमच्छदि किंचि विसमउत्तरावलियमच्छदि किंचि तिसमउत्तरावलियमच्छदि एवं जाव उक्कस्सेण कम्मट्ठिवि त्ति ॥२४८॥

एत्थ कम्मट्ठिवि त्ति वुत्ते सत्तरिसागरोवमकोडाकोडी घेतव्वा, अट्ठकम्मकलावस्स कम्मइयसरीरत्तब्भुवगमादो । जं पढमसमए पदेसगं णिसित्तं तं किंचि जीवे समउत्तरा-

इन औदारिक आदि तीन शरीरोंकी निषेक रचना किस प्रकार होती है इसका विचार किया ।

तैजसशरीरवाले जीवके द्वारा तैजसशरीररूपसे जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें बांधे जाते हैं उनमेंसे कुछ जीवमें एक समय तक रहता है, कुछ दो समय तक रहता है और कुछ तीन समय तक रहता है । इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे छयासठ सागर काल तक रहता है ॥ २४७ ॥

शंका— एक सूत्र न करके यह सूत्र अलगरूपसे किसलिए कहा है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, प्रथम समयमें आहार करनेवाला और प्रथम समयमें तड्डु-वस्थ हुआ जीव निषेक रचना करता है इस प्रकारका यहाँ कोई नियम नहीं है तथा अनादिसे संसारमें घूमते हुए जीवके जहाँ कहीं भी स्थापित करके तैजसशरीरकी प्रदेश रचना उपलब्ध होती है । शेष कथन सुगम है, क्योंकि, पूर्वके सूत्रार्थसे इसमें कोई विशेषता नहीं है ।

कार्मणशरीरवाले जीवके द्वारा कार्मणशरीररूपसे जो प्रदेशाग्र बांधे जाते हैं उनमेंसे कुछ जीवमें एक समय अधिक आवलि प्रमाण काल तक रहता है, कुछ दो समय अधिक आवलिप्रमाण काल तक रहता है और कुछ तीन समय अधिक आवलिप्रमाण काल तक रहता है । इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे कर्मस्थिति प्रमाण काल तक रहता है ॥ २४८ ॥

यहाँ पर कर्मस्थिति ऐसा कहने पर सत्तर कोडाकोडी सागरका ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि, आठों कर्मोंके समुदायकी कार्मणशरीररूपसे स्वीकार किया है। प्रथम समयमें जो प्रदेशाग्र

❁ म० प्रतिपाठोऽयम् । ता० प्रती 'कम्मट्ठिवि त्ति ॥१८०॥ (कम्मट्ठिवि त्ति-) वुत्ते 'अ० का० प्रत्योः ' एत्थ कम्मट्ठिवि त्ति ' इति पाठो नास्ति ।

वलयमच्छदि, बंधावल्यादि विवर्कतमोकडिदूण समयाहियावल्याए उदए पादिदस्स दुसमयाहियावल्याए अकम्मभावदंसणादो । एदं अत्थपदं लद्धूण उवरि सव्वत्थ वत्तव्वं । एवं समुक्कित्ता त्ति समत्तमणुयोगहारं ।

पदेसपमानाणुगमेण ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरिणा तेणेव पढमसमयाहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं केवडिया ॥ २४९ ॥

एदं पुच्छासुत्तं अणंतादिसंखमवेक्खवेक्खं । केवडिया इदि बहुवयणणिद्देसो पदेसग्गदबहुत्तावेक्खो ।

अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ॥ २५० ॥

निषिक्त होता है उसमेंसे कुछ जीवमें एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण काल तक रहता है, क्योंकि, बन्धावलिके बाद द्रव्यका अपकर्षण करके एक समय अधिक आवलिरूप उदय समयमें लाये गये द्रव्यका दो समय अधिक आवलिके अन्तिम समयमें अकर्मपना देखा जाता है । इस अर्थपदको ग्रहण करके आगे सर्वत्र कहना चाहिए ।

विशेषार्थ—तैजसशरीर और कर्मणशरीर सन्ततिकी अपेक्षा अनादि सम्बन्धवाले हैं । भवके परिवर्तनके साथ जिस प्रकार औदारिक और वैक्रियिक शरीर बदल जाते हैं उसप्रकार ये नहीं बदलते । विग्रहगतिमें इनकी परम्परा चालू रहती है, इसलिए इन दोनों की निषेक रचना प्रथम समयमें आहरण करनेवाले और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए जीवके द्वारा प्रारम्भ नहीं कराई गई है । किन्तु बन्धकी अपेक्षा कहीं भी प्रथम समय मान कर शरीरोंकी निषेक-रचनाका विधान किया है । तैजसशरीरका शेष विचार औदारिक आदि तीन शरीरोंकी समान है । मात्र कर्मणशरीरकी निषेकरचना और अवस्थितिकालमें कुछ विशेषता है । तात्पर्य यह है कि कर्मणशरीरकी निषेकरचना आवाधा कालको छोड़ कर होती है । तथा कोई भी निषेक बन्धकालसे लेकर कमसे कम एक समय एक आवलि प्रमाण काल तक अवश्य ही अवस्थित रहता है । शेष विचार अन्यत्रसे जान लेना चाहिए ।

इस प्रकार समुत्कीर्तना अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

प्रदेशप्रमानाणुगमकी अपेक्षा जो औदारिकशरीरवाला, वैक्रियिकशरीरवाला और आहारकशरीरवाला जीव है, प्रथम समयमें आहार करनेवाले और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए उसी जीवके द्वारा औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीर रूपसे जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें निषिक्त होते हैं वे कितने हैं । २४९।

यह पुच्छासूत्र अनन्त आदि संख्याकी अपेक्षा करता है । तथा 'केवडिया' इस प्रकार बहुवचनका निर्देश प्रदेशाग्रगत बहुत्वकी अपेक्षा करता है ।

अभय्योसे अनन्तगुणो और सिद्धोके अनन्तवें भागप्रमाण है ॥ २५० ॥

एदेण संखेज्जासंखेज्जाणं पडिसेहो कदो । सेसं सुगमं ।

जं विदियसमए पदेसगं णिसित्तं तं केवडिया । २५१ ।

अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । २५२ ।

जं तदियसमए पदेसगं णिसित्तं तं केवडिया ॥ २५३ ॥

अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ॥ २५४ ॥

एदाणि सुत्ताणि तिण्णं वि सरीराणं परिवाडोए जोजेयव्वाणि ।

एवं जाव उक्कस्सेण तिण्णिपलिदोवमाणि तेत्तीससागरोवमाणि
अंतोमुहुत्तं ॥ २५५ ॥

एवं तिण्णिं वि सरीराणं द्विविं पडि णिसित्तपदेसाणं परिवाडोए पमाणपरूवणा
कायव्वा । ओरालियसरीरस्स जावक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि त्ति, वेउव्विय-
सरीरस्स तेत्तीसं सागरोवमाणि त्ति, आहारसरीरस्स अंतोमुहुत्तं त्ति ।

तेजा-कम्मइयसरीरिणा तेजा-कम्मइयसरीरत्ताए जं पढमसमए
पदेसगं णिसित्तं तं केवडिया ॥ २५६ ॥

इसके द्वारा संख्यात और असंख्यातका प्रतिषेध किया है । शेष कथन सुगम है ।

जो प्रदेशाग्र द्वितीय समयमें निषिक्त होता है वह कितना है ॥ २५१ ॥

अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है ॥ २५२ ॥

जो प्रदेशाग्र तृतीय समयमें निषिक्त होता है वह कितना है ॥ २५३ ॥

अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है ॥ २५४ ॥

इन सूत्रोंकी तीनों ही शरीरोंके विषयमें यथाक्रमसे योजना करनी चाहिए ।

इसप्रकार उत्कृष्टरूपसे तीन पत्य, तेत्तीस सागर अन्तर्मुहूर्त काल तकके
निषेकोंका प्रमाण जानना चाहिए ॥ २५५ ॥

इसप्रकार तीनों ही शरीरोंकी स्थितिके प्रति निषिक्त हुए प्रदेशोंकी प्रमाणप्ररूपणा
यथाक्रमसे करनी चाहिए । यथा- उत्कृष्टरूपसे औदारिकशरीरके तीन पत्यप्रमाण, वैक्रियिक-
शरीरके तेत्तीस सागरप्रमाण और आहारकशरीरके अन्तर्मुहूर्त प्रमाण काल तक निषिक्त हुए
प्रदेशोंकी प्रमाण प्ररूपणा करनी चाहिए ।

तैजसशरीरवाले और कार्मणशरीरवाले जीवके द्वारा तैजसशरीर और कार्मण
शरीररूपसे जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें निषिक्त होता है वह कितना है ॥ २५६ ॥

अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ॥२५७॥

जं विदियसमए पदेसगं णिसित्तं तं केवडिया ॥२५८॥

अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ॥२५९॥

जं तदियसमए पदेसगं णिसित्तं तं केवडिया ॥२६०॥

अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ॥२६१॥

एवं जाव उक्कस्सेण छावट्टिसागरोवमाणि कम्मट्ठिदी ॥२६२॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि । णवरि तेजइयसरीरस्स छावट्टिसागरोवमाणि कम्मइ-
यसरीरस्स कम्मट्ठिदी घेत्त्वा । तेजा-कम्मइयसरीराणं पढमसमयाहारपढमसमयतब्भ-
वत्थविसेसणाभावादो पुधजोगो कदो । एसा ट्ठिदि पडि णिसित्तपरमाणूणं पंचसरीराणि
अस्सिऊण जा पमाणपरूवणा कदा । सा किमेगसमयपबद्धमस्सिदूण कदा आहो णाणा-
समयपबद्धे अस्सिदूण कदा त्ति ? एगसमयपबद्धमस्सिदूण कदा । जदि एगसमयपब-
द्धमस्सिदूण कदा तो कम्मइयसरीरस्स आबाधं भोत्तूण जं पढमसमए

अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है ॥ २५७ ॥

जो प्रदेशाग्र द्वितीय समयमें निषिक्त होता है वह कितना है ॥ २५८ ॥

अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है ॥ २५९ ॥

जो प्रदेशाग्र तृतीय समयमें निषिक्त होता है वह कितना है ॥ २६० ॥

अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है ॥ २६१ ॥

इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे छयासठ सागर और कर्मस्थिति तकके निषेकोंका
प्रमाण जानना चाहिए ॥ २६२ ॥

ये सूत्र सुगम हैं । इतनी विशेषता है कि तैजसशरीरकी छयासठ सागरप्रमाण और
कर्मण शरीरकी कर्मस्थितिप्रमाण स्थिति लेनी चाहिए । तैजसशरीर और कर्मणशरीरके प्रथम
समयमें आहारक हुए और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए ये दो विशेषण नहीं होनेसे अलगसे
सूत्ररचना की है । यह प्रत्येक स्थितिके प्रति निषिक्त होनेवाले परमाणुओंकी पाँच शरीरोंका
आश्रय लेकर उत्पन्न होनेवाली प्ररूपणा की है ।

शंका- वह क्या एक समयप्रबद्धका आश्रय लेकर की है या नाना समयप्रबद्धोंका
आश्रय लेकर की है ?

समाधान- एक समयप्रबद्धका आश्रय लेकर की है ।

शंका- यदि एक समयप्रबद्धका आश्रय लेकर की है तो कर्मणशरीरका आबाधाको

पदेसगं णिसित्तं तं केत्तियमिदि जं भणिदं तं कथं घडदे । ण एस दोसो, आबाधं मोत्तूण णिसेगट्ठिदीसु जा पढमा ट्ठिदीं तिससे तत्थ गहणादो । अथवा णाणासमय-पवद्धे अस्सिदूण एसा परूवणा कायव्वा । ण च ओकड्डुकड्डुणाहि एत्थ पदेसाणं विसरिसत्तं, सेचीयमस्सिदूण परूविज्जमाणे विसरिसत्ताभावादो । एवं पदेसपमाणानु-गमो त्ति समत्तमणुयोगद्वारं ।

अणंतरोवणिधाए ओरालिय-वेउव्विय-आहरसरीरिणा तेणेव पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण ओरालिय-वेउव्विय-आहा-रसरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसगं णिसित्तं तं बहुअं ॥२६३॥

आहारसरीरस्स पढमसमयतब्भवत्थविसेसेणं कथं जुज्जदे ? ण एस दोसो, ओरालियसरीरं छंडिदूण आहारसरीरेण परिणदस्स अवांतर-गमणमत्थि त्ति पढम-समयतब्भवत्थविसेसणुववत्तीदो । तिण्णं सरीराणं सगसगकम्मट्ठिदीणं पढमसमए जं णिसित्तं पदेसगं तं बहुअं होदि उवरि णिसिचमाणट्ठिदीणं पदेसेहत्तो ।

छोड़ कर प्रथम समयमें जो प्रदेशाग्र निषिक्त होता है वह कितना है ऐसा जो कहा है वह कैसे घटित होता है ?

समाधान-यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, आबाधाको छोड़कर निषेकस्थितियोंमें जो प्रथम स्थिति है उसका वहां ग्रहण किया है ।

अथवा नाना समयप्रबद्धोंका आश्रय लेकर यह प्ररूपणा करनी चाहिए । यदि कहा जाय कि अपकर्षण और उत्कर्षणके निमित्तसे यहां परमाणुओंकी विसदृशता हो जायगी सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, सिचनका आश्रय लेकर कथन करनेपर विसदृशताका अभाव है ।

इस प्रकार प्रदेशप्रमाणानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा जो औदारिक शरीरवाला, वैक्रियिकशरीरवाला और आहारकशरीरवाला जीव है, प्रथम समयमें आहारक हुए और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए उसी जीवके द्वारा औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारक-शरीररूपसे जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें निषिक्त होता है वह बहुत है ॥ २६३ ॥

शंका-आहारकशरीरका 'प्रथमसमयतद्भवस्थ' विशेषण कैसे बन सकता है ?

समाधान-यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, औदारिकशरीरको छोड़ कर आहारकशरीर रूपसे परिणत हुए जीवका अवान्तरगमन है, इसलिए 'प्रथमसमयतद्भवस्थ' विशेषण बन जाता है ।

तीन शरीरोंका अपनी अपनी कर्मस्थितियोंके प्रथम समयमें जो प्रदेशाग्र निषिक्त होता है वह आगेकी स्थितियोंमें प्राप्त होनेवाले प्रदेशोंसे बहुत होता है ।

जं विदियसमए पदेसगं णिसित्तं तं विसेसहीणं ॥ २६४ ॥

केत्तियमेत्तेण ? णिसेगभागहारेण पढमणिसेगं खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तेण ।
केत्तियमेत्तो एत्थ णिसेगभागहारो ? दोगुणहाणिमेत्तो । गुणहाणिपमाणं केत्तियं ?
ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणमंतोमहुत्तं । तेजइय-कम्मइयसरीराणं पुण
गुणहाणिपमाणं पलिदोवमस्स असंखे० भागो ।

जं तदियसमए पदेसगं णिसित्तं तं विसेसहीणं ॥ २६५ ॥

केत्तियमेत्तेण ? सगसगणिसेयभागहारेहि रूवूणेहि सगसगविदियणिसेगेसु
खंडिदेसु तत्थ एगखंडमेत्तेण ।

जं चउत्थसमए पदेसगं णिसित्तं तं विसेसहीणं ॥ २६६ ॥

केत्तियमेत्तेण ? सगसगणिसेयभागहारेहि दुरुवूणेहि सगसगतदियणसेगेसु
खंडिदेसु तत्थ एगखंडमेत्तेण । एवं णिसेयभागहारो तिरुवूणचदुरुवूणादिकमेण णेयव्वो
जावः पढमगुणहाणि त्ति । पुणो उवरि णिसेगभागहारो चेव होदि । तत्तो उवरि
रूवूणादिकमेण णेयव्वो ।

जो द्वितीय समयमें प्रदेशाग्र निषिक्त होता है वह विशेषहीन है । २६४ ।

कितना हीन है ? निषेकभागहारसे प्रथम निषेकको भाजित करने पर जो एक भाग
प्राप्त होता है उतना हीन है ।

शंका— यहाँ निषेकभागहार कितना है ?

समाधान— दो गुणहानिमात्र है ।

शंका— गुणहानिका प्रमाण कितना है ।

समाधान— औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरकी गुणहानिका
प्रमाण अन्तर्सुहूर्त है । परन्तु तैजसशरीर और कार्मणशरीरकी गुणहानिका प्रमाण पत्यके
असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

जो तृतीय समयमें प्रदेशाग्र निषिक्त होता है वह विशेषहीन है । २६५ ।

कितना हीन है ? एक कम अपने अपने निषेकभागहारसे अपने अपने द्वितीय निषेकके
भाजित करने पर वहाँ जो एक भाग लब्ध आवे उतना हीन है ।

जो चतुर्थ समयमें प्रदेशाग्र निषिक्त होता है वह विशेषहीन है । २६६ ।

कितना हीन है ? दो कम अपने अपने निषेकभागहारसे अपने अपने तृतीय निषेकके
भाजित करने पर वहाँ जो एक भाग लब्ध आवे उतना हीन है । इस प्रकार प्रथम गुणहानिके
अन्त तक निषेकभागहार तीन कम और चार कम आदि क्रमसे ले जाना चाहिए । पुनः ऊपर
निषेकभागहार ही होता है । फिर वहाँ ऊपर एक कम आदि क्रमसे ले जाना चाहिए ।

❁ का० प्रती ' जाव ' इति आरभ्य टीकागतपाठो नोपलभ्यते ।

❁ ता० प्रती होदि । ' तत्थ उवरि ' इति पाठः ।

एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण तिण्णि पल्लिवोव-
माणि तेत्तीसं सागरोवमाणि अंतोमुहुत्तं ॥२६७॥

एदाओ तिण्णि वि द्विदीओ जहाकमेण तिण्णं णोकम्माणं जोजेयव्वाओ

तेजा-कम्मइयसरीरिणा तेजा-कम्मइयसरीरत्ताए जं पढमसमए
पदेसगं णिसित्तं तं बहुअं ॥२६८॥

जं बिदियसमए पदेसगं णिसित्तं तं विसेसहीणं ॥२६९॥

जं तदियसमए पदेसगं णिसित्तं तं विसेसहीणं ॥२७०॥

एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण छावट्टिसागरोव-
माणि कम्मट्ठिदी ॥२७१॥

एत्थ तेजइयसरीरस्स परूवणे कीरमाणे ॥ जहा ओरालियसरीरस्स णिसेयपमाण-
परूवणा कदा तहा कायव्वा, आबाधाभावं पडि विसेसाभावादो । णवरि एत्थ णिसे-
गभागहारो पल्लिवोवमस्स असंखे ० भागो । कम्मइयसरीरस्स पुणो सत्तवाससहस्साणि
आबाधं मोत्तूण जं पढमसमए णिसित्तं तं बहुअं । जं बिदियसमए णिसित्तं

इस प्रकार उत्कृष्ट रूपसे तीन पल्ल, तेत्तीस सागर और अन्तर्मुहूर्तके अन्त
तक विशेष हीन प्रदेशाग्र निषिक्त होता है ॥ २६७ ॥

ये तीनों स्थितियाँ यथाक्रमसे तीन नोकर्मोंके लिए योजित कर लेनी चाहिए ।

तैजस शरीर और कर्मण शरीरवाले जीवके द्वारा तैजस शरीर और कर्मण
शरीररूपसे जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें निषिक्त होता है वह बहुत है ॥ २६८ ॥

जो द्वितीय समयमें प्रदेशाग्र निषिक्त होता है वह विशेष हीन है ॥ २६९ ॥

जो तृतीय समयमें प्रदेशाग्र निषिक्त होता है वह विशेष हीन है ॥ २७० ॥

इस प्रकार छयासठ सागर और कर्मस्थितिके अन्त तक विशेष हीन प्रदेशाग्र
निषिक्त होता है ॥ २७१ ॥

यहां तैजस शरीरकी परूवणा करनेपर जिस प्रकार औदारिकशरीरकी निषेकप्रमाणपरू-
वणा की है उस प्रकारसे करनी चाहिए, क्योंकि, आबाधाके अभावके प्रति औदारिकशरीरसे
यहां कोई विशेषता नहीं है । इतनी विशेषता है कि यहाँ पर निषेकभागहार पल्लके असंख्यातवें
भागप्रमाण है । परन्तु कर्मणशरीरका सात हजार वर्षप्रमाण आबाधाको छोड़कर जो प्रदेशाग्र
आबाधाके बाद प्रथम समयमें निषिक्त होता है वह बहुत है । जो प्रदेशाग्र द्वितीय समयमें

तं विसेसहीणं । केत्तियमेत्तेण ? णिसेगभागहारमेत्तेण पढमणिसेगे खंडिदे तत्थ एगखंड-
मेत्तेण । एत्थ णिसेगभागहारो केत्तिओ ? दोगुणहाणिमेत्तो । गुणहाणिपमाणं केत्तियं ?
पल्लिदो० असंखे० भागो । जं तदियसमए पदेसगं णिसित्तं तं विसेसहीणं एगगोवृच्छ-
विसेसमेत्तेण । एवं जेयव्वं जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमओ त्ति । अट्ठकम्मकलावे कम्मइय-
सरीरे संते एगसमयपबद्धं णाणासमयपबद्धे वा अस्सिदूण अणंतरोवणिधा ण सक्कदे
वोत्तुं । तं जहा- ताव णाणासमयपबद्धे अस्सिदूण अणंतरोवणिधा वोत्तुं सक्किज्जदे ।
कुदो ? जेण कसायपाहुडे एगसमयपबद्धस्स कम्मट्ठिदिणिसित्तस्स समयाहियावलिय-
प्पहुडि निरंतरमणूसमयवेदगकालो लब्भदि पल्लिदो० असंखे० भागमेत्तो । पुणो तद-
णंतरउवरिमसमयमादि कादूण तस्समयपबद्धस्स अवेदगकालो होदि । जहण्णेण
एगसमओ, उक्क० पल्लिदो० असंखे० भागमेत्तो निरंतरमवेदगकालो होदि । एवमेग-
समयपबद्धस्स वेदग-अवेदगकालाणि गच्छंति जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमओ त्ति । जहा
कम्मट्ठिदीए एगसमयपबद्धस्स वेदगकालो सांतरो निरंतरो च होदि तथा सेससव्व
समयपबद्धाणं वेदगकालेण सांतरेण निरंतरेण च होदव्वं, समयपबद्धत्तं पडि भेदा-
भावादो । तम्हा कम्मट्ठिदीए णिसित्तसव्वसमयपबद्धाणं पदेसा गोवृच्छागारेण

निषिक्त होता है वह विशेष हीन है । कितना हीन है ? निषेकभागहारसे प्रथम निषेकके
भाजित करने पर वहाँ जो एक भाग लब्ध आवे उतना हीन है ।

शंका— यहाँ निषेकभागहारका प्रमाण कितना है ?

समाधान— दो गुणहानिमात्र उसका प्रमाण है ।

शंका— गुणहानिका प्रमाण कितना है ?

समाधान— गुणहानिका प्रमाण पल्यके असंख्यातवें भागमात्र है ।

जो तृतीय समयमें प्रदेशाग्र निषिक्त होता है वह एक गोपुच्छ विशेषमात्र विशेष
हीन है । इस प्रकार कर्मस्थितिके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिए ।

शंका— आठों कर्मोंके समुदायरूप कर्मणशरीरके होनेपर एक समयप्रबद्ध या नाना
समयप्रबद्धोंका आश्रय लेकर अनंतरोपनिधाका कथन करना शक्य नहीं है । यथा—नाना समय-
प्रबद्धोंका आश्रय लेकर तो अनंतरोपनिधाका कथन करना इसलिए शक्य नहीं है, क्योंकि, यतः
कषायप्राभृतमे कर्मस्थितिमें निषिक्त हुए एक समयप्रबद्धका एक समय अधिक आवलिसे लेकर
पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक प्रत्येक समयमें निरंतर वेदककाल प्राप्त होता है । पुनः
तदनंतर उपरिम समयसे लेकर उस समयप्रबद्धका अवेदक काल होता है । जघन्य रूपसे एक समय
तक और उत्कृष्टरूपसे पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक निरन्तर अवेदक काल होता
है । इस प्रकार एक समयप्रबद्धकी कर्मस्थितिके अन्तिम समय तक निरन्तर वेदककाल और
अवेदककाल होते हुए जाते हैं । जिस प्रकार कर्मस्थितिमें एक समयप्रबद्धका वेदककाल सांतर
और निरन्तर होता है उसी प्रकार शेष सब समयप्रबद्धोंका वेदककाल सांतर और निरंतर होना
चाहिए, क्योंकि, समयप्रबद्धपनेकी अपेक्षा उनमें कोई भेद नहीं है । इसलिए कर्मस्थितिमें निषिक्त

निरंतरं णो अच्छंति । तेण संचयमस्सिद्धं अणंतरोवणिधाणि ए संभवो जत्थि । एगए-
समयपबद्धमस्सिद्धं वि अणंतरोवणिधाए ण संभवो अत्थि । कुदो? सव्वकम्मपढमणि-
सेयाण मेत्थय ७ संभवाभावादो सव्वकम्मचरमणिसेयाणमेयट्ठिदोए णिवावाभावादो
च । तं जहा-कम्मट्ठिदिपढमसमयप्पहुडि उवरि वसवस्ससदाणि गंतूण हस्स-रवि-
पुरिसवेदवेवगइ-देवगइपाओगाणुपुब्बि-समचउरसंठाण-वज्जरिसहवइरणारायणसरीर-
संघडणपसत्थविहायगइ-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर आदेज्ज-जसगित्ति--उच्चागोद पण्णा-
सण्हं (दसियाणं) पयडीणं पढमणिसेया ११ होंति । तत्तो उवरि वेवस्ससदाणि गंतूण
विदियसंठाण विदियसंघडणाणं बारसियाणं बेपयडीणं पढमणिसेया होंति । पुब्बिल्ल-
णिसेयकलावादो संपहियणिसेयकलाओ संखेज्जभागवमहिओ । १५, १७ । तत्तो उवरि
वेवस्ससदाणि गंतूण तदिय-संठाणतदियसंघडणबेपयडीणं चोदसियाणं पढमणिसेया
णिवदंति १९ । ताधे असंखेज्जगुणहीणत्वं फिट्ठिदूण णिसेयकलावस्स संखे०भाग-
वमहियत्वं होदि । तदो वस्ससदमुवरि गंतूण मणुसगइ-मणुसगइपाओगाणुपुब्बि-
इत्थिवेद-सातावेदणीयपयडीणं पण्णारसियाणं पढमणिसेया होंति २३ । ताधे
णिसेगो संखेज्जभागवमहिओ होदि । चउत्थसंठाण-चउत्थसंघडणपयडीणं सोलसि-
याणं तत्तो उवरि वस्ससदं गंतूण पढमणिसेया होंति २५ । ताधे णिसेयकलाओ

हुए सब समयप्रबद्धोंके प्रदेश गोपुच्छाकाररूपसे निरन्तर नहीं रहते हैं । इसलिए संचयका
आश्रय लेकर अनन्तरोपनिधा सम्भव नहीं है । तथा एक समयप्रबद्धका आश्रय लेकर भी
अनन्तरोपनिधा सम्भव नहीं है, क्योंकि, सब कर्मोंके प्रथम निषेक यहाँ सम्भव नहीं हैं तथा सब
कर्मोंके अन्तिम निषेकोंका एक स्थितिमें निपात नहीं होता । यथा-कर्मस्थितिके प्रथम समयसे
लेकर ऊपर एक हजार वर्ष जाकर हास्य, रति, पुरुषवेद, देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, समचतुरस्र
संस्थान, वज्रवर्षभनाराचसंहनन, प्रशस्त विहायोगति, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशः-
कीर्ति और उच्चगोत्र इन पन्द्रह दसिय प्रकृतियोंके प्रथम निषेक होते हैं १५ । वहाँसे ऊपर दो सौ
वर्ष जाकर द्वितीय संस्थान और द्वितीय संहनन इन बारसिय दो प्रकृतियोंके प्रथम निषेक होते
हैं १७ । पहलेके निषेककलापसे साम्प्रतिक निषेककलाप संख्यातवें भागप्रमाण अधिक होता
है । वहाँसे ऊपर दो सौ वर्ष जाकर तृतीय संस्थान और तृतीय संहनन इन चोदसिय
दो प्रकृतियोंके प्रथम निषेक निपतित होते हैं १९ । तब असंख्यात गुणहीनत्व मिटकर
निषेककलापका संख्यातवां भाग अधिक होता है । वहाँसे सौ वर्ष ऊपर जाकर मनुष्यगति मनु-
ष्यगत्यानुपूर्वी, स्त्रीवेद और सातावेदनीय इन पन्द्रहसीय प्रकृतियोंके प्रथम निषेक होते हैं २३ ।
तब निषेक संख्यातवें भाग अधिक होता है । वहाँसे सौ वर्ष ऊपर जाकर चतुर्थ संस्थान और
चतुर्थ संहननके प्रथम निषेक होते हैं २५ । तब निषेककलाप संख्यातवें भागप्रमाण अधिक

❁ प्रतिष 'अणंतरोवणिधाणिसेयं एग-' इति पाठः । ७ ता०प्रती 'णिसेयाणमेत्थ' इति पाठः

❁ ता०प्रती 'उच्चागोदसोलसण्हं (दसियाणं) पयडीणं पढमणिसेया' आ०प्रती 'उच्चगोद तित्थयर
कम्मट्ठिदिणिसेया' मा०प्रती 'उच्चागोदसोलसण्हं पयडीणं पढमणिसेया' इति पाठः ।

संखेज्जभागवमहिओ होदि । तत्तो उवरि बेवस्ससदाणि गंतूण पंचमसंठाण-पंचमसंघ-
 डण--बीइंदिय-तीइंदिय--चउरिंदिय- सुहुम--अपज्जत्त--साहारणपयडीणमट्टारसियाणं
 पढमणिसेया पदंति ३३ । ताधे णिसेयकलावो संखेज्जभागवमहिओ होवि । तत्तो
 बेवस्ससदाणि उवरि गंतूण अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-णवुंसयवेद-णिरयगइ-णिरयगइपा-
 ओग्गाणपुव्वि-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणपुव्वि-एइंदिय-पंचिंदियजादि-तेजा-
 कम्मइयसरीर-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंग-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीर-
 गोवंग-हुंडसंठाण--असंपत्तसेवट्टसंघडण--वण्ण-गंध रस-फास-अगुरुअलहुअ-उक्कादपर-
 घाद-उस्सास-अप्पसत्थविहायगइ-आदावुज्जीव-थावर-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-
 अथिर-असुह-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णिमिण-णीचागोदपयडीणं वीसियाणं
 पढमणिसेया पदंति ७६ । ताधे णिसेयकलावो संखेज्जेहि भागेहि अब्भहिओ होदि ।
 तत्तो उवरि दसवस्ससदमेत्तमद्धाणं गंतूण पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-असा-
 दावेदणीय-पंचंतरायपयडीणं तीसियाणं पढमणिसेया पदंति ९६ । ताधे णिसेयकलाओ
 संखेज्जभागवमहियो होदि । तत्तो उवरि दसवस्ससदमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण सोल-
 सकसायाणं पढमणिसेया पदंति ११२ । ताधे णिसेककलावो संखेज्जभागवमहिओ
 होदि । तदो उवरिमसंखेज्जभागहीणकमेण तिण्णि वस्ससहस्साणि गंतूण मिच्छत्तस्स
 पढमणिसेयो पददि ११३ । पदिदे वि असंखेज्जभागहाणी चेव, देसघादिकम्मपदेसेहिओ

होता है । उससे ऊपर दो सौ वर्ष जाकर पञ्चम संस्थान, पञ्चम संहतन, द्वीन्द्रियजाति, त्रीन्द्रिय-
 जाति, चतुरिन्द्रियजाति, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण इन अठारसीय प्रकृतियोंके प्रथम निषेक
 होते हैं ३३। तब निषेककलाप संख्यातवें भागप्रमाण अधिक होता है । वहाँसे दो सौ वर्ष ऊपर
 जाकर अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद, नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी, तिर्यचगति, तिर्य-
 चगत्यानुपूर्वी, एकेन्द्रियजाति, पंचेन्द्रियजाति, तंजसशरीर, कामंणशरीर, औदारिकशरीर, औदा-
 रिकआंगोपांग, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकआंगोपांग, हुंडसंस्थान, असम्प्राप्तासृपाटिकासंहतन, वर्ण,
 गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, अप्रशस्त विहायोगति, आतप, उद्योत,
 स्थावर, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशःकीर्ति,
 निर्माण और नीचगोत्र इन वीसिय प्रकृतियोंके प्रथम निषेक पडते हैं ७६ । तब निषेककलाप
 संख्यातवें भाग प्रमाण अधिक होता है । वहाँसे एक हजार वर्ष प्रमाण स्थान आगे जाकर पाँच
 ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, असातावेदनीय और पाँच अन्तराय इन तीसिय प्रकृतियोंके प्रथम
 निषेक प्राप्त होते हैं ९६। तब निषेककलाप संख्यातवें भागप्रमाण अधिक होता है। वहाँसे ऊपर एक
 हजार वर्षप्रमाण स्थान जाकर सोलह कषायोंके प्रथम निषेक प्राप्त होते हैं ११२। तब निषेककलाप
 संख्यातवें भागप्रमाण अधिक होता है । वहाँसे ऊपर असंख्यात भागहीन क्रमसे तीन हजार वर्ष
 जाकर मिथ्यात्वका प्रथम निषेक प्राप्त होता है ११३। उसके वहाँ पडने पर भी असंख्यातभागहानि
 ही होती है, क्योंकि, देशघातिकर्मोंके प्रदेशोंसे मिथ्यात्व और बारह कषायरूप सर्वघाति कर्मोंके

मिच्छत्त-वारसकसायाणं सव्वघादीणं पदेसस्स अणंतगुणहीणत्तुवलंभादो । ण च देस-
घादीणमेगगोवुच्छविसेसस्स अणंतिमभागे पविदे णिसेयस्स विसेसाहियत्तं जुज्जदे,
विरोहादो । उवरि जत्थ दसियाणं णिसेयरचना थक्कदि ततो उवरिमअणंतरणिसेओ
संखेज्जविभागहीणो । एवमुवरि जत्थ जत्थ पयडीणं णिसेयरचना थक्कदि तत्थतत्थ
णिसेयो संखेज्जभागहीणो संखेज्जगुणहीणो च होदि त्ति वत्तव्वं । एवं चत्तालीससा-
गरोवमकोडाकोडीओ उवरि गंतूण जावुवरिमअणंतरट्ठिदी तिससे गोवुच्छो अणंतगु-
णहीणो होविं । ततो उवरि सव्वत्थ असंखेज्जभागहीणो, तेण एगसमयपबद्धमस्सि-
दूण वि णाणंतरोवणिधा वोत्तुं सक्किज्जदे ? एत्थ परिहारो उत्तचदे-ण ताव पढमप-
रुविददोससम्भवो, सेचीयादो मिच्छत्तसंचयगोवुच्छाए अणंतरोवणिधाए भणमाणाए
सव्वत्थ विसेसहीणत्तुवलंभादो । ण विदियपक्खे उत्तदोसो वि संभवदि, मिच्छत्तमेक्कं
चेव घेतूण अणंतरोवणिधानिरूवणादो । किमट्ठं तं चेवेक्कं घेप्पदे ? अण्णासि पय-
डीणं ट्ठिदि पडि पहाणत्ताणुवलंभादो । अथवा कम्मट्ठिदि त्ति उत्ते अट्ठण्हं कम्माणं
पुध पुध ट्ठिदीओ घेतव्वाओ । एवं गहिदे ण पुव्वुत्तदोससंभवो, सव्वकम्माणं सगसग-
जहण्णणिसेगट्ठिदिप्पहुडि जाव तगसग्वक्कस्सट्ठिदि त्ति पुध पुध णिसेयरयणाए परू-
विदत्तादो । एवमणंतरोवणिधा ससत्ता ।

प्रदेश अनन्तगुणे हीन उपलब्ध होते हैं । यदि कहा जाय कि देशघातियोंके एक गोपुच्छविशेषके अनन्तवें भागके पतन होने पर निषेकका विशेष अधिकपता बन जाता है सो यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध आता है । ऊपर जहाँ दसियोंकी निषेकरचना समाप्त होती है उससे उपरिम अनन्तर निषेक संख्यातवें भागप्रमाण हीन होता है । इस प्रकार ऊपर जहाँ जहाँ प्रकृतियोंकी निषेक रचना है वहाँ वहाँ निषेक संख्यातभागहीन और संख्यातगुणहीन होता है ऐसा कहना चाहिए । इस प्रकार चालीस कोडाकोडी सागर ऊपर जाकर जो उपरिम अन्तर स्थिति है उसका गोपुच्छ अनन्तगुणा हीन होता है । वहाँसे ऊपर सर्वत्र असंख्यातभागहीन है, इसलिए एक समयप्रबद्धका आश्रय करके भी अनन्तरोपनिधाका कथन करना शक्य नहीं है ।

समाधान-- यहाँ पर परिहारका कथन करने है-- प्रथम पक्षमें कहे गए दोषोंकी तो सम्भावना है नहीं, क्योंकि, सेचीयरूपसे मिथ्यात्वके संचयकी गोपुच्छाके अनन्तरोपनिधारूपसे कथन करने पर सर्वत्र विशेष हीनपता पाया जाता है । द्वितीय पक्षमें कहा गया दोष भी संभव नहीं है, क्योंकि, एक मिथ्यात्वको ही ग्रहण करके अनन्तरोपनिधाका कथन किया है ।

शंका-- उस एकको ही किसलिए ग्रहण करते हैं ?

समाधान -- क्योंकि, अन्य प्रकृतियोंकी स्थितिके प्रति प्रधानता उपलब्ध होती है ।

अथवा कर्मस्थिति ऐसा कहने पर आठों कर्मोंकी पृथक् पृथक् स्थितियाँ ग्रहण करनी चाहिए । ऐसा ग्रहण करने पर पूर्वोक्त दोष सम्भव नहीं है, क्योंकि, सब कर्मोंकी अपनी अपनी जघन्य निषेकस्थितिसे लेकर अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति तक अलग अलग निषेक रचनाका



**परंपरोपनिधाए ओरालिय-वेउव्वियसरीरिणा तेणेव पढमसमय-
आहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण ओरालिय-वेउव्वियसरीरत्ताए जं
पढमसमयपदेसगं तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण दुगुणहीणं ॥ २७२ ॥**

**एवाणि दोण्हं सरीराणं जं भवस्स पढमसमए णिमित्तं पदेसगं तं पेक्खिदूण
कथन किया है ।**

विशेषार्थ— अनन्तरोपनिधामें प्रथम स्थानसे द्वितीय स्थानमें, तथा इसी प्रकार द्वितीय आदि स्थानोंसे तृतीय आदि स्थानोंमें कितनी हानि या वृद्धि होती है इसका विचार किया जाता है । यहाँ कर्मके प्रसंगसे निषेक रचनाका विचार करना है । नोकर्मोंके समान उसके सम्बन्धमें सामान्य नियम यह तो है ही कि प्रथम स्थितिमें जो प्रदेशाग्र मिलता है उससे द्वितीयादि स्थितियोंमें वह उत्तरोत्तर हीन मिलता है । पर कितना हीन मिलता है इस प्रश्नका उत्तर देनेके लिए सूत्रकारने यह व्यवस्था दी है कि प्रथम समयमें जो प्रदेशाग्र निक्षिप्त होता है वह बहुत है । उससे दूसरे समयमें जो प्रदेशाग्र निक्षिप्त होता है वह विशेष हीन है । उससे तीसरे समयमें जो प्रदेशाग्र निक्षिप्त होता है वह विशेष हीन है । इस प्रकार विशेष हीन का यह क्रम कर्मकी अन्तिम स्थिति तक जानना चाहिए । इस पर शंकाकारका यह कहना है कि इस प्रकार जो अनन्तरोपनिधा बतलाई है वह न तो नानासमयप्रबद्धोंका आश्रय लेकर बन सकता है और न एक समयप्रबद्धका आश्रय लेकर ही बन सकती है । कषायप्राभूतमें जो वेदक और अवेदककाल बतलाया है उसे देखते हुए तो नानासमयप्रबद्धोंकी अपेक्षा उक्त प्रकारसे अनन्तरोपनिधा नहीं बन सकती । यदि एक समयप्रबद्धकी अपेक्षा यह अनन्तरोपनिधा मानी जाय तो यह मानना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, एक तो मूल और उत्तर प्रकृतियोंकी अपेक्षा प्रत्येक कर्मकी अपनी अपनी स्थितिके अनुसार अलग अलग आबाधा पड़ती है, दूसरे एक समयमें आए हुए द्रव्यका बटवारा सर्वघाति और देशघातिरूपसे विभाग होकर भिन्न भिन्न प्रकारसे होता है, इसलिए न तो सब कर्मोंकी निषेकरचना एक स्थानसे प्रारम्भ हो सकती है और न समानक्रमसे विभाग होकर सब कर्मोंको द्रव्य ही मिल सकता है । अतः प्रथम स्थितिके प्रदेशाग्रसे द्वितीय स्थितिका प्रदेशाग्र, द्वितीय स्थितिके प्रदेशाग्रसे तृतीय स्थितिका प्रदेशाग्र विशेष हीन होता है इत्यादि क्रम नहीं बन सकता । यह मूल शंका है । इस शंकाका जो समाधान किया है उसका सार यह है कि यहाँ जो अनन्तरोपनिधाका कथन किया है वह एक समयमें आठों कर्मों और उनकी उत्तर प्रकृतियोंके लिए जो द्रव्य मिला है उस सबको मिलाकर कथन वहीं किया गया है किन्तु मिथ्यात्वको या अलग अलग प्रकृतिको ध्यानमें रख कर ही यहाँ अनन्तरोपनिधाका कथन किया गया है, इसलिए शंकाकारने जो आपत्तियां उठाई हैं उनका परिहार हो जाता है ।

इस प्रकार अनन्तरोपनिधा समाप्त हुई ।

**परम्परोपनिधाकी अपेक्षा जो औदारिकशरीरवाला और वैक्रियिकशरीर—
वाला जीव है, प्रथम समयमें आहारक हुए और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए उसी
जीवके द्वारा औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीररूपसे जो प्रथम समयमें प्रदेशाग्र
निक्षिप्त होता है उससे अन्तर्मुहूर्त जाकर वह दुगुणा हीन होता है ॥ २७२ ॥**

इन दोनों शरीरोंका भवके प्रथम समयमें जो प्रदेशाग्र निक्षिप्त होता है उसे देखते हुए

तत्तो अंतोमूहुत्तमुवरि गंतूण णिसित्तं पदेसगं दुगुणहीणं होवि । किं पमाणमंतोमूहुत्तं ?
णिसेगभागहारस्स अद्धमेत्तं । पुणो दुगुणहीणणिसेगादो उवरि तत्तियं चेव अवट्ठिद-
मद्धानं गंतूण जो अणो णिसेयो सो तत्तो दुगुणहीणो होवि ।

एवं दुगुणहीणं दुगुणहीण जाव उक्कस्सेण तिण्णि पल्लिवोव-
माणि तेत्तीसं सागरोवमाणि ॥ २७३ ॥

अप्पिवअप्पिवदुगुणहीणणिसेगादो उवरि अवट्ठिदअंतोमूहुत्तमद्धानं गंतूण
ट्ठिदणिसेगो दुगुणहीणो होवि त्ति घेत्थ्वं । अवट्ठिदमद्धानमिवि कथं णव्वदे ? ' एवं '
णिद्देसादो । एवं एवेण कमेण णेयव्वं जाव तिण्णं पल्लिवोवमाणं तेत्तीसं सागरो-
वमाणं चरिमट्ठिदि त्ति । एगगुणहाणिअद्धानपरूषणट्ठं* णाणागुणहाणिसलागाणं
पमाणपरूषणट्ठं च उत्तरसुत्तमागवं--

एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमंतोमूहुत्तं णाणापदेसगुणहाणिट्ठा-
णंतराणि पल्लिवोवमस्स असंखेज्जविभागो ॥ २७४ ॥

उससे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण काल ऊपर जाकर वहाँकी स्थितिमें निषिक्त हुआ प्रदेशाग्र दुगुणा हीन होता है ।

शंका - - यहाँ अन्तर्मुहूर्तका क्या प्रमाण है ?

समाधान - - निषेक भागहारके अर्धभागप्रमाण है ।

पुनः द्विगुण हीन निषेकसे ऊपर उतना ही अवस्थित अध्वान जाकर जो अन्य निषेक है वह उससे दुगुणा हीन है ।

इस प्रकार उत्कृष्ट रूपसे तीन पल्य और तेतीस सागर होने तक दुगुणा हीन होता गया है ॥ २७३ ॥

उत्तरोत्तर विवक्षित दुगुणे हीन निषेकसे ऊपर अवस्थित अन्तर्मुहूर्त अध्वान जाकर स्थित हुआ निषेक दुगुणा हीन होता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए ।

शंका-- सर्वत्र अवस्थित अध्वान है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- ' एवं ' पदके निर्देशसे जाना जाता है ।

इस प्रकार इस क्रमसे तीस पल्य और तेतीस सागरकी अन्तिम स्थितिके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए । अब एक गुणहानिअध्वानका कथन करनेके लिए और नाना गुणहानि शल्लकाओंके प्रमाणका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र आया है--

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है तथा नानाप्रदेशगुणहानि-
स्थानान्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥ २७४ ॥

* ता० प्रती ' णिद्देसादो । एवं एवेण ' इति पाठः । * प्रतिषु 'अद्धानं परूषणट्ठं' इति पाठः ।

गुणहाणिट्ठाणंतरमंतोमुहुत्तमिदि सुत्तादो चेव णव्वदे, जूत्तिगोचरमइच्छिदूण
ट्ठिवत्तादो । णाणागुणहाणिसलागवमाणं पुण सुत्तादो जूत्तीदो च णव्वदे । तं जहा-
अंतोमुहुत्तस्स जदि एगगुणहाणिसलागा लब्भमिदि तो तिण्णं पल्लिदोवमाणं तेत्तीसं
सागरीवमाणं च किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओणट्ठिवाए णाणापदेस-
गुणहाणिट्ठाणंतराणि पल्लिदो० असंखे०भागमेत्ताणि लब्भंति । एवेसिं थोववहुत्त-
परुवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि-

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं थोवं ॥ २७५ ॥

कुदो ? अंतोमुहुत्तपमाणत्तादो ।

णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि ॥ २७६ ॥

को गुणगारो ? पल्लिदो० असंखे०भागो ।

आहारसरीरिणा तेणेव पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भ-
वत्थेण आहारसरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसग्गं तदो अंतोमुहुत्तं
गंतूण दुगुणहीणं ॥ २७७ ॥

ओरालिय-वेउब्बियसरीरेहि सह आहारसरीरस्स परुवणा किण्ण कदा,
अंतोमुहुत्तं गंतूण दुगुणहीणत्तं पडि भेदाभावादो ? ण, गुणहाणिसलागसंखगदभेद—

गुणहानिस्थानान्तर अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है यह बात सूत्रसे ही जानी जाती है, क्योंकि, वह
युक्तिकी विषयताका उल्लंघन कर स्थित है। परन्तु नानागुणहानिशलाकाओंका प्रमाण सूत्र और
युक्ति दोनोंसे जाना जाता है। यथा-अन्तर्मुहूर्तकी यदि गुणहानिशलाका प्राप्त होती है तो
तीन पत्य और तेतीस सागरोंकी कितनी गुणहानिशलाकायें प्राप्त होंगी, इस प्रकार फलराशिसे
गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देने पर नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पत्यके असंख्या-
तवें भागप्रमाण लब्ध होते हैं। अब इनके अलम्बहुत्वका करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर स्तोके है ॥ २७५ ॥

क्योंकि, वह अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है।

उससे नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥ २७६ ॥

गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

जो आहारकशरीरवाला जीव है, प्रथम समयमें आहारक हुए और प्रथम समय
में तद्भवस्थ उसी जीवके द्वारा आहारकशरीररूपसे जो प्रथम समयमें प्रदेशाग्र
निक्षिप्त होता है उससे अन्तर्मुहूर्त जाकर वह दुगुणा हीन होता है ॥ २७७ ॥

शंका-औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीरके साथ आहारकशरीरकी प्ररूपणा क्यों नहीं
की, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्त स्थान जाकर दुगुणा हीन होता है इस अपेक्षासे इनके कथनमें कोई भेद

परूवणट्ठं पुध सुत्तारंभकरणादो ।

एवं दुगुणहीणं दुगुणहीणं जावुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २७८ ॥

अवट्ठिवगुणहाणिअट्ठाणमिदि जाणावणट्ठं एवं णिद्वेसो कदो, अण्णहा तस्स णिप्फलत्तप्पसंगादो ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमंतोमुहुत्तं णाणापदेसगुणहाणि—
ट्ठाणंतराणि संखेज्जा समया ॥ २७९ ॥

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण पदेसगं दुगुणहीणं होवि त्ति एदेण सुत्तेण जाणाविदस्स गुणहाणिअट्ठाणपमाणस्स पुणो वि एत्थ परूवणा किमट्ठं कीरदे ? तत्तो णाणागुण-
हाणिसलागाणं पमाणमागच्छवि त्ति जाणावणट्ठं कीरदे । तं जहा— अंतोमुहुत्तस्स जदि एगा गुणहाणिसलागा लब्भवि तो आहारसरीरेण सह अच्छणकालब्भंतरे केत्तियाओ लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्ठिवाए संखेज्जाओ णाणा-
गुणहाणिसलागाओ लब्भंति ।

णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि थोवाणि ॥ २८० ॥

कुदो ? संखेज्जत्तादो ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ॥ २८१ ॥

नहीं है ।

समाधान— नहीं, क्योंकि, गुणहानिशलाकाओंके संख्यागत भेदका कथन करनेके लिए अलगसे सूत्रका आरम्भ किया है ।

इस प्रकार अन्तर्मुहूर्त प्राप्त होने तक दुगुणा हीन दुगुणा हीन होता गया है । २७८।

गुणहानिअध्वान अवस्थित है, इस बातका ज्ञाव करानेके लिए ' एवं ' पदका निर्देश किया है, अन्यथा उसके निष्फल होनेका प्रसंग आता है ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है और नानाप्रदेशगुणहानि-
स्थानान्तर संख्यात समयप्रमाण है ॥ २७९ ॥

शंका— ' उससे अंतर्मुहूर्त जाकर प्रदेशाग्न दुगुणा हीन होता है ' इस प्रकार इस सूत्रके द्वारा गुणहानि अध्वानके प्रमाणका ज्ञान हो जाता है, इसलिए पुनः इसकी परूवणा किसलिए करते हैं ?

समाधान— उससे नानागुणहानिशलाकाओंका प्रमाण आता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए उसकी परूवणा करते हैं । यथा— अंतर्मुहूर्तकी यदि एक गुणहानिशलाका प्राप्त होती है तो आहारकशरीरके साथ रहनेके कालके भीतर वे कितनी प्राप्त होंगी, इस प्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देने पर संख्यात नानागुणहानिशलाकार्ये प्राप्त होती हैं ।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर स्तोक है ॥ २८० ॥

क्योंकि, उनका प्रमाण संख्यात है ।

उनसे एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥ २८१ ॥

को गुण० ? अंतोमूहुत्तं ।

तेजा-कम्मइयसरीरिणा तेजा-कम्मइयसरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसगं तदो पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागं गंतूण दुगुणहीणं पलिदो० असंखे०भागं गंतूण दुगुणहीणं ॥२८२॥

पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागं गंतूण निसेगस्स दुगुणहीणत्तं कुदो णव्वदे ? एवम्हादो चेव सुत्तादो । ण च पमाणं पमाणंतरमवेक्खदे, अणवत्थापसंगादो ।

एवं दुगुणहीणं दुगुणहीणं जाव उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि कम्मट्ठिदो ॥२८३॥

सुगममेवं ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जाणि पलिदोवमवगमूलाणि णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि पलिदोवमवगमूलस्स असंखेज्जविभागो ॥२८४॥

एत्थ वि पुब्बं च गुणहाणिअद्धाणादो णाणागुणहाणिसलागाओ उत्पादेवव्वाओ।

गुणकार क्या है ? गुणकारका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त है ।

तैजसशरीरवाले और कर्मणशरीरवाले जीवके द्वारा तैजसशरीर और कर्मणशरीररूपसे प्रथम समयमें जो प्रवेशाग्र निक्षिप्त होता है उससे पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर वह दुगुणा हीन होता है पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर वह दुगुणा हीन होता है ॥ २८२ ॥

शंका-पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थितिस्थान जाकर निषेक दुगुणा हीन होता है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-इसी सूत्रसे जाना जाता है । और एक प्रमाण दूसरे प्रमाणकी अपेक्षा नहीं करता, क्योंकि, ऐसा होने पर अनवस्थाका प्रसङ्ग आता है ।

इस प्रकार उत्कृष्ट रूपसे छयासठ सागर और कर्मस्थितिके अन्त तक दुगुणा हीन दुगुणा हीन होता हुआ गया है ॥ २८३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानांतर पत्यके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है और नानागुणहानिस्थानान्तर पत्यके प्रथमवर्गमूलके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥२८४॥

यहां पर भी पहलेके समान एकगुणहानिअध्वानसे नानागुणहानिसलाकार्ये उत्पन्न करनी

अथवा जहा वेयणाए नाणागुणहाणिसलागाणं गुणहाणीए च परूवणा कदा तथा एत्थ वि कायव्वा ।

णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि थोवाणि ॥ २८५ ॥

पलिदोवमपढमवग्गमूलस्स असंखे०भागमेत्तादो ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं असंखेज्जगुणं ॥ २८६ ॥

असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलपमाणत्तादो । एवं परंपरोवणिधा समत्ता ।

चाहिए । अथवा जिस प्रकार वेदना अनुयोगद्वारमें नानागुणहानिशलाकाओं और एक गुण-हानिकी प्ररूपणा की है उसप्रकार यहाँ भी करनी चाहिए ।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर स्तोके हैं ॥ २८५ ॥

क्योंकि, वे पत्यके प्रथमवर्गमूलके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

उनसे एकप्रवेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥ २८६ ॥

क्योंकि, वे पत्यके असंख्यात प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

विशेषार्थ-- यह तो अनन्तरोपनिधाके प्रसंगसे ही बतला आये हैं कि प्रथम स्थितिमें जो द्रव्य मिलता है उससे द्वितीय स्थितिमें मिलनेवाला द्रव्य विशेष हीन होता है आदि । अब यहाँ परम्परोपनिधामें यह बतलाया गया है कि इस प्रकार आगे आगेकी प्रत्येक स्थितिमें विशेषहीन विशेषहीन होता हुआ वह द्रव्य कितना काल जानेपर आधा, कितना काल जानेपर चतुर्थांश और कितना काल जानेपर अष्टमांश आदि होकर रह जाता है । यहाँ बतलाया है कि औदारिक, वैक्रियिक और आहारकशरीरका द्रव्य उत्तरोत्तर अन्तर्मुहूर्त अन्तर्मुहूर्त काल जानेपर उत्तरोत्तर आधा आधा होता जाता है । तथा तैजसशरीर और कर्मणशरीरका द्रव्य उत्तरोत्तर पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण काल जानेपर आधा आधा होता जाता है । इसका अभिप्राय यह है कि औदारिक, वैक्रियिक और आहारक शरीरकी अपेक्षा इस प्रकार निषेक रचना होती है जिससे वह प्रथम निषेकमें प्राप्त होनेवाले द्रव्यसे अन्तर्मुहूर्तके अन्तमें प्राप्त होनेवाला निषेक आधा रह जाता है । तथा इससे दूसरे अन्तर्मुहूर्तके अन्तमें प्राप्त होनेवाला निषेक उससे भी आधा रह जाता है । इस प्रकार इन तीन नोकर्मोंकी क्रमसे जो तीन पत्य, तेतीस सागर और अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट स्थिति बतलाई है उसमें इस एक द्विगुणहानिके कालका भाग देनेपर उस उस नोकर्मकी अलग अलग द्विगुणहानियोंका प्रमाण आ जाता है । यहाँ मूलमें एक द्विगुण-हानिस्थानान्तरसे एक गुणहानि ली गई है और इस एक द्विगुणहानिका अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थितिमें भाग देने पर जहाँ जितना लब्ध आता है वहाँ उतनी द्विगुणहानियाँ बतलाई गई हैं । इन्हींको नानाद्विगुणहानिस्थानान्तर कहते हैं । यतः तीन पत्य और तेतीस सागरमें अन्तर्मुहूर्तका भाग देनेपर पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान प्राप्त होते हैं अतः औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीरकी इतनी द्विगुणहानियाँ बतलाई हैं । तथा अन्तर्मुहूर्तमें अन्तर्मुहूर्तका भाग देनेपर संख्यात समय लब्ध आते हैं अतः आहारकशरीरकी संख्यात द्विगुणहानियाँ बतलाई हैं । तैजस और कर्मणशरीरकी एकद्विगुणहानि पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है, इसलिए इसका

पदेसविरए त्ति तत्थ इमो पदेसविरअस्स सोलसवदिओ वंडओ कायव्वो भवदि ॥ २८७ ॥

कर्मपुद्गलप्रदेशो विरच्यते अस्मिन्निति प्रदेशविरचः कर्मस्थितिरिति यावत् । अथवा विरच्यते इति विरचः, प्रदेशश्चासौ विरचश्च प्रदेशविरचः, विरच्यमानकर्म-प्रदेशा इति यावत् । तत्थ पढमत्थमस्सिदूण आउट्टिदीए सोलसवदिओ वंडओ कायव्वो त्ति भणिदं होदि ।

सव्वत्थोवा एइंदियस्स जहणिया पज्जत्तणिव्वत्ती ॥ २८८ ॥

जहण्णाउअबंध्यो जहणिया पज्जत्तणिव्वत्ती णाम । भवस्स पढमसमयप्पहुडि जाव जहण्णाउअबंध्यस्स चरिमसमयो त्ति ताव एसा जहणिया णिव्वत्ति त्ति भणिदं होदि । आबाधा एत्थ किण्ण घेप्पदे ? ण, अप्पिदसरीरस्स तत्थ पदेसाभावादो । एइंदिया बादर-सुहुमपज्जत्तापज्जत्तमेएण चउव्विहा । तत्थ कस्स जहणिया णिव्वत्ती

छयासठ सागर और सत्तर कोडाकोडीसागरमें भाग देनेपर पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान लब्ध आते हैं, इसलिए इनकी इतनी द्विगुणहानियाँ होती हैं । इस सब विधिका कथन परम्परोपनिधामें किया जाता है, क्योंकि, इसमें परम्परासे कहाँ कितनी हानि और वृद्धि होती है यह देखा जाता है ।

इस प्रकार परम्परोपनिधा समाप्त हुई ।

प्रदेशविरचका अधिकार है । उसमें प्रदेशविरचका यह सोलहपदवाला दण्डक करने योग्य है ॥ २८७ ॥

कर्मपुद्गलप्रदेश जिसमें विरचा जाता है अर्थात् स्थापित किया जाता है वह प्रदेश-विरच कहलाता है । अभिप्राय यह है कि यहाँ पर प्रदेशविरचसे कर्मस्थिति ली गई है । अथवा विरच पदकी निरुक्ति है- विरच्यते अर्थात् जो विरचा जाता है उसे विरच कहते हैं । तथा प्रदेश जो विरच वह प्रदेशविरच कहलाता है । विरच्यमान कर्मप्रदेश यह उसका अभि-प्राय है । इन दोनों अर्थोंमेंसे प्रथम अर्थकी अपेक्षा आयुस्थितिका सोलह पदवाला दण्डक करना चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

एकेन्द्रिय जीवकी पर्याप्तनिर्वृत्ति सबसे स्तोक है २८८ ॥

जघन्य आयुबन्धकी जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्ति संज्ञा है । भवके प्रथम समयसे लेकर जघन्य आयुबन्धके अन्तिम समय तक यह जघन्य निर्वृत्ति होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका-- यहाँ पर आबाधाका ग्रहण किसलिए नहीं करते हैं ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, विवक्षित शरीरके वहाँ प्रदेश नहीं हैं ।

शंका-- एकेन्द्रिय जीव बादर और सूक्ष्म तथा इनके पर्याप्त और अपर्याप्तके भेदसे चार

घेप्पदि ? सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णणिव्वत्ती घेतत्वा । दोणमपज्जत्ताणं जहण्णणिव्वत्तीओ किण्ण घेप्पति? ण, ततो उवरि णिव्वत्तिट्ठाणाणं निरंतरकमेण गमणाभावादो । बादरेइंदियस्स पज्जत्तयस्स जहण्णणिव्वत्ती किण्ण घेप्पदे ? ण, सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णणिव्वत्तीओ उवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण द्विवादरेइंदियजहण्णपज्जत्तणिव्वत्तीए इंदियजहण्णणिव्वत्तित्तविरोहादो । एसा जहण्णिया णिव्वत्ती किमाउअस्स जहण्णबंधो आहो जहण्णसंतमिदि ? जहण्णबंधो घेतत्वा ण जहण्णं संतं । कुदो ? जीवणियट्ठाणाणं विसेसाहियत्तण्णहाणुव्वत्तीओ । १ ।

णिव्वत्तिट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥ २८९ ॥

तं जहा- सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स जो जहण्णाउअबंधो सो सव्वो एगं णिव्वत्तिट्ठाणं । तम्हि चेव समउत्तरं पबद्धे बिदियं णिव्वत्तिट्ठाणं, पुणो दुसमउत्तरं पबद्धे तदियं णिव्वत्तिट्ठाणं । एवं तिसमउत्तर-चदुसमउत्तरादिकमेण निरंतरं णिव्वत्तिट्ठाणाणि ताव लब्भंति जाव बावीसं वस्ससहस्साणि त्ति । एवेहिंतो उवरि ण लब्भंति, इंदियेसु बावीसवस्ससहस्सेहिंतो अहियआउअबंधाभावादो । समऊणजहण्णणिव्वत्तीए बावीसवस्ससहस्सेसु अवणिदाए णिव्वत्तिट्ठाणाणं पमाणं होदि । एवं होदि त्ति कादूण

प्रकारके हैं । उनमेंसे किसकी जघन्य निर्वृत्ति ग्रहण करते हैं ?

समाधान-- सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकी जघन्य निर्वृत्ति ग्रहण की जानी चाहिए ।

शंका-- दोनों अपर्याप्तकोंकी जघन्य निर्वृत्तियाँ क्यों नहीं ग्रहण करते ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, उनसे ऊपर निर्वृत्तिस्थानोंकी निरन्तर क्रमसे प्राप्तिका अभाव है ।

शंका-- बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकी जघन्य निर्वृत्ति क्यों नहीं ग्रहण करते ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकी जघन्य निर्वृत्तिसे ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर स्थित हुई बादर एकेन्द्रियकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिको एकेन्द्रियकी जघन्य निर्वृत्ति होनेमें विरोध है ।

शंका-- यह जघन्य निर्वृत्ति क्या आयुकर्मका जघन्य बन्ध है या जघन्य सत्त्व है ?

समाधान-- जघन्य बन्ध ग्रहण करना चाहिए जघन्य सत्त्व नहीं, क्योंकि, अन्यथा जीवनीयस्थान विशेष अधिक नहीं बन सकते ।

उससे निर्वृत्तिस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २८९ ॥

यथा-- सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकका जो जघन्य आयुबन्ध है वह सब एक निर्वृत्तिस्थान है । एक समय अधिक उसीका बन्ध होने पर दूसरा निर्वृत्तिस्थान होता है । पुनः दो समय अधिकका बन्ध होनेपर तीसरा निर्वृत्तिस्थान होता है । इस प्रकार तीन समय अधिक और चार समय अधिकके क्रमसे निरन्तर निर्वृत्तिस्थान बाईस हजार वर्षके प्राप्त होने तक लब्ध होते हैं । इनसे ऊपर नहीं प्राप्त होते, क्योंकि, एकेन्द्रियोंमें बाईस हजार वर्षसे अधिक आयुबन्ध नहीं होता । बाईस हजार वर्षोंमेंसे एक समय कम जघन्य निर्वृत्तिके घटा देनेपर निर्वृत्तिस्थानों-

अंतोमुहुत्तमेत्तजहण्णणिव्वत्तीए देसूणबावीसवस्ससहस्समेत्तणिव्वत्तिट्ठाणेसु भागे हिदेसु संखेज्जाणि रूवाणि लब्धंति । जं लद्धं सो गुणगारो । २ ।

जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥ २९० ॥

बंधट्ठाणेहितो जीवणियट्ठाणाणं समत्तं मोत्तूण कुदो विसेसाहियत्तं ? न भुंजमाणा— उअस्स कदलीघादेण जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणादो हेट्ठा जीवणियट्ठाणाणमुवलंभादो । भुंजमाणाउअस्स कदलीघादो अत्थि त्ति कुदो णव्वे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो, अण्णहा णिव्वत्तिट्ठाणेहितो जीवणियट्ठाणाणं विसेसाहियत्ताणुववत्तीदो । एत्थ कदलीघादम्मि वे उव्वेसा, के वि आइरिया जहण्णाउअम्मि आवलियाए असंखे०भागमेत्ताणि जीवणियट्ठाणाणि लब्धंति त्ति भणंति । तं जहा— पुव्वभणिदसुहुमेइवियपज्जत्तसव्व— जहण्णाउअणिव्वत्तिट्ठाणस्स कदलीघादो णत्थि । एवं समउत्तरदुसमउत्तराविणिव्वत्तीणं पि घादो णत्थि । पुणो एदम्हादो जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणादो संखेज्जगुणमाउअं बंधिदूण सुहुमपज्जत्तेसुववण्णस्स अत्थि कदलीघादो । पुण तं घादयमाणेण सव्वजहण्णाउअणिव्वत्तिट्ठाणं समऊणं घादेदूण कदं ताधे तमेण जीवणियट्ठाणं होदि । पुणो तेणेव विधिणा विदियजीवेण घादेदूण दुसमऊणं जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणाउए ट्ठिव्वे

का प्रमाण होता है । इस प्रकार होता है ऐसा समझकर अन्तर्मुहूर्तप्रमाण जघन्य निर्वृत्तिका कुछ कम बाईस हजार वर्षप्रमाण निर्वृत्तिस्थानोंमें भाग देनेपर संख्यात अंक लब्ध आते हैं । यहाँ जो लब्ध आया है वह गुणकार है ।

उनसे जीवनीय स्थान विशेष अधिक हैं । २९० ।

शंका— जीवनीय स्थान बन्धस्थानोंके समान न होकर विशेष अधिक कैसे हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, भुज्यमान आयुका कदलीघात सम्भव होनेसे जघन्य निर्वृत्तिस्थानसे नीचे जीवनीय स्थान उपलब्ध होते हैं ।

शंका— भुज्यमान आयुका कदलीघात होता है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— इसी सूत्रसे जाना जाता है, अन्यथा निर्वृत्तिस्थानोंसे जीवनीयस्थान विशेष अधिक नहीं बन सकते ।

यहाँ कदलीघातके विषयमें दो उपदेश पाये जाते हैं । कितने ही आचार्य जघन्य आयुमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जीवनीय स्थान लब्ध होते हैं ऐसा कहते हैं । यथा— पहले कहे गये सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकी सबसे जघन्य आयुके निर्वृत्तिस्थानका कदलीघात नहीं होता । इसी प्रकार एक समय अधिक और दो समय अधिक आदि निर्वृत्तियोंका भी घात नहीं होता । पुनः इस जघन्य निर्वृत्तिस्थानसे संख्यातगुणी आयुका बन्ध करके सूक्ष्म पर्याप्तकोंमें उत्पन्न हुए जीवका कदलीघात होता है । पुनः उसका घात करनेवाले जीवने आयुके सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थानका घात करके उसे एक समय कम किया तब वह एक जीवनीयस्थान होता है । पुनः उसी विधिसे दूसरे जीवके द्वारा घात करके जघन्य निर्वृत्तिस्थानरूप आयुके दो समय कम स्थापित करने

बिदियं जीवणियट्ठाणं होवि । पुणो अण्णेण विहाणेण घादेदूण जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणे तिसमऊणे कदे तदियं जीवणियट्ठाणं होवि । एवमुवरिमआउअवियप्पे घादिय जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं चदुसमऊण-पंचसमऊणादिकमेण ओदारेवव्वं जाव आवलियाए असंखे० भागमेत्तजीवणियट्ठाणाणि जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणे लद्धाणि ति । एत्थ एत्ति-याणि चेव जीवणियट्ठाणाणि लब्धंति णो वड्ढिमाणि, जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणम्मि आवलिअसंखे० भागादो अधिओ घादो णत्थि ति गुरुवएसादो । तेण णिव्वत्तिट्ठाणे-हितो जीवणियट्ठाणाणि आवलि० असंखे० भागेण विसेसाहियाणि । जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणादो हेट्ठा जीवणियट्ठाणाणि चेव, ण णिव्वत्तिट्ठाणाणि, आउअबंधवियप्पाभावादो । उवरि णिव्वत्तिट्ठाणाणि जीवणियट्ठाणाणि च सरिसाणि, जीवाणं बंधाउअमेत्तकालं जीविदूण अणत्थ गमणुवलंभादो❀ ।

के वि आइरिया एवं भणंति- जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणमुवरिमआउअवियप्पेहि वि घादं गच्छवि । केवलं पि घादं गच्छवि । णवरि उवरिमआउअवियप्पेहि जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं घादिज्जमाणं समऊणदुसमयऊणादिकमेण हीयमाणं❀ ताव गच्छवि जाव जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणस्स संखेज्जे❀ भागे ओदरिय संखे० भागो सेसो ति । जदि पुण केवलं जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं चेव घादेवि तो तत्थ दुविहो कवलीघादो होवि- जहण्णओ

पर दूसरा जीवनीयस्थान होता है । पुनः इस विधिसे घात कर जघन्य निर्वृत्तिस्थानके तीन समय कम करने पर तीसरा जीवनीयस्थान होता है । इस प्रकार उपरिम आयुविकल्पको घात कर तीन जघन्य निर्वृत्तिस्थानको चार समय और पाँच समय आदिके क्रमसे कम करते हुए जघन्य निर्वृत्तिस्थानमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जीवनीयस्थानोंके प्राप्त होने तक उतारना चाहिए । यहाँ पर इतने ही जीवनीयस्थान प्राप्त होते हैं अधिक नहीं, क्योंकि, जघन्य निर्वृत्तिस्थानमें आवलिके असंख्यातवें भागसे अधिक स्थानोंका घात नहीं होता ऐसा गृहका उपदेश है । इसलिए निर्वृत्तिस्थानोंसे जीवनीयस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण विशेष अधिक है । जघन्य निर्वृत्तिस्थानसे नीचे जीवनीयस्थान ही हैं निर्वृत्तिस्थान नहीं, क्योंकि, वहाँ आयुबन्धके विकल्पोंका अभाव है । ऊपर निर्वृत्तिस्थान और जीवनीयस्थान सदृश हैं, क्योंकि, जीवोंका बँधी हुई आयुमात्र काल तक जी कर अन्यत्र गमन पाया जाता है ।

कितने ही आचार्य इस प्रकार कथन करते हैं- जघन्य निर्वृत्तिस्थान उपरिम आयुविकल्पोंके साथ भी घातको प्राप्त होता है और केवल भी घातको प्राप्त होता है । इतनी विशेषता है कि उपरिम आयुविकल्पोंके साथ घातको प्राप्त होता हुआ जघन्य निर्वृत्तिस्थान एक समय और दो समय आदिके क्रमसे कम होता हुआ वह तब तक जाता है जब तक जघन्य निर्वृत्तिस्थानका संख्यात बहुभाग उतर कर संख्यातवें भागप्रमाण शेष रहता है । यदि पुनः केवल जघन्य निर्वृत्तिस्थानको ही घातता है तो वहाँ दो प्रकारका कदलीघात होता है- जघन्य और उत्कृष्ट ।

❀ ता० प्रतो ' गमणाणुवलंभादो ' इति पाठः । ❀ प्रतिपु ' जियमाणं ' इति पाठः ।

❀ अ० का० प्रयो। ' असंखेज्जे ' इति पाठः ।

उक्कस्सओ चेवि । सुट्ठं जदि थोवं घादेदि तो जहण्णिण्यणिव्वत्तिट्ठाणस्स संखेज्जे भागे जीविदूण सेससंखे० भागस्स संखेज्जे भागे संखेज्जदिभागं वा घादेदि । जदि पुण बहुअं घादेदि तो जहण्णिण्यणिव्वत्तिट्ठाणसंखे० भागं जीविदूण संखेज्जे भागे कदलीघादेण घादेदि । तं जहा— एगो तिरिक्खो मणुसो वा सुहुमणिगोदपज्जत्तसव्वजहण्णाउअं बंधिदूण कालं करिय सुहुमणिगोदपज्जत्तएसुववज्जिय सव्वलहुएण कालेण चटुहि पज्जतीहि पज्जत्तयदो होदूण एगवारेण जहण्णिण्यणिव्वत्तिट्ठाणस्स संखेज्जेसु भागेषु जीविदद्वपमा— णेण कदलीघादेण घादिदूण ट्ठविदेसु तमेगमपुणरुत्तं जीवणियट्ठाणं होदि । पुणो अण्णो जीवो सुहुमणिगोदपज्जत्तसव्वजहण्णिण्यणिव्वत्तिट्ठाणं समउत्तरं बंधिदूणपज्जिय कदलीघादेण पुव्वत्तजीवणियट्ठाणादो समउत्तरं काऊण अच्छिदो ताधे तं बिदियम— पुणरुत्तं जीवणियट्ठाणं होदि । पुणो तदियजीवेण सुहुमणिगोदपज्जत्तसव्वजहण्णाउअं दुसमउत्तरबंधेण पुव्वत्तसव्वजहण्णिण्यणिव्वत्तिट्ठाणस्सुवरि कदलीघादेण दुसमउत्तरे जीव— णियट्ठाणे कदे तं तदियमपुणरुत्तं जीवणियट्ठाणं होदि । एवं हेट्ठदो उवरि तिसमउत्तर— चटुसमउत्तरादिकमेण णाणाजीवे अस्सिदूण णेयव्वं जाव समऊणसव्वजहण्णिण्यणिव्वत्तिट्ठाणं ति । एवं कदे अंतोमुहुत्तूणवावीसवस्ससहस्समेत्तणिव्वत्तिट्ठाणाणमुवरि सव्वजहण्णिण्यणिव्वत्तिट्ठाणस्स संखेज्जा भागा पविसिदूण जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि भवंति । पुव्वत्तविसेसादो संपहिय विसेसो असंखेज्जगुणो । कुदो ? जहण्ण—

यदि अति स्तोकका घात करता है तो जघन्य निर्वृत्तिस्थानके संख्यात बहु भाग तक जीवित रह कर शेष संख्यातवें भागके संख्यात बहुभाग या संख्यातवें भागका घात करता है । यदि पुनः बहुतका घात करता है तो जघन्य निर्वृत्तिस्थानके संख्यातवें भागप्रमाण काल तक जीवित रह कर संख्यात बहुभागका कदलीघातद्वारा घात करता है । यथा— एक तिर्यञ्च या मनुष्यके सूक्ष्म निगोद पर्याप्तिककी सबसे जघन्य आयुका बन्ध करके और मर कर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तिकोंमें उत्पन्न हो कर सबसे जघन्य कालके द्वारा चार पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो कर एक बारमें जघन्य निर्वृत्तिस्थानके संख्यात बहुभागका कदलीघातसे घात कर जीवित कालप्रमाण स्थापित करने पर वह एक अपुनरुक्त जीवनीयस्थान होता है । पुनः अन्य जीव सूक्ष्म निगोद पर्याप्तिकके सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थानको एक समय अधिक बाँध कर और वहाँ उत्पन्न होकर कदलीघातके द्वारा पूर्वोक्त जीवनीय स्थानसे इसे एक समय अधिक करके स्थित हुआ तब वह दूसरा अपुनरुक्त जीवनीय— स्थान होता है । पुनः सूक्ष्म निगोद पर्याप्तिककी सबसे जघन्य आयुका बंध करनेवाले तीसरे जीवके द्वारा पूर्वोक्त सबसे जघन्य घातस्थानके ऊपर कदलीघातके द्वारा दो समय अधिक जीवनीयस्थानके करने पर वह तीसरा अपुनरुक्त जीवनीयस्थान होता है । इस प्रकार नीचेसे ऊपर तीन समय अधिक और चार समय अधिक आदिके क्रमसे नाना जीवोंका आश्रय लेकर एक समय कम सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थानके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए । ऐसा करने पर अन्तर्मुहूर्त कम बाईस हजार वर्षप्रमाण निर्वृत्तिस्थानोंके ऊपर सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थानके संख्यात बहुभागका प्रवेश कराकर जीवनीयस्थान विशेष अधिक होते हैं । पूर्वोक्त विशेषसे साम्प्रतिक विशेष

णिव्वत्तिट्ठाणस्स संखेज्जेसु भागेसु संखेजावलिघाणमुवलंभादो । एत्थ पढमववत्ताणं ण भद्दयं, खुद्दाभवगगहणादो । एइंदियस्स जहणिया णिव्वत्ती संखेज्जगुणा त्ति सुत्तेण सह विरुद्धत्तादो । ३ ।।

उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ॥ २९१ ॥

केत्तियमेत्तेण ? आवलि० असंखे० भागमेत्तेण वा जहणणिव्वत्तिट्ठाणस्स संखेज्जेहि भागेहि वा ऊणसव्वजहणणिव्वत्तिट्ठाणमेत्तेण । ४ ।।

सव्वत्थोवा सम्मुच्छिमस्स जहणिया पज्जत्तणिव्वत्ती ॥ २९२ ॥

सम्मुच्छिमपज्जत्ता बादरेइंदियपज्जत्त-बेइंदियपज्जत्त-तेइंदियपज्जत्त-चउरि-दियपज्जत्त-असण्णिपंचिदियपज्जत्त-सण्णिपंचिदियपज्जत्तभेदेण छव्विहा होंति, तत्थ कस्सेवं गहणं छण्णं पि गहणं कायव्वं, विरोहाभावादो । एदेसि अपज्जत्ताणं गहणं ण कायव्वं, पज्जत्तणिद्वेसेण ओसरिवत्तादो । किमट्ठमपज्जत्ता ओसारिज्जन्ति ? तेसि णिव्वत्तिट्ठाणाणं गिरंतरवड्डीए अभावादो । तेण सम्मुच्छिमपज्जत्तजहणणिव्वत्ति त्ति भणिवे छण्णं सम्मुच्छिमपज्जत्ताणमंतोमुहुत्तमेत्तसव्वजहण्णाउआणं गहणं कायव्वं । ५ ।

णिव्वत्तिट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥ २९३ ॥

असंख्यातगुणा है, क्योंकि, जघन्य निर्वृत्तिस्थानके संख्यात बहु भागोंमें संख्यात आवलियाँ उप-लब्ध होती हैं । यहाँ पर प्रथम व्याख्यान ठीक नहीं है, क्योंकि, उसमें क्षुल्लक भवका ग्रहण किया है । तथा एकेन्द्रियकी जघन्य निर्वृत्ति संख्यातगुणी है इस सूत्रके वह विरुद्ध पड़ता है ।

उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक है ॥ २९१ ॥

कितनी अधिक है ? आवलिके असंख्यातवें भागसे या जघन्य निर्वृत्तिस्थानके संख्यात बहुभागसे न्यून जो सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थान है उतनी वह अधिक है ।

सम्मूच्छेन जीवकी जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्ति सबसे स्तोक है ॥ २९२ ॥

शंका-सम्मूच्छेन पर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त, द्वीन्द्रिय पर्याप्त, त्रीन्द्रिय पर्याप्त, चतुरिन्द्रिय पर्याप्त, असंजी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त और संजी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तके भेदसे छह प्रका-रके हैं । उनमेंसे किसका यह ग्रहण किया है ?

समाधान-छहोंका ही ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि, ऐसा करनेमें कोई विरोध नहीं है ।

मात्र इनके अपर्याप्तकोंका ग्रहण नहीं करना चाहिए, क्योंकि, पर्याप्त पदके निर्देश द्वारा उनको अलग कर दिया है ।

शंका-अपर्याप्तकोंको किसलिए अलग किया है ?

समाधान-क्योंकि, उनके निर्वृत्तिस्थानोंकी निरन्तर वृद्धिका अभाव है ।

इसलिए सम्मूच्छेन पर्याप्तकोंकी जघन्य निर्वृत्ति ऐसा कहनेपर छह सम्मूच्छेन पर्याप्त-कोंकी अन्तर्मुहूर्तप्रमाण सबसे जघन्य आयुका ग्रहण करना चाहिए ।

उससे निर्वृत्तिस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २९३ ॥

अप्पप्पणो सव्वजहण्णणिव्वत्तिट्ठाणस्सुवरि समउत्तरादिकमेण निरंतरणिव्वत्ति-
ट्ठाणाणि ताव लब्भंति जाव एइंविएसु बावीसवस्ससहस्साणि, बेइंविएसु बारसवा-
साणि तेइंविएसु एगुणवण्ण रादिदियाणि चउरिंविएसु छप्पासा सण्णि-असण्णिपंचि-
दिएसु पुव्वकोडि त्ति । तदो अप्पप्पणो जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणे समऊणे अप्पप्पणो
उक्कस्साउअम्म सोहिदे णिव्वत्तिट्ठाणाणि होति । पुणो अप्पप्पणो जहण्णणिव्वत्तीए
संखेज्जावलियमेत्ताए अप्पप्पणो णिव्वत्तिट्ठाणेसु भागे हिदेसु संखेज्जरूवाणि लब्भंति ।
जं लद्धं सो गुणगारो । ६ । ।

जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥ २९४ ॥

केत्तियमेत्तेण ? आवलि० असंखे० भागमेत्तेण वा अप्पप्पणो सव्वजहण्णणिव्व-
त्तीए संखेज्जेहि भागे हिदे वा ॥ १ ॥ एत्थ कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । ७ । ।

उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ॥ २९५ ॥

केत्तियमेत्तेण ? अप्पप्पणो सव्वजहण्णजीविदमेत्तेण । ८ । ।

सव्वत्थोवा गव्वभोवक्कंतियस्स जहणिया पज्जत्तणिव्वत्ती । २९६ ।

गव्वभोवक्कंतियसव्वजहण्णणिव्वत्तीए अंतोमूहुत्तपमाणत्तादो । ९ । ।

अपने अपने सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थानके ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे
निरन्तर निर्वृत्तिस्थान एकेन्द्रियोंमें बाईस हजार वर्षप्रमाण, द्वीन्द्रियोंमें बारह वर्षप्रमाण, त्रीन्द्रि-
योंमें उनचास रात-दिनप्रमाण, चतुरिन्द्रियोंमें छह महिनाप्रमाण तथा संज्ञी और असंज्ञी
पञ्चेन्द्रियोंमें पूर्वकोटि वर्षप्रमाण होनेतक प्राप्त होते हैं । तदनन्तर अपने अपने एक समय कम
जघन्य निर्वृत्तिस्थानको अपनी अपनी उत्कृष्ट आयुमेंसे कम करनेपर निर्वृत्तिस्थान होते
हैं । पुनः अपनी अपनी संख्यात आवलिप्रमाण जघन्य निर्वृत्तिका अपने अपने निर्वृत्तिस्थानोंमें
भाग देनेपर संख्यात अंक लब्ध आते हैं । यहाँ जो लब्ध आया है वह गुणकार है ।

उनसे जीवनीयस्थान विशेष अधिक हैं ॥ २९४ ॥

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक हैं । अथवा अपनी
अपनी जघन्य निर्वृत्तिके संख्यात बहुभागप्रमाण अधिक हैं । यहाँ कारणका कथन पहलेके समान
करना चाहिए ।

उनसे उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक है । ॥ २९५ ॥

कितनी अधिक है ? अपने अपने सबसे जघन्य जीवित रहनेका जो प्रमाण है उतनी
अधिक है ।

गर्भोपक्रान्त जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति सबसे स्तोका है ॥ २९६ ॥

क्योंकि, गर्भोपक्रान्त जीवकी सबसे जघन्य निर्वृत्ति अन्तर्मुहूर्तप्रमा है ।

❖ ता० प्रश्नो ' भागेहि (दे) वा ' अ० प्रती ' भागे वा ' का० प्रती ' भागेहि वा ' इति पा५ ।

णिव्वत्तिट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ २९७ ॥

को गुणगारो ? पलिदो० असंखे० भागो । कुदो ? जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणादो समउत्तरादिकमेण निरंतरं जाव तिण्णि पलिदोवमाणि त्ति णिव्वत्तिट्ठाणाणं वुड्ढि-
वंसणादो । पुव्वकोडीए उवरि कथं निरंतरवड्ढी लब्भवे ? ण, उस्सप्पिणिकालमस्सि-
दूग भरहएरावदमणुस्सेसु पुव्वकोडीए उवरि समउत्तरादिकमेण निरंतरं तिण्णि
पलिदोवमाणि वुड्ढिवंसणादो । १० ।।

जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥ २९८ ॥

केत्तियमेत्तेण ? आवलि० असंखे० भागेण जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणस्स संखेज्जेहि
भागेहि वा । एत्थ कारणं जाणिय वत्तव्वं । ११ ।।

उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ॥ २९९ ॥

केत्तियमेत्तेण ? कदलीघावजहण्णिदसव्वजहण्णजीवणकालमेत्तेण । १२ ।।

सव्वत्थोवा उववादिमस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती ॥ ३०० ॥

कुदो ? दसवस्ससहस्सपमाणत्तादो । १३ ।।

उससे निर्वृत्तिस्थान असंख्यातगुणे हैं । २९७ ।

गुणकारका प्रमाण कितना है ? पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकारका प्रमाण है, क्योंकि, जघन्य निर्वृत्तिस्थानसे लेकर एक समय अधिक आदिके क्रमसे निरन्तर तीन पत्य प्रमाण कालतक निर्वृत्तिस्थानोंकी वृद्धि देखी जाती है ।

शंका--पूर्वकोटि कालके ऊपर निरन्तर वृद्धि कैसे सम्भव है ?

समाधान--नहीं, क्योंकि, उत्सप्पिणी कालका आश्रय लेकर भरत और ऐरावत क्षेत्रके मनुष्योंमें पूर्वकोटिके ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे तीन पत्यप्रमाण कालतक निरन्तर वृद्धि देखी जाती है ।

उनसे जीवनीयस्थान विशेष अधिक हैं । २९८ ।

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक हैं । अथवा जघन्य निर्वृत्तिस्थानके संख्यात बहुभागप्रमाण अधिक हैं । यहाँ पर कारणका कथन जानकर करना चाहिए ।

उनसे उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक है । २९९ ।

कितनी अधिक है ? कदलीघातके कारण जो सबसे जघन्य जीवनकाल उत्पन्न होता है उतनी अधिक है ।

औपपादिक जन्मवालेकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति सबसे स्तोक है । ३०० ।

क्योंकि, वह दस हजार वर्षप्रमाण है ।

निव्वत्तिट्ठाणाणि जीवणियट्ठाणाणि च दो वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ ३०१ ॥

कुदो ? दसवस्ससहस्साणमुवरि समउत्तरादिकमेण निव्वत्तिट्ठाणाणि जीवणियट्ठाणाणि च सरिसाणि होदूण गच्छंति जावुकस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि त्ति । एत्थ जीवणियट्ठाणाणं निव्वत्तिट्ठाणाणं च निरंतरवड्ढी कथं लब्भदे ? ण, दसवस्ससहस्समादि कादूण समउत्तरादिकमेण बंधेण जाव तेत्तीससागरोवमाणि त्ति वड्ढीए विरोहाभावादो, ओवट्ठणाघादेण आउअं घादिय देवेसुप्पज्जमाणे अस्सिदूण निव्वत्तिट्ठाणाणं जीवणियट्ठाणाणं च निरंतरवड्ढीए विरोहाभावादो च । निव्वत्तिट्ठाणेहितो जीवणियट्ठाणाणं विसेसाहियत्तमेत्थ किण्ण परूविदं ? ण, देवणेरइएसु आउअस्स कदलीघादाभावादो तत्थ कदलीघादो णत्थि त्ति कुदो णव्वदे ? निव्वत्ति-जीवणियट्ठाणाणि तुल्लाणि त्ति सुत्तण्णहाणुववत्तीदो । को गुणगारो ? पलिदो० असंखेज्ज—विभागो । १५ । ।

उक्कस्सिया निव्वत्ती विसेसाहिया ॥ ३०२ ॥

उसमें निर्वृत्तिस्थान और जीवनीयस्थान दोनों ही तुल्य होकर असंख्यात-गुणे हैं ॥ ३०१ ॥

क्योंकि, दस हजार वर्षके ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे निर्वृत्तिस्थान और जीवनीयस्थान समान होकर तेतीस सागरकाल तक जाते हैं ।

शंका— यहाँपर जीवनीयस्थानोंकी और निर्वृत्तिस्थानोंकी निरन्तर वृद्धि कैसे प्राप्त होती है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, दस हजारवर्षसे लेकर एक समय अधिक आदिके क्रमसे बन्धके द्वारा तेतीस सागर काल तक वृद्धि होनेमें कोई विरोध नहीं है और अपवर्तनाघातके द्वारा आयुका घात करके देवोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंका आश्रय लेकर निर्वृत्तिस्थान और जीवनीयस्थानोंकी निरन्तर वृद्धि होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

शंका— निर्वृत्तिस्थानोंकी अपेक्षा जीवनीयस्थान यहां विशेष अधिक क्यों नहीं कहे हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, देव और नारकियोंमें आयुका कदलीघात नहीं होता ।

शंका— देवों और नारकियोंमें आयुका कदलीघात नहीं होता यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— वहाँ निर्वृत्तिस्थान और जीवनीयस्थान तुल्य हैं यह सूत्र अन्यथा बन नहीं सकता है; इससे जाना जाता है कि देवों और नारकियोंमें कदलीघात नहीं होता ।

गुणकार क्या है ? पत्यसे असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उनसे उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक है ॥ ३०२ ॥

केत्तियमेत्तेण ? समऊणदसवस्ससहस्समेत्तेण । १६ ।

एवं सत्थाणेण सोलसवदियमहादंडओ समत्तो ।

एत्थ अग्पाबहुअं ॥ ३०३ ॥

संपहि सत्थाणेण सोलसवदियअग्पाबहुअं कादूण परत्थाणेण सोलसवदिय-
अग्पाबहुअं भणामि त्ति भणिदं होदि ।

सत्त्वत्थोवं खुद्दाभवग्गहणं ॥ ३०४ ॥

एत्थ खुद्दाभवग्गहणं दुविहं- णिसेयखुद्दाभवग्गहणं घादखुद्दाभवग्गहणं चेदि ।

कितनी अधिक है ? एक समय कम दस हजार वर्षप्रमाण अधिक है ।

विशेषार्थ— यहाँ पर प्रदेशविरच अधिकारके प्रसंगसे निर्वृत्तिस्थानों और जीवनीय-
स्थानोंका सांगोपांग विचार किया गया है । एक जीवके जितनी आयुका बन्ध होता है उसकी
निर्वृत्तिस्थान संज्ञा है और एक जीव भवग्रहणके प्रथम समयसे लेकर जितने काल तक जीवित
रहता है उसकी जीवनीयस्थान संज्ञा है । यह एकांत नियम नहीं है कि जिस भवकी जितनी
आयुका बंध होता है वह उस भवके ग्रहणके समय उतनी नियमसे रहती है । यदि आयुबन्धके
भवमें उसका अपवर्तन न हो या द्वितीयादि त्रिभागोंमें अधिक आयुका बंध न हो तो भवग्रहणके
समय उतनी ही रहती है और यदि पूर्वोक्त क्रिया हो लेती है तो वह घट बढ भी जाती है । इस
प्रकार भवग्रहण करनेके बाद यदि कदलीघात न हो तो भवग्रहणके समय जितनी आयु होती है
उतने काल तक यह जीव जीवित रहता है, अन्यथा कदलीघात होनेसे जीवन काल अल्प हो जाता
है, इसलिए यहाँ निर्वृत्तिस्थानों और जीवनीयस्थानोंका अलग अलग विचार करके ये कहाँ जघन्य
और उत्कृष्ट किस प्रमाणमें प्राप्त होते हैं तथा इनका परस्परमें अल्पबहुत्व कितना है आदि बातोंका
यहाँ सांगोपांग विचार किया गया है । यहाँ एकेन्द्रिय पर्याप्तकी जघन्य निर्वृत्ति और जघन्य जीव-
नीयस्थानका स्पष्टीकरण करते हुए दो मतोंका उल्लेख किया है । उनका आशय इतना ही है कि
एक मतके अनुसार जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिका जितना काल है उसमेंसे आवलिके असंख्यातवें भाग-
प्रमाण कालका घात हो कर जघन्य जीवनीय स्थान प्राप्त होता है और दूसरे मतके अनुसार यह
घात काल संख्यात आवलि प्रमाण तक हो सकता है । किन्तु इतना विशेष जानना चाहिए कि
जो जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिको लेकर उत्पन्न होता है उसके यह कदलीघात हो कर जघन्य जीवनी-
यस्थान नहीं प्राप्त होता किन्तु जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिस्थानसे अधिक आयु लेकर उत्पन्न होनेवाले
जीवके ही यह जघन्य जीवनीयस्थान प्राप्त होता है । विशेष स्पष्टीकरण मूलमें किया ही है ।

इस प्रकार स्वस्थान की अपेक्षा सोलह पदवाला महादण्डक समाप्त हुआ ।

यहाँ अल्पबहुत्व । ३०३ ।

स्वस्थानकी अपेक्षा सोलह पदवाले अल्पबहुत्वका कथन कर अब परस्थानकी अपेक्षा
सोलह पदवाले अल्पबहुत्वका कथन करते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

क्षुल्लकभवग्रहण सबसे स्तोक है । ३०४ ।

यहाँपर क्षुल्लकभवग्रहण दो प्रकारका है- निषेक क्षुल्लकभवग्रहण और घात क्षुल्लक

तत्थ सुहुमेइंदियअपज्जत्तसंजुत्तो जहण्णाउअबंधो णिसेयखुद्दाभवग्गहणं णाम । णिसे-
यखुद्दाभवग्गहणादो आवलि० असंखे० भागेणूणजीवणियकालो णिसेयखुद्दाभवग्गहणस्स
संखेज्जे भागे घावदूण दूविदसंखे० भागो वा घावखुद्दाभवग्गहणं । सव्वजहणजीव-
णियकालो घावखुद्दाभवग्गहणं, होवि त्ति भणिदं होदि । एत्थ दोसु खुद्दाभवग्गहणेसु
कं घेप्पदे ? घावखुद्दाभवग्गहणं, जहण्णणिव्वत्तीए खुद्दाभवग्गहणत्ताणुव्वत्तीदो ।
भवग्गहणं णाम जीवणियकालो सो च खुद्दओ जहण्णओ कदलीघावमिह चेव होदि ण
बंधे, णिव्वत्तीए जहण्णियाए तत्तो संखेज्जगुणत्तदंसणादो । एवंए घावखुद्दाभवग्गहणं
सत्तणमपज्जत्तजीवसमासाणं सरिसं होदूण संखेज्जावलियमेत्तं । तं कथं णव्वदे ?
जुत्तीदो । तं जहा-

तिण्णिसहस्सा सत्तसदाणि तेहत्तरि च उस्सासा ।

एसो हवदि मूहुत्तो सव्वेसि चेव मणुयाणं ३७७३ ॥१९॥

एवे मुहुत्तस्सासे दूविय पुणो एगुस्सासव्वन्तरसंखेज्जावलियाहि गुणिदे एग—
मुहुत्तावलियाओ होति ।

तिण्णि सदा छत्तीसा छावट्टिसहस्स चेव मरणाणि ।

अंतोमुहुत्तकाले तावदिया चेव खुद्दभवा ॥२०॥

भवग्रहण । उनमेंसे जो सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तसे युक्त जघन्य आयुका बन्ध है वह निषेक
क्षुल्लकभवग्रहण है । तथा निषेकक्षुल्लकभवग्रहणसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कम जो
जीवनीय काल है वह अथवा निषेकक्षुल्लकभवग्रहणके संख्यात बहुभागका घात करके स्थापित
किया गया जो संख्यातवाँ भाग है वह घातक्षुल्लकभवग्रहण है । सबसे जघन्य जीवनीय काल—
प्रमाण घातक्षुल्लकभवग्रहण है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका— यहां दो क्षुल्लकभवग्रहणोंमेंसे किसका ग्रहण किया है ?

समाधान— घातक्षुल्लकभवग्रहणका ग्रहण किया है, क्योंकि, जघन्य निर्वृत्ति क्षुल्लक-
भवग्रहणरूप नहीं बन सकती ।

भवग्रहणका नाम जीवनीयकाल है और वह क्षुल्लक तथा जघन्य कदलीघातके होने
पर ही होता है, बन्धके होनेपर नहीं, क्योंकि, जघन्य निर्वृत्ति उससे संख्यातगुणी देखी जाती
है । यह घातक्षुल्लकभवग्रहण सात अपर्याप्त जीवसमासोंका समान होकर संख्यात आवलि-
प्रमाण है ।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— युक्तिसे । यथा—

सभी मनुष्योंके तीन हजार सातसौ तिहत्तर उच्छ्वासोंका एक मुहुर्त होता है । १९ ।

एक मुहुर्तके इन उच्छ्वासोंको स्थापित करके पुनः एक उच्छ्वासके भीतर स्थित
संख्यात आवलियोंसे गुणित करनेपर एक मुहुर्तकी आवलियाँ होती हैं ।

अन्तर्मुहुर्तके कालके भीतर छयासठ हजार तीनसौ छत्तीस मरण और उतने ही
क्षुल्लक भवग्रहण होते हैं ॥ २० ॥

❖ ता० प्र० ' एव ' इति पाठः ।

इदि वयणादो एगमुहुत्तब्भंतरे एत्तियाणि खुद्दाभवग्गहणाणि होति ६६३३६ । एत्ति-
यमेत्तभवग्गहणेसु जवि पुब्बुत्तसंखेज्जावलियाओ लब्भंति तो एगखुद्दाभवग्गहणम्हि किं
लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए संखेज्जावलियाओ लब्भंति, एइंदि-
याणं संखेज्जुस्सासेहि एगखुद्दाभवग्गहणस्स णिप्पत्तीदो । तेणेवं सव्वत्थोवं होदि । १ ।

एइंदियस्स जहणिया पज्जत्तणिव्वत्ती संखेज्जगुणा । ३०५ ।

एइंदियस्स जहणिया पज्जत्तणिव्वत्ती णाम सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स जहणिया
पज्जत्तणिव्वत्ती । एसा खुद्दाभवग्गहणादो संखेज्जगुणा । कुदो ? खुद्दाभवग्गहणादो
सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स जहणणिव्वत्ती संखेज्जगुणा । तस्स चेव सुहुमेइंदियप-
ज्जत्तयस्स उक्कस्सिया णिव्वत्ती संखेज्जगुणा । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स जहणिया
णिव्वत्ती तत्तो संखेज्जगुणा त्ति गुरुवदेसादो । २ ।

समुच्छिमस्स जहणिया पज्जत्तणिव्वत्ती संखेज्जगुणा । ३०६ ।

कुदो ? बादरेइंदियपज्जत्तयस्स सव्वजहणणिव्वत्तीए गहणादो । का णिव्वत्ती
णाम ? कदलीघादेण विणा जीवणकालो आउबंधद्धानंतब्भदो जीवणियट्ठाणं पुण
णिव्वत्ती ण होदि, तस्स बंधद्धानेसु अंतब्भावणियमाभावादो । ३ ।

इस वचनके अनुसार एक मुहूर्तके भीतर इतने क्षुल्लकभवग्रहण होते हैं— ६६३३६ ।
इतने भवग्रहणोंमें यदि पूर्वोक्त संख्यात आवलियां लब्ध आती हैं तो एक क्षुल्लकभवग्रहणमें
क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार फलराशिसे इच्छाराशिको गुणित कर प्रमाणराशिका भाग देने
पर संख्यात आवलियां प्राप्त होती हैं, क्योंकि, एकेन्द्रियोंके संख्यात उच्छ्वासोंसे एक क्षुल्ल-
कभवग्रहणकी उत्पत्ति होती है, इसलिए यह सबसे स्तोक है ।

उससे एकेन्द्रिय जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति संख्यातगुणी है । ३०५ ।

एकेन्द्रियकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति इसका अर्थ है सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकी जघन्य
पर्याप्त निर्वृत्ति । यह क्षुल्लकभवग्रहणसे संख्यातगुणी है, क्योंकि, क्षुल्लकभवग्रहणसे सूक्ष्म
एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवकी जघन्य निर्वृत्ति संख्यातगुणी है । उससे उसी सूक्ष्म एकेन्द्रिय अप-
र्याप्त जीवकी उत्कृष्ट निर्वृत्ति संख्यातगुणी है । उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवकी जघन्य
निर्वृत्ति संख्यातगुणी है ऐसा गुरुका उपदेश है ।

उससे सम्मूच्छन जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति संख्यातगुणी है । ३०६ ।

क्योंकि, यहाँ बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवकी सबसे जघन्य निर्वृत्तिका ग्रहण किया है ।

शंका— निर्वृत्ति किसे कहते हैं ?

समाधान— कदलीघातके बिना आयुक्रमके बन्धकालके भीतर जो जीवनकाल है उसे
निर्वृत्ति कहते हैं ।

परंतु जीवनीयस्थान निर्वृत्ति नहीं होता, क्योंकि, उसका बन्धस्थानोंमें अंतर्भाव होनेका

गम्भोवकंतियस्स जहणिया पज्जत्तणिव्वत्ती संखेज्जगुण । ३०७।

गम्भोवकंतियस्स जहणपज्जत्तणिव्वत्ती णाम गम्भजाणं णिक्वाघादेण बद्ध-
जहण्णाउअकालमेत्तजीवियं । कुदो एदिस्से संखेज्जगुणत्तं ? सम्मुच्छिमेहितो गम्भ-
जाणं पुधमूवजादिदं सणादो । ४ ।।

ओववादिमस्स जहणिया पज्जत्तणिव्वत्ती संखेज्जगुणा ॥ ३०८ ॥

को गुण० ? संखेज्जा समया । कुदो ? अंतोमूहुत्तेण दसवस्ससहस्सेसु ओव-
ट्टिदेसु संखेज्जरूवोवलंभादो । ५ ।।

एइंदियस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥ ३०९ ॥

को गुण० ? सादिरेयदोरूवाणि । कुदो ? दसवस्ससहस्सेहि अंतोमूहुत्तणबा-
वीसोवस्ससहस्सेसु ओवट्टिदेसु दोहि रूवेहि सह किच्चूणपंचमभागस्स उवलंभादो । ६ ।।

जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥ ३१० ॥

केत्तियमेत्तेण ? आवलि० असंखे० भागेण एइंदियजहणणिव्वत्तीए संखेज्जेहि
भागेहि वा । ७ ।।

कोई नियम नहीं है ।

उससे गर्भोपक्रान्तिक जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति संख्यातगुणी है । ३०७।

गर्भोपक्रान्तिक जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति इसका अर्थ है गर्भज जीवोंका बद्ध
जघन्य आयुके काल तक निर्व्याघातरूपसे जीवित रहना ।

शंका— यह संख्यातगुणी कैसे है ?

समधान— क्योंकि, सम्मूर्च्छन जीवोंसे गर्भज जीवोंकी पृथक् जाति देखी जाती है ।

उससे औपपादिक जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति संख्यातगुणी है ॥ ३०८।

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्त कालसे दस हजार
वर्षके भाजित करने पर संख्यात अंक उपलब्ध होते हैं ।

उससे एकेन्द्रिय जीवके निर्वृत्तिस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ ३०९ ॥

गुणकार क्या है ? साधिक दो अंक गुणकार है, क्योंकि, दस हजार वर्षसे अन्तर्मुहूर्त
कम बाईस हजार वर्षके भाजित करनेपर दो और कुछ कम पाँचवां भाग उपलब्ध होता है ।

उनसे जीवनीयस्थान विशेष अधिक हैं ॥ ३१० ॥

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण या एकेन्द्रियकी जघन्य निर्वृ-
त्तिके संख्यात बहुभागप्रमाण अधिक हैं ।

✽ अ० का० प्रत्योः ' अंतोमूहुत्तेण बावीस ' इति पाठः ।

उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ॥ ३११ ॥

केत्तियमेत्तेण ? सम्बुक्कस्सकदलीघावेण घाविदूण एइंदियाणं जहण्णजीवि-
एण समऊणेण । ८ ।।

सम्मुच्छिमस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥ ३१२ ॥

को गुण० ? संखेज्जा समया । कुदो ? बावीसवस्ससहस्सेहि अंतोमुहुत्तूण-
पुव्वकोडीए भागे हिदाए संखेज्जरूवोवलंभादो । ९ ।।

जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥ ३१३ ॥

केत्तियमेत्तेण? आवलि० असंखे० भागेण सम्मुच्छिमजहण्णणिव्वत्तीए संखेज्जेहि
भागेहि दा । १० ।।

उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ॥ ३१४ ॥

केत्तियमेत्तेण ? सम्मुच्छिमजहण्णजीविएण समऊणेण । ११ ।।

गढभोवक्कंतियस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । ३१५।

को गुण० ? पलिदो० असंखे० भागो । कुदो ? पुव्वकोडीए अंतोमुहुत्तूणतिण्णि-
पलिदोवमेसु ओवट्ठिवेसु पलिदो० असंखे० भागुवलंभादो । १२ ।।

उनसे उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक है । ३११ ।

कितनी अधिक है ? सबसे उत्कृष्ट कदलीघातसे घात कर एकेन्द्रियोंका जो एक समय
कम जघन्य जीवित है उतनी अधिक है ।

उससे सम्मूर्च्छन जीवके निर्वृत्तिस्थान संख्यातगुणे हैं । ३१२ ।

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि, बाईस हजार वर्षसे अन्तर्मुहूर्त
कम पूर्वकोटिके भाजित करने पर संख्यात अङ्क उपलब्ध होते हैं ।

उनसे जीवनीयस्थान विशेष अधिक हैं । ३१३ ।

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण या सम्मूर्च्छन जीवकी जघन्य
निर्वृत्तिके संख्यात बहुभागप्रमाण अधिक हैं ।

उससे उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक है । ३१४ ।

कितनी अधिक है ? सम्मूर्च्छन जीवके एक समय कम जघन्य जीवितका जितना प्रमाण
है तत्प्रमाण अधिक है ।

उससे गर्भोपक्रान्त जीवके निर्वृत्तिस्थान असंख्यातगुणे हैं । ३१५ ।

गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, पूर्वकोटिका
अन्तर्मुहूर्त कम तीन पत्यमें भाग देने पर पत्यका असंख्यातवाँ भाग उपलब्ध होता है ।

जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥३१६॥

के० मेत्तेण ? आवलि० असंखे०भागेण सव्वजहण्णणिव्वत्तीए संखेज्जेहि भागेहि वा । १३ ॥

उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ॥३१७॥

के० मेत्तेण ? सगजहण्णजीविण समऊणेण । १४ ॥

उववादिमस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि जीवणीयट्ठाणाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि ॥३१८॥

को० गुण ? संखेज्जा समया । कुदो ? तीहि पलिदोवमेहि समऊणवसवस्स-सहस्सेहि परिहीणतेत्तीससागरोवमेसु ओवट्ठिदेसु संखेज्जरूदोवलंभादो । १५ ॥

उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ॥३१९॥

के० मेत्तेण ? समऊणवसवस्ससहस्समेत्तेण । १६ ॥

एवं परत्थाणेण सोलसववियदंडओ समत्तो ।

तस्सेव पदेसविरइयस्स इमाणि छअणुयोगद्वाराणि-जहणिया अग-ट्ठिदी अगट्ठिविविसेसो अगट्ठिविट्ठाणाणि उक्कस्सिया अगट्ठिदी

उनसे जीवनीय स्थान विशेष अधिक हैं ॥३१६॥

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण या सबसे जघन्य निर्वृत्तिके संख्यात बहुभागप्रमाण अधिक हैं ।

उनसे उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक हैं ॥३१७॥

कितनी अधिक है ? एक समय कम सबसे जघन्य जीवितका जितना प्रमाण है तत्प्रमाण अधिक है ।

उससे औपपादिक जीवके निर्वृत्तिस्थान और जीवनीयस्थान दोनों ही तुल्य होकर संख्यातगुणे हैं ॥३१८॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि, तीन पत्थका एक समय कम दस हजार वर्षसे हीन तेतीस सागरमें भाग देने पर संख्यात अंक उपलब्ध होते हैं ।

उनसे उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक है ॥३१९॥

कितनी अधिक है ? एक समय कम दस हजार वर्षप्रमाण अधिक है ।

इस प्रकार परस्थानकी अपेक्षा सोलह पदवाला दण्डक समाप्त हुआ ।

उसी प्रदेशविरचके ये छह अनुयोगद्वार हैं-जघन्य अग्रस्थिति, अग्रस्थितिविशेष

विसेसाहियणिद्वेसकरणादो । जदि एवं तो विसेसाहियणिद्वेसस्स पुब्बणिवाओ कायव्वो ? ण एस दोसो, जदि वि पच्छा णिहिदुओ तो वि एदस्स परूवणा पुब्बं चेव होवि त्ति उवदेसेण विणा वि अवगम्ममाणत्तादो ।

उक्कस्सिया अग्गट्ठिदी विसेसाहिया ॥३२४॥

केत्तियमेत्तेण ? समऊणजहण्णअग्गट्ठिविमेत्तेण ।

एवं तिण्णं सरीराणं ॥३२५॥

जहा ओरालियसरीरस्स चट्ठणमणुयोगद्वाराणं परूवणा कदा तहा आहार-सरीरवज्जाणं सेसतिण्णं सरीराणं परूवणा कायव्वो । णवरि कम्मइयसरीरस्स जह-णिण्या अग्गट्ठिदी थोवा त्ति वुत्ते सुहुमसांपराइयस्स चरिमबंधो घेत्तव्वो । अग्गट्ठि-विसेसो असंखेज्जगुणो त्ति वुत्ते पंचविद्यजहणियमग्गट्ठिदि सत्तरिसागरोवमकोडा-कोडिमेत्तउक्कस्सअग्गट्ठिदीए सोहिय पलिदो० संखे०भागमेत्तट्ठिदिबंधट्ठाणेसु तत्थ पक्खित्तेसु अग्गट्ठिविसेसो होवि । एवमिह जहण्णअग्गट्ठिदीए भागे हिदे पलिदो० असंखे०भागो आगच्छवि । एसो एत्थ गुणगारो । अग्गट्ठिदिट्ठाणाणि रूवाहियाणि । उक्कस्सिया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जेहि पलिदोवमेहि । सेसं सुगमं ।

विशेषाधिक पदका निर्देश किया है ।

शंका—यदि ऐसा है तो विशेषाधिकपदका पूर्व निपात करना चाहिए ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, यद्यपि विशेषाधिक पदका पश्चात् निर्देश किया तो भी इसकी प्ररूपणा पहले ही होती है कह बात उपदेशके बिना भी जानने योग्य है ।

उनसे उत्कृष्ट अग्रस्थिति विशेष अधिक है ॥ ३२४ ॥

कितनी अधिक है ? एक समय कम जघन्य अग्रस्थितिका जितना प्रमाण है उतनी अधिक है ।

इस प्रकार तीन शरीरोंकी प्ररूपणा करनी चाहिए ॥ ३२५ ॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरकी अपेक्षा चार अनुयोगद्वारोंका कथन किया है उसी प्रकार आहारकशरीरको छोड़ कर शेष तीन शरीरोंकी अपेक्षा कथन करना चाहिए । इतनी विशेषता है कि कामर्णशरीरकी जघन्य अग्रस्थिति स्तोक है ऐसा कहनेपर सूक्ष्मसाम्परायिक जीवका अन्तिम समयमें होनेवाला बन्ध लेना चाहिए । अग्रस्थितिविशेष असंख्यातगुणा है ऐसा कहने पर पञ्चेंद्रियकी जघन्य अग्रस्थितिको सत्तर कोडाकोडी सागरप्रमाण उत्कृष्ट अग्रस्थितिमें से घटा कर उसमें पत्यके संख्यातवें भागप्रमाण स्थितिबन्धस्थानोंके मिलाने पर अग्रस्थितिविशेष होता है । इसमें जघन्य अग्रस्थितिका भाग देने पर पत्यका असंख्यातवां भाग लब्ध आता है । यह यहाँ पर गुणकार है । अग्रस्थितिस्थान एक अधिक है । उत्कृष्ट अग्रस्थिति विशेष अधिक है । कितनी अधिक है ? संख्यात पत्यप्रमाण अधिक है । शेष कथन सुगम है । इतनी विशेषता है

णवरि तेजइयस्स जहणिया अग्गट्ठिदी अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सिया अग्गट्ठिदी छावट्ठि-
सागरोवमाणि । वेउट्ठियसरीरस्स जहणिया अग्गट्ठिदी दसवस्ससहस्साणि ।
उक्कस्सिया अग्गट्ठिदी तेत्तीससागरोवमाणि ।

सव्वत्थोवा आहारसरीरस्स जहणिया अग्गट्ठिदी ॥३२६॥

अंतोमुहुत्तप्पमाणत्तादो ।

अग्गट्ठिविसेसो संखेज्जगुणो ॥३२७॥

कुबो ? जहणणअग्गट्ठिदीवो उक्कस्सअग्गट्ठिदीए संखेज्जगुणत्तादो ।

अग्गट्ठिट्ठिणाणि रूवाहियाणि ॥३२८॥

सुगमं ।

उक्कस्सिया अग्गट्ठिदी विसेसाहिया ॥३२९॥

केत्तियमेत्तेण ? अंतोमुहुत्तमेत्तेण ।

भागाभागाणुगमेण तत्थ इमाणि तिण्णि अणुयोगद्वाराणि-
जहणणपदे उक्कस्सपदे अजहणण-अणुक्कस्सपदे ॥३३०॥

एवमेत्थ तिण्णि चेव अणुयोगद्वाराणि होंति, अण्णेसिमसंमवादो ।

कि तैजसशरीरकी जघन्य अग्रस्थिति अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है । उत्कृष्ट अग्रस्थिति छयासठ सागर-
प्रमाण है । वैक्रियिकशरीरकी जघन्य अग्रस्थिति दस हजारवर्षप्रमाण है । उत्कृष्ट अग्रस्थिति
तेत्तीस सागरप्रमाण है ।

आहारकशरीरकी जघन्य अग्रस्थिति सबसे स्तोक है ॥३२६॥

क्योंकि, उसका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त है ।

उससे अग्रस्थितिविशेष संख्यातगुणा है ॥३२७॥

क्योंकि, जघन्य अग्रस्थितिसे उत्कृष्ट अग्रस्थिति संख्यातगुणी है ।

उससे अग्रस्थितिस्थान रूपाधिक हैं ॥३२८॥

यह सूत्र सुगम है ।

उनसे उत्कृष्ट अग्रस्थिति विशेष अधिक है ॥३२९॥

कितनी अधिक है ? अन्तर्मुहूर्तप्रमाण अधिक है ।

भागाभागानुगमकी अपेक्षा वहाँ ये तीन अनुयोगद्वार हैं-जघन्यपद, उत्कृष्टपद
और अजघन्य-अनुत्कृष्टपद ॥३३०॥

इस प्रकार यहाँ पर तीन ही अनुयोगद्वार होते हैं, क्योंकि, अन्य अनुयोगद्वार यहाँ पर
सम्भव नहीं हैं ।

**जहणपदेण ओरालियसरीरस्स जहणियाए टिठवीए पदेसग्गं
सव्वपदेसग्गस्स केवडियो भागो ॥३३१॥**

एदं पुच्छामुत्तं संखेज्जदिभागो असंखे० भाग-अणंतिमभागो अवेवखदे ।

असंखेज्जदिभागो ॥३३२॥

कुवो ? एगसमयपबद्धे दिवडुगुणहाणीए खंडिदेगखंडपमाणत्तावो । सव्वपदेस-
ग्गस्स ति वुत्ते एगसमयपबद्धो चेव घेप्पदि । तिसु पलिदोवमेसु संचिदवव्वं ण घेप्पदि
त्ति कथं णव्वदे ? अविद्धाडिरियवयणादो । एत्थ दिवडुगुणहाणिपमाणसंतोमुहुत्तं,
ओरालियसरीरस्मि अंतोमुहुत्तं गंतूण पढमणिसेगादो दुगुणहीणणिसेगुवलंभादो । एत्थ
किं तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमए पदिदणिसेयपदेसग्गं घेप्पदि आहो जहणणिव्व-
त्तीए पढमसमए पदिदपदेसग्गमिदि ? एत्थ पढमपक्खो घेतव्वो, उक्कस्सणिसेगट्ठिदोए
जहणट्ठिदिपदेसग्गेण अहिघारादो ।

एवं चदुण्णं सरीराणं ॥३३३॥

**जघन्यपदकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी जघन्य स्थितिका प्रदेशाग्र सब प्रदेशाग्र
के कितने भागप्रमाण है ? ॥३३१॥**

यह पृच्छासूत्र संख्यातवें भागप्रमाण है, असंख्यातवें भागप्रमाण है या अनन्तवें भाग-
प्रमाण है इस बातकी अपेक्षा करता है ।

असंख्यातवें भागप्रमाण है ॥३३२॥

क्योंकि, एक समयप्रबद्धमें डेढ़ गुणहानिका भाग देने पर जो एक भाग लब्ध आवे उतना
उसका प्रमाण है । 'सव्वपदेसग्गस्स' ऐसा कहने पर समयप्रबद्धका ही ग्रहण होता है ।

शंका--तीन पत्यप्रमाण कालके भीतर संचित हुए द्रव्यका ग्रहण नहीं होता है यह
किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान--अविद्ध आचार्यवचनसे जाना जाता है ।

यहाँ पर डेढ़ गुणहानिका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त है, क्योंकि,, औदारिकशरीरमें अन्तर्मुहूर्त
जाकर प्रथम निषेकसे दुगुने हीन निषेक उल्लब्ध होते हैं ।

शंका--यहाँ पर क्या तीन पत्योंके प्रथम समयमें प्राप्त हुए निषेकका प्रदेशाग्र ग्रहण
करते हैं या जघन्य निर्वृत्तिके प्रथम समयमें प्राप्त हुआ प्रदेशाग्र ग्रहण करते हैं ?

समाधान--यहाँ पर प्रथम पक्षको ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि, उत्कृष्ट निषेकस्थि-
तिमें जघन्य स्थितिके प्रदेशाग्रका अधिकार है ।

इसी प्रकार चार शरीरोंका भागाभाग कहना चाहिए ॥३३३॥

❀ ता० प्रती 'संखेज्जदिभागो (ग) असंखे०' अ० का० प्रत्यो । 'संखेज्जदिभागो असंखे०' इति पाठः ।

⊙ ता० प्रती 'उ (अ) अवेवखदे' अ० का० प्रत्यो । 'अवेवखदे' इति पाठः ।

जहा ओरालियसरीरस्स जहणपडिभागाभागो परूविदो तहा एदेसि परूवे-
दव्वो, अंतोमुहुत्तमेत्तदिवड्डुगुणहाणीए एगसमयपवद्धं खंडिय तत्थ एगखंडपमाणत्तणेण
भेदाभावादो । णवरि तेजा-कम्मइयसरीराणं दिवड्डुगुणहाणिपमाणमसंखेज्जाणि पलि-
दोवमाणि पढमवगमूलाणि । कम्मइयसरीरस्स सत्तवाससहस्साणि आबाधं मोत्तूण
तदनंतरउवरिमट्टिदीए जं पदेसगं णिसित्तं तस्स गहणं कायव्वं । पढमणिसेयपमाणेण
सव्वदव्वे कीरमाणे जहा वेयणाए परूवणा कदा तहा कायव्वा, पंचसु वि सरीरेसु
पढमणिसेयपमाणेण कीरमाणेसु भेदाभावादो ।

उक्कस्सपदेण ओरालियसरीरस्स उक्कस्सियाए ठिठदीए पदे-
सगं सव्वपदेसगस्स केवडिओ भागो ॥३३४॥

सुगमं ।

असंखेज्जदिभागो ॥३३५॥

तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमयप्पहुडि एगसमयपवद्धे जहाकमेण णिसिचमाणे
तिण्णं पलिदोवमाणं चरिमसमए जं णिसित्तं पदेसगं तमुक्कस्सट्टिदिपदेसगं
णाम । तं सव्वट्टिदिपदेसगाणमसंखे० भागो । तस्स को पडिभागो? असंखेज्जा लोगा । तं

जिस प्रकार ओदारिकशरीरका जघन्य पदकी अपेक्षा भागाभाग कहा है उसी प्रकार इन
शरीरोंका भी कहना चाहिए; क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तप्रमाण डेढ़ गुणहानिका एक समयप्रबद्धमें भाग
देने पर वहाँ एक खण्डप्रमाणपनेकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है । इतनी विशेषता है कि तंजसशरीर
और कर्मणशरीरकी डेढ़ गुणहानिका प्रमाण पत्यके असंख्यात प्रथमवर्गमूलप्रमाण है । तथा
कर्मणशरीरकी सात हजार वर्षप्रमाण आबाधाको छोड़कर तदनन्तर उपरिम स्थितिमें जो प्रदेशाग्र
निषिक्त है उसका ग्रहण करना चाहिए । प्रथम निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्यके करने पर जिस
प्रकार वेदना अनुयोगद्वारमें प्ररूपणा की है उस प्रकार करनी चाहिए, क्योंकि, पाँचों ही
शरीरोंको प्रथम निषेकके प्रमाण रूप करने पर उस कथनसे इसमें कोई भेद नहीं है ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा ओदारिकशरीरकी उत्कृष्ट स्थितिका प्रदेशाग्र सब
प्रदेशाग्र के कितने भागप्रमाण है ॥३३४॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंख्यातवें भागप्रमाण है ॥३३५॥

तीन पत्थोंके समयसे लेकर एक समयप्रबद्धके क्रमसे निक्षिप्त होने पर तीन पत्थोंके
अन्तिम समयमें जो प्रदेशाग्र निक्षिप्त होता है उसकी उत्कृष्ट स्थितिप्रदेशाग्र संज्ञा है । वह सब
स्थितियोंमें प्राप्त प्रदेशाग्रोंके असंख्यातवें भागप्रमाण है । उसका प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात

❁ म० प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिवु 'पचसु सरीरेसु' इति पाठः ।

❁ ता० प्रती 'णिसिचमाणं तिण्णं'

इति पाठः । ❁ ता० प्रती 'उक्कस्सपदेसट्टिदिपदेसगं' अ० प्रती 'उक्कस्सट्टिदिपदेसगं' इति पाठः ।

जहा- चरिमणिसेयं द्विविध, ओरालियसरीरस्स णाणानुणहानिसलागाओ असंखेज्ज-
पलिदोवमपढमवगमूलमेत्ताओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णवमत्थरासिणा असं-
खेज्जलोगपमाणेण अंतोमूहुत्तमेत्तदिवड्डुगुणहानिगुणिदेण गुणिदे समयपवद्धवत्वं होवि ।
तेणेव गुणगारेण णाणासमयपवद्धे भागे हिदे चरिमणिसेगो आमच्छवि । तेण
भागहारो असंखेज्जलोगो त्ति सिद्धं ।

एवं चवुण्णं सरीराणं ॥३३६॥

तं जहा- वेउव्वियसरीरस्स उक्कस्सियाए द्विदीए पदेसगं सब्बट्ठिदिपदेसग्गाणं
केवडिओ भागो ? असंखे०भागो । तस्स को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।
आहारसरीरस्स उक्कस्सियाए द्विदीए पदेसगं सब्बट्ठिदिपदेसग्गाणं केवडिओ भागो ?
असंखे०भागो । तस्स को पडिभागो ? अंतोमूहुत्तं । एवं तेजा-कम्मइयसरीराणं ।
णवरि पडिभागो अंगुलस्स असंखे०भागो ।

अजहण्ण-अणुक्कस्सपदेण ओरालियसरीरस्स अजहण्ण-
अणुक्कस्सियाए ट्ठिदीए पदेसगं सब्बट्ठिदिपदेसग्गस्स केवडिओ
भागो ॥ ३३७ ॥

सुगमं ।

लोक प्रतिभाग है यथा- अन्तिम निषेकको स्थापित करके औदारिकशरीरकी पत्यके असंख्यात
प्रथम वर्गमूलप्रमाण नाना गुणहानिशलाकाओंका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक
एकको दूना करके परस्पर गुणा करनेसे जो असंख्यात लोकप्रमाण राशि उत्पन्न हो उसे अन्त-
र्मुहूर्त मात्र डेढ गुणहानिसे गुणित करने पर जो आवे उससे गुणित करने पर समयप्रबद्धका
द्रव्य होता है । तथा उसी गुणकारका नाना समयप्रबद्धोंमें भाग देने पर अन्तिम निषेक आता
है । इसलिए भागहार असंख्यात लोक प्रमाण है यह सिद्ध होता है ।

इसी प्रकार चार शरीरोंका भागाभाग कहना चाहिए ॥ ३३६ ॥

यथा- वैक्रियिकशरीरकी उत्कृष्ट स्थितिका प्रदेशाग्र सब स्थितियोंके प्रदेशाग्रोंके कितने
भागप्रमाण है ? असंख्यातवें भागप्रमाण है । उसका प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोक-
प्रमाण प्रतिभाग है । आहारकशरीरकी उत्कृष्ट स्थितिका प्रदेशाग्र सब स्थितियोंके प्रदेशाग्रोंके
कितने भागप्रमाण है ? असंख्यातवें भागप्रमाण है । उसका प्रतिभाग क्या है ? अन्तर्मुहूर्त
प्रतिभाग है । इसी प्रकार तैजसशरीर और कामेणशरीरके विषयमें जानना चाहिए । इतनी
विशेषता है कि यहाँ पर प्रतिभाग अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

अजघन्य-अनुत्कृष्टपदकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी अजघन्य-अनुत्कृष्ट-
स्थितिका प्रदेशाग्र सब स्थितियोंके प्रदेशाग्रके कितने भागप्रमाण है ॥ ३३७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंखेज्जा भागा ॥ ३३८ ॥

को पडिभागो ? किञ्चणविबुद्धगुणहाणी पडिभागो । तत्थ एगरूवधरिवं मोत्तूण
बहुरूवधरिवे गहिदे इच्छिदवब्बं होवि त्ति घेत्तब्बं ।

एवं चदुण्णं सरीराणं ॥ ३३९ ॥

णवरि अप्पणो गुणहाणिपमाणं जाणिदूण वत्तब्बं ।

**अप्पाबहुए त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणुयोगद्वाराणि-
जहण्णपदे उक्कस्सपदे जहण्णुक्कस्सपदे ॥ ३४० ॥**

एवमेत्थ तिण्णि चेव अणुयोगद्वाराणि होंति, अण्णेसिमसंभवावो । एत्थ एनेग-
ट्टिविपदेसगं जहण्णं णाम, अप्पहाणीभूदकालएगत्तेण कालविसेसस्सेव गहणावो । एगे-
गगुणहाणी उक्कस्सपदं णाम, एगसमयं पेक्खिदूण गुणहाणिकालस्स उक्कस्सत्तुवलं-
भावो । तदुभयं जहण्णुक्कस्सपदं णाम ।

**जहण्णपदेण सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स चरिमाए ट्टिवीए
पदेसगं ॥ ३४१ ॥**

जं तिण्णं पल्लोवमाणं चरिमसमए णिसित्तं पदेसगं तं थोथं । ९ ।।

असंख्यात बहुभाग प्रमाण है ॥ ३३८ ॥

प्रतिभाग क्या है ? कुछ कम डेढ़ गुणहानि प्रतिभाग है । डेढ़ गुणहानिका विरलन
करके उस विरलन शशिके एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको छोड़कर शेष बहुत अंकोंके प्रति प्राप्त
द्रव्यके ग्रहण करने पर इच्छित द्रव्य होता है ऐसा ग्रहण करना चाहिए ।

इसी प्रकार चार शरीरोंकी अपेक्षा भागाभाग जानना चाहिए ॥ ३३९ ॥

इतनी विशेषता है कि अपनी अपनी गुणहानिका प्रमाण जान कर कथन करना चाहिए ।

**अल्पबहुत्वका अधिकार है । उसमें ये तीन अनुयोगद्वार हैं—जघन्यपद
उत्कृष्टपद, और जघन्य-उत्कृष्टपद ॥ ३४० ॥**

इसप्रकार यहाँ पर तीन ही अनुयोगद्वार होते हैं, क्योंकि, अन्य अनुयोगद्वार असम्भव
है । यहाँ पर एक एक स्थितिके प्रदेशाग्रकी जघन्य संज्ञा है, क्योंकि, अप्रधानीभूत कालके एक-
त्वकी अपेक्षा कालविशेषका ही यहाँ ग्रहण किया है । एक एक गुणहानिकी उत्कृष्टपद संज्ञा है ।
क्योंकि, एक समयको देखते हुए गुणहानिके कालमें उत्कृष्टपदना पाया जाता है । तथा उन दोनोंकी
जघन्यउत्कृष्टपद संज्ञा है ।

**जघन्यपदकी अपेक्षा औवारिकशरीरकी अन्तिम स्थितिका प्रदेशाग्र सबसे
स्तोक है ॥ ३४१ ॥**

जो तीन पत्यप्रमाण स्थितिके अन्तिम समयमें निषिक्त प्रदेशाग्र है वह स्तोक है ।

पढमाए टिठदीए पदेसगमसंखेज्जगुणं ॥ ३४२ ॥

तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमए जं णिसित्तं पदेसगं तं पढमट्ठिदिपदेसगं णाम । तं चरिमसमए पदेसगादो असंखेज्जगुणं । को गुण० ? असंखेज्जा लोगा । तं जहा-अंतोमुहुत्तमेत्तगुणहाणीए तिसु पलिदोवमेसु ओवट्ठिदेसु लद्धं णाणागुणहाणिसलागाओ होंति । एदासि किच्चूणणोण्णम्भत्थरासिपमाणमेदं $\frac{५१२}{९}$ । एदेण चरिमणित्सेगे

गुणिदे जेण पढमणित्सेगो होदि तेण गुणगारो असंखेज्जा लोगा । असंखेज्जलोगमेत्तं कुदो णव्वदे ? परिघम्मादो । तं जहा- बेरुवे वगिज्जमाणे वगिज्जमाणे पलिदोवमस्स असंखे०भागमेत्ताणि वगणट्ठाणाणि उवरि गंतूण पलिदोवमच्छेदणयपमाणं पावदि । तं सइं वगिदं सूचिअंगुलच्छेदणयपमाणं पावदि । ते छेदणया दुगुणिदा पदरंगुलच्छेदणया होंति । घणंगुलच्छेदणया दुब्भागम्भहिया । उद्धारपल्लमसंखेज्जगुणं । दीव-सागररूवाणि संखेज्जगुणाणि । रज्जुच्छेदणया विसेसाहिया । सेडिच्छेदणा विसेसाहिया । जगपवरच्छेदणा दुगुणा । घणलोगच्छेदणा दुब्भागम्भहिया । एवं घणलोग-च्छेदणयपमाणं भणिदं । तदो णियत्तिदूण सूचिअंगुलच्छेदणया वगिज्जमाणा वगिज्जमाणा पलिदोवमस्स असंखे०भागमेत्ताणि वगणट्ठाणाणि उवरि गंतूण पलिदोवम-

उससे प्रथम स्थितिमें निषिक्त प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ॥ ३४२ ॥

तीन पत्थोंके प्रथम समयमें जो प्रदेशाग्र निषिक्त है उसकी प्रथम स्थितिप्रदेशाग्र संज्ञा है । वह अन्तिम समयमें निषिक्त प्रदेशाग्रसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक है । यथा- अन्तर्मुहूर्तप्रमाण गुणहानिका तीन पत्थोंमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसनी नानागुणहानिशलाकार्य होती है । इनकी कुछ कम अन्योन्याभ्यस्तराशिका प्रमाण इतना है $\frac{५१२}{९}$ । इससे अन्तिम निषेकके गुणित करने पर यतः प्रथम निषेकका प्रमाण होता है, अतः गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है ।

शंका-- गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- परिकर्मसूत्रसे जाना जाता है । यथा- दोका उत्तरोत्तर वर्ग करने पर पत्थके असंख्यातवें भागप्रमाण वर्गणास्थान ऊपर जाकर पत्थके अर्धच्छेदोंका प्रमाण प्राप्त होता है । उसका एक बार वर्ग करने पर सूच्यंगुलके अर्धच्छेदोंका प्रमाण प्राप्त होता है । उन अर्धच्छेदोंको दूना करने पर प्रउराङ्गुलके अर्धच्छेद होते हैं । उनसे घनाङ्गुलके अर्धच्छेद द्वितीय भागप्रमाण अधिक हैं । उनसे उद्धारपत्थका प्रमाण असंख्यातगुणा है । उससे द्वीपों और सागरोंकी संख्या संख्यातगुणी है । उससे राजुके अर्धच्छेद विशेष अधिक हैं । उनसे जगश्रेणिके अर्धच्छेद विशेष अधिक हैं । उनसे जगप्रतरके अर्धच्छेद दूने हैं । उनसे घनलोकके अर्धच्छेद द्वितीय भागप्रमाण अधिक हैं । इस प्रकार घनलोकके अर्धच्छेदोंका प्रमाण कहा है । यहाँसे लौटकर सूच्यंगुलके अर्धच्छेदोंका उत्तरोत्तर वर्ग करके पत्थके असंख्यातवें भागप्रमाण

पढमवग्गमूलं पावदि । तं सइं वग्गिदं पलिदोवमं पावदि । संपहि पलिदोवमादो हेट्ठा असंखेज्जाणि वग्गणट्ठाणाणि ओसरिदूण सूच्चियंगुलच्छेदणयाणमुवरि तस्सेव उवरिम-
वग्गादो हेट्ठा घणलोगच्छेदणया होंति त्ति परियम्मे भणिदं । पुणो एदे विरलिय
विगं करिय अण्णोण्णवमत्थे कदे घणलोगो उप्पज्जदि त्ति भणिदं होदि । ओरालिय-
सरीरस्स पुण णाणामुणहानिसलागाणं पमाणं जदि घणलोगच्छेदणयमेत्तं होदि तो
ओरालियसरीरणोण्णवमत्थरासिपमाणं घणलोगमेत्तं चेव होदि । अथ जदि जत्तिया
जगपदरच्छेदणया घणलोगच्छेदणया च तत्तियाओ ओरालियसरीरणानामुणहानिस-
लागाओ होंति तो ओरालियसरीरस्स अण्णोण्णवमत्थरासिपमाणं जगपदरगुणिदघण-
लोगमेत्तं होदि । ण च एदं । कुदो ? घणलोगच्छेदणएहिंती पलिदोवमपढमवग्गमू-
लादो च ओरालियसरीरणानामुणहानिसलागाणमसंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । एदं कुदो
उवलवमदे ? जत्तीदो । तं जहा- ओरालियसरीरस्स एगपदेसगुणहानिअट्ठाणं संखे-
ज्जावलियमेत्तं होदूण अंतोमुहुत्तं होदि । एदं च कुदो णव्वदे ? वग्गणपरंपरोवणिध-
सुत्तादो।पुणो एत्तियमट्ठाणं गंतूण जदि एगगुणहानिसलागा लवमदि तो तिण्णं पलि-
दोवमाणं किं लमामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्ठिदाए आवलि०

वर्णणास्थान ऊपर जाकर पत्यका प्रथम वर्गमूल प्राप्त होता है । उसका एकबार वर्ग करने पर पत्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अब पत्यसे नीचे असंख्यात वर्णणास्थान उतर कर सूच्यंगुलके अर्धच्छेदोंके ऊपर तथा उसीके उपरिम वर्गसे नीचे घनलोकके अर्धच्छेद होते हैं ऐसा परिकर्ममें कहा है । पुनः इनका विरलन कर और विरलितराशिके प्रत्येक एकको दूना कर परस्पर गुणा करने पर घनलोक उत्पन्न होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । परन्तु औदारिकशरीरकी नानागुणहानिशलाकाओंका प्रमाण यदि घनलोकके अर्धच्छेदप्रमाण होता है तो औदारिकशरीरकी अन्योन्याभ्यस्तराशिका प्रमाण घनलोकप्रमाण ही होता है । और जितने जगप्रतरके अर्धच्छेद और घनलोकके अर्धच्छेद हैं उतनी यदि औदारिकशरीरकी नानागुणहानिशलाकायें होती हैं तो औदारिकशरीरकी अन्योन्याभ्यस्तराशिका प्रमाण जगप्रतरसे गुणित घनलोकप्रमाण होता है । परन्तु ऐसा है नहीं क्योंकि, घनलोकके अर्धच्छेदों और पत्यके प्रथम वर्गमूलसे औदारिक-शरीरकी नानागुणहानिशलाकायें असंख्यातगुणो उपलब्ध होती हैं ।

शंका-- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- युक्तितसे । यथा- औदारिकशरीरका एकप्रदेशगुणहानिअध्वान संख्यात आवलि होकर अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है ।

शंका-- यह भी किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- वर्णणापरम्परोपनिषा सूत्रसे जाना जाता है ।

पुनः इतना अध्वान जाकर यदि एक गुणहानिशलाका प्राप्त होती है तो तीन पत्योंका क्या प्राप्त होगा इस प्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देने पर

असंखे० भागेण पवरावलियं गुणेदूण तेण गुणिवरासिणा उवरि वग्गं गुणेदूण जेयव्वं जाव पलिदोवमविदियवग्गमूले त्ति । जत्थ जत्तियाणि ख्वाणि तत्थ तत्तियाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । एवमेत्तियाओ ओरालियसरीरणाणागुणहाणिस-लागाओ होंति । पुणो एवाओ विरलिय विग्गं करिय अण्णोण्णढमत्थे कदे असंखेज्ज-लोगमेत्तरासी उप्पज्जदि त्ति णत्थि संवेहो । पुणो एवेण रासिणा ओरालियसरीर-चरिमणिसेगे गुणिदे तस्सेव पढमणिसेगो होवि त्ति नेण्हियव्वं ।

अपढम-अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ॥ ३४३ ॥

को गुण० ? संखेज्जावलियमेत्ताओ सादिरेगेगरूवेणूणदिवड्डुगुणहाणीओ । तं जहा- तिसु पलिदोवमेसुप्पज्जिय उप्पण्णपढमसमए ओरालियसरीरणिप्पायणट्ठं गहिदणोकम्मपदेसेहिंती घेत्तूण तिण्णिपलिदोवमाणं पढमसमए बहुअं पदेसपिंडं णिसिच्चदि । विदियसमए विसेसहीणं णिसिच्चदि । एवं निरंतरं विसेसहीणकमेण ताव णिसिच्चदि जाव तिण्णं पलिदोवमाणं चरिमसमओ त्ति । पुणो एवं णिसित्तसव्वदब्बे पढमणिसेयपमाणेण कदे दिवड्डुगुणहाणिमेत्तपढमणिसेया होंति । पुणो एत्थ पढमणिसे-गस्स चरिमणिसेगस्स च अवणयणट्ठं सादिरेगेमेगरूवमवणेदव्वं । सेसमेत्तियं होदि-

५७७९
५१२

। एदेण पढमणिसेगे गुणिदे तिण्णं पलिदोवमाणं पढमणिसेयं चरिमणिसेगं च

आवलिके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलिको गुणित करके उस गुणित राशिसे ऊपर वर्गको गुणित करके पत्यके द्वितीय वर्गमूलके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए । जहाँ जितनी संख्या होती है वहाँ उतने पत्यके प्रथम वर्गमूल आते हैं । इस प्रकार जितनी औदारिकशरीरकी नानागुण-हानिशलाकायें होती हैं । पुनः इनका विरलन करके और विरलितराशिके प्रत्येक एकको दूना करके परस्पर गुणा करने पर असंख्यात लोकप्रमाण राशि उत्पन्न होती है इसमें सन्देह नहीं है । पुनः इस राशिसे औदारिकशरीरके अन्तिम निषेकके गुणित करने पर उसीका प्रथम निषेक होता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए ।

उससे अप्रथम-अचरम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा होता है । ३४३ ।

गुणकार क्या है ? संख्यात आवलिप्रमाण जो साधिक एक अंकसे न्यून डंड गुणहानि है उतना गुणकार है । यथा— तीन पत्यकी आयुवालोंमें उत्पन्न हो कर उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें औदारिकशरीरको उत्पन्न करनेके लिए ग्रहण किये गये नोकमके प्रदेशोंमेंसे लेकर तीन पत्यके प्रथम समयमें बहुत प्रदेशपिण्डको निक्षिप्त करता है । द्वितीय समयमें विशेष हीन प्रदेश-पिण्ड निक्षिप्त करता है । इस प्रकार निरन्तर विशेष हीन क्रमसे तीन पत्यके अंतिम समय तक निक्षिप्त करता है । पुनः इस प्रकार निक्षिप्त किये गये सब द्रव्यको प्रथम निषेकके प्रमाणरूपसे करने पर डेढ गुणहानिप्रमाण प्रथम निषेक होते हैं । पुनः यहाँ पर प्रथम निषेक और अंतिम निषेकका अपनयन करनेके लिए साधिक एक अंक घटाना चाहिए । शेषका प्रमाण इतना होता

५७७९
५१२

है । इससे प्रथम निषेकके गुणित करने पर तीन पत्यके प्रथम निषेक और अन्तिम

मोत्तूण मज्झिमसन्वदव्वमागच्छदि । तेण अपढम-अचरिमदव्वस्स असंखेज्जगुणत्तं सिद्धं । मज्झिमदव्वमेदं ५७७९ ।

अपढमासु टिठ्ठीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥ ३४४ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमणिसेयमेत्तो ५७८८ ।

अचरिमासु टिठ्ठीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥ ३४५ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमणिसेगेणूणपढमणिसेगमेत्तो ६२९१ ।

सव्वासु टिठ्ठीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥ ३४६ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमणिसेगमेत्तो ६३०० ।

एवं तिण्णं सरीराणं ॥ ३४७ ॥

जहा ओरालियसरीरस्स जहण्णपदप्पाबहुअपरूवणा कदा तहा वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीराणं पि कायव्वा, विसेसाभावादो । णवरि तेजासरीरस्स अण्णोण्णवसत्थ-रासी असंखेज्जओसप्पिणि-उत्सप्पिणिमेत्तो, पलिदोवमअद्धच्छेवणाहिंतो तेजइयसरीर-णाणागुणहाणिसलागाणमसंखेज्जगुणत्तदंसणादो । एदं कुदो णव्वदे ? कम्मइयसरीरस्स

निषेकको छोड कर मध्यके निषेकोंका सब द्रव्य आता है । इसलिए अप्रथम-अचरम द्रव्य असंख्यातगुणा है यह सिद्ध होता है । मध्यका द्रव्य इतना है-- ५७७९ ।

उससे अप्रथम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥ ३४४ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम निषेकका जितना प्रमाण है उतना है (५७७९+९) = ५७८८ ।

उससे अचरम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥ ३४५ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? प्रथम निषेकमेंसे अन्तिम निषेकके प्रमाणको कम करके जो शेष रहे उतना है । (५१२ - ९ = ५०३; ५७८८+५०३ =) ६२९१ ।

उससे सब स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥ ३४६ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम निषेकका जितना प्रमाण है उतना है । (६२९१+९ = ६३००) ।

इसी प्रकार तीन शरीरोंके प्रदेशाग्रका जघन्यपदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व कहना चाहिए ॥ ३४७ ॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरके जघन्य पदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व प्ररूपणा की है उसी प्रकार वैक्रियिकशरीर, तैजसशरीर और कर्मणशरीरकी प्ररूपणा करनी चाहिए, क्योंकि, उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है । इतनी विशेषता है कि तैजसशरीरकी अन्योन्याभ्यस्त-राशिका प्रमाण असंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणियोंके कालप्रमाण है, क्योंकि, पत्यके अर्धच्छेदोंसे तैजसशरीरकी नानागुणहानिशलाकायें असंख्यातगुणी देखी जाती है ।

शंका-- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

णाणागुणहाणिसलागाहितो तेजइयस्स गुणहाणिसलागाओ असंखेज्जगुणाओ त्ति सुत्तवयणादो । कम्मइयस्स अण्णोण्णभत्थरासिपमाणं पलिदो० असंखे० भागो ।

जहण्णपदेण सव्वत्थोव आहारसरोस्स चरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं ॥ ३४८ ॥

कुदो ? गोवृच्छागारेण सव्वणिसेगाणमवट्ठणादो उक्कस्सट्ठिविसंजुत्तपरमाणूणं बहुआणमसंभवादो च ।

पढमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं संखेज्जगुणं ॥ ३४९ ॥

को गुण० ? संखेज्जा समया अण्णोण्णभत्थरासी । किमट्ठमण्णोण्णभत्थरासी संखेज्जे ? अंतोमुहुत्तमेत्तगुणहाणिअट्ठाणेण सयलआहारसरीरट्ठिविकाले अंतोमुहुत्तमेत्ते भागे हिदे संखेज्जाणं णाणागुणहाणिसलागाणं पमाणवलंभादो । एवासिमण्णोण्णभत्थरासी वि संखेज्जा चेव होवि, पढमट्ठिविपदेसग्गस्स संखेज्जगुणत्तण्णहाणववत्तीदो ।

अपढम-अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ॥ ३५० ॥

को गुण० ? अंतोमुहुत्तं । किचूणविबड्ढगुणहाणि त्ति जं वुत्तं होवि ।

समाधान-- कार्मणशरीरकी नानागुणहानिशलाकाओंसे तैजसशरीरकी नानागुणहानिशलाकायें असंख्यातगुणी हैं, इस सूत्रवचनसे जाना जाता है ।

कार्मणशरीरकी अन्योन्याभ्यस्तराशिका प्रमाण पत्रके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

जघन्यपदकी अपेक्षा आहारकशरीरकी अन्तिम स्थितिमें प्रदेशाग्र सबके स्तोक है ॥ ३४८ ॥

क्योंकि, सब निषेक गोपुच्छके आकाररूपसे अवस्थित हैं और उत्कृष्ट स्थितिसे युक्त परमाणुओंका बहुत होना असंभव है ।

उससे प्रथम स्थितिमें प्रदेशाग्र संख्यातगुणा है ॥ ३४९ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय प्रमाण अन्योन्याभ्यस्तराशि गुणकार है ।

शंका--अन्योन्याभ्यस्तराशिका प्रमाण संख्यात क्यों है ?

समाधान--गुणहानिका अध्वान अन्तर्मुहूर्त है । उससे आहारक शरीरके समस्त स्थितिकाल अन्तर्मुहूर्तके भाजित करने पर नानागुणहानियोंका प्रमाण संख्यात उपलब्ध होता है । इनकी अन्योन्याभ्यस्तराशिका प्रमाण भी संख्यात ही होता है, क्योंकि, अन्यथा प्रथम स्थितिका निषेक संख्यातगुणा नहीं बन सकता ।

उससे अप्रथम-अचरम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ॥ ३५० ॥

गुणकार क्या है ? अन्तर्मुहूर्तप्रमाण गुणकार है । कुछ कम डेढ़ गुणहानिप्रमाण गुणकार है यह उक्त कथन तात्पर्य है ।

अपढमासु टिठदीसु पदेसगं विसेसाहियं ॥३५१॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमणिसेगमेत्तो ।

अचरिमासु टिठदीसु पदेसगं विसेसाहियं ॥३५२॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमणिसेगेणूणपढमणिसेगमेत्तो ।

सव्वासु टिठदीसु पदेसगं विसेसाहियं ॥३५३॥

के० विसेसो ? चरिणिसेगमेत्तो । एवं पंचणं सरीराणं जहणपदप्पा-
बहुअं समत्तं ।

**उक्कस्सपदेण सव्वत्थोवं ओरालियसरीरस्स चरिमे गुणहाणि-
ट्ठाणंतरे पदेसगं ॥३५४॥**

कुवो ? चरिमगुणहाणिपदेसगावो हेट्ठिमहेट्ठिमगुणहाणीणं पदेसगस्स दुगुण-
दुगुणकमेण १०० । २०० । ४०० । ८०० । १६०० । ३२०० । अवट्ठाणवंसणावो ।

**अपढम-अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसगमसंखेज्ज-
गुणं ॥३५५॥**

को गुण० ? असंखेज्जा लोगा । रूढूणणाणागुणहाणिसलायाओ ५ विरलिय विगं

उससे अप्रथम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३५१॥

कितना अधिक है ? अन्तिम निषेकका जितना प्रमाण है उतना अधिक है ।

उससे अचरम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३५२॥

कितना अधिक है ? प्रथम निषेकमेंसे अन्तिम निषेकके प्रमाणको कम करने पर
जितना शेष रहे उतना अधिक है ।

उससे सब स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३५३॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम निषेकका जितना प्रमाण है उतना है ।

इस प्रकार पाँच शरीरोंका जघन्य पदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

उत्कृष्टपदकी अपेक्षा औदारिकशरीरके अन्तिम गुणहाणिस्थानान्तरमें प्रदेशाग्र
सबसे स्तोक हैं ॥३५४॥

क्योंकि, अन्तिम गुणहानिके प्रदेशाग्रसे अधस्तन अधस्तन गुणहानियोंका प्रदेशाग्र दूने
दूने क्रमसे अवस्थित देखा जाता है । यथा— १००, २००, ४००, ८००, १६००, ३२०० ।

उससे अप्रथम-अचरम गुणहाणिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ॥३५५॥

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार है । एक कम नानागुणहानिशला-
काओंका विरलन कर और विरलित राशिसे प्रत्येक एकको दूनाकर परस्पर गुणा करनेपर

करिय अण्णोण्णवत्थरासी दूरुवूणा ति भणिदं होदि ३० । तस्स पमाणमेवं ३००० ।

अपढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं । ३५६ ।

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ३१०० ।

पढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥ ३५७ ॥

केत्तिय० विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ३२०० ।

अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं । ३५८ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वेण्णविदियाविगुणहाणिदव्वमेत्तो ६२०० ।

सव्वेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥ ३५९ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ६३०० ।

एवं तिण्णं सरीराणं ॥ ३६० ॥

जहा ओरालियसरीरस्स उक्कस्सपदप्पाबहुअं परुविदं तथा वेउव्विय-तेजा-
कम्मइयसरीराणं पि परुवेदव्वं । णवरि तेजा-कम्मइयसरीराणमण्णोण्णवत्थरासि-
पमाणं णादूण भाणिदव्वं ।

जो अन्योन्याभ्यस्तराशि उत्पन्न हो उसमेंसे दो कम (३२ - २ = ३०) गुणकार शलाका है
यह उक्त कथनका तात्पर्य है । उसका प्रमाण इतना है । (१०० × ३०) ३००० ।

उससे अप्रथम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है । ३५६ ।

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिका जितना द्रव्य है उतना है
(३००० + १०० =) ३१०० अप्रथम गुणहानियोंका द्रव्य ।

उससे प्रथम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है । ३५७ ।

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिके द्रव्यका जितना प्रमाण है
(३००० + १०० =) ३२०० ।

उससे अचरम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है । ३५८ ।

विशेषका प्रमाण कितना है ? द्वितीयादि गुणहानियोंके द्रव्यमेंसे अन्तिम गुणहानिके
कम करनेपर जो शेष रहे उतना है (३१०० - १०० = ३०००; ३२०० + ३००० =) ६२०० ।

उससे सब गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है । ३५९ ।

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिके द्रव्यका जितना प्रमाण है उतना है
(६२०० + १०० =) ६३०० ।

इसी प्रकार तीन शरीरोंकी अपेक्षा जानना चाहिए । ३६० ।

जिस प्रकार ओदारिकशरीरका उत्कृष्टपदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व कहा है उसी प्रकार
वैक्रियिकशरीर, तैजसशरीर और कामंजशरीरका भी कहना चाहिए । इतनी विशेषता है कि
तैजसशरीर और कामंजशरीरकी अन्योन्याभ्यस्तराशिका प्रमाण जान कर कहना चाहिए ।

सव्वत्थोवं आहारसरीरस्स चरिमगुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदे-
सगं ॥३६१॥

कारणं सुगमं ।

अपढम-अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसगं संखेज्जगुणं । ३६२।

को गुण० ? सगअण्णोण्णढमत्थरासीए चट्ठरूवूणाए अढं ।

अपढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसगं विसेसाहियं ॥३६३॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ।

पढमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसगं विसेसाहियं ॥३६४॥

के० विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ।

अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसगं विसेसाहियं ॥३६५॥

के० विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वेणूणविदियादिगुणहाणिदव्वमेत्तो ।

सव्वेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसगं विसेसाहियं ॥३६६॥

के० विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो । एवमुक्कस्सपदप्पावहुअं समत्तं ।

आहारकशरीरके अन्तिम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है । ३६१।

कारण सुगम है ।

उससे अप्रथम-अचरम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र संख्यातगुणा है ३६२।

गुणकार क्या है ? चार कम अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशिका अर्धभागप्रमाण गुणकार है ($६४ - ४ = ६०; ६० \div २ = ३०, १०० \times ३० = ३०००$)

उससे अप्रथम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३६३॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिका जितना द्रव्य है उतना है ।

उससे प्रथम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३६४॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिका जितना द्रव्य है उतना है ।

उससे अचरम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३६५॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? द्वितीयादि गुणहानियोंके द्रव्यमेंसे अन्तिम गुणहानिका द्रव्य कम कर देने पर जो शेष रहे उतना है ।

उससे सब गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३६६॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिका जितना द्रव्य है उतना है ।

इस प्रकार उत्कृष्टपद अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

जहणुक्कस्सपदेण सव्वत्थोवं ओरालियसरीरस्स चरिमाए
ट्ठिदीए पदेसग्गं ॥ ३६७ ॥

कुदो ? उक्कस्सट्ठिविसंजुत्तपरमाणुपोग्गलाणं बहुआणमणुवलंभादो । ९ ।

चरिमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ॥ ३६८ ॥

को गुण० ? किच्चूणदिवड्डुगुणहाणीओ $\frac{१००}{९}$ । कुदो चरिमगुणहाणिदब्बे

चरिमणिसेयपमाणेण कवे किच्चूणदिवड्डुगुणहाणिमेत्तचरिमणिसेभाणं तत्थुवलंभादो ।

पढमाए ट्ठिदीए पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ॥ ३६९ ॥

को गुण० ? असंखेज्जा लोका । किच्चूणदिवड्डुगुणहाणिणा $\frac{१००}{९}$ किच्चूणणोण-

वमत्थरासिम्हि $\frac{५१२}{९}$ भागे हिदे जं भागलद्धं सो गुणगारो त्ति घेतत्वं ५१२ ।

अपढम-अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गमसंखेज्ज-
गुणं ॥ ३७० ॥

को गुण० ? अंतोमुहुत्तं । गुणहाणीए तिण्णिचदुब्बभागेण सादिरेगेणऊणदिवड्डु-

जघन्य-उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी अन्तिम स्थितिमें प्रदेशाग्र
सबसे स्तोक है । ३६७ ।

क्योंकि, उत्कृष्ट स्थितियुक्त बहुत परमाणु नहीं उपलब्ध होते ।

उससे अन्तिम गुणहाणिस्थानान्तरमें प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है । ३६८ ।

गुणकार क्या है ? कुछ कम डेढ गुणहानिप्रमाण गुणकार है $\frac{१००}{९}$, क्योंकि, अन्तिम
गुणहानिके द्रव्यको अन्तिम निषेकके प्रमाणसे करने पर कुछ कम डेढ गुणहानि प्रमाण अन्तिम
निषेक उपलब्ध होते हैं ।

उससे प्रथम स्थितिमें प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है । ३६९ ।

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार है । कुछ कम डेढ गुणहानि $\frac{१००}{९}$
का कुछकम अन्योन्याभ्यस्तराशि $\frac{५१२}{९}$ में भाग देनेपर जो भाग लब्ध आवे वह गुणकार है
ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए । $(\frac{५१२}{९} \div \frac{१००}{९} = \frac{५१२}{१००}, \frac{१००}{१} \times \frac{५१२}{१००} =) ५१२ ।$

उससे अप्रथम-अचरम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है । ३७० ।

गुणकार क्या है ? अन्तर्मुहूर्तप्रमाण गुणकार है । गुणहानिके तीन बटे चार भागसे

गुणहाणि त्ति भणिवं होदि ३००० ।

अपढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसगं विसेसाहियं । ३७१ ।

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमगुणहाणिदब्बमेत्तो ३१०० ।

पढमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसगं विसेसाहियं ॥ ३७२ ॥

के० विसेसो ? चरिमगुणहाणिदब्बमेत्तो । कुदो ? बिदियादिगुणहाणि-
दब्बाणं दुगुणहीण-दुगुणहीणकमेण अवट्ठाणुवलंभादो ३२०० ।

अपढम-अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसगं विसेसाहियं ॥ ३७३ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? पढमचरिमणिसेगेहि ऊणविदियादिगुणहाणिदब्ब-
मेत्तो ५७७९ ।

अपढमाए ट्ठिदीए पदेसगं विसेसाहियं ॥ ३७४ ॥

के० विसेसो ? चरिमणिसेयमेत्तो ५७८८ ।

अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसगं विसेसाहियं । ३७५ ।

के० विसेसो ? चरिमगुणहाणिदब्बेणूणपढमणिसेगमेत्तो ६२०० ।

अधिक कुछ कम डेढ गुणहानिप्रमाण गुणकार है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ३००० ।

उससे अप्रथम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है । ३७१ ।

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिका जितना द्रव्य है उतना है (३०००
+ १०० =) ३१०० ।

उससे प्रथम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है । ३७२ ।

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिका जितना द्रव्य है उतना है, क्योंकि,
द्वितीय आदि गुणहानियोंका द्विगुणहीन द्विगुणहीन क्रमसे अवस्थान उपलब्ध होता है
(३१०० + १०० =) ३२०० ।

उससे अप्रथम-अचरम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है । ३७३ ।

विशेषका प्रमाण कितना है ? प्रथम और अन्तिम निषेकसे न्यून द्वितीय आदि गुण-
हानियोंका जितना द्रव्य है उतना है (६३०० - ५२१ =) ५७७९ ।

उसेस अप्रथम स्थितिमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है । ३७४ ।

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम निषेकका जितना प्रमाण है उतना है (५७७९
+ ९ =) ५७८८ ।

उससे अचरम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है । ३७५ ।

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिके द्रव्यको प्रथम निषेकके द्रव्यमेंसे कम
करनेपर जितना शेष रहे उतना है (५१२ - १०० = ४१२, ५७८८ + ४१२ =) ६२०० ।

अचरिमाए ट्ठिदीए पदेसगं विसेसाहियं ॥३७६॥

के० विसेसो ? चरिमणिसेगेणूणचरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ६२९१ ।

सव्वासु ट्ठिदीसु सव्वेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसगं विसेसाहियं ॥३७७॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमणिसेगमेत्तो ६३०० ।

एवं तिण्णं सरीराणं ॥३७८॥

जहा ओरालियसरीरस्स जहण्णवकस्सपवप्पाबहुअं परुविदं तथा वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीराणं पि परुवेदव्वं । णवरि चरिमगुणहाणिदव्वादो तेजइयसरीरस्स पढम-ट्ठिदीए णिसित्तवव्वमसंखेज्जगुणं ति भणिदे एत्थ गुणगारो अंगुलस्स असंखे० भागो होदि, दिवडुगुणहाणिमेत्तचरिमणिसेगेहि अण्णोण्णव्वभत्थरासिमेत्त चरिमणिसेगेसु ओवट्ठिदेसु अंगुलस्स असंखे० भागमेत्तगुणगारुवलंभादो । एत्थ एत्तियमागच्छवि ति कुदो णव्वदे ? एत्थेव उवरि भण्णमाणअप्पाबहुगादो णव्वदे । तं जहा-सव्वत्थोवाणि आहारसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि । कम्मइयसरीरस्स णाणापदेस—

उससे अचरम स्थितिमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३७६॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिके द्रव्यमेंसे अन्तिम निषेकके द्रव्यको कम कर देने पर जो शेष रहे उतना है (१०० - ९ = ९१; ६२०० + ९१ = ६२९१ ।

उससे सब स्थितियों ओर सब गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३७७॥

विशेषका प्रमाण कितना है? अन्तिम निषेकका जितना प्रमाण है उतना है (६२९१ + ९ =) ६३०० ।

इसीप्रकार तीन शरीरोंकी अपेक्षा जानना चाहिए ॥३७८॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरका जघन्य उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व कहा है उसी प्रकार वैक्रियिकशरीर, तैजसशरीर और कर्मणशरीरका भी कहना चाहिए । इतनी विशेषता है कि अन्तिम गुणहानिके द्रव्यसे तैजसशरीरकी प्रथम स्थितिमें निक्षिप्त हुआ द्रव्य असंख्यातगुणा है ऐसा कहने पर यहाँ पर गुणकार अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है, क्योंकि, डेढ़ गुणहानिप्रमाण अन्तिम निषेकोंसे अन्योन्याभ्यस्तराशिप्रमाण अन्तिम निषेकोंके भाजित करने पर अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार उपलब्ध होता है ।

शंका--यहाँ इतना आता है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान--यहाँ पर आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्वसे जाना जाता है । यथा--आहारक-शरीरके नानागुणहानिस्थानान्तर सबसे स्तोक है । उनसे कर्मणशरीरके नानागुणहानिस्थानान्तर

गुणहाणिद्वानंतराणि असंखेज्जगुणाणि । तेजासरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिद्वानंतराणि असंखे०गुणाणि । संपहि कम्मइयसरीरस्स णाणागुणहाणिसलागाओ पलिदोवमच्छेद-
णएहितो असंखे०भागेणूणाओ त्ति आइरिया भणंति । पुणो एवंविहकम्मइयसरीर-
णाणागुणहाणिसलागाहितो तेजइयसरीरस्स णाणागुणहाणिसलागाओ असंखेज्जगुणाओ
त्ति वगणासुत्ते भणिदं । अविहद्धाइरियाणं उवदेसो पुण पलिदोवमच्छेदणाहितो
तेजइयसरीरस्स णाणागुणहाणिसलागाओ असंखेज्जगुणाओ । को गुण० ? पलिदो ०
असंखे०भागो त्ति । एवमिह गुणगारे जत्तियाणि रूढाणि तत्तियाणं पलिदोवमाण-
मण्णोण्णवभासे कदे तेजइयणाणागुणहाणिसलागाणमण्णोण्णवमत्थरासी उत्पज्जदि ।
पुणो तम्मि अण्णोण्णवमत्थरासिम्मि दिवड्डुगुणहाणीए ओवट्ठिदे लद्धमसंखेज्जाणं
पलिदोवमाणमण्णोण्णवभासो आगच्छदि । तेण गुणगारो अंगुलस्स असंखे०भागो त्ति
सिद्धं । कम्मइयसरीरगुणगारो पुण पलिदोवमस्स असंखे०भागो त्ति दट्ठवो । एसो
गुणगारविही पुवं परूविदजहण्णपदे उक्कस्सपदे च वत्तव्वो ।

जहण्णुक्कस्सपदेण सववत्थोवं आहारसरीरस्स चरिमाए टिठवीए पदेसगं ॥ ३७९ ॥

कुदो ? उक्कस्सट्ठिदिपरमाणूणं बहुआणं संभवाभावादो ।

असंख्यातगुणे हैं । उनसे तैजसशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं । यहाँ पर कार्मणशरीरकी नानागुणहानिशलाकायें पत्यके अर्धच्छेदोंसे असंख्यातवें भागप्रमाण कम हैं ऐसा आचार्य कथन करते हैं । पुनः इस प्रकारकी कार्मणशरीरकी नानागुणहानिशलाकाओंसे तैजसशरीरकी नानागुणहानिशलाकायें असंख्यातगुणी है ऐसा वर्गणासूत्रमें कहा है । परन्तु विरोधरहित आचार्योंका उपदेश है कि पत्यके अर्धच्छेदोंसे तैजसशरीरकी नानागुणहानिशला-
कायें असंख्यातगुणी हैं । गुणकार क्या है ? पत्यका असंख्यातवां भागप्रमाण गुणकार है । इस गुणकारमें जितनी संख्या है उतने पत्योंका परस्पर गुणा करने पर तैजसशरीरकी नाना-
गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्तराशि उत्पन्न होती है । पुनः उस अन्योन्याभ्यस्तराशिमें डेढ गुणहानिका भाग देने पर असंख्यात पत्योंकी अन्योन्याभ्यस्तराशि आती है । इसलिए गुणकार अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है यह सिद्ध होता है । परन्तु कार्मणशरीरका गुणकार पत्यका असंख्यातवां भागप्रमाण है ऐसा जानना चाहिए । यह गुणकारविधि पहले कहे गये जघन्यपद और उत्कृष्टपदमें भी कहनी चाहिए ।

जघन्य-उत्कृष्टपदकी अपेक्षा आहारकशरीरकी अन्तिम स्थितिमें प्रवेशाग्र सबसे स्तोक है ॥ ३७९ ॥

क्योंकि, उत्कृष्ट स्थितिके बहुत परमाणु सम्भव नहीं हैं ।

❖ ता० प्रती 'पुव्वपरूविदजहण्णपदे' अ० प्रती 'पुव्वं परूविदं जहण्णपदे' इति पाठः ।

पढमाए टिठदोए पदेसगं संखेज्जगुणं ॥ ३८० ॥

को गुण० ? संखेज्जा समया । किञ्चूणणोणब्भत्थरासि त्ति भणिदं होदि ।

चरिमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसगमसंखेज्जगुणं ॥ ३८१ ॥

को गुण० ? सगविवड्डुगुणहाणीए संखेज्जदिभागी ।

अपढम-अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसगं संखेज्ज-
गुणं ॥ ३८२ ॥

को गुण० ? संखेज्जा समया । चदुरुवूणअणोणब्भत्थरासिस्स अट्ठमिदि
भणिदं होदि ।

अपढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसगं विसेसाहियं । ३८३ ।

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमगुणहाणिदब्बमेत्तो ।

पढमे गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसगं विसेसाहियं ॥ ३८४ ॥

के० विसेसो ? चरिमगुणहाणिदब्बमेत्तो ।

अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसगं विसेसाहियं । ३८५ ।

के० विसेसो ? चरिमगुणहाणिदब्बमेत्तेणूणविदियादिगुणहाणिमेत्तो ।

उससे प्रथम स्थितिमें प्रदेशाग्र संख्यातगुणा है ॥ ३८० ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । कुछकम अन्योन्याभ्यस्त राशिप्रमाण
गुणकार है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

उससे अन्तिम गुणहानिस्थानान्तरमें प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ॥ ३८१ ॥

गुणकार क्या है ? अपनी डेढ गुणहानिके संख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उससे अप्रथम अचरम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र संख्यातगुणा है ॥ ३८२ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । चार कम अन्योन्याभ्यस्तराशिका
अर्धभागप्रमाण गुणकार है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

उससे अप्रथम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥ ३८३ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिके द्रव्यका जितना प्रमाण है उतना है ।

उससे प्रथम गुणहानिस्थानान्तरमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥ ३८४ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिके द्रव्यका जितना प्रमाण है उतना है ।

उससे अचरम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥ ३८५ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? द्वितीय आदि गुणहानियोंके द्रव्यमेंसे अन्तिम गुणहानिके
द्रव्यको कम करनेपर जो शेष रहे उतना है ।

अपढम-अचरिमासु टिठदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं* ॥३८६॥

के० विसेसो ? पढम-चरिमणिसेगेहि ऊणचरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ।

अपढमासु टिठदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३८७॥

के० विसेसो ? चरिमणिसेगमेत्तो ।

अचरिमासु टिठदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३८८॥

के० विसेसो ? चरिमणिसेगेणूणपढमणिसेगमेत्तो ।

सव्वासु टिठदीसु सव्वेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं
विसेसाहियं ॥३८९॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमणिसेयमेत्तो ।

एवं पदेसविरओ त्ति समत्तमणुयोगद्वारं ।

णिसेयअप्पाबहुए त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अनुयोगद्वाराणि—
जहणपदे उक्खसपदे जहणुक्खसपदे ॥३९०॥

उससे अप्रथम-अचरम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३८६॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिके द्रव्यमेंसे प्रथम और अन्तिम निषेकके द्रव्यको कम करनेपर जो शेष रहे उतना है ।

उससे अप्रथम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३८७॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम निषेकका जो प्रमाण है उतना है ।

उससे अचरम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३८८॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? प्रथम निषेकके प्रमाणमेंसे अन्तिम निषेकके प्रमाणको कम करनेपर जो शेष रहे उतना है ।

उससे सब स्थितियों और सब गुणहानिस्थानान्तरमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३८९॥

विशेषक प्रमाण कितना है ? अन्तिम निषेकका जितना प्रमाण है उतना है ।

इस प्रकार प्रदेशविरच अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

निषेक अल्पबहुत्वका प्रकरण है । उसमें ये तीन अनुयोगद्वार होते हैं—
जघन्यपद, उत्कृष्टपद और जघन्य-उत्कृष्टपद ॥३९०॥

एगगुणहानिअद्धानं जहणपदं णाम, एगसंखत्तादो । णाणागुणहानिसलागाओ उक्कस्सपदं णाम, अणेगसंखत्तादो । गुणहानिअद्धानं पेक्खिदूण णाणागुणहानिसला-
गाणमसंखेज्जगुणत्तदंसणादो वा उक्कस्सं णाणागुणहानिसलागाणं । आहार-
कम्मइयगुणगारसलागाहि विद्यहिचारो, पाधणपदमस्सिदूण गुणहानिसलागाणं
उक्कस्सववएसादो । दब्बट्टियणयावलंबणादो त्ति भणिदं होदि ।

जहणपदेण सव्वत्थोवमोरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरस्स
एयपदेसगुणहानिट्ठाणंतरं ॥ ३९१ ॥

कुदो ? अंतोमुहुत्तपमाणत्तादो । होता वि तिण्णि गुणहानिट्ठाणंतराणि
सरिसाणि । तं कुदो णव्वदे ? एगमुत्ते एगवयणेण च णिहेसादो ।

तेयासरीरस्स एयपदेस*गुणहानिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ॥ ३९२ ॥

को गुण० ? पलिदो० असंखे० भागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपदमवग्गमूलाणि ।

कम्मइयसरीरस्स एगपदेसगुणहानिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ॥ ३९३ ॥

एकगुणहानिअध्वानका नाम जघन्यपद है, क्योंकि, उसकी संख्या एक है । नानागुणहानि
शलाकाओंका नाम उत्कृष्टपद है, क्योंकि, उनकी संख्या बहुत है । अथवा गुणहानि अध्वानको
देखते हुए नानागुणहानिशलाकायें असंख्यातगुणी देखी जाती हैं, इसलिए नानागुणहानिशला-
काओंकी उत्कृष्टपद संज्ञा है । आहारकशरीर और कर्मणशरीरकी गुणहानिशलाकाओंके साथ
व्यभिचार भी नहीं आता है, क्योंकि, प्राधान्यपदकी अपेक्षा नानागुणहानिशलाकाओंकी उत्कृष्ट
संज्ञा है । द्रव्याधिकनयका अवलम्बन लेनेसे यह संज्ञा रखी है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

जघन्यपदकी अपेक्षा औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरका
एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर सबसे स्तोक है ॥ ३९१ ॥

क्योंकि, उसका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त है । ऐसा होते हुए भी तीनों गुणहानिस्थानान्तर
समान हैं ।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— एक सूत्रमें एक वचनका निर्देश होनेसे जाना जाता है ।

उससे तैजसशरीरका एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है । ३९२ ।

गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । जो पत्यका असं-
ख्यातवां भाग पत्यके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ।

उससे कर्मणशरीरका एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है । ३९६ ।

❖ ता० प्रती '—सलागाओ ! (अ) णाहार' अ० का० प्रत्यो: 'सलागाओ अणाहार' इति पाठः ।

❖ का० प्रती 'तेयासरीरस्स णाणापदेस—' इति पाठः ।

को गुणगारो ? पलिदो० असंखे० भागो । एवं जहणपदप्पाबहुअं समत्तं ।

उक्कस्सपदेण सव्वत्थोवाणि आहारसरीरस्स णाणापदेसगुण-
हाणिट्ठाणंतराणि ॥३९४॥

कुदो ? संखेज्जरुवत्तादो ।

कम्मइयसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्ज-
गुणाणि ॥३९५॥

को गुणगारो ? पलिदो० असंखे० भागो ।

तेजासरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्ज-
गुणाणि ॥३९६॥

को गुण० ? पलिदो० असंखे० भागो । कुदो ? तेजासरीरस्स एगगुणहाणि-
अद्धाणादो असंखेज्जपलिदोवमपढमवगमूलमेत्तादो कम्मइयसरीरएगगुणहाणिअद्धा-
णस्स असंखेज्जगुणत्तादो ।

ओरालियसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्ज-
गुणाणि ॥३९७॥

गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्यातर्वे भागप्रमाण गुणकार है ।

इसप्रकार जघन्यपदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा आहारकशरीरके नानाप्रदेशगुणाहानिस्थानान्तर सबसे
स्तोक हैं ॥३९४॥

क्योंकि, उनका प्रमाण संख्यात है ।

उनसे कार्मणशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥३९५॥

गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्यातर्वे भागप्रमाण गुणकार है ।

उनसे तैजसशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥३९६॥

गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्यातर्वे भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, असंख्यात
पत्योंके प्रथम वर्गमूलप्रमाण तैजसशरीरके एकगुणहानि अध्वानसे कार्मणशरीरकी एकगुणहानिका
अध्वान असंख्यातगुणा है ।

उनसे औदारिकशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥३९७॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागो असंखेज्जानि पलिदोवम-
पढमवग्गमूलाणि ।

वेउव्वियसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि संखेज्ज-
गुणाणि ॥ ३९८ ॥

को गुण० ? असंखेज्जा समया । कुदो ? दोणं गुणहाणिअट्ठाणाणि सरिसाणि
होदूण तेहि विहज्जमाणतिपलिदोवमेहिंते तेत्तीससागरोवमाणं संखेज्जगुणत्तदंसणादो ।
एवं उक्कस्सपदप्पाबहुअं समत्तं ।

जहण्णुक्कस्सपदेण सव्वत्थोवाणि आहारसरीरस्स णाणापदेस-
गुणहाणिट्ठाणंतराणि ॥ ३९९ ॥

कुदो ? संखेज्जरूवत्तादो ।

ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरस्स एयपदेसगुणहाणिट्ठाणं-
तरमसंखेज्जगुणं ॥ ४०० ॥

कुदो ? तिण्णि वि गुणहाणिट्ठाणंतराणि सरिसाणि होदूण अंतोमहुत्तपमाणत्तादो ।

कम्मइयसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्ज-
गुणाणि ॥ ४०१ ॥

गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । जो कि पत्यका असं-
ख्यातवां भाग पत्यके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ।

उनसे वैक्रियिकशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं । ३९८।

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि, दोनोंके गुणहानिअध्वान समान हैं
इसलिए उनसे भाजित किये जानेवाले तीन पत्योंसे तेत्तीस सागर संख्यातगुणे देखे जाते हैं ।

इस प्रकार उत्कृष्टपदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

जघन्य-उत्कृष्टपदकी अपेक्षा आहारकशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर-
सबसे स्तोक हैं । ३९९ ।

क्योंकि, उनका प्रमाण संख्यात है ।

उनसे औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरका एकप्रदेश-
गुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है । ४०० ।

क्योंकि, तीन ही गुणहानिस्थानान्तर सदृश होते हुए प्रत्येकका अध्वान अंतर्मुहूर्तप्रमाण है ।

उनसे कार्मणशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं । ४०१ ।

❖ का० प्रती ' को गुणगारो असंखेज्जानि ' इति पाठा ।

को गुण० ? पलिदो० असंखे० भागो ।

तेयासरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्ज-
गुणाणि ॥४०२॥

को गुण० ? पलिदो० असंखे० भागो ।

तेयासरीरस्स एगपदेस^१गुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ॥४०३॥

को गुण० ? असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

कम्मइयसरीरस्स एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ॥४०४॥

को गुण० ? पलिदो० असंखे० भागो ।

ओरालिधसरीरस्स णाणागुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्ज-
गुणाणि ॥४०५॥

को गुण० असंखेज्जाणि पलिदोवमच्छेदणयपढमवग्गमूलाणि ।

वेउळ्वियसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि संखेज्ज-
गुणाणि ॥४०६॥

गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उनसे तैजसशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥४०२॥

गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उनसे तैजसशरीरका एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥४०३॥

गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण गुणकार है ।

उससे कामर्णशरीरका एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥४०४॥

गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उससे औदारिकशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे
हैं ॥४०५॥

गुणकार क्या है ? असंख्यात पत्योंके जितने अर्धच्छेद हो उतने प्रथम वर्गमूलप्रमाण
गुणकार है ।

उनसे वैक्रियिकशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं ॥४०६॥

❁ ता० प्रती 'तेयासरीरस्स णाणा (एय) पदेस- ' अ० का० प्रत्यो 'तेयासरीरस्स णाणापदेस-'
इति पाठः ।

को गुण० ? संखेज्जा समया ।

एवं निसेयपरूवणा समत्ता ।

गुणगारे त्ति तत्थ इमाणि तिणिण अणुयोगद्वाराणि-जहणपद
उक्कस्सपदे जहणुक्कस्सपदे ॥ ४०७ ॥

जहणपदवमस्सिदूण जो गुणगारो तं जहणपदं णाम । उक्कस्सदवमस्सिदूण
जो गुणगारो तमुक्कस्सपदं णाम । उभयमस्सिऊण जो गुणगारो तं जहणुक्कस्सपदं
णाम ।

जहणपदे सव्वत्थोवा ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरस्स
जहणओ गुणगारो सेडोए असंखेज्जदिभागो ॥ ४०८ ॥

कुदो ? साभाबियादो । जहणपदप्पाबहुए कीरमाणे सेडोए असंखे०भागो
गुणगारो होवि त्ति भणिदं होवि । तं जहा-सव्वत्थोवमोरालियसरीरस्स जहणयं
पदेसगं । तं पुण एगसमयपबद्धमेत्तं सुहुमेइंदियअपज्जत्तएण पढमसमयतवमवत्थेण
जहणउववादजोगेण अपज्जत्तिणिव्वत्तणणिसित्तं गहिदणोकम्मपदेसगं । वेउव्विय-
सरीरस्स जहणयं पदेसगमसंखे०गुणं । को गुण० ? सेडोए असंखे०भागो । एवं
वि एगसमयपबद्धमेत्तं असण्णपच्छायददेव-णेरइएसु उप्पण्णेण पढमसमयआहारएण

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है ।

इस प्रकार निषेकप्ररूपणा समाप्त हुई ।

गुणकारका प्रकरण है । उसमें ये तीन अनुयोगद्वार होते हैं—जघन्यपद,
उत्कृष्टपद और जघन्य-उत्कृष्टपद ॥४०७॥

जघन्य द्रव्यका आश्रय कर जो गुणकार है वह जघन्यपद कहलाता है । उत्कृष्टपदका
आश्रय कर जो गुणकार है वह उत्कृष्टपद कहलाता है और दोनोंका आश्रय कर जो गुणकार है
वह जघन्य-उत्कृष्टपद कहलाता है ।

जघन्य पदकी अपेक्षा औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरका
जघन्य गुणकार जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ॥४०८॥

क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । जघन्य पदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व करने पर जगश्रेणिके
असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । यथा-औदारिकशरीरका
जघन्य प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है । परन्तु वह प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त
जीवके द्वारा जघन्य उपपादयोगसे अपर्याप्तिकी रचना के लिए ग्रहण किया गया नोर्कर्मप्रदेशाग्र
एक समयप्रबद्धमात्र होता है । उससे वैक्रियिकशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ।
गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । यह भी प्रथम समयमें
आहारक हुए तथा प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए ऐसे असंज्ञियोंमें से आकर देव और नारकियोंमें

पढसमयतठमत्थेण जहण्णउववावजोगेण गहिवणोकम्मपदेसगं । आहारसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गमसंखेज्जगुणं । को गुण० ? सेडीए असंखे० भागो । एवं पि एग-समयपबद्धमेत्तं आहारसरीरमुट्ठावेत्तसंजवेण पढसमयतप्पाओग्गजहण्णपरिणामजोगेण गहिवणोकम्मपदेसगं ।

तेजा-कम्मइयसरीरस्स जहण्णओ गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ॥४०९॥

एवेण सुत्तेण तेजा-कम्मइयसरीरस्स जहण्णदव्वाणं गुणगारो परूविदो । तं जहा-आहारसरीरस्स जहण्णपदेसग्गादो तेजासरीरस्स जहण्णपदेसग्गमणंतगुणं । को गुण० ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । एवं पि अण्णदरस्स सुत्तुमणिगोदजीवअपज्जत्तयस्स एयंताणुवड्ढीए वड्डमाणयस्स जहण्णजोगिस्स सामित्तवरिसमयए वट्टमाणस्स होदि । कम्मइयसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गमणंतगुणं । को गुण० ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । एवं पि खविदकम्मंसियलवत्तणेणागदअजोगिचरिसमए वट्टमाणअघादिच्चदुक्कवव्वं घेत्तव्वं ।

एवं जहण्णपदप्पाबहुअं समत्तं ।

उत्पन्न हुए जीवके द्वारा जघन्य उपादयोगसे ग्रहण किया गया नोकर्मप्रदेशाग्र एक समयप्रबद्ध प्रमाण होता है । उससे आहारकशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जघन्यश्रणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । यह भी आहारकशरीरको उत्पन्न करनेवाले संयतके द्वारा प्रथम समयमें तत्प्रायोग्य जघन्य परिणामयोगके द्वारा ग्रहण किया गया नोकर्मप्रदेशाग्र एक समयप्रबद्धप्रमाण होता है ।

तैजसशरीर और कार्मणशरीरका जघन्य गुणकार अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है ॥४०९॥

इस सूत्रके द्वारा तैजसशरीर और कार्मणशरीरके जघन्य द्रव्योंका गुणकार कहा गया है । यथा—आहारकशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रसे तैजसशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । यह प्रदेशाग्र भी एकान्तवृद्धिसे वृद्धिगत जघन्य योगवाले और स्वामित्वके अन्तिम समयमें विद्यमान अन्यतर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवके होता है । उससे कार्मणशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । यह भी अपितकर्माशिकलक्षणसे आये हुए अयोगी जीवके अन्तिम समयमें विद्यमान अघातिचतुष्कके द्रव्यरूप ग्रहण करना चाहिए ।

इस प्रकार जघन्य पदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

उक्कस्सपदेण ओरालियसरीरस्स उक्कस्सओ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥४१०॥

जहणउववादजोगेण बद्धएगोरालियसमयपबद्धादो उक्कस्सपरिणामजोगेण बद्धएगोरालियसमयपबद्धो तिण्णिपलिदोवमसंचिदविबद्धुगुणहाणिमेत्तउक्कस्सओरालियसमयपबद्धा वा असंखेज्जगुणा । एत्थ गुणगारो पलिदो० असंखे०भागो ।

एवं चदुणं सरीराणं ॥४११॥

जहा ओरालियसरीरजहणदव्वादो उक्कस्सदव्वं पलिदो० असंखे०भागगुणं तथा सेसचदुणं सरीराणं पि सगसगजहणसमयपबद्धादो सगसगउक्कस्ससमयपबद्धो गुणिदकम्मंसियलक्खणेण संचिदविबद्धुगुणहाणिमेत्तसमयपबद्धा वा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागगुणा । णवरि एगुक्कस्ससमयपबद्धं पडुच्च जोगगुणगारो गुणिदकम्मंसियलक्खणेण संचिदसध्वक्कस्सदव्वं पडुच्च जोगगुणगारेण गुणिदविबद्धुगुणहाणीओ गुणगारो होवि । णवरि कम्मइयसरीरस्स जहणदव्वमुक्कस्सदव्वं च विबद्धुगुणहाणिगुणिदसमयपबद्धमेत्तं होवि, अणाविबंधेण बंधत्तादो । एत्थ वि जहणदव्वादो उक्कस्सदव्वगुणगारो जोगगुणगारमेत्तो । एवमुक्कस्सपदेण सत्थाणप्पानहुअं समत्तं ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा औदारिकशरीरका उत्कृष्ट गुणकार पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है ॥४१०॥

जघन्य उपपादयोगसे बन्धको प्राप्त हुए औदारिकशरीरके एक समयप्रबद्धसे उत्कृष्ट परिणामयोगसे बन्धको प्राप्त हुआ औदारिकशरीरका एक समयप्रबद्ध अथवा तीन पत्य कालके भीतर संचित हुए डेढ़ गुणहानि प्रमाण औदारिकशरीरके उत्कृष्ट समयप्रबद्ध असंख्यातगुणे है । यहाँ पर गुणकार पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

इसी प्रकार चार शरीरोंकी अपेक्षासे जानना चाहिए ॥४११॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरके जघन्य द्रव्यसे उसका उत्कृष्ट द्रव्य पत्यके असंख्यातवें भागगुणा कहा है उसीप्रकार शेष चार शरीरोंके भी अपने अपने जघन्य समयप्रबद्धसे अपना अपना उत्कृष्ट समयप्रबद्ध अथवा गुणितकर्मांशिकलक्षणसे सञ्चित हुए डेढ़ गुणहानिप्रमाण समयप्रबद्ध पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणे हैं । इतनी विशेषता है कि एक उत्कृष्ट समयप्रबद्धकी अपेक्षा योगगुणकार ही गुणकार होता है और गुणितकर्मांशिकलक्षणसे सञ्चित हुए सर्वोत्कृष्ट द्रव्यकी अपेक्षा योगगुणकारसे गुणित डेढ़ गुणहानियाँ गुणकार होता है । इतनी और विशेषता है कि कार्मणशरीरका जघन्य द्रव्य और उत्कृष्ट द्रव्य डेढ़ गुणहानिगुणित समयप्रबद्धप्रमाण होता है, क्योंकि, उसका अनादिसम्बन्धरूपसे बन्ध उपलब्ध होता है । यहाँ भी जघन्य द्रव्यसे उत्कृष्ट द्रव्य लानेके लिए गुणकार योगगुणकारप्रमाण है ।

इस प्रकार उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

जहणुवकस्सपदेण ओरालिय-वेउविय-आहारसरीरस्स
जहणओ गुणगारो सेडोए असंखेज्जविभागो ॥४१२॥

उवकस्सओ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागो ॥४१३॥

तेजा-कम्मइयसरीरस्स जहणओ गुणगारो अभवसिद्धिएहि
अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ॥४१४॥

तस्सेव उवकस्सओ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जवि-
भागो ॥४१५॥

एवेहि चटुहि वि सुत्तेहि जहणुवकस्सपदप्पाबहुअस्स गुणगाराणं परूवणा
कदा । तं जहा-सव्वत्थोवमोरालियसरीरस्स जहणयं पदेसगं, सुहुमेइवियअपज्जत्त-
जहणउववादजोगेण आगवएगसमयपबद्धत्तादो । तस्सेव उवकस्सयं पदेसगमसंखेज्ज-
गुणं । को गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो । कुदो ? तिपलिदोवमाउमणुस्सचरिम-
समयउवकस्सदव्वगहणादो । वेउवियसरीरस्स जहणयं पदेसगमसंखेज्जगुणं । को
गुण० ? सेडोए असंखे०भागो । कुदो ? असण्णपच्छायदेण देवेण णेरइएण वा
जहणउववादजोगेण संचिदएगसमयपबद्धपमाणत्तादो । कथं जहणजोगिस्स दत्वं

जघन्य-उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारक-
शरीरका जघन्य गुणकार जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ॥४१२॥

तथा उत्कृष्ट गुणकार पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है ॥४१३॥

तैजसशरीर और कार्मणशरीरका जघन्य गुणकार अभव्योंसे अनन्तगुणा और
सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है ॥४१४॥

तथा उन्होका उत्कृष्ट गुणकार पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है ॥४१५॥

इन चारों ही सूत्रोंके द्वारा जघन्यपद और उत्कृष्टपदकी अपेक्षा अलबहुत्वके गुणका-
रोंकी प्ररूपणा की है । यथा-औदारिकशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है; क्योंकि, वह सूक्ष्म
एकेन्द्रिय अपर्याप्तिके जघन्य उपपाद योगके द्वारा ग्रहण किये गए एक समयप्रबद्धप्रमाण है ।
उससे उसीका उत्कृष्ट प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्यातवें
भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, तीन पत्यकी आयुवाले मनुष्योंके अन्तिम समययें जो उत्कृष्ट
द्रव्य होता है उसका यहाँ ग्रहण किया है । उससे वैक्रियिकशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र असंख्यात-
गुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण है, क्योंकि, वह असंज्ञी
जीवोंमेंसे आकर उत्पन्न हुए देव या नारकीके द्वारा जघन्य उपपादयोगसे संचित हुए एक समय-
प्रबद्धप्रमाण होता है ।

सेडीए असंखे०भागगुणं होज्ज ? ण, जादिविसेसेण वेउव्वियजहणसमयपबद्धस्स सेडीए असंखेज्जविभागगुणत्तं पडिं विरोहाभावादो । तस्सेव उक्कस्सदव्वमसंखे-ज्जगुणं । को गुण० ? पल्लिदोवमासंखे०भागो । कुदो ? गुणितकम्मंसियलक्खणेणा-गवआरणच्छुदक्कप्पवासियदेवस्स चरिमसमयसंचयगहणादो । आहारसरीरस्स जह-णयं पदेसग्गमसंखे०गुणं । को गुण० ? को गुण० ? सेडीए असंखे०भागो । कुदो ? उत्तर-सरीरमृद्वावेतपढमसमयसाहुस्स जहणजोगेणागदएगसमयपबद्धगहणादो । एत्थ वि जादिविसेसेणेव गुणगारो सेडीए असंखे०भागो होदि त्ति घेतव्वो । तस्सेव उक्कस्सयं पदेसग्गमसंखेज्जगुणं । को गुण० ? पल्लिदो० असंखे०भागो । कुदो ? उत्तरसरीरं विउव्विदूण मूलसरीरं पविसमाणचरिमसमयआहारसाहुस्स उक्कस्ससंचयगहणादो । तेजइयसरीरस्स जहणयं पदेसग्गमणंतगुणं । को गुण० ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । कुदो ? सुहुमेइवियअपज्जत्तजहणएगंताणुवड्डिजोगकालस्स चरिमसमयतेजइयदव्वगहणादो । पुव्विल्लाणं गुणगारो सेडीए असंखे०भागो । एवस्स गुणगारो कथमणंतो होज्ज ? साभावियादो । तस्सेव उक्कस्सदव्वमसंखेज्जगुणं । को

शंका-- जघन्य योगवालेका द्रव्य जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणा कैसे होता है?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, जातिविशेषके कारण वैक्रियिकशरीरके जघन्य समय-प्रबद्धके जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाणगुणे होने में कोई विरोध नहीं है ।

उससे उसीका उत्कृष्ट द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, गुणितकर्मांशिकलक्षणसे आए हुए आरण-अच्युत कल्पवासी देवके अन्तिम समयमें जो संचय होता है उसका यहाँ ग्रहण किया है । उससे आहारकशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, उत्तरशरीरको उत्पन्न करनेवाले साधुके जघन्य योगसे जो एक समयप्रबद्ध प्राप्त होता है उसका यहाँ पर ग्रहण किया है । यहाँ पर भी जातिविशेषके ही कारण गुणकार जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ऐसा ग्रहण करना चाहिए । उससे उसीका उत्कृष्ट प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, उत्तरशरीरकी विक्रिया करके मूल शरीरमें प्रवेश करनेवाले अन्तिम समयवर्ती आहारकशरीरी साधुके जो उत्कृष्ट संचय होता है उसका यहाँ ग्रहण किया है । उससे तैजसशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अभव्योसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवके जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग-कालके अन्तिम समयमें जो तैजसशरीरका द्रव्य होता है उसका यहाँ ग्रहण किया है ।

शंका-- पहलेके शरीरोंका गुणकार जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । ऐसी अवस्थामें इस शरीरका गुणकार अनन्त कैसे हो सकता है ?

समाधान-- ऐसा स्वभाव है ।

❖ अ० प्रश्नी ' जहणजोगिस्स दव्वं सेडीए असंखे०भागगुणत्तं पडिं ' इति पाठः ।

❖ ता० प्रती ' पदेसग्गमसंखे०गुणं (मणंतगुणं) को गुण० ' इति पाठः ।

गुण० ? पलिदो० असंखे० भागो । कुदो सत्तमाए पुढवीए चरिमसमयणेइयस्स गुणिवकम्मंसियस्स उक्कस्स तेजादव्वगहणादो । कम्मइयसरीरस्स जहण्णयं पदेस-
ग्गमणंतगुणं । को गुण० ? अमवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । कुदो ?
खविदकम्मंसियलक्खणेणागदचरिमसमयअजोगिदव्वगहणादो । तस्सेव उक्कस्सदव्व-
मसंखे० गुणं । को गुण० ? पलिदो० असंखे० भागो । कुदो गुणिवकम्मंसियलक्खणे-
णागदसत्तमपुढविचरिमसमयणेइयदव्वगहणादो ।

एव गुणगारो त्ति समत्तमणुओगद्वारं ।

पदमीमांसाए तत्थ इमाणि दुवे अनुयोगद्वाराणि--जहण्णपदे
उक्कस्सपदे ॥४१६॥

जत्थ पंचणं सरीराणं जहण्णदव्वपरिक्खा कीरदि सा जहण्णपदमीमांसा ।
जत्थ उक्कस्सदव्वपरिक्खा कीरदि सा उक्कस्सपदमीमांसा ।

उक्कस्सपदेण ओरालियसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसग्ग
कस्स ॥४१७॥

उससे उसीका उत्कृष्ट द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्यातवें
भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, सातवीं पृथिवीमें अन्तिम समयवर्ती तारकीके गुणितकर्मांशिक-
विधिसे जो तैजसशरीरका उत्कृष्ट द्रव्य होता है उसका यहाँ पर ग्रहण किया है । उससे
कामंजशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा
और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, क्षपितकर्मांशिकलक्षणसे आए हुए
अन्तिम समयवर्ती अयोगिकेवलीके जो द्रव्य होता है उसका यहाँ पर ग्रहण किया है । उससे
उसीका उत्कृष्ट द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण
गुणकार है, क्योंकि, गुणितकर्मांशिकलक्षणसे आये हुए सातवीं पृथिवीके अन्तिम समयवर्ती
तारकीका जो द्रव्य है उसका यहाँ पर ग्रहण किया है ।

इस प्रकार गुणकार अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

पदमीमांसाका प्रकरण है । उसमें ये दो अनुयोगद्वार होते हैं-जघन्यपद और
उत्कृष्टपद ॥४१६॥

जहाँ पाँचों शरीरोंके जघन्य द्रव्यकी परीक्षा की जाती है वह जघन्य पदमीमांसा है
और जहाँपर उत्कृष्ट द्रव्यकी परीक्षा की जाती है वह उत्कृष्ट पदमीमांसा है ।

उत्कृष्टपदकी अपेक्षा औदारिक शरीरके उत्कृष्ट प्रदेशाग्रका स्वामी
कौन है ॥४१७॥

किं देवस्स किं णेरइयस्स किं तिरिक्खस्स किं मणुस्सस्स किं पज्जत्तस्स किमपज्जत्तस्स किं सण्णस्स किमसण्णस्स किमेइंदियस्स इच्चादिपुच्छाओ एत्थ कायव्वाओ ।

अण्णदरस्स उत्तरकुरु-देवकुरुमणुअस्स तिपल्लिदोवम-
ट्ठिदियस्स ॥ ४१८ ॥

इत्थि-पुरिसवेदेवि सम्मत्त-मिच्छत्ताविगुणेहि य दव्वविसेसो णत्थि त्ति जाणावणट्ठ-
मण्णवरणिहेसो कदो । सेसगइपडिसेहट्ठं सेसमणुस्सपडिसेहट्ठं च उत्तरकुरु-देवकुरु-
मणुस्सगगहणं कदं । किमट्ठमण्णोसि पडिसेहो कदो ? अण्णत्थ बहुसादाभावादो । असा-
देण ओरालियसरीरपोगलस्स बहुअस्स अपचयदंसणादो । उत्तरकुरु-देवकुरुमणुआ
सव्वे तिपल्लिदोवमट्ठिदिया चेव तदो तिपल्लिदोवमट्ठिदियस्से त्ति विसेसणमज्जत्तं ? ण
एस दोसो, उत्तरकुरु-देवकुरुमणुआ तिपल्लिदोवमट्ठिदिया चेवे त्ति तत्थ सेसाउट्ठिदिवि-
यप्पपडिसेहफलत्तादो । ण च एदं सुत्तं मोत्तूण अण्णं सुत्तमत्थि जेण उत्तरकुरु-देवकुरु-
मणुआ तिपल्लिदोवमट्ठिदिया चेव होंति त्ति णव्वदि तदो सफलमेदं विसेसणं । समयहि-
दुपल्लिदोवमे आदिंकादूण जाव समऊणतिण्णपल्लिदोवमाणि त्ति ट्ठिदिवियप्पपडिसेहट्ठं

क्या देव है, क्या नारकी है, क्या त्रियञ्च है या क्या मनुष्य है; क्या पर्याप्त है या क्या अपर्याप्त है; क्या संजी है या क्या असंजी हैं; तथा क्या एकेन्द्रिय है आदि पृच्छायें यहाँ पर करनी चाहिए ।

जो तीन पत्न्यकी आयुवाला उत्तरकुरु और देवकुरुका अन्यतर मनुष्य है । ४१८।

स्त्रीवेद और पुरुषवेदके कारण तथा सम्यक्त्व और मिथ्यात्व आदि गुणोंके कारण द्रव्य विशेष नहीं होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए अन्यतरपदका निर्देश किया है । शेष गतियोंका निषेध करनेके लिए तथा शेष मनुष्योंका निषेध करनेके लिए उत्तरकुरु और देवकुरुके मनुष्योंके इस पदका ग्रहण किया है ।

शंका-- अन्यके उत्कृष्ट स्वामित्वका किसलिए निषेध किया है ?

समाधान-- क्योंकि, अन्यत्र बहुत साताका अभाव है, क्योंकि, असातासे औदारिक-शरीरके बहुत पुद्गलका अपचय देखा जाता है ।

शंका-- उत्तरकुरु और देवकुरुके सब मनुष्य तीन पत्न्यकी स्थितिवाले ही होते हैं इसलिए 'तीन पत्न्यकी स्थितिवाले के' यह विशेषण युक्त नहीं है ?

समाधान-- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उत्तरकुरु और देवकुरुके मनुष्य तीन पत्न्यकी स्थितिवाले ही होते हैं ऐसा कहनेका फल वहाँपर शेष आयुस्थितिके विकल्पोंका निषेध करना है । और इस सूत्रको छोड़कर अन्य सूत्र नहीं है जिससे यह ज्ञान हो कि उत्तरकुरु और देवकुरुके मनुष्य तीन पत्न्यकी स्थितिवाले ही होते हैं, अतः यह विशेषण सफल है । अथवा एक समय अधिक दो पत्न्यसे लेकर एक समय कम तीन पत्न्य तकके स्थितिविकल्पोंका निषेध करनेके लिए

वा तिपल्लिदोवमग्गहणं । ण च सब्बट्टसिद्धिदेवाउअं व णिव्वियप्पं तवाउअं, तप्प-
रुवयसुत्त-वक्खाणाणमणुवलंभादो । संपहि तस्स मणुयस्स लक्खणपरूवणट्टमुत्तर-
सुत्तं भणदि--

**तेणेव पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण उक्कस्सेण
जोगेण आहारिदो । ४१९ ।**

सरीरपाओग्गपोगलपिडग्गहणमाहारो । तत्थ पढमसमयआहारएण आहारिदो ।
विदियादिसमयआहारपडिसेहट्ठं पढमसमएण आहारो विसेसिदो । एसो पढमसमय-
आहारो पढमसमयतब्भवत्थो विदियसमयतब्भवत्थो तदियसमयतब्भवत्थो वि अत्थि,
तत्थ विदिय-तदियसमयतब्भवत्थाहाराणं पडिसेहट्ठं पढमसमयतब्भवत्थविसेसणेण
पढमसमयआहारो विसेसिदो । विग्गहग्गदीए उत्पण्णे को दोसो ? ण, दोसमयसंचय-
दव्वस्स* अभावप्पसंगादो । उक्कस्सजोगो जस्स पढमसमयआहारस्स सो उक्कस्सो
जोगो तेण उक्कस्सजोगेण आहारिदो । अणाहारवियप्पपडिसेहट्ठं एवकारणिद्देसो
कदो । एवमुप्पणपढमसमए आहारविसेसं परूविय संपहि विदियादिसमएसु आहार-

सूत्रमें तीन पत्यकी स्थितिवाले पदका ग्रहण किया है । सर्वार्थसिद्धिके देवोंकी आयु जिस प्रकार निर्विकल्प होती है उस प्रकार वहाँकी आयु निर्विकल्प नहीं होती, क्योंकि, इस प्रकारकी आयुकी प्ररूपणा करनेवाला सूत्र और व्याख्यान नहीं उपलब्ध होता ।

अब उस मनुष्यके लक्षणका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

**उत्तो मनुष्यने प्रथम समयमें आहारक और प्रथम समयमें तद्भवस्थ होकर
उत्कृष्ट योगसे आहारको ग्रहण किया ॥ ४१९ ॥**

शरीरके योग्य पुद्गलपिण्डका ग्रहण करना आहार है । वहाँ प्रथम समयमें आहारक होकर आहार ग्रहण किया । द्वितीय आदि समयोंमें आहारका प्रतिषेध करनेके लिए 'प्रथम समय' पदसे आहारको विशेषित किया है । यह प्रथम समयका आहार प्रथम समयमें तद्भवस्थ होकर, दूसरे समयमें तद्भवस्थ होकर और तीसरे समयमें तद्भवस्थ होकर भी होता है, अतः वहाँ द्वितीय और तृतीय समयमें तद्भवस्थ होकर जो आहार होता है उसका प्रतिषेध करनेके लिए 'प्रथम समयमें तद्भवस्थ' इस विशेषणसे प्रथम समयके आहारको विशेषित किया है ।

शंका-- विग्रहगतिसे उत्पन्न होनेमें क्या दोष है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, दो समयमें संचित हुए द्रव्यके अभावका प्रसंग आता है ।

प्रथम समयमें आहारक जिस जीवके जो उत्कृष्ट योग होता है वह उत्कृष्ट योग वहाँपर विवक्षित है । उस उत्कृष्ट योगसे आहार ग्रहण किया । अनाहार विकल्पका निषेध करनेके लिए 'एवकार' पदका निर्देश किया है । इस प्रकार उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें आहार विशेषका कथन

* अ० प्रती 'विसेसणं' का० प्रती 'विसेसण' इति पाठः ।

* म० प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिपु 'दोससंचयदव्वस्स' इति पाठः ।

गहणवकमपरुवणट्टमुत्तरसुत्तं भणदि--

उक्कस्सियाए वड्ढीए वड्ढिदो ॥ ४२० ॥

पढमसमयजोगादो बिबियसमयजोगो असंखेज्जगुणो । बिबियादो तवियसमयजोगो असंखेज्जगुणो । एवं जेयव्वं जाव एगंताणुवड्ढिचरिमसमओ त्ति । एत्थ गणगारपमाणं पलिबोवमस्स असंखेज्जविभागो । एत्थ गणगारो जहण्णओ वि उक्कस्सओ वि अत्थि । णवरि जहण्णादो उक्कस्सो असंखेज्जगुणो । तत्थ जहण्णवड्ढिपडिसेहट्टमुक्कस्सियाए वड्ढीए वड्ढिदो त्ति भणिदं । एदेण एयंताणुवड्ढीए आहारणवकमो परुविदो । किमट्ठं उक्कस्सजोगेणेव आहाराविज्जदि ? बहुपोगलगहणट्ठं ।

अंतोमुहुत्तेण सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ॥ ४२१ ॥

छपज्जत्तिसमाणकालो जहण्णओ उक्कस्सओ वि अंतोमुहुत्तमेत्तो । तत्थ सव्वजहण्णेण अंतोमुहुत्तेण कालेण सव्वाहि य पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो त्ति वृत्तं होदि । किमट्ठं अपज्जत्तकालो लहुओ घेप्पवि ? पज्जत्तकालपरिणामजोगेहितो अपज्जत्त-कालएगंताणुवड्ढिजोगेहि असंखेज्जगुणहीणेहि बहुपोगलगहणाभावादो ।

करके अब द्वितीय आदि समयोंमें आहारग्रहणके क्रमका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं---

उत्कृष्ट वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त हुआ । ४२० ॥

प्रथम समयके योगसे द्वितीय समयका योग असंख्यातगुणा है । दूसरे समयके योगसे तीसरे समयका योग असंख्यातगुणा है । इस प्रकार एकान्तानुवृद्धियोगके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिए । यहाँपर गुणकारका प्रमाण पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । यहाँ पर गुणकार जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है । इतनी विशेषता है कि जघन्यसे उत्कृष्ट असंख्यातगुणा है । उनमेंसे जघन्य वृद्धिका प्रतिषेध करनेके लिए उत्कृष्ट वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त हुआ यह कहा है । इसद्वारा एकान्तानुवृद्धिसे आहारग्रहणका क्रम कहा गया है ।

शंका-- उत्कृष्ट योगसे ही आहारग्रहण क्यों कराया गया है ?

समाधान-- बहुत पुद्गलोंके ग्रहण करनेके लिए ।

अन्तर्मुहूर्त अर्थात् सबसे लघु काल द्वारा सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ । ४२१ ।

छह पर्याप्तियोंके पूरा होनेका काल जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है । उनमेंसे सबसे जघन्य अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका-- लघु अपर्याप्त काल किसलिए ग्रहण किया जाता है ?

समाधान-- क्योंकि, पर्याप्तकालीन परिणामयोगोंसे अपर्याप्तकालीन एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणे हीन होते हैं अतः उनके द्वारा बहुत पुद्गलोंका ग्रहण नहीं होता, इसलिए अपर्याप्त काल लघु ग्रहण किया है ।

तस्स अप्पाओ भासद्धाओ ॥ ४२२ ॥

सव्वाओ पज्जत्तीओ समाणिय भासंतस्स जस्स अप्पाओ भासद्धाओ सो उक्कस्सदव्वसामी होदि । भासाकालस्स ♣ थोवत्तं किमट्ठमिच्छिज्जदे? ण, भासा-
वावारेण जणिदपरिस्समेण भासापोगलणमभिघादेण य बहुआणं ओरालियपोगलाणं
परिसदणप्पसंगादो ।

अप्पाओ मणजोगद्धाओ ॥ ४२३ ॥

चिदाजणिदपरिस्समेण परिगलंतपोगलक्खंधपडिसेहट्ठं अप्पाओ मणजोग-
द्धाओ त्ति भणिदं ।

अप्पा छविच्छेदा ॥ ४२४ ॥

छवी सरीरं । तस्स णहादीणं✠ किरियाविसेसेहि खंडणं छेदो णाम । ते छेदा
तत्थ अप्पा थोवा, बहुआणं किरियाणमंतरे तव्विरोहाभावादो । जेहि सरीरपीडा
होदि ते तत्थ अप्पाणि त्ति भावत्थो ।

अंतरे ण कदाइ विउव्विदो ॥ ४२५ ॥

उसके बोलनेके काल अल्प हैं ॥ ४२२ ॥

सब पर्याप्तियोंको समाप्त करके बोलते हुए जिसके भाषाकाल अल्प हैं वह उत्कृष्ट
द्रव्यका स्वामी है ।

शंका-भाषाकालका स्तोकपना किसलिए चाहते हैं ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, भाषाके व्यापारसे जो परिश्रम होता है उससे तथा भाषा-
रूप पुद्गलोंका अभिघात होनेसे बहुत ओदारिकशरीरके पुद्गलोंकी निर्जरा होनेका प्रसंग
आता है, इसलिए भाषाकालका स्तोकपना चाहते हैं ।

मनोयोगके काल अल्प हैं ॥ ४२३ ॥

चिन्ताके कारण जो परिश्रम होता है उससे गलनेवाले पुद्गलस्कन्धोंका निषेध
करनेके लिए ' मनोयोगके काल अल्प है ' यह कहा है ।

छविच्छेद अल्प हैं ॥ ४२४ ॥

छवि शरीरको कहते हैं । उसके नख आदिका क्रियाविशेषके द्वारा खण्डन करना छेद
है । वे छेद वहां अल्प अर्थात् स्तोक हैं, क्योंकि, बहुत क्रियाओंके बिना उसके होनेमें कोई
विरोध नहीं आता । जिनसे शरीरपीडा होती है वे वहां अल्प हैं यह इसका भावार्थ है ।

आयुकालके मध्य कदाचित् विक्रिया नहीं की ॥ ४२५ ॥

एत्थंतरे तिपलिदोवमाउअमणुपालेमाणो ण कदा विउव्विदो । कुदो? तत्थ परिचत्तोराणलियसरीरस्स विउव्वणप्पयमोराणलियसरीरं गेणंतस्स केवलं तप्परिसदण-
प्पसंगादो । ण चेदं विउव्वणसरीरं ओराणलियं, विप्पडिसेहादो ।

**थोवावसेसे जीविदव्वए त्ति जोगजवमज्झस्स उवरिमंतोमुहुत्त-
द्धमच्छिदो* ॥ ४२६ ॥**

जवमज्झं णाम अट्ठसमयपाओगजोगट्ठाणाणि । तेहितो उवरिमजोगट्ठाणेषु हेट्ठिमजोगट्ठाणेहितो असंखेज्जगुणेषु अंतोमुहुत्तद्धमच्छिदो* । किमट्ठं ? बहुपोगल-
गहणट्ठं । तत्थ बहुअं कालं किण्ण अच्छिदि ? ण, अंतोमुहुत्तादो उवरि तत्थ अच्छणस्स संभवाभावादो । एवं कालदेसामासियसुत्तत्थपरूवणट्ठं* । एवमुवजोग-
जवमज्झस्स उवरिमंतोमुहुत्तद्धमच्छिदि त्ति ण घेतव्वं किंतु तिण्णं पलिदोवमाणम—
व्भंतरे जवा जदा संभवदि तदा तदा जवमज्झस्स उवरि जोगट्ठाणेषु चेव परिणमिदि
त्ति घेतव्वं ।

‘ एत्थंतरे ’ अर्थात् तीन पत्यप्रमाण आयुका पालन करते हुए कदाचित् विक्रिया नहीं की, क्योंकि, औदारिकशरीरका त्याग कर विक्रियारूप औदारिकशरीरको ग्रहण करनेवालेके केवल उसकी निर्जरा होनेका प्रसंग आता है । यह विक्रियारूप शरीर भी औदारिक है ऐसा कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, विक्रियारूप शरीरके औदारिक होनेका निषेध है ।

जीवितव्य कालके स्तोक शेष रहनेपर योगयवमध्यके ऊपर अन्तर्मुहूर्त काल तक रहा ॥ ४२६ ॥

आठ समयप्रायोग्य योगस्थानोंको यवमध्य कहते हैं । उससे अधस्तन योगस्थानोंमें असंख्यातगुणे उपरिम योगस्थानोंमें अन्तर्मुहूर्त काल तक रहा ।

शंका— वहां अन्तर्मुहूर्त काल तक किसलिए रहा ?

समाधान— बहुत पुद्गलोंका संग्रह करनेके लिए ।

शंका— वहां बहुत काल तक क्यों नहीं रहना है?

समाधान— नहीं, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्त कालमें अधिक कालतक वहां रहना सम्भव नहीं है ।

काल देशामर्षक सूत्रके अर्थका कथन करनेके लिए यह वचन है । इससे उपयोगयव-
मध्यके ऊपर अन्तर्मुहूर्त कालतक रहता है यह ग्रहण नहीं करना चाहिए । किन्तु तीन पत्यप्रमाण
कालके भीतर जब जब सम्भव है तब तब यवमध्यके ऊपरके योगस्थानोंमें ही परिणमन करता
है ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए ।

* ता० प्रती ‘जीविदव्वमेत्तमंतरमत्थि तत्थ (जीविदव्वए त्ति जोगजवमज्झस्स) उवरिमंतोमुहुत्तत्थ
(द्ध) मज्झिदो’ अ० का० प्रत्योः ‘जीविदव्वमेत्तमंतरमत्थि तत्थ उवरिमंतोमुहुत्तत्थमच्छि दो’ इति पाठः ।
* अ० प्रती ‘अंतोमुहुत्तत्थमच्छिदो’ इति पाठः । * ता० प्रती ‘—पुत्तत्थ (तपद्ध) परूवणट्ठं’ इति पाठः ।

**चरिमे जीवगुणहानिट्ठाणंतरे आवलियाए असंखेज्जदिभाग—
मच्छिदो ॥ ४२७ ॥**

जाव चरिमजीवगुणहाणी तत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभागमस्सिदूण ताव चरिमजोगेहि तो तत्थतणजोगाणमसंखेज्जगुणत्तादो । कालजवमज्झादो उवरि अच्छ-माणेसु जदि चरिमे जीवगुणहानिट्ठाणंतरे अच्छंताणं बहुदब्बलाहो होदि तो आवलि० असंखे०भागं मोत्तूण तत्थ बहुकालं किण्ण अच्छाविदो? ण, तत्थ बहुकालमच्छण-संभवाभावादो । एवं दि कालदेसामासियसुत्तं तेण कालमेत्तं मोत्तूण जवमज्झस्स उवरिमच्छमाणो जाव संभवदि ताव चरिमे जीवगुणहानिट्ठाणंतरे चेव अच्छदि त्ति भणिदं होदि ।

चरिम-दुचरिमसमए उक्कस्सजोगं गदो ॥ ४२८ ॥

किमट्ठमेत्थ उक्कस्सजोगं णीदो? जोगवड्ढीदो पदेसबंधवड्ढी बहुगी होदि त्ति जाणावणट्ठं । दो समए मोत्तूण सव्वत्थ भवट्ठिदिस्मि उक्कस्सजोगं किण्ण णीदो?

अन्तिम जीवगुणहानिस्थानान्तरमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक रहा ॥ ४२७ ॥

क्योंकि, जो अन्तिम जीवगुणहानि है वहां आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालका आश्रय लेकर अन्तिम योगसे वहांके योग असंख्यातगुणे होते हैं ।

शंका - कालयवमध्यके ऊपर रहनेवाले जीवोंमेंसे यदि अन्तिम जीवगुणहानिस्थानान्तरमें रहनेवाले जीवोंको बहुत द्रव्यका लाभ होता है तो आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालको छोड़कर वहां बहुत काल तक क्यों नहीं ठहराया ?

समाधान - नहीं, क्योंकि, वहां बहुत काल तक रहना सम्भव नहीं है इसलिए वहां आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालसे अधिक काल तक नहीं ठहराया ।

यह भी कालदेषामर्षक सूत्र है, इसलिए मात्र कालकी विवक्षा न करके यवमध्यके ऊपर रहता हुआ जब तक सम्भव है तब तक अन्तिम जीवगुणहानिस्थानान्तरमें ही रहता है यह उक्त सूत्रके कथनका तात्पर्य है ।

चरम और द्विचरम समयमें उत्कृष्ट योगको प्राप्त हुआ ॥ ४२८ ॥

शंका - यहां उत्कृष्ट योगको किसलिए प्राप्त कराया है ?

समाधान - योगवृद्धिसे प्रदेशबन्धकी वृद्धि बहुत होती है इस बातका ज्ञान करानेके लिए यहां उत्कृष्ट योगको प्राप्त कराया है ।

शंका - दो समयको छोड़कर सर्वत्र भवस्थितिके भीतर उत्कृष्ट योगको क्यों नहीं प्राप्त कराया ?

ण, उक्कस्सजोगेण ॐ विसमय-तिसमय-चतुसमयं मोत्तूण सव्वस्थ भवट्ठिदम्मि बहु-
कालपरिणमणसत्तीए अभावादो । एवं भवदेसामासियमुत्तं । तेण एत्थ भवस्मि जाव
संभवो अत्थि ताव उक्कस्सजोगं चेव गदो त्ति गेहियव्वं । एत्थ संकिलेसावासो
किण्ण परुविदो? कालगदसमाणउज्जुगदीए पइज्जमाणाए कसायवड्ढि-हाणीहि कज्जा-
भावादो संकिलेसे संते ओलंबणकरणकरणेण बहुणोकम्मपोग्गलाणं गलणप्पसंगादो ॥

तस्स चरिमसमयतब्भवत्थस्स तस्स ओरालियसरीरस्स उक्कस्सयं
पदेसगं ॥ ४२९ ॥

तिरिक्खो मणुस्सो वा दाणेण दाणाणुमोदेण वा तिपलिदोवमाउट्ठिदिएसु
उत्तरकुरुदेवकुरुमणुस्सेसु आउअं बंधिदूण एवमेदेण कमेण कालगदसमाणो ॐ उज्जुग-
दीए देवकुरु-उत्तरकुरुवेसु उववज्जिय पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण
उक्कस्सुववादजोगेण आहारिदूण तमाहारिदणोकम्मपदेसं तिण्णं पलिदोवमाणं पढमस-
मयमादि कादूण जाव चरिमसमओ त्ति ताव गोवुच्छागारेण णिसिचिय तदो बिदिय-
समयप्पहुडि उक्कस्सेगंताणुवड्ढिजोगेण वड्ढिमाणो अंतोमहुत्तकालमसंखेज्जगुणाए सेडोए
णोकम्मपदेसमाहारिदूण तिण्णं पलिदोवमाणं णिसिचमाणो सव्वलहुं पज्जत्तीओ

समाधान-नहीं, क्योंकि, उत्कृष्ट योगके साथ दो समय, तीन समय और चार समयको
छोडकर सर्वत्र भवस्थितिके भीतर बहुत काल तक परिणमत करनेको शक्तिका अभाव है ।

यह भवदेशामर्षक सूत्र है, इसलिए इस भवमें जब तक सम्भव है तब तक उत्कृष्ट
योगको ही प्राप्त हुआ ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए ।

शंका-यहां पर संक्लेशावासका कथन क्यों नहीं किया है ?

समाधान-क्योंकि, मर कर ऋजुगतिके प्राप्त होने पर कषायकी वृद्धि और हानिसे
कोई प्रयोजन नहीं है और संक्लेशके सद्भावमें अवलम्बनाकरणके करनेसे बहुत नोकर्मपुद्गलोंके
गलनेका प्रसंग प्राप्त होता है, इसलिए यहां संक्लेशावासका ग्रहण नहीं किया है ।

अन्तिम समयमें तद्भवस्थ हुए उस जीवके औदारिकशरीरका उत्कृष्ट प्रदेशाग्र
होता है ॥ ४२९ ॥

किसी तिर्यञ्च और मनुष्यने दान या दानके अनुमोदनसे तीन पत्यकी स्थितिवाले देवकुरु
और उत्तरकुरुके मनुष्योंकी आयुका बन्ध किया । इस प्रकार इस क्रमसे मर कर ऋजुगतिसे
देवकुरु और उत्तरकुरु में उत्पन्न हुआ । पुनः प्रथम समयमें आहारक और प्रथम समयमें तद्भवस्थ
होकर उत्कृष्ट उपपाद योगसे आहार ग्रहण कर उन ग्रहण किये गये नोकर्मप्रदेशोंको तीन पत्यके
प्रथम समयसे लेकर अन्तिम समय तक गोपुच्छाकारसे निक्षिप्त किया । फिर द्वितीय समयसे
लेकर उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धि योगसे वृद्धिको प्राप्त होता हुआ अन्तर्मुहूर्त काल तक असख्यात-
गुणित श्रेणिरूपसे नोकर्मप्रदेशोंको ग्रहण कर तीन पत्यप्रमाण कालमें निक्षिप्त किया । पुनः

⊗ ता० का० प्रत्योः 'णीदो' उक्कस्सजोगेण इति पाठः । ✱ म० प्रतिपाठोऽयम् । ता० प्रती
बंधिदूण एदेण कालगदसमाणो अ० का० प्रत्यो बंधिदूण एवमेदेण कालगदसमाणो इति पाठाः ।

समाणिय परिणामजोगम्मि णिवदिय सुत्तवुत्तविहाणेण आगंतूण चरिमसमयट्ठिदो उक्कस्सदब्बसामी होदि त्ति भावत्थो । त्तिदिओ तस्से त्ति णिहेसो ण णिप्फलो, तस्स चरिमसमयतब्भवत्थस्स जीवस्स जमोरालियसरोरं तस्सुक्कस्सयं पदेसग्गमिदि संबंधे कीरमाणे सहलत्तुवलंभादो ।

एत्थ संचयानुगमो भागहारपमाणानुगमो समयप्रबद्धप्रमाणानुगमो चेदि एदेहि तीहि अनुयोगद्वारेहि उवसंहारो उच्चदे- तत्थ संचयानुगमस्स परूवणा पमाणमप्पा- बह्वुअं चेदि तिण्णि अनुयोगद्वाराणि । परूवणदाए तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमय- संचिददब्बं सामित्तचरिमसमए अत्थि । विदियसमयसंचिददब्बं पि अत्थि । एवं णेयव्वं जाव तिण्णं पलिदोवमाणं चरिमसमयसंचिददब्बं ति । परूवणा गदा । तिण्णं पलिदो- वमाणं पढमसमयसंचिददब्बं केत्तियमत्थि त्ति भणिदे एगसमयप्रबद्धस्स चरिमगोपुच्छ- मेत्तमत्थि । जं विदियसमयसंचिददब्बं तं सामित्तसमए चरिम-दुचरिमगोवुच्छमेत्त- मत्थि । जं तदियसमए संचिददब्बं तं सामित्तसमए चरिम-दुचिरम-तिचरिमगोवुच्छ- मेत्तमत्थि । एवं गंतूण कम्मट्ठिदिचरिमसमयसंचिददब्बमेगसमयप्रबद्धमेत्तमत्थि । पमाणं गदं । अप्पाबह्वुअं पदेसविरहिय अप्पाबहुए परूविदं ति णेह वुच्चदे ।

भागहारपमाणानुगमे भणमाणे पढमसमए संचिदस्स भागहारो वुच्चदे- एगसमय- प्रबद्धमसंखेज्जेहि लोणेहि खंडिदूण तत्थ एगखंडमेत्तं पढमसमयसंचिददब्बं होदि ।

अतिशीघ्र पर्याप्तियोंको समाप्त करके और परिणामयोगको प्राप्त होकर सूत्रमें कही गई विधिसे आकर जो अन्तिम समयमें स्थित होता है वह उत्कृष्ट द्रव्यका स्वामी होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । सूत्रमें द्वितीय ' तस्स ' पदका निर्देश निष्फल नहीं है, क्योंकि, उस चरम समयवर्ती तद्भवस्थ जीवके जो औदारिकशरीर होता है उसके उत्कृष्ट प्रदेशाग्र होता है ऐसा सम्बन्ध करने पर उसकी सफलता उपलब्ध होती है ।

यहाँ पर संचयानुगम, भागहारप्रमाणानुगम और समयप्रबद्धप्रमाणानुगम इन तीन अनु- योगद्वारोंका आश्रय लेकर उपसंहारका कथन करते हैं । उनमेंसे संचयानुगमके प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व ये तीन अनुयोगद्वार हैं । प्ररूपणाका कथन करने पर तीन पत्यप्रमाण कालके प्रथम समयमें संचित हुआ द्रव्य स्वामित्वके अन्तिम समयमें है । द्वितीय समयमें संचित हुआ द्रव्य भी है । इस प्रकार तीन पत्यके अन्तिम समयमें संचित हुए द्रव्यके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए । प्ररूपणा समाप्त हुई । तीन पत्यके प्रथम समयमें संचित द्रव्य कितना है ऐसा पूछने पर एक समयप्रबद्धके अन्तिम गोपुच्छप्रमाण है । जो दूसरे समयमें संचित द्रव्य है वह स्वामित्व समयमें चरम और द्विचरम गोपुच्छप्रमाण है । जो तिसरे समयमें संचित द्रव्य है वह स्वामित्व समयमें चरम, द्विचरम और त्रिचरम गोपुच्छप्रमाण है । इस प्रकार जाकर कर्मस्थितिके अन्तिम समयमें संचित हुआ द्रव्य एक समयप्रबद्धप्रमाण है । प्रमाण समाप्त हुआ । अल्पबहुत्वका कथन प्रदेशविरहित अल्पबहुत्वके समय कर आये हैं, इसलिए यहाँ नहीं करते ।

भागहारप्रमाणानुगमका कथन करने पर प्रथम समयमें संचित हुए द्रव्यका भागहार कहते हैं— एक समयप्रबद्धमें असंख्यात लोकका भाग देकर वहाँ जो एक भागप्रमाण द्रव्य

असंखेज्जलोगाणमद्वेण किंचूणेण एगसमयपबद्धे खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तं बिदियसम-
यसंचिददव्वं होदि । पढमभागहारस्स तिभागेण किंचूणेण एगसमयपबद्धे खंडिदे
तदियसमयसंचिददव्वं होदि । एवं गंतूण कम्मट्ठिचरिमसमए जं बद्धं कम्मं तस्स
एगरूवं भागहारो होदि । तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमए संचिददव्वं चरिमणिसेगमेत्तं
होदु णाम बिदियसमयसंचिददव्वं पुण चरिम-दुचरिमणिसेयमेत्तं ण होदि, तिण्णं पलिदो-
वमाणमुवरि णिसेयरचनाभावादो । एवमुवरिमसमयपबद्धसंचिददव्वेसु वि एगावि-
एगुत्तरकमेण णिसेगा ण संचिजंति ति पळ्ळेदव्वं? एत्थ परिहारो वुच्चदे । तं जहा-
तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमए बद्धं णोकम्मं तं तेसि चेव तिण्णं पलिदोवमाणं
पढमसममादि कादूण जाव चरिमसमओ ति ताव गोवुच्छागारेण णिसिचदि । जं
बिदियसमए बद्धं णोकम्मपदेसगं तं बिदियसमयप्पहुडिगोवुच्छागारेण णिसिचमाणो
ताव गच्छदि जाव तिण्णं पलिदोवमाणं दुचरिमसमओ ति । पुणो कम्मट्ठिदिचरिम-
समए अप्पिदसमयपबद्धस्स चरिम-दुचरिमगोवुच्छं च णिसिचदि, उवरि आउट्ठिदीए
अभावादो । तदियसमए जं बद्धं णोकम्मपदेसगं तं तदियसमयप्पहुडि णिसिचमाणो
ताव गच्छदि जाव दुचरिमसमओ ति । तदो चरिमसमए अप्पिदसमयपबद्धस्स चरिम-
दुचरिम-तिचरिमगोवुच्छाओ णिसिचदि । पुणो एवं गंतूण तिण्णं पलिदोवमाणं जं

प्राप्त हो वह प्रथम समयमें संचित द्रव्य है । असंख्यात लोकके कुछ कम अर्धभागका एक समय-
प्रबद्धमें भाग देने पर वहां जो एक भागप्रमाण द्रव्य प्राप्त हो वह द्वितीय समयमें संचित द्रव्य
है । प्रथम भागहारके कुछ कम तृतीय भागका एक समयप्रबद्धमें भाग देने पर तीसरे समयमें
संचित द्रव्य होता है । इस प्रकार जाकर कर्मस्थितिके अन्तिम समयमें जो वह बद्ध कर्म है
उसका एक अंक भागहार होता है ।

शंका- तीन पत्थोंके प्रथम समयमें संचित हुआ द्रव्य अन्तिम निषेकप्रमाण होओ,
किन्तु द्वितीय समयमें संचित द्रव्य चरम और द्विचरम निषेकप्रमाण नहीं होता, क्योंकि, तीन
पत्थोंके ऊपर निषेकरचनाका अभाव है । इसी प्रकार उपरिम समयप्रबद्धोंमें संचित हुए द्रव्योंमें
भी एकादि एक अधिक क्रमसे निषेकोंका संचय नहीं बन सकता ऐसा यहां कथन करना चाहिए?

समाधान - यहां इस शंकाका समाधान करते हैं । यथा- तीन पत्थोंके प्रथम समयमें जो
बद्ध नोकर्म है उसे उन्हीं तीन पत्थोंके प्रथम समयसे लेकर अन्तिम समय तक गोपुच्छाकार
रूपसे निक्षिप्त करता है । जो दूसरे समयमें बद्ध नोकर्मप्रदेशाग्र है उसे दूसरे समयसे लेकर
गोपुच्छाकर रूपसे निक्षिप्त करता हुआ जब तक जाता है जब तक तीन पत्थोंका द्विचरम समय
है । पुनः नोकर्मस्थितिके अन्तिम समयमें विवक्षित समयप्रबद्धके चरम द्विचरम गोपुच्छको
निक्षिप्त करता है, क्योंकि, ऊपर आयुस्थितिका अभाव है । तीसरे समयमें बद्ध जो नोकर्मप्रदेशाग्र
है उसे तीसरे समयसे लेकर निक्षिप्त करता हुआ तब तक जाता है जब तक द्विचरम समय
प्राप्त होता है । अनन्तर अन्तिम समयमें विवक्षित समयप्रबद्धके चरम, द्विचरम और त्रिचरम
गोपुच्छोंको निक्षिप्त करता है । पुनः इस प्रकार जाकर तीन पत्थोंके द्विचरम समयमें जो बद्ध

बद्धं णोकम्मं पदेसगं तस्स पढमगोवुच्छं दुच्चरिमसमए णिसिचिदूण पुणो सेससव्वं दव्वं चरिमसमए णिसिचिद । पुणो तिण्णं पलिदोवमाणं चरिमसमए जं बद्धं कम्मं तं सव्वं पुंजं कादूण चरिमसमए चेव णिसिचिद । तेण कारणेण पुव्वुत्तभागहारपरूवणा जुज्जदे ।

अण्णे के वि आइरिया एवं भणंति । जहा-गलिदसेसम्मि आउअम्मि सव्वे समयपबद्धा समयाविरोहेण णिसिचिज्जंति स्ति । तं जहा-तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमए जं बद्धं कम्मं तं तम्मि चेव पढमसमए बहुगं णिसिचिद । ततो उवरि विसेसहीणं णिसिचिद जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमओ ति । पुणो जं चरिमसमए णिसित्तं पदेसगं तस्स भाग-हारो असंखेज्जा लोगा होंति । जं तिण्णं पलिदोवमाणं बिदिए समए पबद्धं णोकम्म-पदेसगं तं बिदियसमए बहुगं णिसिचिद । ततो उवरि विसेसहीणं णिसिचिद जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमओ ति । संपहि जं चरिमसमए णिसित्तपदेसगं तस्स भागहारो पुव्वुत्तभागहारादो विसेसहीणो होदि, चरिमणिसेगस्स असंखे० भागेणब्भहियदुच्चरि-मणिसेगस्स चरिमसमए उवलंभादो । तदियसमए जं संचिददव्वं तस्स वि भागहारो पुव्वुत्तभागहारादो विसेसहीणो होदि, चरिम-दुच्चरिमगोवुच्छाणमसंखे० भागेण-ब्भहियतिचरिमगोवुच्छमेत्तसंचयदंसणादो । एवं गंतूण तिण्णं पलिदोवमाणं दुच्चरि-मसमए जं बद्धं णोकम्मपदेसगं तस्स अद्धं सादिरेयं दुच्चरिमसमए णिसिचिदूण पुणो चरिमसमए अद्धं किचूणं णिसिचिद । पुणो जं चरिमसमए नोकर्मप्रदेशाग्र है उसके प्रथम गोपुच्छको द्विचरम समयमें निक्षिप्त करके पुनः शेष द्रव्यको अन्तिम समयमें निक्षिप्त करता है । पुनः तीन पत्थोंके अन्तिम समयमें जो बद्ध नोकर्म है उसका पूरा पुंज बनाकर उसे अन्तिम समयमें ही निक्षिप्त करता है । इसलिए पूर्वोक्त भागहारका कथन बन जाता है ।

अन्य कितने ही आचार्य इस प्रकार कथन करते हैं । यथा-गल कर जो आयु शेष रही है उसके भीतर सब समयप्रबद्धोंको शास्त्र परिपाटीके अनुसार निक्षिप्त करते हैं । यथा-तीन पत्थोंके प्रथम समयमें जो बद्ध कर्म है उसके बहुभागको उसी प्रथम समयमें निक्षिप्त करता है । उससे आगेके समयोंमें नोकर्मस्थितिके अन्तिम समय तक विशेष हीन क्रमसे निक्षिप्त करता है । पुनः जो प्रदेशाग्र अन्तिम समयमें निक्षिप्त हुआ है उसका भागहार असंख्यात लोकप्रमाण है । जो तीन पत्थोंके दूसरे समयमें नोकर्मप्रदेशाग्र बंधा है उसमेंसे दूसरे समयमें बहुभाग निक्षिप्त करता है । उससे आगे नोकर्मस्थितिके अन्तिम समय तक विशेष हीन क्रमसे निक्षिप्त करता है । अब जो अन्तिम समयमें निक्षिप्त प्रदेशाग्र है उसका भागहार पूर्वोक्त भागहारसे विशेष हीन होता है, क्योंकि, अन्तिम निषेकके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक द्विचरम निषेक अन्तिम समयमें पाया जाता है । तृतीय समयमें जो संचित द्रव्य है उसका भी भागहार पूर्वोक्त भागहारसे विशेष हीन होता है, क्योंकि, चरम और द्विचरम गोपुच्छोंके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक त्रिचरम गोपुच्छमात्राका संचय वहां देखा जाता है । इस प्रकार जाकर तीन पत्थोंके द्विचरम समयमें जो बद्ध नोकर्म प्रदेशाग्र है उसके साधिक अर्धभागको द्विचरम समयमें निक्षिप्त करके पुनः अन्तिम समयमें कुछ कम

णिसित्तपदेसगं तस्स साविरेयदोरूवाणि भागहारो होदि । जं चरिमसमए पबद्धं णोकम्मपदेसगं तस्स एगरूवं भागहारो होदि । एवं दोहि पयारेहि भागहार-
परूवणा कदा ।

संपहि पढमिल्लणिसेगोवदेसमस्सिदूण समयपबद्धपमाणानुगमो वुच्चदे । तं जहा- चरिमसमए संचिदपदेसगमेगसमयपबद्धमेत्तं होदि, तत्थ वयाभावादो । दुचरियत्तमए संचिदपदेसगं किच्चूणेगसमयपबद्धमेत्तं होदि, पढमणिसेगाभावादो । तिचरिमसमयसंचिदपदेसगं किच्चूणेगसमयपबद्धमेत्तं होदि, पढम-बिदियणिसेगा-
भावादो । एवं गंतूण पढमसमयसंचिददब्बमेगसमयपबद्धस्स असंखेज्जदिभागो होदि, चरियणिसेयपमाणत्तादो । जेणेवं तेण सव्वमेदं दब्बं दिवडूणुणहाणिमेत्तसमयपबद्ध-
पमाणं होदि । अंतोमूहुत्तमेत्तसमयपबद्धा होति ति भावत्थो ।

संपहि णिसेगस्स बिदियमुवदेसमस्सिदूण समयपबद्धपमाणानुगमं कस्सामो । तं जहा- तिणं पलिदोवमाणं चरिमसमए संचिदपदेसगं तमेगसमयपबद्धमेत्तं होदि, वयाभावादो । जं दुचरिमसमयसंचिददब्बं तं तमेगसमयपबद्धस्स किच्चूणमद्धं होदि, गलिदसादिरेयद्धत्तादो । जं तिचरिमसमयसंचिददब्बं तं समयपबद्धस्स किच्चूणतिभाग-
मेत्तं होदि, गलिदसादिरेयवेत्तिभागत्तादो । एवं पलिदोवमेण जाणिदूण जेयव्वं

अर्धभागको निक्षिप्त करता है । पुनः अन्तिम समयमें जो निक्षिप्त प्रदेशाग्र है उसका साधिक दो अंक भाग होता है । तथा अन्तिम समयमें जो बद्ध नोकर्म प्रदेशाग्र है उसका एक अंक भागहार होता है । इस तरह दो प्रकारसे भागहार प्ररूपणा की ।

अब पहलेके निषेकोपदेशका अवलम्बन लेकर समयप्रबद्धोंके प्रमाणका अनुगम करते हैं । यथा- अन्तिम समयमें संचित हुआ प्रदेशाग्र एक समयप्रबद्धप्रमाण होता है, क्योंकि, उसके व्ययका अभाव है । द्विचरम समयमें संचित हुआ प्रदेशाग्र कुछ कम एक समयप्रबद्धप्रमाण होता है, क्योंकि, अन्तमें इसके प्रथम निषेकका अभाव है । त्रिचरिम समयमें संचित हुआ प्रदेशाग्र कुछ कम एक समयप्रबद्धप्रमाण होता है, क्योंकि, अन्तमें इसके प्रथम और द्वितीय निषेकका अभाव है । इस प्रकार जाकर प्रथम समयमें संचित हुआ द्रव्य एक समयप्रबद्धके असंख्यातवें भागप्रमाण शेष रहता है, क्योंकि, अन्तमें उसका अन्तिम निषेकमात्र उपलब्ध होता है । यतः इस प्रकार है अतः यह सब द्रव्य डंढगुणहानिमात्र समयप्रबद्धप्रमाण होता है । अन्तर्भूतके जितने समय हैं उतने समयप्रबद्ध होते हैं यह उक्त कथनका भावार्थ है ।

अब निषेकके द्वितीय उपदेशका अवलम्बन लेकर समयप्रबद्धोंके प्रमाणका अनुगम करते हैं । यथा- तीन पत्थोंके अन्तिम समयमें जो संचित हुआ है वह एक समयप्रबद्धप्रमाण होता है, क्योंकि, उसके व्ययका अभाव है । जो द्विचरम समयमें संचित हुआ द्रव्य है वह एक समयप्रबद्धका कुछ कम अर्धभागप्रमाण होता है, क्योंकि, इसका साधिक अर्धभाग गल चुका है । जो तृतीय समयमें संचित द्रव्य है वह समयप्रबद्धका कुछ कम तृतीय भागमात्र होता है, क्योंकि, इसके तीन भागोंमेंसे साधिक दो भाग गल चुके हैं । इस प्रकार पत्थोपमके द्वारा जान

अद्वाणेषु एनेगसमयप्रबद्धस्य अद्धमद्धमुपपज्जति त्ति णादब्बं । एवमुपपणसमयप्रबद्धस्य अद्वाणि संखेज्जावलियच्छेदणयमेत्ताणि होति । ते च छेदणया असंखेज्जा, जहण-परीतासंखेज्जस्य अद्धच्छेदणएहि जहणपरीतासंखेज्जे गुणिदे आवलियद्धच्छेदणय-सलागुप्पत्तीदो । तम्हा असंखेज्जसमयप्रबद्धमेत्तो ओरालियसरीरपदेसगासंचओ होदि त्ति घेत्ठवं । एवं दो वि उवदेसे अस्सिदूण असंखेज्जसमयप्रबद्धमेत्तपदेसगं होदि त्ति सिध्दं । णवरि पुव्वित्तलउवदेसेण लद्धसमयप्रबद्धेहिंतो पछित्तलउवदेसेण लद्धसमय-प्रबद्धा असंखेज्जगुणहीणा । एत्थ विदियउवदेसो ण घडवे, सामित्तसुत्तेण सह विरुद्धत्तादो । तं जहा- जदि विदियवियप्पो घेप्पदि तो जत्थ उदये दो समयप्रबद्धा गलंति तत्तो हेट्ठा चेव उक्कस्ससामित्तेण होदब्बं ण चरिमसमए, आयादो वयस्स असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । ण च एवं, सुत्तविरुद्धस्स वक्खाणत्तविरोहादो ।

तव्वदिरित्तमणुक्कस्सं ॥ ४३० ॥

एवम्हादो ओकड्डणवसेण एगपरमाणुमिह फिट्ठे अणुक्कस्सट्ठाणमुपपज्जति । एवं दो-तिण्णि-चत्तारिआदिकमेण ऊणं कादूण अणुक्कस्सट्ठाणाणि उप्पादेदब्बाणि जाव एगविगलपक्खेवो परिहीणो त्ति । तदो एगजोगपक्खेवेण परिहीणजोगट्ठाणेण बंधाविय सरिसं कायब्बं । एवं जाणिदूण ओदारिय अणुक्कस्सट्ठाणाणि उप्पादे-

वत्तीसवें भाग और चौसठवें भाग आदि उपरिम अध्वानोंके जाने पर एक समयप्रबद्धका आधा आधा उत्पन्न होता है ऐसा यहां जानना चाहिए । इस प्रकार उत्पन्न हुए समयप्रबद्धके अर्ध-भाग संख्यात आवलियोंके अर्धच्छेदप्रमाण होते हैं । और वे अर्धच्छेद असंख्यात हैं; क्योंकि, जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंसे जघन्य परीतासंख्यातके गुणित करने पर एक आवलिके अर्धच्छेदों की शलाकायें उत्पन्न होती हैं । इसलिए औदारिकशरीरके प्रदेशाग्रका संचय असं-ख्यात समयप्रबद्धप्रमाण है ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए । इस प्रकार दोनों ही उपदेशोंका आश्रय लेकर असंख्यात समयप्रबद्धप्रमाण प्रदेशाग्र होता है यह सिद्ध हुआ । इतनी विशेषता है कि पहलेके उपदेशके अनुसार जो समयप्रबद्ध लब्ध आते हैं उनसे पिछले उपदेशके अनुसार लब्ध हुए समयप्रबद्ध असंख्यातगुणे हीन होते हैं । इनमेंसे यहां पर द्वितीय उपदेश घटित नहीं होता, क्योंकि, उसका स्वामित्व सूत्रके साथ विरोध आता है । यथा- यदि द्वितीय विकल्पको ग्रहण करते हैं तो जहां पर उदयमें दो समयप्रबद्ध गलते हैं उससे पूर्व ही उत्कृष्ट स्वामित्व होना चाहिए, अन्तिम समयमें उत्कृष्ट स्वामित्व नहीं होना चाहिए, क्योंकि, वहां द्वितीय उपदेशके अनुसार आयसे व्यय असंख्यातगुणा उपलब्ध होता है । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, जो सूत्रविरुद्ध हो उसके व्याख्यान होनेमें विरोध आता है ।

उससे व्यतिरिक्त अनुत्कृष्ट प्रदेशाग्र है । ४३० ॥

पहले जो उत्कृष्ट प्रदेशाग्र कह आये हैं उसमेंसे अपकर्षण वश एक परमाणुके नष्ट होने पर अनुत्कृष्ट स्थान उत्पन्न होता है । इस प्रकार दो, तीन और चार आदि कम करनेके एक विकल प्रक्षेपके हीन होने तक अनुत्कृष्ट स्थान उत्पन्न करने चाहिए । अनन्तर एक योगप्रक्षेपसे हीन योगस्यावके द्वारा बन्ध कराकर सदृश करना चाहिए । इस प्रकार जानकर उतारते हुए जघन्य

दब्बाणि जाव जहण्णट्ठाणे त्ति।

उक्कस्सपदेण वेउव्वियसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसगं कस्स। ४३१।

सुगमं ।

अण्णदरस्स आरण-अच्चुदकप्पवासियदेवस्स बावीससागरोव-
मट्ठिवियस्स ॥ ४३२ ॥

सम्मत-मिच्छतादीहि दब्बविसेसो णत्थि त्ति जाणावणट्ठं अण्णदरस्स णिहे
सो कदो । हेट्ठिम-उवरिमदेवाणं णेरइयाणं च पडिसेहट्ठं आरणच्चुदकप्पवासिय-
देवणिहेसो कदो । सब्बट्ठसिद्धिदेवेसु दीहाउएसु उक्कस्ससामित्तं किण्ण दिज्जदे? ण,
णवगेवज्जादिउवरिमदेवेसु उक्कस्सजोगपरावत्तणवाराणं पउरमणुवलंभादो । उक्क-
स्सजोगपरावत्तणवारा तत्थ पउरा ण लब्भंति त्ति कुदो णव्वदे? एदम्हादो चेव सुत्तादो
उवरि ओगाहणा दहरा त्ति तत्थ ण सामित्तं दिज्जवि त्ति ण वोत्तुं जुत्तं, जोगवसेण
आगच्छमाणकम्मणोकम्मपोगलाणमोगाहणादो संखाविसेसाणुप्पत्तीदो । हेट्ठिमदेवेसु

स्थानके प्राप्त होने तक अनुत्कृष्ट स्थान उत्पन्न करने चाहिए ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा वैक्रियिकशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है । ४३१।

यह सूत्र सुगम है ।

जो बाईस सागरकी स्थितिवाला आरण और अच्युत कल्पवासी अन्यतर
देव है ॥ ४३२ ॥

सम्यक्त्व और मिथ्यात्व आदिके निमित्तसे द्रव्य विशेष नहीं होता इस बातका ज्ञान
करानेके लिए अन्यतर पदका निर्देश किया है । अधस्तन और उपरिम देवोंका तथा नारकियोंका
प्रतिषेध करनेके लिए 'आरण और अच्युत कल्पवासी देव' पदका निर्देश किया है ।

शंका- दीर्घ आयुवाले सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें उत्कृष्ट स्वामित्व क्यों नहीं दिया ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, नौ ग्रंथेयक आदि ऊपरके देवोंमें उत्कृष्ट योगके परावर्तनके
बार प्रचुरमात्रामें नहीं उपलब्ध होते ।

शंका- वहाँ उत्कृष्ट योगके परावर्तनके बार प्रचुरमात्रामें नहीं उपलब्ध होते यह
किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान- इसी सूत्रसे जाना जाता है ।

ऊपर अवगाहना ह्रस्व है, इसलिए वहाँ पर स्वामित्व नहीं देना चाहिए यह कहना
ठीक नहीं है, क्योंकि, योगके वशसे आनेवाले कर्म और नोकर्म पुद्गलोंकी अवगाहनाके कारण
संख्याविशेष नहीं उत्पन्न होती ।

शंका- नीचेके देवोंमें उत्कृष्ट स्वामित्व क्यों नहीं दिया जाता है ?

उक्कस्ससामित्तं किण्ण दिज्जदे ? ण तत्थ दीहाउआभावादो । सत्तमपुढविणेरइएसु दीहाउएसु उक्कस्सजोगेसु किण्ण दिज्जदे ? ण, तेसु संकिलेसबहुलेसु बहुणोकम्मणि-ज्जरदंसणादो । एक्कारससागरोवमसंचयादो संकिलेसेण गलभाणदव्वं बहुअमिदि कुदो णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो । आरण-अच्चुददेवेसु सेसाउट्ठिदिपडिसेहट्ठं वावीससागरोवमट्ठिदिणिदेसो कदो ।

तेणेव पढमसमयआहारएण पढमसमयतद्धभवत्थेण उक्कस्स-जोगेण आहारिदो ॥ ४३३ ॥

उक्कस्सियाए वड्ढीए वड्ढिदो ॥ ४३४ ॥

अंतोमुहुत्तेण सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तपदो ॥ ४३५ ॥

तस्स अप्पाओ भासद्धाओ ॥ ४३६ ॥

अप्पाओ मणजोगद्धाओ ॥ ४३७ ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

णत्थि छविच्छेदा ॥ ४३८ ॥

समाधान-— नहीं, क्योंकि, वहाँ पर लम्बी आयुका अभाव है ।

शंका-— सातवीं पृथिवीके नारकियोंकी आयु लम्बी होती है और उत्कृष्ट योग भी है, इसलिए वहाँ उत्कृष्ट स्वामित्व क्यों नहीं दिया जाता है ?

समाधान-— नहीं, क्योंकि, वे संक्लेशबहुल होते हैं, इसलिये उनमें बहुत नोकर्मोंकी निजंरा देखी जाती है ।

शंका-— ग्यारह सागरके भीतर होनेवाले संचयसे संक्लेशवश गलनेवाला द्रव्य बहुत है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-— इसी सूत्रसे जाना जाता है ।

आरण और अच्युत कल्पके देवोंमें शेष आयुका प्रतिषेध करनेके लिए 'बाईस सागरकी स्थितिवाले' पदका निर्देश किया है ।

उसी देवने प्रथम समयमें आहारक और प्रथम समयमें तद्भवस्थ होकर उत्कृष्ट योगसे आहारको ग्रहण किया ॥ ४३३ ॥

उत्कृष्ट वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त हुआ ॥ ४३४ ॥

सबसे लघु अन्तर्मुहूर्त काल द्वारा सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ ॥ ४३५ ॥

उसके बोलनेके काल अल्प हैं ॥ ४३६ ॥

मनोयोगके काल अल्प हैं ॥ ४३७ ॥

ये सूत्र सुगम हैं ।

उसके छविच्छेद नहीं होते ॥ ४३८ ॥

वेउव्वियसरीरस्स छेदभेदादीणमभावादो ।

अप्पदरं विउव्विदो ॥ ४३९ ॥

कुदो बहुविउव्वण्णाए बहुआणं परमाणुपोग्गलाणं गलणप्पसंगादो ।

थोवावसेसे जीविदव्वए त्ति जोगजवमज्झस्सुवरिमंतोमुहुत्तद्ध-
मच्छिदो ॥ ४४० ॥

चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे आवलियाए असंखेज्जदिभाग-
मच्छिदो ॥ ४४१ ॥

चरिम-दुचरिमसमए उक्कस्सजोगं गदो ॥ ४४२ ॥

तस्स चरिमसमयतब्भवत्थस्स तस्स वेउव्वियसरीरस्स उक्क-
स्सपदेसगं ॥ ४४३ ॥

एदंस्स सुत्ताणं जहा ओरालियसरीरम्मि परूवणा कदा तथा कायव्वा,
विसेसाभावादो ।

तव्वदिरित्तमणुक्कस्सं ॥ ४४४ ॥

एदं पि सुगमं ।

क्योंकि, वैक्रियिकशरीरके छेद व भेद आदिक नहीं पाये जाते ।

उसने अल्पतर विक्रिया की ॥ ४३९ ॥

क्योंकि, बहुत विक्रिया करनेसे बहुत परमाणुपुद्गलोंके गलन होनेका प्रसंग प्राप्त होता है ।

जीवितव्यके स्तोक शेष रहने पर वह योग्यवमध्यके ऊपर अन्तर्मुहूर्त काल
तक रहा ॥ ४४० ॥

अन्तिम जीवगुणहानिस्थानान्तरमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल
तक रहा ॥ ४४१ ॥

चरम और द्विचरम समयमें उत्कृष्ट योगको प्राप्त हुआ ॥ ४४२ ॥

अन्तिम समयमें तद्भवस्थ हुआ वह जीव वैक्रियिकशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशा-
ग्रका स्वामी है ॥ ४४३ ॥

इत सूत्रोंकी जिस प्रकार औदारिकशरीरके प्रसंगसे प्ररूपणा की है उस प्रकार करनी
चाहिए, क्योंकि, कोई विशेषता नहीं है ।

उससे व्यतिरिक्त अनुत्कृष्ट है । ४४४ ।

यह सुत्र सुगम है ।

उक्कस्सपदेण आहारसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसगं कस्स । ४४५ ।
सुगमं ।

अण्णदरस्स पमत्तसंजदस्स उत्तरसरीरं णिउव्वियस्स ॥ ४४६ ॥

ओगाहणांदोहि दब्बभेदो णत्थि त्ति जाणावणट्ठं अण्णदरणिहेसो कदो ।
पमादेण तत्थ आहारसरीरस्स उदओ अत्थि त्ति जाणावणट्ठं पमत्तगहणं कदं ।
असंजदपडिसेहट्ठं संजदगहणं कदं ।

तेणेव पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण उक्कस्स-
जोगेण आहारिदो ॥ ४४७ ॥

उक्कस्सियाए वड्ढीए वड्ढिदो ॥ ४४८ ॥

अंतोमुहुत्तेण सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो । ४४९ ।

तस्स अप्पाओ भासद्धाओ ॥ ४५० ॥

अप्पाओ मणजोगद्धाओ ॥ ४५१ ॥

णत्थि छविच्छेदा ॥ ४५२ ॥

थोवावसेसे णियत्तिदब्बए त्ति जोगजवमज्झट्ठाणाए मितद्ध-

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा आहारकशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है । ४४५ ।
यह सूत्र सुगम है ।

उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवाला जो अन्यतर प्रथम संयत जीव है ॥ ४४६ ॥

अवगाहना आदिकी अपेक्षा द्रव्यभेद नहीं है इस बातका ज्ञान करानेके लिए अन्यतर पदका निर्देश किया है । प्रमादके होने पर वहाँ आहारकशरीरका उदय नहीं है इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'प्रमत्त' पदका ग्रहण किया है । असंयतका प्रतिषेध करनेके लिए 'संयत' पदका ग्रहण किया है ।

उसी जीवने प्रथम समयमें आहारक और प्रथम समयमें तद्भवस्थ होकर योगद्वारा आहारको ग्रहण किया ॥ ४४७ ॥

उत्कृष्ट वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त हुआ ॥ ४४८ ॥

सबसे लघु अन्तर्मुहूर्त कालद्वारा सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ ॥ ४४९ ॥

उसके बोलनेके काल अल्प हैं ॥ ४५० ॥

मनोयोगके काल अल्प हैं ॥ ४५१ ॥

छविच्छेद नहीं हैं ॥ ४५२ ॥

निवृत्त होनेके कालके थोडा शेष रह जाने पर योगयवमध्यस्थानके

मच्छिदो ॥ ४५३ ॥

चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे आवलियाए असंखेज्जदिभाग-
मच्छिदो ॥ ४५४ ॥

चरिम-दुचरिमसमए उक्कस्सयं जोगं गदो ॥ ४५५ ॥

तस्स चरिमसमयणियत्तमाणस्स तस्स आहारसरीरस्स उक्क-
स्सयं पवेसगं ॥ ४५६ ॥

एवाणि सुत्ताणि सुगमाणि । णवरि एसो पमत्तसंजदो आहारसरीरमुद्धावेंतो
अपज्जत्तकाले अपज्जत्तजोगं पडिवज्जदि त्ति घेत्तव्वं, अण्णहा उक्कस्सियाए वड्ढीए
आहारमिस्सद्धाए वड्ढणानुववत्तीदो । किं च णिसेगरचनाए कीरमाणाए अबट्ठिद-
सरुवेणेव णिसेगरचना होदि ण गलितसेसा । कथमेदं णव्वदे? आहारसरीरपरिसदण-
कालस्स अंतोमूहुत्तपमाणपरवणादो । ण च कालभेदेण विणा एकम्मि चेव समए
णिसित्ताणमेगसमएण विणा अंतोमूहुत्तेण गलणं संभवदि, विरोहादो । सेसं सुगमं ।
एवं तिरिक्ख-मणुस्सेसु वेउब्बिद्यसरीरस्स वि णिसेयरचना वत्तव्वा, अण्णहा तत्थ
परिसदणकालस्स अंतोमूहुत्तपमाणत्तविरोहादो ।

ऊपर परमित काल तक रहा ॥४५३॥

अन्तिम जीवगुणहानिस्थानान्तरमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक
रहा ॥४५४॥

चरम और द्विचरम समयमें उत्कृष्ट योगको प्राप्त हुआ ॥४५५॥

निवृत्त होनेवाला वह जीव अन्तिम समयमें आहारकशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशा-
ग्रका स्वामी है ॥४५६॥

ये सूत्र सुगम हैं । इतनी विशेषता है कि यह प्रमत्तसंयत जीव आहारकशरीरको उत्पन्न
करता हुआ अपर्याप्त कालमें अपर्याप्त योगको प्राप्त होता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए,
अन्यथा उत्कृष्ट वृद्धिद्वारा आहारमिश्रकालके भीतर वृद्धि नहीं बन सकती । दूसरे निषेक रचना
करने पर अवस्थितरूपसे ही निषेकरचना होती है, गलितशेष निषेकरचना नहीं होती ।

शंका-- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- क्योंकि, आहारकशरीरकी निर्जरा होनेका काल अन्तर्मुहूर्त प्रमाण कहा है ।

यदि कहा जाय कि कालभेदके विना एक ही समयमें निक्षिप्त हुए प्रदेशोंका एक
समयके विना अन्तर्मुहूर्तमें गलना सम्भव है सो यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेमें
विरोध आता है । शेष कथन सुगम है । इसी प्रकार तिर्यञ्चों और मनुष्योंमें वैक्रियिकशरी-
रकी भी निषेकरचना कहनी चाहिए, अन्यथा वहाँ पर क्षीण होनेका काल अन्तर्मुहूर्तप्रमाण
होनेमें विरोध आता है ।

तव्वदिरित्तमणुक्कस्सं ॥ ४५७ ॥

सुगमं ।

उक्कस्सपदेण तेजासरीरस्स उक्कस्सयं पदेसगं कस्स ॥ ४५८ ॥

सुगमं ।

अण्णवरस्स ॥ ४५९ ॥

ओगाहणादीहि पदेसगस्स विसेसाभावपटुप्पायणट्टमण्णवरणिहंसो कदो ।

**जो जीवो पुव्वकोडाउओ अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु
आउअं बंधदि ॥ ४६० ॥**

जो जीवो पुव्वकोडाउओ सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु आउअं बंधदि सो तेजइय-
सरीरस्स छावट्टिसागरोवमाणं पढमसमयप्रबद्धमेत्तचरिमसमओ त्ति ताव गोबुच्छा-
गारेण णिसेगरचणं करेदि । जो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु आउअं बंधतो* द्विदो

विशेषार्थ— यहाँ पर आहारकशरीरकी निषेक रचना गलित शेष न बतलाकर अव-
स्थितस्वरूप बतलाई है । इसका यह अभिप्राय है कि आहारकशरीरके उत्पन्न होनेके समयसे
लेकर उसके समाप्त होने तकका जितना काल है, प्रत्येक समयमें निषेकरचना उतने समयप्रमाण
होती है । मान लीजिए आहारकशरीरका अवस्थान काल आठ है तो प्रथम समयमें ग्रहण
किये गये समयप्रबद्धके आठ निषेक होंगे । दूसरे समयमें ग्रहण किये गये समयप्रबद्धके भी
आठ ही निषेक होंगे । एक समय गल गया है, इसलिए आठ समयोंमेंसे एक समय कम निषेक-
रचना नहीं होगी । इसी प्रकार आगे भी जानना चाहिए । मनुष्य और तिर्यञ्च जो वैकियिक-
शरीर उत्पन्न करते हैं उसकी निषेकरचना भी इसी प्रकार जाननी चाहिए ।

उससे व्यतिरिक्त अनुत्कृष्ट है ॥ ४५७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा तेजसशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है ॥ ४५८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जो अन्यतर जीव है ॥ ४५९ ॥

अवगाहता आदिके द्वारा प्रदेशाग्रमें कोई विशेषता नहीं उत्पन्न होती इस बातका ज्ञान
करानेके लिए 'अन्यतर' पदका निर्देश किया है ।

**जो पूर्वकोटिकी आयुवाला जीव नीचे सातवीं पृथ्वीके नारकियोंके आयुकर्मका
बन्ध करता है ॥ ४६० ॥**

जो पूर्वकोटिकी आयुवाला जीव सातवीं पृथ्वीके नारकियोंमें आयुकर्मका बन्ध करता
है वह तेजसशरीरके छयासठसागरप्रमाण स्थितिके प्रथम समयप्रबद्धसे लेकर अन्तिम समय तक
गोबुच्छाकाररूपसे निषेकरचना करता है । जो सातवीं पृथिवीके नारकियोंकी आयुका बन्ध

* प्रतिष्ठ 'बंधदि तो' इति पाठः ।

सो चेव तेजइयसरीरणोकम्मस्स उक्कस्सियं द्विदि बंधदि त्ति ण घेतव्वं किंतु जो पुव्वकोडाउओ जीवो पज्जत्तयदो उक्कस्सजोगो उवरि पुव्वकोडित्तिभागावसेसे सत्त-
माए पुढवीए णेरइएसु आउअबंधक्खमो सो तेजइयसरीरणोकम्मस्स उक्कस्सियं
द्विदि बंधदि त्ति वत्तव्वं, अण्णहा पुव्वकोडाउओ चेव बंधदि त्ति नियमस्स फला-
भावादो । किमट्ठं पुव्वकोडाउओ चेव बंधाविज्जवि? तत्थ उक्कस्सजोगपरावत्तण-
वारणं पउरमुवलंभादो । तं पि कुदो णव्वदे? अंतोमुहुत्तं मोत्तूण विदियपुव्वकोडि-
णिद्देसण्णहाणव्वत्तीदो । जदि एवं तो पुव्वकोडिआउएसु चेव भमाडिय तेजइयसरीर-
णोकम्मस्स उक्कस्ससंचओ किण्ण कीरदे ? ण, बहुवारं कालं कादूणुप्पज्जमाणस्स
अपज्जत्तजोगेहि थोवदव्वसंचयप्पसंगादो । णेरइएसु दोहि पुव्वकोडीहि देसूणाहि
ऊणतेत्तीससागरोवमाउअं बंधावेदव्वं, अण्णहा णेरइयचरिमसमए छावट्ठिसागरोवमाणं
परिसमत्तिविरोहादो ।

कमेण कालगदसमाणो अधो सत्तमाए पुढवीए उववण्णो । ४६१ ।

करता हुआ है वही तैजसशरीर नोकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध करता है ऐसा नहीं ग्रहण करना चाहिए, किन्तु जो पूर्वकोटिकी आयुवाला पर्याप्त और उत्कृष्ट योगवाला जीव आगं पूर्वकोटिके त्रिभाग शेष रहनेपर सातवीं पृथिवीके नारकियोंकी आयुका बन्ध करनेमें समर्थ है वह तैजसशरीर नोकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध करता है ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए । अन्यथा पूर्वकोटिकी आयुवाला बांधता है इस प्रकारके नियम करनेका कोई फल नहीं रहता ।

शंका- पूर्वकोटिकी आयुवाले जीवके ही तैजसशरीरकी उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध क्यों कराया है ?

समाधान- क्योंकि वहांपर उत्कृष्ट योगके परावर्तनके बार प्रचुरतासे उपलब्ध होते हैं ।

शंका- यह भी किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान- अन्यथा अन्तर्मुहुर्तको छोड़कर उससे भिन्न पूर्वकोटि पदका निर्देश नहीं बन सकता, इससे ज्ञान होता है कि उत्कृष्ट योगके परावर्तनके बार प्रचुरतासे वहीं पर उपलब्ध होते हैं ।

शंका- यदि ऐसा है तो पूर्वकोटिकी आयुवालोंमें ही भ्रमण कराकर तैजसशरीर नोकर्म का उत्कृष्ट संचय क्यों नहीं प्राप्त करते ?

समाधान- नहीं, क्योंकि बहुत बार मरकर उत्पन्न होनेवाले जीवके अपर्याप्त योगोंके द्वारा स्तोक द्रव्यके संचयका प्रसंग प्राप्त होता है ।

नारकियोंकी आयुका बन्ध कराते समय कुछ कम दो पूर्वकोटि कम तेजीस सागरप्रमाण आयुकर्मका बन्ध कराना चाहिए, अन्यथा नारकीके अन्तिम समयमें छद्वासठ सागरकी परिसमाप्ति होनेमें विरोध आता है ।

वह क्रमसे मरा और नीचे सातवीं पृथिवीमें उत्पन्न हुआ ॥ ४६१ ॥

कदलीघादेण विणा जीविदूण मुदो ति जाणावणट्ठं कमेण कालगदो^१ ति भणिदं । सत्तमा पुढवी अधो चेव होदि ण अण्णत्थे ति जाणावणट्ठं अधो णिद्देसो कदो । जत्थ आउअं बद्धं तत्थेव णियमेण उप्पज्जदि ति जाणावणट्ठं विदियसत्तम-पुढविग्गहणं कदं । सत्तमपुढवीए चेव किमट्ठं उप्पाइदो ? ण, तत्थ संकिलेसेण बहु-दव्वस्स उक्कड्डुणुवलंभादो अण्णत्थ एवंविहसंकिलेसामावादो । आउअपमाणणिद्देसो किण्ण कदो ? तदाउअस्स देसूणत्तपदुप्पायणट्ठं ।

तदो उवट्ठिदसमाणो पुणरवि पुव्वकोडाउएसुववण्णो ॥ ४६२ ॥

पुणो पुव्वकोडोए किमट्ठमुप्पाइदो । ण, तत्थ उक्कस्सजोगपरावतणवारणं पउरमुवलंभादो । तं पि कुदो णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो ।

तेणेव कमेण आउअमणुपालइत्ता तदो^२ कालगदसमाणो पुण-

रवि अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु उववण्णो ॥ ४६३ ॥

कदलीघादेण ओवट्ठणाघादेण च विणा जीविदूण मुदो ति जाणावणट्ठं तेणेव

कदलीघातके बिना जीवन धारण कर मरा इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'कमेण काल-गदो' पदका कथन किया है । सातवीं पृथिवी नीचे ही होती है अन्यत्र नहीं इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'अधः' पदका निर्देश किया है । जहां की आयुका बंध करता है वहां ही नियमसे उत्पन्न होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए दूसरी बार सप्तम पृथिवी पदका ग्रहण किया है ।

शंका-- सातवीं पृथिवीमें ही क्यों उत्पन्न कराया है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, वहां पर संक्लेशके कारण बहुत द्रव्यका उत्कर्षण उपलब्ध होता है । तथा अन्यत्र इस प्रकारका संक्लेश नहीं पाया जाता ।

शंका-- आयुके प्रमाणका निर्देश किसलिए नहीं किया ?

समाधान-- उसकी आयु कुछ कम होती है इस बातका कथन करनेके लिए आयुके प्रमाणका निर्देश नहीं किया है ।

वहांसे निकलकर फिर भी पूर्वकोटिकी आयुवालोंमें उत्पन्न हुआ ॥ ४६२ ॥

शंका-- पुनः पूर्वकोटिकी आयुवालोंमें किसलिए उत्पन्न कराया है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, वहां पर उत्कृष्ट योगके परावर्तनके बार प्रचुरतासे पाये जाते हैं ।

शंका-- यह भी किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- इसी सूत्रसे जाना जाता है ।

उसी क्रमसे आयुका पालन करके मरा और पुनः नीचे सातवीं पृथिवीके नारकियोमें उत्पन्न हुआ ॥ ४६३ ॥

कदलीघात और अपरावर्तनाघातके बिना जीवन धारण कर मरा इस बातका ज्ञान करानेके

❖ ता० प्रती 'जाणावणट्ठं कालगदो' इति पाठः ।

❖ का० प्रती 'तदो कालगदसमाणो' इति आरभ्य 'विदियपुढवि-' इति पूर्व पाठो नास्ति ।

कमेण आउअमणुपालइत्ता त्ति भणिदं । विदियपुव्वकोडिच्चरिमसमए तेत्तीससागरो-
वमाणि समाणिय णेरइएसु तेत्तीसं सागरोवमट्ठिदिएसु उववण्णो त्ति भणिदं होदि ।
संपहि तिसु वि अपज्जत्तद्धासु आवासयपरूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि ।

तेणेव पढमसमयआहारएण पढमसमयतदभवत्थेण उवकस्सजो-
गेण आहारिदो ॥ ४६४ ॥

एदेहि तीहि वि सुत्तेहि उववादजोगमाहणं जाणाविदं । विग्गहगदोए किण्ण
उप्पाइदो ? पज्जत्तकालवड्ढावणट्ठं ण उप्पाइदो ।

उवकस्सियाए वड्ढीए वड्ढिदो ॥ ४६५ ॥

अंतोमुहुत्तेण सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ॥ ४६६ ॥

तत्थ य भवट्ठिदिं तेत्तीससागरोवमाणि आउअमणुपालइत्ता ॥ ४६७ ॥

उवकस्सदव्वं करेदि त्ति भणिदं होदि । सेसं सुगमं । दोसु पुव्वकोडीसु दोसु
णिरयाउएसु च आवासयपरूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि -

लिए ' उसी क्रमसे आयुका पालन कर ' यह पद कहा है । दूसरी पूर्वकोटिके अन्तिम समयमें
तेतीस सागर समाप्त करके तेतीस सागरकी आयुवाले नारकियोंमें उत्पन्न हुआ यह उक्त कथन
का तात्पर्य है । अब तीनों अपर्याप्त कालोंमें आवश्यकोंका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र
कहते हैं-

प्रथम समयमें आहारक हुए और प्रथम समयमें तदभवस्थ हुए उसी जीवने
उत्कृष्ट योगसे आहारको ग्रहण किया ॥ ४६४ ॥

इन तीनों ही सूत्रोंके द्वारा उपपाद योगके माहात्म्यका ज्ञान कराया गया है ।

शंका - विग्रहगतिमें क्यों नहीं उत्पन्न कराया है ?

समाधान - पर्याप्तका काल बढ़ानेके लिए नहीं उत्पन्न कराया है ।

उत्कृष्ट वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त हुआ ॥ ४६५ ॥

सबसे अल्प अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ ॥ ४६६ ॥

वहां तेतीस सागर आयुप्रमाण भवस्थितिका पालन कर ॥ ४६७ ॥

वह उत्कृष्ट द्रव्यको करता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । शेष कथन सुगम है । अब
दो पूर्वकोटियोंमें और दो नारक आयुओंमें आवश्यकोंका कथन करनेके लिए आगेका
सूत्र कहते हैं-

❧ ता० प्रती ' आउअमणुपालइत्ता त्ति भणिदं होदि ' इति पाठः ।

बहुसो बहुसो उक्कस्सियाणि जोगट्ठाणाणि गच्छदि ॥ ४६८ ॥

एत्थ उक्कस्से त्ति उत्ते आदेसुक्कस्स-ओघक्कस्साणं दोण्णं पि गहणं कायव्वं ।
किमट्ठमुक्कस्सजोगेसु हिडाविज्जदि ? बहुपोगगलगहणट्ठं ।

बहुसो बहुसो बहुसंकिलेसपरिणामो भवदि । ४६९ ।

संचिदपोगगलाणमुक्कहुणट्ठं । ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरपोगगलाणमु-
क्कहुणा णत्थि । कथमेदं णव्वदे । तत्थ एदस्स सुत्तस्स अणुव्वेसादो । पुणरवि
आदेसुक्कस्सजोगविसेसपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

एवं संसरिदूण थोवावसेसे जीविदव्वए त्ति जोगजवमज्झस्स
उवरिमंतोमुहुत्तद्धमच्छिदो । ४७० ।

चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे आवलियाए असंखेज्जदिभाग-
मच्छिदो । ४७१ ।

दुचरिम-तिचरिमसमए उक्कस्ससंकिलेसं गदो । ४७२ ।

बहुत बहुत बार उत्कृष्ट योगस्थानोंको प्राप्त होता है । ४६८ ।

यहां पर उत्कृष्ट ऐसा कहने पर आदेश उत्कृष्ट और ओघ उत्कृष्ट दोनों ही का ग्रहण करना चाहिए ।

शंका— उत्कृष्ट योगवालोंमें किसलिए घूमाते हैं ?

समाधान— बहुत पुद्गलोंका संग्रह करनेके लिए ।

बहुत बहुत बार विपुल संक्लेश परिणामवाला होता है । ४६९ ।

संचित हुए पुद्गलोंका उत्कर्ष करनेके लिए यह सूत्र आया है । औदारिकशरीर
वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके पुद्गलोंका उत्कर्ष नहीं होता ।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— क्योंकि, उन शरीरोंके उत्कृष्ट स्वामित्वका कथन करते समय इस सूत्रका
उपदेश नहीं दिया है ।

अब फिर भी आदेश उत्कृष्ट योगविशेषका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—
इस प्रकार परिभ्रमण करके जीवितव्यके स्तोत शेष रहने पर योगप्रवमध्यके
ऊपर अन्तर्मुहूर्त काल तक ठहरा । ४७० ।

अन्तिम जीवगुणहानिस्थानान्तरमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल
तक रहा । ४७१ ।

द्विचरम और त्रिचरम समयमें उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ । ४७२ ।

चरिम-दुचरिमसमए उक्कस्सजोगं गदो ॥ ४७३ ॥

तस्स चरिमसमयतब्भवत्थस्स तस्स तेजइयसरीरस्स* उक्क-
स्सयं पदेसगं ॥ ४७४ ॥

संपहि एत्थ उवसंहारे भण्णमाणे संचयाणुगमो भागहारपमाणानुगमो समयपबद्ध-
पमाणानुगमो चेदि एदाणि तिण्णि अणुयोगद्वाराणि होति । एदेहि तिहि अणुयोगदा-
रेहि उवसंहारो उच्चदे । तं जहा- कम्मट्ठिदिपढमसमए जं बद्धं तेजइयसरीरणोक-
म्मपदेसगं तं सामित्तचरिमसमए† चरिमगोवुच्छमेत्तमत्थि । जं कम्मट्ठिदिविदिय-
समए पबद्धं णोकम्मपदेसगं तं सामित्तचरिमसमए चरिम-दुचरिमगोवुच्छमेत्तमत्थि ।
एवं णेयव्वं जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमओ त्ति । एवं संचयाणुगमो गदो । छावट्ठिसा-
गरोवमाणं‡ पढमसमए जं बद्धं तेजइयसरीरणोकम्मपदेसगं तम्मि अंगुलस्स असंखे०
भागेण खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तं कम्मट्ठिदिचरिमसमए अत्थि । तेजइयसरीरकम्मट्ठि-
दिअंतरणाणागुणहागिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णवत्थे कदे असंखे-
ज्जाणि पलिदोवमाणि उप्पज्जंति । पुणो एदेण अण्णोण्णवत्थरासिणा असंखेज्ज-
पलिदोवमपढमवगमूलमेत्तदिवड्डुगुणहाणीसु गुणिदासु भागहारो उप्पज्जदि त्ति भणिदं

चरम और द्विचरम समयमें उत्कृष्ट योगको प्राप्त हुआ ॥ ४७३ ॥

चरम समयवर्ती तद्भवस्थ वह जीव तैजसशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशायका स्वामी
है ॥ ४७४ ॥

अब यहां पर उपसंहारका कथन करने पर संचयानुगम, भागहारप्रमाणानुगम और
समयप्रबद्धप्रमाणानुगम ये तीन अनुयोगद्वार होते हैं । इन तीन अनुयोगद्वारोंका अवलम्बन
लेकर उपसंहारका कथन करते हैं । यथा- कर्मस्थितिके प्रथम समयमें जो तैजसशरीर नोकर्म-
प्रदेशाय बन्धको प्राप्त हुआ है, स्वामित्वके अन्तिम समयमें वह अन्तिम गोपुच्छमात्र शेष रहता
है । जो कर्मस्थितिके द्वितीय समयमें नोकर्मप्रदेशाय बन्धको प्राप्त हुआ है वह स्वामित्वके अंतिम
समयमें चरम और द्विचरम गोपुच्छमात्र शेष रहता है । इस प्रकार कर्मस्थितिके अन्तिम समय
तक ले जाना चाहिए । इस प्रकार संचयानुगमका कथन समाप्त हुआ । छयासठ सागरके प्रथम
समयमें जो तैजसशरीर नोकर्मप्रदेशाय बन्धको प्राप्त हुआ है उसमें अङ्गुलके असंख्यातवें भाग
का भाग देने पर एक खण्डमात्र कर्मस्थितिके अन्तिम समयमें शेष रहता है । तैजसशरीर
नोकर्मस्थिति अन्तर नानागुणहानि शलाकाओंका विरलन कर और विरलन राशिके प्रत्येक एकको
हूना कर परस्पर गुणा करने पर असंख्यात पत्य उत्पन्न होते हैं । पुनः इस अन्योन्याभ्यस्त
राशिसे असंख्यात पत्योंके प्रथमवर्गमूलप्रमाण डेढ गुणहानियोंके गुणित करने पर भागहार

* ता० प्रती 'तस्स पत्तेय (तेजइय) सरीरस्स' अ०का०प्रत्यो 'तस्स पत्तेयसरीरस्स' इति पाठः ।

† प्रतिप् 'सामित्तं चरिमसमए' इति पाठः । ‡ ता० प्रती '-सागरोवमाणि (णं)' इति पाठः ।

होदि । एवं भागहारो जाणिदूण परूवेयव्वो जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमओ त्ति ।
 एवं भागहारपरूवणा गदा । तेजइयसरीरस्स छावट्ठिसागरोवमसंचिदसव्वदव्वे
 समयपबद्धपमाणेण कदे दिवड्ढुणुणहाणिमेत्तसमयपबद्धा होति । एवमुक्कस्सपदेस-
 परूवणा समत्ता ।

तव्वदिरित्तमणुक्कस्सं ॥ ४७५ ॥

एत्थ ओकडुणं बंधं च अस्सिदूण अणंताणमणुक्कस्सट्ठाणाणं परूवणा कायव्वा ।

उक्कस्सपदेण कम्मइयसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसगं कस्स ॥ ४७६ ॥

सुगमं ।

जो जीवो बादरपुढविजीवेसु बेहि सागरोवमसहस्सेहि सादि-
 रेगेहि ऊणियं कम्मट्ठिदिमच्छिदो ॥ ४७७ ॥

जहा वेदणाए वेदणीयं तहा णेयव्वं ॥ ४७८ ॥

जहा वेयणदव्वविहाणेण साणित्तपरूवणा कदा तहा एत्थ वि णिरवसेसा
 कायव्वा, विसेसाभावादो* । एवं पंचणं सरीराणं उक्कस्सं सामित्तं समत्तं ।

उत्पन्न होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । इस प्रकार नोकर्मस्थितिके अन्तिम समय तक
 भागहारका जानकर कथन करना चाहिए । इस प्रकार भागहार परूवणा समाप्त हुई ।
 तैजसशरीरके छायासठ सागरके भीतर संचित हुए सब द्रव्यको समयप्रबद्धके प्रमाणसे करने पर
 डेढ गुणहानि मात्र समयप्रबद्ध होते हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट प्रदेशपरूवणा समाप्त हुई ।

उससे तद्व्यतिरिक्त अनुत्कृष्ट प्रदेशाग्र है ॥ ४७५ ॥

यहाँ पर उत्कर्षण और बन्धका आश्रय लेकर अनन्त अनुत्कृष्ट स्थानोंका कथन
 करना चाहिए ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा कार्मणशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है ॥ ४७६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जो जीव बादर पृथिवी जीवोंमें दो हजार सागर कम कर्मस्थितिप्रमाण काल
 तक रहा है वह कार्मणशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशाग्रका स्वामी है ॥ ४७७ ॥

यहाँ शेष वेदनामें वेदनीयका जिस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व कहा है उस
 प्रकार जानना चाहिए ॥ ४७८ ॥

जिस प्रकार वेदनद्रव्यविधानकी अपेक्षा स्वामित्वका कथन किया है उस प्रकार यहाँ
 पर समग्र कथन करना चाहिए, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है ।

इस प्रकार पाँच शरीरोंके उत्कृष्ट स्वामित्वका कथन समाप्त हुआ ।

* ता० प्रती 'मणुक्कस्सट्ठाण (ट्ठाणाणं)' इति पाठः ।

* अ० प्रती 'णिरवसेसा विसेसाभावादो' इति पाठः ।

जहणपदेण ओरालियसरीरस्स जहणयं पदेसगं कस्स । ४६९ ।

सुगमं ।

अण्णदरस्स सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयस्स । ४८० ।

ओगाहणादीहि पदेसगस्स संखाकयभंदो णत्थि त्ति अण्णदरग्गहणं कदं । बादर —
णिगोदादिजीवपडिसेहट्ठं सुहुमणिगोदजीवणिद्वेसो कदो । पज्जत्तपडिसेहट्ठं अपज्जत्त-
ग्गहणं कदं । किमट्ठं सुहुमणिगोदअपज्जत्तेसु चेव जहणसामित्तं दिज्जदे ? ण, सुहु-
मणिगोदअपज्जत्तजहणउववादजोगादो इदरेसि जहणउववादजोगाणमसंखेज्जगुणत्तु-
वलंभादो । तस्सेव सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स विसेसपरूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि-

**पढमसमयआहारस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स जहणजोगिस्स
तस्स ओरालियसरीरस्स जहणयं पदेसगं । ४८१ ।**

बिदियादिसमयआहारपडिसेहट्ठं पढमसमयआहारयस्स त्ति वृत्तं । किमट्ठं तप्पडिसेहो
कीरदे ? एयंताणुवड्ढिआदिजोगेहि आगच्छमाणबहुपोगलपडिसेहट्ठं ।

जघन्य पदकी अपेक्षा औदारिकशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी कौन
है । ४७९ ।

यह मूत्र सुगम है ।

जो अन्यतर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीव है । ४८० ।

अवगाहना आदिकी अपेक्षा प्रदेशाग्रका संख्याकृत भेद नहीं है, इसलिए 'अन्यतर' पदका
ग्रहण किया है । बादर निगोद आदि जीवोंका प्रतिषेध करनेके लिए 'सूक्ष्म निगोद जीव' पदका
निर्देश किया है । पर्याप्तकोंका प्रतिषेध करनेके लिए 'अपर्याप्त' पदका ग्रहण किया है ।

शंका — सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंमें ही जघन्य स्वामित्व किसलिए दिया जाता है ?
समाधान-नहीं, क्योंकि, सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके जघन्य उपपाद योगसे दूसरे जीवोंके जघन्य
उपपादयोग असंख्यातगुणे उपलब्ध होते हैं । अब उसी सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवके विशेष-
णोंका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं-

**प्रथम समयमें आहारक हुआ और प्रथम समयमें तद्भूवस्थ हुआ जघन्य
योगसे युक्त वह जीव औदारिकशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी है । ४८१ ।**

द्वितीय आदि समयोंमें आहारक होनेका निषेध करनेके लिए 'प्रथम समयमें आहारक
हुआ' पद कहा है ।

शंका — द्वितीय आदि समयोंमें आहारक होनेका प्रतिषेध किसलिए करते हैं ?

समाधान — एकान्तानुवृद्धि आदि योगोंके द्वारा आनेवाले बहुत पुद्गलोंका निषेध करनेके

विदिय-तदिय-चउत्थसमयतब्भवत्थपढमसमयआहारयाणं पडिसेहट्ठं पढमसमयतब्भ-
वत्थस्से त्ति भणिदं किमट्ठं विग्गहगदीए पडिसेहो कीरदे ? ण विग्गहगदीए
आगदाणं सव्वजहण्णउववादजोगासंभवादो । तं कुदो णव्वदे ? पढमसमयतब्भवत्थस्से
त्ति सुत्तण्णहाणुववत्तीदो । उववादजोगा असंखेज्जवियप्पा अत्थि तेसि पडिसेहट्ठं
जहण्णजोगिस्से त्ति भणिदं ।

तव्वदिरित्तमजहण्णं ॥ ४८२ ॥

एदम्हादो वदिरित्तजहण्णदव्वं तमजहण्णं त्ति घेत्थव्वं ।

जहण्णपदेण वेउव्वियसरीरस्स जहण्णयं पदेसगं कस्स ॥ ४८३ ॥

सुगमं ।

अण्णदरस्स देव-णेरइयस्स असण्णिपच्छायदस्स ॥ ४८४ ॥

असण्णिपच्छायदणिहेसो किमट्ठं कीरदे ? असण्णीहितो आगदस्सेव जहण्णु-
वादजोगो होदि ण अण्णस्से त्ति कीरदे ।

लिए द्वितीय आदि समयोंमें आहारक होनेका प्रतिषेध किया है ।

द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ समयमें तद्भवस्थ होकर प्रथम समयवर्ती आहारक होता
है उसका निषेध करनेके लिए ' प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुआ ' पद कहा है

शंका- विग्रहगतिका प्रतिषेध किसलिए करते हैं ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, विग्रहगतिसे आये हुए जीवोंके सबसे जघन्य उपपादयोगका
होना असम्भव है ।

शंका- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान- प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुआ यह सूत्र वचन अन्यथा बन नहीं सकता है ।
इससे जाना जाता है कि विग्रहगतिसे आये हुए जीवोंके जघन्य उपपादयोग नहीं होता ।

उपपादयोगके असंख्यात विकल्प हैं उनका प्रतिषेध करनेके लिए ' जघन्य योगवालेके '
यह वचन कहा है ।

उससे व्यतिरिक्त अजघन्य प्रदेशाग्र होता है ॥ ४८२ ॥

इससे व्यतिरिक्त जो जघन्य द्रव्य है वह अजघन्य है ऐसा ग्रहण करना चाहिए ।

जघन्य पदकी अपेक्षा वैक्रियिकशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है ॥ ४८३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंज्ञियोंमेंसे आकर उत्पन्न हुआ जो अन्यतर देव और नारकी जीव है ॥ ४८४ ॥

शंका- ' असंज्ञियोंमेंसे आकर उत्पन्न हुआ ' पदका निर्देश किसलिए करते हैं ?

समाधान- असंज्ञियोंमेंसे आये हुए जीवके ही जघन्य उपपादयोग होता है अन्यके
नहीं इसलिए उक्त पदका निर्देश करते हैं ।

पढमसमयआहारयस्स पढमसमयतवभवत्थस्स जहण्णजोगिस्स
तस्स वेउव्वियसरीरस्स जहण्णयं पदेसगं ॥ ४८५ ॥

एत्थ जथा ओरालियसरीरस्स परवणा कदा तथा कायव्वा ; ओरालिय-
वेउव्वियसरीराणं जहण्णउववावजोगेण आगदएयसमयपवद्धत्तणेण भेदाभावादो ।

तव्वदिरित्तमजहण्णं ॥ ४८६ ॥

सुगमं ।

जहण्णपदेण आहारसरीरस्स जहण्णयं पदेसगं कस्स ॥ ४८७ ॥

सुगमं ।

अण्णवरस्स पमत्तसंजदस्स उत्तरं विउव्विदस्स ॥ ४८८ ॥

सुगमं ।

पढमसमयआहारयस्स पढमसमयतवभवत्थस्स जहण्णजोगिस्स
तस्स आहारसरीरस्स जहण्णयं पदेसगं ॥ ४८९ ॥

कथमाहारसरीरग्रहणस्स भवसण्णा? न, पूर्वशरीरपरित्यागद्वारेणोत्तरशरीरो-
पादानस्य भवव्यपदेशात् । यदि आहारसरीरग्रहणं भवो होदि तो तत्थ अपज्जत्त-

प्रथम समयमें आहारक हुआ और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुआ जघन्य
योगवाला वह जीव वैक्रियिकशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी है ॥ ४८५ ॥

यहां पर जिस प्रकार औदारिकशरीरकी अपेक्षा कथन किया है उस प्रकार कथन
करना चाहिए, क्योंकि, औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीरमें जघन्य उपपादयोगसे आये हुए
एक समयप्रबद्धपनेकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है ।

उससे व्यतिरिक्त अजघन्य प्रदेशाग्र है ॥ ४८६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जघन्यपदकी अपेक्षा आहारकशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है ॥ ४८७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उत्तर विक्रियाकरनेवाला जो अन्यतर प्रमत्तसंयत जीव है ॥ ४८८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

प्रथम समयमें आहारक हुआ और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुआ जघन्य
योगवाला वह जीव आहारकशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी है ॥ ४८९ ॥

शंका-आहारकशरीरग्रहणकी भव संज्ञा कैसे है ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, यहां पूर्वशरीरका त्याग होकर उत्तर शरीरका ग्रहण होता
है, इसलिए इसकी भव संज्ञा है ।

कालेण वि होदव्वं ? होदु णाम, आहारमिस्सकायजोगद्धाए तस्स अपज्जत्तभाव-
वभुवगमादो । जदि एवं तो भवस्स पढमसमए उववादजोगेण होदव्वं ? सच्चमेदं,
इच्छिज्जमाणत्तादो । जदि एवं तो पमत्तसंजदस्स दो जीवसमासा पावेति ? होदु एवं
पि विरोहाभावादो । ण च जीवट्ठाणसुत्तेण सह विरोहो, तत्थ ओरालियसरीरे
पज्जत्ते संते चेव संजमो उप्पज्जदि ण तम्मि अपज्जत्ते इदि मणम्मि कादूण अपज्ज-
त्तजीवसमासपडिसेहादो । सेसं सुगमं ।

तव्वदिरित्तमजहणं ॥ ४९० ॥

एदं पि सुगमं ।

जहणपदेण तेजासरीरस्स जहणयं पदेसगं कस्स ॥ ४९१ ॥

सुगमं ।

अण्णदरस्स सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयस्स एयंताणुवड्ढीए
वड्ढमाणस्स जहणजोगिस्स तस्स तेजासरीरस्स जहणयं
पदेसगं ॥ ४९२ ॥

शंका— यदि आहारकशरीरका ग्रहण भव है तो वहाँ पर अपर्याप्त काल भी होना चाहिए ।

समाधान— होओ, क्योंकि, आहारकमिश्रकाययोगके कालके भीतर उसका अपर्याप्तभाव
स्वीकार किया गया है ।

शंका— यदि ऐसा है तो भवके प्रथम समयमें उपपादयोग होना चाहिए ?

समाधान— यह कहना सत्य है, क्योंकि, यह बात हमें इष्ट है ।

शंका— यदि ऐसा है तो प्रमत्तसंयत जीवके दो जीवसमास प्राप्त होते हैं ?

समाधान— ऐसा भी होओ, क्योंकि, इसमें कोई विरोध नहीं है । ऐसा मानने पर
जीवस्थानसूत्रके साथ विरोध नहीं आता, क्योंकि, वहाँ पर औदारिक शरीरके पर्याप्त होने
पर ही संयम होता है, औदारिकशरीरके अपर्याप्त रहते हुए नहीं होता ऐसा मनमें विचार
कर अपर्याप्त जीवसमासका निषेध किया है । शेष कथन सुगम है ।

उससे व्यवतिरिक्त अजघन्य प्रदेशाग्र है ॥ ४९० ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

जघन्य पदकी अपेक्षा तैजसशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है ॥ ४९१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

एकान्तानुवृद्धि योगसे वृद्धिको प्राप्त होनेवाला और जघन्य योगसे युक्त जो
अन्यतर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीव है वह तैजसशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी
है ॥ ४९२ ॥

जहा इदरेसि सरीराणं जहणुववादजोगम्मि चेव एगसमयपबद्धं घेत्तूण जहण-
सामित्तं दिज्जं तथा तेयासरीरस्स किण्ण दिज्जदे ? ण, तत्थ पुव्वसंचिदसमयपबद्धाणं
संभवेण तेयासरीरस्स जहणभावाणुववत्तीदो । उवरि जहणएयंताणुवड्ढीए वड्डुमा-
णस्स पदेसवड्ढी चेव होदि तदो एयंताणुवड्डिअद्धाए अब्भंतरे ॥ कथं जहणसामित्तं
दिज्जदे ? ण एस दोसो, एयंताणुवड्डिजोगेण आगच्छमाणपदेसगादो परिणामजोगे-
णागदसमयपबद्धाणं गलमाणामसंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । जदि एवं तो सुहुमणिगोद-
जीवअपज्जत्तं मोत्तूण अण्णेसिमेयंताणुवड्ढीए जहणसामित्तं किण्ण दिज्जदे ? ण,
णण्णेसि जहणएयंताणुवड्डिजोगेहि सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स जहणएयंताणुवड्डिजोगा-
णमसंखेज्जगुणहीणत्तुवलंभादो । किं च सण्णिपंचिदियपज्जत्तएसु तेजइयसरीरणोक्कम्म-
उवकस्सट्ठिदो छावट्ठिसागरोवममेत्ता, सुहुमेइंदिएसु पुण अंतोमुहुत्तमेत्ता, अणंतगुणही-
णकसायत्तादो । पंचिदियसमयपबद्धेहिंतो सुहुमेइंदियसमयपबद्धा असंखेज्जगुणहीणा
असंखेज्जगुणहीणजोगत्तादो । तेण सुहुमणिगोदेसु ॥ पंचिदियसमयपबद्धे गालिय तत्थ
संचिदसमयपबद्धे परिणामजोगेणागदे अंतोमुहुत्तमेत्ते सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तएयंताणु-

शंका-- जिस प्रकार इतर शरीरोंका जघन्य उपपादयोगमें ही एक समयप्रबद्धको ग्रहण कर जघन्य स्वामित्व दिया है उस प्रकार तैजसशरीरका क्यों नहीं दिया जाता ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, वहाँ पर पूर्वसंचित समयप्रबद्ध सम्भव होने से तैजसशरीरका जघन्यपना नहीं बन सकता ।

शंका-- ऊपर जघन्य एकान्तानुवृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त होनेवाले जीवके प्रदेशवृद्धि ही होती है, इसलिए एकान्तानुवृद्धिके कालके भीतर जघन्य स्वामित्व कैसे दिया जा सकता है ?

समाधान-- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, एकान्तानुवृद्धि योगके द्वारा आनेवाले प्रदेशाग्रेसे परिणामयोगसे आये हुए समयप्रबद्धोंके गलनेवाले प्रदेशाग्रेसे असंख्यातगुणे उपलब्ध होते हैं ।

शंका-- यदि ऐसा है तो सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तिकको छोड़कर अन्य जीवोंके एकान्तानुवृद्धिके द्वारा जघन्य स्वामित्व क्यों नहीं दिया जाता ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, अन्य जीवोंके जघन्य एकान्तानुवृद्धि योगसे सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तिक जीवके जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणे हीन उपलब्ध होते हैं । दूसरे संज्ञी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तिकोंमें तैजसशरीर नोक्कर्मकी उत्कृष्ट स्थिति छायासठ सागरप्रमाण होती है परन्तु सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होती है, क्योंकि, उनके अनन्तगुणी हीन कषाय पाई जाती है । तथ पञ्चेन्द्रिय जीवके समयप्रबद्धसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवके समयप्रबद्ध असंख्यातगुणे हीन होते हैं, क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके असंख्यातगुणा हीन योग पाया जाता है, इसलिए सूक्ष्म निगोद जीवोंमें पञ्चेन्द्रियसम्बन्धी समयप्रबद्धोंको गलाकर वहाँ परिणामयोगसे आये हुए अन्तर्मुहूर्तप्रमाण संचित हुए समयप्रबद्धोंको सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवके एकान्तानुवृद्धि योगकालके भीतर गलाकर एकान्तानुवृद्धियोगसे अन्तर्मुहूर्तप्रमाण समय-

❁ ता० का० प्रत्योः 'अद्धाणं अब्भंतरे' इति पाठः ।

❁ ता० प्रती 'अणंतगुणहीणकसायत्तादो । तेण सुहुमणिगोदेसु' इति पाठः ।

गालिय अंतोमुहुत्तपमाणमेयंताणुवड्डिजोगसमयपबद्धेसु गहिदेसु तेजासरीरस्स जहण्ण-
दव्वं होदि त्ति वत्तव्वं । णिल्लेवणट्ठाणाणं पमाणमुक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखे०
भागो त्ति भणिदं तेण कम्मट्ठिदीए असंखेज्जभागमेत्तसमयपबद्धाणं संचएण सामित्त-
चरिमसमए होदव्वमिदि ? ण, पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागमेत्ताणि णिल्लेवणट्ठा-
णाणि होति त्ति कम्मस्स परुविदत्तादो । ण च कम्म णोकम्माणमेयत्तं, कारण-कज्जा-
णमेयत्तविरोहादो । तेजासरीरणोकम्मस्स जहण्णट्ठिदी एइंदियजीवसमासेसु सुहुमणि-
गोदअपज्जत्तएयंताणुवड्डिकालादो थोवे त्ति कुदो णव्वदे ? अण्णदरस्से त्ति वयणादो ।
अण्णहा खविदकम्मंसियलक्खणेण सुहुमणिगोदेसु हिडिदूण आगदो त्ति भणेज्ज ? ण
च एवं, तदो णव्वदे जहण्णट्ठिदी एयंताणुवड्डिकालादो थोवे त्ति ।

तव्वदिरित्तमजहण्णं ॥ ४९३ ॥

सुगमं ।

जहण्णपदेण कम्मइयसरीरस्स जहण्णयं पदेसगं कस्स ॥ ४९४ ॥

सुगमं ।

अण्णदरस्स जीवो सुहुमणिगोदजीवेसु पलिदोवमस्स असंखे-

प्रबद्धोके ग्रहण करने पर तैजसशरीरका जघन्य द्रव्य होता है ऐसा यहाँ कहना चाहिए ।

शंका— निर्लेपनस्थानोंका उत्कृष्ट प्रमाण पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है ऐसा कहा है, इसलिए स्वामित्वके अन्तिम समयमें कर्मस्थितिके असंख्यातवें भागप्रमाण समय-प्रबद्धोका संचय होना चाहिए ।

समाधान— नहीं, क्योंकि, पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपस्थान होते हैं यह कर्मकी अपेक्षा कथन किया है । और कर्म तथा नोकर्म एक नहीं है, क्योंकि, कारण और कार्यको एक होनेमें विरोध आता है ।

शंका— एकेन्द्रिय जीवसमासोंमें तैजसशरीर नोकर्मकी जघन्य स्थिति सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तके एकान्तानुवृद्धिकालसे स्तोक है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— ' अन्यतरके ' इस वचनसे जाना जाता है । अन्यथा क्षपितकर्मांशिक-लक्षणसे सूक्ष्म निगोद जीवोंमें घूमकर आया हुआ जीव ऐसा कहते । परन्तु ऐसा नहीं कहा है । इससे जाना जाता है कि जघन्य स्थिति एकान्तानुवृद्धिके कालसे स्तोक है ।

उससे व्यतिरिक्त अजघन्य प्रदेशाग्र है ॥ ४९३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जघन्य पदकी अपेक्षा कार्मणशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है । ४९४।

यह सूत्र सुगम है ।

अन्यतर जो जीव सूक्ष्म निगोद जीवोंमें पत्यका असंख्यातवां भाग कम

ज्जदिभागेण ऊणयं कम्मट्ठिविमच्छिदो । एवं जहा वेयणाए वेयणीयं
तहा णेयव्वं । णवरि थोवावसेसे जीविदव्वए त्ति चरिमसमयभव-
सिद्धिओ जादो तस्स चरिमसमयभवसिद्धियस्स तस्स कम्मइयसरी-
रस्स ॐ जहण्णयं पदेसगं ॥ ४९५ ॥

जहा वेयणाए जहण्णदव्वविहाणे परुविदं तहा परुवेयव्वं ।

तव्वदिरित्तमजहण्णं ॥ ४९६ ॥

सुगमं ।

एवं पदमीमांसा समप्ता ।

अप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवं ओरालियसरीरस्स पदेसगं ॥ ४९७ ॥

कुदो ? साभावियादो ।

वेउव्वियसरीरस्स पदेसगमसंखेज्जगुणं ॥ ४९८ ॥

को गुण० ? सेडोए असंखे० मागो । एसो चेव गुणगारो होदि त्ति कुदो
णव्वदे ? पुव्वं परुविदगुणगाराणुयोगद्वारादो ।

कर्मस्थितिप्रमाण काल तक रहा । इस प्रकार जैसे वेदना अनुयोगद्वारमें वेदनीय-
कर्मकी अपेक्षा कहा है वैसे जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि जीवितव्यके
स्तोक प्रमाणमें शेष रहने पर अन्तिम समयवर्ती भवसिद्ध हुआ वह अन्तिम समय-
वर्ती भवसिद्ध जीव कर्मणशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी है ॥ ४९५ ॥

जिस प्रकार वेदना अनुयोगद्वारमें जघन्य द्रव्यविधान परुवणाके समय कहा है उस
प्रकार कथन करना चाहिए ।

उससे व्यतिरिक्त अजघन्य प्रदेशाग्र है ॥ ४९६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

इस प्रकार पदमीमांसा समाप्त हुई ।

अल्पबहुत्वकी अपेक्षा औदारिकशरीरका प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है ॥ ४९७ ॥

क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

उससे वैक्रियिकशरीरका प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ॥ ४९८ ॥

गुणकार क्या है ? जगध्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

शंका— यह ही गुणकार होता है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— पूर्वमें कहे गये गुणकार अनुयोगद्वारसे जाना जाता है ।

❖ ता० प्रती जादो तस्स कम्मइयसरीरस्स ' इति पाठा ।

आहारसरीरस्स पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ॥ ४९९ ॥

को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो ।

तेयासरीरस्स पदेसग्गमणंतगुणं ॥ ५०० ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिध्दानमणंतभागो ।

कम्मइयसरीरस्स पदेसग्गमणंतगुणं ॥ ५०१ ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिध्दानमणंतभागो ।

एवमप्पाबहुए समत्ते सरीरपरूवणा समत्ता होदि ।

सरीरविस्सासुवचयपरूवणदाए तत्थ इमाणि छ अणुयोगद्दाराणि अविभागपडिच्छेदपरूवणा वर्गणपरूवणा फड्डयपरूवणा अंतरपरूवणा सरीरपरूवणाए अप्पाबहुए त्ति ॥ ५०२ ॥

को विस्सासुवचओ नाम । पंचणं सरीराणं परमाणुपोग्गलाणं जे णिध्दादिगुणेहि तेषु पंचसरीरपोग्गलेसु लग्गा पोग्गला तेसि विस्सासुवचओ त्ति सण्णा । तेसि विस्सासुवचयाणं संबंधस्स जो कारणं पंचसरीरपरमाणुपोग्गलगओ णिध्दादिगुणो तस्स वि विस्सासुवचओ त्ति सण्णा, कारणे कज्जुवयारादो । एदेहि छहि अणुयोग—

उससे आहारकशरीरका प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ॥ ४९९ ॥

गुणकार क्या है ? जगध्रेणिके असंख्यातवे भागप्रमाण गुणकार है ।

उससे तैजसशरीरका प्रदेशाग्र अनन्तगुणा है ॥ ५०० ॥

गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उससे कामर्जणशरीरका प्रदेशाग्र अनन्तगुणा है ॥ ५०१ ॥

गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है ।

इस प्रकार अल्पबहुत्वके समाप्त होने पर शरीरपरूवणा समाप्त होती है ।

शरीरविस्त्रसोपचयपरूवणाकी अपेक्षा वहां ये छह अनुयोगद्वोर होते हैं—
अविभागप्रतिच्छेदपरूवणा, वर्गणापरूवणा, स्पर्धकपरूवणा, अन्तरपरूवणा, शरीरपरूवणा और अल्पबहुत्व ॥ ५०२ ॥

शंका— विस्त्रसोपचय किसकी संज्ञा है ?

समाधान— पाँच शरीरोंके परमाणुपुद्गलोंके मध्य जो पुद्गल स्निग्ध आदि गुणोंके कारण उन पाँच शरीरोंके पुद्गलोंमें लगे हुए हैं उनकी विस्त्रसोपचय संज्ञा है । उन विस्त्रसोपचयोंके सम्बन्धका पाँच शरीरोंके परमाणु पुद्गलगत स्निग्ध आदि गुणरूप जो कारण है उसकी भी विस्त्रसोपचय संज्ञा है, क्योंकि, यहाँ कारणमें कार्यका उपचार किया है ।

द्वारेहि बन्धनगुणस्स परुवणा कीरदे । कारणे अवगदे तवकारणानुसारिस्स कज्जस्स वि अवगमादो ।

अविभागपडिच्छेदपरुवणदाए एक्केक्कम्मि ओरालियपदेसे केवडिया* अविभागपडिच्छेदा ॥ ५०३ ॥

किं संखेज्जा किमसंखेज्जा किमणंता त्ति एदेण पुच्छा कदा ।

अणंता अविभागपडिच्छेदा सव्वजीवेहि अणंतगुणा ॥ ५०४ ॥

को अविभागपडिच्छेदो नाम ? एगपरमाणुमिह जा जहणिया वड्ढी† सो अविभागपडिच्छेदो नाम । तेण पमाणेण परमाणूणं जहणगुणे उक्कस्सगुणे वा छिज्जमाणे अणंताविभागपडिच्छेदा सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता होंति ।

एवडिया अविभागपडिच्छेदा ॥ ५०५ ॥

जेत्तिया अविभागपडिच्छेदा एक्केक्कम्मिह परमाणुमिह विस्सासुवचयपरमाणू एक्केक्कम्मिह परमाणुमिह एगबन्धनबद्धा तत्तिया चेव, कज्जस्स कारणानुसारित्त--

अब इन छह अनुयोगद्वारोंका अवलम्बन लेकर बन्धनगुणका कथन करते हैं, क्योंकि, कारणका ज्ञान हो जाने पर उस कारणके अनुकूल कार्यका भी ज्ञान हो जाता है ।

अविभागप्रतिच्छेद प्ररूपणाकी अपेक्षा एक एक औदारिक प्रदेशमें कितने अविभागप्रतिच्छेद होते हैं ॥ ५०३ ॥

क्या संख्यात होते हैं, क्या असंख्यात होते हैं या क्या अनन्त होते हैं इस प्रकार इस सूत्र द्वारा पृच्छा की गई है ।

अनन्त अविभागप्रतिच्छेद होते हैं जो कि सब जीवोंसे अनन्तगुणे होते हैं ॥ ५०४ ॥

शंका-- अविभागप्रतिच्छेद किसे कहते हैं ?

समाधान-- एक परमाणुमें जो जघन्य वृद्धि होती है उसे अविभागप्रतिच्छेद कहते हैं ।

उस प्रमाणसे परमाणुओंके जघन्य गुण अथवा उत्कृष्ट गुणका छेद करनेपर सब जीवोंसे अनन्तगुणे अनन्त अविभागप्रतिच्छेद होते हैं ।

इतने अविभागप्रतिच्छेद होते हैं ॥ ५०५ ॥

एक एक परमाणुमें जितने अविभागप्रतिच्छेद होते हैं, एक एक परमाणुमें एक बन्धनबद्ध विस्सोपचय परमाणु भी उतने ही होते हैं, क्योंकि, कार्य कारणके अनुसार देखा जाता है ।

❁ अ० का० प्रत्यो: ' -पदेसा केवडिया ' इति पाठः ।

❁ सा० प्रती ' जो जहणिया वड्ढी अ० का० प्रत्यो: ' जा जहणियावड्ढी ' इति पाठः ।

दंसणादो । एत्थ सव्वजीवेहि अणंतगुणत्तं पडि सरिसत्तं, ण संखाए । कुदो ? जहण्ण-
अणुभागेण लग्गथोव* विस्सासुवच्चयणिप्फणजहणपत्तेयसरीरवग्गणादो ॐ जहण्णाणु-
भागादो अणंतगुणाणुभागेणागदविस्सासुवच्चयणिप्फणउक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए
अणंतगुणत्तप्पसंगादो । कथं विस्सासुवच्चयाणमविभागपडिच्छेदसण्णा ? कज्जे कारणु-
वयारादो । अविभागपडिच्छेदकज्जविस्सासुवच्चयाणं पि तव्ववएससिद्धीए ।

वग्गणपरूवणदाए अणंता अविभागपडिच्छेदा सव्वजीवेहि
अणंतगुणा एया वग्गणा भवदि ॥ ५०६ ॥

जहण्णवग्गणाए उक्कस्सवग्गणाए अजहण्ण-अणुक्कस्सवग्गणाए अविभाग-
पडिच्छेदाणं पमाणं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेतविस्सासुवच्चयाणमुवलंभादो ।

एवमणंताओ वग्गणाओ अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाण-
मणंतभागो* ॥ ५०७ ॥

एत्तियाओ वग्गणाओ घेतूण एगमोरालियसरीरट्ठाणं होदि । एवमसंखेज्जलोग-
मेत्तसव्वट्ठाणाणं पत्तेयं पत्तेयं अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तवग्गणाओ
होति ति परूवेदव्वं । असंखेज्जलोगमेत्तसव्वजीवरासीसु अट्ठकं पडि गुणगारसरूवेण

यहाँ पर सब जीवोंसे अनन्तगुणत्वकी अपेक्षा समानता है, संख्याकी अपेक्षा नहीं, क्योंकि,
जघन्य अनुभागके कारण लगे हुए स्तोक विस्सोपचर्योंसे निष्पन्न जघन्य प्रत्येकशरीरवर्गणाकी
अपेक्षा जघन्य अनुभागसे अनन्तगुणे अनुभागके कारण आये हुए विस्सोपचर्योंसे निष्पन्न
उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणाके अनन्तगुणे होनेका प्रसंग आता है ।

शंका-- विस्सोपचर्योंकी अविभागप्रतिच्छेद संज्ञा कैसे है ?

समाधान-- कार्यमें कारणका उपचार करनेसे अविभागप्रतिच्छेदोंके कार्यरूप विस्स-
सोपचर्योंकी वह संज्ञा सिद्ध होती है ।

वर्गणाप्ररूपणाकी अपेक्षा सब जीवोंसे अनन्तगुणे ऐसे अनन्त अविभागप्रति-
च्छेदोंकी एक वर्गणा होती है ॥ ५०६ ॥

यह जघन्य वर्गणा, उत्कृष्ट वर्गणा और अजघन्य अनुत्कृष्ट वर्गणाका प्रमाण है,
क्योंकि, सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्सोपचर्य परमाणु उपलब्ध होते हैं ।

इस प्रकार अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण अनन्त
वर्गणायें होती हैं ॥ ५०७ ॥

इतनी वर्गणाओंका आश्रय लेकर एक औदारिकशरीरस्थान होता है । इस प्रकार असंख्यात
लोकप्रमाण सब स्थानोंकी अलग अलग अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण
वर्गणायें होती हैं ऐसा कथन करना चाहिए । अष्टांकके प्रति असंख्यात लोकप्रमाण सब जीवराशियों

* का० प्रती 'लग्ग थोव' इति पाठः । * अ० प्रती '—णिप्फणपत्तेयसरीरवग्गणादो' इति पाठः ।

* ता० प्रती 'सिद्धाणमणंतभागा' इति पाठः ।

पविट्ठासु वि वर्गणाओ अभवसिद्धिएहि अणंतगुणाओ सिद्धाणमणंतभागमेत्ताओ चेव
होति, जहणवग्गणअविभागपडिच्छेदेहि तो तत्थ जहणएगेगवग्गणाए सब्वजीवेहि
अणंतगुणमेत्तअविभागपडिच्छेदुवलंभादो ।

**फडुयपरुवणदाए अणंताओ वर्गणाओ अभवसिद्धिएहि अणं-
गुणो सिद्धाणमणंतभागो तमेग फडुयं भवदि ॥ ५०८ ॥**

एत्तियाहि चेव वर्गणाहि एगं फडुयं होदि त्ति कुदो णव्वदे ? एदम्हादो चेव
सुत्तादो । किं फडुयं णाम ? जत्थ कमवड्ढी कमहाणी च विस्सदि तं फडुयं । को
कमो ? पढमवग्गणादो विदियवग्गणा जत्तिएण वड्ढिदा तत्तियमेत्तेणेव अणंतवरिम-
वग्गणाए जा वड्ढी सो कमो णाम । जत्थ एसो कमो अत्थि तमेगं फडुयं । एदम्हि
कमे फिट्ठे फडुयंतरं होदि । एवं सब्वफडुयाणं पि पत्तेयं पत्तेयं वत्तव्वं ।

**एवमणंताणि फडुयाणि अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाण-
मणंतभागो ॥ ५०९ ॥**

एवडियाणि फडुयाणि घेत्तूण एगेगमोरालियसरीरद्वाणं होदि । एत्थ अणंत-

के गुणकाररूपसे प्रविष्ट होने पर भी वर्गणायें अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें
भागप्रमाण ही होती हैं, क्योंकि, जघन्य वर्गणके अविभागप्रतिच्छेदोंसे वहाँ पर जघन्य एक एक
वर्गणके अविभागप्रतिच्छेद सब जीवोंसे अनन्तगुणे उपलब्ध होते हैं ।

**स्पर्धकप्ररूपणाकी अपेक्षा अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भाग-
प्रमाण जो अनन्त वर्गणायें हैं वे मिलकर एक स्पर्धक होता है ॥ ५०८ ॥**

शंका-इतनी ही वर्गणायें मिलकर एक स्पर्धक होता है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान- इसी सूत्रसे जाना जाता है ।

शंका-स्पर्धक किसे कहते हैं ?

समाधान-जहाँ पर क्रमवृद्धि और क्रमहानि दिखाई देती है उसे स्पर्धक कहते हैं ।

शंका-क्रम क्या है ?

समाधान-प्रथम वर्गणसे द्वितीय वर्गणा जितने अविभागप्रतिच्छेदोंसे वृद्धिको प्राप्त
हुई है उतने ही अविभागप्रतिच्छेदोंसे जो अनन्तर उपरिम वर्गणामें वृद्धि है वह क्रम है ।
जहाँ पर यह क्रम है वह एक स्पर्धक है । इस क्रमके बिगडने पर दूसरा स्पर्धक प्रारम्भ होता
है । इस प्रकार सब स्पर्धकोंका अलग अलग कथन करना चाहिए ।

**इस प्रकार अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण अनन्त
स्पर्धक होते हैं ॥ ५०९ ॥**

इतने स्पर्धकोंको मिला कर एक एक औदारिकशरीरस्थान होता है । यहाँ पर अनन्त-

भागवद्धि-असंखेज्जभागवद्धि-संखेज्जभागवद्धि-संखेज्जगुणवद्धि-असंखेज्जगुणवद्धि-अणं — तगुणवद्धीओ घेतूण एगं छट्ठाणं होदि । एरिसाणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि छट्ठाणाणि होति त्ति घेतव्वं । तेसि परूवणाए कीरमाणाए जहा भावविहाणे परूविदं तथा परूवेदव्वं ।

अंतरपरूवणदाए एक्केक्कस्स फडुयस्स केवडियमंतरं ॥५१०॥

सुगमं ।

सव्वजीवेहि अणंतगुणा । एवडियमंतरं ॥ ५११ ॥

एगेण दोहि^२ तीहि संखेज्जेहि असंखेज्जेहि वा अविभागपडिच्छेदेहि फडु — यंतरं ण निप्पज्जदि कितु सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तअविभागपडिच्छेदेहि चेव फडु — यंतरं निप्पज्जदि त्ति घेतव्वं । ट्ठाणंतरपरूवणा एत्थ किण्ण कदा ? ण, फडुयंतरे अवगदे ट्ठाणंतरस्स वि अवगमादो ।

सरीरपरूवणदाए अणंता अविभागपडिच्छेदा सरीरबंधणगुण-पण्णच्छेदणनिप्पण्णा ॥ ५१२ ॥

सरीरं सहावो सीलमिदि एयट्ठो । तस्स परूवणदाए अणंता अविभागपडिच्छेदा होति त्ति पुव्वमविभागपडिच्छेदपरूवणाए परूविदं । ते कत्तो निप्पण्णा त्ति पुच्छिदे भागवद्धि, असंख्यातभागवद्धि, संख्यातभागवद्धि, संख्यातगुणवद्धि, असंख्यातगुणवद्धि और अनन्तगुणवद्धि ये मिला कर एक षट्स्थान होता है । ऐसे असंख्यात लोकरप्रमाण षट्स्थान होते हैं ऐसे यहाँ ग्रहण करना चाहिए । उनका कथन करने पर जिस प्रकार भावविधानमें कथन किया है उस प्रकार करना चाहिए ।

अन्तरप्ररूपणाकी अपेक्षा एक एक स्पर्धकका कितना अन्तर है । ५१० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सब जीवोंसे अनन्तगुणा अन्तर है । इतना अन्तर है ॥ ५११ ॥

एक, दो, तीन, संख्यात और असंख्यात अविभागप्रतिच्छेदोंका आश्रय लेकर स्पर्धकोंका अन्तर नहीं उत्पन्न होता है किन्तु सब जीवोंसे अनन्तगुणे अविभागप्रतिच्छेदोंका आश्रय लेकर ही स्पर्धकोंका अन्तर उत्पन्न होता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए ।

शंका— यहाँ पर स्थानोंके अन्तरका कथन क्यों नहीं किया ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, स्पर्धकोंके अन्तरका ज्ञान होने पर स्थानोंके अन्तरका भी ज्ञान हो जाता है ।

शरीरप्ररूपणाकी अपेक्षा शरीरके बन्धनके कारणभूत गुणोंका प्रज्ञासे छेद करने पर उत्पन्न हुए अनन्त अविभागप्रतिच्छेद होते हैं ॥ ५१२ ॥

शरीर, शील और स्वभाव ये एकार्थवाची शब्द हैं । उसकी प्ररूपणा करने पर अनन्त अविभागप्रतिच्छेद होते हैं ऐसा पहले अविभागप्रतिच्छेद प्ररूपणाके समय

शरीरबंधनगुणपणच्छेदणणिप्पणा । अणंतानंतपोग्गलसमवाओ शरीरं । तैसि पोग्गलाणं जेण गुणेण परोप्परं बंधो होदि सो बंधनगुणो णाम । तस्स गुणस्स पण्ण-
च्छेदणेण बुद्धिच्छेदणेण णिप्पणा पुब्बुत्ता अविभागपडिच्छेदा होंति, गुणेषु अण्णच्छे-
दाणमसंभवादो । पण्णच्छेदणे त्ति वयणेण सेसणवण्णं छेदणाणं पडिसेहो कदो । ताओ
सेसणवणाओ छेदनाओ त्ति वुत्ते तासि परुवणदुमुत्तरमुत्तं भणदि —

छेदणा पुण दसविहा ॥ ५१३ ॥

छिद्यते पृथक्क्रियतेऽनेनेति छेदना । सा च दशविधा भवति संक्षेपेण । तासि
परुवणदुमुत्तरगाहासुत्तं भणदि—

णाम द्रुवणा दवियं शरीरबंधनगुणप्पदेसा य ।

वल्लरि अणुत्तडेसु य उत्पइया पण्णभावे य ॥ ५१४ ॥

तत्थ सच्चित्त-अचित्तदब्बाणि अण्णेहि तो पुध काऊण गण्णा जाणावेदि त्ति
णामच्छेदना । द्रुवणा दुविहा सम्भावासम्भावद्रुवणाभेदेण । सा वि छेदना होदि, ताए
अण्णेसि दब्बाणं सरुवावगमादो । दवियं णाम उत्पाद-ट्टिदि-भंगलक्खणं । तं पि
छेदना होदि, दब्बदो दब्बंतरस्स परिच्छेददंसणादो । ण च एसो असिद्धो, कुडवादो

कह आये हैं । वे किससे निष्पन्न होते हैं ऐसा पूछने पर वे शरीरबन्धके कारणभूत गुणोंका
प्रज्ञासे छेद करने पर उत्पन्न होते हैं यह कहा है । अनन्तानन्त पुद्गलोंके समवायका नाम
शरीर है । उन पुद्गलोंका जिस गुणके कारण परस्पर बन्ध होता है उसका नाम बन्धनगुण
है । उस गुणका प्रज्ञासे छेद करनेके कारण अर्थात् बुद्धिसे छेद करनेके कारण निष्पन्न हुए
पूर्वोक्त अविभागप्रतिच्छेद होते हैं, क्योंकि, गुणोंमें अन्य किसी द्वारा छेदोंका होना सम्भव नहीं
है । ' प्रज्ञाच्छेदन ' इस वचन द्वारा शेष ती प्रकारके छेदोंका निषेध किया है । वे नौ प्रकारके
छेद कौनसे हैं ऐसा पूछने पर उनका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

परन्तु छेदना दस प्रकारकी है ॥ ५१३ ॥

छिद्यते अर्थात् जिसके द्वारा पृथक् किया जाता है उसकी छेदना संज्ञा है । वह
संक्षेपमें दस प्रकारकी होती है । उसका कथन करनेके लिए आगेका गाथासूत्र कहते हैं—

**नामछेदना, स्थापनाछेदना, द्रव्यछेदना, शरीरबन्धनगुणछेदना, प्रदेशछेदना,
वल्लरिछेदना, अणुछेदना, तटछेदना, उत्पातछेदना और प्रज्ञाभावछेदना इसप्रकार
छेदना दस प्रकारकी है ॥ ५१४ ॥**

उनमेंसे सच्चित्त और अचित्त द्रव्योंको अन्य द्रव्योंसे पृथक् करके जो संज्ञाका ज्ञान कराती है
वह नामछेदना है । स्थापना दो प्रकारकी है—सद्भावस्थापना और असद्भावस्थापना वह भी छेदना
है, क्योंकि, उस द्वारा अन्य द्रव्योंके स्वरूपका ज्ञान होता है । जो उत्पाद, स्थिति और व्ययलक्षण-
वाला है वह द्रव्य कहलाता है । वह भी छेदना है, क्योंकि, द्रव्यके दूसरे द्रव्यका ज्ञान होता हुआ

धण्णणं तुलादो तगरादीणं दंडादो जोयणादीणं परिच्छेदुवलंभादो : पंचणं सरीराणं
बंधनगुणो वि छेदना णाम, पग्गाए छिज्जमाणत्तादो अविभागपडिच्छेदपमाणेण
छिज्जमाणत्तादो वा । पदेसो वि छेदना होदि, उड्ढाहोमज्झादिपदेसेहि सब्बदब्बाणं
छेददंसणादो । कुडारादोहि अडइरुक्खादिखंडणं वल्लरिच्छेदो णाम । परमाणुगद-
एगादिदब्बसंखाएअग्गेसि दब्बाणं संखावगमो अणुच्छेदो णाम । अथवा योग्गला-
गासादीणं निविभागच्छेदो अणुच्छेदो णाम । दोहि वि तडेहिअग्गे नदीपमाणपरिच्छेदो
अथवा दब्बाणं सयमेव छेदो तडच्छेदो णाम । ण च पदेसच्छेदेअसो पददि, तस्स
बुद्धिकज्जत्तादोअग्गे । ण वल्लरिच्छेदे पददि, तस्स पउरुसेयत्तादो । णाणुच्छेदे पददि, पर-
माणुपज्जत्तच्छेदाभावादो । रत्तीए इंदाउह-धूमकेउआदीणमुप्पत्ती पडिमारोहो भूमि-
कंप-रुहिरवरिसादओ च उप्पाइया छेदना णाम, एतैरुत्पातैः राष्ट्रभङ्ग-नृपपातादितर्क-
णात् । मदि-सुद-ओहि-मणपज्जव-केवलणाणेहि छद्दब्बावगमो पण्णभावच्छेदना णाम ।
एवासु दससु छेदणासु णव छेदणाओ अवणिय सरीरबंधनगुणच्छेदणाए गहणं कदं,
अणुच्छेदणेहि एत्थ कज्जाभावादो । ओरालियसरीरस्सेव अविभागपडिच्छेदादि—

देखा जाता है । यह असिद्ध भी नहीं है, क्योंकि, कुडव से धान्योंका, तुलासे तगर आदिका
और दण्डसे योजन आदिका परिज्ञान होता हुआ उपलब्ध होता है । पाँच शरीरोंका बन्धनगुण
भी छेदना है, क्योंकि, उसका प्रज्ञाद्वारा छेद किया जाता है । या अविभागप्रतिच्छेदके प्रमा-
णसे उसका छेद किया जाता है । प्रदेश भा छेदना होती है, क्योंकि, ऊर्ध्वप्रदेश, अधःप्रदेश
और मध्यप्रदेश आदि प्रदेशोंके द्वारा सब द्रव्योंका छेद देखा जाता है । कुठार आदिके द्वारा
जङ्गलके वृक्ष आदिका खण्ड करना वल्लरिच्छेदना कहलाती है । परमाणुगत एक आदि द्रव्योंकी
संख्याद्वारा अन्य द्रव्योंकी संख्याका ज्ञान होना अणुच्छेदना कहलाती है । अथवा पुद्गल और
आकाश आदिके निविभाग छेदका नाम अणुच्छेदना है । दोनों ही तटोंके द्वारा नदीके परि-
माणका परिच्छेद करना अथवा द्रव्योंका स्वयं ही छेद होता तटच्छेदना है । इसका प्रदेशछेदमें
अन्तर्भाव नहीं होता, क्योंकि, वह बुद्धिका कार्य है । वल्लरिच्छेदमें भी अन्तर्भाव नहीं होता,
क्योंकि, वह पौरुषेय होता है । अणुच्छेदमें भी अन्तर्भाव नहीं होता, क्योंकि, इसका परमाणु
पर्यन्त छेद नहीं होता । रात्रिमें इन्द्रधनुष और धूमकेतु आदिकी उत्पत्ति तथा प्रतिमारोध,
भूमिकम्प और रुधिरकी वर्षा आदि उत्पातछेदना है, क्योंकि, इन उत्पातोंके द्वारा राष्ट्रभङ्ग
और राजाका पतन आदिका अनुमान किया जाता है । मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनः-
पर्ययज्ञान और केवलज्ञानके द्वारा छह द्रव्योंका ज्ञान होना प्रज्ञाभावछेदना है । यहाँ इन दस
छेदनाओंमें से नौ छेदनाओंको छोड़कर शरीरबन्धनगुणछेदनाका ग्रहण किया है; क्योंकि, अन्य
छेदनाओंसे यहां कोई प्रयोजन नहीं है ।

शंका— यहां पर औदारिकशरीरके ही अविभागप्रतिच्छेद आदिका कथन किया है, शेष

❖ ता० प्रती ' परमाणुगम (व) एगादिदब्बसंखाए ' अ० का० प्रत्यो, ' परमाणुगमएगादिदब्बसंखाए '

इति पाठः । ❖ ता० प्रती ' वि तदी (तडे) हि ' अ० का० प्रत्यो: ' वि तदीहि ' इति पाठः ।

❖ अ० प्रती ' पदेसे छेदे ' इति पाठः । ❖ अ० का० प्रत्यो ' बुद्धिकज्जत्तादो ' इति पाठः ।

परूवणा कदा सेससरीराणं किण्ण कदा ? ण, एवकस्स परूवणदाए कदाए तत्तो चेव सेसाणं सरूवावगमादो* । उवरि भण्णमाणअप्पाबहुगादो च णव्वदे जहा सेसाणं पि सरीराणं एसेव परूवणा होदि त्ति । तेसिमविभागपडिच्छेदानमभावे उवरिमअप्पाबहुआणुववत्तीए० ।

अप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स अविभाग-
पडिच्छेदा ॥ ५१५ ॥

ओरालियसरीरस्स अणंतपरमाणूणं अविभागपडिच्छेदसमूहो थोवो होदि ।
कुदो ? साभावियादो ।

वेउव्वियसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा ॥ ५१६ ॥

को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो ।

आहारसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा ॥ ५१७ ॥

को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो ।

तेयासरीरस्स अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा ॥ ५१८ ॥

को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो ।

शरीरोंके अविभागप्रतिच्छेद आदिका कथन क्यों नहीं किया ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, एकका कथन करने पर उसीसे शेषके स्वरूपका ज्ञान हो जाता है । तथा आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्वसे भी जानते हैं कि शेष शरीरोंकी भी यही प्ररूपणा है । यदि उनके अविभागप्रतिच्छेद न हों तो आगे कहा जानेवाला अल्प-बहुत्व नहीं बन सकता है ।

अल्पबहुत्वकी अपेक्षा औदारिकशरीरके अविभागप्रतिच्छेद सबसे स्तोक हैं ॥ ५१५ ॥

औदारिकशरीरके अनन्त परमाणुओंके अविभागप्रतिच्छेदोंका समूह स्तोक है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

उनसे वैक्रियिकशरीरके अविभागप्रतिच्छेद अनन्तगुणे हैं ॥ ५१६ ॥

गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है ।

उनसे आहारकशरीरके अविभाग प्रतिच्छेद अनन्तगुणे हैं ॥ ५१७ ॥

गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है ।

उनसे तेजसशरीरके अविभागप्रतिच्छेद अनन्तगुणे हैं ॥ ५१८ ॥

गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है ।

* ता० प्रती 'सरूवावगमादो' इति पाठः ।

प्रत्योः '—णुववत्ती' इति पाठः ।

✻ ता० प्रती '—णुववत्ती (ए—)' अ० का०

कम्मइयसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा ॥ ५१९ ॥

को गुणगारो ? सबजीवेहि अणंतगुणो । एवं छहि अनुयोगद्वारेहि बंधनगुण-
स्सेव परूवणा कदा । तत्थतणविस्सासुवचयाणं किण्ण परूवणा कीरदे ? ण, तक्का-
रणपरूवणाए कदाए तेसि पि परूवणा कदा चेव होदि त्ति तेसि पुध परूवणा ण
कीरदे । तम्हा तेसि विस्सासुवचयाणं पि एदं चेव अप्पाबहुअं परूवेदव्वं । ण च
अविभागपडिच्छेदमेत्तविस्सासुवचएहि होदव्वं चेवे त्ति णियमो अत्थि, नावइयं
कारणानि कार्यवन्ति-भवन्तीति न्यायात् । एवं सरीरविस्सासुवचयपरूवणा समत्ता ।

विस्सासुवचयपरूवणाए एककेकम्मिह जीवपदेसे केवडिया
विस्सासुवचया उवचिदा ॥ ५२० ॥

एसा विस्सासुवचयपरूवणा पुणरुत्ता, सरीरविस्सासुवचयपरूवणाए चेव विस्सा-
सुवचयाणं परूविदत्तादो । तदो एसा ण परूवेदव्वा त्ति ? ण एस दोसो, सरीरभूद-
पंचणं सरीराणं विस्सासुवचयस्स सरीरविस्सासुवचयपरूवणाए परूवणा कदा । संपहि
एदोए विस्सासुवचयपरूवणाए जीवेण सुक्काणं पंचणं सरीराणं पोमालाण-

उनसे कार्मणशरीरके अविभागप्रतिच्छेद अनन्तगुणे हैं ॥ ५१९ ॥

गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है ।

शंका-- इस प्रकार छह अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर बन्धनगुणकी ही प्ररूपणा की
है । वहां रहनेवाले विस्त्रसोपचयोंकी प्ररूपणा क्यों नहीं करते ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, उनके कारणकी प्ररूपणा करने पर उनकी भी प्ररूपणा
की गई के समान होती है, इसलिए उनकी अलगसे प्ररूपणा नहीं करते हैं । इसलिए उन
विस्त्रसोपचयोंकी अपेक्षा भी यही अल्पबहुत्व कहना चाहिए । और विस्त्रसोपचय अविभाग-
प्रतिच्छेदप्रमाण होने ही चाहिए ऐसा कोई नियम नहीं है, क्योंकि, कारण नियमसे कार्यवाले
नहीं होते हैं ऐसा न्याय है ।

इस प्रकार शरीरविस्त्रसोपचयप्ररूपणा समाप्त हुई ।

विस्त्रसोपचयप्ररूपणाकी अपेक्षा एक एक जीवप्रदेश पर कितने विस्त्रसोपचय
उपचित हैं ५२० ॥

शंका-- यह विस्त्रसोपचयप्ररूपणा पुनरुक्त है, क्योंकि, शरीरविस्त्रसोपचय प्ररूपणाके
समय ही विस्त्रसोपचयोंका कथन कर आये हैं, इसलिए इसका कथन नहीं करना चाहिए ?

समाधान-- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, शरीरभूत पाँच शरीरोंके विस्त्रसोपचयका
शरीरविस्त्रसोपचयप्ररूपणाके समय कथन किया है । अब इस विस्त्रसोपचयप्ररूपणाके द्वारा
जिन्होंने औदयिक भावकी नहीं छोड़ा है और जो समस्त लोकाकाशके प्रदेशोंको व्याप्त कर

मच्चत्तओइइयभावानं सव्वलोगागासपदेसमाऊरिय द्वियाणं विस्सामुवचय-
परूवणा फीरदे, तदो पउणरुत्तियाभावादो परूवेदव्वा त्ति सिद्धं । एक्केक्कम्हि
जीवपदेसे इदि उत्ते एक्केक्कम्हि परमाणुम्हि त्ति घेतव्वं । कथं परमाणुस्स जीव-
पदेसणा? आधेये आधारोवयारादो । ण च जीवादो अवेदाणमाधाराधेयभावो णत्थि,
भूदपुव्वगदिणाएण तदुवलंभादो । जीव-पोग्गलाणमण्णोण्णाणुगयत्ते परमाणुस्स वि
जीवपदेसव्वएसाविरोहादो वा । सेसं सुगमं ।

अणंता विस्सामुवचया उवचिदा सव्वजीवेहि अणंतगुणा ॥ ५२१ ॥

पंचणं सरीराणं एक्केक्को परमाणू जीवमुक्को वि संतो सव्वजीवे अणंत-
गुणमेत्तविस्सामुवचएहि उवचिदो होदि । तेण कारणेण एदे ध्रुवस्कंधसांतरणिरंतर-
वगणामु सरिसधणिया होदूण णिवदंति ।

ते च सव्वलोगागदेहि बद्धा ॥ ५२२ ॥

किमट्ठमिदं सुत्तं वुच्चदे ?

एयक्खेतोगाढं सव्वपदेसेहि कम्मणो जोग्गं ।

बंधइ जहुत्तहेऊ सादियमह अणादिय चेदि ॥ २१ ॥

इदि वयणादो जम्हि पदेसे जो जीवो द्विदो तत्थ द्विदा चेव पोग्गला मिच्छत्तादि-

स्थित हैं ऐसे जीवके द्वारा छोड़े गये पाँच शरीरोंको विस्सोपचयपरूवणा करते हैं, इसलिए
पुनरुक्त दोषका अभाव होनेसे उसका कथन करना चाहिए यह सिद्ध होता है ।

एक एक जीवप्रदेश पर ऐसा कहने पर एक एक परमाणुपर ऐसा ग्रहण करना चाहिए ।

शंका-- परमाणुकी जीवप्रदेश संज्ञा कैसे है ?

समाधान-- आधेयमें आधारका उपचार करनेसे परमाणुकी जीवप्रदेश संज्ञा है ।

यदि कहा जाय कि जो जीवके द्वारा नहीं वेदे जा रहे हैं उनमें आधार-आधेयभाव नहीं बन
सकता, सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, भूतपूर्व गतिन्यायके अनुसार आधार-आधे-
यभावकी उपलब्धि हो जाती है । अथवा जीव और पुद्गलोंके परस्परमें अनुगत होने पर
परमाणुकी भी जीवप्रदेश संज्ञा होनेमें कोई विरोध नहीं आता ।

शेष कथन सुगम है ।

अनन्त विस्सोपचय उपचित हैं जो कि सब जीवोंसे अनन्तगुणे हैं ॥ ५२१ ॥

पाँच शरीरोंका एक एक परमाणु जीवसे मुक्त होकर भी सब जीवोंसे अनन्तगुणे
विस्सोपचयोंसे उपचित होता है, इसलिए ये ध्रुवस्कंधसान्तरनिरन्तर वर्गणाओंमें समान
धनवाले हो कर अन्तर्भावको प्राप्त होते हैं ।

वे सब लोकमेंसे आकर बद्ध हुए हैं ॥ ५२२ ॥

शंका-- यह सूत्र किसलिए कहते हैं ?

समाधान-- अपने अपने कहे गये हेतुके अनुसार कर्मके योग्य सादि, अनादि और
सब जीवप्रदेशोंके साथ एक एक क्षेत्रावगाहीपनेको प्राप्त हुआ पुद्गल बंधता है ॥ २१ ॥

इस वचनके अनुसार जिस प्रदेश पर जो जीव स्थित है वहां स्थित जो पुद्गल हैं वे ही

पचवएहि जहा पंचसरुसेण परिणमंति तथा विस्सासुवचया वि किं तत्थ द्विदा चेव बंधमागच्छंति आहो णागच्छंति त्ति पुच्छिदे तण्णिणयत्थमिदं सुत्तमागयं । ते पंच-सरीरक्खंधा सव्वलोगागदेहि विस्सासुवचएहि बध्दा होंति । सव्वलोगागासपदेसद्विधा पोग्गला समीरणादिवसेण गदिपरिणामेण वा आगंतूण तेहि सह बंधमागच्छंति त्ति भणिदं होदि । अहवा एदस्स सुत्तस्स अण्णहा अवयारो कीरदे । तं जहा- ते पंचस-रीरपोग्गला जीवमुक्का होदूण कत्थ अच्छंति त्ति वुत्ते तप्पदेसपरुवणट्ठमिदं सुत्तमा-गदं । सव्वलोगगदा णाम सव्वागासपदेसा, तेहि विरहिदआगासाभावादो । तेहि सव्वागासपदेसेहि ते बध्दा सह गदा होंति । पंचसरीरपोग्गला जीवमुक्कसमए चेव सव्वागासमावूरिदूण अच्छंति त्ति भणिदं होदि । संपहि तत्थ तेसिमवट्ठाणसरुव-परुवणट्ठमुत्तरसुत्तमागदं—

तेसिं चउव्विहा हाणी-दव्वहाणो खेतहाणी कालहाणी भाव-हाणी चेदि ॥ ५२३ ॥

तेसिं जीवादो विप्फट्ठिय सव्वलोगं गदाणं चउव्विहाए हाणीए परुवणं कस्सामो, अण्णहा तव्विसयणिणयणववत्तीदो ।

मिथ्यात्व आदि कारणोंसे जिस प्रकार पाँच रूपसे परिणमन करते हैं उसी प्रकार वहाँ पर स्थित हुए ही विस्ससोपचय भी क्या बन्धको प्राप्त होते हैं या बन्धको नहीं प्राप्त होते हैं, इस प्रकार इस बातका निर्णय करनेके लिए यह सूत्र आया है ।

वे पाँचों शरीरोंके स्कन्ध समस्त लोकमेंसे आये हुए विस्ससोपचयोंके द्वारा बद्ध होते हैं । सब लोकाकाशके प्रदेशोंपर स्थित हुए पुद्गल समीरण आदिके वशसे या गतिरूप परिणामके कारण आकर उनके साथ सम्बन्धको प्राप्त होते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । अथवा इस सूत्रका अन्य प्रकारसे अवतार कहते हैं । यथा— वे पाँच शरीरोंके पुद्गल जीवसे मुक्त होकर कहाँ पर रहते हैं ऐसा पूछने पर उनके रहनेके प्रदेशका कथन करनेके लिए यह सूत्र आया है । ‘सव्वलोगगदा’ इस पदका अर्थ सब लोकाकाशके प्रदेश हैं, क्योंकि, उनसे रहित आकाशका अभाव है । आकाशके उन सब प्रदेशोंके साथ वे बद्ध हैं अर्थात् उनके साथ रहते हैं । पाँचों शरीरोंके पुद्गल जीवसे मुक्त होनेके समयमें ही समस्त आकाशको व्याप्त कर रहते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । अब वहाँ उनके अवस्थानके स्वरूपका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र आया है—

उनकी चार प्रकारकी हानि होती है— द्रव्यहानि, क्षेत्रहानि, कालहानि और भावहानि ॥ ५२३ ॥

जीवसे अलग हो कर सब लोकको प्राप्त हुए उन पुद्गलोंका चार प्रकारकी हानि—द्वारा कथन करते हैं, अन्यथा उस विषयका निर्णय नहीं हो सकता ।

**द्ववहाणिपरूवणदाए ओरालियसरीरस्स जे एयपदेसियवग-
णाए दव्वा ते बहुआ अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥ ५२४ ॥**

जे ओरालियसरीरणोकम्मपदेसा जीवादो विफट्टसमए चेव अण्णेहि परमाणूहि असंजुत्ता संता सव्वलोगमावूरिय द्विदा तेसि गहिदसलागाओ बहुगाओ । बहुत्तं कुदो णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो । ण च पमाणं पमाणंतरमवेक्खदे, विरोहादो । जीवादो पुधभूदाणं पंचसरीरपोगलानमेसा परूवणा त्ति कुदो णव्वदे ? एयपदेसिय-
वगणाए दव्वा बहुआ त्ति सुत्तादो । ण च पंचसरीरेसु जीवसहिदेसु एयपदेसिय-
वगणाए दव्वमत्थि, अगहणाए गहणभावविरोहादो । अविरोहे वा अभेदो होज्ज,
अणंताणंतपरमाणुसमुदयसमागमेण विणा ओरालियसरीरभावविरोहादो । ते च
परमाणू अणंताणंतेहि विस्सासुवचएहि पादेवकं उवचिदा, तत्थ अणंताणं बंधणगुण-
विभागपडिच्छेदानं संभवादो । ण च परमाणुम्हि ओदइयभावे संते अणंताणंताणं
बंधणगुणाविभागपलिच्छेदानमभावो होदि, विरोहादो* ।

**द्रव्यहानिप्ररूपणाकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी एकप्रदेशी वर्गणाके जो द्रव्य
हैं वे बहुत हैं जो कि अनन्त विस्सासोपचयोंसे उपचित हैं ॥ ५२४ ॥**

जो औदारिकशरीरके नोकर्मप्रदेश जीवसे अलग होनेके समयमें ही अन्य परमाणुओंसे
असंयुक्त होकर सब लोकको व्याप्त कर स्थित हैं उनकी ग्रहण की गई शलाकायें बहुत हैं ।

शंका— इनका बहुत्व किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— इसी सूत्रसे जाना जाता है । और एक प्रमाण अन्य प्रमाणकी अपेक्षा
नहीं करता, क्योंकि, ऐसा माननेमें विरोध आता है ।

शंका— जीवसे पृथक् हुए पाँच शरीरोंके पुद्गलोंकी यह प्ररूपणा है यह किस
प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— एकप्रदेशी वर्गणाके द्रव्य बहुत हैं इस सूत्रसे जाना जाता है । और
जीव सहित पाँच शरीरोंमें एकप्रदेशी वर्गणाका द्रव्य नहीं है, क्योंकि, अग्रहण योग्य वर्गणाके
ग्रहणभावके होनेमें विरोध आता है । यदि अविरोध माना जाता है तो अभेद हो जायगा,
क्योंकि, अनन्तानन्त परमाणुसमुदयसमागमके बिना उनके औदारिकशरीररूप होनेमें विरोध
आता है ।

वे परमाणु अलग अलग अन्तानन्त विस्सासोपचयोंसे उपचित हैं, क्योंकि, उनमें बंधन-
गुणके अनंत अविभागप्रतिच्छेद सम्भव हैं । और परमाणुमें औदयिकभावके रहते हुए बन्धन-
गुणके अनन्तानंत अविभागप्रतिच्छेदोंका अभाव नहीं हो सकता, क्योंकि, ऐसा होनेका विरोध है ।

* ता० प्रती 'ओदइए (हि) भावे' इति पाठः ।

* का० प्रती 'बंधणगुणाविभागपडिच्छेदानमभावो होदि विरोहादो' इति पाठः ।

जे दुपदेसियवर्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सा-
सुवचएहि उवचिदा ॥ ५२५ ॥

जे ओरालियसरीरपदेसा जीवावो विफट्टसमए चेव दो दो अण्णोण्णबंधगया तेसि
ट्टुविदसलागाओ पुव्वसलागाहिं तो विसेसहीणाओ । केत्तियमेत्तेण ? हेट्ठिमसलागाओ
अभवसिद्धिएहि अणंतगुणेण सिद्धाणमणंतभागेण खंडिदूण तत्थ एयखंडमेत्तेण । एसो
वि दोण्हं परमाणूणं समुदयसमागमो अणंतेहि विस्सासुवचएहि पादेक्कमुवचिदो ।

एवं तिपदेसिय-चदुपदेसिय-पंचपदेसिय-छप्पदेसिय-सत्तपदेसिय-
अट्ठपदेसिय-णवपदेसिय-दसपदेसिय-संखेज्जपदेसिय-असंखेज्जपदेसिय-
अणंतपदेसिय-अणंताणंतपदेसियवर्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणं-
तेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥ ५२६ ॥

एत्थ तिपदेसिय-चउप्पदेसादिमु पादेक्कवर्गणाए दव्वा विसेसहीणा अणंतेहि
विस्सासुवचएहि उवचिदा त्ति संबंधो कायव्वो, अण्णहा सुत्तत्थाणुववत्तीदो । अणंत-
विस्सासुवचएहि उवचिदतिपदेसियवर्गणसलागाओ विसेसहीणाओ । तत्तो अणंत-
विस्सासुवचएहि उवचिदचदुप्पदेसियवर्गणसलागाओ विसेसहीणाओ । एवं जेयव्वं

जो द्विप्रदेशी वर्गणाके द्रव्य हैं वे विशेष हीन हैं जो अनन्त विस्रसोपचर्योंसे
उपचित हैं ॥ ५२५ ॥

जो औदारिकशरीरके प्रदेश जीवसे अलग होते समय ही परस्परमें दो दो होकर
बन्धको प्राप्त हैं उनकी स्थापित की गई शलाकायें पूर्वकी शलाकाओंसे विशेष हीन हैं । कितनी
हीन हैं ? अधस्तन शलाकाओंको अवयवोंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाणसे
भाजित कर वहाँ जो एक भाग लब्ध आता है उतनी हीन हैं । यह दो दो परमाणुओंका
समुदयसमागम भी अलग अलग अनन्त विस्रसोपचर्योंसे उपचित है ।

इसी प्रकार त्रिप्रदेशी, चतुःप्रदेशी, पञ्चप्रदेशी, छहप्रदेशी, सातप्रदेशी, आठ-
प्रदेशी, नौप्रदेशी, दसप्रदेशी, संख्यातप्रदेशी, असंख्यातप्रदेशी, अनन्तप्रदेशी और
अनन्तानन्तप्रदेशी वर्गणाके जो द्रव्य हैं वे विशेषहीन हैं जो प्रत्येक अनन्त विस्र-
सोपचर्योंसे उपचित हैं ॥ ५२६ ॥

यहाँ पर त्रिप्रदेशी और चतुःप्रदेशी आदिमें प्रत्येक वर्गणाके द्रव्य विशेष हीन हैं और
अनन्त विस्रसोपचर्योंसे उपचित हैं ऐसा सम्बन्ध करना चाहिए, अन्यथा सूत्रका अर्थ नहीं बन
सकता । अनन्त विस्रसोपचर्योंसे उपचित त्रिप्रदेशी वर्गणाशलाकायें विशेष हीन हैं । उनसे
अनन्त विस्रसोपचर्योंसे उपचित चतुःप्रदेशी वर्गणाशलाकायें विशेष हीन हैं । इस प्रकार अनन्त

जाव अणंतविस्सासुवचएहि उवचिदअणंतानंतपदेसियवगणाए दव्वे त्ति । सव्वत्थ एत्थ भागहारो अभवसिद्धिदएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागमेत्तो । सो किमवट्ठिदो अणवट्ठिदो त्ति ण णव्वदे, गुरुवदेसामावादो ।

तदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण तेसिं पंचविहा हाणी—
अणंतभागहाणी असंखेज्जभागहाणी संखेज्जभागहाणी संखेज्जगुणहाणी
असंखेज्जगुणहाणी ॥ ५२७ ॥

एवमणंतभागहाणीए चेव अणंताणि ट्ठाणाणि गंतूण तदो अंगुलस्स असंखे-
ज्जदिभागमेत्तदव्ववियप्पेसु गदेसु जो विही तप्परुवणट्ठमेदं सुत्तमागदं । तत्थ अंगु-
लस्स असंखेज्जदिभागमेत्तदव्ववियप्पे सेसे सलागाणं पंच हाणीओ होंति । तत्थ एवके-
विकस्से हाणीए अट्ठाणमंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । तं कुदो णव्वदे ? अंगुलस्स असंखे-
ज्जदिभागं गंतूण पंच हाणीओ होंति त्ति वयणादो । अणंतभागहाणीए अंगुलस्स असं-
खेज्जदिभागं णिरुवट्ठाणादो गंतूण सलागाणं असंखेज्जभागहाणी होदि । तदो प्पट्ठिडि
असंखेज्जभागहाणीए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तट्ठाणं णिरंतरं गंतूण संखेज्ज-

विस्ससोपचयोसे उपचित्त अनन्तानन्तप्रदेशी वर्गणाके द्रव्योंके प्राप्त होने तक जानना चाहिए ।
यहां पर सर्वत्र भागहार अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तर्वे भागप्रमाण है । वह क्या
अवस्थित है या अनवस्थित है यह ज्ञात नहीं है, क्योंकि, इस विषयमें गुरुका उपदेश नहीं
पाया जाता ।

उसके बाद अंगुलके असंख्यातर्वे भागप्रमाण स्थान जाकर उनकी पाँच प्रकार
की हानि होती है— अनन्तभागहानि, असंख्यातभागहानि, संख्यातभागहानि,
संख्यातगुणहानि और असंख्यातगुणहानि ॥ ५२७ ॥

इस प्रकार अनन्तभागहानिके द्वारा ही अनन्त स्थान जाकर उसके बाद अंगुलके
असंख्यातर्वे भागप्रमाण द्रव्यविकल्पोंके जाने पर जो विधि है उसका कथन करनेके लिए
यह सूत्र आया है । वहां अंगुलके असंख्यातर्वे भागप्रमाण द्रव्यविकल्पोंके शेष रहने पर
शलाकाओंकी पाँच हानियाँ होती हैं । उनमेंसे एक एक हानिका अध्वान अंगुलके असं-
ख्यातर्वे भागप्रमाण है ।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— अंगुलके असंख्यातर्वे भागप्रमाण स्थान जाकर पाँच हानियाँ होती
हैं इस वचनसे जाना जाता है ।

विवक्षित स्थानसे अनन्तभागहानिद्वारा अंगुलके असंख्यातर्वे भागप्रमाण स्थान जाकर
शलाकाओंकी असंख्यातभागहानि होती है । वहाँसे लेकर असंख्यातभागहानिद्वारा अंगुलके

❖ अ० प्रती '—भागहाणी चेव ' इति पाठः ।

❖ अ० का० प्रत्यो ' दव्ववियप्पेसु जो विही ' इति पाठः ।

भागहाणी होदि । तदो प्पहुडि संखेज्जभागहाणीए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्त-
मद्धानं गंतूण सलागाणं संखेज्जगुणहाणी होदि । तदो प्पहुडि संखेज्जगुणहाणीए
णिरंतरमंगुलस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण असंखेज्जगुणहाणी होदि । तदो प्पहुडि
असंखेज्जगुणहाणी ताव गच्छदि जाव अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो त्ति उवरि ण
गच्छदि, दव्ववियप्पाभावादो त्ति भणिदं होदि । एदेसि पि भागहारणं पमाणमेत्तिय-
मिदि ण णव्वदे अंगुलस्स असंखेज्जदिभागानं चदुण्णं पिसरिसत्तमसरिसत्तं च ण
णव्वदे, विसुट्ठुवएसाभावादो ।

एवं चदुण्णं सरीराणं ॥ ५२८ ॥

जहा ओरालियसरीरस्स पंचविहा हाणी परूविदा तथा एदेसि पि चदुण्णं
सरीराणं जीवादो विफट्टपोगलानं पंचविहा हाणि परूवेयव्वा, विसेसाभावादो ।

खेत्तहाणिपरूवणदाए ओरालियसरीरस्स जे एयपदेसियखेत्तोगाढ-
वर्गणाए दव्वा ते बहुगा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥५२९॥

जे जीवादो अवेदा ओरालियसरीरणोकम्मपदेसा एगो वा दो वा संखेज्जा वा
असंखेज्जा वा अणंता वा एगबंधणबद्धा होदूण एगेगागासपदेसे अच्छंति तेसि दूविद-

असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान निरन्तररूपसे जाकर संख्यातभागहानि होती है । वहाँसे लेकर
संख्यातभागहानिद्वारा अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर शलाकाओंकी संख्यात-
गुणहानि होती है । वहाँसे लेकर संख्यातगुणहानिद्वारा निरन्तररूपसे अंगुलके असंख्यातवें
भागप्रमाण स्थान जाकर असंख्यातगुणहानि होती है । वहाँसे लेकर अंगुलके असंख्यातवें
भागप्रमाण स्थान जाने तक असंख्यातगुणहानि होती है । इससे आगे असंख्यातगुणहानि नहीं
होती है, क्योंकि, आगे द्रव्यविकल्पोंका अभाव है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । इन
भागहारोंका भी प्रमाण इतना है यह ज्ञात नहीं है । तथा चारों अंगुलके असं-
ख्यातवें भागोंका भी प्रमाण सदृश है या असदृश है यह ज्ञात नहीं है, क्योंकि, इस विषयमें
विशिष्ट उपदेशका अभाव है ।

इसी प्रकार चार शरीरोंकी प्ररूपणा करनी चाहिए ॥५२८॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरकी पाँच प्रकारकी हानि कही है उसी प्रकार इन चार
शरीरोंके भी जीवसे अलग हुए पुद्गलोंकी पाँच प्रकारकी हानि कहनी चाहिए, क्योंकि, उससे
इसमें कोई विशेषता नहीं है ।

क्षेत्रहानिप्ररूपणाकी अपेक्षा औदारिकशरीरके जो एक प्रदेश क्षेत्रावगाही
वर्गणाके द्रव्य हैं वे बहुत हैं और वे अनन्त विस्रसोपचर्योंसे उपचित हैं ॥५२९॥

जो जीवसे अवेद औदारिकशरीरनोकर्मप्रदेश हैं वे एक, दो, संख्यात, असंख्यात और
अनन्त एकबंधप्रबद्ध होकर एक एक आकाशप्रदेशमें स्थित हैं । उनकी स्थापित की गई

सलागाओ बहुगाओ । ते च पादेकमणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा । एगपदे-
सियस्स पोग्गलस्स होदु णाम एगागासपदेसे अवट्ठाणं, कथं दुपदेसिय-तिपदेसिय-संखे-
ज्जासंखेज्ज-अणंतपदेसियवखंधाणं तत्थावट्ठाणं ? ण, तत्थ अणंतोगाहणगुणस्स
संभवादो । तं पि कुदो णव्वदे जीव-पोग्गलाणमाणंत्तियत्तण्णहाणुववत्तीदो ।

जे दुपदेसियवखेतोगाढवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतंतेहि
विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥ ५३० ॥

जे जीवादो अवेदा संता ओरालियसरीरणोकम्मवखंधा दुपदेसियवखेतमोगाहिदुण
ट्टिदा तेसि गहिदसलागाओ पुव्विल्लसलागाहिंती विसेसहीणाओ । केत्तियमेत्तेण ?
अणंतरहेट्टिमसलागाणमसंखेज्जदिभागेण । को पडिभागो ? तप्पाओगअसंखेज्जरुव-
पडिभागो । एदे वि अणंतंतेहि विस्सासुवचएहि पादेकमुवचिदा ।

एवं ति-चदु-पंच-छ-सत्त-अट्ठ-णव-दस-संखेज्ज-असंखेज्ज-
पदेसियवखेतोगाढवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतंतेहि विस्सा-
सुवचएहि उवचिदा ॥ ५३१ ॥

शलाकायें बहुत हैं । और वे प्रत्येक अनन्त विस्सोपचयोंसे उपचित हैं ।

शंका-- एकप्रदेशी पुद्गलका एक आकाशप्रदेशमें अवस्थान होओ परन्तु द्विप्रदेशी,
त्रिप्रदेशी, संख्यातप्रदेशी, असंख्यातप्रदेशी और अनन्तप्रदेशी स्कन्धोंका वहाँ अवस्थान कैसे
हो सकता है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, वहाँ अनन्तको अवगाहन करनेका गुण सम्भव है ।

शंका-- यह भी किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- यदि एक आकाशप्रदेशमें अनन्तके अवगाहन करनेका गुण न हो तो
जीवों और पुद्गलोंकी संख्या अनन्त नहीं बन सकती है ।

जो द्विप्रदेशी क्षेत्रावगाही वर्गणाके द्रव्य हैं वे विशेष हीन हैं और वे अनन्त
विस्सोपचयोंसे उपचित हैं ॥ ५३० ॥

जो जीवसे अवेद होते हुए औदारिकशरीरके नोकर्मस्कन्ध द्विप्रदेशी क्षेत्रका अवगाहन
कर अवस्थित हैं उनकी ग्रहण की गई शलाकायें पहिलेकी शलाकाओंसे विशेष हीन हैं । कितनी
हीन हैं ? अनन्तर अधस्तन शलाकाओंके असंख्यातवें भागप्रमाणहीन हैं । प्रतिभाग क्या है ?
तत्प्रायोग्य असंख्यात अङ्क प्रतिभाग है । ये प्रत्येक भी अनन्त विस्सोपचयोंसे उपचित हैं ।

इस प्रकार त्रिप्रदेशी, चतुःप्रदेशी, पञ्चप्रदेशी, षट्प्रदेशी, सप्तप्रदेशी, अष्ट-
प्रदेशी, नवप्रदेशी, दसप्रदेशी, संख्यातप्रदेशी और असंख्यातप्रदेशी क्षेत्रावगाही वर्ग-
णाके जो द्रव्य हैं वे विशेष हीन हैं और अनन्त विस्सोपचयोंसे उपचित हैं । ५३१

एत्थ तियादिसु पादेवकं पदेसियखेतोगाढवर्गणाए दब्बा विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा त्ति संबंधो कायब्बो । तं जहा- तिपदेसियखेतोगाढ-
वर्गणाए दब्बा विसेसहीणा असंखेज्जदिभागेण अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ।
चतुपदेसियखेतोगाढवर्गणाए दब्बा असंखे०भागहीणाए अणंतेहि विस्सासुवचएहि
उवचिदा । एवं णेयव्वं जाव असंखेज्जपदेसियखेतोगाढवर्गणाए दब्बा त्ति । एत्थ
सव्वत्थ णिरंतरमसंखेज्जभागहाणी चेव द्ढविदसलागाणं होदि त्ति घेतव्वं । एवं
णिरंतरकमेण असंखेज्जभागहाणीए आगदसव्वद्धानमंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो?
आहार-तेजा-कम्मइयसरीरउक्कस्सवर्गणाणं पि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताए
चेव ओगाहणाए उवलंभादो । खेतविद्यप्पाणमंगुलस्स असंखेज्जदिभागावसेसे असं-
खेज्जदिभागहाणिस्स असंखेज्जदिभागे जो विही तप्परूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि-

तदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण तेसि चउव्विहाहाणी-
असंखेज्जभागहाणी संखेज्जभागहाणी संखेज्जगुणहाणी असंखेज्ज-
गुणहाणी ॥ ५३२ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे-तदो तप्पाओगणिरुद्धद्धानादो असंखेज्जभागहाणीए

यहां पर प्रत्येक तीन आदि प्रदेशरूप क्षेत्रमें अवगाही वर्गणाके द्रव्य विशेष हीन हैं और अनन्त विस्त्रसोपचर्योसे उपचित हैं ऐसा सम्बन्ध करना चाहिए । यथा त्रिप्रदेशी क्षेत्रमें अवगाही वर्गणाके द्रव्य विशेष हीन हैं । विशेषका प्रमाण असंख्यातवां भाग है । ये अनन्त विस्त्रसोपचर्योसे उपचित हैं । चतुःप्रदेशी क्षेत्रमें अवगाही वर्गणाके द्रव्य असंख्यातवें भागहीन हैं और वे अनन्त विस्त्रसोपचर्योसे उचित हैं । इस प्रकार असंख्यातप्रदेशी क्षेत्रमें अवगाहना करके स्थित हुए वर्गणाके द्रव्योंके प्राप्त होनेतक ले जाना चाहिए । यहां पर सर्वत्र स्थापित की गई शलाकाओंकी निरन्तर असंख्यात भागहानि ही होती है ऐसा ग्रहण करना चाहिए । इस प्रकार निरन्तर क्रमसे असंख्यातभागहानिरूपसे आया हुआ सर्वअध्वान अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है, क्योंकि, आहारकशरीर, तंजसशरीर और कामर्णशरीरकी उत्कृष्ट वर्गणाओंकी भी अवगाहना अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण ही उपलब्ध होती है । अब क्षेत्र विकल्पोंके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण शेष रहने पर असंख्यातभागहानिके असंख्यातवें भागमें जो विधि होती है उसका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

उससे अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर उनकी चार प्रकारकी हानि होती है- असंख्यातभागहानि, संख्यातभागहानि, संख्यातगुणहानि और असंख्यातगुणहानि ॥ ५३२ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं-- उससे अर्थात् तत्प्रायोग्य निरुद्ध क्षेत्रसे असंख्यात-

णिरंतरमंगुलस्स असंखे० भागं गंतूण सलामाणं संखेज्जभागहाणी होवि । तदो संखे-
ज्जभागहाणीए उवरि णिरंतरमंगुलस्स असंखे० भागं गंतूण पुणो संखे० गुणहाणी
होवि । तदो संखेज्जगुणहाणीए उवरि णिरंतरमंगुलस्स असंखे० भागं गंतूण असंखे-
ज्जगुणहाणी होवि । तदो उवरि णिरंतरमसंखेज्जगुणहाणी अंगुलस्स असंखे०
भागं गच्छदि जाव खंसवियप्पाणं पज्जवसाणे त्ति ।

एवं चदुण्णं सरीराणं ॥ ५३३ ॥

जहा ओरालियसरीरस्स चउव्विहा खेत्तहाणी परूविदा तहा सेसचदुण्णं सरी-
राणं पि परूवेयव्वं, विसेसाभावादो ।

**कालहाणिपरूवणदाए ओरालियसरीरस्स जे* एगसमयट्ठिदि-
वगणाए दव्वा ते बहुआ अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥५३४॥**

जे जीवादो अवेदा ओरालियणोक्कम्मपरमाणू एयसमयमोदइयभावेण अच्छिय
विदियसमए पारिणामियभावं गच्छंति तेसि द्ठिदिसलगाओ बहुगाओ ते च अणंतेहि
विस्सासुवचएहि उवचिदा, बध्मणगुणस्स तत्थ अणंताविभागपडिच्छेदाणं संभवादो ।

भागहानिके निरन्तररूपसे अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाने पर संख्यातभागहानि
होती है । फिर आगे संख्यातभागहानिके निरन्तर रूपसे अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान
जाने पर संख्यातगुणहानि होती है । फिर आगे संख्यातगुणहानिके निरन्तररूपसे अंगुलके
असंख्यातवें भाग प्रमाण स्थान जाने पर असंख्यातगुणहानि होती है । फिर आगे निरन्तररूपसे
संख्यातगुणहानि अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान होकर क्षेत्रविकल्पोंके समाप्त होनेतक
जाती है ।

इसो प्रकार चार शरीरोंकी क्षेत्रहानि कहनी चाहिए ॥ ५३३ ॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरकी चार प्रकारकी क्षेत्रहानि कही है उसी प्रकार शेष
चार शरीरोंकी भी कहनी चाहिए, क्योंकि, उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है ।

**कालहानिप्ररूपणाको अपेक्षा औदारिकशरीरके जो एक समय स्थितिवाले
वर्गणाके द्रव्य हैं वे बहुत हैं और अनन्त विस्सोपचयोंसे उपचित हैं ॥ ५३४ ॥**

जो जीवसे अवेद औदारिकशरीरनोक्कम्मपरमाणु एक समय तक औदयिक भावरूपसे
रह कर दूसरे समयमें पारिणामिकभावको प्राप्त होते हैं उनकी स्थापित की गई शलाकायें
बहुत हैं और वे अनन्त विस्सोपचयोंसे उपचित हैं, क्योंकि, उनमें बध्मणगुणके अनन्त अवि-
भागप्रतिच्छेद सम्भव हैं ।

* आ० प्रती '—हाणीए णिरंतर—' इति पाठः ।

गुणहाणी ' इति पाठः ।

असंखे० ' इति पाठः ।

म० प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिष्ठा ' गंतूण संखे०—

ता० प्रती '—गुणहाणी (ए) असंखे०' अ० का० प्रत्यो । ' गुणहाणीए

अ० प्रती ' जो ' इति पाठः ।

जे दुसमयट्ठदिवग्गणाए दब्बा ते विसेसहीणा अणंतेहि
विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥ ५३५ ॥

जे ओदइयभावेण दुसमयमच्छिद्वण पारिणामियभावं गच्छंति ओरालिय-
पोगला अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा तेसि मेलाविदसलागाओ असंखेज्ज-
भागहीणाओ । एत्थ भागहारो एत्तिओ त्ति ण णव्वदे ।

एवं ति-चदु-पंच-छ-सत्त-अट्ठ-णव-दस-संखेज्ज-असंखेज्जसमय-
ट्ठदिवग्गणाए दब्बा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि
उवचिदा ॥ ५३६ ॥

एत्थ तियाविसु सव्वत्थ समयट्ठदिवग्गणाए दब्बा विसेसहीणा अणंतेहि विस्सा-
सुवचएहि उवचिदा त्ति संबंधो कायव्वो । तं जहा— तिसमयट्ठदिवग्गणाए दब्बा
दुसमयट्ठदिववग्गणसलागाहितो असंखेज्ज० भागहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि
उवचिदा । चदुसमयट्ठदिवग्गणाए दब्बा तिसमयट्ठदिववग्गणसलागाहि^० असंखे०-
भागहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा । एवं गिरंतरं असंखे० भागहाणी वत्तब्बा
जाव असंखेज्जलोगमेत्तट्ठाणेसु अंगुलस्स असंखे० भागमेत्तट्ठाणाणि सेसाणि त्ति ।

जो दो समय स्थितिवाली वर्गणाके द्रव्य हैं वे विशेष हीन हैं और अनन्त
विस्सोपचयोंसे उपचित हैं ॥ ५३५ ॥

जो औदयिकभावके साथ दो समय तक रहकर पारिणामिकभावको प्राप्त होते हैं वे
औदारिक पुद्गल अनन्त विस्सोपचयोंसे उपचित हैं । उनकी मिलाकर इकट्ठी की गई शला-
कायें असंख्यातभागहीन हैं । यहाँ पर भागहारका प्रमाण इतना है यह ज्ञात नहीं है ।

इस प्रकार तीन, चार, पाँच, छह, सात, आठ, नौ, दस, संख्यात और
असंख्यात समय तक स्थित रहनेवाली वर्गणाके द्रव्य हैं वे विशेष हीन हैं और
प्रत्येक अनन्त विस्सोपचयोंसे उपचित हैं ॥ ५३६ ॥

यहाँ पर सर्वत्र तीन आदि समयकी स्थितिवाली वर्गणाके द्रव्य विशेष हीन हैं और
अनन्त विस्सोपचयोंसे उपचित हैं ऐसा संबंध करना चाहिए । यथा— तीन समयकी स्थितिवाली
वर्गणाके द्रव्य दो समयकी स्थितिवाली द्रव्यवर्गणाओंकी शलाकाओंसे असंख्यातभागहीन हैं
और अनन्त विस्सोपचयोंसे उपचित हैं । चार समयकी स्थितिवाली वर्गणाके द्रव्य तीन सम-
यकी स्थितिवाली द्रव्यवर्गणाकी शलाकाओंसे असंख्यातभागहीन है और वे अनन्त विस्सोपच-
योंसे उपचित हैं । इस प्रकार असंख्यात लोकप्रमाण स्थानोंमें अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण
स्थानोंके शेष रहने तक निरन्तररूपसे असंख्यातभागहानि कहनी चाहिए ।

✻ ता० प्रती ' दब्बा (तिसमयट्ठदिववग्गण-) सलागाहि ' अ० का० प्रत्योः ' दब्बा सलागाहि '
इति पाठः ।

तदो अंगुलस्स असंखेज्जविभागं गंतूण तेसिं चउव्विहा हाणी—
असंखेज्जभागहाणी संखेज्जभागहाणी संखेज्जगुणहाणी असंखेज्ज—
गुणहाणी ॥ ५३७ ॥

असंखेज्जभागहाणिअद्धानस्स असंखे० भागे अंगुलस्स असंखे० भागे सेसे जो
विही तस्स परूवणट्ठमिदं सुत्तमागयं । अप्पिदद्धानादो असंखे० भागहाणीए अंगुलस्स
असंखे० भागमेत्तद्धानमुवरि गंतूण संखेज्जभागहाणी होदि । तदो संखेज्जभाग—
हाणीए अंगुलस्स असंखेज्जविभागमेत्तद्धानमुवरि गंतूण संखेज्जगुणहाणी होदि । पुणो
संखेज्जगुणहाणीए अंगुलस्स असंखे० भागमेत्तमद्धानमुवरि गंतूण असंखेज्जगुणहाणी
होदि । तदो असंखे० गुणहाणीए अंगुलस्स असंखे० भागमेत्तद्धानं गंतूण असंखे०
गुणहाणी समप्पदि, उवरि दव्वाभावादो । अंगुलस्स असंखे० भागं गंतूण चउव्विहा
हाणी होदि ति सुत्तादो च णव्वदे जहा जीवादो अवेदाणं चेव पोगलानमेसा
परूवणा ति, जीवसहिदाणं ओरालियसरीरादीणमंगुलस्स असंखे० भागमेत्तकाल—
ट्ठिदीए अभावादो ।

एवं चट्ठणं सरीराणं ॥ ५३८ ॥

जहा ओरालियसरीरस्स परूवणा कदा तथा चट्ठणं सरीराणं परूवणा

उससे अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर उनकी चार प्रकारकी
हानि होती है— असंख्यातभागहानि, संख्यातभागहानि, संख्यातगुणहानि और
असंख्यातगुणहानि ॥ ५३७ ॥

असंख्यातभागहानि अध्वानके असंख्यातवें भागके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण शेष
रहने पर जो विधि है उसका कथन करनेके लिए यह सूत्र आया है । विवक्षित स्थानसे असं—
ख्यातभागहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान ऊपर जानेपर संख्यातभागहानि होती
है । पुनः संख्यातभागहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान ऊपर जानेपर संख्यात—
गुणहानि होती है । पुनः संख्यातगुणहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान ऊपर
जानेपर असंख्यातगुणहानि होती है । पुनः असंख्यातगुणहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण
स्थान जानेपर असंख्यातगुणहानि समाप्त होती है, क्योंकि, इससे आगे द्रव्यका अभाव है ।
अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर चार प्रकारकी हानि होती है इस सूत्रसे जाना
जाता है कि जीवसे अवेदरूप पुद्गलोंकी ही यह प्ररूपणा है, क्योंकि, जीवसहित औदारिक—
शरीर आदिकी स्थिति अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक नहीं पायी जाती ।

इसी प्रकार चार शरीरोंकी प्ररूपणा करनी चाहिए ॥ ५३८ ॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरकी प्ररूपणा की है उसी प्रकार चार शरीरोंकी प्ररूपणा

कायव्या, विसेसाभावादो ।

**भावहाणिपरूवणदाए ओरालियसरीरस्स जेँ एयगुणजुत्त-
वग्गणाए दव्वा ते बहुआ अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥ ५३९ ॥**

एयगुणजुत्तवग्गणाए अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदाए दव्वा सलागाहि बहुआ । एत्थ सलागाहि त्ति अज्झाहारो कायव्वो, अण्णहा सुत्तत्थाणुववत्तीदो ॥ एयगुणं ति किं घेप्पदि ? जहण्णगुणस्स सो ग्रहणं । च जहण्णगुणो अणंतेहि अविभाग-पडिच्छेदेहि निप्पणो । तं कथं णव्वदे ? सो अणंतविस्सासुवचएहि उवचिदो त्ति ॥ सुत्तण्णहाणुववत्तीदो । ण च एकस्मिह अविभागपडिच्छेदे संते एगविस्सासुवचयं मोत्तूण अणंताणं विस्सासुवचयाणं तत्थ संभवो अत्थि, तेसि संबंधस्स निप्पच्चयत्त-प्पसंगादो । ण च तस्स विस्सासुवचएहि बंधो वि अत्थि, जहण्णवज्जे त्ति सुत्तेण सह विरोहादो ।

**जे दुगुणजुत्तवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सा-
सुवचएहि उवचिदा ॥ ५४० ॥**

करनी चाहिए, क्योंकि, उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है ।

**भावहानिप्ररूपणाकी अपेक्षा औदारिकशरीरके जो एक गुणयुक्त वर्गणाके
द्रव्य हैं वे बहुत हैं और वे अनन्त विस्रसोपचर्योंसे उपचित हैं ॥ ५३९ ॥**

अनन्त विस्रसोपचर्योंसे उपचित एक गुणयुक्त वर्गणाके द्रव्य शलाकाओंकी अपेक्षा बहुत हैं । यहाँ पर 'सलागाहि' पदका अध्याहार करना चाहिए, अन्यथा सूत्रका अर्थ नहीं बन सकता है ।

शंका-- एक गुणसे क्या ग्रहण किया जाता है ?

समाधान-- जघन्य गुण ग्रहण किया जाता है ।

वह जघन्य गुण अनन्त अविभागप्रतिच्छेदोंसे निष्पन्न होता है ।

शंका-- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ।

समाधान-- वह अनन्त विस्रसोपचर्योंसे उपचित है यह सूत्र अन्यथा बन नहीं सकता है, इससे जाना जाता है कि वह अनन्त अविभाग प्रतिच्छेदोंसे निष्पन्न होता है ।

यदि कहा जाय कि एक अविभागप्रतिच्छेदके रहते हुए वहाँ केवल एक विस्रसोपचर्य न होकर अनन्त विस्रसोपचर्य सम्भव हैं सो यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसी अवस्थामें उनका सम्बन्ध बिना कारणके होता है ऐसा प्रसंग प्राप्त होता है । यदि कहा जाय कि उसका विस्रसोपचर्योंके साथ बन्ध भी होता है सो यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, 'जघन्य गुण-वालेके साथ बन्ध नहीं होता' इस सूत्रके साथ विरोध आता है ।

**जो दो गुणयुक्त वर्गणाके द्रव्य हैं वे विशेषहीन हैं और वे अनन्त विस्रसोप-
चर्योंसे उपचित हैं ५४० ॥**

❖ ता० प्रती 'जो' इति पाठः । ♠ अ० प्रती 'अचिदा' का० प्रती 'अवचिदा' इति पाठा ।

❖ प्रतिष्ठा 'सुत्तट्ठाणुववत्तीदो' इति पाठा । ❖ अ० का० प्रत्योः 'अचिदो त्ति' इति पाठः ।

जदि अणंतेहि अविभागपडिच्छेदेहि सहिदजहणगुणे एगगुणसद्दो वट्टदे तो दोसुं जहणगुणसु दुगुणसद्देण पयट्ठियव्वं, अणहा दुसद्दपउत्तीए अणुवलंभादो ? ण एस दोसो, जहणगुणस्सुवरि एगाविभागपडिच्छेदे वट्टिदे दुगुणभावदंसणादो । कथमेवकस्सेव अविभागपडिच्छेदस्स विदियगुणत्तं ? ण, तेत्तियमेत्तस्सेव गुणंतरस्स दव्वंतरे वट्टिदंसणादो । गुणस्स विदियो अवत्थाविसेसो विदियगुणो णाम । तदियो अवत्थाविसेसो तदियगुणो णाम । तेण जहणगुणेण सह दुगुण-तिगुणत्तमेत्थ जुज्जदे, अणहा दुगुणगुणजुत्तवग्गणाए दव्वा त्ति सुत्तं होज्ज । ण च एवं, अणुवलंभादो । एवंविहदुगुणजुत्तवग्गणाए दव्वा सलागाहि पुव्वसलागाहिंतो अणंतभागहीणा । जहा पारिणामियभावेण द्विपरमाणुपोग्गलाणमेगपरमाणुसंबंधणिमित्तवग्गणगुणो संभवदि तहा एदेसिमोरालियसरीरपोग्गलाणं जीवादो अवेदाणं किण्ण संभवदि ? ण, मिच्छत्तादिपच्चएहि ब्रज्जमाणसमए चेव सव्वजीवेहिंतो अणंतगुणत्तेण वट्टिदबंधण-गुणानमोरालियादिपरमाणूणं जीवमुक्काणं पि अच्चत्तओदइयभावाणमणंतबंधण-गुणस्सुवलंभादो ।

शंका— यदि अनन्त अविभागप्रतिच्छेदोऽपि युक्त जघन्य गुणमें ' एक गुण ' शब्द प्रवृत्त रहता है तो दो जघन्य गुणोंमें ' दो गुण ' शब्दकी प्रवृत्ति होनी चाहिए, अन्यथा ' दो ' शब्दकी प्रवृत्ति नहीं उपलब्ध होती ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जघन्य गुणके ऊपर एक अविभागप्रतिच्छेदकी वृद्धि होने पर दो गुणभाव देखा जाता है ।

शंका— एक ही अविभागप्रतिच्छेदकी द्वितीय गुण संज्ञा कैसे है ?

समाधान— क्योंकि, मात्र उतने ही गुणान्तरकी द्रव्यान्तरमें वृद्धि देखी जाती है ।

गुणके द्वितीय अवस्थाविशेषकी द्वितीय गुण संज्ञा है और तृतीय अवस्था विशेषकी तृतीय गुण संज्ञा है । इस लिए जघन्य गुणके साथ द्विगुणपना और त्रिगुणपना यहाँ बन जाता है । अन्यथा ' द्विगुणयुक्त वर्गणाके द्रव्य ' ऐसा सूत्र प्राप्त होगा । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, इस प्रकारका सूत्र उपलब्ध नहीं होता । इस प्रकार दोगुण युक्त वर्गणाके द्रव्य शलाकाओंकी दृष्टिसे पूर्वकी शलाकाओंसे अनन्तभागहीन हैं ।

शंका— जिस प्रकार परिणामिकभावरूपसे स्थित हुए परमाणु पुद्गलोंमें एक परमाणुके सम्बन्धका निमित्तभूत वर्गणागुण सम्भव है उस प्रकार जीवसे अवेदरूप इन औदारिक-शरीर पुद्गलोंमें क्यों सम्भव नहीं है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, मिथ्यात्व आदि कारणोंसे बन्ध होते समय ही जिनमें सब जीवोंसे अनन्तगुण बन्धनगुण वृद्धिकी प्राप्त हुए हैं तथा जीवसे पृथक् होकर भी जिन्होंने औदारिकभावका त्याग नहीं किया है ऐसे औदारिक परमाणुओंमें अनन्त बन्धनगुण उपलब्ध होते हैं ।

एवं ति-चदु-पंच-छ-सत्त-अट्ठ-णव-दस-संखेज्ज-असंखेज्ज-
अणंत अणंताणंतगुणजुत्तवर्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि
विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥ ५४१ ॥

तिगुणजुत्तवर्गणाए दव्वा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ते विसेसहीणा
त्ति एत्थ संबंधो पुब्बं व कायव्वो । एवं पादेक्कं भणिरुण णेयव्वं जाव सेचीयादो
सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तट्ठाणेसु अंगुलस्स असंखे०भागमेत्तभावट्ठाणाणि सेसाणि त्ति ।
किंतु एत्थ सव्वत्थ अणंतभागहाणी चेव ।

तदो अंगुलस्स असंखेज्जविभागं गंतूण तेसिं छव्विहा हाणी --

विशेषार्थ-- यहांपर औदारिकशरीरकी एक गुणयुक्त वर्गणाके द्रव्यसे दो गुणयुक्त
वर्गणाका द्रव्य विशेषहीन बतलाया है । इस पर यह शंका की गई है कि जब कि एक गुणयुक्त
वर्गणाका अर्थ एक अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गणा न होकर अनन्त अविभागप्रतिच्छेदोंसे युक्त
जघन्य वर्गणा है ऐसी अवस्थामें इससे एक अधिक अविभागप्रतिच्छेदवाली वर्गणाके द्रव्यको
दो गुणयुक्त कैसे कह सकते हैं, क्योंकि, यहां पर दूने अविभागप्रतिच्छेदोंकी वृद्धि नहीं हुई है ।
बीरसेन स्वामीने इस शंकाका जो समाधान किया है उसका आशय यह है कि यहां पर जघन्य
गुणको एक मान लिया है और उसपर एक अविभागप्रतिच्छेदकी वृद्धि होने पर उसे दो
गुणयुक्त कहा है, क्योंकि, जघन्य गुणयुक्त द्रव्यसे भिन्न द्रव्यमें उतनी ही वृद्धि देखी जाती है ।
आगे तीन गुणयुक्त द्रव्यमें भी इसी प्रकार एक अविभागप्रतिच्छेदकी वृद्धि जाननी चाहिए ।
यह पूछने पर कि यह अर्थ कैसे फलित किया गया है बीरसेनस्वामी ने यह उत्तर दिया है कि
सूत्रमें 'दुगुणजुत्त' पदको देखकर यह अर्थ फलित किया है । यदि सूत्रकारको जघन्य गुणसे
दूना अर्थ इष्ट होता तो वे 'दुगुणजुत्त' पदके स्थानमें 'दुगुणगुणजुत्त' ऐसे पदका प्रयोग
करते । पर उन्होंने जब ऐसे पदका प्रयोग न करके 'दुगुणजुत्त' पदका ही प्रयोग किया है ।
इससे ज्ञात होता है कि उन्हें जघन्य गुणके ऊपर एक अविभागप्रतिच्छेदकी वृद्धि इष्ट है और
उसे ही वे दुगुणजुत्त अर्थात् दो गुणयुक्त शब्द द्वारा व्यक्त कर रहे हैं । और यह मानना ठीक
नहीं है कि यहां पर जघन्य गुणसे एक परमाणुमें सम्भव जघन्य गुण ले लिया जाय, क्योंकि,
मिथ्यात्व आदि कारणोंसे ये औदारिक शरीर की वर्गणायें जीवके साथ बन्धको प्राप्त हुई हैं,
इसलिए जीवसे अलग होनेपर भी इनमें एक परमाणुका गुण सम्भव नहीं हो सकता ।

इसी प्रकार तीन, चार, पांच, छह, सात, आठ, नौ, दस, संख्यात, असंख्यात,
अनन्त और अनन्तानन्त गुणयुक्त वर्गणाके जो द्रव्य हैं वे विशेष हीन हैं और वे
अनन्त विस्त्रसोपचर्योंसे उपचित हैं ॥ ५४१ ॥

तीन गुणयुक्त वर्गणाके द्रव्य अनन्त विस्त्रसोपचर्योंसे उपचित हैं और वे विशेष हीन
हैं इस प्रकार यहाँ पर पहलेके समान सम्बन्ध करना चाहिए । इसप्रकार सेचीयकी अपेक्षा
सब जीवोंसे अनन्तगुण स्थानोंमें अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान शेष रहने तक प्रत्येक
स्थानका कथन करके ले जाना चाहिए । किन्तु यहाँ सर्वत्र अनन्तभागहानि ही होती है ।

उससे अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर उनकी छह प्रकारकी

**अणंतभागहाणी असंखेज्जभागहाणी संखेज्जभागहाणी संखेज्जगुण-
हाणी असंखेज्जगुणहाणी अणंतगुणहाणी ॥ ५४२ ॥**

अपिदट्ठाणादो अणंतभागहाणीए अंगुलस्स असंखे०भागमेत्तमट्ठाणं गंतूण
सलागाणमसंखेज्जभागहाणी होदि । तदो असंखेज्जभागहाणीए अंगुलस्स असंखे०-
भागमेत्तमट्ठाणं उवरि गंतूण संखेज्जभागहाणी होदि । तदो संखेज्जभागहाणीए
अंगुलस्स असंखे०भागमेत्तमट्ठाणमुवरि गंतूण संखेज्जगुणहाणी होदि । तदो संखेज्ज-
गुणहाणीए अंगुलस्स असंखे०भागमेत्तमट्ठाणमुवरि गंतूण असंखेज्जगुणहाणी होदि ।
तदो असंखेज्जगुणहाणीए अंगुलस्स असंखे०भागमेत्तमट्ठाणमुवरि गंतूण अणंतगुणहाणी
होदि । पुणो अणंतगुणहाणीए अंगुलस्स असंखे०भागमेत्तमट्ठाणमुवरि गंतूण ट्ठाणाणि
समप्पंति ।

एवं चट्ठणं सरीराणं ॥ ५४३ ॥

जहा ओरालियसरीरस्स परुविदं तथा सेससरीराणं पि परुवेयव्वं, विसेसा-
मावादो । संपहि जीवादो अवेदानं पंचसरीरपोगलाणं विस्सासुवचयस्स माहप्प-
परुवणट्ठं उवरिममप्पाबहुअं भणदि-

ओरालियसरीरस्स जहणयस्स जहणपदे जहणओ विस्सा-

**हानि होती है - अनंतभागहानि, असंख्यातभागहानि, संख्यातभागहानि, संख्या-
तगुणहानि, असंख्यातगुणहानि और अनन्तगुणहानि । ५४२ ।**

विवक्षित स्थानसे अनन्तभागहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर
शलाकाओंकी असंख्यातभागहानि होती है । फिर वहाँसे आगे असंख्यातभागहानिके अंगुलके
असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर संख्यातभागहानि होती है । पुनः वहाँसे आगे संख्यात-
भागहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर संख्यातगुणहानि होती है । पुनः
वहाँसे आगे संख्यातगुणहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर असंख्यातगुण-
हानि होती है । पुनः वहाँसे आगे अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर अनन्तगुण-
हानि होती है । पुनः अनन्तगुणहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान आगे जाकर
स्थान समाप्त होते हैं ।

इसी प्रकार चार शरीरोंकी अपेक्षा प्ररूपणा करनी चाहिए । ५४३ ।

जिस प्रकार औदारिक शरीरका कथन किया है उसी प्रकार शेष शरीरोंका भी
कथन करना चाहिए, क्योंकि, उससे यहाँ पर कोई विशेषता नहीं है ।

अब जीवसे अवेदरूप पाँच शरीरपुद्गलोंके विस्रसोपचयके माहात्म्यका कथन करनेके
लिर् आगेका अल्पबहुत्व कहते हैं---

जघन्य औदारिकशरीरका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय सबसे स्तोक

सुवचओ थोवो ॥५४४॥

ओरालियसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदं ति वृत्ते जीवादो अवेदो एमो ओरालियपरमाणू घेत्तव्वो, तस्स विस्सासुवचओ थोवो अप्पे त्ति भणिदं होदि ।

तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ॥५४५॥

तस्सेव एगोरालियपरमाणूस्स उक्कस्सविस्सासुवचओ अणंतगुणो, एगपरमाणू-जहण्णबंधनगुणादो तत्थेव उक्कस्सबंधनगुणस्स अणंतगुणत्तदंसणादो । को गुण—गारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो ।

तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ॥५४६॥

ओरालियसरीरपरमाणूणं जीवादो पुधभूदानं सव्वक्कस्सो समुदयसमागमो ओरालियसरीरक्कस्सं णाम । तस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो ।

तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ॥५४७॥

है ॥५४४॥

जघन्य औदारिकशरीरका जघन्यपद ऐसा कहनेपर जीवसे अवेदरूप एक औदारिक परमाणु ग्रहण करना चाहिए । उसका विस्रसोपचय स्तोक अर्थात् अल्प है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

उसी जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है ॥५४५॥

उसी एक औदारिक परमाणुका उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है, क्योंकि, एक परमाणुके जघन्य बन्धनगुणसे वहीं पर उत्कृष्ट बन्धनगुण अनन्तगुणा देखा जाता है । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है ।

उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है ॥५४६॥

जीवसे पृथग्भूत औदारिकशरीर परमाणुओंका सबसे उत्कृष्ट समुदायसमागम उत्कृष्ट औदारिकशरीर कहलाता है । उसका जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है ।

उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है ॥५४७॥

कुदो ? उक्कस्सदब्बजहण्णबंधनगुणादो तस्सेव उक्कस्सबंधनगुणस्स अणंत-
गुणत्तुवलंभादो । को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो ।

एवं वेउव्विय-आहार-तेजा-कम्मइयसरीरस्स ॥ ५४८ ॥

जहा ओरालियसरीरस्स जहण्णुक्कस्सभेदभिण्णच्चदुहि पदेहि अप्पाबहुअ
परूविदं तथा एदेसि चदुण्णं पि सरीराणं परूवेयव्वं । एदेण सत्थाणप्पाबहुअपरूवणा
कदा होदि । संपहि परत्थाणप्पाबहुअपरूवणदुठं उत्तरसुत्तं भणदि-

**जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ
अणंतगुणो ॥ ५४९ ॥**

पुव्वसुत्तादो वेउव्वियसरीरस्से त्ति अणुवट्ठे । तेणेवं पदसंबंधो कायव्वो । तं
जहा- ओरालियउक्कस्सपदेसग्गउक्कस्सविस्सासुवचयादो वेउव्वियसरीरस्स जहण्ण-
यस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । जहण्णे त्ति उत्ते जीवादो पुध्दभूदेगवेउ-
व्वियपरमाणू घेतव्वो । को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । कुदो ? साभावियादो ।

**तस्सेव जहण्णयस्सुक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ
अणंतगुणो ॥ ५५० ॥**

क्योंकि, उत्कृष्ट द्रव्यके जघन्य बन्धनगुणसे उसीका उत्कृष्ट बन्धनगुण अनन्तगुणा
उपलब्ध होता है । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है ।

इसी प्रकार वैक्रियिकशरीर, आहारकशरीर, तैजसशरीर और कर्मणशरीरकी
अपेक्षा जानना चाहिए । ५४८ ।

जिस प्रकार औदारिकशरीरका जघन्य और उत्कृष्ट भेदसे भेदको प्राप्त हुए चार
पदोंके द्वारा अल्पबहुत्व कहा है उसी प्रकार इन चार शरीरोंका भी कहना चाहिए । इसके
द्वारा स्वस्थान अल्पबहुत्वपरूपणा की गई है । अब परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करनेके
लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

जघन्यका जघन्य पदमें जघन्य विस्सोपचय अनन्तगुणा है । ५४९ ।

पूर्वके सूत्रसे ' वैक्रियिकशरीर ' पदकी अनुवृत्ति होती है । इसलिए इस प्रकार
सम्बन्ध करना चाहिए । यथा- औदारिकशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशाग्रके उत्कृष्ट विस्सोपचयकी
अपेक्षा जघन्य वैक्रियिकशरीरका जघन्य विस्सोपचय अनन्तगुणा है । जघन्य ऐसा कहनेपर
जीवसे अलग हुए वैक्रियिकशरीरका एक परमाणु लेना चाहिए । गुणकार क्या है ? सब
जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

उसीके जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्सोपचय अनन्तगुणा है । ५५० ।

तस्सेव वेउव्वियएगपरमाणुस्स उक्कस्सविस्सामुवचओ अणंतगुणो । को गुण ?
सव्वजीवेहि अणंतगुणो ।

तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सामुवचओ
अणंतगुणो ॥ ५५१ ॥

वेउव्वियपरमाणूणं जीवादो पुधभूदानमुक्कस्सो समुदायसमागमो उक्कस्सं
णाम । तस्स जहण्णओ विस्सामुवचओ एगपरमाणु उक्कस्सविस्सामुवचयादो अणंतगुणो ।
एत्थ गुणमारो सव्वजीवेहि अणंतगुणो ।

तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सामुवचओ
अणंतगुणो ॥ ५५२ ॥

को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । कुदो? साभावियादो । एवेसि सुत्ताण-
मावत्ति कादूण उवरिमसरीराणमण्णाबहुअं वुच्चदे । तं जहा-वेउव्वियसरीरउक्कस्स-
विस्सामुवचयादो आहारसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सामुवचओ
अणंतगुणो । तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सामुवचओ अणंतगुणो ।
तस्सव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सामुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्क-
स्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सामुवचओ अणंतगुणो । तेजासरीरस्स जहण्ण-
यस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सामुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे

उसी वैक्रियिकशरीरके एक परमाणुका उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । गुणकार
क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है ।

उसी उत्कृष्टका जघन्य पदमें विस्रसोपचय अनन्तगुणा है ॥ ५५१ ॥

जीवसे अलग हुए वैक्रियिकशरीरके परमाणुओंके समुदयसमागमको उत्कृष्ट कहते हैं ।
उसका जघन्य विस्रसोपचय एक परमाणुके उत्कृष्ट विस्रसोपचयसे अनन्तगुणा है । यहां पर
गुणकार सब जीवोंसे अनन्तगुणा है ।

उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है ॥ ५५२ ॥

गुणकार क्या है? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है, क्योंकि ऐसा होना स्वाभाविक
है । अब इन सूत्रोंकी आवृत्ति करके आगेके शरीरोंका अल्पबहुत्व कहते हैं । यथा वैक्रियिकशरी-
रके उत्कृष्ट विस्रसोपचयसे जघन्य आहारकशरीरका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्त-
गुणा है । उसी जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसी उत्कृष्टका
जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसी उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय
अनन्तगुणा है । जघन्य तैजसशरीरका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसी

✻ अ० का० प्रत्यो: ' जहण्णओ विस्सामुवचओ अणंतगुणो । तेजासरीरस्स इति पाठः ।

उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स जहणपदे जहणओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । कम्मइयसरीरस्स जहणयस्स जहणपदे जहणओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव जहणयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स जहणपदे जहणओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । सव्वत्थ गुणगारो सव्वजीवेहि अणंतगुणो । एदमप्पाबहुगं बाहिरवग्गणाए पुधभूदं ति काऊण के वि आइरिया जीवसंबद्धपंचणं सरीराणं विस्सासुवचयस्सुवरि परूवेति तण्ण घडदे, जहणपत्तेयसरीरवग्गणादो उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए अणंतगुणत्तप्पसंगादो । उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणादो जहणमसुहुमणिगोदवग्गणाए अणंतगुणहीणत्तप्पसंगादो च । तम्हा सव्वत्थोवो ओरालियसरीरस्स जहणयस्स जहणपदे जहणओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागो । तस्सेव उक्कस्सयस्स जहणओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागो । तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागो । वेउ-विद्यसरीरस्स जहणयस्स जहणओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ?

जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्सोपचय अनन्तगुणा है । उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्सोपचय अनन्तगुणा है । उसी उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्सोपचय अनन्तगुणा है । जघन्य कामंशरीरका जघन्य पदमें जघन्य विस्सोपचय अनन्तगुणा है । उसी जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्सोपचय अनन्तगुणा है । उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्सोपचय अनन्तगुणा है । उसी उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्सोपचय अनन्तगुणा है । सर्वत्र गुणकार सब जीवोंसे अनन्तगुणा है । यह अल्पबहुत्व बाह्य वर्गणासे पृथग्भूत है ऐसा मानकर कितने ही आचार्य जीवसम्बद्ध पांच शरीरोंके विस्सोपचयके ऊपर कथन करते हैं परन्तु वह घटित नहीं होता, क्योंकि, ऐसा माननेपर जघन्य प्रत्येकशरीरवर्गणासे उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाके अनन्तगुणे होनेका प्रसंग प्राप्त होता है तथा उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणासे जघन्य सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके अनन्तगुणे हीन होनेका प्रसंग प्राप्त होता है । इसलिए जघन्य औदारिकशरीरका जघन्य पदमें जघन्य विस्सोपचय सबसे स्तोक होकर भी अनन्तगुणा है । उसीका उत्कृष्ट विस्सोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्यातवें भाग-प्रमाण गुणकार है । उसीके उत्कृष्टका जघन्य विस्सोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? गुणकार पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । उसी उत्कृष्टका उत्कृष्ट विस्सोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । वैक्रियिकशरीरके

❖ अ० का० प्रत्योः ' जहणो विस्सासुवचओ अणंतगुणो । उक्कस्सयस्स ' इति पाठः ।

❖ अ० प्रती ' उक्कस्सयस्स उक्कस्सओ ' इति पाठः ।

[illegible]

www.jainelibrary.org

अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभाणो । तस्सेव उक्कस्सओ विस्तासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभाणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णओ विस्तासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभाणो । तस्सेव उक्कस्सओ विस्तासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभाणो त्ति । जीवसहियाणं पंचणं सरीराणं विस्तासुवचयस्स एदेण अप्पाबहुएण होदव्वं, अण्णहा सचित्त-अचित्तवग्गणाणं गुणगारेण सह विरोहादो । जीवसहियाणं विस्तासुवचयस्स जहा अप्पाबहुअं परूविदं तथा जीवादो पुधमूदाणं विस्तासुवचयस्स किण्ण वुच्चदे ? ण, जीवादो पुधभावेण णट्ठपुण्डितलबंधणगुणाणं जहण्णस्स उक्कस्ससामित्तेण सरीरोगाहणमावण्णाणं समयपवद्धप्पाबहुअं मोत्तूण अण्णस्स अप्पाबहुअस्स असंभवादो । ण च जुत्तीए सुत्तं बाहिज्जदि, सयलबाहादो-वस्स वयणस्स सुत्तववएसादो । संपहि विस्तासुवचयस्स जीवपडिबद्धस्स जहण्णस्स उक्कस्ससामित्परूवणट्ठं तेमि थोवबहुत्तपरूवणट्ठं च उत्तरसुत्तं भणवि—

**बादरणिगोदवग्गणाए जहणियाए चरिमसमयछदुमत्थस्स
सव्वजहणियाए सरीरोगाहणाए वट्टमाणस्स जहणओ विस्तासुव—**

अभव्योसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । उसीका उत्कृष्ट विस्र-सोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उसीके उत्कृष्टका जघन्य विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्या-तवें भागप्रमाण गुणकार है । उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । जीवसहित पाँच शरीरोंके विस्रसोपचयका यह अल्प-बहुत्व होना चाहिए, अन्यथा सचित्त अचित्त वर्गणाओंके गुणकारके साथ विरोध आता है ।

शंका— जीवसहित शरीरोंके विस्रसोपचयका जिस प्रकार अल्पबहुत्व कहा है उस प्रकार जीवसे पृथग्भूत शरीरोंके विस्रसोपचयका अल्पबहुत्व क्यों नहीं कहते ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, जीवसे पृथक् होनेके कारण जिनका पहलेका बन्धन गुण नष्ट हो गया है और जो जघन्य तथा उत्कृष्ट स्वामित्वकी अपेक्षा शरीरोंकी अवगाहनाको प्राप्त हैं उनके समयप्रबद्ध सम्बन्धी अल्पबहुत्वको छोड़कर अन्य अल्पबहुत्व सम्भव नहीं है । और युक्तिके द्वारा सूत्र बाधित नहीं किया जा सकता है, क्योंकि, समस्त बाधाओंसे रहित वचन की सूत्र संज्ञा है ।

अब जीव प्रतिबद्ध जघन्य विस्रसोपचयके उत्कृष्ट स्वामित्वका कथन करनेके लिए और उनके अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

शरीरकी सबसे जघन्य अवगाहनामें विद्यमान अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थ जीवके

चओ थोवो ॥ ५५३ ॥

चरिमसमयछदुमत्थस्स सब्वजहणियाए सरीरोगाहणाए वट्टमाणस्स जहणिया बादरणिगोदवर्गणा होदि त्ति एत्थ पदसंबंधो कायव्वो । एदेण जहणबादरणिगोद-वर्गणसामित्तपरूवणदुवारेण जहणविस्सासुवच्चयस्स सामी परूविदो । चरिमसमय-छदुमत्थाणं गहणं किमट्ठं कीरदे? ण, तत्थ गुणसेडिमरणेण मदावसिट्ठाणमावलियाए असंखे भागमेत्तपुलवियाणं गहणट्ठं तक्करणादो । असंखेज्जगुणाए सेडोए कम्मपदेसाणं तत्थतणविस्सासुवच्याणं च गलणट्ठं पि चरिमसमयछदुमत्थगहणं कीरदे । सब्व—जहणियाए सरीरोगाहणाए त्ति वुत्ते अद्धदुरयणिपमाणोगाहणाए गहणं कायव्वं । किमट्ठं तगहणं कीरदे? थोवविस्सासुवच्चयगहणट्ठं । रस-रुहिर-मांस-मेदद्वि-मज्ज सुक्काणि विस्सासुवचओ णाम । ते च थोवा जहणोगाहणाए चेव होंति ण महंतोए, सेसि बहुत्तेण विणा ओगाहणाए बहुत्तविरोहादो । तत्थोवत्तं पि बादरणिगोदाणं थोवत्तविहाणट्ठं । तम्हा अद्धदुरयणिपमाणस्सेहो विविहोववासेहि ज्झडिदणस्सेस-रीमाहियमंसो ज्झाणावूरणेण थोवो कयबादरणिगोदपुलविकलावो चरिमसमयखीण-कसाओ जहणबादरणिगोदवर्गणाए जहणविस्सासुवच्याणं सामी होदि त्ति सिद्धं ।

जघन्य बादरनिगोद वर्गणाका जघन्य विस्रसोपचय स्तोक है ॥५५३॥

शरीरकी सबसे जघन्य अवगाहनामें विद्यमान अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थ जीवके जघन्य बादरनिगोदवर्गणा होती है इस प्रकार यहाँ पर पदसम्बन्ध करना चाहिए । इसके आश्रयसे जघन्य बादरनिगोदवर्गणाके स्वामित्वकी प्ररूपणाद्वारा जघन्य विस्रसोपचयका स्वामी कहा है ।

शंका— अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थोंका ग्रहण किसलिए करते हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, वहाँ पर गुणश्रेणि मरणसे मरनेके बाद बची हुई आव-लिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंके ग्रहण करनेके लिए तथा असंख्यात गुणित श्रेणिरूपसे कमप्रदेशोंकी और तत्रस्थ विस्रसोपचयोंकी निजंरा करनेके लिए अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थोंका ग्रहण करते हैं ।

सबसे जघन्य शरीरकी अवगाहनामें ऐसा कहने पर साढे तीन हाथप्रमाण अवगाह-नाका ग्रहण करना चाहिए ।

शंका— उसका ग्रहण किसलिए करते हैं ?

समाधान— स्तोक विस्रसोपचयका ग्रहण करनेके लिए ।

रस, रुधिर, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा और शुक्र इनकी विस्रसोपचय संज्ञा है । वे जघन्य अवगाहनामें स्तोक ही होते हैं, बड़ी अवगाहनामें नहीं, क्योंकि, उनका बहुत्व हुए बिना अवगा-हनाका बहुत्व होनेमें विरोध है । वह स्तोकपना भी बादरनिगोदके स्तोकपनेका विधान करनेके लिए वहाँ ग्रहण किया है । इसलिए मनुष्यके मानसे जिसका साढे तीन अरतिप्रमाण उत्सेध है, नानाप्रकारके उपवासों द्वारा जिसने समस्त रोम और अधिक मांसको गला डाला है और ध्यानसमाधि द्वारा जिसने बादरनिगोद पुलविकलापको स्तोक कर दिया है ऐसा अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषाय जीव जघन्य बादरनिगोद वर्गणाके जघन्य विस्रसोपचयोंका स्वामी होता

एवं बादरणिगोदवर्गणाए जहणियाए जहणओ विस्सासुवचओ थोवो अप्पो त्ति भणिदं होदि । एवं सुत्तं बाहिरवर्गणाए ण होदि, जहणबादरणिगोदवर्गणाए सामित्तपदुप्पायणादो ? ण, विस्सासुवचयसामित्तं मोत्तूण बादरणिगोदवर्गणाए पहाणत्ताभावादो ।

**सुहुमणिगोदवर्गणाए उक्कस्सियाए छण्णं जीवणिकायाणं एय-
बंधणबद्धाणं संपिडिदाणं संताणं सव्वक्कस्सियाए सरीरोगाहणाए वट्ट-
माणस्स उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ॥ ५५४ ॥**

एदेण सुत्तेण सुहुमणिगोदउक्कस्सवर्गणाए सामित्तपरूवणदुवारेण उक्कस्स-
विस्सासुवचयस्स सामित्तं परूविदं । तं जहा- सव्वक्कस्सियाए सरीरोगाहणाए
वट्टमाणस्स महामच्छस्स उक्कस्सिया सुहुमणिगोदवर्गणा होदि । कुदो? छण्णं
जीवणिकायाणं एयबंधणबद्धाणं संपिडिदाणं संताणं तत्थुवलंभादो । छण्णं
जीवणिकायाणं सरीरसमवाओ एयबंधणं णाम । तेण एयबंधणेण बद्धाणं संपिडि-
दाणमवबद्धाणं च जीवाणं गहणं कायव्वं । संपहि पुणो एवंविहसुहुमणिगोदवर्गणाए
उक्कस्सियाए उक्कस्सओ विस्सासुवचओ होदि । कुदो? तत्थतणाणंतजीवतिसरीरा-
णंतपरमाणुपोग्गलाणं बंधणगुणेण संबद्धणोकम्मपोग्गलाणं बहुत्तुवलंभादो । सो च

है यह सिद्ध हुआ । इस प्रकार जघन्य बादर निगोद वर्गणाका जघन्य विस्रसोपचय स्तोक
अर्थात् अल्प होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका— यह सूत्र बाह्य वर्गणाके विषयमें नहीं है, क्योंकि, इस द्वारा जघन्य बादर
निगोदवर्गणाका स्वामी कहा गया है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, विस्रसोपचयके स्वामीको छोड़कर बादर निगोद वर्ग-
णाकी प्रधानता नहीं है ।

**एक बन्धनबद्ध और पिण्ड अवस्थाको प्राप्त हुए जीवोंकी सर्वोत्कृष्ट शरीर
अवगाहनामें विद्यमान जीवकी उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोद वर्गणाका उत्कृष्ट विस्रसोपचय
अनन्तगुणा है ॥ ५५४ ॥**

इस सूत्र द्वारा सूक्ष्म निगोद उत्कृष्ट वर्गणाके स्वामित्वकी प्ररूपणा द्वारा उत्कृष्ट विस्र-
सोपचयका स्वामित्व कहा है । यथा- सबसे उत्कृष्ट शरीरकी अवगाहनामें विद्यमान महामत्स्यकी
उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोद वर्गणा होती है, क्योंकि, वहाँ पर एक बन्धनबद्ध और पिण्डीभूत छह जीव-
निकाय उपलब्ध होते हैं । छह जीवनिकायोंके शरीरसमवायकी एकबन्धन संज्ञा है । इसलिए एक
बन्धनरूपसे बँधे हुए और पिण्डीभूत होकर सम्बद्ध हुए जीवका ग्रहण करना चाहिए । इस
प्रकार इस तरहकी उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोद वर्गणामें उत्कृष्ट विस्रसोपचय होता है, क्योंकि, वहाँके
अनन्त जीवोंके तीन शरीरके अनन्त परमाणु पुद्गलोंके बन्धनगुणके कारण सम्बन्धको प्राप्त हुए

उक्कस्सओ विस्सासुवचओ बादरणिगोदजहणविस्सासुवचयादो अणंतगुणो । बादर-
णिगोदवर्गणाए आवलियाए असंखे० भागमेत्तपुलवियासु अणंतजीवा अत्थि । सुहुम-
णिगोदवर्गणाए उक्कस्सियाए वि अणंता जीवा अत्थि किंतु बादरणिगोदवर्गणजीवे-
हितो महामच्छदेहट्टिदजीवा असंखेज्जगुणा होता वि विस्सासुवचएण अणंतगुणा ।
तिण्णं सच्चित्तवर्गणाणं मज्जे जहणबादरणिगोदवर्गणादो उक्कस्ससुहुमणिगोदवर्गणा
असंखेज्जगुणा त्ति जं भणिदं तेण सह एवं सुत्तं किण्ण विरुज्झवे ? ण विरुज्झवे,
जहणबादरणिगोदवर्गणादो उक्कस्ससुहुमणिगोदवर्गणा अणंतगुणे त्ति एत्थ णिहे-
साभावादो । किंतु जहणबादरणिगोदवर्गणसामियस्स जहणविस्सासुवचयादो
उक्कस्ससुहुमणिगोदवर्गणाए आधारभूदमहामच्छट्टिदअणंतजीवाणं विस्सासुवचयक-
लाओ अणंतगुणो त्ति भणिदं । ण च तत्थ ट्ठियसब्बे जीवा सुहुमणिगोदवर्गणा होति,
बादराणं अणोण्णेण असंबद्धसुहुमणिगोदवर्गणाणं च उक्कस्ससुहुमणिगोदवर्गणत्त-
विरोहादो ।

**एवेसिं चेव परूवणट्ठदाए तत्थ इमाणि तिण्णि अणुयोगद्वाराणि
जीवपमाणानुगमो पदेसपमाणानुगमो अप्पाबहुए त्ति । ५५५ ॥**

**एवेसिं विस्सासुवचयाणं अणंतगुणत्तसाहणट्ठं इमाणि तिण्णि अणुयोगद्वा-
राणि एत्थ हवन्ति ।**

बहुत नोकर्म परमाणु पुद्गल उपलब्ध होते हैं । वह उत्कृष्ट विस्सोपचय बादर
निगोद जघन्य विस्सोपचयसे अनन्तगुणा है । बादर निगोद वर्गणाकी आवलीके असंख्यातवें
भागप्रमाण पुलवियोंमें अनन्त जीव होते हैं तथा उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें भी अनन्त जीव
होते हैं । किन्तु बादरनिगोदवर्गणाके जीवोंसे महामत्स्यके देहमें स्थित जीव असंख्यातगुणे होते
हुए भी विस्सोपचयकी अपेक्षा अनन्तगुणे हैं ।

शंका— तीन सच्चित्त वर्गणाओंके मध्यमें जघन्य बादरनिगोदवर्गणासे उत्कृष्ट सूक्ष्म-
निगोदवर्गणा असंख्यातगुणी है यह जो कहा है उसके साथ यह सूत्र विरोधको क्यों नहीं
प्राप्त होता ?

समाधान— विरोधको नहीं प्राप्त होता, क्योंकि, जघन्य बादरनिगोदवर्गणासे उत्कृष्ट
सूक्ष्मनिगोदवर्गणा अनन्तगुणी है इस प्रकारका यहां पर निर्देश नहीं पाया जाता । किन्तु
जघन्य बादरनिगोदवर्गणाके स्वामीके जघन्य विस्सोपचयसे उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके आधा-
रभूत महामत्स्यमें अनन्त जीवोंका विस्सोपचयकलाप अनन्तगुणा है ऐसा कहा है । परन्तु
वहां पर स्थित सब जीव सूक्ष्मनिगोदवर्गणा नहीं हैं, क्योंकि, बादरोंके और परस्परमें सम्बन्धको
नहीं प्राप्त हुए सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंके उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणा होनेमें विरोध आता है ।

**इनकी ही प्ररूपणा करनेपर वहां ये तीन अनुयोगद्वार होते हैं - जीव—
प्रमाणानुगम, प्रवेशप्रमाणानुगम और अल्पबहुत्व ॥ ५५५ ॥**

इन विस्सोपचयोंके अनन्तगुणत्वकी सिद्धि करनेके लिए यहाँ ये तीन अनुयोगद्वार

जीवप्रमाणानुगमेण पृथ्विकाइया जीवा असंखेज्जा ॥ ५५६ ॥
असंखेज्जलोगमेत्ता भण्णिदं होदि ।

आउक्काइया जीवा असंखेज्जा ॥ ५५७ ॥

तेउक्काइया जीवा असंखेज्जा ॥ ५५८ ॥

वाउक्काइया जीवा असंखेज्जा ॥ ५५९ ॥

एदे चत्तारि वि जीवणिकाया असंखेज्जलोगमेत्ता ।

वणप्फदिकाइया जीवा अणंता ॥ ५६० ॥

तसकाइया जीवा असंखेज्जा ॥ ५६१ ॥

जगपदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता । एवं जीवप्रमाणानुगमो समत्तो ।

प्रदेशप्रमाणानुगमेण पृथ्विकाइयजीवप्रदेशाँ असंखेज्जा । ५६२ ।

पृथ्विकाइयजीवे पुण्वपरुविदे एगेणघणलोगेण गुणिदे जीवप्रदेशप्रमाणोपत्तीदो ।
जीवप्रमाणादो चेव विस्तारसुवचयाणं प्रमाणे अवगदे संते जीवप्रदेशाणं प्रमाणं किमट्ठं

होते हैं ।

जीवप्रमाणानुगमकी अपेक्षा पृथिवीकायिक जीव असंख्यात हैं ॥ ५५६ ॥

असंख्यात लोकप्रमाण हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

जलकायिक जीव असंख्यात हैं ॥ ५५७ ॥

अग्निकायिक जीव असंख्यात हैं ॥ ५५८ ॥

वायुकायिक जीव असंख्यात हैं । ५५९ ।

ये चारों ही जीविकाय असंख्यात लोकप्रमाण हैं ।

वनस्पतिकायिक जीव अनन्त हैं । ५६० ।

व्रसकायिक जीव असंख्यात हैं । ५६१ ।

व्रसकायिक जीव जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ।

इस प्रकार जीवप्रमाणानुगम समाप्त हुआ ।

प्रदेशप्रमाणानुगमकी अपेक्षा पृथिवीकायिक जीवोंसे प्रदेश असंख्यात हैं । ५६२ ।

पहले कहे गये पृथिवीकायिक जीवोंको एक घनलोकसे गुणित करनेपर पृथिवीकायिक जीवोंके प्रदेशोंका प्रमाण उत्पन्न होता है ।

शंका— जीवोंके प्रमाणसे ही विस्रसोपचयोंके प्रमाणका ज्ञान हो जानेपर यहाँ पर जीवोंके प्रदेशोंका प्रमाण किस लिए कहा है ?

✽ अ० का०प्रत्यो: ' पृथ्विकाइयप्रदेशा ' इति पाठः ।

एत्थ वुच्चदे ? ण, एक्केक्कम्हि जीवपदेसे अणंतओरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणु अत्थि, एक्केक्कम्हि परमाणुम्हि अणंताणंता विस्सासुवचया च अत्थि, एक्केक्कम्हि जीवे एगेगघणलोगमेत्ता चेव जीवपदेसा अत्थि त्ति जाणावणट्ठं जीवपदेसपमाण-
परूवणा कीरदे । एक्केक्कम्हि जीवपदेसे एगपरमाणुणा विणा कथमणंता परमाणु सम्मांति❖? ण, कम्मपरमाणुणमाणांतियं फिट्ठिण्ण तेसिमसंखेज्जपमाणत्तप्पसंगादो ।
ण च एवं, सव्वसुत्तेहि सह विरोहप्पसंगादो तम्हा । जत्तीए विणा सुत्तबलेणेव एक्के-
क्कम्हि जीवपदेसे अणंताणंतपरमाणुणमत्थित्तपरूवणट्ठं पदेसपमाणानुगमो आगदो ।

आउक्काइयजीवपदेसा❖ असंखेज्जा ॥ ५६३ ॥

तेउक्काइयजीवपदेसा अमंखेज्जा ॥ ५६४ ॥

वाउक्काइयजीवपदेसा असंखेज्जा ॥ ५६५ ॥

वणप्फदिकाइयजीवपदेसा अणंता ॥ ५६६ ॥

तसकाइयजीवपदेसा असंखेज्जा ॥ ५६७ ॥

सुगमाणि एदाणि सुत्ताणि । एवं पदेसपमाणानुगमो समत्तो ।

समाधान- नहीं, क्योंकि, एक एक जीवप्रदेशमें अनन्त औदारिक, तैजस और कामंण परमाणु हैं तथा एक एक परमाणुपर अनन्तानन्त विस्सोपचय हैं इस प्रकार इस बातका ज्ञान करानेके लिए तथा एक एक जीवके एक एक घनलोकप्रमाण ही जीवप्रदेश हे इस बातका ज्ञान करानेके लिए यहां पर जीवके प्रदेशोंके प्रमाणका कथन किया है ।

शंका- एक एक जीवप्रदेश पर एक परमाणुके बिना अनन्त परमाणु कैसे समाते है ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, ऐसा माननेपर कम्मपरमाणुओंकी अनन्तता नष्ट होकर उनके असंख्यातप्रमाण प्राप्त होनेका प्रसंग आता है । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, ऐसा माननेपर सब सूत्रोंके साथ विरोध होनेका प्रसंग प्राप्त होता है । इसलिए युक्तिके बिना सूत्रके बलसे ही एक एक जीवप्रदेश पर अनन्तानन्त परमाणुओंके अस्तित्वका कथन करनेके लिए प्रदेश-
प्रमाणानुगम आया है ।

अक्कायिक जीवोंके प्रदेश असंख्यात हैं ॥ ५६३ ॥

अग्निकायिक जीवोंके प्रदेश असंख्यात हैं ॥ ५६४ ॥

वायुकायिक जीवोंके प्रदेश असंख्यात हैं ॥ ५६५ ॥

वनस्पतिकायिक जीवोंके प्रदेश अनन्त हैं ॥ ५६६ ॥

त्रयकायिक जीवोंके प्रदेश असंख्यात हैं ॥ ५६७ ॥

ये सूत्र सुगम हैं । इस प्रकार प्रदेशप्रमाणानुगम समाप्त हुआ ।

अप्पाबहुअं दुविहं--जीवअप्पाबहुअं चेव पदेसअप्पाबहुअं चेव ॥ ५६८ ॥

एवमप्पाबहुअं एत्थ दुविहं चेव होदि । जीवअप्पाबहुगादो चेव पदेसअप्पाबहुअं णज्जदि तेण तण्ण वत्तव्वं ति? ण, सव्वेसि जीवाणं जीवपदेसा सरिसा चेव होति ति जाणावणट्ठं तप्परुवणादो । गुरुवदेसादो चेव तण्णावमिदि तप्परुवणा ण गिर-
त्थिया, सुत्तेण विणा गुरुवएसस्स अप्पवृत्तीए ।

जीवअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवा तसकाइयजीवा ॥ ५६९ ॥

जगपदरस्स असंखेज्जविभागत्तादो ।

तेउक्काइयजीवा असंखेज्जगुणा ॥ ५७० ॥

को गृणगारो ? असंखेज्जा लोगा ।

पुढविकाइया जीवा विसेसाहिया ॥ ५७१ ॥

केसियमेत्तो विसेसो? असंखेज्जा लोगा, तेउक्काइयजीवाणमसंखेज्जविभागो ।
को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा । एवं सव्वत्थ वत्तव्वं ।

अल्पबहुत्व दो प्रकारका है-- जीवअल्पबहुत्व और प्रदेशअल्पबहुत्व । ५६८ ।

इस प्रकार अल्पबहुत्व यहाँ पर दो प्रकारका ही होता है ।

शंका-- जीवअल्पबहुत्वसे ही प्रदेशअल्पबहुत्वका ज्ञान हो जाता है, इसलिए उसका कथन नहीं करना चाहिए ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, सब जीवोंके जीवप्रदेश समान ही होते हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए उसका कथन किया है । गुरुके उपदेशसे ही उसका ज्ञान हो जाता है, इसलिए उनका कथन करना निरर्थक नहीं कहा जा सकता, क्योंकि, सूत्रके बिना गुरुके उपदेशकी प्रवृत्ति नहीं होती ।

जीवअल्पबहुत्वकी अपेक्षा त्रसकायिक जीव सत्तसे स्तोक हैं । ५६९ ।

क्योंकि, वे जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ।

उनसे तैजस्कायिक जीव असंख्यातगुणे हैं । ५७० ।

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार है ।

उनसे पृथिवीकायिक जीव विशेष अधिक हैं । ५७१ ।

विशेषका प्रमाण कितना है ? तैजस्कायिक जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण जो असंख्यात लोक हैं उतना विशेषका प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिभाग है । इसी प्रकार सर्वत्र कथन करना चाहिए ।

✽ अ० प्रती 'पुढविकाइया जीवा' इति पाठः ।

आउकाइयजीवा विसेसाहिया ॥ ५७२ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? असंखेज्जा लोका ।

वाउक्काइया जीवा^० विसेसाहिया ॥ ५७३ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? असंखेज्जा लोका ।

वणप्फदिकाइया जीवा^{*} अणंतगुणा ॥ ५७४ ॥

को गुणमारो ? सब्बजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागो । एवं जीवअप्पाबहुअं समत्तं ।

पदेसअप्पाबहुए त्ति सब्बत्थोवा तसकाइयपदेसा ॥ ५७५ ॥

घणलोगगुणिदत्तत्थतणत्तसजीवपमाणत्तादो ।

तेउक्काइयपदेसा असंखेज्जगुणा ॥ ५७६ ॥

पुढविकाइयपदेसा विसेसाहिया । ५७७ ।

आउक्काइयपदेसा विसेसाहिया । ५७८ ।

वाउक्काइयपदेसा विसेसाहिया । ५७९ ।

वणप्फदिकाइयपदेसा अणंतगुणा । ५८० ।

उनसे अण्कायिक जीव विशेष अधिक हैं ॥ ५७२ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? विशेषका प्रमाण असंख्यात लोक है ।

उनसे वायुकायिक जीव विशेष अधिक हैं ॥ ५७३ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? विशेषका प्रमाण असंख्यात लोक है ।

उनसे वनस्पतिकायिक जीव अनन्तगुणे हैं ॥ ५७४ ॥

गुणकार क्या है ? सब जीवराशिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । इस प्रकार जीवअल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

प्रदेशअल्पबहुत्वकी अपेक्षा त्रसकायिक जीवोंके सबसे स्तोक हैं । ५७६ ।

यहाँ त्रस जीवोंके प्रमाणको घनलोकसे गुणित करनेपर उनके प्रदेशोंका प्रमाण प्राप्त होता है

उनसे अग्निकायिक जीवोंके प्रदेश असंख्यातगुणे हैं । ५७६ ।

उनसे पृथिवीकायिक जीवोंके प्रदेश विशेष अधिक हैं । ५७७ ।

उनसे अण्कायिक जीवोंके प्रदेश विशेष अधिक हैं । ५७८ ।

उनसे वायुकायिक जीवोंके प्रदेश विशेष अधिक हैं । ५७९ ।

उनसे वनस्पतिकायिक जीवोंके प्रदेश अनन्तगुणे हैं । ५८० ।

❖ अ० प्रती ' वाउक्काइया ' इति पाठः । ❖ अ० का० प्रती ' वणप्फदिकाइया ' इति पाठः ।

एवाणि सुत्ताणि सुगमाणि । जेणेवं महामच्छसरीरे अणंता जीवा अणंताणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा जहण्णबादरणिगोदवग्गणजीवेहिंतो असंखेज्जगुणा अत्थ तेण विस्सासुवचएण एत्थ तत्तो अणंतगुणेण होदव्वमिवि जहण्णबादरणिगोदवग्गण- जीवेहिंतो महामच्छदेहट्ठिदजीवा* असंखेज्जगुणा चेव, बादरणिगोदवग्गणाए एग- णिगोदसरीरे वि सव्वजीवरासीए असंखेज्जदिभागमेत्तजीवोवलंभादो । ण च तत्थ तिस्से अणंतिमभागमेत्तजीवा होति, बादरणिगोदजहण्णवग्गणादो उक्कस्ससुहुमणिगो- दवग्गणाए अणंतगुणत्तप्पसंगादो । ण च एवं, पुब्बुत्तगुणगारेण सह विरोहादो । जहण्णबादरणिगोदवग्गणाए जहण्णविस्सासुवचयादो उक्कस्ससुहुमणिगोदवग्गणाए उक्कस्सविस्सासुवचओ वि असंखेज्जगुणो चेव, अण्णहा जहण्णबादरणिगोदवग्गणादो उक्कस्ससुहुमणिगोदवग्गणाए अणंतगुणत्तप्पसंगादो । ण च महामच्छउक्कस्सविस्सा- सुवचओ अणंतगुणो होदि, जहण्णबादरणिगोदवग्गणादो उक्कस्ससुहुमणिगोदवग्ग- णाए अणंतगुणत्तप्पसंगादो । तम्हा एदेण* जीवेण अप्पाबहुएण महामच्छदेहउक्क- स्सविस्सासुवचयस्स अणंतगुणत्तं ण साहिज्जदि त्ति सिद्धं? एत्थ परिहारो उच्चदे ! तं जहा- एसो महामच्छाहारो पोगलकलावो पत्तेयसरीरबादर-सुहुमणिगोद - वग्गणसमूहमेत्तो ण होदि किंतु तस्स पुट्ठीए संभूदउट्ठियकलावो ततो

ये सूत्र सुगम है ।

शंका-— चूंकि यह बात है कि महामत्स्यके शरीरमें अनन्त जीव अनन्तानन्त विस्त्र- सोपचयों से उपचित होते हैं तो भी जघन्य बादरनिगोदवर्गणाके जीवोंसे असंख्यातगुणे होते हैं, इसलिए विस्त्रसोपचयको यहाँपर उनसे अनन्तगुणा होना चाहिए, अतः जघन्य बादरनिगोद- वर्गणाके जीवोंसे महामत्स्यके शरीरमें स्थित जीव असंख्यातगुणे ही होते हैं, क्योंकि, बादरनि- गोदवर्गणाके एक निगोदशरीरमें भी सब जीवराशिके असंख्यातवें भागप्रमाण जीव उपलब्ध होते हैं । वहाँ उसके अनन्तवें भागप्रमाण जीव होते हैं यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा मानने पर जघन्य बादरनिगोदवर्गणासे उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके अनन्तगुणे होनेका प्रसंग प्राप्त होता है । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, ऐसा मानने पर पूर्वोक्त गुणकारके साथ विरोध आता है । जघन्य बादरनिगोदवर्गणाके जघन्य विस्त्रसोपचयसे उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणाका उत्कृष्ट विस्त्र- सोपचय भी असंख्यातगुणा ही है, अन्यथा जघन्य बादरनिगोदवर्गणासे उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदव- र्गणाके अनन्तगुणे होनेका प्रसंग प्राप्त होता है । परन्तु महामत्स्यका उत्कृष्ट विस्त्रसोपचय अन- न्तगुणा नहीं हैं, क्योंकि, जघन्य बादरनिगोदवर्गणासे उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोदवर्गणाके अनन्तगुणे होनेका प्रसंग प्राप्त होता है, इसलिए इस जीव अल्पबहुत्वसे महामत्स्यके देहका उत्कृष्ट विस्त्र- सोपचय अनन्तगुणा नहीं सिद्ध किया जा सकता है यह बात सिद्ध होती है ?

समाधान-— यहाँ इस शंकाका परिहार करते हैं । यथा- यह महामत्स्यका आहाररूप जो पुद्गलकलाव है वह प्रत्येकशरीर, बादरनिगोदवर्गणा और सूक्ष्मनिगोदवर्गणाका समुदायमात्र नहीं होता है किन्तु उसकी पीठपर आकर जमी हुई जो मिट्टीका प्रचय है वह और उसके कारण

* ता० प्रती 'उवचिदा जहण्णबादरणिगोदवग्गणजीवेहिंतो महामच्छदेहट्ठिदजीवा' इति पाठः ।

* ता० का० प्रयोगः 'अणंतगुणो होदि । तम्हा एदेण' इति पाठः ।

समुच्छिदपत्थर-सज्जज्जुण-णिब कयंबंब-जंबु-जंबोर-हरि-हरिणावओ च विस्ससोवच्च-
यंतब्भवा वट्ठवा । ण च तत्थ मट्ठियादीणमुप्पत्ती असिद्धा, सइलोदए पट्ठिदपण्णाणं
पि सिलाभावेण परिणामदंसणादो सुत्तिवुडपट्ठिदोदबिदूणं मुत्ताहलागारेण परिणाम-
वलंभादो । ण च तत्थ सम्मुच्छिमपंचिदियजीवाणमुप्पत्तिदंसणादो । पाउसपारंभवा-
सजलधरणिसंबंधेण भेगुंदर-मच्छ-कच्छवादीणमुप्पत्तिदंसणादो । ण च एदेसिं विस्सा-
सुवच्चयत्तमसिद्धं, कम्मोदयमंतरेणुवचिदाणं विस्सासुवच्चयत्तं पडि विरोहाभावादो । ण
च एदेसिं महामच्छत्तमसिद्धं, माणुसजडरुप्पणगंडुवालाणं पि माणुसववएसुवलंभादो ।
सव्वेसिमेदेसिं गहणादो सिद्धं उक्कस्सविस्सासुवच्चयस्स अणंतगुणत्तं । अथवा ओरालिय-
तेजा-कम्मइयपरमाणुपोग्गलाणं बंधनगुणेण जे एयबंधनवद्धा पोग्गला विस्सासुवच्चय-
सण्णिया तेसिं सचित्तवग्गणाणं अंतब्भादो होदि, जीवेण सह तेसिमण्णोण्णाणुगयत्त-
दंसणादो । जे पुण तेसिं सचित्तवग्गणसण्णिवपोग्गलाणं बंधनगुणेण तत्थ समवेदा
पोग्गला जे च सीसवालदंता इव तज्जोणिभावेणुप्पणा च जीवेण अणणुगयभावादो
अलद्धसचित्तवग्गणववएसो ते एत्थ विस्सासुवच्चया घेत्ठवा । ण च णिज्जीवविस्सासुव-
चयाणं अत्थित्तमसिद्धं, रहिर-वस-सुक्क-रस सेंभ-पित्त-मूत्त-खरिस-मत्थलिगादीणं
जीववज्जियाणं विस्सासुवचयाणमुवलंभादो । ण च दंतहड्डवाला इव सव्वे विस्सासुव-

उत्पन्न हुए पत्थर, सर्ज नामके वृक्षविशेष, अर्जुन, नीम, कदम्ब, आम, जामून, जम्बीर, सिंह
और हरिण आदिके ये सब विस्ससोपचयमें अन्तर्भूत जानने चाहिए । वहाँ मिट्टी आदिकी
उत्पत्ति प्रसिद्ध है यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, शैलके पानीमें गिरे हुए पत्तोंका शिलारूपसे
परिणमन देखा जाता है तथा शुक्तिपुटमें गिरे हुए जलबिन्दुओंका मुक्ताफलरूपसे परिणमन
उपलब्ध होता है । वहाँ पञ्चेन्द्रिय सम्पूच्छन जीवोंकी उत्पत्ति असिद्ध है यह बात भी नहीं है,
क्योंकि, वर्षाकालके प्रारंभमें वर्षाके जल और पृथिवीके संबंधसे मेंढक, चूहा, मछली और कछुआ
आदिकी उत्पत्ति देखी जाती है । इनका विस्ससोपचयपत्ता असिद्ध है यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि
कर्मोदयके बिना उपचित्त हुए पुद्गलोंके विस्ससोपचय होनेमें कोई विरोध नहीं आता है । इनका
महामत्स्य होना असिद्ध है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, मनुष्यके जठरमें उत्पन्न हुई
कृमिविशेषकी भी मनुष्य संज्ञा उपलब्ध होती है । इन सबके ग्रहण करनेसे उत्कृष्ट विस्ससोपचय
अनन्तगुणा है यह बात सिद्ध होती है । अथवा औदारिक, तैजस और कामर्ग परमाणु पुद्गलोंके
बन्धनगुणके कारण जो एक बन्धनवद्ध विस्ससोपचय संज्ञावाले पुद्गल हैं उनका सचित्तवर्ग-
णाओंमें अन्तर्भाव होता है, क्योंकि, उनका जीवके साथ परस्परमें अनुगतपत्ता देखा जाता है ।
परन्तु उन सचित्तवर्गणा संज्ञावाले पुद्गलोंके बन्धन गुणके कारण जो पुद्गल वहाँ समवेत होते
हैं और जो सीसपालमें दाँतोंके समान उनके योनिरूपसे उत्पन्न हुए हैं वे जीवसे अनुगत नहीं
होनेके कारण सचित्तवर्गणा संज्ञाको नहीं प्राप्त होते, इसलिए उन्हें यहाँ विस्ससोपचयरूपसे
ग्रहण करना चाहिए । निर्जीव विस्ससोपचयोंका अस्तित्व असिद्ध है यह कहना ठीक नहीं है,
क्योंकि, जीवरहित रुधिर, वसा, शुक्र, रस, कफ, पित्त, मूत्र, खरिस और मस्तकर्मसे निकलने-
वाले चिकने द्रवरूप विस्ससोपचय उपलब्ध होते हैं । दाँतोंकी हड्डियोंके समान सभी विस्ससोपचय

चया णिज्जीवाऽ पचचक्खा चेव, अणुभावेण अणंताणं विस्सामुवचयाणं आगमचक्खु-
गोयराणमुवलंभादो । एदे विस्सामुवचया महामच्छदेहभूदछज्जीवणिकायविसया अणं-
तगुणा त्ति घेतत्वा । किंफला एसा परुवणा? दुविहविस्सामुवचयपदुप्पायणफला ।

एवं विस्सामुवचयपरुवणाए समत्ताए बाहिरिया वग्गणा समत्ता होदि ।

चूलिया

एतो उवरिमगंथो चूलिया णाम ॥५८१॥

पुवं सूचिदअत्थाणं विसेसपरुवणादो । संपहि ' जत्थेय मरदि जीवो तत्थ
दु मरणं भवे अणंताणं । वक्कमदि जत्थ एयो वक्कमणं तत्थणंताणं ॥' एदिस्से गाहाए
पुवं परुविदाए ॥ पच्छिमद्वस्त अत्थविसेसणद्वमत्तरसुत्तं भणदि -

जो णिगोदो पढमदाए वक्कममाणो अणंता वक्कमंति जीवा ।
एयसमएण* अणंताणंतसाहारणजीवेण घेतूण एगसरीरं भवदि
असंखेज्जलोगमेत्तसरीराणि घेतूण एगो णिगोदो होदि ॥५८२॥

प्रश्नसे निर्जीव ही होते हैं यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, अनुभावके कारण आगमचक्षुके
विषयभूत अनन्त विस्त्रसोपचय उपलब्ध होते हैं । महामत्स्यके देहमें उत्पन्न हुए छह जीवनि-
कोंको विषय करनेवाले ये विस्त्रसोपचय अन्तन्तगुणे होते हैं ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए ।

शंका- इस प्ररूपणाका क्या फल है ?

समाधान- दो प्रकारके विस्त्रसोपचयोंका कथन करना इसका फल है ।

इस प्रकार विस्त्रसोपचयप्ररूपणाके समाप्त होनेपर बाह्य वर्गणा समाप्त होती है ।

चूलिका

इससे आगेका ग्रन्थ चूलिका है ॥५८१॥

क्योंकि, इसमें पहिले सूचित किये गये अर्थोंका विशेषरूपसे कथन किया है । अब
' जहाँ एक जीव मरता है वहाँ अनन्त जीवोंका मरण होता है और जहाँ एक जीव उत्पन्न होता
है वह अनन्त जीवोंका उत्पाद होता है । ' पहले कही गई इस गाथा के उत्तरार्धके अर्थमें
विशेषता दिखलाने के लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

प्रथम समयमें जो निगोद उत्पन्न होता है उसके साथ अनन्त जीव उत्पन्न होते
हैं । यहाँ एक समयमें अनन्तानन्त साधारण जीवोंको ग्रहण कर एक शरीर होता है ।
तथा असंख्यात लोकप्रमाण शरीरों को ग्रहण कर एक निगोद होता है ॥५८२॥

❖ अ० प्रती ' णिजीवा ' इति पाठः ।

⊙ अ० का० प्रत्यो ' पुव्वपरुवणदाए ' इति पाठः ।

❖ ता० प्रती ' वक्कमंति जहा एयसमएण ' इति पाठः ।

णिगोदो पुवलिधा त्ति एयट्ठो । तस्संतो अचलंति जाणि सरीराणि सरीराण-
मंतो जे वसंति अणंताणंता जीवा तेति सव्वेसि पि णिगोदा त्ति सण्णा, आधेये
आधारोवयारादो । जो णिगोदो त्ति भणिदे णिगोदजीवो एगो घेतव्वो । पुलविघाणं
सरीराणं वा ग्रहणं न होदि, तेसिमाणंतियाभावादो । पढमदाए उप्पत्तीए पढमभावेण
वक्कममाणो उप्पज्जिममाणो जो णिगोदो तेण सह अणंता जीवा वक्कमंति । एगस-
मएण जम्हि समए अणंता जीवा उप्पज्जंति तम्मि चैव समए सरीरस्स पुवलिधाए च
उप्पत्ती होदि, तेहि विणा तेसिमुप्पत्तिविरोहादो । कथं वि पुलविघाए पुव्वं पि
उप्पत्ती होदि, अणंगसरीराधारत्तादो । एसा परूवणा किमेगसरीरमाहारं काऊण
परूविज्जदि आहो एगपुलवियमाहारं काऊण परूविज्जदि त्ति ? उभयमवि आहारं
काऊण परूवणा कीरदे । एदं कुदो णव्वदे ? अंतोमुहुत्तमस्सिदूण उप्पत्तिकाल—
परूवणादो । न च खंधेसु कमाकमेहि उप्पज्जमाणानेगपुलविघेसु अंतोमुहुत्तालंबणं
जुत्तं, गलोइ थूहल्लयादीणं बादरणिगोदवखंधाणं पुलविमघाणं अणेगकालावट्ठाण—
दसणादो ।

बिबियसमए असंखेज्जगुणहीणा वक्कमंति ॥ ५८३ ॥

निगोद और पुलवि ये एकर्थवाची शब्द हैं । उनके भीतर जो शरीर रहते हैं और
शरीरोंके भीतर जो अनन्तानन्त जीव रहते हैं उन सभी की आधार में आधेयका उपचार होनेसे
निगोद संज्ञा है । सूत्र में ' जो निगोदो ' ऐसा कहने पर एक निगोद जीव लेना चाहिए ।
इससे पुलवियों और शरीरोंका ग्रहण नहीं होता है, क्योंकि, वे अनन्त नहीं हैं । ' पढमदाए '
अर्थात् उत्पत्ति की प्रथम अवस्थारूपसे उत्पन्न होनेवाला जो निगोद जीव है उसके साथ अनन्त
जीव उत्पन्न होते हैं । ' एगसमएण ' अर्थात् जिस समयमें अनन्त जीव उत्पन्न होते हैं उसी
समयमें शरीर की और पुलविकी उत्पत्ति होती है, क्योंकि, इनके बिना अनन्त जीवोंकी
उत्पत्ति होनेमें विरोध है । कहीं पर पुलविकी पहले भी उत्पत्ति होती है, क्योंकि, वह अनेक
शरीरोंका आधार है ।

शंका— यह प्ररूपणा क्या एक शरीरकी आधार करके की जा रही है या एक
पुलविको आधार करके की जा रही है ?

समाधान— दोनोंकी ही आधार करके यह प्ररूपण की जा रही है ।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— अन्तर्मुहूर्तका आश्रय लेकर चूंकि उत्पत्तिकालकी प्ररूपणा की गई है
इससे जाना जाता है कि दोनोंका आधार बनाकर यह प्ररूपणा की जा रही है । और
स्कन्धोंमें क्रम और अक्रम से उत्पन्न होनेवाली अनेक पुलवियोंमें अन्तर्मुहूर्तका अवलम्बन करना
युक्त नहीं है, क्योंकि, गिलोय, थूवर और आदा आदि बादर निगोद स्कन्धोंमें पुलवियोंका
अनेक काल तक अवस्थान देखा जाता है ।

दूसरे समयमें असंख्यातगुणे हीन निगोद जीव उत्पन्न होते हैं ॥५८३॥

❖ अ० प्रती ' णिगोद त्ति ' इति पाठ ।

तस्मिन्नेव सरीरे पदमसमयउत्पन्नजीवेहितो विदियसमए उत्पज्जमाणजीवा असंखेज्जगुणहीणा । को भागहारो ? आवलियाए असंखेज्जविभागो ।

तदियसमए असंखेज्जगुणहीणा वक्कमंति । ५८४ ।

तत्थेव सरीरे विदियसमए वक्कंतजीवेहितो तदियसमए उत्पज्जंतजीवा असंखेज्जगुणहीणा । भागहारो सव्वत्थ आवलियाए असंखेज्जविभागो ।

एवं जाव असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए गिरंतरं वक्कमंति जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जविभागो । ५८५ ।

एत्थतणआवलियाए असंखेज्जविभागस्स पमाणमावलियपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जविभागो । कुदो एदं णव्वदे ? अविहद्धाइरियवयणादो । एवेण सुत्तेण पढमकंदयपरूवणा कदा ।

तदो एक्को वा दो वा तिण्णि वा समए अंतरं काऊण गिरंतरं वक्कमंति जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जविभागो । ५८६ ।

एक्को वा दो वा तिण्णि वा समए जावक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जविभागो अंतरं काऊणे त्ति पदसंबंधो कायव्वो । आवलियाए असंखेज्जविभागसद्दो अंतरकाले

उसी शरीरमें प्रथम समयमें उत्पन्न हुए जीवोंसे दूसरे समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव असंख्यातगुणे हीन होते हैं । भागहार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण भागहार है ।

तीसरे समयमें असंख्यातगुणे हीन निगोद जीव उत्पन्न होते हैं । ५८४ ।

उसी शरीरमें दूसरे समयमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंसे तीसरे समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव असंख्यातगुणे हीन होते हैं । सर्वत्र भागहार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालतक निरन्तर असंख्यातगुणे हीन श्रेणिरूपसे निगोद जीव उत्पन्न होते हैं ॥ ५८५ ॥

यहाँ पर आवलिके असंख्यातवें भागका प्रमाण आवलिके प्रथम वर्गमूलका असंख्यातवाँ भाग है ।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— अविहद्ध आचार्यवचनसे जाना जाता है ।

इस सूत्रके द्वारा प्रथम काण्डककी प्ररूपणा की ।

उसके बाद एक, दो और तीन समयसे लेकर आवलिके असंख्यातवें भाग— प्रमाण कालका अन्तर करके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालतक निरन्तर निगोद जीव उत्पन्न होते हैं ॥ ५८६ ॥

एक, दो और तीन समयसे लेकर उत्कृष्टसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालका अन्तर करके ऐसा यहाँ पदसम्बन्ध करना चाहिए ।

❁ ता० प्रती ' अंतरकालो (ले) ' इति पाठा ।

वक्कमणकाले च संबंधिज्जदि त्ति कुदो णव्वदे ? अविरुद्धाइरियवयणादो । अंतरमे-
गसमओ वि दो समया वि होंति उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो । एवं
सव्वंतराणं पमाणपरुवणा कायव्वा, एदिस्से अंतरपरुवणाए देसानासियत्तादो ।
एवमंतरं काऊण अणंतरसमए असंखेज्जगुणहीणा जीवा उप्पज्जंति । एवमेग-
दोसमयमादि काऊण ताव निरंतरं उप्पज्जंति जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखे-
ज्जदिभागो त्ति । एवं विदियं कंदयमुबलवखणं काऊण सेसकंदयाणं पि आवलियाए
असंखेज्जदिभागमेत्ताणं परुवणा कायव्वा । णवरि पढमकंदयपमाणं जहणं उक्कस्स
पि आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सेसवक्कमणकंदयाणमंतरकंदयाणं च पमाणं
जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो । अंतराणि एगादि-
समइयाणि होंतु णाम, तत्थ एगो वा दो वा तिणि वा त्ति अंतरपमाणपरुवणुबलं-
भादो । ण वक्कमणकंदयमेगसमइयं, तत्थ तदणुबलंभादो त्ति ? ण, अंतरमिह वुत्तएगा-
दिसमयाणं वक्कमणसुत्तस्स अवयवभावेण पवुत्तिदंसणादो । एवमेदेण सुत्तेण
वक्कमंतजीवाणं तक्कालंतराणं च परुवणा कदा ।

शंका-- 'आवलिके असंख्यातवें भाग' शब्दका अन्तरकाल और उत्पत्तिकाल
दोनोंसे सम्बन्ध है यह किस प्रमाणसे जाना जाता ?

समाधान-- अविरुद्ध आचार्य वचनसे जाना जाता है ।

अन्तर एक समय भी होता है, दो समय भी होता है और उत्कृष्टरूपसे आवलिके
असंख्यातवें भागप्रमाण होता है । इस प्रकार सब अन्तरोंके प्रमाणका कथन करना चाहिए,
क्योंकि, यह अन्तरप्ररूपणा देशामर्षक है । इस प्रकार अन्तर करके अनन्तर समयमें असंख्या-
तगुणे हीन जीव उत्पन्न होते हैं । इस प्रकार एक और दो समयसे लेकर उत्कृष्टसे आवलिके
असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक निरन्तर उत्पन्न होते हैं । इस दूसरे काण्डककी उपलक्षण
करके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण शेष काण्डकोंकी भी प्ररूपणा करनी चाहिए । इतनी
विशेषता है कि जघन्य और उत्कृष्ट प्रथम काण्डकका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण
है । शेष उपक्रमणकाण्डकों और अन्तरकाण्डकोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल
आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

शंका-- अन्तर एक आदि समयवाले होवें, क्योंकि, उस विषयमें एक, दो और तीन
इस प्रकार अन्तरके प्रमाणकी प्ररूपणा उपलब्ध होती है, उपक्रमण काण्डक एक समयवाला
नहीं हो सकता, क्योंकि, इसके विषयमें इस प्रकारकी कोई प्ररूपणा नहीं उपलब्ध होती ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, अन्तरके विषयमें कहे गये एक आदि समयोंकी उत्पत्ति-
सूत्रके अवयवरूपसे प्रवृत्ति देखी जाती है ।

इस प्रकार इस सूत्रके द्वारा उत्पन्न होनेवाले जीवोंकी और उनके कालके अन्तरोंकी
प्ररूपणा की है ।

❖ ता० प्र० 'सव्वंतराणि (ण) परुवणा' अ० का० प्रत्योः 'सव्वंतराणि पमाणपरुवणा' इति पाठः ।

❖ अ० का० प्रत्योः 'एवमंतरं' इति पाठः । ❖ ता० प्र० 'एवं विदियं--' इति पाठः ।

❖ अ० का० प्रत्योः '— कंदयाणमंतरं कंदयाणं' इति पाठः ।

संपहि एदेण सूचिदपमाणसेडीओ भणिस्सामो- पढमसमए वक्कमंति जीवा केवडिया ? अणंता । विदियसमए वक्कमंति जीवा केवडिया? अणंता । एवं णेयव्वं जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तकालो ति । तदो एकं वा दो वा समयं आदि कादूण अंतरं होदि जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्त- कालो ति । तदो उवरिसमए अणंता जीवा वक्कमंति । एवमेगसमयमादि कादूण वक्कमंति जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तकालो ति । एवं सांतर- णिरंतरकमेण वक्कमाणजीवाणं पमाणं वत्तव्वं जाव वक्कमणकालं चरिमसमओ ति । वक्कमणकालपमाणं पुण अंतोमूहुत्तं, ततो उवरि उत्पत्तिसंभवाभावादो । पमाणपरुवणा गदा ।

सेडिपरुवणा दुविहा- अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा चेदि । तत्थ अणंतरो- वणिधा एक्किस्से पुलवियाए एगसरोरे वा पढमसमए वक्कमंति जीवा बहुआ । विदिय- समए वक्कमंति जे जीवा ते असंखेज्जगुणहीणा । तदियसमए जे वक्कमंति जीवा ते असंखेज्जगुणहीणा । एवं आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपढमकंदयचरिमसमओ ति । तदो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तमंतरं होदि । तदो विदियकंदयआदिसमए वक्कमंति जीवा पढमकंदयचरिमसमए वक्कमदिजीवेहिंतो असंखेज्जगुणहीणा । एवं णिरंतरं णेयव्वं जाव विदियकंदयचरिमसमओ ति । एवमावलियाए असंखेज्ज-

अब इसके द्वारा सूचित होनेवाली प्रमाणश्रेणियोंका कथन करेंगे-- प्रथम समयम उत्पन्न होनेवाले जीव कितने हैं ? अनन्त हैं । दूसरे समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव कितने हैं? अनन्त हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट रूपसे आवलिके असंख्यातवेभागप्रमाण काल तक ले जाना चाहिए । उसके बाद एक या दो समयसे लेकर उत्कृष्ट रूपसे आवलिके असंख्यातवे भागप्रमाण काल तक अन्तर होता है । उसके अगले समयमें अनन्त जीव उत्पन्न होते हैं । इस प्रकार एक समयसे लेकर आवलिके असंख्यातवे भागप्रमाण काल तक जीव उत्पन्न होते हैं । इस प्रकार सान्तर-निरन्तर क्रमसे उत्कृष्ट कालके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक उत्पन्न होनेवाले जीवोंका प्रमाण कहना चाहिए । तथा उपक्रमणकालका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त है, क्योंकि, उसके आगे उत्पत्ति सम्भव नहीं है । इस प्रकार प्रमाण प्ररूपणा समाप्त हुई ।

श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकारकी है- अन्तरोपनिधा और परंपरोपनिधा । उनमेंसे अन्तरोपनिधा की अपेक्षा एक पुलविमें या एक शरीरमें प्रथम समयमें बहुत जीव उत्पन्न होते हैं । दूसरे समयमें जो जीव उत्पन्न होते हैं वे असंख्यातगुण हीन होते हैं । तीसरे समयमें जो जीव उत्पन्न होते हैं वे असंख्यातगुणहीन होते हैं । इस प्रकार आवलिके असंख्यातवे भागप्रमाण प्रथम कांडकके अन्तिम समय तक जानना चाहिए । उसके बाद आवलिके असंख्यातवे भागप्रमाण कालका अंतर होता है । उसके बाद दूसरे कांडकके प्रथम समयमें जो जीव उत्पन्न होते हैं वे प्रथम कांडकके अन्तिम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंसे असंख्यातगुण हीन होते हैं । इस प्रकार दूसरे कांडकके अन्तिम समय तक निरन्तर क्रमसे ले जाना चाहिए । इस प्रकार आवलिके असंख्यातवे भागप्रमाण

❖ अ० का० प्रत्योः ' वक्कमणं जीवाणं ' इति पाठः । ❖ ता० प्रती ' जावक्कस्सकाल- ' इति पाठः ।

❖ ता० प्रती ' जीवा असंखेज्जगुणहीणा ' इति पाठः । ❖ ता० प्रती ' वक्कमंति (त) जीवा ' इति पाठः । ❖ ता० प्रती ' वक्कमदि (मं) जीवेहिंती ' अ० का० प्रत्यो ' वक्कमिदिजीवेहिंनो ' इति पाठः ।

दिभागमेत्तवक्कमणकंडयाणमणंतरोवणिधा वत्तत्वा । भागहारो सव्वत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो वक्कमंतजीवमानुप्पायणे होदि । परंपरोवणिधा णत्थि* । कुदो ? समयं पडि असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए जीवाणं वक्कमणुवलंभादो ।

अप्पाबहुअं दुविहं-- अद्धाअप्पाबहुअं चेव जीवअप्पाबहुअं चेव ॥ ५८७ ॥

एवमप्पाबहुअं दुविहं चेव होदि, तदियादीणमसंभवादो ।

अद्धाअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवो सांतरसमए वक्कमण-
कालो ॥ ५८८ ॥

को सांतरसमए वक्कमणकालो* णाम । पढमवक्कमणकंडयकालं मोत्तूण विदियाविक्कमणकंडयाणं सयलकालकलावो ।

णिरंतरसमए वक्कमणकालो असंखेज्जगुणो ॥ ५८९ ॥

को णिरंतरसमए वक्कमणकालो ? पढमवक्कमणकंडयद्वाणं, तत्थंतराभा-
वादो । को गुण० ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

उपक्रमण काण्डकीकी अतन्तरोपनिधा कहनी चाहिए । सर्वत्र उत्पन्न होनेवाले जीवोंका प्रमाण उत्पन्न करनेके लिए भागहार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है । परंपरोपनिधा नहीं है, क्योंकि, प्रत्येक समयमें असंख्यातगुणे हीन श्रेणिरूपसे जीवोंकी उत्पत्ति उपलब्ध होती है ।

अल्पबहुत्व दो प्रकारका है-- अद्धाअल्पबहुत्व और जीव अल्पबहुत्व । ५७८ ।

इस प्रकार अल्पबहुत्व दो प्रकारका ही होता है, क्योंकि, तृतीय आदिका अभाव है ।

अद्धाअल्पबहुत्वकी अपेक्षा सांतर समयमें उपक्रमणकाल सबसे स्तोक है । ५८८ ।

शंका-- सांतर समयमें उपक्रमणकाल किसे कहते हैं ?

समाधान-- प्रथम उपक्रमण काण्डके कालको छोड़कर द्वितीय आदि उपक्रमणकाण्ड-
कोंके समस्त कालकलापको सांतर समयमें उपक्रमणकाल कहते हैं ।

निरन्तर समयमें उपक्रमणकाल असंख्यातगुणो है । ५८९ ।

शंका-- निरन्तर समयमें उपक्रमण काल किसे कहते हैं ?

समाधान-- प्रथम उपक्रमण काण्डके कालको निरन्तर समयमें उपक्रमणकाल कहते हैं क्योंकि, वहां पर अन्तरका अभाव है ।

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

* अ० का० प्रत्योः ' अत्थि ' इति पाठः ।

* अ० का० प्रत्योः सांतरसमयवक्कमणकालो ' इति पाठः । * प्रतिष्ठा ' वक्कमणकालो णाम ? पढमवक्कमणकालो णाम पढमवक्कमण- ' इति पाठः ।

सांतरणिरंतरसमए वक्कमणकालो विसेसाहिओ ॥ ५९० ॥

केत्तियमेत्तेण ? बिदियादिवक्कमणकंदयकालमेत्तेण । एदेण सुत्तेण सूचिद-
विसेसप्पाबहुअं वत्तइस्सामो ।

सव्वत्थोवो सांतरसमयवक्कमणकालविसेसो ॥ ५९१ ॥

उक्कस्ससांतरउवक्कमणकालम्मि जहण्णसांतरउवक्कमणकाले सोहिदे जो
सुद्धसेसो सो सांतरसमयवक्कमणकालविसेसो णाम । सो थोवो होदि ।

णिरंतरसमयवक्कमणकालविसेसो असंखेज्जगुणो ॥ ५९२ ॥

पढमतणवक्कमणकंदयं णिरंतरसमयवक्कमणकालो णाम । सो जहण्णो वि
अत्थि उक्कस्सो वि । जहण्णकाले उक्कस्सकालादो* सोहिदे णिरंतरसमयवक्क-
मणकालविसेसो होदि । सो पुठिवल्लविसेसादो असंखेज्जगुणो । को गुणमारो ?
आवलियाए असंखेज्जविभागो ।

सांतरणिरंतरवक्कमणकालविसेसो विसेसाहिओ ॥ ५९३ ॥

केत्तियमेत्तेण ? सांतरवक्कमणकालविसेसमेत्तेण । बिदियादिवक्कमणकंदयाण-
मुक्कस्सकालम्मि समुदिदम्मि तेसिं चेव जहण्णकालसमूहे सोहिदे सुद्धसेसो वक्कमण-

सान्तरनिरन्तर समयमें उपक्रमणकाल विशेष अधिक है ॥ ५९० ॥

कितना अधिक है ? द्वितीय आदि उपक्रमण काण्डकोंका जितना काल है उतना
अधिक है । अब इस सूत्र द्वारा सूचित होनेवाले विशेष अल्पबहुत्वको बतलाते हैं--

सांतर समयमें उपक्रमण कालविशेष सबसे स्तोक है । ५९१ ।

उत्कृष्ट सान्तर उपक्रमण कालमेंसे जघन्य सान्तर उपक्रमण कालको कम कर देने पर
जो शेष रहता है उसे सान्तर समय सम्बन्धी उपक्रमण कालविशेष कहते हैं । वह स्तोक है ।

निरन्तर समयमें उपक्रमण कालविशेष असंख्यातगुणा है । ५९२ ।

प्रथमतः उपक्रमणकाण्डका नाम निरन्तर समय उपक्रमण काल है । वह जघन्य
भी है और उत्कृष्ट भी है । उत्कृष्ट कालमेंसे जघन्य कालके कम करने पर निरन्तर समय
उपक्रमणकाल विशेष होता है । वह पहलेके विशेषसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

सांतर-निरन्तर उपक्रमण कालविशेष विशेष अधिक है । ५९३ ।

कितना अधिक है ? सान्तर उपक्रमण कालविशेषका जितना प्रमाण है उतना अधिक है ।
द्वितीय आदि उपक्रमण काण्डकोंके समुदित उत्कृष्ट कालमेंसे जघन्य काल समूहके कम कर देने

* ना० का० प्रत्योः ' णिरंतरवक्कमण- ' इति पाठः ।

* अ० का० प्रत्यो ' जहण्णव उक्कमणकालादो ' इति पाठः ।

कालविसेसो णाम । तत्तियमेत्तेण अहियमिदि भणिदं होदि ।

जहणपदेण सवत्थोवो सांतरवक्कमणसवजहण
कालो ॥५९४॥

विदियादिवक्कमणकंडयाणमावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणं सवजहण—
कालकलावो सांतरवक्कमणजहणकालो णाम । सो थोवो ।

उक्कस्सपदेण उक्कस्सओ सांतरसमयवक्कमणकालो विसे—
साहिओ ॥ ५९५ ॥

विदियादिवक्कमणकंडयाणमावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणं उक्कस्सकाल—
कलावो उक्कस्सगो सांतरवक्कमणकालो णाम । सो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तेण ?
आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेण ।

जहणपदेण जहणगो निरंतरवक्कमणकालो असंखेज्ज—
गुणो ॥ ५९६ ॥

पढमवक्कमणकंडयकालो जहणओ वि अत्थि उक्कस्सओ वि अत्थि । तत्थ
जो जहणओ निरंतरवक्कमणकालो सो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो? आवलियाए
असंखेज्जदिभागो ।

पर जो शेष रहता है वह उपक्रमण कालविशेष है । उतना अधिक है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

जघन्य पदकी अपेक्षा सांतर उपक्रमण सबसे जघन्य काल सबसे स्तोक है । ५९४।

आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण द्वितीय आदि उपक्रमण काण्डकोंके सबसे जघन्य
कालकलापकी सांतर उपक्रमण जघन्य काल संज्ञा है । वह स्तोक है ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा उत्कृष्ट सांतर समय उपक्रमणकाल विशेष अधिक है । ५९५।

आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण द्वितीय आदि उपक्रमण काण्डकोंके उत्कृष्ट काल—
कलापकी उत्कृष्ट सांतर उपक्रमण काल संज्ञा है । वह विशेष अधिक है । कितना अधिक
है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक है ।

जघन्य पदकी अपेक्षा जघन्य निरन्तर उपक्रमण काल असंख्यातगुणा है । ५९६।

प्रथम उपक्रमण काण्डक काल जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है । उसमें जो जघन्य
निरन्तर उपक्रमण काल है वह असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें
भागप्रमाण गुणकार है ।

**उक्कस्सपदेण उक्कस्सओ निरंतरवक्कमणकालो विसेसा-
हिओ । ५९७ ।**

केत्तियमेत्तेण? आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्तेण ।

**जहण्णपदेण^० सांतरणिरंतरवक्कमणसव्वजहण्णकालो विसे-
साहिओ । ५९८ ।**

केत्तियमेत्तेण ? निरंतरवक्कमणकालविसेसेण परिहीणजहण्णसांतरवक्कमण-
कालमेत्तेण । सो पुण आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्तो विसेसो होवि ।

उक्कस्सपदेण सांतरणिरंतरवक्कमणकालो विसेसाहिओ । ५९९ ।

केत्तियमेत्तेण ? जहण्णवक्कमणकाले उक्कस्सवक्कमणकालम्मि सोहिदे
सुद्धसेसमेत्तेण ।

सव्वत्थोवो सांतरवक्कमणकालविसेसो ॥ ६०० ॥

विदयकंडयप्पहुडि जाव आवलियाए अखेसंज्जविभागमेत्तवक्कमणकंडयाणं कालक-
लावो सांतरवक्कमणकालो णाम । सो जहण्णओ वि अत्थि उक्कस्सओ वि अत्थि । तत्थ
जदण्णे^० उक्कस्सावो सोहिदे सुद्धसेसो सांतरवक्कमणकालविसेसो णाम । सो थोवो ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा निरन्तर उपक्रमण काल विशेष अधिक है । ५९७ ।

कितना अधिक है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक है ।

जघन्य पदकी अपेक्षा सान्तर-निरन्तर उपक्रमण सबसे जघन्य काल विशेष
अधिक है ॥ ५९८ ॥

कितना अधिक है ? निरन्तर उपक्रमण काल विशेषसे हीन जघन्य सान्तर उपक्रमण
कालका जितना प्रमाण है उतना अधिक है । और वह विशेष आवलिके असंख्यातवें भाग-
प्रमाण है ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा सान्तर-निरन्तर उपक्रमणकाल विशेष अधिक है । ५९९ ।

कितना अधिक है । उत्कृष्ट उपक्रमणकालमेंसे जघन्य उपक्रमणकालके कम करने पर
जो शेष रहे उतना अधिक है ।

सान्तर उपक्रमणकालविशेष सबसे स्तोक है । ६०० ।

द्वितीय काण्डकसे लेकर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण उपक्रमण काण्डकोंके काल-
कलापको सान्तर उपक्रमण काल कहते हैं । वह जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है । वहाँ उत्कृष्ट
में से जघन्यको कम करने पर जो शेष रहे वह सान्तर उपक्रमण कालविशेष कहलाता है । वह
स्तोक है ।



निरंतरवक्कमणकालविसेसो असंखेज्जगुणो ॥ ६०१ ॥

पढमवक्कमणकंदयजहणकाले तस्सेव उक्कस्सकालम्हि सोहिदे सेसो निरंतर-
वक्कमणकालविसेसो णाम । सो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो? आवलियाए असं-
खेज्जदिभागो ।

सांतरनिरंतरवक्कमणकालविसेसो विसेसाहिओ ॥ ६०२ ॥

केत्तियमेत्तेण ? सांतरवक्कमणकालविसेसमेत्तेण ।

जहणपदेण सांतरसमयवक्कमणकालो असंखेज्जगुणो । ६०३ ।

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

उक्कस्सपदेण सांतरसमयवक्कमणकालो विसेसाहिओ । ६०४ ।

केत्तियमेत्तेण ? सांतरवक्कमणकालविसेसमेत्तेण ।

जहणपदेण निरंतरसमयवक्कमणकालो असंखेज्जगुणो । ६०५ ।

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

उक्कस्सपदेण* निरंतरसमयवक्कमणकालो विसेसाहिओ । ६०६ ।

केत्तियमेत्तेण ? निरंतरवक्कमणकालविसेसमेत्तेण ।

निरन्तर उपक्रमण कालविशेष असंख्यातगुणा हैं ॥ ६०१ ॥

प्रथम उपक्रमण काण्डकके जघन्य कालको उसीके उत्कृष्ट कालमेंसे घटा देने पर जो
शेष रहे वह निरन्तर उपक्रमण काल विशेष कहलाता है । वह असंख्यातगुणा है । गुणकार
क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

सांतर-निरन्तर उपक्रमण कालविशेष विशेष अधिक है । ६०२ ॥

कितना अधिक है ? सांतर उपक्रमण कालविशेषका जितना प्रमाण है उतना अधिक है ।

जघन्य पदकी अपेक्षा सांतर समय उपक्रमणकाल असंख्यातगुणा है । ६०३ ।

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा सांतर समय उपक्रमण काल विशेष अधिक है । ६०४ ।

कितना अधिक है ? सांतर उपक्रमण कालविशेषका जितना प्रमाण है उतना अधिक है ।

जघन्य पदकी अपेक्षा निरन्तर समय उपक्रमण काल असंख्यातगुणा है । ६०५ ।

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा निरन्तर समय उपक्रमण काल विशेष अधिक है । ६०६ ।

कितना अधिक है ? निरन्तर उपक्रमण कालविशेषका जितना प्रमाण है उतना अधिक है ।

जहणपदेण सांतरणिरंतरवक्कमणकालो विसेसाहिओ ॥६०७॥
सुगमं ।

उक्कस्सपदेण सांतरणिरंतरवक्कमणकालो विसेसाहिओ ।६०८।
एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सयं वक्कमणंतरमसंखेज्जगुणं ॥ ६०९ ॥

एगपुलवियाए सरीरे वा उप्पज्जमाणजीवाणं आवलियाए असंखेज्जदिभाग-
मेत्तंतरकंडएसु जमूक्कस्सं वक्कमणंतरं तमसंखेज्जगुणं । को गुणमारो ? आवलियाए
असंखेज्जदिभागो ।

अवक्कमणकालविसेसो असंखेज्जगुणो ॥ ६१० ॥

को अवक्कमणकालो ? अंतरं । आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तजहणंतर-
कंडएसु उक्कस्संतरकंडएहितो सोहिदेसु सुद्धसेसवक्कमणंतरविसेसो । तमावलियाए
असंखेज्जदिभागगुणं ति भणिदं होदि ।

पबंधणकालविसेसो विसेसाहिओ ॥ ६११ ॥

जघन्य पदकी अपेक्षा सान्तर-निरन्तर उपक्रमण काल विशेष अधिक है । ६०७ ।

यह सूत्र सुगम है ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा सान्तर-निरन्तर उपक्रमण काल विशेष अधिक है । ६०८ ।

यह सूत्र भी सुगम है ।

उत्कृष्ट उपक्रमण अंतर असंख्यातगुणा है । ६०९ ।

एक पुलवि या एक शरीरमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंके जो आवलिके असंख्यातवें
भागप्रमाण अन्तरकाण्डक होते हैं उनमें जो उत्कृष्ट उत्पन्न होनेका अन्तर है वह असंख्यातगुणा
है । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

अप्रक्रमण कालविशेष असंख्यातगुणा है । ६१० ।

शंका— अप्रक्रमणकाल किसे कहते हैं ?

समाधान— अन्तरको अप्रक्रमणकाल कहते हैं ।

आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जघन्य अन्तर काण्डकोंको उत्कृष्ट अन्तर काण्ड-
कीमेंसे घटा देनेपर शेष अप्रक्रमण अन्तर विशेष होता है । वह आवलिके असंख्यातवें भाग-
प्रमाण गुणा है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

प्रबन्धनकालविशेष विशेष अधिक है । ६११ ।

❖ अ० प्रती ' असंखे० भागमेत्तकालाणं जहणंतरकंडएसु ' इति पाठः ।

वक्कमणावक्कमणकालाणं समासो पबंध्यकालो णाम । सो जहण्णओ वि अत्थि उक्कस्सओ वि अत्थि । तत्थ जहण्णो उक्कस्सादो सोहिदे पबंध्यकालविसेसो होदि । सो विसेसाहियाओ । केत्तियमेत्तेण ? जहण्णवक्कमणकाले उक्कस्सवक्कमणकालम्मि सोहिदे सुद्धसेसमेत्तेण । आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्तेण ति भणिदं होदि ।

जहण्णपदेण जहण्णओ अवक्कमणकालो असंखेज्जगुणो । ६१२ ।
को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जविभागो ।

जहण्णपदेण जहण्णओ पबंध्यकालो विसेसाहियो ॥ ६१३ ॥
केत्तियमेत्तेण? जहण्णवक्कमणकालमेत्तेण ।

उक्कस्सपदेण उक्कस्सओ अवक्कमणकालो विसेसाहियो । ६१४ ।
केत्तियमेत्तो विसेसो ? जहण्णवक्कमणकालेणूण अवक्कमणकालविसेसमेत्तो ।

उक्कस्सपदेण उक्कस्सओ पबंध्यकालो विसेसाहियो । ६१५ ।
केत्तियमेत्तेण ? उक्कस्सवक्कमणकालमेत्तेण ।

एवं कालअप्पाबहुअं समत्तं ।

प्रक्रमण और अप्रक्रमण कालोंका समुदाय प्रबन्धनकाल है । वह जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है । वहाँ उत्कृष्टमें से जघन्यको कमकर देनेपर प्रबन्धनकालविशेष होता है । वह विशेष अधिक है । कितना अधिक है ? उत्कृष्ट प्रक्रमण कालमेंसे जघन्य प्रक्रमणकालको घटा देनेपर जो शेष रहे उतना अधिक है । वह आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

जघन्य पदकी अपेक्षा जघन्य अप्रक्रमण काल असंख्यातगुणा है ॥ ६१२ ॥

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

जघन्य पदकी अपेक्षा जघन्य प्रबन्धनकाल विशेष अधिक है ॥ ६१३ ॥

कितना अधिक है ? जघन्य प्रक्रमणकालका जितना प्रमाण है उतना अधिक है ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा उत्कृष्ट अप्रक्रमणकाल विशेष अधिक है ॥ ६१४ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? जघन्य उपक्रमकालसे न्यून अप्रक्रमणकाल विशेषका जितना प्रमाण है उतना विशेषका प्रमाण है ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा उत्कृष्ट प्रबन्धनकाल विशेष अधिक है ॥ ६१५ ॥

कितना अधिक है ? उत्कृष्ट प्रक्रमणकालका जितना प्रमाण है उतना अधिक है ।

सइप्रकार काल अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

जीवअप्पाबहुए ति ॥ ६१६ ॥

जं जीवअप्पाबहुअं भणिदं तमेगकंडयं णाणाकंडयाणि च अस्सिऊण वत्तइ-
स्सामो । तत्थ ताव एगकंडयमस्सिऊण वुच्चदे—

सट्त्वथोवा चरिमसमए वक्कमंति जीवा ॥ ६१७ ॥

पढमकंडयस्स चरिमसमए जे उप्पज्जमाणा जीवा ते अणंता होदूण थोवा होंति,
असंखेज्जगुणहोणकमेण पढमसमयप्पहुडि निरंतरमुप्पत्तीदो ।

अपढम-अचरिमसमएसु वक्कमंति जीवा असंखेज्जगुणा ॥ ६१८ ॥

पढमकंडयस्स पढम-चरिमसमएसु उप्पणजीवे मोत्तूण सेसमज्झिमसमएसु
वक्कमिदजीवा अपढम-अचरिमसमएसु वक्कमिदजीवा होंति । ते असंखेज्जगुणा ।
को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

अपढमसमए वक्कमंति जीवा विसेसाहिया ॥ ६१९ ॥

केत्तियमेत्तेण ? पढमकंडयस्स चरिमसमए वक्कमिदजीवमेत्तेण ।

पढमसमए वक्कमंति जीवा असंखेज्जगुणा ॥ ६२० ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

अचरिमसमएसु वक्कमंति जीवा विसेसाहिया ॥ ६२१ ॥

जीव अल्पबहुत्वका प्रकरण है ॥ ६१६ ॥

जो जीव अल्पबहुत्व कहा है उसे एककाण्डक और नाना काण्डकोंका आश्रय लेकर
बतलावेंगे । उनमेंसे पहले एक काण्डकका आश्रय लेकर कहते हैं—

अन्तिम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव सबसे थोड़े हैं ॥ ६१७ ॥

प्रथम काण्डकके अन्तिम समयमें जो उत्पन्न हुए जीव हैं वे अनन्त होकर भी स्तोक
हैं, क्योंकि, प्रथम समयसे लेकर वे निरन्तर असंख्यातगुणे हीन क्रमसे उत्पन्न होते हैं ।

अप्रथम-अचरम समयोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ६१८ ॥

प्रथम काण्डकके प्रथम समय और अन्तिम समयमें उत्पन्न जीवोंको छोड़ कर शेष
बीचके समयोंमें उत्पन्न हुए जीव अप्रथम-अचरम समयोंमें उत्पन्न हुए जीव होते हैं । वे
असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

अप्रथम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव विशेष अधिक हैं ॥ ६१९ ॥

कितने अधिक हैं ? प्रथम काण्डकके अन्तिम समयमें उत्पन्न हुए जीवोंका जितना
प्रमाण है उतने अधिक हैं ।

प्रथम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ६२० ॥

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

अचरम समयोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव विशेष अधिक हैं ॥ ६२१ ॥

केत्तियमेत्तेण ? अपढम-अचरिमसमएसु वक्कमिदजीवमेत्तेण ।

सव्वेसु समएसु वक्कमंति जीवा विसेसाहिया ॥ ६२२ ॥

केत्तियमेत्तेण ? चरिमसमए वक्कमिदजीवमेत्तेण । एवं पढमकंडयजीवअ-
प्पाबहुअं परूविदं । जहा पढमकंडयस्स एदं जीवअप्पाबहुअं परूविदं तथा सेससव्व-
कंडयाणं पि परूवेदव्वं, विसेसाभावादो । संपहि णाणाकंडयजीवअप्पाबहुअं वत्त-
इस्सामो । तं जहा---

सव्वत्थोवा चरिमसमए वक्कमंति जीवा ॥ ६२३ ॥

आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्तसांतरवक्कमणकंडयाणं चरिमकंडयचरिम-
समए वक्कमिदजीवा थोवा ।

अपढम-अचरिमसमएसु वक्कमंति जीवा असंखेज्जगुणा ॥ ६२४ ॥

पढमकंडयपढमसमए चरिमकंडयचरिमसमए वक्कमिदजीवे मोत्तूण सेसआव-
लियाए असंखेज्जविभागमेत्तकंडयाणं जीवा अपढम-अचरिमसमएसु वक्कंता णाम ।
ते असंखेज्जगुणा । को गुणमारो ? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जविभागो ।

अपढमसमए वक्कमंति जीवा विसेसाहिया ॥ ६२५ ॥

कितने अधिक हैं ? अप्रथम-अचरम समयोंमें उत्पन्न हुए जीवोंका जितना प्रमाण है
उतने अधिक हैं ।

सब समयोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव विशेष अधिक हैं ॥ ६२२ ॥

कितने अधिक हैं ? अन्तिम समयमें उत्पन्न हुए जीवोंका जितना प्रमाण है उतने
अधिक हैं । इस प्रकार प्रथम काण्डकसम्बन्धी जीव अल्पबहुत्वका कथन किया । जिस प्रकार
प्रथमकाण्डकका यह जीव अल्पबहुत्व कहा है उसी प्रकार शेष सब काण्डकोंके जीव अल्पबहुत्वोंका
भी कथन करना चाहिए । अब नाना काण्डकसंबन्धी जीव अल्पबहुत्वको बतलावेंगे । यथा---

अन्तिम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव सबसे थोड़े हैं ॥ ६२३ ॥

सान्तर उपक्रमणकाण्डक आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । उनके अन्तिम काण्ड-
कके अन्तिम समयमें उत्पन्न हुए जीव थोड़े हैं ।

अप्रथम-अचरम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ६२४ ॥

प्रथम काण्डकके प्रथम समयमें और अन्तिम काण्डकके अन्तिम समयमें उत्पन्न हुए
जीवोंको छोड़कर शेष आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काण्डकोंके जीव अप्रथम-अचरम-
समयोंमें उत्पन्न होनेवाले कहलाते हैं । वे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? पल्लिके असं-
ख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

अप्रथम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव विशेष अधिक हैं ॥ ६२५ ॥

✽ अ० प्रती ' जीवा ' इति स्थाने ' जीवा विसेसाहिया ' इति पाठः ।

केत्तियमेत्तेण चरिमकंडयचरिमसमए वक्कमिदजीवमेत्तेण ।

पढमसमए^० वक्कमंति जीवा असंखेज्जगुणा ॥ ६२६ ॥

को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

अचरिमसमएसु वक्कमंति जीवा विसेसाहिया ॥ ६२७ ॥

केत्तियमेत्तेण ? अपढम-अचरिमसमएसु वक्कमिदजीवमेत्तेण ।

सव्वेसु समएसु वक्कमिदजीवा विसेसाहिया ॥ ६२८ ॥

केत्तियमेत्तेण ? चरिमसमए वक्कमिदजीवमेत्तेण ।

एवं जीवअप्पाबहुअं समत्तं ।

सव्वो बादरणिगोदो पज्जत्तो वा वामिस्सो वा ॥ ६२९ ॥

खंधंडरावासपुलवियाओ अस्सिदूण एवं सुत्तं परूविदं ण सरीरं, एगम्मि सरीरे पज्जत्तापज्जत्तजीवाणमवट्ठाणविरोहादो । किमट्ठमिदं सुत्तमागदं ? खंधंडरावासपुलवियासु किं बादर-सुहुमणिगोदजीवा सुद्धा पज्जत्ता चेव होंति आहो अपज्जत्ता चेव किं वामिस्सा त्ति पुच्छिदे एवं होंति त्ति जाणावणट्ठं इदं सुत्तमागदं । सव्वो बादरणिगोदो

कितने अधिक हैं ? अन्तिम काण्डकके अन्तिम समयमें उत्पन्न हुए जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं ।

प्रथम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ६२६ ॥

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

अचरम समयोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव विशेष अधिक हैं ॥ ६२७ ॥

कितने अधिक हैं ? अप्रथम-अचरम समयोंमें उत्पन्न हुए जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं ।

सब समयोंमें उत्पन्न हुए जीव विशेष अधिक हैं ॥ ६२८ ॥

कितने अधिक हैं ? अन्तिम समयमें उत्पन्न हुए जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं ।

इस प्रकार जीव अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

सब बादर निगोद पर्याप्त है या मिश्ररूप है ॥ ६२९ ॥

स्कन्ध, अण्डर, आवास और पुलवियोंका आश्रय लेकर यह सूत्र कहा गया है, शरीरोंका आश्रय लेकर नहीं कहा गया है, क्योंकि, एक शरीरमें पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंका अवस्थान होनेमें विरोध है ।

शंका-- यह सूत्र किसलिए आया है ?

समाधान-- स्कन्ध, अण्डर, आवास और पुलवियोंमें क्या बादर और सूक्ष्म निगोद जीव केवल पर्याप्त ही होते हैं या अपर्याप्त ही होते हैं या क्या मिश्र होते हैं ऐसा पूछनेपर इस प्रकार होते हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए यह सूत्र आया है ।

पज्जत्तो वा होदि । कुदो ? बादरणिगोदपज्जत्तेहि सह खंधंडरावासपुलवियासु उप्प-
ण्णबादरणिगोदअणंतापज्जत्तएसु अंतोमृहुत्तेण कालेण निस्सेसं मुदेसु सुद्धाणं बादर-
णिगोदपज्जत्ताणं चेव तत्थावट्टाणदंसणादो । किमट्ठमपज्जत्ताणं पुव्वं चेव सव्वेसि
मरणं होदि । पज्जत्ताउआदो अपज्जत्ताउअस्स थोवत्तुबलंभादो अपुव्व्वाणं बादर-
णिगोदाणं उप्पत्तीए विणट्टजोगत्तादो च । एत्तो हेट्ठा पुण बादरणिगोदो वामिस्सो
होदि, खंधंडरावासपुलवियासु बादरणिगोदपज्जत्तापज्जत्ताणं अणंताणं सहावट्टा-
णदंसणादो ।

सुहुमणिगोदवगणाए पुण नियमा वामिस्सो ॥ ६३० ॥

सुहुमणिगोदवगणाए पज्जत्तापज्जत्ता च जेण सव्वकालं संभवन्ति तेण सा नियमा
पज्जत्तापज्जत्तजीवेहि वामिस्सा होदि । किमट्ठं सव्वकालं संभवन्ति ? सुहुमणिगोद-
पज्जत्तापज्जत्ताणं वक्कमणपदेस-कालनियमाभावादो । एत्थ पदेसे एत्तियं चेव काल-
मुप्पत्ती परदो ण उप्पज्जन्ति त्ति जेण नियमो णत्थि तेण सा सव्वकाले वामिस्सा
त्ति भणिदं होदि । 'वक्कमदि जत्थ एयो वक्कमणं तत्थणंताणं' एदस्स गाहापच्छि-

सब बादर निगोद जीव पर्याप्त होते हैं, क्योंकि, बादर निगोद पर्याप्तकोंके साथ
स्कन्ध, अण्डर, आवास और पुलवियोंमें उत्पन्न हुए अनन्त बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंके
अन्तर्मुहूर्त कालके भीतर सबके मर जानेपर वहाँ केवल बादर निगोद पर्याप्तकोंका ही अवस्थान
देखा जाता है ।

शंका-- सब अपर्याप्तकोंका पहले ही मरण क्यों होता है ?

समाधान-- क्योंकि, पर्याप्तकोंकी आयुसे अपर्याप्तकोंकी आयु स्तोक उपलब्ध होती
है और अपूर्व बादर निगोदोंकी उत्पत्तिके कारणभूत योगका नाश हो जाता है ।

परन्तु इससे पूर्व बादर निगोद व्यामिश्र होता है, क्योंकि, स्कन्ध, अण्डर, आवास और
पुलवियोंमें अनन्त बादर निगोद पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंका एक साथ अवस्थान देखा जाता है ।

परन्तु सूक्ष्मनिगोदवर्गणामे नियमसे मिश्ररूप है ॥ ६३० ॥

यतः सूक्ष्मनिगोदवर्गणामे पर्याप्त और अपर्याप्त जीव सर्वदा सम्भव हैं, इसलिए वह
नियमसे पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंसे मिश्ररूप होती है ।

शंका-- उसमें सर्वकाल किसलिए सम्भव हैं ?

समाधान-- क्योंकि, सूक्ष्म निगोद पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंकी उत्पत्तिके प्रदेश
और कालका कोई नियम नहीं है । इस प्रदेशमें इतनी ही कालतक उत्पत्ति होती है आगे
उत्पत्ति नहीं होती इस प्रकारका चूँकि नियम नहीं है इसलिए वह सूक्ष्मनिगोदवर्गणा सर्वदा
मिश्ररूप होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

इस प्रकार वक्कमदि 'जत्थ एयो वक्कमणं तत्थणंताणं' गाथाके इस पश्चिमाधके अर्थका कथन

❀ ता० प्रती 'पज्जत्तापज्जत्ताणं (पज्जत्ताणं) अणंताणं' अ० का० प्रत्योः 'पज्जत्तापज्जत्ताणं
पज्जत्ताणं' इति पाठः । ❀ ता० प्रती 'वामिस्सा' इति पाठः । ❀ अ० का० प्रत्योः 'अदिय' इति पाठः ।

मद्वस्स अत्थपरुवणा समत्ता । ' जत्थेव मरदि जीवो तत्थ दु मरणं भवे अणंताणं ' एस्स गाहापदमद्वस्स अत्थपरुवणद्वमुत्तरसुत्तं भणदि —

जो निगोदो जहण्णएण वक्कमणकालेण वक्कमंतो जहण्णएण पबंधणकालेण पबद्धो तेसिं बादरणिगोदाणं तहा पबद्धाणं मरण-
वक्कमेण निग्गमो होदि ॥ ६३१ ॥

बादरणिगोदाणं वक्कमणकालो उत्पत्तिकालो जहण्णओ वि अत्थि उक्कस्सओ वि अत्थि । तत्थ जो निगोदो जहण्णेण उत्पत्तिकालेण उत्पज्जमानो तस्स पबंधणकालो जहण्णओ वि अत्थि उक्कस्सओ वि अत्थि । तत्थ जहण्णएण पबंधणकालेण जो पबद्धो । जो निगोदो जहण्णेण वक्कमणकालेण वक्कममाणो जहण्णेण पबंधणकालेण पबद्धो तस्स मरणवक्कमं परुवेमि ति भणिदं होदि । अणंताणं निगोदाणं कथमेगव-
यणेण णिहेसो ? ण, सरीरदुवारेण तेसिमेयत्तमत्थि ति एगवयणेण णिहेसाविरो-
हादो । को पबंधणकालो णाम? प्रबन्धनन्ति एकत्वं गच्छन्ति अस्मिन्निति प्रबन्धनः ।
प्रबन्धनश्चासौ कालश्च प्रबन्धनकालः । तेण पबंधणकालेण पबद्धाणं बादरणिगो-
दाणं मरणवक्कमेण निग्गमो होदि । केरिसाणं बादरणिगोदाणं ति भणिदे ' तहा

किया । अब इसी गाथाके ' जत्थेव मरदि जीवो तत्थ दु मरणं भवे अणंताणं ' इस पूर्वाधिके
अर्थका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

जो निगोद जघन्य उत्पत्तिकालके द्वारा उत्पन्न होकर जघन्य प्रबन्धनकालके
द्वारा बन्धको प्राप्त हुआ है उन बादर निगोदोंका उस प्रकारसे बन्ध होनेपर मरणके
क्रमानुसार निर्गम होता है । ६३१ ।

बादर निगोदोंका प्रक्रमणकाल अर्थात् उत्पत्तिकाल जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी
है । वहाँ जो निगोद जघन्य उत्पत्ति कालके द्वारा उत्पन्न होता है उसका प्रबन्धनकाल जघन्य
भी है और उत्कृष्ट भी है । उनमेंसे जघन्य प्रबन्धनकालके द्वारा जो बन्धको प्राप्त हुआ
अर्थात् जो निगोद जघन्य उत्पत्तिकालके द्वारा उत्पन्न होकर जघन्य प्रबन्धन कालके द्वारा
बन्धको प्राप्त होता है उसके मरणके क्रमका कथन करते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका— अनन्त निगोदोंका एक वचनके द्वारा निर्देश कैसे किया ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, शरीर द्वारा उनका एकत्व है इसलिए एक वचन द्वारा निर्देश
करनेमें विरोध नहीं है ।

शंका— प्रबन्धनकाल किसे कहते हैं ?

समाधान— बंधते हैं अर्थात् एकत्वको प्राप्त होते हैं जिसमें उसे प्रबन्धन कहते हैं ।
तथा प्रबन्धनरूप जो काल वह प्रबन्धनकाल कहलाता है ।

उस प्रबन्धनकालके द्वारा प्रबद्ध हुए बादर निगोदोंका मरणके क्रमसे निर्गम होता है। किस
प्रकारके बादर निगोदोंका ऐसा पूछनेपर कहा है— ' तहा पबद्धाणं ' अर्थात् उस पहले कहे गये

पबद्धाणं ' तेण पुव्वभणिदपयारेण असंखेज्जगुणहीणाए सेडोए पबद्धाणं समुप्पण्णाण-
मुप्पत्तिकमेण असंखेज्जगुणहीणाए सेडोए णिग्गमो णत्थि कितु मरणक्कमेण णिग्गमो
होदि त्ति भणिदं होदि । कत्तो तेसि णिग्गमो ? एगसरीरादो । जहण्णसंचयकालेण
संचिदाणं अण्णोण्णाणुगयभावेण जहण्णकालमवट्ठिदाणं मरणक्कमेण णिग्गमो होदि ।
उप्पत्तिकमेण ण होदि त्ति किमट्ठं वुच्चदे ? ण, एत्थ जहण्णवक्कमणकालेण सचि-
दाणं जहण्णपबंधणकालेण पबद्धाणं चेव मरणक्कमेण णिग्गमो होदि त्ति नियमा-
भावादो । कितु जहण्णवक्कमण-जहण्णपबंधणकालवयणं देसामासियं तेण सव्ववक्क-
मणकालेसु संचिदाणं सव्वपबंधणकालेसु पबद्धाणं उप्पत्तिकमेण णिग्गमो ण होदि ।
कितु मरणक्कमेण होदि त्ति पत्तेयं पत्तेयं परूवणा कायव्वा । एक्कमिह सरीरे
उप्पज्जमानवादरणिगोदा किमक्कमेण उप्पज्जंति आहो कमेण । जदि अक्कमेण
उप्पज्जंति तो अक्कमेणेव मरणेण वि होदव्वं, एक्कमिह मरंते सते अण्णेसि मरणाभावे
साहारणत्तविरोहादो । अह जइ* कमेण असंखेज्जगुणहीणाए सेडोए उप्पज्जंति तो
मरणं पि जवमज्झगारेण ण होदि, साहारणत्तस्स विणासप्पसंगादो त्ति । एत्थ परिहारो

प्रकारके अनुसार असंख्यातगुणी हीन श्रेणिरूपसे बँधे हुए और उत्पन्न हुए निगोदोंका उत्पत्तिके क्रमसे अर्थात् असंख्यातगुणी हीन श्रेणिरूपसे निर्गम नहीं होता किन्तु मरणके क्रमसे निर्गम होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका-- किससे उनका निर्गम होता है ?

समाधान-- एक शरीरसे ।

शंका-- जघन्य संचयकाल द्वारा संचयको प्राप्त हुए और परस्पर अनुगतरूपसे जघन्य कालतक अवस्थित हुए जीवोंका मरणके क्रमसे निर्गम होता है, उत्पत्तिके क्रमसे नहीं होता है यह किसलिए कहते हैं ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, यहाँपर जघन्य उत्पत्तिकालके द्वारा संचित हुए और जघन्य प्रबन्धनकालके द्वारा बन्धको प्राप्त हुए जीवोंका ही मरणके क्रमसे निर्गम होता है इस प्रकारका नियम नहीं है । किन्तु जघन्य उत्पत्तिकाल और जघन्य प्रबन्धनकाल वचन देशामर्बक है । इससे सब उत्पत्ति कालोंमें संचित हुए और सब प्रबन्धन कालोंमें बन्धको प्राप्त हुए जीवोंका उत्पत्तिके क्रमसे निर्गम नहीं होता है, किन्तु मरणके क्रमसे निर्गम होता है, इस प्रकार अलग अलग प्ररूपणा करनी चाहिए ।

शंका-- एक शरीरमें उत्पन्न होनेवाले बादर निगोद जीव क्या अक्रमसे उत्पन्न होते हैं या क्रमसे ? यदि अक्रमसे उत्पन्न होते हैं तो अक्रमसे ही मरण होना चाहिए, क्योंकि, एकके मरनेपर दूसरों का मरण न होनेपर उनके साधारण होनेमें विरोध आता है । और यदि क्रमसे असंख्यातगुणी हीन श्रेणिरूपसे उत्पन्न होते हैं तो मरण भी यवमध्यके आकाररूपसे नहीं हो सकता है, क्योंकि, साधारणपनेके विनाशका प्रसंग आता है ?

❖ मप्रतिपाठोऽयम् । अ० प्रतो ' णिग्गमो (ण) होदि ' अ० का० प्रत्योः ' णिग्गमो होदि ' इति पाठः । ❖ मप्रतिपाठोऽयम् । प्रतिष् ' अइ जइ ' इति पाठः ।

वृच्चदे- असंखेज्जगुणहीणाए सेडोए कमेण वि उप्पज्जंति अक्कमेण वि अणंता जीवा एगसमए उप्पज्जंति । ण च साहारणत्तां फिट्ठिदि ।

साहारणआहारो साहारणआणपाणगहणं च ।

साहारणजीवाणं साहारणलक्खणं भणियं ॥ २२ ॥

एवोए गाहाए भणिदलक्खणाणमभावे साणारणत्तविणासादो । तदो एगसरी-
रूपणणाणं मरणक्कमेण णिग्गमो होदि त्ति एवं पि ण विरुज्जदे । ण च एगसरीर-
ूपणणा सव्वे समाणाउआ चेव होति त्ति णियमो अत्थि जेण अक्कमेण तेसि मरणं
होज्ज । तम्हा एगसरीरट्ठिदाणं पि मरणजवमज्झं समिलाजवमज्झं च होदि त्ति
घेत्थवं । संपहि सो मरणक्कम्मो दुविहो जवमज्झकमेण अजवमज्झकमेण चेदि ।
तत्थ जवमज्झकमेण मरणविहाणमुवरि भणिस्सदि । अजवमज्झकमेण जो णिग्गमो
तप्परुवणट्ठं उत्तरसुत्तां भणदि—

सव्वक्कस्सियाए गुणसेडोए मरणेण मदाणं सव्वचिरेण कालेण
णिल्लेविज्जमाणाणं तेसि चरिमसमए मदावसिट्ठाणं आवलियाए
असंखेज्जविभागमेत्तो णिगोदाणं ॥ ६३२ ॥

मरणगुणसेडो जहण्णा वि अत्थि उक्कस्सा वि अत्थि । तत्थ जहण्णगुणसेडि-

समावाव-— यहाँ इस शंका का परिहार करते हैं— असंख्यातगुणी हीन श्रेणिके
क्रमसे भी उत्पन्न होते हैं और अक्रमसे भी अनन्त जीव एक समयमें उत्पन्न होते हैं । और
साधारणपना भी नष्ट नहीं होता है, क्योंकि—

साधारण आहार और साधारण श्वास-उच्छ्वासका ग्रहण यह साधारण जीवोंका
साधारण लक्षण कहा है ॥ २२ ॥

इस प्रकार इस गाथा द्वारा कहे गये लक्षणोंके अभावमें ही साधारणपनेका विनाश
होता है । इसलिए एक शरीरमें उत्पन्न हुए निगोदोंका मरणके क्रमसे निर्गम होता है इस
प्रकार यह कथन भी विरोधको नहीं प्राप्त होता । और एक शरीरमें उत्पन्न हुए सब समान
आयुवाले ही होते हैं ऐसा कोई नियम नहीं है, जिससे अक्रमसे उनका मरण होवे, इसलिए
एक शरीरमें स्थित हुए निगोदोंका मरण यवमध्य और समिलायवमध्य है ऐसा ग्रहण करना
चाहिए । वह मरण दो प्रकारका है- यवमध्यके क्रमसे और अयवमध्यके क्रमसे । उनमेंसे
यवमध्यके क्रमसे मरणविधिका कथन आगे करेंगे । अयवमध्यके क्रमसे जो निर्गम है उसका
कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

सर्वोत्कृष्ट गुणश्रेणि द्वारा मरणसे मरे हुए तथा सबसे दीर्घ काल द्वारा
निर्लेप्यमान होनेवाले उन जीवोंके अन्तिम समयमें मृत होनेसे बचे हुए निगोदोंका
प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ॥ ६३२ ॥

मरणगुणश्रेणि जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है । उनमेंसे जघन्य गुणश्रेणिमरणका

मरणनिवारणटं सव्वक्कस्सियाए गुणसेडीए मरणं तेण मरणेण मदाणं ति भणिदं ।
 णिल्लेवणकालो जहण्णओ वि उक्कस्सओ वि अत्थि । तत्थ जहण्णणिल्लेवणकाल-
 निवारणटं सव्वचिरेण कालेण णिल्लेविज्जमाणाणं ति भणिदं । तेसि चरिमसमए
 मदावसिट्ठाणं आवलियाए असंखेज्जदिभागो णिगोदाणं ति भणिदे खीणकसायचरिम-
 समए मदावसिट्ठाणं जीवाणं आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं पुलवियाणं
 पमाणं होदि त्ति भणिदं होदि । खीणकसायचरिमसमए असंखेज्जदिभागमेत्तणिगोद-
 सरीराणि होति । तत्थ एक्केक्कम्हि सरीरे मदावसिट्ठजीवा अणंता भवन्ति । तेसि-
 माधारभूदपुलवियाओ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ होति त्ति । एदेण जहण्ण-
 वादरणिगोदवगणापमाणपरुवणा कदा ।

एत्थ चत्तारि अणुयोगद्वाराणि णादव्वाणि भवन्ति-- परुवणा पमाणं सेडि
 अप्पाबहुअं चेदि । एदहि चटुहि अणुयोगद्वाराणि खीणकसायकालवन्तरे वज्जमाण-
 थूहल्लयादिसु वा मरंतजीवाणं परुवणा कीरदे । तं जहा- अत्थि खीणकसायपढम-
 समए मदजीवा । विदियसमए मदजीवा वि अत्थि । तदियसमए मरणंतजीवा वि
 अत्थि । एवं णेयव्वं जाव खीणकसायचरिमसमओ त्ति । एवं परुवणा गदा ।

खीणकसायपढमसमए मदजीवा केत्तिया ? अणंता । विदियसमए मदजीवा
 केत्तिया ? अणंता । तदियसमए मदजीवा केत्तिया ? अणंता । एवं णेयव्वं जाव खीण-

निवारण करनेके लिए सर्वोत्कृष्ट गुणश्रेणि द्वारा जो मरण है उस मरणसे मरे हुए जीवोंका
 ऐसा कहा है । निर्लेपनकाल जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है । उनमें से जघन्य निर्लेपनका-
 लका निवारण करनेके लिए सबसे दीर्घ कालके द्वारा निर्लेप्यमान हुए जीवोंका ऐसा कहा है ।
 ' तेसि चरिमसमए मदावसिट्ठाणं आवलियाए असंखे० भागो णिगोदाणं ' ऐसा कहने पर क्षीण-
 कषायके अन्तिम समयमें मरनेके बाद बचे हुए जीवोंमें निगोद अर्थात् पुलवियोंका प्रमाण
 आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । क्षीणकषायके अन्तिम सम-
 यमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीर होते हैं । वहां एक एक शरीरमें मरनेके बाद बचे हुए
 जीव अनन्त होते हैं । तथा उनकी आधारभूत पुलवियां आवलिके असंख्यात भागप्रमाण होती
 हैं । इस द्वारा जघन्य बादर निगोद वर्गणाके प्रमाणकी प्ररूपणा की गई है ।

यहां चार अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं प्ररूपणा, प्रमाण, श्रेणि और अल्पबहुत्व । इन चार
 अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर क्षीणकषायकालके भीतर मरनेवाले अथवा धूवय और आर्द्रक
 आदिमें मरनेवाले जीवोंकी प्ररूपणा करते हैं । यथा- क्षीणकषायके प्रथम समयमें मरे हुए जीव
 हैं । दूसरे समयमें मरे हुए जीव हैं और तिसरे समयमें मरनेवाले जीव हैं । इस प्रकार क्षीण-
 कषायके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए । इस प्रकार प्ररूपणा समाप्त हुई ।

क्षीणकषायके प्रथम समयमें मरे हुए जीव कितने हैं ? अनन्त हैं । दूसरे समयमें मरे हुए
 जीव कितने हैं ? अनन्त हैं । तीसरे समयमें मरे हुए जीव कितने हैं ? अनन्त हैं । इस प्रकार

कसायचरिमसमओ त्ति । एवं पमाणाणुगमो समत्तो ।

सेडिपरूवणा दुविहा— अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा चेदि । तत्थ अणंतरो-
वणिधा वुच्चदे । तं जहा खीणकसायपढमसमए मरंता जीवा थोवा । विदियसमए
मरंता जीवा विसेसाहिया । तदियसमए मरंता जीवा विसेसाहिया । एवं विसेसाहिया
विसेसाहिया जाव आवलियपुधत्तं त्ति । विसेसो पुण आवलियाए असंखेज्जविभागेण
होदि । तदणंतरउवरिमसमयप्पहुडि संखेज्जविभागब्भहिया जाव विसेसाहियमरण-
चरिमसमओ त्ति । विसेसो पुण संखेज्जरूवपडिभागेण । तदो खीणकसायकालस्स
असंखेज्जविभागे आवलियाए असंखेज्जविभागे सेसे गुणसेडिमरणं होदि । तदो विसे-
साहियमरणचरिमसमए मदजीवेहिंतो गुणसेडिमरणपढमसमए मरंता जीवा असंखे-
ज्जगुणा । को गुणगारो? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जविभागो । विदियसमए मरंता जीवा
असंखेज्जगुणा । एवमसंखेज्जगुणा असंखेज्जगुणा मरंति जाव खीणकसायचरिम-
समओ त्ति । के वि आइरिया जीवे मोत्तूण पुलवियाणमुवरि इमं परूवणं कुणंति
तेसिं गुणगारपमाणं पल्लिदोवमस्स असंखेज्जविभागो वि ण होदि । कुदो? आवलियाए
असंखेज्जविभागेषु जहणपरित्तासंखेज्जमेत्तेसु वि अण्णोण्णगुणिदेसु पल्लिदोवमस्स
असंखेज्जविभागमेत्तपुलवियाणमुप्पत्तीदो । एवमणंतरोवणिधा समत्ता ।

क्षीणकषायके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिए । इस प्रकार प्रमाणानुगम समाप्त हुआ ।

श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकारकी है— अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा । उनमेंसे पहले
अनन्तरोपनिधाका कथन करते हैं । यथा - क्षीणकषायके प्रथम समयमें मरनेवाले जीव स्तोक
हैं । दूसरे समयमें मरनेवाले जीव विशेष अधिक हैं । तीसरे समयमें मरनेवाले जीव विशेष
अधिक हैं । इस प्रकार आवलिपृथक्त्वप्रमाण कालतक उत्तरोत्तर प्रत्येक समयमें मरनेवाले जीव
विशेष अधिक विशेष अधिक हैं । परन्तु विशेषका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागका भाग
देनेसे प्राप्त होता है । आवलिपृथक्त्वके बाद अगले समयसे लेकर विशेष अधिकके क्रमसे मर-
नेवाले जीवोंके अन्तिम समयतक उत्तरोत्तर प्रत्येक समयमें संख्यातवें भाग अधिक संख्यातवें
भाग अधिक जीव मरते हैं । यहाँ विशेषका प्रमाण संख्यातका भाग देनेसे जो लब्ध आवे उतना
है । अनन्तर क्षीणकषायके कालके असंख्यातवें भागप्रमाण अर्थात् आवलिके असंख्यातवें भाग-
प्रमाण शेष रहनेपर गुणश्रेणि मरण होता है । अतः विशेष अधिक मरणके अन्तिम समयमें मरे
हुए जीवोंसे गुणश्रेणि मरणके प्रथम समयमें मरनेवाले जीव असंख्यातगुणे होते हैं । गुणकार
क्या है ? पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । दूसरे समयमें मरनेवाले जीव असंख्या-
तगुणे होते हैं । इस प्रकार क्षीणकषायके अन्तिम समयके प्राप्त होनेतक प्रत्येक समयमें असं-
ख्यातगुणे असंख्यातगुणे जीव मरते हैं । कितने ही आचार्य जीवोंको छोड़कर पुलवियोंका अव-
लम्बन लेकर यह प्ररूपणा करते हैं । उनके मतमें गुणकारका प्रमाण पत्यके असंख्यातवें भाग-
प्रमाण भी नहीं होता है, क्योंकि, जघन्य परीतासंख्यातप्रमाण भी आवलिके असंख्यातवें
भागोंके परस्पर गुणा करनेपर पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंकी उत्पत्ति होती है ।
इस प्रकार अनन्तरोपनिधा समाप्त हुई ।

खीणकसायपढमसमए मदजीवेहिंतो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तमद्वाणं गंतूण दुगुणवड्ढी होदि । एवमेत्तियमेत्तियमवट्ठिमद्वाणं गंतूण दुगुणवड्ढी होदि । जाव असंखेज्जदिभागवमहियमरणचरिमसमओ त्ति । तत्तो उवरि संखेज्जसमयमेत्तमद्वाणं गंतूण दुगुणवड्ढी होदि जाव संखेज्जदिभागवमहियमरणचरिमसमओ त्ति । तेण परं निरंतरकमेण असंखेज्जगुणा असंखेज्जगुणा जाव खीणकसायचरिमसमओ त्ति । एत्थ तिणिण अणुयोगद्वाराणि-परूवणा पमाणमप्पाबहुअं चेदि । परूवणदाए एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं णाणागुणहाणिट्ठाणंतरसलागाओ च अत्थि । पमाणं- असंखेज्जभागवमहियमरणम्मि एगजीव-दुगुणवड्ढिट्ठाणंतरमावलियाए असंखेज्जदिभागो । संखेज्जभागवमहियमरणम्मि एगजीवदुगुणवड्ढिअद्वाणं संखेज्जसमयमेत्तं होदि । णाणागुणहाणिसलागपमाणमावलियाए संखेज्जदिभागो । अप्पाबहुअं सव्वत्थोव एगजीवदुगुणवड्ढिट्ठाणंतरं । णाणागुणहाणिसलागाओ असंखेज्जगुणाओ । एवं परम्परोवणिधा समत्ता ।

अप्पाबहुअं- सव्वत्थोवा खीणकसायपढमसमए मदजीवा । अपढम-अचरिमसमएसु मदजीवा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? खीणकसायपढम-चरिमसमएसु मदजीवे मोत्तूण तत्थ सेसासेसमदजीवग्गहणादो । अचरिमसमए मदजीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? पढमसमए मदजीवमेत्तेण । चरिमसमए मदजीवा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

क्षीणकषायके प्रथम समयमें मरे हुए जीवोंसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर दूनी वृद्धि होती है । इस प्रकार इतने इतने अवस्थित स्थान जाकर दूनी वृद्धि होती है और यह दूनी वृद्धिका क्रम असंख्यातवें भाग अधिक मरणके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक जानना चाहिये । उसके आगे संख्यात समय प्रमाण स्थान जाकर दूनी वृद्धि होती है और यह क्रम संख्यातवें भाग अधिक मरणके अन्तिम समय तक जानना चाहिए । उसके आगे निरंतरकमसे क्षीणकषायके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक प्रत्येक समयमें असंख्यातगुणे असंख्यातगुणे होते हैं । यहां तीन अनुयोगद्वार हैं- प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व । प्ररूपणा की अपेक्षा एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर है और नानागुणहानिस्थानान्तर शलाकायें हैं । प्रमाण-असंख्यातभागवृद्धिरूप मरणमें एकजीवद्विगुणवृद्धिस्थानान्तर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । संख्यातभागवृद्धिरूप मरणमें एकजीवद्विगुणवृद्धिअध्वान संख्यात समयप्रमाण है । नानागुणहानिशलाकाओंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । अल्पबहुत्व-एकजीवद्विगुणवृद्धिस्थानान्तर सबसे स्तोके है । नानागुणहानिशलाकायें असंख्यातगुणी हैं । इस प्रकार परम्परोपनिधा समाप्त हुई ।

अल्पबहुत्व- क्षीणकषायके प्रथम समयमें मृत जीव सबसे थोड़े हैं । अप्रथम-अचरम समयोंमें मृत जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, क्षीणकषायके प्रथम और अन्तिम समयमें मरे हुए जीवोंको छोड़कर वहाँ शेष समस्त मृत जीवोंको ग्रहण किया है । अचरम समयमें मृत जीव विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ? प्रथम समयमें मृत जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं । अन्तिम समयमें मृत जीव

अपढमसमए मदजीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? अपढम-अचरिमसमएसु मद-जीवमेत्तेण । सव्वेसु समएसु मदजीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? पढमसमए मदजीवमेत्तेण । एवं अप्पाबहुअं समत्तं ।

संपहि खीणकसायकाले जहण्णाउअमेत्ते सेसे बादरणिगोदा ण उप्पज्जंति खीणकसायसरीरे । कुदो ? जीवणियकालाभावादो । एदस्स अत्थस्स जाणावणट्ठं आउआणमप्पाबहुअं भणदि ।

एत्थ अप्पाबहुअं--सव्वत्थोवं खुद्दाभवग्गहणं ॥६३३॥

कुदो? एइंदियस्स बंधणियेयखुद्दाभवग्गहणं घादिय उप्पइदसव्वजहण्ण—जीवणियकालग्गहणादो । खीणकसायकाले एत्तियमेत्ते सेसे बादर-सुहुमणिगोदजीवा णियमा ण उप्पज्जंति त्ति घेत्तव्वं ।

एइंदियस्स जहण्णिया णिव्वत्ती संखेज्जगुणा ॥६३४॥

कुदो ? बादर-सुहुमणिगोदअपज्जत्ताणं घादेण विणा जहण्णजीवणियकाल-ग्गणादो । को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया ॥६३५॥

असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । अप्रथम समयमें मृत जीव विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं? अप्रथम-अचरम समयोंमें मृत जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं । सब समयोंमें मृत जीव विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ? प्रथम समयमें मृत जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं । इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब क्षीणकषायके कालमें जघन्य आयुप्रमाण कालके शेष रहनेपर क्षीणकषायके शरीरमें बादर निगोद जीव नहीं उत्पन्न होते हैं, क्योंकि, जीवनीय कालका अभाव है । इस प्रकार इस अर्थका ज्ञान करानेके लिए आयुओंका अल्पबहुत्व कहते हैं--

यहाँ अल्पबहुत्व- क्षुल्लकभवग्रहण सबसे स्तोक है ॥ ६३३ ॥

क्योंकि, एकेन्द्रियके बन्धको प्राप्त हुए निषेकरूप क्षुल्लकभवग्रहणका घात करके उत्पन्न कराये गए सबसे जघन्य जीवनीयकालका यहाँ ग्रहण किया है । क्षीणकषायके कालमें इतने कालके शेष रहनेपर बादरनिगोद जीव और सूक्ष्म निगोद जीव नियमसे नहीं उत्पन्न होते हैं यह यहाँपर ग्रहण करना चाहिए ।

एकेन्द्रियकी जघन्य निर्वृत्ति संख्यातगुणी है ॥ ६३४ ॥

क्योंकि, बादर और सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके घात हुए बिना प्राप्त हुए जघन्य जीवनीय कालका ग्रहण किया है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है ।

वही उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक है ॥ ६३५ ॥

केत्तिमत्तो विससो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो * । जहण्णाउआदो उक्कस्साउअं असंखेज्जगुणमिदि के वि आइरिया भणंति तमेदेण सह किण्ण विरु-
ज्जदे ? न, वक्खाणेण सुत्तस्स बाधाभावादो । जवमज्जमरणचरिमसमए भोत्तूण-गुण-
सेडिमरणचरिमसमए चेव जहण्णिया बादरणिगोदवग्गणा होदि त्ति जानावणट्ठं
उत्तरसुत्तं भणदि—

बादरणिगोदवग्गणाए जहण्णियाए आवलियाए असंखेज्जदि-
भागमेत्तो णिगोदाणं ॥ ६३६ ॥

क्षीणकषायचरिमसमए जहण्णिया बादरणिगोदवग्गणा होदि । तत्थ णिगोदाणं
पमाणं आवलियाए असंखेज्जदिभागो । के णिगोदा णाम ? पुलवियाओ एदेण
पल्लंगुल-जगसेडि-पदरादीणमसंखेज्जदिभागो पडिसिद्धो । सुत्तेण विणा जहण्णिया
बादरणिगोदवग्गणा क्षीणकषायचरिमसमए चेव होदि त्ति कुदो णव्वदे ? सुत्ताविरुद्धा-
इरियवयणादो । जहण्णसुहुमणिगोदवग्गणाए पमाणपरुवणहुमत्तरसुत्तं भणदि—

विशेषका प्रमाण कितना है ? विशेषका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागमात्र है ।

शंका— जघन्य आयुसे उत्कृष्ट आयु असंख्यातगुणी है ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं । उसके साथ विरोध कैसे नहीं होता ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, व्याख्यानसे सूत्रमें बाधा नहीं आती ।

अब यवमध्यमरणके अन्तिम समयको छोड़कर गुणश्रेणिमरणके अन्तिम समयमें ही जघन्य बादर निगोद वर्गणा होती है इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

जघन्य बादर निगोद वर्गणामे निगोदोंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भाग-
मात्र होता है ॥ ६३६ ॥

क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य बादर निगोद वर्गणा होती है । वहाँ निगोदोंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागमात्र है ।

शंका— निगोद कौन है ?

समाधान— पुलविया ।

इस वचनके द्वारा पल्ल, अङ्गुल, जगश्रेणि और जगप्रतर आदिके असंख्यातवें भागका प्रतिषेध हो जाता है ।

शंका— सूत्रके बिना जघन्य बादर निगोद वर्गणा क्षीणकषायके अन्तिम समयमें ही होती है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— सूत्राविरुद्ध आचार्योंके वचनसे जाना जाता है ।

अब जघन्य सूक्ष्म निगोद वर्गणाके प्रमाणका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

* अ० प्रती ' असंखे० भागो भागमेत्तो ' इति पाठः ।

✻ अ० प्रती ' उक्कस्साउअं संखेज्जगुणमिदि ' इति पाठः ।

**सुहुमणिगोदवगणाए जहणियाए आवलियाए असंखेज्जदि-
भागमेत्तो णिगोदाणं ॥ ६३७ ॥**

एसा जहणिया सुहुमणिगोदवगणा जले थले आगासे वा होदि, वध्व-खेत-
काल-भावणियमाभावादो । एदिस्से वि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाओ
अणंताणंतजीवावूरिदअसंखेज्जलोगमेत्तसरीराओ होति । संपहि सुहुमणिगोदुक्कस्स-
वगणाए पमाणपरुवणट्टमुत्तरसुत्तं भणदि-

**सुहुमणिगोदवगणाए उक्कस्सियाए आवलियाए असंखेज्जदि-
भागमेत्तो णिगोदाणं ॥ ६३८ ॥**

जा उक्कस्सिया सुहुमणिगोदवगणा तत्थ पुलवियाणं पमाणमावलियाए
असंखेज्जदिभागो चेव । एदेण पल्लस्स असंखेज्जदिभागादिसंखापडिसेहो कदो । एसा
पुण सुहुमणिगोदुक्कस्सवगणा महामच्छसरीरे चेव होति ण अणत्थ, उवदेसाभावादो ।
संपहि बादरणिगोदुक्कस्सवगणाए पमाणपरुवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि-

**बादरणिगोदवगणाए उक्कस्सियाए सेडोए असंखेज्जदिभाग-
मेत्तो णिगोदाणं ॥ ६३९ ॥**

जघन्य सूक्ष्म निगोद वर्गणामें निगोदोंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें
भागमात्र है ॥ ६३७ ॥

यह जघन्य सूक्ष्म निगोद वर्गणा जलमें, स्थलमें और आकाशमें होती है, इसके लिए द्रव्य,
क्षेत्र, काल और भावका कोई नियम नहीं है । इसका भी अनन्तानन्त जीवोंसे व्याप्त असंख्यात
लोकप्रमाण शरीरवाली आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियाँ होती हैं । अब उत्कृष्ट
सूक्ष्म निगोद वर्गणाके प्रमाणका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

**उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोद वर्गणामें निगोदोंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें
भागमात्र है ॥ ६३८ ॥**

जो उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोद वर्गणा है उसमें पुलवियोंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें
भागमात्र ही है । इस वचन द्वारा पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण आदि संख्याका प्रतिषेध किया
है । परन्तु यह उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोद वर्गणा महामत्स्यके शरीरमें ही होती है, अन्यत्र नहीं
होती, क्योंकि, अन्यत्र होती है ऐसा उपदेश नहीं पाया जाता । अब उत्कृष्ट बादर निगोद
वर्गणाके प्रमाणका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

**उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणामें निगोदोंका प्रमाण जगश्रेणिके असंख्यातवें
भागमात्र है ॥ ६३९ ॥**

मूलय-थूहलयादिसु सेडीए असंखेज्जविभागमेत्तपुलवीओ अणंतजीवावूरिद—
असंखेज्जलोगसरीराओ घेतूण बादरणिगोदुक्कस्सवग्गणा होदि । णिगोदवग्गणाणं
कारणपरुवणट्टमुत्तरसुत्तं णदि—

एदेसि चेव सव्वणिगोदानं मूलमहाखंधट्ठाणाणि ॥६४०॥

सव्वणिगोदानमिदि वुत्ते सव्वबादरणिगोदानमिदि घेतव्वं । सुहुमणिगोदा
किण्ण गहिदा? ण एत्थेव ते उप्पज्जंति अणत्थ ण उप्पज्जंति त्ति णियमाभावादो ।
महावखंधस्स ट्ठाणाणि त्ति भणिदे महावखंधस्स अवयवा त्ति घेतव्वं, ट्ठाणसदस्स
सरुवपज्जायस्स दंसणादो । तेण महावखंधावयवा सव्वणिगोदानमुप्पणा मूलं
कारणमिदि भणित्वं होदि । ण च मूलसदो कारणत्थे अप्पसिद्धो, 'स्त्रियो मूलमनर्थानाम्'
इत्यत्र मूलशब्दस्य कारणपर्यायस्थोपलभ्भात् । महावखंधस्स ट्ठाणाणं परुवणट्ठं
उत्तरसुत्तं भणदि—

अट्ठ पृथ्वीओ टंकाणि कूडाणि भवणाणि विमाणाणि विमा-
णिदियाणि विमाणपत्थडाणि णिरयाणि णिरइंदियाणि णिरय-

मूली, शूवर और आर्द्रक आदिमें अनन्त जीवोंसे व्याप्त असंख्यात लोकप्रमाण
शरीरवाली जगत्त्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियाँ होती हैं । इन्हें ग्रहण कर बादरनिगोद
उत्कृष्ट वर्गणा होती है । अब निगोद वर्गणाओंके कारणका कथन करनेके लिए आगेका
सूत्र कहते हैं--

इन्हीं सब निगोदोंका मूल महास्कंधस्थान हें ॥ ६४० ॥

सब निगोदोंका ऐसा कहनेपर सब बादर निगोदोंका ऐसा कहना चाहिए ।

शंका- सूक्ष्म निगोदोंका ग्रहण क्यों नहीं किया है ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, यहाँ ही वे उत्पन्न होते हैं, अन्यत्र उत्पन्न नहीं होते ऐसा
कोई नियम नहीं है ।

महास्कन्धके स्थान ऐसा कहनेपर महास्कन्धके अवयव ऐसा ग्रहण करना चाहिए,
क्योंकि, स्थान शब्द स्वरूप पर्यायवाची देखा जाता है । इसलिए महास्कन्धके अवयव सब
निगोदोंकी उत्पत्तिमें मूल अर्थात् कारण हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । मूल शब्द कारणरूप
अर्थमें अप्रसिद्ध है यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, 'स्त्रियो मूलमनर्थानाम्' अर्थात् स्त्रियों
अनर्थोंका मूल है इस वचनमें मूल शब्द कारणवाची उपलब्ध होता है । अब महास्कन्धके
स्थानोंका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

आठ पृथिवियां टड्कु, कूट, भवन, विमान, विमानेन्द्रक, विमानप्रस्तर, नरक

❖ ता०प्रती 'चेव (मव्व-) णिगोदानं अ०का०प्रती: 'चेव णिगोदानं' इति पाठः ।

पत्थडाणि गच्छाणि गुम्माणि^१ वल्लीणि लवाणि तणवणप्फवि-
आदीणि ॥ ६४१ ॥

धम्मादिसत्तणिरय^२ पुढवीओ ईसप्पभारपुढवीए सह अट्ठ पुढवीओ महाखंधस्स
ट्टाणाणि होति । सिलामयपव्वएसु उक्किण्णवावी कूण-तलाय-जिणघरादीणि टंकाणि
णाम । मेरु-कुलसेल-बिंझ-सज्झादिपव्वया कूडाणि णाम । वलहि-कूडविज्जिया
सुरणरावासा भवणाणि णाम । वलहि-कूडसमणिदा पासादा विमाणाणि णाम ।
उडुआदीणि विमणाणिदियाणि णाम । सग्गलोअसेडिबद्ध-पइण्णया विमाणपत्थडाणि
णाम । निरयसेडिबद्धाणि निरयाणि णाम । सेडिबद्धाणं मडिझमनिरयावासा निर-
इंदयाणि णाम । तत्थतणपइण्णया निरयपत्थडाणि णाम । गच्छ-गुम्म-तणवणप्फवि-
लदावल्लीणमत्थो जाणिय वत्तव्वो । एदाणि महाखंधट्टाणाणि । एदेण महाखंधस्स
इंदियगेज्झाणमवयवाणं परूवणा कदा । जे पुण इंदियाणमगेज्झा सुहुमा महाखंधा-
वयवा एदेहि समवेदा ते वि आगमचक्खूहि दट्ठव्वा । सच्चित्तवग्गणाओ एवं जहण्णाओ
एवं च उक्कस्साओ । महाखंधवग्गणाए जहण्णुक्कस्सभावा एवं होति त्ति जाणा—
वणट्ठं उत्तरसुत्तं भणवि—

नरकेन्द्रक, नरकप्रस्तर, गच्छ, गुल्म, वल्ली, लता और तृणवनस्पति आदि
महास्कन्धस्थान हैं ॥ ६४१ ॥

ईषत्प्राग्भार पृथिवीके साथ घर्मा आदि सात नरक पृथिवियाँ मिलकर आठ पृथि-
वियाँ महास्कन्धके स्थान हैं । शिलामय पर्वतोंमें उकीरे गए बापी, कुआ, तालाब और जिन-
घर आदि टङ्क कहलाते हैं । मेरुपर्वत, कुलपर्वत, बिन्ध्यपर्वत और सह्यपर्वत आदि कूट
कहलाते हैं । वलभि और कूटसे रहित देवों और मनुष्योंके आवास भवन कहलाते हैं । वलभि
और कूटसे युक्त प्रासाद विमान कहलाते हैं । उडु आदिक विमान इन्द्रक कहलाते हैं । स्वर्ग-
लोकके श्रेणिबद्ध और प्रकीर्णक विमान विमानप्रस्तर कहलाते हैं । नरकके श्रेणिबद्ध नरक
कहलाते हैं । श्रेणिबद्धोंके मध्यमें जो नरकवास हैं वे नरकेन्द्रक कहलाते हैं । तथा वहाँ के
प्रकीर्णक नरकप्रस्तर कहलाते हैं । गच्छ, गुल्म, तृण वनस्पति, लता और वल्लीका अर्थ जान-
कर कहना चाहिए । ये महास्कन्धस्थान हैं । इस सूत्र द्वारा महास्कन्धके इन्द्रियग्राह्य अवय-
वोंका कथन किया है । परन्तु जो इन्द्रिय अग्राह्य सूक्ष्म महास्कन्धके अवयव हैं जो कि
निगोदोंसे समवेत हैं वे भी आगमचक्षुओंसे जानने चाहिए । सच्चित्तवर्गणार्थे इस प्रकार जघन्य
और इस प्रकार उत्कृष्ट होती हैं । महास्कन्धवर्गणार्थे जघन्य और उत्कृष्टभाव इस प्रकार
होते हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

✿ अ० का० प्रत्योः ' गुणाणि ' इति पाठा ।

✿ अ० का० प्रत्योः ' धम्मादिसत्त्वनिरय- ' इति पाठा ।

जदा मूलमहाक्खंधट्ठाणाणं जहणपदे तदा बादरतस-
पज्जत्ताणं उक्कस्सपदे ॥ ६४२ ॥

जदा मूलमहाक्खंधट्ठाणाणं जहणभावो होदि तदा बादरतसपज्जत्ताणं उक्क-
स्सभावो होदि । कुदो ? बादरतसपज्जत्ताणं कर-चरण-सरीराणं छेदन-भेदणादि-
बावारेण महाक्खंधावयवाणं भेदप्पसंगादो ।

जदा बादरतसपज्जत्ताणं जहणपदे तदा मूलमहाक्खंधट्ठा-
णाणमुक्कस्सपदे ॥ ६४३ ॥

कुदो ? तसबादरजीवेसु थोवेसु संतेसु कर चरणादिबावारेण महाक्खंधस्स
घादाभावो । संपहि मरणजवमज्झ-समिलाजवमज्झादीणं परूवणट्ठं एसा संदीट्ठी
जहाकमेण टुवेदव्वा—

एसो बिदियतिभागो णत्थि



बा० सु० णिगोदअपज्जत्ताणं
चत्तारिअपज्जत्ताणं णिव्वत्ति-
जवमज्झमेदं ।

बा० सु० णि० अपज्जत्ताणं
आउअबंधजवमज्झभेदं

जब मूल महास्कन्धस्थानोंका जघन्य पद होता है तब बादर त्रस पर्याप्तकोंका
उत्कृष्ट पद होता है ॥ ६४२ ॥

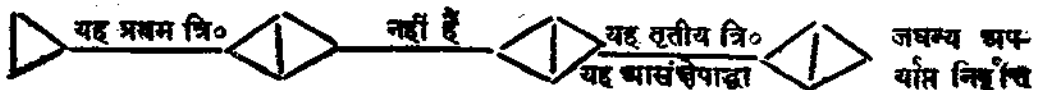
जब मूल महास्कन्धस्थानोंका जघन्यभाव होता है तब बादर त्रसपर्याप्तकोंका उत्कृष्ट
भाव होता है, क्योंकि, बादर त्रसपर्याप्तकोंके हाथ, पैर, और शरीरोंके छेदन, भेदन आदि
व्यापारद्वारा महास्कन्धके अवयवोंका भेद प्राप्त होता है ।

जब बादर त्रसपर्याप्तकोंका जघन्य पद होता है तब मूल महास्कन्धोंका
उत्कृष्ट पद होता है ॥ ६४३ ॥

क्योंकि, त्रसबादर जीवोंके स्तोक होनेपर हाथ और पैर आदिके व्यापार द्वारा महा-
स्कन्धका घात नहीं होता । अब मरणयवमध्य और समिलायवमध्य आदिका कथन करनेके
लिए यह संदृष्टि क्रमसे स्थापित करनी चाहिए -

यह द्वितीय त्रिभाग

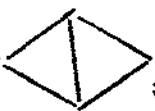
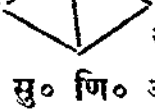
यहाँ आवश्यक



बा० सु० निगोद
अपर्याप्तकोंकी चार
अपर्याप्तियोंका यह
निर्वृत्ति यवमध्य है

बा० सु० अ० क्षुत्लकभवग्रहण
निगोदोंका
यह आयु बन्ध
यवमध्य है

बा० सु० निगोद अप-
र्याप्तकोंका यह मरण-
यवमध्य है ।

जहणिया अपज्जत्त-
 एसो तदियतिभागो  णिव्वत्ती
 असंखेपद्धा एसा  सुहाभवगहणं
 वाद० सु० णि० अपज्जत्ताणं
 मरणजवमज्झमेदं ।

००००००००००	००००००००००००
सु० णि० अपज्जत्ताणं उक्कस्सणिव्वत्ति- हाणाणि एदाणि	वादरणिगोदअपज्जत्ताणं उक्कस्स- णिव्वत्तिहाणाणि एदाणि

एसो तदियतिभागो, णत्थि
 एसो पढमतिभागो  रक्तवर्णं एत्थ आवासयाणि  रक्तवर्णं
 वादरसुहुमणिगोदपज्जत्ताणं सरीर-
 णिव्वत्तिजवमज्झमेदं । वा० सु० णिगोदपज्जत्ताणं
 आउअबंधजवमज्झमेदं ।

एसो तदियतिभागो  रक्तवर्णं
 वादरसुहुमणिगोदपज्जत्ताणं
 मरणजवमज्झमेदं ।

००००००००००	००००००००००००
ये सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोके उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान हैं	ये वादर निगोद अपर्याप्तकोके उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान हैं

यह द्वितीय त्रिभाग

यहाँ आवश्यक
 यह प्रथम त्रि०  रक्तवर्णं नहीं है  रक्तवर्णं यह तृ० त्रि०  रक्तवर्णं
 वा० सु० निगोद पर्याप्तको के यह शरीर निर्वृत्ति यवमध्य है ।
 वा० सु० निगोद पर्याप्तको के यह आयु यवमध्य है ।
 वा० सु० निगोद पर्याप्तको के यह मरण यवमध्य है ।

(१) एदमंतरं-

आहारसरीरणिव्वत्ति- ट्टाणाणि एदाणि ००००००००	अंतर	आहारसरीरिन्द्रिय- णिव्वत्तिट्टाणाणि एदाणि ००००००००	अंतर	आहारसरीरआणापाण- णिव्वत्तिट्टाणाणि एदाणि ००००००००	
अंतर	आहारसरीरभासा- णिव्वत्तिट्टाणाणि एदाणि ००००००००	अंतर	आहारसरीरमण- णिव्वत्तिट्टाणाणि एदाणि ००००००००	अंतर	आहारसरीरणिल्ले- वणट्टाणाणि एदाणि ००००००००

(२) एदमंतरं

अंतर	०००००००० वेउव्वियसरीर- णिव्वत्तिट्टाणाणि एदाणि	अंतर	०००००००००० वेउव्वियसरीरिन्द्रिय- णिव्वत्तिट्टाणाणि एदाणि	अंतर	०००००००००० वेउव्वियसरीरआणापाण णिव्वत्तिट्टाणाणि एदाणि

यह अन्तर

ये आहारशरीर निर्वृत्तिस्थान हैं ००००००००	अन्तर	ये आहारशरीरेन्द्रिय निर्वृत्तिस्थान हैं ००००००००	अन्तर	ये आहारशरीरश्वासोच्छ्वास निर्वृत्तिस्थान हैं— ००००००००

अन्तर	ये आहारशरीरभाषा निर्वृत्तिस्थान हैं ००००००००	अन्तर	ये आहारशरीरमन निर्वृत्तिस्थान हैं ००००००००	ये आहारशरीर निर्लेपनस्थान हैं ००००००००

२ यह अन्तर है ।

००००००००० ये वैक्रियिकशरीर, निर्वृत्तिस्थान हैं	अन्तर	००००००००००० ये वैक्रियिकशरीरेन्द्रिय निर्वृत्तिस्थान हैं	अन्तर	०००००००००० ये वैक्रियिकशरीरश्वासोच्छ्वास निर्वृत्तिस्थान हैं

अंतरं	०००००००००० वेउव्वियसरीराभासा- णिव्वत्तिट्ठाणाणि एदाणि	अंतरं	०००००००० वेउव्वियमणिव्वत्ति- ट्ठाणाणि एदाणि	अंतरं	०००००००००००० वेउव्वियसरीरणिहल- वणट्ठाणाणि एदाणि

(३) एदमंतरं

०००००००००० ओरालियसरीरणिव्वत्ति- ट्ठाणाणि एदाणि	अंतरं	०००००००००००० ओरालियसरीरइंदिय- णिव्वत्तिट्ठाणाणि एदाणि	अंतरं	०००००००००००० ओरालियसरीरआणावाण- णिव्वत्तिट्ठाणाणि एदाणि

अंतरं	०००००००००००० ओरालियसरीरभासा- णिव्वत्तिट्ठाणाणि एदाणि	अंतरं	०००००००० ओरालियसरीरमण- णिव्वत्तिट्ठाणाणि एदाणि	अंतरं	०००००००००००००० ओरालियसरीरणिहल- वणट्ठाणाणि एदाणि

अन्तर	०००००००००००० ये वैक्रियिकशरीरभाषा निर्वृत्तिस्थान हैं	अन्तर	०००००००००० वे वैक्रियिकशरीरमन निर्वृत्तिस्थान हैं	अन्तर	०००००००००००००० ये वैक्रियिकशरीर निलेपनस्थान हैं

३ यह अन्तर है

०००००००००००० ये औदारिकशरीर निर्वृत्तिस्थान हैं	अन्तर	०००००००००००००० ये औदारिकशरीरेन्द्रिय निर्वृत्तिस्थान हैं	अन्तर	०००००००००००००० ये औदारिकशरीरोच्छ्वास निर्वृत्तिस्थान हैं

अन्तर	०००००००००००००० ये औदारिकशरीर भाषा निर्वृत्तिस्थान हैं	अन्तर	०००००००००००००० ये औदारिकशरीरमन निर्वृत्तिस्थान हैं	अन्तर	०००००००००००००००० ये औदारिकशरीर निलेपनस्थान हैं

सुहुमणिगोदपज्जत्ताणं	बादरणिगोदपज्जत्ताणं	पत्तेयसरीरपज्जत्ताणं
एइंदियपज्जत्ताणं उक्कस्स- बावीससहस्साणि	सम्मच्छिमपज्जत्ताण- मुक्कस्सपुव्वकोडी	❖❖❖❖❖ ०००००
गढभोवक्कंतिपाणमुक्कस्स- तिण्णिपलिदोवमाणि	उववादिपाणमुक्कस्सतेत्तीससागरोवमाणि	

एवं बादर-सुहुमणिगोदपज्जत्ताणं तेसिं पज्जत्ताणं च चत्तारि संदिट्ठीओ
द्विय 'जत्थेय मरइ जीवो तत्थ दु मरणं भवे अणंताणं । वक्कमदि जत्थ एयो
वक्कमणं तत्थणंताणं ॥' एदीए गाहाए सूचिदणिव्वत्तिजवमज्झ-मरणजवमज्झ-
आउअबंधजवमज्झाणं तिण्णं सरीराणं पज्जत्तिणिव्वत्तिट्ठाणादीणं पक्खणट्ठं च
उत्तरगंथो आगदो-

सूक्ष्म निगोद पर्याप्तिकोंकी	वादरनिगोद पर्याप्तिकोंके	प्रत्येक शरीरपर्याप्तिकोंके
एकेन्द्रियपर्याप्तिकोंके उत्कृष्ट २२ हजार वर्ष	सम्मूर्छन पर्याप्तिकोंकी उत्कृष्ट पूर्वकोटि	❖❖❖❖❖ ०००००
		गर्भजोंकी उत्कृष्ट तीन पत्त्य

औषपादिकोंकी उत्कृष्ट
तेतीस सागर

एस प्रकार बादर निगोद अपर्याप्त और सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त तथा उनके पर्याप्तिकोंकी
चार संदृष्टियाँ स्थापित कर 'जहाँ एक जीव मरता है वहाँ अनन्त जीवोंका मरण होता है और
जहाँ एक जीव उत्पन्न होता है वहाँ अनन्त जीवोंकी उत्पत्ति होती है।' इस गाथा द्वारा सूचित
हुए निर्वृत्तियवमध्य, मरणयवमध्य और आयुबन्ध यवमध्योंका तथा तीन शरीरोंके पर्याप्त-
निर्वृत्ति स्थानादिकोंका कथन करनेके लिए आगेका ग्रन्थ आया है-

एतो सब्वजीवेसु महादंडओ कायव्वो भवदि ॥ ६४३ ॥

सब्वत्थोवं खुद्दाभवग्गहणं । तं तिधा विहत्तं—हेट्ठिल्लए तिभाए
सब्वजीवाणं जहणिया अपज्जत्तणिव्वत्ती । मज्झिल्लए तिभाए णत्थि
आवासयाणि । उवरिल्लए तिभागे आउअबंधो जवमज्झं समिलामज्झे
त्ति वुच्चदि ॥ ६४४ ॥

जं सब्वत्थोवं खुद्दाभवग्गहणं तं तिहत्तं कायव्वं । किमट्ठं तिधा विहज्जदे ? तत्थ
तिसु भागेषु आवासयपरूवणट्ठं । सब्वजहणखुद्दाभवग्गहणं ति वुत्ते घातखुद्दाभवग्ग-
हणं घेत्तव्वं, अण्णत्थ आउअस्स खुद्दाभावाणुववत्तीदो । हेट्ठिल्लए तिभागे सब्वजीवाणं
जहणिया अपज्जत्तणिव्वत्ति ति भणिदे जम्हि बादर-सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तेहि आ-
हार-सरीरिदिय-आणपाणचत्तारिअपज्जत्तीओ णिव्वत्तिज्जंति जवमज्झसरूवेण सो पढ-
मतिभागो णाम। उत्पण्णपढमसमयप्पहुडि पढमतिभागस्स संखेज्जदिभागमेत्त मद्धानमु-
वरि गंतूण जेण सुहुम-बादरणिगोदअपज्जत्ताणं आहार-सरीरिदिय-आणपाणपज्जत्तीओ
समाणिज्जंति जवसरूवेण ट्ठिदजीवेहि तेण हेट्ठिल्लए तिभागे सब्वजीवाणं जहणिया

यहांसे आगे सब जीवोंमें महादण्डक करना चाहिए ॥ ६४३ ॥

क्षुल्लकभवग्रहण सबसे स्तोक है । वह तीन प्रकारका है—अधस्तन त्रिभागम
सब जीवोंकी जघन्य अपर्याप्तनिर्वृत्ति होती है, मध्यम त्रिभागमें आवश्यक नहीं
होते और उपरिम त्रिभागमें यवमध्य होता है । उसे शमिलायवमध्य कहा जाता
है ॥ ६४४ ॥

जो सबसे स्तोक क्षुल्लकभवग्रहण है उसके तीन भेद करने चाहिए ।

शंका — उसके तीनों भेद किसलिए करते हैं ?

समाधान— उसके तीनों भेदोंमें आवश्यकोंका कथन करनेके लिए उसके तीन भेद करते हैं।

सबसे जघन्य क्षुल्लकभवग्रहण ऐसा कहनेपर घातक्षुल्लकभवग्रहण लेना चाहिए,
क्योंकि, अन्यत्र आयुका क्षुल्लकपना नहीं बन सकता है । अधस्तन त्रिभागमें सब जीवोंकी जघन्य
अपर्याप्त निर्वृत्ति ऐसा कहनेपर जिसमें बादरनिगोद अपर्याप्त जीव और सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त
जीव आहार, शरीर, इन्द्रिय और श्वासोच्छ्वास इन चार अपर्याप्तिकोंकी यवमध्यरूपसे रचते
हैं वह प्रथम त्रिभाग है ।

शंका — उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर प्रथम त्रिभागके संख्यातवें भागप्रमाण स्थान
ऊपर जाकर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त और बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंकी आहार, शरीर, इन्द्रिय
और श्वासोच्छ्वास पर्याप्तियां यतः यवमध्यरूपसे स्थित जीवोंके द्वारा समाप्त की जाती हैं अतः

अपज्जत्तणिव्वत्ति त्ति ण घड्ढे ? ण एस दोसो, विसयसत्तमिमस्सिदूण सुत्तपवुत्तीदो । पढमतिभागविसए जह्णिणया अपज्जत्तणिव्वत्ती होदि त्ति जं भणिदं होदि । ण च विसयसत्तमी असिद्धा,

औपश्लेषिकवैषयिकाभिव्यापक इत्यपि ।

आधारस्त्रिविधः प्रोक्तः कटाकाशतिलेषु च ॥ २३ ॥

इति वचनात्। अथवा पढमतिभागस्स संखेज्जदिभागो पढमतिभागो वि पढमतिभागो णाम 'ग्रामो दग्धः पटो दग्धः' इत्येवमादिषु समुदायेषु प्रवृत्तानां शब्दानामवयवेष्वपि वृत्तिदर्शनात् । मज्झिल्लए तिभाए णत्थि आवासयाणि त्ति भणिदे पढमतिभागस्स संखेज्जा भागा बिदियतिभागो सयलो च एसो मज्झिल्लतिभागो णाम । कथमेदस्स किञ्चूणदोतिभागस्स ॐ मज्झिल्लतिभागववएसो ? ण एस दोसो, तिण्णं खंडाणं समविवक्खाभावादो । एत्थ एवंविहे तिभागे मरणजवमज्झ-आउअबंधजवमज्झ-णिव्वत्तिजवमज्झावासयाणि णत्थि त्ति भणिदं होदि । उवरिल्लए तिभागे आउअबंधो जवमज्झं त्ति वुत्ते तदियतिभागे सुहु-म-बादरअपज्जत्ताणमाउअबंधो होदि । सो चेव जवमज्झं होदि । कुदो ? जीवेहि जवम-ज्झागारेण अबट्टाणादो । जवस्स मज्झिमपदेसो जवमज्झं त्ति एत्थ ण घेतव्वं

अधस्तन त्रिभागमें सब जीवोंकी जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति होती है यह कथन घटित नहीं होता ?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, विषयरूप सप्तमीका आश्रय लेकर सूत्रकी प्रवृत्ति हुई है । प्रथम त्रिभागको विषय करके जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । और विषय सप्तमी असिद्ध भी नहीं है, क्योंकि—

कट, आकाश और तिलमें औपश्लेषिक, वैषयिक और अभिव्यापक इस प्रकार आधार तीन प्रकारका कहा है ॥ २३ ॥

ऐसा वचन है । अथवा प्रथम त्रिभागका संख्यातवां भाग भी प्रथम त्रिभाग कहलाता है । यथा— ग्राम जला, वस्त्र जला इत्यादि प्रयोगोंके करने पर समुदायमें प्रवृत्त हुए शब्दोंकी वृत्ति अवयवोंमें भी देखी जाती है । मध्यके त्रिभागमें आवश्यक नहीं है ऐसा कहनेपर प्रथम त्रिभागका संख्यात बहुभाग और पूरा द्वितीय त्रिभाग यह सब मध्यका त्रिभाग कहलाता है ।

शंका — कुछ कम दो त्रिभागकी मध्यका त्रिभाग संज्ञा कैसे हो सकती है ?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, तीनों खण्ड समान होते हैं ऐसी विवक्षा नहीं है ।

यहां इस प्रकारके त्रिभागमें मरणयवमध्य, आयुबन्धयवमध्य और निर्वृत्तियवमध्य ये आवश्यक नहीं हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । उपरिम त्रिभागमें आयुबन्ध यवमध्य है ऐसा कहने पर उसका आशय है कि तीसरे त्रिभागमें सूक्ष्म अपर्याप्त और बादर अपर्याप्तका आयुबन्ध होता है और वही यवमध्य होता है, क्योंकि जीव यवमध्यके आकारसे अवस्थित है । यहां पर यवमध्य पदसे यवका मध्यम प्रदेश ऐसा नहीं ग्रहण करना चाहिए किन्तु यवका मध्य अर्थात्

किंतु जवस्स मज्झमव्भंतरमंतो त्ति घेत्त्वं । अथवा समिलामज्झे त्ति वुच्चदि, जुवखीली समिला णाम । दोण्णं समिलाणं मज्झं समिलामज्झं तेण समाणत्तादो समिलामज्झं । एवं सव्वेसि जवमज्झाणं जवमज्झं समिलामज्झे त्ति दोणामाणि होंति । तदियतिभागसमयप्पहुडि जाव असंखेपद्धाए पढमसमओ त्ति ताव उवरिमतिभागस्स संखेज्जा भागा जेण आउअबन्धजवमज्झस्स विसओ तेण उवरित्तए तिभाए आउअबन्धजवमज्झमिदि ण घडदे ? न, 'एकदेशविकृतमनन्यवदत्' इति न्यायात्तदियतिभागस्स संखेज्जाणं भागाणं पि किंचूणाणं तदियतिभागववएसेण सह विरोहाभावादो । एसा परूवणा सरीरखंधंडरावासपुलवियाओ अस्सिदूण ण परूवेयव्वा, तत्थ णियमाणुवलंभादो । किंतु जहण्णमाउअमस्सिदूण णिव्वत्तिसमिला जवमज्झाणि परूवेयव्वाणि । मरणजवमज्झं पुण णाणाउअविसयं चेव, समाणाउआणं कमेण मरणाणुववत्तीदो ।

तस्सुवरिमसंखेपद्धा* ॥ ६४५ ॥

जहण्णओ आउअबन्धकालो जहण्णविस्समणकालपुरस्सरो असंखेपद्धा णाम । सो जवमज्झचरिमसमयप्पहुडि ताव होदि जाव जहण्णाउअबन्धकालचरिमसमओ त्ति । एसा वि असंखेपद्धा तदियतिभागम्मि चेव होदि, अज्जवि खुद्दाभवग्गहणस्स संभवादो ।

भीतरी भाग ऐसा ग्रहण करना चाहिए । अथवा शमिलामध्य ऐसा कहते हैं युगकीलीका नाम शमिला है और दो शमिलाओंके मध्यका नाम शमिलामध्य है । उसके समान होनेसे उसे शमिलामध्य कहते हैं । इस प्रकार सब यवमध्यके यवमध्य और शमिलामध्य ये दो नाम हैं ।

शंका — तीसरे त्रिभागके प्रथम समयसे लेकर आसंक्षेपाद्धाके प्रथम समय तक उपरिम त्रिभागका संख्यात बहुभाग यतः आयुबंधयवमध्यका विषय है अतः उपरिम त्रिभागमें आयुबंधयवमध्य घटित नहीं होता है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, एकदेश विकृत वस्तु अनन्यके समान अर्थात् उसीके समान होती है इस न्यायके अनुसार तृतीय त्रिभागके कुछ कम संख्यात बहुभागोंकी तृतीय त्रिभाग संज्ञा रखनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

यह प्ररूपणा शरीरके स्कन्ध, अण्डर, आवास और पुलवियोंका आश्रय लेकर नहीं करनी चाहिए, क्योंकि, वहां कोई नियम नहीं उपलब्ध होता । किंतु जघन्य आयुका आश्रय लेकर निर्वृत्ति शमिला यवमध्योंकी प्ररूपणा करनी चाहिए । परन्तु मरणयवमध्य नाना आयुओंको ही विषय करता है, क्योंकि, समान आयुवालोंका क्रमसे मरण नहीं बन सकता ।

उसके ऊपर आसंक्षेपाद्धा है ॥ ६४५ ॥

जघन्य विश्रमणकाल पूर्वक जघन्य आयुबन्धकाल आसंक्षेपाद्धा कहा जाता है । वह यवमध्यके अन्तिम समयसे लेकर जघन्य आयुबन्धकालके अन्तिम समय तक होता है । यह आसंक्षेपाद्धा तृतीय त्रिभागमें ही होता है, क्योंकि अभी भी ऊपर क्षुल्लक भवग्रहण सम्भव है ।

❖ प्रतिष्ठा 'तस्सुवरिमसंखेपद्धा' इति पाठः ।

असंखेपद्धस्सुवरिं ० खुदाभवग्गहणं ॥ ६४६ ॥

आउअबंधे संते जो उवरि विस्समणकालो सव्वजहण्णो तस्स खुदा*भवग्गहणं ति सण्णा । सो ततो उवरि होदि । कथमेदस्स खुदाभवग्गहणववएसो ? 'समुदायेषु प्रवृत्ताः शब्दा अवयवेष्वपि वर्तन्ते' इति न्यायेन तस्य तदविरोधात् । एवं पि खुदाभवग्गहण तदियतिभागे चेव, एदेण विणा तदियतिभागस्स संपुण्णत्ताणुववत्तीदो । अथवा असं-खेपद्धस्सुवरि खुदाभवग्गहणं ति वुत्ते जहण्णाउअबंधकालचरिमसमयादो उवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण हेट्ठिल्लभागेण सह घादखुदाभवग्गहणं होदि ति धेतव्वं ।

खुदाभवग्गहणस्सुवरि जहणिया अपज्जत्तणिव्वत्ती ॥ ६४७ ॥

घादखुदाभवग्गहणस्सुवरि ततो संखेज्जगुणं अट्ठाणं गंतूण सुहुमणिगोदजीवअपज्ज-त्ताणं बंधेण जहण्णं जं णिसेयखुदाभवग्गहणं तस्स जहणिया अपज्जत्तणिव्वत्ति ति सण्णा । एत्थं वि पुच्चं व दोहि पयारेहि वक्खाणं कायव्वं ।

जहणियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उवरिमुक्कस्सिया अपज्जत्त- णिव्वत्ती अंतोमुहुत्तिया ॥ ६४८ ॥

आसंक्षेपाद्धाके ऊपर क्षुल्लकभवग्रहण है ॥ ६४६ ॥

आयुबन्धके होने पर जो सबसे जघन्य विधर्मणकाल है उसकी क्षुल्लकभवग्रहण संज्ञा है । वह आयुबन्धकालके ऊपर होता है ।

शंका — इसकी क्षुल्लक भवग्रहण संज्ञा कैसे है ?

समाधान — समुदायोंमें प्रवृत्त हुए शब्द उनके अवयवोंमें भी प्रवृत्ति करते हैं इस न्यायके अनुसार इसकी क्षुल्लकभवग्रहण संज्ञा होनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

यह क्षुल्लकभवग्रहण भी तृतीय त्रिभागमें ही होता है क्योंकि, इसके बिना तृतीय त्रिभाग सम्पूर्ण नहीं होता । अथवा आसंक्षेपाद्धाके ऊपर क्षुल्लक भवग्रहण है ऐसा कहने पर जघन्य आयुबन्धकालके अन्तिम समयसे ऊपर अन्तर्मुहूर्त जा कर नीचेके भागके साथ घात क्षुल्लक भव-ग्रहण होता है ऐसा ग्रहण करना चाहिए ।

क्षुल्लकभवग्रहणके ऊपर जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति होती है ॥ ६४७ ॥

घात क्षुल्लक भवग्रहणके ऊपर उससे संख्यातगुणा अध्वान जाकर सूक्ष्म निमोद अपर्याप्त जीवोंके बन्धसे जो जघन्य निषेक क्षुल्लक भवग्रहण होता है उसकी जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति संज्ञा है । यहां पर भी पहलेके समान दो प्रकारसे व्याख्यान करना चाहिए ।

जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्तिके ऊपर उत्कृष्ट अपर्याप्त निर्वृत्ति अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होती है ॥ ६४८ ॥

० प्रतिपु 'असंखेयस्सुवरि' इति पाठः । ✽ अ० प्रती 'तस्सखुदा' इति पाठः ।

निसेयखुद्दाभवग्गहणस्सुवरि समउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जविभाग-
मेत्तणिव्वत्तिट्ठाणाणि गंतूण सुहुमणिगोदअपज्जत्ताणमुक्कस्साउअं होदि । सा च
अपज्जत्तणिव्वत्ती अंतोमृहुत्तिया, पढमसमयप्पहुडि सव्वकालग्गहणादो । घादखुद्दा-
भवग्गहणचरिमसमयप्पहुडि जाव निसेयखुद्दाभवग्गहणचरिमसमओ त्ति ताव निसेय-
खुद्दाभवग्गहणस्स संखेज्जेसु भागेषु मरणजवमज्झं होदि, तमेत्थ किण्ण परुविदं ? ण
एस दोसो, जवमज्झमिवि अणुवट्ठे तेणेव संबंधो ॐ कायव्वो जहणिया अपज्जत्त-
णिव्वत्ती जवमज्झं होदि त्ति । तेण जवमज्झस्स एत्थ अत्थित्तं परुविदं चेव ।
हेट्ठिल्लए विभागजहणियाए अपज्जत्तणिप्पत्ती जवमज्झं होदि त्ति, एवमदिवक्कते
सुत्तं वि संबंधो कायव्वो, जवमज्झस्स मज्झदीवयत्तेण अवट्ठाणुवलंभादो । एसा सव्वा
वि परुवणा बादरणिगोदाणं । संपहि सुहुमणिगोदाणं परुवणट्ठमत्तरसुत्तं भणदि ।

तं चेव सुहुमणिगोदजीवाणं जहणिया अपज्जत्तणिव्वत्ती । ६४९ ।

तस्मिं चेव बादरणिगोदणिव्वत्तिजवमज्झस्स गब्भे बादरजवमज्झस्स पढम—
चरिमसमए आवलियाए असंखेज्जभागेण अपावेदूण सुहुमणिगोदजीवाणं जहणिया
अपज्जत्तणिव्वत्ती होदि ।

निषेकक्षुल्लकभवग्गहणके ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्या-
तवे भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थान जाकर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट आयु होती है । वह
अपर्याप्तनिर्वृत्ति अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होती है, क्योंकि, यहां पर प्रथम समयसे लेकर समस्त
कालका ग्रहण किया है ।

शंका— घात क्षुल्लक भवग्गहणके प्रथम समयसे लेकर निषेक क्षुल्लक भवग्गहणके
अन्तिम समयके प्राप्त होने तक उसमें निषेक क्षुल्लक भवग्गहणके संख्यात बहुभागोंमें मरणयव-
मध्य होता है उसका यहां पर कथन क्यों नहीं किया ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, यवमध्य पदकी अनुवृत्ति होती है,
इसलिए इस प्रकार सम्बन्ध कर लेना चाहिए कि जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति यवमध्य होता है ।
इसलिए यवमध्यका यहां पर अस्तित्व कहा ही है । अधस्तन भागमें जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति
यवमध्य होता है । इसी प्रकार पिछले सूत्रमें भी सम्बन्ध करना चाहिए, यवमध्यका
मध्यदीपकरूपसे अवस्थान उपलब्ध होता है ।

यह सब प्ररूपणा बादर निगोदोंकी है । अब सूक्ष्म निगोदोंका कथन करनेके लिए
आगेका सूत्र कहते हैं—

वहो सूक्ष्म निगोद जीवोंकी जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति है । ६४९ ।

उसी बादर निगोद निर्वृत्ति यवमध्यके भीतर बादर यवमध्यके प्रथम और अन्तिम
समयको आवलिके असंख्यातवे भागद्वारा प्राप्त न कर सूक्ष्म निगोद जीवोंकी जघन्य
अपर्याप्त निर्वृत्ति होती है ।

⊕ ता० प्रती '—मिदि वृत्ते अणुवट्ठे तेणेव संबंधो' इति पाठः ।

उवरिमुक्कस्सिया अपज्जत्तणिव्वत्ती अंतोमुहुत्तिया ॥६५०॥

सुगमं ।

तत्थ इमाणि पढमदाए आवसयाणि होति ॥६५१॥

पढमदाए पढमसमयप्पहुडि जाव सुहुमणिगोदजीवाणं उक्कस्सिया अपज्जत्त-
णिव्वत्ती तत्थ इमाणि उवरि भग्णमाणआवासयाणि होति, ण अण्णत्थ, असंभवादो ।
एदाणि पढमदाए वत्तव्वाणि, एदेहि तो सेसावासयाणं सिद्धीए ।

**तदो जवमज्झं गंतूण सुहुमणिगोदअपज्जत्तयाणं^० णिल्लेवण-
ट्टाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥६५२॥**

तदो इदि वुत्ते उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तं गंतूण जवमज्झस्स पढमसमयो
होदि त्ति वत्तव्वं । कुदो? पढमसमयप्पहुडि उवरि ताव संखेज्जावलियाओ त्ति तत्थ
णिल्लेवणट्टाणाणमभावादो^० । तत्थ ताणि णत्थि त्ति कुदो णव्वदे? अपज्जत्तणिव्वत्तण-
कालो जहण्णओ वि संखेज्जावलियमेत्तो चेव होदि त्ति गुरुवएसादो । जवमज्झमिदि
किरियाविसेसणं, तेण जहा जवमज्झं होदि तहा गंतूण सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयाण

उपरिम उत्कृष्ट अपर्याप्त निर्वृत्ति अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है ॥६५०॥

यह सूत्र सुगम है ।

वहाँ प्रथम समयसे लेकर ये आवश्यक होते हैं ॥६५१॥

पढमदाए अर्थात् प्रथम समयसे लेकर सूक्ष्म निगोद जीवोंकी उत्कृष्ट अपर्याप्त निर्वृत्ति
तक वहाँ ये आगे कहे जानेवाले आवश्यक होते हैं अन्यत्र नहीं होते, क्योंकि, अन्यत्र उनका होना
असम्भव है । ये प्रथम समयसे कहने चाहिए, क्योंकि, इनसे शेष आवश्यकोंकी सिद्धि होती है ।

तदनन्तर यवमध्यके व्यतीत होनेपर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तियोंके आवलिके
असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थान होते हैं ॥६५२॥

तदो ऐसा कहनेपर उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त जाकर यवमध्यका
प्रथम समय होता है ऐसा यहाँ कहना चाहिए, क्योंकि, प्रथम समयसे लेकर ऊपर संख्यात
आवलि काल तक वहाँ निर्लेपनस्थानोंका अभाव है ।

शंका— वहाँ वे नहीं हैं यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— क्योंकि, अपर्याप्त निर्वृत्तिकाल जघन्य भी संख्यात आवलिप्रमाण ही है
ऐसा गुरुका उपदेश है । इससे जाना जाता है कि प्रथम समयसे लेकर संख्यात आवलिप्रमाण
काल होने तक निर्लेपनस्थान नहीं होते ।

यवमध्य यह क्रियाविशेषण है, इससिए जिस प्रकार यवमध्य होता है उस प्रकार जाकर

❖ ता० प्रती '—निगोदअपज्जत्तयाणं' इति पाठः ।

❖ अ० प्रती 'ट्टाणाणि समभावादो' इति पाठः ।

णिल्लेवणट्टाणाणि होति त्ति भाणिवव्वं । किं णिल्लेवणं णाम? आहार-सरीरिदिय-आणपाणअपज्जत्तीणं णिव्वत्ती णिल्लेवणं णाम । जदि अपज्जत्ती ण तिससे णिव्वत्ती अत्थि, विप्पडिसेहादो? ण अपज्जत्तीए वि अपज्जत्तिसरूवेण णिप्पत्तिपडि विरोहा-भावादो । ताणि च णिल्लेवणट्टाणाणि जवमज्झं गदाणि आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मेत्ताणि होति । एवं कुदो? णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो । ण च पमाणं पमा-णंतरमवेक्खदे, अणवत्थापसंगादो । एत्थ जवमज्झसरूवपरूवणा कीरदे । तं जहा—उत्पणपढमसमयप्पहुडि अंतोमूहुत्तं गंतूण चदुणमपज्जत्तीणं सिग्घं णिव्वत्तया सुहुमणिगोदअपज्जत्तया थोवा । ण च चत्तारि अपज्जत्तीओ वि जुगवं ण णिल्ले—विज्जंति, आहार-सरीरिदिय-आणपाणपज्जत्तीणं कमेण णिप्पणानमक्कमेण पच्छा णिल्लेवणुवलंभादो । णिप्पत्ति-णिल्लेवणाणं भेदमुवरि भणिस्सामो । तदो सम-उत्तराए द्विदोए णिव्वत्तिया विसेसाहिया । एवं विसेसाहिया विसेसाहिया जाव आवलियाए असंखेज्जभागमेत्तामद्धाणं गदं ति । पुणो तत्थ जवमज्झं होदि ।

सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंके निर्लेपनस्थान होते हैं ऐसा कहलाना चाहिए ।

शंका-- निर्लेपन किसे कहते हैं ?

समाधान-- आहार, शरीर, इन्द्रिय और श्वासोच्छ्वास अपर्याप्तियोंकी निर्वृत्तिको निर्लेपन कहते हैं ।

शंका-- यदि अपर्याप्त है तो उसकी निर्वृत्ति नहीं होती, क्योंकि, अपर्याप्तिकी निर्वृत्ति होनेका निषेध है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, अपर्याप्तिकी भी अपर्याप्तिरूपसे निष्पत्ति होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

वे निर्लेपनस्थान यवमध्यको प्राप्त हुए आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ।

शंका-- इस प्रकार किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- इसी सूत्रसे जाना जाता है । और एक प्रमाण दूसरे प्रमाणकी अपेक्षा नहीं करता, क्योंकि, ऐसा मानने पर अनवस्थाका प्रसंग आता है ।

यहाँ पर यवमध्यके स्वरूपकी प्ररूपणा करते हैं । यथा- उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त जाकर चार अपर्याप्तियोंके शीघ्र निर्वर्तक सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीव थोड़े हैं । चार अपर्याप्तियाँ एक साथ निर्लेपनभावको नहीं प्राप्त होती यह कहना ठीक नहीं है क्योंकि, क्रमसे निष्पन्न हुई आहार, शरीर, इन्द्रिय और आनापान पर्याप्तियोंका बादमें अक्रमसे निर्लेपन भाव देखा जाता है । निष्पत्ति और निर्लेपनमें जो भेद है उसे आगे कहेंगे । उससे एक समय अधिक स्थितिके निर्वर्तक जीव विशेष अधिक हैं । इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाने तक विशेष अधिक विशेष अधिक हैं । पुनः वहाँ पर यवमध्य होता है । यवमध्यके उपरिम समयमें चार

❖ ता० प्रती ' एवं कुदो ' इति पाठ ।

❖ ता० प्रती ' णिल्लेविज्जदि ' इति पाठः ।

❖ ता० प्रती ' -उज्जत्तीणि (ण) कमेण ' का० प्रती ' -उज्जत्तीणि कमेण ' इति पाठः ।

जवमज्झस्सुवरिमसमए चत्तारि अपज्जत्तिणिल्लेवया जीवा विसेसहीणा । एवं विसेसहीणा विसेसहीणा होदूण उवरि आवलि० असंखे० भागमेत्तमद्वाणं गंतूण चत्तारि अपज्जत्तिणिल्लेवया जीवा समप्पन्ति । उत्पण्णसमयप्पहुडि आहारवर्गणादो अभवसिद्धि एहि अणंतगुणं सिद्धाणमणंतभागमेत्तं पदेसपिडं घेतूण आहार-सरीरिदिय-आणापाणपज्जत्तीओ जुगवदेव पारंभिय तदो अंतोमूहुत्तं गंतूण आहारअपज्जत्ति समाणिय तदो अंतोमूहुत्तं गंतूण सरीरअपज्जत्ति समाणेदि । तदो अंतोमूहुत्तं गंतूण पांसिदियअपज्जत्ति समाणेदि । तदो अंतोमूहुत्तं गंतूण आणपाणअपज्जत्ति समाणेदि । तदो अंतोमूहुत्तं गंतूण चत्तारि वि अपज्जत्तीओ जुगवं णिल्लेवेदि ति भणिदं होदि । एवं सब्बणिल्लेवणट्टाणाणं अत्थपरुवणा पुध पुध कायव्वा । एत्थ गुणहाणिअद्वाणस्स णाणागुणहाणिसलागाणं च पमाणमावलि० असंखे० भागो । एत्थ एगा वि गुणहाणी णत्थि ति के वि आइरिया भणन्ति । एत्थ जवमज्झहेट्ठिमअद्वाणादो उवरिमअद्वाणं सरिसमिदि के वि आइरिया भणन्ति । के वि विसेसाहियमिदि भणन्ति । के वि संखेज्जगुणं, के वि असंखे० गुणं ति । तेणेत्थ अम्हाणं ण णिच्छओ अत्थि । तदो जाणिऊण वत्तव्वं ।

तदो जवमज्झं गंतूण बादरणिगोदजीवअपज्जत्तयाणं* णिल्ले-

अपर्याप्तियोंके निर्लेपन करनेवाले जीव विशेष हीन हैं । इस प्रकार विशेष हीन विशेष हीन होते हुए आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर चार अपर्याप्तियोंका निर्लेपन करनेवाले जीव समाप्त होते हैं । उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर आहारवर्गणामेंसे अभव्योंसे अनंतगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण प्रदेशपिण्डको ग्रहण कर आहार, शरीर, इन्द्रिय और आनापान पर्याप्तियोंको एकसाथ प्रारम्भ करके अनन्तर अन्तर्मुहूर्त जाकर आहार अपर्याप्तिको समाप्त कर फिर अन्तर्मुहूर्त जाकर शरीर अपर्याप्तिको समाप्त करता है । फिर अन्तर्मुहूर्त जाकर स्पर्शनेन्द्रिय अपर्याप्तिको समाप्त करता है । फिर अन्तर्मुहूर्त जाकर आनापान अपर्याप्तिको समाप्त करता है । फिर अन्तर्मुहूर्त जाकर चारों ही अपर्याप्तियोंको एकसाथ निर्लेपित करता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । इस प्रकार सब निर्लेपनस्थानोंकी अर्थप्ररूपणा अलग अलग करनी चाहिए । यहां पर गुणहाणिअध्वान और नानागुणहानिशलाकाओंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । यहां पर भी गुणहानि नहीं है ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं । तथा यहां पर यव-मध्यका उपरिम अध्वान अधस्तन अध्वानके समान है ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं । तथा कितने ही आचार्य विशेष अधिक है ऐसा कहते हैं । तथा कितने ही संख्यातगुणा और कितने ही असंख्यातगुणा कहते हैं, इस लिए इस विषयमें हमारा कोई निश्चय नहीं है, इसलिए जानकर कथन करना चाहिए ।

अनन्तर यवमध्य जाकर बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंके आवलिके असंख्यातवें

❖ ता० प्रती 'विसेसाहिया' एवं 'इति पाठः ।

❖ ता० प्रती '—णिगोदअपज्जत्तयाणं' इति पाठः ।

वणट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्ताणि ॥ ६५३ ॥

तदो इदि णिहेसो किमट्ठं कदो? उत्पण्णपढमसमए चेव चत्तारि अपज्जत्तीओ अक्कमेण आढप्पंति^१ त्ति जाणावणट्ठं कदो । उत्पण्णपढमसमए चेव चत्तारि अपज्जत्तीओ अक्कमेणाढाविद्य उवरि अंतोमहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदअपज्जत्ताणं वुत्तविहाणेण कमेण समाणिय तेसि णिल्लेविज्जमाणट्ठाणाणि आवलि० असंखे० भागमेत्ताणि । तेसु ट्ठाणेषु द्विज्जीवा जवमज्झागारेण होति त्ति एदेण सुत्तेण जाणाविदं । सेसं जहा सुहुमणिगोदअपज्जत्तणिल्लेवणट्ठाणाणं परूवणा कदा तहा एत्थ वि कायव्वा । णवरि सुहुमणिगोदजवमज्झस्स पढमणिल्लेवणट्ठाणादो हेट्ठा आवलियाए असंखे० भागमेत्ताणि णिल्लेवणट्ठाणाणि ओसरिदूण बादरणिगोदअपज्जत्तपढमणिल्लेवणट्ठाणं होदि । सुहुमणिगोदअपज्जत्तणिल्लेवणट्ठाणजवमज्झादो बादरणिगोदअपज्जत्तणिल्लेवणट्ठाणजवमज्झं पुव्वं चेव आरंभदि त्ति भणिदं होदि । सुहुमणिगोदजवमज्झस्स चरिमणिल्लेवणट्ठाणादो आवलियाए असंखे० भागमेत्तणिल्लेवणट्ठाणाणि उवरि गंतूण बादरणिगोदअपज्जत्तस्स चरिमणिल्लेवणट्ठाणं होदि । सुहुमणिगोदअपज्जत्तजवमज्झादो आवलि० असंखे० भागमेत्तणिल्लेवणट्ठाणाणि उवरि गंतूण बादरणिगोदअपज्जत्तजवमज्झं होदि । एवं^२ सुत्तेण

भागप्रमाण निर्लेपनस्थान होते हैं ॥ ६५३ ॥

शंका-— तदो यह निर्देश किसलिए किया है ?

समाधान-— उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें ही चार अपर्याप्तियोंको युगपत् प्रारम्भ करता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए तदो यह निर्देश किया है ।

उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें ही चार अपर्याप्तियोंको युगपत् प्रारम्भ करके ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तियोंके उक्त विधिसे क्रमसे समाप्त करके उनके निर्लेपनस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण और उन स्थानोंमें स्थित जीव यवमध्यके आकारसे होते हैं इस बातका इस सूत्र द्वारा ज्ञान कराया गया है । शेष जिस प्रकार सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तियोंके निर्लेपनस्थानोंका कथन किया है उस प्रकार यहां भी करना चाहिए । इतनी विशेषता है कि सूक्ष्म निगोद यवमध्यके प्रथम निर्लेपनस्थानसे नीचे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थान उतरकर बादर निगोद अपर्याप्तियोंका प्रथम निर्लेपनस्थान होता है । सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तिके निर्लेपनस्थान यवमध्यसे बादर निगोद अपर्याप्तिकका निर्लेपनस्थान यवमध्य पहले ही आरंभ होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तिके अन्तिम निर्लेपनस्थानसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपन स्थान ऊपर जाकर बादर निगोद अपर्याप्तिकका अन्तिम निर्लेपनस्थान होता है । सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तिके यवमध्यसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थान ऊपर जाकर बादर निगोद अपर्याप्तियोंका यवमध्य होता है ।

❖ ता० प्रती 'आढवति' इति पाठः ।

❖ ता० का० प्रत्यो 'चरिमणिल्लेवणट्ठाणं होदि । सुहुमणिगोदअपज्जत्तजवमज्झादो एवं' इति पाठः ।

विणा कुदो णव्वदे? अविरुद्धाइरियवयणादो । तदो सुहुमणिगोदजीवादो तम्मज्झादो च उवरि जवमज्झं गंतूण बादरणिगोदजीवअपज्जत्ताणं णिलेवणट्टाणाणि आवलि० असंखे० भागमेत्ताणि होति त्ति सुत्तट्टत्तादो वा एसो विसेसोवगम्मदे । हेट्ठिमभागस्स आवलियाए असंखे० भागमेत्तमेदेणेव देसामासियसुत्तेणावगंतव्वं ।

**तदो अंतोमूहत्तं गंतूण सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयाणमाउअ-
बंधजवमज्झं ॥ ६५४ ॥**

तदो जवमज्झं गंतूणे त्ति अभणिय तदो अंतोमूहत्तं गंतूण आउअबंधजवमज्झ-
मिदि किमट्ठं भणिदं ? जहा आहारादिपज्जत्तीणं उप्पण्णपढमसमए चेव पारंभो
होदि तहा आउअबंधस्स पारंभो ण होदि किंतु उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि सगजहण्ण-
जीवियस्स वेतिभागे गंतूण तिभागावसेसे आउअबंधो होदि त्ति जाणावणट्ठं भणिदं ।
एत्थ जवमज्झसरूपपरूवणा कीरदे । तं जहा- तदियतिभागपढमसमए आउअबंधया
जीवा जदि वि अणंता तो वि उवरिमजीवे पेक्खिदूण थोवा । विवियसमए आउअ-
बंधया जीवा विसेसाहिया । एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण आउअ बंधंति
जवमज्झे त्ति । तदो अणंतरउवरिमसमए विसेसहीणा विसेसहीणा जाव सुहुमणिगोद-

शंका-- सूत्रके बिना यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- अविरुद्ध आचार्यवचनसे जाना जाता है ।

अथवा सूक्ष्म निगोदके यवसे और उसके मध्यसे ऊपर यवमध्य जाकर बादर निगोद
अपर्याप्त जीव के निर्लेपनस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं इस प्रकार यह विशेष
सूत्रके अर्थका परामर्श करनेसे जाना जाता है । अद्यस्तन भागका जो आवलिके असंख्यातवें
भागप्रमाण है वह इसी देशामर्षक सूत्रसे जानना चाहिए ।

**उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंका आयुबन्ध
यवमध्य होता है ॥ ६५४ ॥**

शंका-- उसके बाद यवमध्य जाकर ऐसा न कहकर उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर
ऐसा किसलिए कहा है ?

समाधान-- जिस प्रकार आहार आदि पर्याप्तियोंका उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें ही
प्रारम्भ होता है उस प्रकार आयुबन्धका प्रारम्भ नहीं होता किन्तु उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे
लेकर अपने जघन्य जीवित रहनेके दो त्रिभाग जाकर एक त्रिभाग शेष रहने पर आयुबन्ध
होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए कहा है ।

यहां पर यवमध्यके स्वरूपका कथन करते हैं । यथा- तृतीय त्रिभागके प्रथम समयमें
आयुका बन्ध करनेवाले जीव यद्यपि अनन्त हैं तो भी आगेके जीवोंको देखते हुए थोड़े हैं ।
दूसरे समयमें आयुका बन्ध करनेवाले जीव विशेष अधिक हैं । इस प्रकार यवमध्यके प्राप्त होने
तक विशेष अधिक विशेष अधिक जीव आयुका बन्ध करते हैं । उसके बाद अनन्तर उपरिम
समयमें विशेष हीन विशेष हीन जीव आयुका बन्ध करते हैं । इस प्रकार यह क्रम सूक्ष्म निगोद

अपज्जत्ताणं असंखेपद्धाए पढमसमओ त्ति । एत्थ जवमज्जस्स हेट्ठा आवलियाए असंखेज्जविभागो उवरि अंतोमुहुत्तं एगगुणहाणिअट्ठाणं णाणागुणहाणिसलागाओ च आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्ताओ त्ति के वि आइरिया भणंति । के वि पुण एत्थ एगं पि दुगुणवट्ठिपमाणं णत्थि त्ति भणंति ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदजीवअपज्जत्तयाणमाउअ-
बंधजवमज्जं ॥ ६५५ ॥

एत्थ जथा सुहुमणिगोदअपज्जत्ताणमाउअबंधजवमज्जस्स परूवणा कदा तहा कायव्वा । णवरि सुहुमणिगोदअपज्जत्तजवमज्जस्स जहण्णट्ठाणादो हेट्ठा आवलि० असंखे०भागमेत्तट्ठाणाणि ओसरिदूण बादरणिगोदअपज्जत्ताणं पढमं आउअबंधट्ठाणं होदि । सुहुमणिगोदअपज्जत्तजवमज्जस्स चरिमट्ठाणादो उवरि आवलियाए असंखे०-
भागट्ठाणाणि गंतूण बादरणिगोदअपज्जत्ताणं जवमज्जस्स चरिमट्ठाणं होदि । एवं जवमज्जदेसस्स वि वत्तव्वं ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयाणं मरण-
जवमज्जं ॥ ६५६ ॥

तदो अंतोमुहुत्तमिदि वृत्ते उत्पण्णपढमसमयप्पहुडि जाव खुदाभवग्गहणचरिम-

अपर्याप्तिकोंके आसंक्षेपाद्धाके प्रथम समयके प्राप्त होने तक चालू रहता है । यहां पर एकगुण-
हानिका अध्वान यवमध्यके नीचे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है और ऊपर अन्तर्मुहूर्त-
प्रमाण है । तथा नानागुणहानिशलाकार्ये आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ऐसा कितने ही
आचार्य कहते हैं । परन्तु कितने ही आचार्य यहां पर एक भी द्विगुणवृद्धिका प्रमाण नहीं है
ऐसा कहते हैं ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंका आयुबन्ध
यवमध्य होता है । ६५५ ।

यहां पर जिस प्रकार सूक्ष्मनिगोद अपर्याप्त जीवोंके आयुबन्धयवमध्यका कथन किया
है उस प्रकार करना चाहिए । इतनी विशेषता है कि सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तके यवमध्यके जघन्य
स्थानसे नीचे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान सरककर बादर निगोद अपर्याप्तकोंका
प्रथम आयुबन्धस्थान होता है । तथा सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके यवमध्यके अन्तिम स्थानसे
ऊपर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर बादर निगोद अपर्याप्तकोंके यवमध्यका
अन्तिम स्थान होता है । इसी प्रकार यवमध्यदेशका भी कथन करना चाहिए ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंका मरणयवमध्य
होता है । ६५६ ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त ऐसा कहने पर उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर क्षुल्लकभव-

समओ त्ति ताव एत्तियमद्धाणं गंतूण मरणजवमज्झस्स पारंभो होदि त्ति घेत्थं ।
 एत्थ जवमज्झसरूवणरूवणा कीरदे । तं जहा-खुद्दाभवग्गहणचरिमसमए मरंता जीवा
 अणंता वि होदूण उवरिमेहिंतो थोवा । तदणंतरउवरिमसमए मरंता जीव विसेसा-
 हिया । एवं विसेसाहिया विसेसाहिया मरंति जाव जवमज्झे त्ति । तेण परं विसेसहीणा
 होदूण मरंति जाव णिसेयखुद्दाभवग्गहणचरिमसमओ त्ति । एत्थ मरणजवमज्झस्स
 हेट्ठिमउवरिमअद्धाणं सव्वं णिसेयखुद्दाभवग्गहणस्स संखेज्जा भागा । किंतु हेट्ठा आवलि०
 असंखे० भागो उवरि अंतोमुहुत्तं । एत्थ वि गुणहाणिअद्धाण-णाणागुणहाणिसलागासु
 आइरियाणं पुव्वं व विप्पडिवती परूवेयव्वा । एवेसि तिण्ण जवमज्झाणमब्भंतरे
 एगा वि दुगुणवड्ढी णत्थि एसो अत्थो जूत्तिमंतो । कुदो? सुत्तम्मि णाणागुणहाणि-
 सलागाणमेगगुणहाणिअद्धाणस्स च पमाणपरूवणाभावादो । ण च संतमत्थं सुत्तं
 वक्खाणाणि वा ण परूवेति, विरोहादो ।

**तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदजीवअपज्जत्तयाणं मरण --
 जवमज्झं । ६५७ ।**

जहा सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयाणं मरणजवमज्झस्स परूवणा कदा तहा

ग्रहणके अन्तिम समय तक इतना स्थान जाकर मरणयवमध्य का प्रारम्भ होता है ऐसा ग्रहण
 करना चाहिए । यहाँ पर यवमध्यके स्वरूपका कथन करते हैं । यथा— क्षुल्लकभवग्रहणके
 अन्तिम समयमें मरनेवाले जीव अनन्त होकर भी आगंके जीवोंसे स्तोक होते हैं । उससे अन-
 न्तर उपरिम समयमें मरनेवाले जीव विशेष अधिक होते हैं । इस प्रकार यवमध्यके प्राप्त होने
 तक मरनेवाले जीव प्रति समयमें विशेष अधिक विशेष अधिक होते हैं । उसके बाद निषेक
 क्षुल्लकभवग्रहणके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक प्रत्येक समयमें विशेष हीन विशेष हीन जीव
 मरते हैं । यहाँ पर मरण यवमध्यका अधस्तन और उपरिम सब अध्वान निषेक क्षुल्लक भव-
 ग्रहणका संख्यात बहुभागप्रमाण होता है । किन्तु अधस्तन अध्वान आवलिके असंख्यातवें भाग-
 प्रमाण है और उपरिम अध्वान अन्तर्मुहुत्तप्रमाण है । यहाँ पर गुणहानिअध्वान और नाना-
 गुणहानिशलाकाओंके विषयमें आचार्योंमें विवाद है सो इसका कथन पहलेके समान करना
 चाहिए । इन तीनों ही यवमध्योंके बीचमें एक भी द्विगुणवृद्धि नहीं है यह अर्थ युक्तिको लिए
 हुए है, क्योंकि, सूत्रमें नानागुणहानिशलाकाओंके और एक गुणहानिअध्वानके प्रमाणका कथन
 नहीं किया है । सूत्र व व्याख्यान सद्रूप अर्थका व्याख्यान नहीं करते हैं ऐसा नहीं है, क्योंकि,
 ऐसा माननेमें विरोध आता है ।

**उसके बाद अन्तर्मुहुत्त जाकर बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंका मरणयवमध्य
 होता है ॥ ६५७ ॥**

जिस प्रकार सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंके मरणयवमध्यका कथन किया है उस प्रकार

❀ ता० प्रती ' परूवेति त्ति, ' विरोहादो ' इति पाठः ।

बादरनिगोदजीवअपज्जत्ताणं* पि मरणजवमज्झस्स परूवणा कायव्वा । णवरि बादरनिगोदअपज्जत्ताणं मरणजवमज्झे पारंभिय आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तद्वाणे गवे संते पच्छा सुहुमणिगोदअपज्जत्तजवमज्झस्स पारंभो होदि । सुहुमणिगोदअपज्जत्तजवमज्झे समत्ते संते पच्छा उवरि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तद्वाणं गंतूण बादरनिगोदअपज्जत्ताणं मरणजवमज्झं समप्पदि । के वि अंतोमूहुत्तमिदि भणंति । एवं दोण्णं जवाणं मज्झे देसपरूवणा जाणिदूण कायव्वा । जहण्णाउअस्मि संचयं गदसुहुमणिगोदअपज्जत्तएसु कालं कादूण णिट्ठिदेसु जहण्णाउअस्मि संचयं गदबादर-निगोदअपज्जत्ता पच्छा कालं काऊण समप्पंति त्ति भणिदं होदि ।

तदो अंतोमूहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयाणं णिव्वत्ति-
ट्ठाणाणि आवलि० असंखेज्ज० भागमेत्ताणि ॥ ६५८ ॥

तदो अंतोमूहुत्तं गंतूणे त्ति वृत्ते मरणजवमज्झचरिमसमयादो उवरि अंतो-
मूहुत्तं गंतूण णिव्वत्तिट्ठाणाणि होति त्ति ण घेत्ताव्वं । किंतु उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि
अंतोमूहुत्तं गंतूण मरणजवमज्झचरिमसमयप्पहुडि णिव्वत्तिट्ठाणाणि उवरि आवलि०
असंखे० भागमेत्ताणि होति त्ति घेत्ताव्वं । कुदो ? सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्ताआउअस्स
णिसेयट्ठिविद्यप्पाणं णिव्वत्तिट्ठाणत्ताब्भुवगमादो† । तं जहा- सुहुमणिगोदजीव—

बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंके भी मरणयवमध्यका कथन करना चाहिए । इतनी विशेषता है कि बादर निगोद अपर्याप्तकोंके मरणयवमध्यको प्रारम्भ करके आवलिके असंख्यातवें भाग-प्रमाण स्थान जाने पर बादमें सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके यवमध्यका प्रारम्भ होता है । सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके यवमध्यके समाप्त होनेपर बादमें ऊपर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर बादर निगोद अपर्याप्तकोंका मरण यवमध्य समाप्त होता है । यहाँ कितने ही आचार्य अन्तर्मुहूर्त काल कहते हैं । इस प्रकार दोनों यवोंके मध्यमें देशप्ररूपणा जानकर करनी चाहिए । जघन्य आयुके भीतर संचित हुए बादर निगोद अपर्याप्तकोंके मरण समाप्त होनेके बाद जघन्य आयुके भीतर संचित हुए बादर निगोद अपर्याप्त जीव मरकर समाप्त होते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थान होते हैं ॥ ६५८ ॥

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर ऐसा कहने पर मरणयवमध्यके अन्तिम समयसे ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर निर्वृत्तिस्थान होते हैं ऐसा नहीं ग्रहण करना चाहिए । किंतु उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त जाकर मरणयवमध्यके अन्तिम समयसे लेकर निर्वृत्तिस्थान ऊपर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ऐसा यहाँ पर ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि, सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकी आयुके जो निषेकस्थितिविकल्प हैं उन्हें निर्वृत्तिस्थानरूपसे स्वीकार किया है ।

* अ० का० प्रत्यो '—निगोदअपज्जत्ताणं' इति पाठः ।

† ता० प्रती 'णिव्वत्तिट्ठाणत्ताब्भुवगमादो' इति पाठः ।

अपज्जत्तयस्स सव्वजहणं निसेयखुद्दाभवग्गहणं तमेगं निव्वत्तिट्ठाणं । पुणो जं सम-
उत्तरं निसेयखुद्दाभवग्गहणं तं विदियणिव्वत्तिट्ठाणं । जं दुसमउत्तरं निसेयखुद्दाभव-
ग्गहणं तं तदियणिव्वत्तिट्ठाणं । एवं तिसमयउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे० भाग-
मेत्तनिव्वत्तिट्ठाणाणि निरंतरमुवरि गंतूण सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्ताणं सव्वुक्कस्स-
आउणिव्वत्तिट्ठाणं होदि त्ति सिद्धं ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदजीवअपज्जत्तयाणं* निव्व-
त्तिट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥ ६५९ ॥

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूणे त्ति वृत्ते एत्थ* वि उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि जाव मर-
णजवमज्झचरिमसमओ त्ति ताव एदमंतोमुहुत्तमेत्तट्ठाणं गंतूण मरणजवमज्झचरिम-
समयप्पहुडि उवरि आवलि० असंखे० भागमेत्ताणि बादरणिगोदजीवअपज्जत्ताणं
निव्वत्तिट्ठाणाणि होति त्ति घेत्तव्वं । णवरि एदाणि बादरणिगोदअपज्जत्तनिव्व-
त्तिट्ठाणाणि सुहुमणिगोदअपज्जत्तउक्कस्सनिव्वत्तिट्ठाणादो उवरि आवलि० असंखे०-
भागमेत्तमट्ठाणं* गंतूण ट्ठिदाणि त्ति घेत्तव्वं । कुदो एवं णव्वदे ? तत्तो पच्छा
एदस्स सुत्तस्स णिद्देसण्णहाणुववत्तीदो ।

यथा— सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवका सबसे जघन्य जो निषेक क्षुल्लकभवग्रहण है वह एक निर्वृ-
त्तिस्थान है । पुनः जो एक समय अधिक क्षुल्लकभवग्रहण है वह दूसरा निर्वृत्तिस्थान है । जो दो
समय अधिक निषेक क्षुल्लक भवग्रहण है वह तिसरा निर्वृत्तिस्थान है । इस प्रकार एक समय
अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थान निरन्तर ऊपर जाकर
सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंका सर्वोत्कृष्ट आयुनिर्वृत्तिस्थान होता है यह सिद्ध हुआ ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंके आवलिके
असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थान होते हैं ॥ ६५९ ॥

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर ऐसा कहने पर यहाँ भी उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर
मरणयवमध्यके अन्तिम समयतक यह अन्तर्मुहूर्तप्रमाण अध्वान जाकर मरणयवमध्यके अन्तिम
समयसे लेकर ऊपर बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्ति-
स्थान होते हैं ऐसा यहाँ पर ग्रहण करना चाहिए । इतनी विशेषता है कि बादर निगोद अप-
र्याप्त जीवोंके ये निर्वृत्तिस्थान सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थानसे ऊपर आव-
लिके असंख्यातवें भागप्रमाण अध्वान जाकर स्थित हैं ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए ।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— क्योंकि, उसके बाद इस सूत्रका निर्देश अन्यथा बन नहीं सकता है, इससे
जाना जाता है ।

❖ ता० का० प्रत्योः ' एवं तिसमउत्तरादिकमेण ' इति पाठः । ❖ ता० प्रती ' बादरणिगोदअपज्ज-
त्तयाणं ' इति पाठः । ❖ ता० प्रती ' गंतूणे त्ति एत्थ ' इति पाठः । ❖ का० प्रती ' मेत्तट्ठाणं ' इति पाठः ।

तदो अंतोमूहुत्तं गंतूण सव्वजीवाणं णिव्वत्तीए अंतरं ॥६६०॥

बादरणिगोदअपज्जत्तउक्कस्सणिव्वत्तिमेत्तमद्वाणं उत्पण्णपढमसमयप्पहुडि उवरि गंतूण सव्वबादरसुहुमणिगोदअपज्जत्ताणं णिव्वत्तीए अंतरं होदि । बादरणिगोदअपज्जत्तउक्कस्साउआदो उवरि सव्वेसिमपज्जत्ताणमुक्कस्साउअं णत्थि त्ति भणिदं होदि । कथमेदं णव्वदे? 'सव्वजीवाणं णिव्वत्तीए अंतरं' इदि वयणादो । जदि पांचि-दियअपज्जत्तादीणमुक्कस्साउअं बादरणिगोदअपज्जत्तउक्कस्साउआदो अहियं होज्जतो 'सव्वजीवाणं णिव्वत्तीए अंतरं' ति वयणं णिरत्थयं जाएज्ज । ण, ण च एवं सुत्तस्स णिरत्थयं, विरोहादो । एदेण णव्वदे जहा सव्वेसिमपज्जत्ताणमुक्कस्साउअं सरिस्सं ति । एदस्स अंतरस्स पमाणमंतोमूहुत्तं कुदो णव्वदे? अविरुद्धाडिरियवयणादो । एत्ति-यमेत्तमंतरिदूण उवरि ओरालियसरीरस्स जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं होदि त्ति घेत्तव्वं । एगो बादरणिगोदअपज्जत्तएसु दीहाउएसु जीवो उववण्णो । अण्णेगो जीवो तम्मि चेव समए सुहुमणिगोदपज्जत्तएसु सव्वजहण्णाउएसु उववण्णो । पुणो एसो सुहुमणिगोदपज्जत्तो जाव सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो ण होदि ताव पुव्वं चेव बादरणिगोदअपज्जत्तो अंतोमूहुत्तमत्थि त्ति कालं कादूण भवांतरं गच्छदि त्ति भणिदं होदि ।

उसके बाद अन्तर्मूहूर्त जाकर सब जीवोंकी निर्वृत्तिका अन्तर होता है । ६६०।

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर बादर निगोद अपर्याप्तकोंके उत्कृष्ट निर्वृत्तिप्रमाण स्थान ऊपर जाकर बादर निगोद अपर्याप्त और सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंकी निर्वृत्तिका अन्तर होता है । बादर निगोद अपर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट आयुसे ऊपर सब अपर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट आयु नहीं है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— सब जीवोंकी निर्वृत्तिका अन्तर होता है इस वचनसे जाना जाता है ।

यदि पञ्चेन्द्रिय अपर्याप्त आदिकी उत्कृष्ट आयु बादर निगोद अपर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट आयुसे अधिक होवे तो सब जीवोंकी निर्वृत्तिका अन्तर होता है यह वचन निरर्थक हो जाता । परन्तु इस प्रकार सूत्र निरर्थक नहीं हो सकता, क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध आता है । इससे जाना जाता है कि सब अपर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट आयु समान होती है ।

शंका— इस अन्तरका प्रमाण अन्तर्मूहूर्त है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— अविरुद्ध आचार्यवचनसे जाना जाता है ।

इतना अन्तर देकर ऊपर औदारिकशरीरका जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है ऐसा यहाँ पर ग्रहण करना चाहिए । दीर्घ आयुवाले बादर निगोद अपर्याप्तकोंमें एक जीव उत्पन्न हुआ । तथा अन्य एक जीव उसी समय सबसे जघन्य आयुवाले सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंमें उत्पन्न हुआ । पुनः यह सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीव जबतक शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त नहीं होता है उसके पूर्व तक ही बादर निगोद अपर्याप्त सम्बन्धी अन्तर्मूहूर्त है इसलिए वह मरकर भवान्तरमें चला जाता है

❖ का० प्रती ' णिरत्थयविरोहादो ' इति पाठः ।

तत्थ इमाणि पढमदाए आवासयाणि भवंति ॥६६१॥

इमाणि उवरि भणिस्समाणाणि पढमदाए पढमं चेव आवासयाणि होंति ।
केसिमेदाणि पढमं चेव आवासयाणि? पज्जत्तजीवाणं । ण च अपज्जत्तानं सरीरादीणं
पज्जत्तिट्ठाणाणि संभवन्ति, अपज्जत्तणामकम्मोदयपरतत्तानं पज्जत्तभावविरोहादो ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण तिण्णं सरीराणं णिव्वत्तिट्ठाणाणि
आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥६६२॥

उत्पण्णपढमसमयप्पहुडि बादरणिगोदअपज्जत्तउक्कस्साउअमेत्तं पुणो अण्णेगमं-
तोमुहुत्तमेत्तं च उवरि गंतूण ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं णिव्वत्तिट्ठाणाणि
आवलि० असंखे०भागमेत्ताणि चेव होंति वड्ढिमाणि ऊणाणि वा ण होंति त्ति भणिदं
होवि । सरीरणिव्वत्तिट्ठाणं णाम किं वुत्तं होवि ? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तिणिव्वत्ती
सरीरणिव्वत्तिट्ठाणं णाम । आहारपज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणाणि किण्ण पखुविदाणि ?
ण, तेसि सरीरपज्जत्तीए अंतव्भावेण पुधपखुवणाकरणादो । तेसि तिण्णं सरीराणं

यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

वहां सर्व प्रथम ये आवश्यक होते हैं ॥ ६६१ ॥

ये ऊपर कहे जानेवाले आवश्यक पढमदाए अर्थात् पहले ही होते हैं ।

शंका— किनके ये सर्व प्रथम आवश्यक होते हैं ?

समाधान— पर्याप्त जीवोंके होते हैं । यह कहना ठीक नहीं है कि अपर्याप्त जीवोंके
शरीर आदिके पर्याप्तिस्थाव सम्भव हैं, क्योंकि, वे अपर्याप्त नामकर्मके उदयके अधीन होते हैं,
इसलिए उनके पर्याप्तभावके होनेमें विरोध है ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर तीन शरीरोंके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण
निर्वृत्तिस्थान होते हैं ॥ ६६२ ॥

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर बादर निगोद अपर्याप्तकोंके उत्कृष्ट आयुप्रमाण
तथा अन्य एक अन्तर्मुहूर्तप्रमाण ऊपर जाकर औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारक-
शरीरके निर्वृत्तिस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं । न वृद्धिको लिए होते हैं
न कम ही होते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका— शरीरनिर्वृत्तिस्थान इसका क्या तात्पर्य है ?

समाधान— शरीरपर्याप्तिकी निर्वृत्तिका नाम शरीरनिर्वृत्तिस्थान है ।

शंका— आहारपर्याप्तिके निर्वृत्तिस्थान क्यों नहीं कहे ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, उनका शरीरपर्याप्तिमें अन्तर्भाव हो जानेके कारण उनका
अलगसे कथन नहीं किया है ।

णिव्वत्तिट्ठाणाणि सरिसाणि ण होंति त्ति जानावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं जहाकमं विसेसा—
हियाणि ॥ ६६३ ॥

जहाकमेण णिदिट्ठपरिवाडीए विसेसाहियाणि । तं जहा— एक्को जीवो तिरिक्खेसु♥ मणुस्सेसु वा उववण्णो । पुणो तम्हि चेव समए अण्णेगो जीवो देवेसु णेरइएसु वा उववण्णो✽ । पुणो तम्हि चेव समए अण्णेगेण पमत्तसंजदेण आहारसरीरमूढावेदुमाढत्तं । तदो एवे तिण्णि जणा एगसमए चेव आहारसरीरवग्गणादो पदेसपिडं घेतूण सगसग— छपज्जत्तीओ पढमसमयप्पहुडि णिव्वत्तंति❁ । एवं णिव्वत्तयमाणाणं♣ जहण्णणिव्वत्ति- कालो वि अत्थि उक्कस्सणिव्वत्तिकालो वि अत्थि । तत्थाहारसरीरस्स जहण्णणिव्वत्ति- अट्ठा⊙ थोवा । वेउव्वियसरीरस्स जहण्णणिव्वत्तिअट्ठा विसेसाहिया । ओरालियस- रीरस्स जहण्णणिव्वत्तिअट्ठा❧ विसेसाहिया । तेण कारणेण आहारसरीरस्स सरीर- पज्जत्तीए जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं पुव्वं चेव होदि । पुणो एदम्हादो समउत्तरं पि आहा- रसरीरणिव्वत्तिट्ठाणमत्थि । एदम्हादो वि विसमयउत्तरं पि आहारणिव्वत्तिट्ठाणं अत्थि ।

उन तीन शरीरोंके निर्वृत्तिस्थान समान नहीं होते इस बातका ज्ञान, करानेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके यथाक्रमसे विशेष अधिक हैं ॥ ६६३ ॥

यथाक्रमसे अर्थात् निर्दिष्ट की गई परिपाटीके अनुसार विशेष अधिक हैं । यथा— एक जीव तिर्यञ्चोंमें या मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ । पुनः उसी समय अन्य एक जीव देवों या नाश- कियोंमें उत्पन्न हुआ । पुनः उसी समय अन्य एक जीवने आहारकशरीरको उत्पन्न करनेके लिए प्रारम्भ किया । अतः ये तीनों जीव एक समयमें ही आहारकशरीरवर्गणामेंसे प्रदेशपिण्डको ग्रहण कर अपनी अपनी छह पर्याप्तियोंकी प्रथम समयसे लेकर रचना करते हैं । इस प्रकार रचना करनेवाले जीवोंका जघन्य निर्वृत्तिकाल भी होता है और उत्कृष्ट निर्वृत्तिकाल भी होता है । उनमेंसे आहारकशरीरका जघन्य निर्वृत्तिकाल स्तोक होता है । उससे वैक्रियिकशरीरका जघन्य निर्वृत्तिकाल विशेष अधिक होता है । उससे औदारिकशरीरका जघन्य निर्वृत्तिकाल विशेष अधिक होता है । इस कारणसे आहारकशरीरकी शरीरपर्याप्तिका जघन्य निर्वृत्तिस्थान पहले ही होता है । पुनः इससे एक समय अधिक भी आहारकशरीरका निर्वृत्तिस्थान होता है । इससे दो समय अधिक भी आहारकशरीरका निर्वृत्तिस्थान होता है । इस प्रकार तीन समय अधिक

♥ ता० प्रती 'जीवा तिरिक्खेसु' इति पाठः ।

✽ ता० प्रती 'णिव्वत्तं ति' इति पाठः ।

♣ ता० प्रती 'जहण्णणिव्वत्ती अट्ठा' इति पाठः ।

❁ ता० प्रती 'णेरइएसु उववण्णो' इति पाठः ।

❧ ता० प्रती 'जहण्णणिव्वत्ती अट्ठा' इति पाठः ।

⊙ ता० प्रती 'जहण्णणिव्वत्ती अट्ठा' इति पाठः ।

एवं तिसमउत्तरादिकमेण आवलियअसंखे० भागमेत्ताआहारसरीरणिव्वत्तिट्ठाणेषु उप्पण्णेषु तत्थ वेउव्वियसरीरपज्जत्तीए सव्वजहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं होदि । तत्तो उवरि वेउव्वियआहारसरीराणं णिव्वत्तिट्ठाणाणि समउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखे०-- मेत्तमट्ठाणं सह गच्छंति । तदो उवरिमसमए ओरालियसरीरपज्जत्तीए सव्वजहण्ण- णिव्वत्तिट्ठाणं होदि । एत्तो प्पहुडि तिण्णं पि सरीराणं णिव्वत्तिट्ठाणेषु समउत्तरादि- कमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेसु सह गदेसु आहारसरीरस्स सरीरपज्जत्ति- णिव्वत्तिट्ठाणमुक्कस्सं थक्कदि । पुणो जम्हि आहारसरीरस्स उक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कं तत्तो उवरि समउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे० भागमेत्तेसु ओरालिय-वेउ- व्वियसरीराणं णिव्वत्तिट्ठाणेषु गदेसु वेउव्वियसरीरस्स उक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि । पुणो जम्हि वेउव्वियसरीरस्स उक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कं । तत्तो प्पहुडि उवरि समउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे० भागमेत्ताणिव्वत्तिट्ठाणेषु गदेसु ओरा- लियसरीरस्स उक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि । एवमेदेण कमेणुप्पण्णतिपरीरसव्वत्ति- ट्ठाणाणि पत्तेयमावलि० असंखे० भागमेत्ताणि होदूण जहाकमेण विसेसाहियाणि होति । एदेण सुत्तेण कहिदत्थस्स णिण्णयट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि ।

**एत्थ अण्णाबहुअं-- सव्वत्थोवाणि ओरालियसरीरस्स णिव्व-
त्तिट्ठाणाणि ॥ ६६४ ॥**

आदिके क्रमसे आहारकशरीरके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थानोंके उत्पन्न होनेपर वहां वैक्रियिकशरीर पर्याप्तिका सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है । उसके आगे वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके निर्वृत्तिस्थान एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान तक साथ जाते हैं । उससे उपरिम समयमें औदारिकशरीरपर्या- प्तिका सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है । उससे आगे तीनों ही शरीरोंके निर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालतक एक साथ जानेपर आहारकशरीरका उत्कृष्ट शरीरपर्याप्तिनिर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है । पुनः जिस स्थानमें आहा- रकशरीरका उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है उससे आगे एक समय अधिक आदिके क्रमसे औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीरके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थानोंके जाने पर वैक्रियिकशरीरका उत्कृष्ट स्थान श्रान्त होता है । पुनः जिस स्थानमें वैक्रियिकशरीरका उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है उससे लेकर आगे एक समय अधिक आदिके क्रमसे आव- लिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थानोंके जाने पर औदारिकशरीरका उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है । इस प्रकार इस क्रमसे उत्पन्न हुए तीनों शरीरोंके सब निर्वृत्तिस्थान प्रत्येक आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होकर भी क्रमसे विशेष अधिक होते हैं । अब इस सूत्रद्वारा कहे गये अर्थका निर्णय करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

इत्ते विषयमें अल्पबहुत्व -- औदारिक शरीरके निर्वृत्तिस्थान सबसे स्तोक

कुदो ? वेउव्वियसरीरणिव्वत्तिट्ठाणाणमंतो पविसिय ओरालियसरीरजहण-
णिव्वत्तिट्ठाणमुप्पत्तीदो ओरालियसरीरस्स उवरिमणिव्वत्तिट्ठाणेहिंतो ओरालिय-
णिव्वत्तिट्ठाणादो हेट्ठिमवेउव्वियसरीरणिव्वत्तिट्ठाणाणं विसेसाहियत्तदंसणादो ।

वेउव्वियसरीरस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । ६६५ ।

केत्तियमेत्तेण ? आवलि० असंखे० भागमेत्तेण । कारणं पुव्वमेव परुविदं ।

आहारसरीरस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥ ६६६ ॥

केत्तियमेत्तेण ? आवलि० असंखे० भागमेत्तेण । आहारसरीरउक्कस्सणिव्वत्ति-
ट्ठाणादो उवरिमवेउव्वियणिव्वत्तिट्ठाणेहि सुद्धहेट्ठिमआहारणिव्वत्तिट्ठाणेहि वा
विसेसाहियाणि ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण तिण्णं सरीराणमिदियणिव्वत्तिट्ठाणाणि
आवलियाए^० असंखेज्जविभागमेत्ताणि ॥ ६६७ ॥

ओरालियसरीरस्स उक्कस्ससरीरणिव्वत्तिट्ठाणादो अंतोमुहुत्तमेत्तअद्धाणं गंतूण तिण्णं
सरीराणमिदियणिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्ताणि होति । सरीर-
पज्जत्तीए पज्जत्तयदो होदूण जाव अंतोमुहुत्तं ण गदो ताव सव्वो जीवो इंदिय—
पज्जत्तीए पज्जत्तयदो ण होदि ति भणिदं होदि ।

होते हैं ॥ ६६४ ॥

क्योंकि, वैक्रियिकशरीरके निर्वृत्तिस्थान भीतर प्रविष्ट होकर औदारिकशरीरका
जघन्य निर्वृत्तिस्थान उत्पन्न होता है । तथा औदारिकशरीरके उपरिम निर्वृत्तिस्थानोंसे औदारिक-
शरीरके निर्वृत्तिस्थानोंकी अपेक्षा अधस्तन वैक्रियिकशरीरके निर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक
देखे जाते हैं ।

वैक्रियिकशरीरके निर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक हैं । ६६५ ।

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक हैं । कारणका कथन
पहले ही किया है ।

आहारकशरीरके निर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक हैं । ६६६ ।

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक हैं । आहारकशरीरके
उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थानकी अपेक्षा तथा उपरिम वैक्रियिकशरीरके निर्वृत्तिस्थानोंकी अपेक्षा अथवा
केवल अधस्तन आहारकशरीरके निर्वृत्तिस्थानोंकी अपेक्षा विशेष अधिक हैं ।

उसके बाद अन्तर्मूहूर्त जाकर तीन शरीरोंके इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान आवलिके
असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं । ६६७ ।

औदारिकशरीरके उत्कृष्ट शरीरनिर्वृत्तिस्थानसे अन्तर्मूहूर्तप्रमाण अध्वान जाकर तीन
शरीरोंके इन्द्रियोंके निर्वृत्तिस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं । शरीरपर्याप्तिसे
पर्याप्त होकर जबतक अन्तर्मूहूर्त नहीं गया है तबतक सब जीवराशि इन्द्रियपर्याप्तिसे पर्याप्त
नहीं होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

✽ का० प्रती 'ट्ठाणाणमावलि०' इति पाठः ।

**ओरालिय--वेउव्विय--आहारसरीराणं जहाकमं विसेसा-
हियाणि ॥ ६६८ ॥**

तं जहा-ओरालियसरीरउक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणादो सव्वजहणमंतोमुहुत्तमेत्त-
मद्धाणं गंतूण आहारसरीरस्स सव्वजहणमिदियणिव्वत्तिट्ठाणं होदि । तदो समउत्तर-
दुसमउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे० भागमेत्तेसु आहार-सरीरिदियणिव्वत्तिट्ठाणेषु
गदेसु तदो वेउव्वियसरीरस्स सव्वजहणमिदियणिव्वत्तिट्ठाणं होदि । एत्तो प्पहुडि
वेउव्विय-आहारसरीराणमिदियणिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलि० असंखे० भागमेत्ताणि
समउत्तर-दुसमउत्तरादिकमेण उवरि गंतूण तदो ओरालियसरीरस्स सव्वजहणमिदि-
यणिव्वत्तिट्ठाणं होदि । पुणो ओरालिय वेउव्विय-आहारसरीराणं समउत्तर-दुसमउत्त-
रादिकमेण आवलि० असंखे० भागमेत्तेसु इदियणिव्वत्तिट्ठाणेषु उवरि गदेसु आहार-
सरीरस्स सव्वक्कस्समिदियणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि । पुणो तदणंतरउवरिमसमयः प्पहुडि
समउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे० भागमेत्तेसु ओरालियसरीर-वेउव्वियसरीराण-
मिदियणिव्वत्तिट्ठाणेषु गदेसु वेउव्वियसरीरस्स सव्वक्कस्समिदियणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि ।
तदो उवरि समउत्तर-दुसमउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे० भागमेत्तेसु ओरालिय-
सरीरस्स इदियणिव्वत्तिट्ठाणेषु गदेसु सव्वक्कस्समोरालियसरीरस्स इदियणिव्वत्तिट्ठाणं
थक्कदि । तेणेदाणि अण्णोणं पेक्खिदूण जहाकमेण विसेसाहियाणि त्ति सिद्धं । एदस्सेव

ये इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके
क्रमसे विशेष अधिक हैं ॥ ६६८ ॥

यथा- औदारिकशरीरके उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थानसे सबसे जघन्य अन्तर्मुहूर्तमात्र अध्वान
जाकर आहारकशरीरका सबसे जघन्य इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान होता है । उससे एक समय अधिक
और दो समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण आहारकशरीर सम्बन्धी
इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थानोंके जानेपर वैक्रियिकशरीरका सबसे जघन्य इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान होता है ।
उससे आगे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अध्वान होने तक समय अधिक और दो समय
अधिक आदिके क्रमसे ऊपर वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान जाकर
उसके आगे औदारिकशरीरका सबसे जघन्य इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान होता है । पुनः औदारिकशरीर,
वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके एक समय अधिक और दो समय अधिक आदिके क्रमसे
आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थानोंके ऊपर जानेपर आहारकशरीरका सबसे
उत्कृष्ट इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है । पुनः उसके आगे उपरिम समयसे लेकर एक समय
अधिक आदिके क्रमसे औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीरके इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थानोंके आवलिके
असंख्यातवें भागप्रमाण जानेपर वैक्रियिकशरीरका सबसे उत्कृष्ट इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता
है । उसके आगे औदारिकशरीर इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक, दो समय अधिक
आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होने पर औदारिकशरीरका सबसे उत्कृष्ट
इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है । इसलिए इन्हें परस्पर देखते हुए ये यथाक्रमसे विशेष अधिक

सुत्तस्स णिण्णयट्ठमुत्तरमुत्तं भणवि —

एत्थ अप्पाबहुअं— सव्वत्थोवाणि ओरालियसरीरस्स इंदिय-
णिव्वत्तिट्ठाणाणि ॥ ६६९ ॥

कुबो ? साहाबियादो । ण च सहावो परपज्जणियोगारुहो, अव्ववत्थावत्तीदो ।

वेउव्वियसरीरस्स इंदियणिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । ६७० ।

केत्तियमेत्तेण ? आवलि० असंखे० भागमेत्तेण । ओरालियउवरिमइंदियणि-
व्वत्तिट्ठाणेहि ऊणवेउव्वियहेट्ठिमइंदियणिव्वत्तिट्ठाणेहि विसेसाहियाणि । एदमत्थपद-
मुवरि सव्वत्थ वत्तव्वं ।

आहारसरीरस्स इंदियणिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । ६७१ ।

केत्तियमेत्तेण ? आवलि० असंखे० भागमेत्तेण ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण तिण्णं सरीराणं आणापाण-भासामण-
णिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलि० असंखे० भागमेत्ताणि ॥ ६७२ ॥

ओरालियसरीरस्स उक्कस्सइंदियणिव्वत्तिट्ठाणादो उवरि अंतोमुहुत्तमेत्तम-
द्धानं गंतूण ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणमाणावाणणिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलि०

हैं यह सिद्ध हुआ । अब इसी सूत्रका निर्णय करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

यहाँ अल्पबहुत्व-औदारिकशरीरके इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान सबसे थोड़े हैं । ६६९ ।

क्योंकि, ऐसा होना स्वाभाविक है । और स्वभाव दूसरेके प्रश्नके योग्य नहीं होता, क्योंकि, ऐसा होनेपर अव्यवस्थाकी आपत्ति आती है ।

वैक्रियिकशरीरके इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक हैं ॥ ६७० ॥

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक हैं । वैक्रियिकशरीरके अधस्तन इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थानोंमेंसे औदारिकशरीरके उपरिम इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थानोंका कम कर देने पर जितने शेष रहते हैं उतने अधिक होते हैं । यह अर्थपद आगे सर्वत्र कहना चाहिए ।

आहारकशरीरके इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक हैं ॥ ६७१ ॥

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक हैं ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर तीन शरीरोंके आनापान, भाषा और मननिर्वृ-
त्तिस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ॥ ६७२ ॥

औदारिकशरीरके उत्कृष्ट इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थानसे ऊपर अन्तर्मुहूर्त अध्वान जाकर औदा-
रिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके आनापाननिर्वृत्तिस्थान आवलिके असंख्यातवें

असंखे० भागमेत्ताणि होंति । तदो ओरालियसरीरस्स उक्कस्सआणापाणणिव्वत्तिट्ठाणादो[❖] अंतोमुहुत्तमेत्तमद्वाणमुवरि गंतूण ओरालिय वेउव्विय-आहारसरीराणमावलि० असंखे० भागमेत्ताणि भासाणिव्वत्तिट्ठाणाणि होंति । तदो अंतोमुहुत्तमेत्तमद्वाणमुवरि गंतूण ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणमावलि० असंखे० भागमेत्ताणि मणिव्वत्तिट्ठाणाणि होंति त्ति घेत्तव्वं ।

**ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणि जहाकमं विसेसा-
हियाणि । ६७३ ।**

ओरालियसरीरस्स सव्वक्कस्सइंदियणिव्वत्तिट्ठाणादो उवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण आहारसरीरस्स आणापाणपज्जत्तीए सव्वजहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं[❖] होदि । तदो समउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेसु आहारसरीरस्स आणापाणपज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणेषु उवरि गदेसु तदो वेउव्वियसरीरस्स सव्वजहण्णमाणापाणपज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणं होदि । ततो उवरि वेउव्विय-आहारसरीराणं समउत्तर-दुसमउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे० भागमेत्तेसु आणापाणपज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणेषु गदेसु ओरालियसरीरस्स सव्वजहण्णमाणापाणपज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणं होदि । तदो उवरिमोरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं तिण्हं पि समउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखे० भाग-

भागप्रमाण होते हैं । फिर औदारिकशरीरके उत्कृष्ट आनापाननिर्वृत्तिस्थानसे अन्तर्मुहूर्तप्रमाण अध्वान ऊपर जाकर औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण भाषानिर्वृत्तिस्थान होते हैं । फिर अन्तर्मुहूर्त मात्र अध्वान ऊपर जाकर औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण मन-निर्वृत्तिस्थान होते हैं ऐसा यहाँ पर ग्रहण करना चाहिए ।

ये निर्वृत्तिस्थान औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके क्रमसे विशेष अधिक होते हैं ।। ६७३ ।।

औदारिकशरीरके सबसे उत्कृष्ट इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थानसे ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर आहारकशरीरकी आनापानपर्याप्तिका सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है । उससे आहारकशरीरकी आनापानपर्याप्तिके निर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ऊपर जाने पर उसके बाद वैक्रियिकशरीरकी सबसे जघन्य आनापानपर्याप्तिका निर्वृत्तिस्थान होता है । उसके बाद ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके आनापानपर्याप्तिके निर्वृत्तिस्थानोंके जानेपर औदारिकशरीरकी सबसे जघन्य आनापानपर्याप्तिका निर्वृत्तिस्थान होता है । उसके बाद ऊपर औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीर इन तीनोंके ही एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण आनापानपर्याप्तिके निर्वृत्ति-

❖ का० प्रती ' उक्कस्सइंदियणिव्वत्तिट्ठाणादो ' इति पाठः ।

❖ का० प्रती ' सव्वजहण्णं णिव्वत्तिट्ठाणं ' इति पाठः ।

मेत्तेसु आणापाणपज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु तदो आहारसरीरस्स उक्कस्सआणा-
पाणपज्जत्तिणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि । तदो उवरि ओरालिय-वेउव्वियसरीराणं समउ-
त्तरादिकमेण आवलि० असंखे० भागमेत्तेसु आणापाणपज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु
तदो वेउव्वियसरीरस्स आणापाणपज्जत्तीए उक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि । तदो उवरि
समउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेसु ओरालियसरीरस्स आणापाण-
पज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु तदो ओरालियसरीरस्स उक्कस्सआणापाणपज्जत्तीए
णिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि । तेणेदाणि ट्ठाणाणि जहाकमेण विसेसाहियाणि ।

तदो एदेसिमुक्कस्सट्ठाणेहिंतो उवरिमंतोमूहुत्तं गंतूण आहारसरीरस्स भासाप-
ज्जत्तीए जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं होदि । तदो उवरि समउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे०-
भागमेत्तेसु आहारसरीरस्स भासापज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु वेउव्वियसरीरस्स
भासापज्जत्तीए सब्बजहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं होदि । तदो उवरि वेउव्वियआहारसरीराणं
समउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे० भागमेत्तेसु भासाणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु ओरालि-
यसरीरस्स सब्बजहण्णं भासाणिव्वत्तिट्ठाणं होदि । तदो उवरि ओरालिय-वेउव्विय-
आहारसरीराणं भासाणिव्वत्तिट्ठाणेसु आवलि० असंखे० भागमेत्तेसु गदेसु आहार-
सरीरस्स भासापज्जत्तीए उक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि । तदो ओरालिय-वेउव्वि-
यसरीराणं समउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे० भागमेत्तेसु भासापज्जत्तीए

स्थानोंके जानेपर उसके बाद आहारकशरीरकी आनापानपर्याप्तिका उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है । उसके बाद ऊपर औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीरके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण आनापान पर्याप्तिके निर्वृत्तिस्थानोंके जाने पर उसके बाद वैक्रियिकशरीरकी आनापान पर्याप्तिका उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है । उसके बाद ऊपर औदारिकशरीरकी आनापानपर्याप्तिके निर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जाने पर उसके बाद औदारिकशरीरका आनापानपर्याप्तिका उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है । इसलिए ये स्थान क्रमसे विशेष अधिक हैं ।

अनन्तर इनके उत्कृष्ट स्थानोंसे ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर आहारकशरीरकी भाषापर्याप्तिका जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है । इसके बाद ऊपर आहारकशरीरके भाषापर्याप्तिनिर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जाने पर वैक्रियिकशरीरकी भाषापर्याप्तिका सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है । उसके बाद ऊपर वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण भाषानिर्वृ-
त्तिस्थानोंके जाने पर औदारिकशरीरका सबसे जघन्य भाषानिर्वृत्तिस्थान होता है । उसके बाद ऊपर औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके भाषानिर्वृत्तिस्थानोंके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जानेपर आहारकशरीरकी भाषापर्याप्तिका उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है । उसके बाद औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीरकी भाषापर्याप्तिके निर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ऊपर जाने पर वैक्रियिकशरीरकी

णिव्वत्तिट्ठाणेसु उवरि गदेसु वेउव्वियसरीरस्स भासापज्जत्तीए उक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि । तदो उवरि समयउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे० भागमेत्तेसु भासापज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु ओरालियसरीरस्स भासापज्जत्तीए उक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि । तेणेदाणि जहाकमेण विसेसाहियाणि ।

पुणो ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरउक्कस्सभासापज्जत्तिट्ठाणाणमुवरि अंतो-मूहुत्तं गंतूण आहारसरीरस्स मणपज्जत्तीए सब्बजहणं णिव्वत्तिट्ठाणं होदि । तदो उवरि समयउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे० भागमेत्तेसु आहारसरीरस्स मणणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु वेउव्वियसरीरस्स सब्बजहणं मणणिव्वत्तिट्ठाणं होदि । तदो उवरि वेउव्वियआहारसरीराणं समयउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे० भागमेत्तेसु मणणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु ओरालियसरीरस्स सब्बजहणं मणणिव्वत्तिट्ठाणं होदि । तदो उवरि ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं समयउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे० भागमेत्तेसु मणणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु तदो आहारसरीरस्स उक्कस्समणणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि । तदो उवरि ओरालिय-वेउव्वियसरीराणं समयउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे० भागमेत्तेसु मणणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु वेउव्वियसरीरस्स उक्कस्समणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि । तदो उवरि समयउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे० भागमेत्तेसु मणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु ओरालियसरीरस्स उक्कस्सं मणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि । एदाणि वि जहाकमेण

भाषापर्याप्तिका उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है । उसके बाद ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण भाषापर्याप्तिनिर्वृत्तिस्थानोंके जानेपर औदारिकशरीरकी भाषापर्याप्तिका उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है । इसलिए ये क्रमसे विशष अधिक हैं ।

पुनः औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके उत्कृष्ट भाषापर्याप्तिनिर्वृत्ति-स्थानोंके ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर आहारकशरीरकी मनःपर्याप्तिका सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है । इसके बाद ऊपर आहारकशरीरके मनःनिर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जाने पर वैक्रियिकशरीरकी मनःपर्याप्तिका सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है । उसके बाद ऊपर वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीर सम्बन्धी मनःपर्याप्ति निर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जानेपर औदारिकशरीरकी मनःपर्याप्तिका सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है । उसके बाद ऊपर औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीर सम्बन्धी मनःनिर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जाने पर आहारकशरीरका उत्कृष्ट मनःपर्याप्तिनिर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है । उसके बाद ऊपर औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीर सम्बन्धी मनःपर्याप्तिनिर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जाने पर औदारिकशरीरका उत्कृष्ट मनःपर्याप्तिनिर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है । उसके बाद एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण मनःपर्याप्ति-निर्वृत्तिस्थानोंके जाने पर औदारिकशरीरका उत्कृष्ट मनःपर्याप्तिनिर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है । ये

सत्थाणे विसेसाहियाणि ।

एत्थ अत्पाबहुअं— सव्वत्थोवाणि ओरालियसरीरस्स आणा—
पाणभासा—मणनिव्वत्तिट्ठाणाणि ॥ ६७४ ॥

कारणं सुगमं ।

वेउव्वियसरीरस्स आणापाण—भासा—मणनिव्वत्तिट्ठाणाणि
विसेसाहियाणि ॥ ६७५ ॥

ओरालियसरीरस्स आणापाणनिव्वत्तिट्ठाणेहितो वेउव्वियसरीरस्स आणापा-
णनिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । ओरालियसरीरस्स भासानिव्वत्तिट्ठाणेहितो
वेउव्वियसरीरस्स भासानिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । ओरालियसरीरस्स मण-
निव्वत्तिट्ठाणेहितो वेउव्वियसरीरस्स मणनिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । सव्वत्थ
विसेसपमाणमावलि० असंखेज्जदिभागो ।

आहारसरीरस्स आणापाण—भासा—मणनिव्वत्तिट्ठाणाणि
विसेसाहियाणि ॥ ६७६ ॥

वेउव्वियसरीरस्स आणापाणनिव्वत्तिट्ठाणेहितो आहारसरीरस्स आणापाण-
निव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । वेउव्वियसरीरस्स भासानिव्वत्तिट्ठाणेहितो आहार-

भी स्वस्थानमें क्रमसे विशेष अधिक हैं ।

यहाँ अल्पबहुत्व— औदारिकशरीरके आनापान, भाषा और मनोनिर्वृत्तिस्थान
सबसे स्तोक हैं ॥६७४॥

कारण सुगम है ।

वैक्रियिकशरीरके आनापान, भाषा और मनोनिर्वृत्तिस्थान विशेष
अधिक हैं ॥६७५॥

औदारिकशरीरके आनापान निर्वृत्तिस्थानोंसे वैक्रियिकशरीरके आनापाननिर्वृत्तिस्थान
विशेष अधिक हैं । औदारिकशरीरके भाषानिर्वृत्तिस्थानोंसे वैक्रियिकशरीरके भाषानिर्वृत्तिस्थान
विशेष अधिक है । तथा औदारिकशरीरके मननिर्वृत्तिस्थानोंसे वैक्रियिकशरीरके मननिर्वृत्ति-
स्थान विशेष अधिक हैं । सर्वत्र विशेषका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

आहारकशरीरके आनापान, भाषा और मनोनिर्वृत्तिस्थान विशेष
अधिक हैं ॥६७६॥

वैक्रियिकशरीरके आनापाननिर्वृत्तिस्थानोंसे आहारकशरीरके आनापाननिर्वृत्तिस्थान
विशेष अधिक हैं । वैक्रियिकशरीरके भाषानिर्वृत्तिस्थानोंसे आहारकशरीरके भाषानिर्वृत्तिस्थान

सरीरस्स भासाणिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । वेउव्वियसरीरस्स मण्णिव्वत्ति-
ट्ठाणेहिंतो आहारसरीरस्स मण्णिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । सव्वत्थ विसेस-
पमाणमावलियाए असंखेज्जविभागो । सरीरिंदियपज्जत्तीणं पुध परूवणं किमट्ठं
कदं ? एवं सत्थाणअप्पाबहुअ चेव परत्थाणप्पाबहुअं ण होदि त्ति जाणावणट्ठं ।
सव्वेसिमेगवारेण णिहेसे कीरमाणे पुण ओरालियसरीरस्स सरीरिंदिय-आणापाण-
भासा-मण्णिव्वत्तिट्ठाणाणमुवरि वेउव्वियसरीरस्स सरीरिंदिय-आणापाण-भासा-मण-
णिव्वत्तिट्ठाणाणि किण्ण विसेसाहियाणि त्ति आसंका उप्पज्जंज्ज । तण्णिराकरणट्ठ
पुणो णिहेसो कदो । ओरालियसरीरस्स पुण सरीरिंदिय-आणापाण-भासा-मण्णिव्व-
त्तिट्ठाणाणि अण्णोण्णेण सरिसाणि । कुदो एवं णव्वदे ? अवरुद्धाइरियवयणादो ।
एवं सव्वसरीरपज्जत्तीणं पि सत्थाणे सरिसत्तं भाणियव्वं ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण तिण्णं सरीराणं णिल्लेवणट्ठाणाणि
आवलियाए अखेसंज्जविभागमेत्ताणि ॥ ६७७ ॥

तिण्णं सरीराणमुवक्कस्समण्णिव्वत्तिट्ठाणाणमुवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण तिण्णं सरी-
राणं णिल्लेवणट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्ताणि होति । किं णिल्लेवण-

विशेष अधिक हैं । वैक्रियिकशरीरके मनोनिर्वृत्तिस्थानोंसे आहारकशरीरके मनोनिर्वृत्तिस्थान
विशेष अधिक हैं । सर्वत्र विशेषका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

शंका— शरीरपर्याप्ति और इन्द्रियपर्याप्तिकी अलगसे प्ररूपणा किसलिए की है ?

समाधान— यहाँ पर स्वस्थान अल्पबहुत्व ही है, परस्थान अल्पबहुत्व नहीं है इस बातका
ज्ञान करानेके लिए उनकी अलगसे प्ररूपणा की है । सबका एक्कार निर्देश करने पर पुनः
औदारिकशरीरके शरीर, इन्द्रिय, आनापान, भाषा और मनोनिर्वृत्तिस्थानोंके ऊपर वैक्रियिक-
शरीरके शरीर, इन्द्रिय, आनापान, भाषा और मनोनिर्वृत्तिस्थान क्यों विशेष अधिक नहीं हैं
ऐसी आंशका उत्पन्न हो सकती थी अतः उसका निराकरण करनेके लिए फिरसे निर्देश
किया है ।

परन्तु औदारिकशरीरके शरीर इन्द्रिय, आनापान, भाषा और मनोनिर्वृत्तिस्थान
परस्परमें समान हैं ।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— अवरुद्ध आचार्यवचनसे जाना जाता है ।

इसीप्रकार सब शरीरोंकी पर्याप्तियोंकी भी स्वस्थानमें समानता कहलानी चाहिए ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर तीन शरीरोंके निर्लेपनस्थान आवलिके
असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ॥ ६७७ ॥

तीन शरीरोंके उत्कृष्ट मनोनिर्वृत्तिस्थानोंके ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर तीन शरीरोंके निर्ले-
पनस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ।

दृष्टाणाम्? जत्थ अप्पज्जत्तिणिमित्तं पोग्गलाणमागमो थक्कदि तणिल्लेवणदृष्टाणं णाम ।
 छसु पज्जत्तीसु णिप्पण्णासु पुणो जो घेप्पदि पोग्गलपिंडो सो सरीरस्स चेव होदि ण
 पज्जत्तीणं, णिप्पण्णाणं णिप्पत्तिविरोहादो त्ति । एत्थ परिहारो उच्चदे । तं जहा—
 आगदपोग्गलेसु अंतोमूहत्तेण सत्तधादुसरूवेण परिणदेसु सरीरपज्जत्ती णाम । ण च
 तम्हि काले❀ सरीरणिप्पत्ती अत्थि❀ चम्म-रोम-णह कालेज्ज-फुप्फुसादीणं
 णिप्पत्तीए तदो अभावादो । सज्जेसु❀ पोग्गलेसु मिलिदेसु तद्वलेण बज्जत्थगहण-
 सत्तीए समुप्पत्ती❀ इन्द्रियपज्जत्ती णाम । ण च तम्हि काले बज्जिदियाणं❀ णिप्पत्ती
 अत्थि, बज्जिदिएसु अद्धणिप्पण्णेषु चेव सगसगविसयगहणसत्तीए समुप्पत्तीदो । ण च
 अंतोमूहत्तकालेणेव अज्झिमंद-चक्खु❀ गोलियादीणं णिप्पत्ती अत्थि, मोरंडयरसेसु
 तहाणुवलंभादो । एवं सेसपज्जत्तीओ वि सगसगदव्वेसु अद्धणिप्पण्णेषु चेव
 णिप्पज्जत्ति त्ति वत्तव्वं । तासि दव्वपज्जत्तीणमद्धणिप्पण्णाणं णिप्पत्तिणिमित्तं
 पोग्गलपिंडो पज्जत्तयदस्स❀ वि आगच्छदि । एवमागच्छमाणे जत्थ पंचणं पज्ज-
 त्तीणं दव्ववयरणाण❀ मक्कमेण णिप्पत्ती होदि तणिल्लेवणदृष्टाणं णाम । जेण छप्प-
 पज्जत्तिमयं सरीरं तेण णिल्लेविदे संते पच्छा आगच्छमाणपोग्गलवक्खंधो वि
 छणं पज्जत्तीणं चेव आगच्छदि त्ति णिल्लेवण—

शंका - निर्लेपनस्थान किसे कहते हैं ? जहां पर छह पर्याप्तियोंके लिए पुद्गलोंका आना रुक जाता है उसे निर्लेपनस्थान कहते हैं । इसलिए छह पर्याप्तियोंके निष्पन्न होने पर पुनः जो पुद्गलपिण्ड ग्रहण किया जाता है वह शरीरका ही होता है पर्याप्तियोंका नहीं होता, क्योंकि, निष्पन्नोंकी निष्पत्ति माननेमें विरोध आता है ?

समाधान -— यहाँ पर इस शंकाका समाधान करते हैं । यथा- आये हुए पुद्गलोंके अन्तर्मुहूर्त कालद्वारा सात धातुरूपसे परिणत होने पर शरीरपर्याप्ति कहलाती है । उस कालमें शरीरकी निष्पत्ति नहीं है, क्योंकि, उससे चर्म, रोम, नख, कलेजा और फुफ्फुस आदिकी निष्पत्ति नहीं होती । स्वच्छ पुद्गलोंके मिलने पर उनके बलसे बाह्य अर्थके ग्रहण करनेकी शक्तिका उत्पन्न होना इन्द्रियपर्याप्ति कहलाती है । उस कालमें बाह्य इन्द्रियोंकी निष्पत्ति नहीं होती है, क्योंकि, इन्द्रियोंके अर्ध निष्पन्न होने पर ही अपने अपने विषयको ग्रहण करनेकी शक्ति उत्पन्न हो जाती है । और अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा ही अक्षिपुट और चक्षुगोलक आदिकी निष्पत्ति हो नहीं सकती, क्योंकि, मोर जो अण्डे देती है उनसे रसों में उस प्रकारकी उपलब्धि नहीं होती । इसी प्रकार शेष पर्याप्तियां भी अपने अपने द्रव्योंके अर्ध निष्पन्न होने पर ही निष्पन्न हो जाती हैं ऐसा कहना चाहिए । उन अर्धनिष्पन्न द्रव्यपर्याप्तियोंकी निष्पत्तिके लिए पर्याप्त जीवके भी पुद्गलपिण्ड आता है । इस प्रकार पुद्गल पिण्डके आने पर जहां पर पांच पर्याप्तियोंके द्रव्य उपकरणोंकी युगपत् निष्पत्ति होती है उसे निर्लेपनस्थान कहते हैं । यतः शरीर लह पर्याप्तियमय है, अतः निर्लेपित होने पर बादमें आनेवाला पुद्गलस्कन्ध भी छह पर्याप्तियोंके लिये ही आता है, इसलिए वहाँ

❀ ता० प्रती णाम तम्हि काले इति । ❀ ता० प्रती अ (ण) तिथ इति पाठः । ❀ का० प्रती सव्वेसु इति पाठः । ❀ ता० प्रती समुप्पज्जत्ती इति पाठः । ❀ का० प्रती बज्जिदियाणं इति पाठः । ❀ म० प्रतिपाठोऽयम् । ता० प्रती अत्थि चक्खु— का० प्रती अत्थिकुडचक्खु— इति पाठः । ❀ म० प्रतिपाठोऽयम् । प्रत्यो पज्जयदस्स इति पाठः । ❀ का० प्रती दव्वयरणाण इति पाठः ।

ट्टाणाभावो ण वोत्तुं सक्किज्जदे, पुव्वमागदपोगलक्खंधेहि व पच्छा गहिदपोगल-
क्खंधेहि दव्वपज्जत्तीणं संठाणंतरस्स अवयवंतरस्स वा अणुवलंभेण तेसि तत्थ वावा-
राभावादो । तेण कारणेण णिल्लेविदे संते जं पोगलगहणं सरीरट्ठं पुव्विल्लं पज्ज-
त्तिणिमित्तमिदि वुत्ते परमत्थदो पुण सव्वं पोगलगहणं सरीरट्ठं चेव, सरीर-
वदिरित्तपज्जत्तीणमभावादो ।

**ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं जहाकमेण विसेसा --
हियाणि ॥ ६७८ ॥**

ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणमुक्कस्समणिव्वत्तिट्टाणोहितो उवरि अंतो-
मूहुत्तं गंतूण आहारसरीरस्स जहण्णं णिल्लेवणट्टाणं होदि । तदो समउत्तरादिकमेण
आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेसु आहारसरीरणि्लेवणट्टाणेषु उवरि गदेसु वेउ-
व्वियसरीरस्स जहण्णणि्लेवणट्टाणं होदि । तदो वेउव्विय-आहारसरीराणं समउ-
त्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणि्लेवणट्टाणेषु गदेसु ओरालियसरी-
रस्स जहण्णणि्लेवणट्टाणं दिस्सदि । तदो समउत्तरादिकमेण तिण्णं सरीराणं णिल्ले-
वणट्टाणेषु आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेसु गदेसु आहारसरीरस्स उक्कस्सणि्ले-
वणट्टाणं थक्कदि । तदो समउत्तरादिकमेण उवरि ओरालिय-वेउव्वियसरीराणं

निर्लेपनस्थानोंका अभाव कहना शक्य नहीं है, क्योंकि, पहले आए हुए पुद्गलस्कन्धोंके समान
बादमें ग्रहण किये गये पुद्गलस्कन्धोंद्वारा द्रव्यपर्याप्तियोंके संस्थानान्तरकी या अवयवान्तरकी
उपलब्धि नहीं होनेसे उनका उनके निर्माणमें व्यापार नहीं होता । इस कारण निर्लेपित होने
पर जो पुद्गलोंका ग्रहण होता है वह शरीरके लिए होता है या पूर्व पर्याप्तियोंके लिए होता
है ऐसा पूछने पर उसका उत्तर यह है कि परमार्थसे सब पुद्गलोंका ग्रहण शरीरके लिए ही
होता है, क्योंकि, शरीरको छोड़कर पर्याप्तियोंका अभाव है ।

**वे निर्लेपनस्थान औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके
क्रमसे विशेष अधिक हैं ॥ ६७८ ॥**

औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके उत्कृष्ट मनोनिर्वृत्तिस्थानोंके आगे
अन्तर्मुहूर्त जाकर आहारकशरीरका जघन्य निर्लेपनस्थान होता है । उसके बाद आहारकशरीर-
सम्बन्धी निर्लेपनस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण
ऊपर जाने पर वैक्रियिक शरीरका जघन्य निर्लेपनस्थान होता है । उसके बाद वैक्रियिक और
आहारक शरीरसम्बन्धी निर्लेपनस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें
भागप्रमाण जानेपर औदारिकशरीरका जघन्य निर्लेपनस्थान दिखलाई देता है । उसके बाद तीनों
शरीरोंके निर्लेपनस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण
जानेपर आहारकशरीरका उत्कृष्ट निर्लेपनस्थान श्रान्त होता है । उसके बाद औदारिकशरीर

णिल्लेवणट्टाणेसु आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेसु गदेसु वेउव्वियसरीरस्स उक्कस्स-
णिल्लेवणट्टाणं थक्कदि । तदो समउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभाग-
मेत्तेसु णिल्लेवणट्टाणेसु गदेसु ओरालियसरीरस्स उक्कस्सणिल्लेवणट्टाणं थक्कदि ।
तेण जहाकमं विसेसाहियाणि ।

एत्थ अप्पाबहुगं- सव्वत्थोवाणि ओरालियसरीरस्स णिल्ले-
वणट्टाणाणि ॥ ६७९ ॥

कारणं सुगमं ।

वेउव्वियसरीरस्स णिल्लेवणट्टाणाणि विसेसाहियाणि । ६८० ।

केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेण ।

आहारसरीरस्स णिल्लेवणट्टाणाणि विसेसाहियाणि । ६८१ ।

केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेण । एवं गंथमस्सिदूण पढम-
संदिट्ठी परूवेयव्वा । संपहि बादर-सुहुमणिगोदपज्जत्ते अस्सितूण मरणजवमज्झा-
दीणं परूवणट्ठं उत्तरमुत्तं भणदि ।

तत्थ इमाणि पढमदाए आवासयाणि होति ॥ ६८२ ॥

और वैक्रियिकशरीरके निर्लेपनस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें
भागप्रमाण जानेपर वैक्रियिकशरीरका उत्कृष्ट निर्लेपनस्थान श्रान्त होता है । उसके बाद एक
समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थानोंके जाने पर
औदारिकशरीरका उत्कृष्ट निर्लेपनस्थान श्रान्त होता है । इसलिए ये यथाक्रम विशेष अधिक हैं ।

यहांपर अल्पबहुत्व- औदारिकशरीरके निर्लेपनस्थान सबसे स्तोक हैं । ६७९ ।

कारणका कथन सुगम है ।

वैक्रियिकशरीरके निर्लेपनस्थान विशेष अधिक हैं ॥ ६८० ॥

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक हैं ।

आहारकशरीरके निर्लेपनस्थान विशेष अधिक हैं ॥ ६८१ ॥

कितनेमात्र अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक हैं । इस प्रकार ग्रंथका
आश्रय लेकर प्रथम संदृष्टिका कथन करना चाहिए । अब बादर निगोद पर्याप्त और सूक्ष्म
निगोद पर्याप्त जीवोंका आश्रय लेकर मरणयवमध्य आदिका कथन करनेके लिए आगेका
सूत्र कहते हैं--

वहां सर्वप्रथम ये आवश्यक होते हैं ॥ ६८२ ॥

बादर-सुहुमणिगोदपज्जत्ताणं* पढमदाए पढमं चेव एदाणि भग्गमाणावास-
याणि होति, सेसाणि पज्जा होति त्ति भणिदं होवि ।

तदो जवमज्झं गंतूण सुहुमणिगोदजीवपज्जत्तयाणं णिव्वत्ति-
ट्टाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥ ६८३ ॥

बादर-सुहुमणिगोदपज्जत्ताणं सब्वजहण्णाउअं तिणिण भागे कादूण तत्थ पढम-
तिभागस्स संखेज्जदिभागे जाणि आवासयाणि त्ताणि भणिस्सामो । तदो जवमज्झं
गंतूणे त्ति भणिदे उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि पज्जत्तीणं पारंभं कादूण तदो अंतोसुहुत्त-
मुवरि जहा जवमज्झं तहा गंतूण सुहुमणिगोदजीवपज्जत्ताणं णिव्वत्तिट्टाणाणि आव-
लियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि होति । का णिव्वत्ती णाम? चट्ठणं पज्जत्तीणं णिल्ले-
वणं णिव्वत्ती । णिव्वत्ति त्ति भणिदे एत्थ जवमज्झकमो वुच्चदे । तं जहा- चत्तारि
पज्जत्तीओ सब्वलहुएण कालेण णिव्वत्तया जीवा थोवा । तदुवरिमसमए णिव्वत्तया
विसेसाहिया । एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण गच्छंति जाव सुहुमणिगोदणिल्लेव-
णट्टाणजीवजवमज्झं त्ति । तेण परं विसेसहीणा विसेसहीणा होदूण गच्छंति जाव चट्ठणं
पज्जत्तीणमुक्कस्सणिल्लेवणट्टाणं त्ति । जवमज्झस्स हेठ्ठम-उवरिमाणि चट्ठणं पज्जत्तीणं-

बादर निगोद पर्याप्त और सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंके पढमदाए अर्थात् प्रथम ही
ये कहे जानेवाले आवश्यक होते हैं । शेष आवश्यक बादमे होते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

उसके बाद यवमध्य जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंके निर्वृत्तिस्थान
आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ॥ ६८३ ॥

बादर निगोद पर्याप्त और सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंकी सबसे जघन्य आयुके तीन
भाग करके वहाँ प्रथम त्रिभागके असंख्यातवें भागमें जो आवश्यक होते हैं उन्हें कहेंगे । उसके
बाद यवमध्य जाकर ऐसा कहने पर उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर पर्याप्तियोंका प्रारम्भ
करके उसके बाद अन्तर्मुहूर्त ऊपर जिस प्रकार यवमध्य है उस प्रकार जाकर सूक्ष्म निगोद
पर्याप्त जीवोंके निर्वृत्तिस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ।

शंका-- निर्वृत्ति किसे कहते हैं ?

समाधान-- चार पर्याप्तियोंके निर्लेपनको निर्वृत्ति कहते हैं ।

निर्वृत्ति ऐसा कहने पर यहाँ यवमध्यके क्रमका कथन करते हैं । यथा- चार पर्याप्तियोंके
सबसे अल्प कालके द्वारा निर्वृत्तक जीव सबसे थोड़े हैं । उसके उपरिम समय में निर्वृत्तक जीव
विशेष अधिक हैं । इस प्रकार सूक्ष्म निगोद निर्लेपनस्थान जीव यवमध्यके प्राप्त होने तक जीव
विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जाते हैं । उसके बाद चार पर्याप्तियोंके उत्कृष्ट निर्लेपनस्थानके



णिल्लेवणट्टाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । एत्थ एगा वि गुणहाणी
णत्थि । कुदो? सुत्ते गुणहाणिपमाणपरूवणाभावादो ।

तदो जवमज्झं गंतूण बादरणिगोदजीवपज्जत्तयाणं णिव्वत्ति-
ट्टाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥ ६८४ ॥

उत्पण्णपढमसमयप्पहुडि अंतोमृहुत्तमुवरि गंतूण सुहुमणिगोदसव्वजहण्णणिल्ले-
वणट्टाणादो हेट्ठा आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तमोसरिदूण बादरणिगोदपज्जत्तजीवा
चट्ठणं पज्जत्तीणं णिव्वत्तया थोवा । तदुवरिमसमए णिव्वत्तया विसेसाहिया । एवं
विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण गच्छंति जाव आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्त-
णिल्लेवणट्टाणाणि त्ति । ताधे सुहुमणिगोदपज्जत्तसव्वजहण्णणिल्लेवणट्टाणेण बादर-
णिगोदपज्जत्तणिल्लेवणट्टाणं सरिसं होदि । तदुवरिमसमए बादरणिगोदपज्जत्तजीवा
चट्ठणं पज्जत्तीणं णिव्वत्तया विसेसाहिया । एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण
गच्छंति जाव सुहुमणिगोदपज्जत्तजवमज्झं त्ति । तदुवरिमसमए बादरणिगोदपज्जत्ता
चट्ठणं पज्जत्तीणं णिव्वत्तया विसेसाहिया । एवं विसेसाहिय-विसेसाहियकमेण
आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिल्लेवणट्टाणाणि उवरि गंतूण बादरणिगोदपज्जत्ताणं
जवमज्झं होदि । तदुवरि विसेसहीणा विसेसहीणा होदूण गच्छंति जाव सुहुमणिगोद-

प्राप्त होने तक विशेष हीन विशेष हीन होकर जाते हैं । चार पर्याप्तियोंके यवमध्यके अवस्थान
और उपरिम निर्लेपनस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । यहाँ पर एक भी गुणहानि
नहीं है, क्योंकि, सूत्रमें गुणहानिके प्रमाणका कथन नहीं किया है ।

उसके बाद यवमध्य जाकर बादर निगोद पर्याप्त जीवोंके निर्वृत्तिस्थान
आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ॥ ६८४ ॥

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त ऊपर जाकर सूक्ष्म निगोदोंके सबसे अधन्य
निर्वृत्तिस्थानसे नीचे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सरककर चार पर्याप्तियोंके निर्वृत्तक बादर
निगोद पर्याप्त जीव थोड़े हैं । उससे उपरिम समयमें निर्वृत्तक जीव विशेष अधिक हैं । इस प्रकार
आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थान जाने तक निर्वृत्तक जीव विशेष अधिक विशेष
अधिक होकर जाते हैं । तब जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंके सबसे अधन्य निर्लेपनके साथ
बादर निगोद पर्याप्त जीवोंका निर्लेपनस्थान समान होता है । उससे उपरिम समयमें चार
पर्याप्तियोंके निर्वृत्तक बादर निगोद पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं । इस प्रकार सूक्ष्म निगोद पर्याप्त
यवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जाते हैं । उससे उपरिम समयमें
चार पर्याप्तियोंके निर्वृत्तक बादर निगोद पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं । इस प्रकार विशेष अधिक
विशेष अधिकके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थान ऊपर जाकर बादर
निगोद पर्याप्तियोंका यवमध्य होता है । उससे ऊपर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तियोंके उत्कृष्ट निर्लेपन-
स्थान प्राप्त होने तक विशेष हीन विशेष हीन होकर जाते हैं । उससे ऊपर विशेष हीन क्रमसे

पज्जत्तउक्कस्सणिल्लेवणट्ठाणे त्ति । तदुवरि विसेसहीणकमेण आवलियाए असंखेज्ज-
दिभागमेत्तमट्ठाणं गंतूण बादरणिगोदपज्जत्ताणमुक्कस्सणिल्लेवणट्ठाणं होदि । होत
पि पढमतिभागस्स चरिमसमयादो हेट्ठा अंतोमूहुत्तमोसरिदूण भवहि । संपहि बादर-
णिगोदपज्जत्तउक्कस्सणिल्लेवणट्ठाणादो उवरिमेवे पढमतिभागस्स संखेज्जेसु भागेषु
बिदियतिभागे सयले च णत्थि आवासयाणि, तत्थ आउअबंधाभावादो ।

**तवो अंतोमूहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदजीवपज्जत्तयाणमाउअबंध-
जवमज्झं ॥ ६८५ ॥**

उप्पणपढमसमए आउअबंधस्स पारंभो ण होदि, निच्छएण सगजहण्णाउअ-
बेतिभागो गंतूण चेव आउअबंधो होवि त्ति जाणावणट्ठमंतोमूहुत्तगहणं कदं । एत्थ
जवमज्झसरूपवरुवणा कीरवे । तं जहा—उप्पणपढमसमयप्पहुडि पढमबिदियतिभागे
बोलेदूण तदियतिभागपढमसमए आउअबंधया सुहुमणिगोदपज्जत्तजीवा थोवा ।
तदुवरिमसमए आउअबंधया जीवा विसेसाहिया । एवं विसेसाहिया विसेसाहिया
होदूण ताव गच्छंति जाव आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तमट्ठाणं गंतूण सुहुमणिगो-
दपज्जत्ताणमाउअबंधजवमज्झट्ठाणमुप्पणं त्ति । तेण परं विसेसहीणा होदूण गच्छंति जाव
अंतोमूहुत्तमेत्तमट्ठाणमुवरि गंतूण सुहुमणिगोदपज्जत्ताणं चरिमआउअबंधट्ठाणं त्ति ।

आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अध्वान जाकर बादर निगोद पर्याप्तकोंका उत्कृष्ट निर्लेपन-
स्थान होता है । ऐसा होता हुआ भी प्रथम त्रिभागके अन्तिम समयसे पीछे अन्तर्मुहूर्त सरक
कर होता है । अब बादर निगोद पर्याप्तकोंके उत्कृष्ट निर्लेपनस्थानसे प्रथम त्रिभागके उपरिम
संख्यात बहुभागोंमें और सम्पूर्ण द्वितीय त्रिभागमें आवश्यक नहीं हैं, क्योंकि, वहाँ आयुका
बन्ध नहीं होता ।

**उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंका आयुबन्धयवमध्य
होता है ॥ ६८५ ॥**

उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें आयुबन्धका प्रारम्भ नहीं होता है । निश्चयसे अपनी
जघन्य आयुके दो त्रिभाग जाकर ही आयुका बन्ध होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए
'अन्तर्मुहूर्त' पदका ग्रहण किया है । यहाँ पर यवमध्यके स्वरूपका कथन करते हैं । यथा—
उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर प्रथम और द्वितीय त्रिभागको बिताकर तीसरे त्रिभागके
प्रथम समयमें आयुका बन्ध करनेवाले सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीव थोड़े हैं । उससे उपरिम
समयमें आयुका बन्ध करनेवाले जीव विशेष अधिक हैं । इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें
भागप्रमाण अध्वान जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंके आयुबन्धयवमध्यस्थानके उत्पन्न होने तक
विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जाते हैं । उसके बाद अन्तर्मुहूर्त अध्वान ऊपर जाकर सूक्ष्म
निगोद पर्याप्तकोंके अन्तिम आयुबन्धस्थानके प्राप्त होने तक विशेष हीन होकर जाते हैं ।

**तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदजीवपज्जत्तयाणं आउअ-
बंधजवमज्झं ॥ ६८६ ॥**

उत्पण्णपढमसमयप्पहुडिसगजहण्णाउअस्स बेतिभागमेत्तमद्धानं गंतूण तदिय-
तिभागपढमसमए बादरणिगोदपज्जत्तजीवा आउअबंधया थोवा होंता वि सुहुमणिगो-
दपज्जत्ततदियतिभागपढमसमयादो अंतोमुहुत्तं हेट्ठा ओसरिदूण एदमाउअबंधद्धानं
होदि । किं कारणं? जेण बादरणिगोदो घादेण थोवमाउअं द्रुवेदि त्ति । तदुवरिमसमए
बादरणिगोदपज्जत्ता आउअबंधया जीव विसेसाहिया । एवं विसेसाहिया विसेसाहिया
होदूण गच्छंति जाव सुहुमपज्जत्ताउअबंधतदियतिभागपढमसमयो त्ति । तदुवरि
विसेसाहिया जाव सुहुमपज्जत्ताउअबंधजवमज्झे त्ति । तदुवरि विसेसाहिया जाव
बादरपज्जत्ताउअबंधजवमज्झे त्ति । तदुवरि विसेसहीणा जाव सुहुमचरिमआउअबंध-
द्धाने त्ति । तदुवरि विसेसहीणा बादरउक्कस्साउअबंधणिल्लेवणद्धाने त्ति । तदुवरि
अंतोमुहुत्तं गंतूण असंखेपद्धा होदि । असंखेपद्धाए उवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण बादर-
सुहुमणिगोदपज्जत्ताणं घादजणिदं सन्वजहण्णजीवणियद्धानं होदि ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदजीवपज्जत्तयाणं मरण-

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर निगोद पर्याप्त जीवोंका आयुबन्धयवमध्य
होता है ॥ ६८६ ॥

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर सबसे जघन्य आयुके दो तीन भागप्रमाण अध्वान
जाकर तृतीय त्रिभागके प्रथम समयमें आयुका बन्ध करनेवाले बादर निगोद पर्याप्त जीव सबसे
थोड़े हैं । ऐसा होते हुए भी सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंके तृतीय त्रिभागके प्रथम समयसे
अन्तर्मुहूर्त पीछे सरक कर यह आयुबन्धस्थान होता है । कारण क्या है ? क्योंकि, बादर
निगोद जीव घात द्वारा स्तोक आयुको शेष रखता है । उससे उपरिम समयमें आयुका बन्ध
करनेवाले बादर निगोद पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं । इस प्रकार सूक्ष्म निगोद पर्याप्त
जीवोंके आयुबन्धके तीसरे त्रिभागके प्रथम समयके प्राप्त होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक
होकर जाते हैं । उससे ऊपर सूक्ष्म पर्याप्तके आयुबन्ध यवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष अधिक
होते हैं । उससे ऊपर बादर पर्याप्तके आयुबन्ध यवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष अधिक होते
हैं । उससे ऊपर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तके अन्तिम आयुबन्ध स्थानके प्राप्त होने तक विशेष हीन
होकर जाते हैं । उससे ऊपर बादर निगोद पर्याप्तके उत्कृष्ट आयुबन्ध निर्लेपनस्थानके प्राप्त
होने तक विशेष हीन होकर जाते हैं । उससे ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर आसंक्षेपाद्धा होता है ।
आसंक्षेपाद्धासे ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर निगोद पर्याप्तको व सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंका
घातसे उत्पन्न हुआ सबसे जघन्य जीवनीय स्थान होता है ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तक जीवोंका मरण यवमध्य

जवमज्झं ॥ ६८७ ॥

उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तं सव्वजहण्णघादखुद्दाभवग्गहणमेत्तमुवरि गंतूण सव्वजहण्णजीवणियकालचरिमसमए मरंता सुहुमपज्जत्ता जीवा थोवा । तदुवरिमसमए मरंता जीवा विसेसाहिया । एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण मरति जाव सुहुमणिगोदमरणजवमज्झं ति । तदुवरि विसेसहीणा विसेसहीणा जाव सुहुमणिगोदपज्जत्तजीवेण बद्धजहण्णाउअणिव्वत्तिट्ठाणे ति ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदजीवपज्जत्तयाणं मरण-जवमज्झं ॥ ६८८ ॥

उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि घादेदूण दुविदसव्वजहण्णजीवणियकालमेत्तमुवरि गंतूण तस्स चरिमसमए मरंता बादरणिगोदपज्जत्ता जीवा थोवा । तदुवरिमसमए मरंता जीवा विसेसाहिया । एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण मरति जाव सुहुमणिगोदपज्जत्तमरणजवमज्झपढमसमओ ति । तेण परं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण मरति जाव सुहुमपज्जत्तमरणजवमज्झं ति । तेण परं विसेसहीणा विसेसहीणा होदूण मरति जाव बादरपज्जत्तमरणजवमज्झं ति । तेण परं विसेसहीणा विसेसहीणा

होता है ॥ ६८७ ॥

उत्पन्न होनेके पहले समयसे लेकर सब से जघन्य घात क्षुल्लकभवग्रहणका अन्तर्मूर्हत जाकर सबसे जघन्य जीवनीय कालके अन्तिम समयमें मरनेवाले सूक्ष्म पर्याप्त जीव स्तोक है । उससे उपरिम समयमें मरनेवाले जीव विशेष अधिक हैं । इस प्रकार सूक्ष्म निगोद मरण यव-मध्यके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जीव मरते हैं । उससे ऊपर सूक्ष्म निगोदपर्याप्त जीव द्वारा बद्ध जघन्य आयुनिर्वृत्तिस्थानके प्राप्त होने तक विशेष हीन विशेष हीन जीव मरते हैं ।

उसके बाद अन्तर्मूर्हत जाकर बादर निगोद पर्याप्त जीवोंका मरणयवमध्य होता है । ६८८ ।

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर घात करके स्थापित किये गये सबसे जघन्य जीवनीय कालमात्र ऊपर जाकर उसके अन्तिम समयमें मरनेवाले बादर निगोद पर्याप्त जीव थोड़े हैं । उससे उपरिम समयमें मरनेवाले जीव विशेष अधिक हैं । इस प्रकार सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंके मरणयव-मध्यके प्रथम समयके प्राप्त होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जीव मरते हैं । उनमें आगे सूक्ष्म पर्याप्तकोंके मरणयवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक जीव मरते हैं । उसके बाद बादर पर्याप्तकोंके मरणयवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष हीन विशेष हीन

❖ ता० प्रती 'जीवणि (का) य काल-' का० प्रती '-जीवणिकायकाल-' इति पाठः ।

❖ ता० प्रती 'होदूण जाव' इति पाठः । ❖ ता० प्रती 'विसेसाहिया विसेसाहिया' इति पाठः ।

होदूण गच्छन्ति जाव सुहुमणिगोदपज्जत्तमरणजवमज्झचरिमसमओ त्ति । तेण परं विसेसहीणा जाव बादरपज्जत्तमरणजवमज्झचरिमसमओ त्ति ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदपज्जत्तयाणं विल्लेवणट्ठा-
णाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥६८९॥

उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तमवरि गंतूण सुहुमणिगोदजीवपज्जत्ताणं बंधेण जहण्णाउअं होदि । तमेगं गिल्लेवणट्ठाणं । एवम्हादो समउत्तराआउअं बिदि-
यणिल्लेवणट्ठाणं । एवं समउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिल्लेव-
णट्ठाणाणि लब्धन्ति । तत्थेव सुहुमणिगोदपज्जत्ताणमुक्कस्साउअं होदि ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदपज्जत्तयाणं गिल्लेवण-
ट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥६९०॥

उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तमेत्तमट्ठाणमुवरि गंतूण बादरणिगोदपज्ज-
त्ताणं बंधेण जहण्णाउअं होदि । तमेगं गिल्लेवणट्ठाणं । समउत्तरेपबद्धेविदियं गिल्ले-
वणट्ठाणं । एवं विसमउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिल्लेवणट्ठा-
णाणि उवरि गंतूण बादरणिगोदपज्जत्ताणं उक्कस्साउअणिल्लेवणट्ठाणं होदि । तत्थेव
बादरणिगोदपज्जत्ताणमुक्कस्साउअं होदि त्ति घेत्थवं ।

जीव मरते हैं । उसके बाद सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंके मरणयवमध्यके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक विशेष हीन विशेष हीन होकर जीव जाते हैं । उसके बाद बादर निगोद पर्याप्तकोंके मरणयवमध्यके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक विशेष हीन होकर जीव जाते हैं ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंके निर्लेपनस्थान आव-
लिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ॥ ६८९ ॥

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त ऊपर जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंकी बन्धसे जघन्य आयु होती है । वह एक निर्लेपनस्थान है । इससे एक समय अधिक आयु दूसरा निर्लेपनस्थान है । इस प्रकार एक समय अधिक आदिके क्रममें आवलिके असंख्यातवें भागप्र-
माण निर्लेपनस्थान प्राप्त होते हैं । वहीं पर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट आयु होती है ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर निगोद पर्याप्त जीवोंके निर्लेपनस्थान
आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ॥ ६९० ॥

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्तप्रमाण अध्वान ऊपर जाकर बादर निगोद पर्याप्तकोंकी बन्धसे जघन्य आयु होती है । वह एक निर्लेपनस्थान है । एक समय अधिक आयुका बन्ध होने पर दूसरा निर्लेपनस्थान होता है । इस प्रकार दो समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थान ऊपर जाकर बादर निगोद पर्याप्तकोंका उत्कृष्ट आयु निर्लेपनस्थान होता है । तथा वहीं पर बादर निगोद पर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट आयु होती है ऐसा यहां पर ग्रहण करना चाहिए ।

तस्मिं चैव पत्तेयसरीरपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि आव-
लियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥ ६९१ ॥

तस्मिं चैवे त्ति णिद्देशो किमट्ठं कीरदे? बादरणिगोदाणमाधारभूदपत्तेयसरीर
पज्जत्तजीवगहणट्ठं । कुदो ? बादरणिगोदपदिट्ठिदाणमुक्कस्सआउअस्स वि पमा-
णमंतोमुहुत्तमेत्तं चैवे त्ति गुरुवदेसादो । उप्पणसमयप्पहुडि बंधेण सव्वजहण्णाउअ-
मेत्तमद्धानं गंतूण पत्तेयसरीरपज्जत्तयस्स एयमाउअणिव्वत्तिट्ठाणं होदि । एवं समउ-
त्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तआउअणिल्लेवणट्ठाणाणि उवरि गंतूण
बंधेण पत्तेयसरीरपज्जत्तयस्स बादरणिगोदपदिट्ठिदस्स उक्कस्सआउअणिव्वत्तिट्ठाणं
होदि । एदेसि णिल्लेवणट्ठाणाणं थोवबहुत्तपरूवणट्ठसुत्तरसुत्तमागयं ।

एत्थ अप्पाबहुगं-- सव्वत्थोवाणि सुहुमणिगोदजीवपज्जत्तयाण
णिल्लेवणट्ठाणाणि ॥ ६९२ ॥

कुदो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागपमाणत्तादो ।

बादरणिगोदजीवपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि विसेसा--
हियाणि ॥ ६९३ ॥

वहीं पर प्रत्येकशरीर पर्याप्तकोंके निर्लेपनस्थान आवलिके असंख्यातवें
भागप्रमाण होते हैं ॥ ६९१ ॥

शंका-- ' तस्मिं चैव ' ऐसा निर्देश किसलिए करते हैं ?

समाधान-- बादर निगोदोंके आधारभूत प्रत्येक शरीर पर्याप्तकोंके ग्रहण करनेके
लिए उक्त निर्देश किया है, क्योंकि, बादर निगोद प्रतिष्ठितोंकी उत्कृष्ट आयुका प्रमाण भी
अन्तर्मुहूर्त ही है ऐसा गुरुका उपदेश है ।

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर बन्धसे प्राप्त सबसे जघन्य आयुमात्र अध्वान
जाकर प्रत्येकशरीर पर्याप्तका एक आयुनिर्वृत्तिस्थान होता है । इस प्रकार एक समय अधिक
आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण आयुनिर्लेपनस्थान ऊपर जाकर बन्धसे बादर
निगोद प्रतिष्ठित प्रत्येकशरीर पर्याप्तका उत्कृष्ट आयुनिर्वृत्तिस्थान होता है । इन निर्लेपन-
स्थानोंके अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए आगे सूत्र आया है--

यहां पर अल्पबहुत्व- सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंके निर्लेपनस्थान सबसे
थोड़े हैं ॥ ६९२ ॥

क्योंकि, वे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ।

बादर निगोद पर्याप्त जीवोंके निर्लेपनस्थान विशेष अधिक हैं ॥ ६९३ ॥

केतियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिव्वत्तिट्ठाणेहि ।

तम्हि चेव पत्तेयसरीरपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि विसे-
साहियाणि ॥ ६९४ ॥

केतियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिव्वत्तिट्ठाणेहि ।

तत्थ इमाणि पढमदाए आवासयाणि हवन्ति ॥ ६९५ ॥

एवमेइंदियणामावासयाणि भणिऊण संपहि एइंदियाणं पंचिंदियाणं च
आवासयपरुवणट्ठमिदं सुत्तमागयं —

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदजीवपज्जत्तयाणं समिला-
जवमज्झं ॥ ६९६ ॥

अणादियसिद्धांतपदमस्सिदूण आउअबंधजवमज्झस्स समिलाजवमज्झं ति
समणा ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदजीवपज्जत्तयाणं समिला-
जवमज्झं ॥ ६९७ ॥

एत्थ वि पुव्वं व आउअबंधजवमज्झस्स ग्रहणं कायव्वं । एदस्स सुत्तस्स

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थानोंसे अधिक हैं ।

वहीं पर प्रत्येकशरीर पर्याप्तकोंके निर्लेपनस्थान विशेष अधिक है । ६९४ ।

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थानोंसे अधिक हैं ।

वहां सर्वप्रथम ये आवश्यक होते हैं । ६९५ ।

इस प्रकार एकेन्द्रियोंके आवश्यकोंका कथन करके अब एकेन्द्रियों और पञ्चेन्द्रियोंके
आवश्यकोंका कथन करनेके लिए यह सूत्र आया है—

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंका शमिलायवमध्य
होता है । ६९६ ।

अनादि सिद्धान्तपदका आश्रय लेकर आयुबन्धयवमध्यकी शमिलायवमध्य यह संज्ञा है ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर निगोद पर्याप्त जीवोंका शमिलायवमध्य
होता है । ६९७ ।

यहाँ पर भी पहले के समान आयुबन्धयवमध्यका ग्रहण करना चाहिए ।

शंका— इस सूत्रका बादमें आरम्भ किसलिए किया है ?

पच्छारंभो किमट्ठं कदो? पुब्बिल्लजवमज्झादो उवरि गंतूण एदं जवमज्झं समत्तं
त्ति जाणावणट्ठं कदो ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण एदं वियस्स जहणिया पज्जत्त-
णिव्वत्ती ॥ ६९८ ॥

एवं भणिदे बंधेण सुहुमणिगोदपज्जत्तयस्स जहण्णाउअं घेतव्वं, अण्णस्स
असंभावादो ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सम्मुच्छिमस्स जहणिया पज्जत्त-
णिव्वत्ती ॥ ६९९ ॥

एवं भणिदे उत्पण्णपढमसमयप्पहुडिमंतोमुहुत्तमेत्तमद्धानमुवरि गंतूण पंचि-
दियसम्मुच्छिमस्स बंधेण जहण्णाउअं घेतव्वं ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण गवभोवककतियस्स जहणिया पज्ज-
त्तणिव्वत्ती ॥ ७०० ॥

उत्पण्णपढमसमयप्पहुडिमंतोमुहुत्तमेत्तमद्धानमुवरि गंतूण बंधेण गवभोवककतियस्स
पज्जत्तयस्स * जहणिया पज्जत्तणिव्वत्ती होदि । सम्मुच्छिमजहणपज्जत्तणिव्वत्तीदो

समाधान-- पहलेके यवमध्यके ऊपर जाकर यह यवमध्य समाप्त होता है इस
बातका ज्ञान करानेके लिए बादमें इस सूत्रका आरम्भ किया है ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर एकेन्द्रियकी जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्ति होती है । ६९८।

ऐसा कहने पर बन्धसे प्राप्त सूक्ष्म निगोद पर्याप्त की जघन्य आयु लेनी चाहिए
क्योंकि, अन्यकी आयु लेना असम्भव है ।

फिर अन्तर्मुहूर्त जाकर सम्मुच्छिमकी जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्ति होती है । ६९९ ।

ऐसा कहने पर उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त प्रमाण अध्वान ऊपर
जाकर पञ्चेन्द्रियसम्मुच्छिमकी बन्धसे प्राप्त जघन्य आयु लेनी चाहिए ।

फिर अन्तर्मुहूर्त जाकर गर्भोपक्रान्त जीवकी जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्ति
होती है । ७०० ।

उत्पन्न होनेके पहले समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्तमात्र अध्वान ऊपर जाकर बन्धसे गर्भोप-
क्रान्त पर्याप्त जीवकी जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्ति होती है । सम्मुच्छिमकी जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्तिसे

* का० प्रती सूत्रानन्तरं ' एवं भणिदे उत्पण्णपढमसमयप्पहुडिमंतोमुहुत्तमेत्तमद्धानमुवरि गंतूण पंचि-
दियसम्मुच्छिमस्स बंधेण गवभोवककतियस्स जत्तयस्स ' इति पाठः ।

ऐसा उवरि होदि त्ति भणिदं होदि ।

तदो दसवाससहस्साणि गंतूण ओववादियस्स जहणिया
पज्जत्तणिव्वत्ती ॥ ७०१ ॥

तदो इदि वुत्ते उप्पण्णपढमसमयादो त्ति घेत्थवं, अण्णहा दसवाससहस्सा—
णुववत्तीदो । ओववादिया त्ति वुत्ते देव-णेरइयाणं गहणं कायव्वं ।

तदो बावीसवाससहस्साणि गंतूण एइंदियस्स उक्कस्सिया
पज्जत्तणिव्वत्ती ॥ ७०२ ॥

एइंदियस्स बंधेण जहणिया पज्जत्तणिव्वत्ती अंतोमुहुत्तमेत्ता होदि । पुणो
एदिस्से उवरिमसमउत्तरादिकमेण सुहुभ-बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्ताणभावलियाए
असंखेज्जदिभागमेत्ताणि णिल्लेवणट्ठाणाणि सम्मुच्छिम-गढभोवकंतिय-ओववादिय-
सव्वजहणपज्जत्तणिव्वत्तीओ च बोलेऊण बादरपुढविकाइयपज्जत्तयस्स बावीसवास-
सहस्समेत्ता बंधेण उक्कस्सिया णिव्वत्ती होदि ।

तदो पुव्वकोटिं गंतूण समुच्छिमस्स उक्कस्सिया पज्जत्त --
णिव्वत्ती ॥ ७०३ ॥

यह आगे चलकर होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

फिर दस हजार वर्ष जाकर औपपादिक जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति
होती है । ७०१ ।

‘ तदो ’ ऐसा कहनेपर उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर यह अर्थ लेना चाहिए,
अन्यथा दस हजार वर्ष नहीं बन सकते हैं । ‘ ओववादिया ’ ऐसा कहनेपर देवों और नार-
कियोंका ग्रहण करना चाहिए ।

फिर बाईस हजार वर्ष जाकर एकेन्द्रिय जीवकी उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति
होती है । ७०२ ।

एकेन्द्रियकी बन्धकी अपेक्षा जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्ति अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होती है । पुनः
इसके ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे सूक्ष्म निगोद और बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त
जीवोंके आदिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थानोंको तथा सम्मूर्च्छिम, गर्भोपक्रान्त और
औपपादिकोंके सबसे जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तियोंको बिताकर बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तिककी
बन्धकी अपेक्षा बाईस हजार वर्षप्रमाण उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है ।

फिर पूर्वकोटि जाकर सम्मूर्च्छिम जीवकी उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है । ७०३ ।

सम्मूच्छिमर्षाचिदियपज्जत्तयस्स बंधेण जहणिया पज्जत्तणिव्वत्ती अंतोमूहुत्त-
मेत्ता होदि । पुणे तिससे उवरि समउत्तर-दुममउत्तरादिकमेण बावीसवस्ससहस्साणि
बोलेदूण सम्मूच्छिमर्षाचिदियपज्जत्तयस्स पुव्वकोडिमेत्ता बंधेण उक्कस्सिया णिव्वत्ती
होदि ।

तदो तिण्णि पलिदोवमाणि गंतूण गढभोवक्कंतियस्स उक्कस्सिया
पज्जत्तणिव्वत्ती ॥ ७०४ ॥

गढभोवक्कंतियस्स जहणिया पज्जत्तणिव्वत्ती अंतोमूहुत्तिया । पुणे तिससे
उवरि समउत्तरादिकमेण पुव्वकोडि बोलेदूण तिण्णिपलिदोवममेत्ता गढभोवक्कंतियस्स
बंधेण उक्कस्सिया पज्जत्तणिव्वत्ती होदि ।

तदो तेत्तीसं सागरोवमाणि गंतूण ओववादियस्स उक्कस्सिया
पज्जत्तणिव्वत्ती ॥ ७०५ ॥

ओववादियस्स जहणिया पज्जत्तणिव्वत्ती दसवाससहस्समेत्ता । तिससे उवरि
समउत्तरादिकमेण तिण्णि पलिदोवमाणि बोलेदूण ओवादिमाणं तेत्तीससागरोवममेत्ती
उक्कस्सिया पज्जत्तणिव्वत्ती होदि । एसा सव्वा वि परूवणा ण परूवेयव्वा,

सम्मूच्छिम पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकी बन्धकी अपेक्षा जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति अन्तर्मुहूर्त-
प्रमाण होती है । पुनः इसके ऊपर एक समय अधिक, दो समय अधिक आदिके क्रमसे बाईस
हजार वर्ष बिताकर आगे सम्मूच्छिम पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकी बन्धकी अपेक्षा पूर्वकोटिप्रमाण
उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है ।

फिर तीन पत्य जाकर गर्भोपक्रान्त जीवकी उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति,
होती है । ७०४ ।

गर्भोपक्रान्त जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होती है । पुनः इसके
ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे पूर्वकोटिप्रमाण बिताकर गर्भोपक्रान्त जीवकी बन्धकी
अपेक्षा तीन पत्यप्रमाण उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है ।

फिर तेत्तीस सागर जाकर औपपादिक जीवकी उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति
होती है । ७०५ ॥

औपपादिक जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति दस हजार वर्षप्रमाण है । उसके ऊपर
एक समय अधिक आदिके क्रमसे तीन पत्य बिता कर औपपादिक जीवकी तेत्तीस सागरप्रमाण
उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है ।

शंका— यह सब प्ररूपणा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि, सोलहपदिक महादण्डकमें जघन्य

सोलसवदिए महादंडए जहणट्टिदि-उक्कस्सट्टिदि-विसेसेसु परुविज्जमाणेसु परु-विदत्तादो । ण एस दोसो, बादर-सुहुमणिगोदाणं जहण्णाउअप्पहुडि* जाव तेसि उक्कस्साउए त्ति ताव तत्थेव मरणजवमज्झ-आउअबंधजवमज्झ-णिव्वत्तिट्ठाणजव-मज्झाणि होति । अण्णस्स ण होति त्ति परुविदे तेसिमण्णेसिमाउअवियप्पाणं संभा-लणट्टिमिदरेसिमाउआणं पमाणपरुवणाकरणादो । एवं ' जत्थेय मरइ जीवो ' एदस्स गाहाए अत्थपरुवणा समत्ता ।

पुब्बं तेवीसवग्गणाओ परुविदाओ । तत्थ इमाओ ग्रहणपाओग्गाओ इमाओ च अग्रहणपाओग्गाओ त्ति परुवणा कदा । संपहि इमाओ पंचण्हं सरीराणं गेज्झाओ इमाओ च अगेज्झाओ त्ति जानावेंतो भूदबलिभट्टारओ उत्तरसुत्तकलावं परुवेदि--

तस्सेव बंधणिज्जस्स तत्थ इमाणि चत्तारि अणुयोगद्वाराणि णायव्वाणि भवंति-वग्गणपरुवणा वग्गणणिरुवणा पदेसट्ठदा अप्पा-बहुए त्ति ॥ ७०६ ॥

एवाणि चत्तारि चेव एत्थ अणुयोगद्वाराणि होति, अण्णेसिमसंभवादो ।

स्थिति और उत्कृष्ट स्थितिविशेषका कथन करने पर कथन हो ही जाता है ?

समाधान-- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, बादर निगोद और सूक्ष्म निगोद जीवोंकी जघन्य आयुसे लेकर उनकी उत्कृष्ट आयुके प्राप्त होने तक वहीं पर मरणयवमध्य, आयुबन्ध-यवमध्य और निर्वृत्तिस्थानयवमध्य होते हैं अन्यके नहीं होते है ऐसा कथन करने पर उन अन्य जीवोंके आयुविकल्पों की सम्हाल करनेके लिए इतर जीवोंकी आयुके प्रमाणका कथन किया है ।

इस प्रकार ' जत्थेय मरइ जीवो ' इस गाथाकी अर्थप्ररूपणा समाप्त हुई ।

पहले तेईस प्रकारकी वर्गणाओंका कथन कर आये हैं । उनमें ये ग्रहणप्रायोग्य हैं और ये अग्रहणप्रायोग्य हैं यह प्ररूपणा की ही है । अब ये पाँच शरीरोंके ग्रहण योग्य हैं और ये ग्रहण योग्य नहीं हैं ऐसा जानते हुए भूतबलि भट्टाकर उत्तरसूत्रकलापका कथन करते हैं--

उसी बन्धनीयके वहाँ ये चार अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं--वर्गणाप्ररूपणा, वर्गणानिरूपणा, प्रदेशार्थता और अल्पबहुत्व ॥७०६॥

यहां पर ये चार ही अनुयोगद्वार होते हैं, क्योंकि, अन्य अनुयोगद्वार यहां पर सम्भव नहीं हैं ।

* ता० प्रती ' जहणट्टिदि - (उक्कस्सट्टिदि) उक्कस्सट्टिदि- ' इति पाठा ।

* ता० प्रती ' - णिगोदाणं (जहणं) जहण्णाउअप्पहुडि ' का० प्रती ' णिगोदाणं जहणं जह-ण्णाउअप्पहुडि ' इति पाठा ।

वर्गणपरूवणदाए इमा एयपदेसिया परमाणुपोग्गलदव्व-
वर्गणा णाम ॥ ७०७ ॥

इमा दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववत्ठगणा णाम ॥ ७०८ ॥

एवं तिपदेसिय-चदुपदेसिय-पंचपदेसिय-छप्पदेसिय-सत्तपदेसिय-
अट्ठपदेसिय-णवपदेसिय-दसपदेसिय-संखेज्जपदेसिय-असंखेज्जपदेसिय-
अणंतपदेसिय-अणंताणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववर्गणा णाम ॥

तासिमणंतपदेसिय*परमाणुपोग्गलदव्ववत्ठगणाणमुवरि-
माहारसरीरदव्ववर्गणा णाम ॥ ७१० ॥

आहारसरीरदव्ववर्गणाणमुवरिमगहणदटव्ववर्गणा णाम ॥ ७११ ॥

अगहणदव्ववर्गणाणमुवरि तेजादव्ववर्गणा णाम ॥ ७१२ ॥

तेजादटव्ववर्गणाणमुवरि अगहणदव्ववर्गणा णाम ॥ ७१३ ॥

अगहणदव्ववर्गणाणमुवरि भासादव्ववर्गणा णाम ॥ ७१४ ॥

भासादव्ववर्गणाणमुवरिमगहणदव्ववर्गणा णाम ॥ ७१५ ॥

वर्गणाप्ररूपणाकी अपेक्षा यह एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा है । ७०७ ।

यह द्विप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा है । ७०८ ।

इसप्रकार त्रिप्रदेशी, चतुःप्रदेशी, पञ्चप्रदेशी, षट्प्रदेशी, सप्तप्रदेशी, अष्टप्रदेशी,
नवप्रदेशी, दशप्रदेशी, संख्यातप्रदेशी, असंख्यातप्रदेशी, अनन्तप्रदेशी और अनन्ता-
नन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा होती है । ७०९ ।

उन अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर आहारशरीरद्रव्य-
वर्गणा होती है । ७१० ।

आहारशरीरद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है । ७११ ।

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर तैजसद्रव्यवर्गणा होती है । ७१२ ।

तैजसद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है । ७१३ ।

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर भाषाद्रव्यवर्गणा होती है । ७१४ ।

भाषाद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है । ७१५ ।

अग्रहणद्रव्यवर्गणाणमुवरि मणद्रव्यवर्गणा णाम ॥ ७१६ ॥

मणद्रव्यवर्गणाणमुवरिमग्रहणद्रव्यवर्गणा णाम ॥ ७१७ ॥

अग्रहणद्रव्यवर्गणाणमुवरि कम्मइयद्रव्यवर्गणा णाम ॥ ७१८ ॥

एवमुवरिमसुत्ताणं पि सव्वेसिमुच्चारणा कायव्वा । पुणो एदेसिमत्थे भण्णमाणे जहा अळभंतरवर्गणाए परूविदं तथा परूवेयव्वं । एदेहि सव्वेहि म्मि सुत्तेहि पुव्वु-
त्तवर्गणाणं चेव संभालणं कदं । कुदो ? पुव्वं परूविदत्थस्सेव परूवणादो ।

एवं वर्गणपरूवणा गदा ।

वर्गणणिरूपणदाए इमा एयपदेसियपरमाणुपोगलद्रव्यवर्गणा
णाम किं ग्रहणपाओग्गाओ किमग्रहणपाओग्गाओ* ॥ ७१९ ॥

पंचणं सरीराणं जा गेज्झा सा ग्रहणपाओग्गा णाम । जा पुण तासिमगेज्झा
(सा) अग्रहणपाओग्गा णाम । तासिं दोणं मज्झे कत्थ इमा पवदि त्ति पुच्छा
कदा । एयपदेसियवर्गणा एवका चेव, तत्थ कधं ग्रहणपाओग्गाओ त्ति बहुवयण—

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर मनोद्रव्यवर्गणा होती है ॥ ७१६ ॥

मनोद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है ॥ ७१७ ॥

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर कर्मणद्रव्यवर्गणा होती है ॥ ७१८ ॥

इसी प्रकार आगेके सभी सूत्रोंकी भी उच्चारणा करनी चाहिये । पुनः इनके अर्थका कथन करते समय जिसप्रकार आभ्यन्तरवर्गणामें कथन किया है उस प्रकार कथन करना चाहिये । इन सब सूत्रोंके द्वारा पूर्वोक्त वर्गणाओंकी ही सम्हाल की गई है, क्योंकि, इन द्वारा पहले कहे गये अर्थका ही कथन किया गया है ।

इस प्रकार वर्गणाप्ररूपणा अनुयोगद्वारा समाप्त हुआ ।

वर्गणानिरूपणाकी अपेक्षा यह एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या ग्रहण प्रायोग्य हैं या ग्रहणप्रायोग्य नहीं हैं ॥ ७१९ ॥

पाँच शरीरोंके जो ग्रहणप्रायोग्य है वह ग्रहण योग्य कहलाती है । परन्तु जो उनके ग्रहणयोग्य नहीं है वह अग्रहणप्रायोग्य कहलाती है । उन दोनोंके मध्य इसका समावेश किसमें होता है इस प्रकारकी पृच्छा इस सूत्रमें की गई है ।

शंका— एकप्रदेशी वर्गणा एक ही है । वहां 'ग्रहणपाओग्गाओ' इस प्रकार बहु-
वचनका निर्देश नहीं बन सकता है ?

❁ ता० प्रती 'सव्वेहि सुत्तेहि' इति पाठः ।

❁ ता० प्रती 'किमग्रहणपाओग्गाओ' इत्यग्रे 'णाम' इत्यधिकः पाठः ।

णिद्देसो जुज्जदे ? न, जादिदुवारेण एयत्तमावणाए वत्तिभेदेण* जणिदबहुत्तं पडि बहुवयणणिद्देसुववत्तीदो ।

अग्रहणपाओग्गाओ इमाओ एयपदेसियसव्वपरमाणुपोग्गल-
दव्ववग्गणाओ ॥ ७२० ॥

पंचणं सरीराणं ग्रहणपाओग्गाओ न होति हत्थिहत्थस्स सरिसओ व्व ।
कुदो ? साभावियादो ।

इमा दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम किं ग्रहण-
पाओग्गाओ किमग्रहणपाओग्गाओ ॥ ७२१ ॥

सुगममेदं पुच्छासुत्तं ।

अग्रहणपाओग्गाओ ॥ ७२२ ॥

एदं पि सुगमं ।

एवं तिपदेसिय-चदुपदेसिय-पंचपदेसिय-छप्पदेसिय-सत्तपदेसिय-
अट्ठपदेसिय-णवपदेसिय-दसपदेसिय-संखेज्जपदेसिय-असंखेज्जपदेसिय-
अणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम किं ग्रहणपाओग्गाओ

समाधान-- नहीं, क्योंकि, यद्यपि जातिकी अपेक्षा वह एक है फिर भी व्यक्ति-
भेदसे वह बहुत्वको प्राप्त है, इसलिए बहुवचन निर्देश बन जाता है ।

ये एकप्रदेशी सब परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्णणायें अग्रहणप्रायोग्य हैं ॥ ७२० ॥

जिस प्रकार हाथीके हाथसे सरसों ग्रहण योग्य नहीं होता है उसी प्रकार ये पांच
शरीरोंके ग्रहणयोग्य वहीं होती हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

यह द्विप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्णणा क्या ग्रहणप्रायोग्य होती है या क्या
अग्रहणप्रायोग्य होती है ॥ ७२१ ॥

यह पुच्छासूत्र सुगम है ।

अग्रहणप्रायोग्य होती है । ७२२ ।

यह सूत्र भी सुगम है ।

इस प्रकार त्रिप्रदेशी, चतुःप्रदेशी, पंचप्रदेशी, षट्प्रदेशी, सप्तप्रदेशी, अष्ट-
प्रदेशी, नवप्रदेशी, दशप्रदेशी संख्यातप्रदेशी, असंख्यातप्रदेशी और अनन्तप्रदेशी

* का० प्रती ' तत्थ ग्रहणपाओग्गाओ स्ति बहुवयणणिद्देसो (न-) जुज्जदे ' इति पाठा ।

* ता० प्रती ' एयत्तमावणाए वं (वे) तिभेदेण ' इति पाठा ।

किमग्रहणपाओग्गाओ ॥ ७२३ ॥

सुगममेदं ।

अग्रहणपाओग्गाओ ॥ ७२४ ॥

एदं पि सुगमं ।

**अणंताणंतपदेसियपरमाणुपोगलद्ववग्गणा णाम किं ग्रहण-
पाओग्गाओ किमग्रहणपाओग्गाओ ॥ ७२५ ॥**

सुगमं ।

**काओ चि ग्रहणपाओग्गाओ काओ चि अग्रहण-
पाओग्गाओ ॥ ७२६ ॥**

आहारवग्गणाए जहणवग्गणप्पहुडि जाव महाखंधववग्गणे त्ति ताव एवाओ
अणंताणंतपदेसियवग्गणाओ त्ति एत्थ सुत्ते धेत्तवाओ । तत्थ आहार-तेज-भासा-मण-
कम्मइयवग्गणाओ ग्रहणपाओग्गाओ अवसेसाओ अग्रहणपाओग्गाओ त्ति धेत्तव्वं ।

**तासिमणंताणंतपदेसियपरमाणुपोगलद्ववग्गणाणमुवरिमा-
हारद्ववग्गणा णाम ॥ ७२७ ॥**

परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या ग्रहणप्रायोग्य होती हैं या क्या अग्रहणप्रायोग्य होती
हैं ॥७२३॥

यह सूत्र सुगम है ।

अग्रहणप्रायोग्य होती हैं ॥७२४॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या ग्रहणप्रायोग्य होती हैं या
क्या अग्रहणप्रायोग्य होती हैं ॥७२५॥

यह सूत्र सुगम है ।

कोई ग्रहणप्रायोग्य होती हैं और कोई अग्रहणप्रायोग्य होती हैं ॥७२६॥

आहारवर्गणाकी जघन्य वर्गणासे लेकर महास्कन्धद्रव्यवर्गणा तक ये सब अनन्तानन्त-
प्रदेशी वर्गणायें हैं इस प्रकार यहाँ सूत्रमें ग्रहण करना चाहिए । उनमेंसे आहारवर्गणा, तेजस-
वर्गणा, भावावर्गणा, मनोवर्गणा और कर्मणवर्गणा ये ग्रहणप्रायोग्य हैं, अवशेष अग्रहणप्रायोग्य
हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिए ।

उन अनन्तातन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर जो होती है उसकी
आहारद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ॥७२७॥

उवरि त्ति वुत्ते मज्झे इदि घेत्तब्बं, अण्णहा उवरित्तासंभवादो । अथवा हेट्ठि-
मअणंताणंतपदेसियवर्गणाणमुवरि आहारवर्गणा होंति त्ति घेत्तब्बं । एदेण सुत्तेण
आहारवर्गणा एदेण सरूवेण परिणमदि त्ति जाणावेत्तेण तदवट्ठाणपदेसपरूवणा कदा ।

आहारद्ववर्गणा णाम का ॥ ७२८ ॥

केण लक्खणेण जाणिज्जदि, किं वा तत्तो निप्पज्जमाणमिदि एदेण* सुत्तेण
पुच्छा कदा ।

आहारद्ववर्गणं तिण्णं सरीराणं ग्रहणं पवत्तदि ॥ ७२९ ॥

जिस्से परमाणुपोगलक्खंधे घेत्तूण तिण्णं सरीराणं ग्रहणं निप्पत्ती पवत्तदि*
होदि सा आहारद्ववर्गणा णाम । तिण्णं सरीराणं णामणिद्देमट्ठं ग्रहणसरूव-
परूवणट्ठं च उत्तरसुत्तं भणदि—

**ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं जाणि दब्बाणि घेत्तूण
ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरत्ताए परिणामेदूण* परिणमंति
जीवा ताणि दब्बाणि आहारद्ववर्गणा णाम ॥ ७३० ॥**

ऊपर ऐसा कहने पर मध्यमें ऐसा ग्रहण करना चाहिए, अन्यथा ऊपरपना नहीं बन
सकता है । अथवा अधस्तन अनन्तानन्तप्रदेशी वर्गणाओंके ऊपर आहारवर्गणा होती है ऐसा
ग्रहण करना चाहिए । इस सूत्रद्वारा आहारवर्गणा इस रूपसे परिणमन करती है ऐसा जानते
हुए उसके अवस्थानके प्रदेशका कथन किया है ।

आहारद्ववर्गणा क्या है ॥ ७२८ ॥

वह किस लक्षणसे जानी जाती है, अथवा उससे क्या निष्पन्न होता है इस प्रकार
इस सूत्रद्वारा पृच्छा की गई है ।

आहारद्ववर्गणा तीन शरीरोंके ग्रहणके लिए प्रवृत्त होती है ॥ ७२९ ॥

जिसके परमाणुपुद्गलस्कन्धको ग्रहणकर तीन शरीरोंका ग्रहण अर्थात् निष्पत्ति होती
है वह आहारद्ववर्गणा है । अब तीन शरीरोंके नामोंका निर्देश करनेके लिए और ग्रहणके
स्वरूपका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

**औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके जिन द्रव्योंको ग्रहण-
कर औदारिक, वैक्रियिक और आहारकशरीररूपसे परिणमाकर जीव परिणमन
करते हैं उन द्रव्योंकी आहारद्ववर्गणा संज्ञा है ॥ ७३० ॥**

* ता० प्रती ' निप्पज्जमाणइज्जित (निप्पज्जमाणमिदि) एदेण ' का० प्रती ' निप्पज्जमाणइज्जने
एदेण ' इति पाठः । * ता० प्रती ' ग्रहणं निप्पत्ती पवत्तदि ' का० प्रती ' ग्रहण-
निप्पत्ती पवत्तदि ' इति पाठः । * का० प्रती ' परिणमिदूण , इति पाठः ।

आहारशरीरवर्गणाए अंतो काओ चि वर्गणाओ ओरालियशरीरपाओग्गाओ काओ चि वेउव्वियशरीरपाओग्गाओ काओ चि आहारशरीरपाओग्गाओ । एवमाहार शरीरवर्गणा तिविहा होदि । एविस्से तिविहत्तं कुदो णव्वदे ? उवरिभण्णमाण-ओगाहणप्पाबहुगादो कज्जभेदणह्णानुव्वत्तीदो वा । जाणि ओरालिय-वेउव्विय-आहार शरीराणं पाओग्गाणि दव्वाणि ताणि धेत्तूण पादिऊण ओरालिय वेउव्विय-आहार-शरीरत्ताए ओरालिय-वेउव्विय-आहारशरीराणं सरूवेण ताणि परिणामेदूण परिण-माविय जेहि सह परिणमंति बंधं गच्छंति जीवा ताणि दव्वाणि आहारदव्ववर्गणा णाम । जदि एदेसि तिण्णं शरीराणं वर्गणाओ ओगाहणभेदेण संखाभेदेण च भिण्णाओ तो आहारदव्ववर्गणा एकका चेवे त्ति किमट्ठं उच्चवे ? ण, अगहण-वर्गणाहि अंतराभावं पडुच्च तासिमेगत्तुवएसो । ण च संखाभेदो असिद्धो, उवरिभण्णमाणअप्पाबहुएणव तस्स सिद्धोदो ।

आहारदव्ववर्गणाणमुवरिभगहणदव्ववर्गणा णाम ॥ ७३१ ॥
एवेण अगहणवर्गणावट्ठाणपदेसो परूविदो ।

अगहणदव्ववर्गणा णाम का ॥ ७३२ ॥

आहारशरीरवर्गणाके भीतर कुछ वर्गणायें औदारिकशरीरके योग्य हैं, कुछ वर्ग-णायें वैक्रियिकशरीरके योग्य हैं और कुछ वर्गणायें आहारकशरीरके योग्य हैं । इस प्रकार आहारशरीरवर्गणा तीन प्रकार की है ।

शंका-- यह तीन प्रकारकी है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- आगे कहे जानेवाले अवगाहना अल्पबहुत्वसे जाना जाता है । अथवा अन्यथा कार्यभेद नहीं बन सकता है इससे जाना जाता है कि वह तीन प्रकारकी है ।

जो औदारिक, वैक्रियिक और आहारकशरीरके योग्य द्रव्य हैं उन्हें ग्रहण कर अर्थात् प्राप्तकर औदारिक, वैक्रियिक और आहारकशरीररूपसे अर्थात् औदारिकशरीर, वैक्रियिक-शरीर और आहारकशरीरके आकारसे उन्हें परिणामकर जिनके साथ जीव परिणमन करते हैं अर्थात् बन्धको प्राप्त होते हैं उन द्रव्योंकी आहारद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ।

शंका-- यदि तीन शरीरोंकी वर्गणायें अवगाहनाके भेदसे और संख्याके भेदसे अलग अलग हैं तो आहारद्रव्यवर्गणा एक ही है ऐसा किसलिए कहते हैं ।

समाधान-- नहीं, क्योंकि, अग्रहणवर्गणाओंके द्वारा अन्तरके अभावकी अपेक्षा इन वर्गणाओंके एकत्वका उपदेश दिया गया है । और संख्याभेद असिद्ध नहीं है, क्योंकि, आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्वसे ही उसकी सिद्धि होती है ।

आहारद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा है । ७३१ ।

इस सूत्रद्वारा अग्रहणद्रव्यवर्गणाके अवस्थानके प्रदेशका कथन किया है ।

अग्रहणद्रव्यवर्गणा क्या है । ७३२ ।

किलवखणेने ति भणिदं होवि ।

अग्रहणद्वयवर्गणा आहारद्वयमधिच्छिदा[❖] तेयाद्वयवर्गणं
ण पावदि ताणं दव्वाणमंतरे अग्रहणद्वयवर्गणा णाम ॥ ७३३ ॥

आहारद्वयमधिच्छिदा एदेण[❖] तिणं सरीराणमप्पाओगत्तं आहारद्वयवर्ग-
णाए उक्कस्सवर्गणादो वि अग्रहणजहणवर्गणाए रुवाहियत्तं परूविदं । तेयाद्वय-
वर्गणं ण पावदि एदेण तेजा-भास-मण-कस्माणमप्पाओगत्तं तेजाजहणवर्गणादो
एविस्से उक्कस्सवर्गणाए रुवूणत्तं च परूविदं[❖] । ताणं दव्वाणमंतरे एदासि दोण्णं
वर्गणाणं विच्चाळे अग्रहणद्वयवर्गणा णाम । एदेण द्विदपदेसपरूवणा कदा ।

अग्रहणद्वयवर्गणाणमुवरि तेयाद्वयवर्गणा णाम ॥ ७३४ ॥

एदेण सुत्तेण तेयाद्वयवर्गणाए पमाणं परूविदं ।

तेयाद्वयवर्गणा णाम का ॥ ७३५ ॥

सुगममेदं पुच्छासुत्तं ।

क्या लक्षणवाली है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

अग्रहणद्वयवर्गणा आहारद्वयसे प्रारंभ होकर तैजसद्वयवर्गणाको नहीं प्राप्त
होती है, अतः इन दोनों द्रव्योंके मध्यमें जो होती है उसकी अग्रहणद्वयवर्गणा
संज्ञा है ॥ ७३३ ॥

‘आहारद्वयमधिच्छिदा’ इस वचन द्वारा अग्रहणवर्गणा तीन शरीरोंके अयोग्य है
और आहारद्वयवर्गणाकी उत्कृष्ट द्रव्यवर्गणासे भी जवन्य अग्रहण वर्गणा एक प्रदेश अधिक है
यह कहा गया है । ‘तेयाद्वयवर्गणं ण पावदि’ इस वचन द्वारा यह तैजसवर्गणा, भाषा-
वर्गणा, मनोवर्गणा और कर्मणवर्गणाके अयोग्य और जवन्य तैजसवर्गणासे यह उत्कृष्ट वर्गणा
एक प्रदेश न्यून है यह कहा गया है । ‘ताणं दव्वाणं अंतरे’ अर्थात् इन दोनों वर्गणाओंके बीच
में अग्रहणद्वयवर्गणा है । इस द्वारा उसके स्थित होनेके प्रदेशका कथन किया गया है ।

अग्रहणद्वयवर्गणाओंके ऊपर तैजसद्वयवर्गणा है ॥ ७३४ ॥

इस सूत्र द्वारा तैजसद्वयवर्गणाका प्रमाण कहा गया है ।

तैजसद्वयवर्गणा क्या है ॥ ७३५ ॥

यह पृच्छासूत्र सुगम है ।

❖ ता० प्रती ‘-मच्छिदा’ इति पाठः । ❖ ता० प्रती ‘-मविच्छिदा (ए) एदेण’ इति पाठः ।

❖ ता० प्रती ‘अरूविदं’ इति पाठः ।

तेजादव्ववग्गणा तेयासरीरस्स ग्रहणं पवत्तदि ॥ ७३६ ॥

तेजासरीरस्स तेयासरीरट्ठं ग्रहणं जत्तो पवत्तदि । सा तेजावग्गणा ति भण्णदि ।
एदस्स णिग्गयट्ठमुत्तरसुत्तं भण्णदि ।

**जाणि दव्वाणि घेतूण तेयासरीरत्ताए परिणामेदूण परिणमंति
जीवा ताणि दव्वाणि तेजादव्ववग्गणा णाम ॥ ७३७ ॥**

जाणि दव्वाणि घेतूण पाविदूण तेजासरीरत्ताए तेजासरीरसरूवेण परिणामेदूण
मिच्छादिपच्चएहि परिणमाविद्य परिणमंति संबंधं गच्छंति जीवा ताणि दव्वाणि
तेजा दव्ववग्गणा णाम ।

तेजादव्ववग्गणाणमुवरिमग्रहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७३८ ॥

अग्रहणदव्ववग्गणा णाम का ॥ ७३९ ॥

**अग्रहणदव्ववग्गणा तेजादव्वमविच्छिदा भासादव्वं ण पावेदि
ताणं दव्वाणमंतरे अग्रहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७४० ॥**

सुगममेदं सुत्ततियं ।

तैजसद्रव्यवर्गणासे तैजसशरीरका ग्रहण होता है ॥ ७३६ ॥

‘ तेयासरीरस्स ’ अर्थात् तैजसशरीरके लिए ग्रहण जिससे होता है वह तैजसवर्गणा
कही जाती है । अब इसका निर्णय करने के लिए आगेका सूत्र कहते हैं ।

**जिन द्रव्योंको ग्रहणकर तैजसशरीररूपसे परिणमा कर जीव परिणमन करते
हैं उन द्रव्योंकी तैजसद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ॥ ७३७ ॥**

जिन द्रव्योंको ग्रहण कर अर्थात् प्राप्त कर तैजसशरीररूपसे ‘ परिणामेदूण ’ अर्थात्
मिथ्यात्व आदि कारणोंसे परिणमा कर जीव ‘ परिणमंति ’ अर्थात् सम्बन्धको प्राप्त होते हैं
वे द्रव्य तैजसद्रव्यवर्गणा कहलाते हैं ।

तैजसद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है ॥ ७३८ ॥

अग्रहणद्रव्यवर्गणा क्या है । ७३९ ।

अग्रहणद्रव्यवर्गणा तैजसद्रव्यवर्गणासे प्रारम्भ होकर भाषाद्रव्यको नहीं प्राप्त
होती है, अतः इन दोनों द्रव्योंके मध्यमें जो होती है उसकी अग्रहणद्रव्यवर्गणा
संज्ञा है ॥ ७४० ॥

ये तीन सूत्र सुगम हैं ।

अग्रहणद्रव्यवर्गणाणमुवरि भासाद्व्यवर्गणा णाम ॥ ७४१ ॥

भासाद्व्यवर्गणा णाम का ॥ ७४२ ॥

सुगमेदं सुत्तदुअं ।

भासाद्व्यवर्गणा चउव्विहाए भासाए ग्रहणं पवत्तादि ॥ ७४३ ॥

जा वर्गणा चउव्विहाए भासाए ग्रहणं होदूण पवत्तादि सा भासाद्व्यवर्गणा होदि । एदस्स णिणयत्थमुत्तरसुत्तं भणदि —

सच्चभासाए मोसभासाए सच्चमोसभासाए असच्चमोसभासाए जाणि दव्वाणि घेत्तूण सच्चभासत्ताए मोसभासत्ताए सच्चमोसभासत्ताए असच्चमोसभासत्ताए परिणामेदूण णिस्सारंति जीवा ताणि दव्वाणि भासाद्व्यवर्गणा णाम ॥ ७४४ ॥

भासाद्व्यवर्गणा सच्च-मोस-सच्चमोस-असच्चमोसभेदेण चउव्विहा । एदं चउ-व्विहत्तं कुदो णव्वदे? चउव्विहभासाकज्जणहाणुववत्तीदो । चउव्विहभासाणं

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर जो होती है उसकी भाषाद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ॥ ७४१ ॥

भाषाद्रव्यवर्गणा क्या है ॥ ७४२ ॥

ये दो सूत्र सुगम हैं ।

भाषाद्रव्यवर्गणा चार प्रकारकी भाषारूपसे ग्रहण होकर प्रवृत्त होती हैं ॥ ७४३ ॥

जो वर्गणा चार प्रकारकी भाषारूपसे ग्रहण होकर प्रवृत्त होती है वह भाषाद्रव्यवर्गणा है । अब इसका निर्णय करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

सत्यभाषा, मोषभाषा, सत्यमोषभाषा और असत्यमोषभाषाके जिन द्रव्योंको ग्रहण कर सत्यभाषा, मोषभाषा, सत्यमोषभाषा और असत्यमोषभाषारूपसे परिणामा कर जीव उन्हें निकालते हैं उन द्रव्योंकी भाषाद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ॥ ७४४ ॥

भाषाद्रव्यवर्गणा सत्य, मोष, सत्यमोष और असत्यमोषके भेदसे चार प्रकारकी है ।

शंका— यह चार प्रकारकी है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— उसका चार प्रकारका भाषारूप कार्य अन्यथा बन नहीं सकता है, इससे जाना जाता है कि वह चार प्रकारकी है ।

चार प्रकारकी भाषाके योग्य जो द्रव्य हैं उन्हें ग्रहण कर तालु आदिके व्यापार द्वारा

☼ ता० प्रती ' चउव्विहा । तं चउव्विहा कुदो ' इति पाठः ।

☼ ता० प्रती ' णव्वदे तचउव्विह— ' इति पाठः ।

पाओग्गाणि जाणि दब्बाणि ताणि घेतूण सच्च-मोस-सच्चमोस-असच्चमोसभासाणं
सरूवेण तालुवादिवावारेण परिणमाविय जीवा मुहादो निस्तारेंति ताणि दब्बाणि
भासादव्ववग्गणा णाम ।

भासादव्ववग्गणाणमुवरिमगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७४५ ॥

अगहणदव्ववग्गणा णाम का ॥ ७४६ ॥

अगहणदव्ववग्गणा भासादव्वमधिच्छिदा मणदव्वं ण पावेदि
ताणं दब्बाणमंतरे अगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७४७ ॥

सुगममेवं सुत्तत्तियं ।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि मणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७४८ ॥

मणदव्ववग्गणा णाम का ॥ ७४९ ॥

मणदव्ववग्गणा चउट्ठिवहस्स* मणस्स गहणं पवत्तदि । ७५० ।

एदाणि वि सुगमाणि ।

सच्चमणस्स मोसमणस्स सच्चमोसमणस्स असच्चमोसमणस्स जाणि

सत्यभाषा, मोषभाषा, सत्यमोषभाषा और असत्यमोषभाषारूपसे परिणमाकर जीव मुखसे
निकलते हैं, अतएव उन द्रव्योंकी भाषाद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ।

भाषाद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर जो होती है उसकी अग्रहणद्रव्यवर्गणा संज्ञा
है ॥ ७४५ ॥

अग्रहणद्रव्यवर्गणा क्या है । ७४६ ।

अग्रहणद्रव्यवर्गणा भाषाद्रव्यवर्गणासे प्रारंभ होकर मनोद्रव्यको नहीं प्राप्त
होती है, अतः उन द्रव्योंके मध्यमें जो होती है उसकी अग्रहणद्रव्यवर्गणा संज्ञा है । ७४७ ।

ये तीन सूत्र सुगम हैं ।

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर जो होती है उसकी मनोद्रव्यवर्गणा संज्ञा है । ७४८ ।

मनोद्रव्यवर्गणा क्या है । ७४९ ।

मनोद्रव्यवर्गणा चार प्रकारके मनरूपसे ग्रहण होकर प्रवृत्त होती है । ७५० ।

ये सूत्र भी सुगम हैं ।

सत्यमन, मोषमन, सत्यमोषमन और असत्यमोषमनके जिन द्रव्योंको ग्रहणकर

✽ ता० प्रती 'ताणि (णं) दब्बाणमंतरे' का० प्रती 'ताणि दब्बाणमंतरे' इति पाठः ।

✽ का० प्रती 'वग्गणाण् चउट्ठिवहस्स' इति पाठः ।

दव्वाणि घेतूण सच्चमणत्ताए मोसमणत्ताए सच्चमोसमणत्ताए अस-
च्चमोसमणत्ताए परिणामेदूण परिणमंति जीवा ताणि दव्वाणि मण-
दव्ववग्गणा णाम ॥ ७५१ ॥

मणदव्ववग्गणा चउव्विहा- सच्चमणपाओग्गा मोसमणपाओग्गा सच्चमोसमण-
पाओग्गा असच्चमोसमणपाओग्गा चेदि । मणदव्ववग्गणाए चउव्विहत्तं कुदो णद्ववे?
मणदव्ववग्गणादो णिप्पज्जमाणदव्वमणस्स चउव्विहभावण्णहाणुव्वत्तीदो । सेसं सुगमं ।

मणदव्ववग्गणाणमुवरिमगहणदव्ववग्गणा णाम । ७५२ ॥

अगहणदव्ववग्गणा णाम का ॥ ७५३ ॥

अगहणदव्ववग्गणा मणदव्वमविच्छिदा^० कम्मइयदव्वं ण
पावदि ताणं दव्वाणमंतरे अगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७५४ ॥

एवाणि वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि कम्मइयदव्ववग्गणा णाम । ७५५ ।

सत्यमन, मोषमन, सत्यमोषमन और असत्यमोषमनरूपसे परिणमा कर जीव परि-
णमन करते हैं उन द्रव्योंकी मनोद्रव्यवर्गणा संज्ञा है । ७५१ ।

मनोद्रव्यवर्गणा चार प्रकारकी है— सत्यमनप्रायोग्य, मोषमनप्रायोग्य, सत्यमोष-
मनप्रायोग्य और असत्यमोषमनप्रायोग्य ।

शंका— मनोद्रव्यवर्गणा चार प्रकारकी है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— मनोद्रव्यवर्गणासे उत्पन्न होनेवाला द्रव्यमन चार प्रकारका अन्यथा बन
नहीं सकता है इससे जाना जाता है कि मनोद्रव्यवर्गणा चार प्रकारकी होती है ।

शेष कथन सुगम है ।

मनोद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है । ७५२ ।

अग्रहणद्रव्यवर्गणा क्या है । ७५३ ।

अग्रहणद्रव्यवर्गणा मनोद्रव्यवर्गणासे प्रारम्भ होकर कर्मणद्रव्यको नहीं प्राप्त
होती है, अतः इन दोनों द्रव्योंके मध्यमें जो होती है उसकी अग्रहणद्रव्यवर्गणा
संज्ञा है । ७५४ ।

यह सूत्र भी सुगम है ।

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर कर्मणद्रव्यवर्गणा होती है । ७५५ ।

कम्मइयदव्ववग्गणा णाम का ॥ ७५६ ॥

कम्मइयदव्ववग्गणा अट्ठविहस्स कम्मस्स ग्रहणं पवत्तवि । ७५७ ।

सुगमाणि एवाणि सुत्ताणि । एदेसि सुत्ताणं णिण्णयदुमत्तरसुत्तं भणदि-

णाणावरणीयस्स दंसणावरणीयस्स वेयणीयस्स मोहणीयस्स आउअस्स णामस्स गोदस्स अंतराइयस्स जाणि दव्वाणि घेतूण णाणावरणीयत्ताए दंसणावरणीयत्ताए वेयणीयत्ताए मोहणीयत्ताए आउअत्ताए णामत्ताए गोदत्ताए अंतराइयत्ताए परिणामेदूण परिणमंति जीवा ताणि दव्वाणि कम्मइयदव्ववग्गणा णाम ॥ ७५८ ॥

णाणावरणीयस्स जाणि पाओग्गणि दव्वाणि ताणि चेव मिच्छत्तादिपच्चएहि पंचणाणावरणीयसरूवेण परिणमंति ण अण्णेसि सरूवेण । कुदो ? अप्पाओग्गत्तादो । एवं सव्वेसि कम्माणं वत्तव्वं, अण्णहा णाणावरणीयस्स जाणि दव्वाणि ताणि घेतूण मिच्छादिपच्चएहि णाणावरणीयत्ताए परिणामेदूण जीवा परिणमंति त्ति सुत्ताणुववत्तीदो । जदि एवं तो कम्मइयवग्गणाओ अट्ठे त्ति किण्ण परूविदाओ ? ण, अंतराभावेण तथोवदेसाभावादो । एदाओ अट्ठ वि वग्गणाओ किं पुध पुध अच्छंति आहो

कर्मणद्रव्यवर्गणा क्या है ॥ ७५६ ॥

कर्मणद्रव्यवर्गणा आठ प्रकारके कर्मका ग्रहणकर प्रवृत्त होती है । ७५७ ।

ये सूत्र सुगम हैं । अब इन सूत्रोंका निर्णय करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं-

ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अन्तरायके जो द्रव्य हैं उन्हें ग्रहणकर ज्ञानावरणरूपसे, दर्शनावरणरूपसे, वेदनीयरूपसे, मोहनीयरूपसे, आयुरूपसे, नामरूपसे, गोत्ररूपसे और अन्तरायरूपसे परिणमाकर जीव परिणमन करते हैं, अतः उन द्रव्योंकी कर्मणद्रव्यवर्गणा संज्ञा है । ७५८ ।

ज्ञानावरणीयके योग्य जो द्रव्य हैं वे ही मिथ्यात्व आदि प्रत्ययोंके कारण पाँच ज्ञानावरणीयरूपसे परिणमन करते हैं, अन्यरूपसे वे परिणमन नहीं करते, क्योंकि, वे अन्यके अयोग्य होते हैं । इसी प्रकार सब कर्मोंके विषयमें कहना चाहिए, अन्यथा ज्ञानावरणीयके जो द्रव्य हैं उन्हें ग्रहण कर मिथ्यात्व आदि प्रत्ययवश ज्ञानावरणीयरूपसे परिणमाकर जीव परिणमन करते हैं यह सूत्र नहीं बन सकता है ।

शंका-- यदि ऐसा है तो कर्मणवर्गणायें आठ हैं ऐसा कथन क्यों नहीं किया है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, अन्तरका अभाव होनेसे उस प्रकारका उपदेश नहीं पाया जाता ।

करंबियाओ त्ति ? पुध पुध ण अच्छंति कितु करंबियाओ । कुदो एवं णव्वदे ?
'आउअभागो थोवो णामा-गोदे समो तवो अहिओ ' एदीए गाहाए णव्वदे । सेसं
जाणिदूण वत्तव्वं ।

एवं वर्गणणिरूवणा समत्ता ।

पदेसट्ठवा— ओरालियसरीरदव्ववर्गणाओ पदेसट्ठवा अणं—
ताणंतपदेसियाओ ॥ ७५९ ॥

ओरालियसरीरदव्ववर्गणाणं पदेसपरिमाणं पुढ्वं चेव आहारवर्गणणिरूवणाए
परुदिदं । तमेत्थ किमट्ठं वुच्चदे ? ओरालियवर्गणापदेसे अस्सिदूण वण्णादिपरुवणं
करेमि त्ति जाणावणट्ठं वुच्चदे ।

पंचवर्णाओ ॥ ७६० ॥

ओरालियसरीरदव्ववर्गणाओ सुक्किल-रुहिर-किण्ण-णील-पीदवण्णसंजुत्ताओ
होति । कथं एकम्हि परमाणुम्हि पंचवर्णं वण्णाणं संभवो ? ण एक्केक्कम्हि परमाणुम्हि
एक्केक्को चेव वण्णपज्जाओ, कितु ओरालियसरीरवर्गणाए जेण काओचि सुक्किल-
वण्णाओ काओचि रुहिरवण्णाओ काओचि किण्णवण्णाओ काओचि णीलवण्णाओ

शंका— ये आठ ही वर्गणायें क्या पृथक् पृथक् रहती हैं या मिश्रित होकर रहती हैं ?

समाधान— पृथक् पृथक् नहीं रहती हैं किन्तु मिश्रित होकर रहती हैं ।

शंका— यह किस प्रमाणसे जान जाता है ?

समाधान— ' आयु कर्मका भाग स्तोक है । नाम कर्म और गोत्र कर्म का भाग उससे
अधिक है । इस गाथा से जाना जाता है ' ।

शेष का कथन जानकर करना चाहिये ।

इस प्रकार वर्गणानिरूपणा समाप्त हुई ।

प्रदेशार्थता— औदारिकशरीरद्रव्यवर्गणायें प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तानन्त—
प्रदेशवाली होती हैं ॥ ७५९ ॥

शंका— औदारिकशरीरकी द्रव्यवर्गणाओंके प्रदेशोंका परिणाम पहले ही आहार-
वर्गणानिरूपणामें किया है, उसे यहां किसलिए कहते हैं ?

समाधान— औदारिकवर्गणाके प्रदेशोंका आश्रय लेकर वर्ण आदिका कथन करते हैं
इस बातका ज्ञान करानेके लिए कहते हैं ।

वे पाँच वर्णवाली होती हैं ॥ ७६० ॥

औदारिकशरीरद्रव्यवर्गणायें शुक्ल, लाल, कृष्ण, नील और पीतवर्णसे संयुक्त होती हैं ।

शंका— एक परमाणुमें पाँच वर्ण कैसे होते हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, एक एक परमाणुमें एक एक ही वर्णवर्ण्य होती है । किन्तु
औदारिकशरीरवर्गणाकी चूँकि कुछ वर्गणायें शुक्लवर्णवाली होती हैं, कुछ लालवर्णवाली होती हैं

काओचि पीदवण्णाओ काओचि करंबियवण्णाओ, तेणेदाणं पंचवण्णत्तं जुज्जवे ।
जदि एवं तो ओरालियसरीरवगणाए एकतीसवण्णभेदा पावेंति ? ण, पंचवण्णेहि
एयंतेण पुध्भूदसंजोगाभावादो ।

पंचरसाओ ॥ ७६१ ॥

ओरालियसरीरवगणासु तित्त-कडुअ-कसायंबिल-महुरभेदेण पंच रसा होति ।
एदे पंच वि रसा एक्केक्कपरमाणुमिह जुगवं ण होति, किंतु कमेण होति । वगणासु
पुण अक्कमेण कमेण वि होति, अणंताणंतपरमाणूणं समुदयसमागमेण समुत्पण्ण-
वगणासु पंचवण्णाणं व पंचरसाणमक्कमेण वृत्तीए विरोहाभावादो । एत्थ वि एक्क-
तीसं रसभेदा परूवेदव्वा ।

दुग्ंधाओ ॥ ७६२ ॥

सुरहिग्ंधो दुरहिग्ंधो त्ति वे चेव गंधभंगा संखेवेण । विसेसदो पुण सुरहिग्ंधो
दुरहिग्ंधो वि अणेयविहो, जाइ-केयइ णेमालियादिफुल्लेसु अणेयगंधुवल्लभादो । एदेहि
दोहि गंधेहि ओरालियपरमाणू कमेण संजुत्ता होति, वगणाओ पुण अक्कमक्कमेहि

कुछ कृष्णवर्णवाली होती है, कुछ नीलवर्णवाली होती हैं, कुछ पीतवर्णवाली होती हैं और
कुछ मिश्रवर्णवाली होती हैं इसलिए इनके पाँच वर्ण बन जाते हैं ।

शंका— यदि ऐसा है तो औदारिकशरीरवर्णनाके इकतीस वर्णके भेद प्राप्त होते हैं?

समाधान— वहीं, क्योंकि, पाँच वर्णसे संयोगी भेद सर्वथा पृथग्भूत नहीं होते ।

पाँच रसवाली होती हैं । ७६१ ।

औदारिकशरीर वर्णनाओंमें तित्त, कटुक, कषाय, आम्ल और मधुरके भेदसे पाँच
रस होते होते हैं । ये पाँचों रस एक एक परमाणुमें एक साथ नहीं होते हैं किन्तु क्रमसे होते
हैं । परन्तु वर्णनाओंमें अक्रमसे होते हैं और क्रमसे भी होते हैं, क्योंकि, अनन्तानन्त परमाणुओंके
समुदयसमागमसे उत्पन्न हुई वर्णनाओंमें पाँच वर्णोंके समान पाँच रसोंकी अक्रमसे वृत्ति होनेमें
कोई विरोध नहीं है । यहाँ पर भी इकतीस रसके भेद कहने चाहिए ।

विशेषार्थ— रसके मूल भेद पाँच हैं, इसलिए प्रत्येक भेद पाँच हुए । इन पाँचोंके
द्विसंयोगी भेद दस होते हैं, त्रिसंयोगी भेद भी दस होते हैं, चतुःसंयोगी भेद पाँच होते हैं और
पाँचसंयोगी भेद एक होता है । इस प्रकार कुल भेद इकतीस होते हैं । पाँच वर्णोंके इकतीस
भेद इसी प्रकार ले आने चाहिए ।

दो गन्धवाली होती हैं । ७६२ ।

सुरभिगन्ध और दुरभिगन्ध इस प्रकार संक्षेपसे गन्धके भंग दो ही हैं । विशेषकी अपेक्षा
तो सुरभिगन्ध और दुरभिगन्ध अनेक प्रकार का होता है, क्योंकि, जाति, केतकी और नेमाली
आदि फूलोंमें अनेक प्रकारकी गन्ध उपलब्ध होती हैं । इन दो प्रकार की गन्धोंसे औदारिक
परमाणु क्रमसे संयुक्त होते हैं । परन्तु वर्णनायें क्रमसे और अक्रमसे संयुक्त होती हैं, क्योंकि

संजुज्जंति, सावयवेसु तदविरोहादो ।

अट्ठफासाओ ॥ ७६३ ॥

कक्कड-मउअ-णिद्ध- हल्लुवख-गुरु-लहु-सीदुण्णभेदेण अट्ठ मूलफासा होंति । संजोगेण पुण दुसदपंचवण्णफासभेदा । ते एत्थ ण गहिवा, संगहे असंगहस्सअभावादो । एदेहि अट्ठपासेहि ओरालियवगणाओ अवकमवकमेहि संजुत्ताओ होंति ।

वेउव्वियसरीरदव्ववगणाओ पदेसट्ठवाए अणंताणंत-
पदेसियाओ ॥ ७६४ ॥

पंचवण्णाओ ॥ ७६५ ॥

पंचरसाओ ॥ ७६६ ॥

दुगंधाओ ॥ ७६७ ॥

अट्ठफासाओ ॥ ७६८ ॥

एदेसि पंचणं सुत्ताणं जहा ओरालियसरीरस्स पंचसुत्तपरुवणा कवा तहा कायव्वा ।

सावयव पदार्थोंमें ऐसा होनेमें कोई विरोध नहीं आता ।

आठ स्पर्शवाली होती हैं ॥ ७६३ ॥

ककंश, मृदु, स्निग्ध, रुक्ष, गुरु, लघु, शीत और उष्णके भेदसे मूल स्पर्श आठ होते हैं । परन्तु संयोगसे दो सी पचधन स्पर्शके भेद होते हैं । उनका यहां पक्ष ग्रहण नहीं किया है, क्योंकि, संग्रहमें प्रत्येक का अभाव है । इन आठ स्पर्शोंसे औदारिकशरीरवर्गणार्थे क्रमसे और अक्रमसे संयुक्त होती हैं ।

वैक्रियिक शरीर द्रव्यवर्गणार्थे प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तानन्त प्रदेशवाली होती हैं ॥ ७६४ ॥

वे पांच वर्णवाली होती हैं ॥ ७६५ ॥

पांच रसवाली होती हैं ॥ ७६६ ॥

दो गन्धवाली होती हैं ॥ ७६७ ॥

आठ स्पर्शवाली होती हैं ॥ ७६८ ॥

जिस प्रकार औदारिकके पांच सूत्रोंका कथन किया है उसी प्रकार इन पांच सूत्रोंका कथन करना चाहिये ।

**आहारसरीरववगणाओ पदेसट्ठवाए अणंताणंतपदे-
सियाओ ॥ ७६९ ॥**

सुगमं ।

पंचवण्णाओ ॥ ७७० ॥

जदि एदाओ पंचवण्णाओ, आहारसरीरं धवलं चेवे त्ति कथं जुज्जवे ? ण,
विस्सामुवचयस्स धवलत्तं दट्ठूण तदुवदेसादो ।

पंचरसाओ ॥ ७७१ ॥

एत्थ असुहरसाणं संभवे संते आहारसरीरस्स महुत्तं कथं जुज्जवे ? ण,
अप्पसत्थरसाणं वग्गणाणं अवत्तरसभावेण तत्थ महररमुवदेसादो ।

दुग्ंधाओ ॥ ७७२ ॥

एत्थ वि आहारसरीरस्स सुअंधत्तं पुठ्ठं व परुवेयव्वं ।

अट्ठपासाओ ॥ ७७३ ॥

**आहारकशरीरवर्णणायें प्रवेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तानन्त प्रवेशवाली होती
हैं ॥७६९॥**

यह सूत्र सुगम है ।

वे पाँच वर्णवाली होती हैं ॥७७०॥

शंका- यदि ये पाँच वर्णवाली होती हैं तो आहार शरीर धवल ही होता है यह
कैसे बन सकता है ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, विस्सामुवचयकी धवलताको देखकर वह उपदेश दिया है ।

पाँच रसवाली होती हैं ॥७७१॥

शंका- यहाँ अशुभ रस की सम्भावना होने पर आहारकशरीर मधुर होता है यह
कैसे बन सकता है ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, अप्रशस्त रसवाली वर्णणाओंका अव्यक्त रस होनेसे वहाँ
मधुर रसका उपदेश दिया गया है ।

दो गन्धवाली होती हैं ॥७७२॥

यहाँ पर भी आहारकशरीरका सुगन्धपना पहलेके समान कहना चाहिये ।

आठ स्पर्शवाली होती हैं ॥७७३॥

❀ मयतिपाठोऽयम् । तां प्रती ' सुअंधत्तं परुवेयव्वं ' का० प्रती ' सुअत्तं परुवेयव्वं ' इति पाठः ।

एत्थ वि-आहारसरीरस्स सुहपासो पुव्वं परूवेयव्वो । अथवा असुहरसगंध-
पासवर्गणाओ आहारसरीरागारेण परिणमंतीओ सुहरस-गंध-पासेहि परिणमंति ति
वत्तव्वं* ।

तेजासरीरदव्ववर्गणाओ पदेसट्टुवाए अणंताणंत-
पदेसियाओ ॥ ७७४ ॥

पंचवर्णाओ ॥ ७७५ ॥

पंचरसाओ ॥ ७७६ ॥

दोगंधाओ ॥ ७७७ ॥

सुगमभेदं सुत्तचउक्कं ।

चदुपासाओ ॥ ७७८ ॥

णिद्ध-लहुक्खणमेक्कदरो सीदुण्हाणमेक्कदरो कक्खड-भउआणमेक्कदरो गरुअ-
लहुआणमेक्कदरो पासो* । एदम्मि खंधे पडिवक्खपासो ण होदि ति कुदो णव्वदे ?
चत्तारि पासा ति णिद्देसण्णहाणुववत्तीदो ।

यहां पर भी आहारकशरीरका शुभ स्पर्श पहले के समान कहना चाहिए । अथवा अशुभ
रस, अशुभ गन्ध और अशुभ स्पर्शवाली वर्गणायें आहारकशरीररूपसे परिणमन करती हुई
शुभ रस, शुभ गन्ध और शुभ स्पर्शरूपसे परिणमन करती हैं ऐसा यहाँ पर कहना चाहिए ।

तेजसशरीरकी द्रव्यवर्गणायें प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तानन्त प्रदेशवाली
होती हैं ॥ ७७४ ॥

वे पाँच वर्णवाली होती हैं । ७७५ ।

पांच रसवाली होती हैं । ७७६ ।

दो गन्धवाली होती हैं । ७७७ ।

ये चार सूत्र सुगम हैं ।

चार स्पर्शवाली होती हैं । ७७८ ।

स्निग्ध और रूक्षमेंसे कोई एक, शीत और उष्णमेंसे कोई एक, कर्कश और मृदुमेंसे कोई
एक तथा गुरु और लघुमेंसे कोई एक स्पर्श होता है ।

शंका- इस स्कन्धमें प्रतिपक्ष स्पर्श नहीं होता है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान- सूत्रमें चार स्पर्शोंका निर्देश अन्यथा बन नहीं सकता है, इससे जाना जाता है।

* ता० प्रती ' वत्तव्वं ' इति स्थाने ' घेतव्वं ' इति पाठः । * ता० प्रती '—मेक्कदरो पासो '
इति यावत् सूत्रत्वेन निबद्धं ।

भासा-मण-कम्मइयसरीरदव्ववगणाओ पदेसट्ठदाए अणं-
ताणंतपदेसियाओ ॥ ७७९ ॥

पंचवण्णाओ ॥ ७८० ॥

पंचरसाओ ॥ ७८१ ॥

दुगंधाओ ॥ ७८२ ॥

चदुपासाओ ॥ ७८३ ॥

एदेसि पंचणं सुत्ताणमत्थो जहा तेजासरीरस्स पंचणं सुत्ताणं परूविदो
तहा परूवेयव्वो ।

एवं पदेसट्ठदा समत्ता ।

अप्पाबहुगं दुविहं- पदेसअप्पाबहुअं चेव ओगाहणअप्पा--
बहुअं चेव ॥ ७८४ ॥

पुव्वं बाहिरवगणाए पंचसरीरागारेण परिणदपोग्गलाणमप्पाबहुगं परूविदं ।
संपहि पंचणं सरीराणं वगणाणं पदेसस्स थोवबहुत्तपरूवणट्ठं पदेसअप्पाबहुगमागदं

माषाद्रव्यवर्गणायें, मनोद्रव्यवर्गणायें और कर्मणशरीरद्रव्यवर्गणायें प्रदेशा-
र्थताकी अपेक्षा अनन्तानन्त प्रदेशवाली होती हैं ॥ ७७९ ॥

वे पांच वर्णवाली होती हैं ॥ ७८० ॥

पांच रसवाली होती हैं ॥ ७८१ ॥

दो गन्धवाली होती हैं ॥ ७८२ ॥

चार स्पर्शवाली होती हैं ॥ ७८३ ॥

तैजसशरीरके पांच सूत्रोंका अर्थ जिस प्रकार कहा है उस प्रकार इन पांच सूत्रोंका
अर्थ कहना चाहिये ।

इस प्रकार प्रदेशार्थता समाप्त हुई ।

अल्पबहुत्व दो प्रकारका है- प्रदेशअल्पबहुत्व और अवगाहना अल्पबहुत्व ॥ ७८४ ॥

पहले बाह्य वर्गणा अनुयोगद्वारमें पांच शरीररूपसे परिणत हुए पुद्गलोंका अल्पबहुत्व
कहा है । अब पांच शरीरोंकी वर्गणाओंके प्रदेशोंके अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए

पंचसरीरपाओगवर्गणाणं पि थोवबहुत्तमभंतरवर्गणाए परूविदं ति एत्थ पदेस-
अप्पाबहुए ण कज्जमिदि वोत्तुं ण जूत्तं, ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरपाओग-
वर्गणाणं थोवबहुत्तस्स तत्थ परूवणाभावादो । पंचणं सरीराणमोगाहणप्पाबहुअं
वेयणखेत्तविहाणे परूविदं ति एत्थ ण परूविज्जदे । किंतु पंचणं सरीराणं पाओग-
वर्गणाणमोगाहणाणं थोवबहुत्तपरूवणट्टमोगाहणअप्पाबहुअमागयं ।

पदेसअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवाओ ओरालियसरीरदव्ववर्गणाओ
पदेसट्ठदाए ॥ ७८५ ॥

एदमप्पाबहुअं जोगेणागच्छमाणएगसमयपबद्धवर्गणाणं परूविदं ण सव्ववर्गणाणं ।
कुदो एवं णव्वदे? आहारसरीरवर्गणाए वर्गणग्गेण पदेसग्गेण च तेजासरीरवर्गणादो
अणंतगुणाए तत्तो अणंतगुणहीणत्तविरोहादो । तेण एगेण जोगेण आगच्छमाण-
ओरालियसरीरदव्ववर्गणाओ पदेसग्गेण वर्गणग्गेण च थोवाओ त्ति भणिदं ।
आहारसरीरवर्गणाए वर्गणग्गे असंखेज्जे खंडे कदे तत्थ बहुभागा आहारवर्गणाए
वर्गणग्गं होदि, सेसे असंखेज्जे खंडे कदे बहुभागा वेउव्वियसरीरपाओगवर्गणग्गं
होदि । सेसेगभाओ ओरालियपाओगवर्गणग्गं होदि । तेण थोववर्गणाहितो थोवाओ

प्रदेश अल्पबहुत्व आया है । पाँच शरीरोंके योग्य वर्गणाओंका भी अल्पबहुत्व आभ्यन्तर वर्गणा
अनुयोगद्वारमें कहा है, इसलिए यहाँ पर प्रदेश अल्पबहुत्वसे कोई प्रयोजन नहीं है ऐसा कहना
योग्य नहीं है, क्योंकि, औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके योग्य वर्गणा-
ओंके अल्पबहुत्वका वहाँ पर कथन नहीं किया है । पाँच शरीरों की अवगाहनाका अल्प-
बहुत्व वेदनाक्षेत्रविधान अनुयोगद्वारमें कहा है, इसलिए उसका यहाँ पर कथन नहीं करते हैं
किन्तु पाँच शरीरोंके योग्य वर्गणाओंकी अवगाहनाओंके अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए
अवगाहना अल्पबहुत्व यहाँपर आया है ।

प्रदेशअल्पबहुत्व-औदारिकशरीर द्रव्यवर्गणार्थे प्रदेशार्थताकी अपेक्षा सबसे
स्तोक हैं । ७८५ ।

यह अल्पबहुत्व योगसे आनेवाले एक समयप्रबद्धकी वर्गणाओंका कहा है सब
वर्गणाओंका नहीं ।

शंका-- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- वर्गणाग्र और प्रदेशाग्रकी अपेक्षा तैजसशरीरवर्गणासे आहारवर्गणा
अतन्तगुणी होती है । उससे अतन्तगुणी हीन होने में विरोध आता है । इसलिए एक योग से
आनेवाली औदारिकशरीर द्रव्यवर्गणार्थे प्रदेशाग्र और वर्गणाग्रकी अपेक्षा स्तोक हैं यह कहा है ।

आहारवर्गणाके वर्गणाग्रके असंख्यात खण्ड करने पर वहाँ बहुभाग प्रमाण आहारक
शरीर प्रायोग्य वर्गणाग्र होता है । शेष के असंख्यात खण्ड करने पर बहुभागप्रमाण वैक्रियिक-
शरीरप्रायोग्य वर्गणाग्र होता है । तथा शेष एक भागप्रमाण औदारिकशरीरप्रायोग्य वर्गणाग्र

❀ ता० प्रती 'वर्गणेण च' इति पाठः ।

चेव आगच्छंति त्ति ओरालियसरीरवग्गणाणं थोवत्तं भणिदं त्ति के वि भणंति ।
 एसो अत्थो ण भल्लयो, तेजामरीरवग्गणादिमु एदस्स अत्थस्स पवुत्तीए अदंसणादो ।
 तेण पुढ्विल्लत्थो चेव घेतव्वो ।

वेउव्वियसरीरदव्वग्गणाओ पदेसट्ठदाए असंखेज्जगुणाओ ॥७८६॥

जेण जोगेण ओरालियसरीरट्ठमाहारवग्गणादो ओरालिय०वग्गणाओ एगसम-
 एणागमणपाओग्गाओ ताहिंतो तत्तो तम्हि चेव समए अण्णस्स जीवस्स तेणेव जोगेण
 वेउव्वियसरीरट्ठमागमसपाओग्गाओ असंखेज्जगुणाओ । कुदो ? सभावियादो । को
 गुणगारो ? सेढीए असंखेज्जदिभाणो ।

आहारसरीरदव्वग्गणाओ पदेसट्ठदाए असंखेज्जगुणाओ ॥७८७॥

तम्हि चेव समए तेणेव जोगेण आहारवग्गणादो आहारसरीरदव्वग्गणाओ
 असंखेज्जगुणाओ । कुदो ? सभावियादो । को गुणगारो ? सेढीए असंखेज्जदिभाणो ।

तेजासरीरदव्वग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंतगुणाओ ॥७८८॥

होता है, इसलिए स्तोक वर्गणाओंमेंसे स्तोक ही आते हैं, इसलिए औदारिकशरीरवर्गणायें स्तोक
 कही हैं ऐसा कितने ही आचार्य कथन करते हैं किन्तु यह अर्थ भला नहीं है, क्योंकि, तैजस-
 शरीर वर्गणा आदिमें इस अर्थकी प्रवृत्ति नहीं देखी जाती, इसलिए पहलेका अर्थ ही ग्रहण
 करना चाहिए ।

वैक्रियिकशरीरद्रव्यवर्गणायें प्रदेशार्थताकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७८६॥

जिस योगसे औदारिकशरीरके लिए आहारवर्गणाओंमेंसे औदारिकशरीरवर्गणायें एक
 समयमें आगमनप्रायोग्य होती हैं उन्हीं वर्गणाओंमेंसे उसी समयमें अन्य जीवके उसी योगसे
 वैक्रियिकशरीरके लिए आगमनयोग्य वर्गणायें असंख्यातगुणी होती हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव
 है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

आहारकशरीरद्रव्यवर्गणायें प्रदेशार्थताकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७८७॥

उसी समयमें उसी योगसे आहारवर्गणामेंसे आनेवाली आहारकशरीरद्रव्यवर्गणायें
 असंख्यातगुणी होती हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें
 भागप्रमाण गुणकार है ।

तैजसशरीरद्रव्यवर्गणायें प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तगुणी हैं ॥७८८॥

* ता० प्रती ' असखे०गुणाओ ? (मणदव्वग्गणाओअसंखेज्जगुणाओ) । कुदो इति पाठः । तथा
 का० प्रती कृतसंशोधनमवलोक्य म० प्रतावपि असंज्जगुणाओ मणदव्वग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ । कुदो
 इति पाठः प्रतिभाति ।

तस्मिं चेव समए तेणेव जोगेण तेजासरीरदव्ववर्गणाओ तेजासरीरद्वुमागच्छ-
माणवर्गणाओ पदेसग्गेण अणंतगुणाओ । कुदो ? साभावियाओ । को गुणगारो ?
अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ।

**भासा-मण-कम्मइयसरीरदव्ववर्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंत-
गुणाओ ॥ ७८९ ॥**

तस्मिं चेव समए तेणेव जोगेण भासावर्गणाओ भासापज्जाएण परिणममाण-
वर्गणाओ पदेसग्गेण अणंतगुणाओ । तस्मिं चेव समए तेणेव जोगेण मणदव्ववर्गणाओ
दव्वमणद्वुमागच्छमाणवर्गणाओ पदेसग्गेण अणंतगुणाओ । तस्मिं चेव समए तेणेव
जोगेण कम्मइयदव्ववर्गणाओ अट्ठणं कम्माणमागच्छमाणवर्गणाओ पदेसग्गेण अण-
ंतगुणाओ । सव्वत्थ गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ।

एवं पदेसअप्पाबहुअं समत्तं ।

**ओग्गाहणअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवाओ कम्मइयसरीरदव्व-
वर्गणाओ ओग्गाहणाए ॥ ७९० ॥**

कुदो ? एगस्मिं घणंगुले अंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदे एगकम्मइय -

उसी समयमें उसी योगके द्वारा तैजसशरीरद्रव्यवर्गणाओंमेंसे तैजसशरीरके लिए
आनेवाली वर्गणायें प्रदेशाग्रकी अपेक्षा अनन्तगुणी होती हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । गुणकार
क्या है ? अवयवोंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है ।

**भाषाद्रव्यवर्गणायें मनोद्रव्यवर्गणायें और कार्मणशरीरद्रव्यवर्गणायें प्रदेशार्थता
की अपेक्षा अनन्तगुणी हैं ॥ ७८९॥**

उसी समयमें उसी योगसे भाषावर्गणाओंमेंसे भाषारूप पर्यायसे परिणमन करनेवाली
वर्गणायें प्रदेशाग्रकी अपेक्षा अनन्तगुणी होती हैं । उसी समयमें उसी योगसे मनोद्रव्यवर्गणाओं-
मेंसे द्रव्यमनके लिए आनेवाली वर्गणायें प्रदेशाग्रकी अपेक्षा अनन्तगुणी होती हैं । उसी समयमें
उसी योगसे कार्मणद्रव्यवर्गणाओंमेंसे आठों कर्मोंके लिए आनेवाली वर्गणायें प्रदेशाग्रकी अपेक्षा
अनन्तगुणी होती हैं । सर्वत्र गुणकार अवयवोंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण
होता है ।

इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

**अवगाहनाअल्पबहुत्व— कार्मणशरीरद्रव्यवर्गणायें अवगाहनाकी अपेक्षा सबसे
स्तोक हैं ॥ ७९०॥**

क्योंकि, एक घनांगुलमें अंगुलके असंख्यातवें भागका भाग देने पर एक कार्मणवर्गणाकी

वर्गणाए ओगाहणुप्पत्तीदो ।

मणदव्ववर्गणाओ ओगाहणाए* असंखेज्जगुणाओ ॥ ७९१ ॥

को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । घणंगुलभागहारादो असंखेज्ज-
गुणहीणा कथमणंतगुणहीणवर्गणाणमोगाहणा असंखेज्जगुणा होज्ज ? ण एस दोसो,
घणागारेण द्विलोहगोलियाए ओगाहणादो थोवपदेसस्स फेणपुंजस्स ओगाहणाए
बहुत्तुवलंभादो । एदमत्थपदमुवरि सव्वत्थ वत्तव्वं ।

भासादव्ववर्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ ॥ ७९२ ॥

को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो ।

तेजासरीरदव्ववर्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ ॥ ७९३ ॥

को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो एसो णव्वदे । अविरुद्धा-
इरियवयणादो ।

आहारसरीरदव्ववर्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ ॥ ७९४ ॥

अवगाहना उत्पन्न होती है ।

मनोद्रव्यवर्गणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥ ७९१ ॥

गुणकार क्या है ? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

शंका— अनन्तगुणी हीन वर्गणाओंकी घनांगुलके भागहारसे असंख्यातगुणी हीन
अवगाहना असंख्यातगुणी कैसे हो सकती है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, घनाकाररूपसे स्थित लोहकी गोलाकी
अवगाहनासे स्तोक प्रदेशवाले फेनपुंजकी अवगाहना बहुत उपलब्ध होती है ।

यह अर्थपद ऊपर सर्वत्र कहना चाहिए ।

भाषाद्रव्यवर्गणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥ ७९२ ॥

गुणकार क्या है ? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

तेजसशरीरद्रव्यवर्गणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥ ७९३ ॥

गुणकार क्या है ? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— अविरुद्ध आचार्य वचनसे जाना जाता है ।

आहारकशरीरद्रव्यवर्गणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥ ७९४ ॥

* ता० प्रती 'वर्गणाए (ओ) ओगाहणाए' का० प्रती 'वर्गणाए ओगाहणाए' इति पाठः ।

❖ ता० प्रती 'वर्गणाए (ओ) ओगाहणाओ (ए) असंखेज्ज—' इति पाठः । ❖ का० प्रती 'वर्गणाए
ओगाहणाए' इति पाठः । ❖ ता० प्रती 'ओगाहणाओ (ए) असंखेज्जगुणाओ' इति पाठः ।

को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जविभागो ।

वेउव्वियसरीरदव्ववर्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्ज-
गुणाओ ॥ ७९५ ॥

को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जविभागो ।

ओरालियसरीरदव्ववर्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्ज-
गुणाओ ॥ ७९६ ॥

को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जविभागो ।

एवमोगाहणप्पावहुए समत्ते बंधणिज्जं समत्तं होदि ।

जं तं बंधविहाणं तं चउव्विहं-पयडिबंधो द्दिठ्ठिबंधो
अणुभागबंधो पदेसबंधो चेदि ॥ ७९७ ॥

एदेसि चट्ठणं बंधाणं विहाणं भूदबलिभडारएण महाबंधे सप्पवंचेण लिहिवं
ति अम्मेहि एत्थ ण लिहिवं । तदो सयले महाबंधे एत्थ परुविदे बंधविहाणं समप्पदि ।
एवं बंधणअणुयोगद्वारं समत्तं ।

गुणकार क्या है ? अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

वैक्रियिकशरीरद्रव्यवर्गणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७९५॥

गुणकार क्या है ? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

औदारिकशरीरद्रव्यवर्गणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७९६॥

गुणकार क्या है ? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

इसप्रकार अवगाहना अल्पबहुत्वके समाप्त होने पर

बन्धनीय अनुयोगद्वार समाप्त होता है ।

जो बन्धविधान है वह चार प्रकारका है- प्रकृतिबन्ध, स्थितिबन्ध, अनु-
भागबन्ध और प्रदेशबन्ध ॥ ७९७ ॥

इन चारों बन्धोंका विधान भूतबलि भट्टारकने महाबन्धमें विस्तारके साथ लिखा है,
इसलिए हमने यहाँ पर नहीं लिखा है । इसलिए सकल महाबन्धके यहाँ पर कथन करने पर
बन्धविधान समाप्त होता है ।

इसप्रकार बन्धन अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

❀ का०प्रती ' -णप्पावहुएमु वुत्ते बंधणिज्जं ' इति पाठः ।

१ बंधणअणुयोगदारसुत्ताणि

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०	सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
१	बंधणे त्ति चउव्विहा कमविभासा- बंधो बंधगा बंधणिज्जं बंधविहाणे त्ति ।	१	१०	जो सो दव्वबंधो णाम सो थप्पो ।	७
२	जो सो बंधो णाम सो चउव्विहो- णामबंधो ढुवणबंधो दव्वबंधो भावबंधो चेदि ।	२	११	जो सो भावबंधो णाम सो दुविहो- आगमदो भावबंधो चेव णोआगमदो भावबंधो चेव ।	७
३	बंधणयविभासणदाए को णओ के बंधे इच्छदि ।	२	१२	जो सो आगमदो भावबंधो णाम तस्स इमो णिहेसो- ढुदं जिदं परिजिदं वायणोवगदं सुत्तसमं अत्थसमं गंथसमं णामसमं घोससमं । जा तत्थ वायणा वा पुच्छणा वा पडिच्छणा वा परियट्टणा वा अणुपेहणा वा थय-थुदि-धम्मकहा वा जे चामण्णे एवमादिया उवजोगा भावे त्ति कट्टु जावदिया उवजुत्ता भावा सो सब्बो आगमदो भावबंधो णाम ।	७
४	णेगम-व्वहार-संगहा सब्बे बंधे ।	३	१३	जो सो णोआगमदो भावबंधो णाम सो दुविहो- जीवभावबंधो चेव अजीव- भावबंधो चेव ।	९
५	उजुसुदो ढुवणबंधं च णेच्छदि ।	३	१४	जो सो जीवभावबंधो णाम सो त्तिविहो- विवागपच्चइयो जीवभाव- बंधो चेव अविवागपच्चइयो जीवभाव- बंधो चेव तदुभयपच्चइओ जीवभाव- बंधो चेव ।	९
६	सद्धणओ णामबंधं भावबंधं च इच्छदि ।	३	१५	जो सो विवागपच्चइओ जीवभावबंधो णाम तत्थ इमो णिहेसो- देवे त्ति वा मणुस्से त्ति वा तिरिक्खे त्ति वा णेरइए त्ति वा इत्थिवेदे त्ति वा पुरिसवेदे त्ति वा णवुंसयवेदे त्ति वा कोहवेदे त्ति वा माणवेदे त्ति वा मायवेदे त्ति वा लोहवेदे त्ति वा रागवेदे त्ति वा दोसवेदे त्ति वा मोहवेदे त्ति वा किण्हलेस्से त्ति वा णीललेस्से त्ति वा काउलेस्से त्ति वा	
७	जो सो णामबंधो णाम सो जीवस्स वा अजीवस्स वा जीवाणं वा अजीवाणं वा जीवस्स च अजीवस्स च जीवस्स । च अजीवाणं च जीवाणं च अजीवस्स च जीवाणं च अजीवाणं च जस्स णामं कीरदि बंधो त्ति सो सब्बो णामबंधो णाम ।	४			
८	जो सो ढुवणबंधो णाम सो दुविहो- सब्भावट्टाणबंधो चेव असब्भाव- ढुवणबंधो चेव ।	४			
९	जो सो सब्भावासब्भावढुवणबंधो णाम तस्स इमो णिहेसो- कट्टकम्मेसु वा चित्तकम्मेसु वा पोत्तकम्मेसु वा लेप्प- कम्मेसु वा लेणकम्मेसु वा सेलकम्मेसु वा गिहकम्मेसु वा भित्तिकम्मेसु वा दंतकम्मेसु वा भेंडकम्मेसु वा अक्खो वा वराडओ वा जे चामण्णे एव- मादिया सब्भाव-असब्भावढुवणाए ठविज्जदि बंधो त्ति सो सब्बो सब्भाव- असब्भावढुवणबंधो णाम ।	५			

સૂ. સં.

સૂત્રાણિ

પૃ. સં.

સૂ. સં.

સૂત્રાણિ

પૃ. સં.

તેઉલેસ્સે તિ વા પમ્મલેસ્સે તિ વા
સુવ્વકલેસ્સે તિ વા અસંજદે તિ વા
અવિરદે તિ વા અણ્ણાણે તિ વા
મિચ્છાદિટ્ઠિ તિ વા જે ચામણ્ણે એવ-
માદિયા કમ્મોદયપચ્ચદ્વયો ઉદયવિવાગ-
ણપ્પણ્ણા ભાવા સો સવ્વો વિવાગ-
પચ્ચદ્વયો જીવભાવબંધો ણામ । ૧૧

૧૬ જો સો અવિવાગપચ્ચદ્વયો જીવભાવબંધો
ણામ સો દુન્નિહો- ઉવસમિઓ અવિ-
વાગપચ્ચદ્વયો જીવભાવબંધો ચેવ યદ્વયો
અવિવાગપચ્ચદ્વયો જીવભાવબંધો ચેવ । ૧૨

૧૭ જો સો ઓવસમિયો અવિવાગપચ્ચદ્વયો
જીવભાવબંધો ણામ તસ્સ ઇમો
ણિદ્દેસો- સે ઉવસંતકોહે ઉવસંતમાણે
ઉવસંતમાએ ઉવસંતલોહે ઉવસંતરા
ઉવસંતદોસે ઉવસંતમોહે ઉવસંત-
કસાયવીયરાગલ્લદુયત્થે ઉવસમિયં
સમ્મત્તં ઉવસમિયં ચારિત્તં જે
ચામણ્ણે એવમાદિયા ઉવસમિયા ભાવા
સો સવ્વો ઉવસમિયો અવિવાગપચ્ચ-
દ્વયો જીવભાવબંધો ણામ । ૧૪

૧૮ જો સો યદ્વયો અવિવાગપચ્ચદ્વયો જીવ-
ભાવબંધો ણામ તસ્સ ઇમો ણિદ્દેસો-
સે સ્ત્રીણકોહે સ્ત્રીણમાણે સ્ત્રીણમાયે
સ્ત્રીણલોહે સ્ત્રીણરાગે સ્ત્રીણદોસે સ્ત્રીણ-
મોહે સ્ત્રીણકસાયવીયરાગલ્લદુમત્થે
યદ્વયસમ્મત્તં યદ્વયચારિત્તં યદ્વયા
દાણલદ્ધી યદ્વયા લાહલદ્ધી યદ્વયા
ભોગલદ્ધી યદ્વયા પરિભોગલદ્ધી યદ્વયા
વીરિયલદ્ધી કેવલણાણં કેવલદંસણં
સિદ્ધે બુદ્ધે પરિણિવ્વુદે સવ્વદુક્ખાણ-
મંતયડે તિ જે ચામણ્ણે એવમાદિયા
યદ્વયા ભાવા સો સવ્વો યદ્વયો અવિ-
વાગપચ્ચદ્વયો જીવભાવબંધો ણામ । ૧૫

૧૯ જો સો તદુમયપચ્ચદ્વયો જીવભાવબંધો
ણામ તસ્સ ઇમો ણિદ્દેસો- યદ્વયો-
સમિયં એઈદિયલદ્ધિ તિ વા યદ્વયો-

સમિયં વીઈદિયલદ્ધિ તિ વા યદ્વયો-
સમિયં તીઈદિયલદ્ધિ તિ વા યદ્વયો-
સમિયં ચરિદિયલદ્ધિ તિ વા
યદ્વયોસમિયં પંચિદિયલદ્ધિ તિ વા
યદ્વયોસમિયં મદિઅણ્ણાણિ તિ વા
યદ્વયોસમિયં સુદઅણ્ણાણિ તિ વા
યદ્વયોસમિયં વિહંસણાણિ તિ વા
યદ્વયોસમિયં આભિણિબોહિયણાણિ
તિ વા યદ્વયોસમિયં સુદણાણિ તિ વા
યદ્વયોસમિયં ઓહિણાણિ તિ વા
યદ્વયોસમિયં મળપજ્જવણાણિ તિ વા
યદ્વયોસમિયં ચવલ્લુદંસણિ તિ વા
યદ્વયોસમિયં અચવલ્લુદંસણિ તિ વા
યદ્વયોસમિયં ઓહિદંસણિ તિ વા
યદ્વયોસમિયં સમ્મામિચ્છત્તલદ્ધિ તિ
વા યદ્વયોસમિયં સમ્મત્તલદ્ધિ તિ વા
યદ્વયોસમિયં સંજમાસંજમલદ્ધિ તિ
વા યદ્વયોસમિયં સંજમલદ્ધિ તિ વા
યદ્વયોસમિયં દાણલદ્ધિ તિ વા યદ્વયો-
સમિયં લાહલદ્ધિ તિ વા યદ્વયોસમિય
ભોગલદ્ધિ તિ વા યદ્વયોસમિયં પરિ-
ભોગલદ્ધિ તિ વા યદ્વયોસમિયં
વીરિયલદ્ધિ તિ વા યદ્વયોસમિયં સે
આયારધરે તિ વા યદ્વયોસમિયં
સૂદયડધરે તિ વા યદ્વયોસમિયં
ઠાણધરે તિ વા યદ્વયોસમિયં સમ-
વાયધરે તિ વા યદ્વયોસમિયં વિયાહ-
પણ્ણતિધરે તિ વા યદ્વયોસમિયં
ણાહધમ્મધરે તિ વા યદ્વયોસમિયં
ઉવાસયજ્ઞેણધરે તિ વા યદ્વયોસમિયં
અંતયડધરે તિ વા યદ્વયોસમિયં
અણુત્તરોવવાદિયદત્તધરે તિ વા
યદ્વયોસમિયં પળ્ણવાગરણધરે તિ વા
યદ્વયોસમિયં વિવાગસુત્તધરે તિ વા
યદ્વયોસમિયં દિટ્ઠિવાદધરે તિ વા
યદ્વયોસમિયં ગણિ તિ વા યદ્વયો-
સમિયં વાચગે તિ વા યદ્વયોસમિયં

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०	सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	दसपुव्वहरे त्ति वा खओवसमियं चोदसपुव्वहरे त्ति वा जे चामण्णे एवमादिया खओवसमियभावा सो सव्वो तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो णाम ।	१९		पओअपरिणदा वण्णा वण्णा विस्ससा- परिणदा पओअपरिणदा सद्दा सद्दा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा गंधा गंधा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा रसा रसा विस्ससापरिणदा पओअ- परिणदा फासा फासा विस्ससा- परिणदा पओअपरिणदा गदी गदी विस्ससापरिणदा (पओअपरिणदा ओगाहणा ओगाहणा विस्ससा- परिणदा) पओअपरिणदा संठाणा संठाणा विस्ससापरिणदा पओअ- परिणदा खंधा खंधा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा खंधदेसा खंधदेसा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा खंधपदेसा खंधपदेसा विस्ससा- परिणदा जे चामण्णे एवमादिया पओअ-विस्ससापरिणदा संजुत्ता भावा सो सव्वो तदुभयपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम ।	२६
२०	जो सो अजीवभावबंधो णाम सो तिविहो- विवागपच्चइयो अजीव- भावबंधो चेव अविवागपच्चइयो अजीवभावबंधो चेव तदुभयपच्चइयो अजीवभावबंधो चेव ।	२२	२४	जो सो थप्पो दव्वबंधो णाम सो दुविहो- आगमदो दव्वबंधो चेव णोआगमदो दव्वबंधो चेव ।	२७
२१	जो सो विवागपच्चइयो अजीव- भावबंधो णाम तस्स इमो णिहेसो- पओगपरिणदा वण्णा पओगपरिणदा सद्दा पओगपरिणदा गंधा पओग- परिणदा रसा पओगपरिणदा फासा पओगपरिणदा गदी पओगपरिणदा ओगाहणा पओगपरिणदा संठाणा पओगपरिणदा खंधा पओगपरिणदा खंधदेसा पओगपरिणदा खंधपदेसा जे चामण्णे एवमादिया पओग- परिणदसंजुत्ता भावा सो सव्वो विवागपच्चइयो अजीवभावबंधो णाम ।	२३	२५	जो सो आगमदो दव्वबंधो णाम तस्स इमो णिहेसो- णिदं जिदं परि- जिदं वायणोवगदं सुत्तसमं अत्थसमं गंधसमं णामसमं घोससमं । जा तत्थ वायणा वा पुच्छणा वा पडिच्छणा वा परियट्ठणा वा अणुपेहणा वा थय- थुदि-धम्मकहा वा जे चामण्णे एव- मादिया अणुवजोगा दव्वे त्ति कट्ठु जावदिया अणुवजुत्ता भावा सो सव्वो आगमदो दव्वबंधो णाम ।	२८
२२	जो सो अविवागपच्चइयो अजीव- भावबंधो णाम तस्स इमो णिहेसो- विस्ससापरिणदा वण्णा विस्ससा- परिणदा सद्दा विस्ससापरिणदा गंधा विस्ससापरिणदा रसा विस्ससा- परिणदा फासा विस्ससापरिणदा गदी विस्ससापरिणदा ओगाहणा विस्ससा- परिणदा संठाणा विस्ससापरिणदा खंधा विस्ससापरिणदा खंधदेसा विस्ससापरिणदा खंधपदेसा जे चामण्णे एवमादिया विस्ससापरिणदा संजुत्ता भावा सो सव्वो अविवाग- पच्चइयो अजीवभावबंधो णाम ।	२५	२६	जो सो णोआगमदो दव्वबंधो सो दुविहो- पओअबंधो चेव विस्ससा- बंधो चेव ।	२८
२३	जो सो तदुभयपच्चइयो अजीव- भावबंधो णाम तस्स इमो णिहेसो-		२७	जो सो पओअबंधो णाम सो थप्पो ।	२८
			२८	जो सो विस्ससाबंधो णाम सो	

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०	सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	दुविहो- सादियविस्ससाबंधो चेव अणादियविस्ससाबंधो चेव ।	२८	३९	जो सो कम्मबंधो णाम सो थप्पो ।	३७
२९	जो सो सादियविस्ससाबंधो णाम सो थप्पो ।	२८	४०	जो सो णोकम्मबंधो णाम सो पंचविहो- आलावणबंधो अल्लीवण- बंधो संसिलेसबंधो सरीरबंधो सरीरबंधो चेदि ।	३७
३०	जो सो अणादियविस्ससाबंधो णाम सो तिविहो- धम्मत्थिया अधम्म- त्थिया आगासत्थिया चेदि ।	२९	४१	जो सो आलावणबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो- से सगडाणं वा जाणाणं वा जुगाणं वा गड्डीणं वा गिल्लीणं वा रहाणं वा सदणाण वा सिवियाणं वा गिहाणं वा पासादाणं वा गोवुराणं वा तोरणाणं वा से कट्ठेण वा लोहेण वा रज्जुणा वा वन्नेण वा दन्नेण वा जे चामण्णे एवमादिया अण्णदव्वाणमण्णदव्वेहि आलावियाणं बंधो होदि सो सव्वो आलावणबंधो णाम ।	३८
३१	धम्मत्थिया धम्मत्थियदेसा धम्मत्थिय- पदेसा अधम्मत्थिया अधम्मत्थियपदेसा अधम्मत्थियपदेसा आगासत्थिया आगासत्थियदेसा आगासत्थियपदेसा एदासि तिण्णं प अत्थिआणमण्णोण- पदेसबंधो होदि ।	२९	४२	जो सो अल्लीवणबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो- से कड्याणं वा कुड्डाणं वा गोवरपीडाणं वा पागाराणं वा साडियाणं वा जे चामण्णे एवमा- दिया अण्णदव्वाणमण्णदव्वेहि अल्ली- विदाणं बंधो होदि सो सव्वो अल्ली- वणबंधो णाम ।	३९
३२	जो सो थप्पो सादियविस्ससाबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो- वेमादा णिद्धदा वेमादा ल्हुक्खदा बंधो ।	३०	४३	जो सो संसिलेसबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो- जहाकट्ट-जट्ठणं अण्णोण- संसिलेसिदाणं बंधो संभवदि सो सव्वो संसिलेसबंधो णाम ।	४१
३३	समणिद्धदा समल्हक्खदा भेदो ।	३०	४४	जो सो सरीरबंधो णाम सो पंचविहो- ओरालियसरीरबंधो वेउव्वियसरीर- बन्धो आहारसरीरबंधो तेयासरीरबंधो कम्मइयसरीरबंधो चेदि ।	४१
३४	णिद्धणिद्धा ण बज्झंति ल्हुक्खल्हक्खदा य पोग्गला । णिद्धल्हक्खदा य बज्झंति रूवारूवी य पोग्गला ॥	३१	४५	ओरालिय-ओरालियसरीरबंधो ।	४२
३५	वेमादा णिद्धदा वेमादा ल्हुक्खदा बंधो ।	३२	४६	ओरालिय-तेयासरीरबंधो ।	४२
३६	णिद्धस्स णिद्धेण दुराहिण ल्हुक्खस्स ल्हक्खेण दुराहिण । णिद्धस्स ल्हक्खेण ह्वेदि बंधो जहण्णवज्जे विसमे समे वा ॥	३३	४७	ओरालिय-कम्मइयसरीरबंधो ।	४२
३७	से तं बंधणपरिणामं पप्प से अब्भाणं वा मेहाणं वा संज्झाणं वा विज्जूणं वा उक्काणं वा कणयाणं वा दिसा- दाहाणं वा धूमकेदूणं वा इंदाउहाणं वा से खत्तं पप्प कालं पप्प उडुं पप्प अयणं पप्प पोग्गलं पप्प जे चामण्णे एव- मादिया अंगमलप्पहुड्डीणि बंधण- परिणामेण परिणमंति सो सव्वो सादियविस्ससाबंधो णाम ।	३४	४८	ओरालिय-तेया-कम्मइयसरीरबंधो ।	४३
३८	जो सो थप्पो पओअबंधो णाम सो दुविहो- कम्मबंधो चेव णोकम्म- बंधो चेव ।	३६	४९	वेउव्विय-वेउव्वियसरीरबंधो ।	४३
			५०	वेउव्विय-तेयासरीरबंधो ।	४३

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०	सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
५१	वेउविवय-कम्मइयसरीरबंधो ।	४३		भवन्ति-वग्गणा वग्गणदव्वसमुदा-	
५२	वेउविवय-तेया-कम्मइयसरीरबंधो ।	४३		हारो अणंतरोवणिन्ना परंपरोवणिन्ना	
५३	आहार-आहारसरीरबंधो ।	४३		अवहारो जवमज्झं पदमीमांसा अप्पा-	
५४	आहार-तेयासरीरबंधो ।	४३		बहुए त्ति ।	४९
५५	आहार-कम्मइयसरीरबंधो ।	४३	७०	वग्गणा त्ति तत्थ इमाणि वग्गणाए	
५६	आहार-तेया-कम्मइयसरीरबंधो ।	४४		सोलस अनुयोगद्वाराणि-वग्गण-	
५७	तेया-तेयासरीरबंधो ।	४४		णिवखेवे वग्गणाणयविभासणदाए	
५८	तेया-कम्मइयसरीरबंधो ।	४४		वग्गणपरूवणा वग्गणणिरूवणा, वग्ग-	
५९	कम्मइय-कम्मइयसरीरबंधो ।	४४		णधुवाधुवाणुगमो वग्गणसांतरणिरं-	
६०	सो सव्वो सरीरबंधो णाम ।	४४		तराणुगमो वग्गणओजजुम्माणुगमो	
६१	जो सो सरीरबंधो णाम सो दुविहो-			वग्गणखेत्ताणुगमो वग्गणफोसणाणुगमो	
	सादियसरीरबंधो चेव अणादिय-			वग्गणकालाणुगमो वग्गणअंतराणुगमो	
	सरीरबंधो चेव ।	४४		वग्गणभावाणुगमो वग्गणउवणयणाणु-	
६२	जो सो सादियसरीरबंधो णाम सो			गमो वग्गणपरिमाणाणुगमो वग्गणभागा-	
	जहा सरीरबंधो तहा णेदव्वो ।	४५		भागाणुगमो वग्गणअप्पाबहुए त्ति ।	५०
६३	जो अणादियसरीरबंधो णाम यथा				
	अट्टणं जीवमज्झपदेसाणं अण्णोण-			७१ वग्गणणिवखेवे त्ति छव्विहे वग्गण-	
	पदेसबंधो भवदि सो सव्वो अणादिय-			णिवखेवे- णामवग्गणा ट्ठवणवग्गणा	
	सरीरबंधो णाम ।	४६		दव्ववग्गणा खेत्तवग्गणा कालवग्गणा	
६४	जो सो थप्पो कम्मबंधो णाम यथा			भाववग्गणा चेदि ।	५१
	कम्मे त्ति तहा णेदव्वं ।	४६	७२	वग्गणणयविभासणदाए को णओ	
६५	जे ते बंधगा णाम तेसिमिमो णिहेसो-			काओ वग्गगाओ इच्छदि । णेगम-	
	गदि इंदिए काए जोगे वेदे कसाए णाणे			ववहार-संगहा सव्वाओ ।	५२
	संजमे दंसणे लेस्सा भविय सम्मत्त			७३ उजुसुदो ट्ठवणवग्गणं णेच्छदि ।	५३
	सण्णि आहारे चेदि ।	४७	७४	सट्ठणओ णामवग्गणं भाववग्गणं च	
६६	गदियान्वादेण णिरयगदीए णेरइया			इच्छदि ।	५३
	बंधा तिरिक्खा बंधा देवा बंधा मणुसा				
	बंधा वि अत्थि अबंधा वि अत्थि सिद्धा			७५ वग्गणदव्वसमुदाहारे त्ति तत्थ इमाणि	
	अबंधा । एवं खुहाबंधएक्कारसअणु-			चोदस अनुयोगद्वाराणि-वग्गणपरूवणा	
	योगहारं णेयव्वं ।	४७		वग्गणणिरूवणा वग्गणधुवाधुवाणुगमो	
६७	एवं महादंडया णेयव्वा ।	४७		वग्गणसांतरणिरंतराणुगमो वग्गण-	
६८	जं तं बध्धाणज्जं णाम तस्स इममणु-			ओजजुम्माणुगमो वग्गणखेत्ताणुगमो	
	गमणं कस्सामो-वेदणअप्पा णोगला,			वग्गणफोसणाणुगमो वग्गणकालाणुगमो	
	णोगला खंधसमुद्दिट्ठा खंधा वग्गण-			वग्गणअंतराणुगमो वग्गणभावाणुगमो	
	समुद्दिट्ठा ।	४८		वग्गणउवणयणाणुगमो वग्गणपरिमा-	
६९	वग्गणाणमणुगमणट्ठदाए तत्थ इमाणि			णाणुगमो वग्गणभागाभागाणुगमो	
	अट्ठ अनुओगद्वाराणि णादव्वाणि			वग्गणअप्पाबहुए त्ति ।	५३

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०	सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
७६	वगणपरूवणदाए इमा एयपदेसियपर- माणुपोगलदव्ववगणा णाम ।	५४		सरीरदव्ववगणा णाम ।	६१
७७	इमा दुपदेसियपरमाणुपोगलदव्व- वगणा णाम ।	५५	९२	पत्तेयसरीरदव्ववगणाणमुवरि धुव- सुण्णदव्ववगणा णाम ।	८३
७८	एवं तिपदेसिय-चटुपदेसिय-पंचपदेसिय- छप्पदेसिय-सत्तपदेसिय-अट्ठपदेसिय- णवपदेसिय-दसपदेसिय-संखेज्जपदेसिय- असंखेज्जपदेसिय-परित्तपदेसिय- अणंतपदेसिय-अणंतानंतपदेसियपर- माणुपोगलदव्ववगणा णाम ।	५७	९३	धुवसुण्णदव्ववगणाणमुवरि बादर- णिगोददव्ववगणा णाम ।	८४
७९	अणंतानंतपदेसियपरमाणुपोगल- दव्ववगणाणमुवरि आहारदव्व- वगणा णाम ।	५९	९४	बादरणिगोददव्ववगणाणमुवरि धुव- सुण्णदव्ववगणा णाम ।	११२
८०	आहारदव्ववगणाणमुवरि अगहण- दव्ववगणा णाम	५९	९५	धुवसुण्णदव्ववगणाणमुवरि सुहुम- णिगोदवगणा णाम ।	११३
८१	अगहणदव्ववगणाणमुवरि तेयादव्व- वगणा णाम ।	६०	९६	सुहुमणिगोददव्ववगणाणमुवरि धुव- सुण्णदव्ववगणा णाम ।	११६
८२	तेयादव्ववगणाणमुवरि अगहणदव्व- वगणा णाम ।	६०	९७	धुवसुण्णवगणाणमुवरि महाक्खंध- दव्ववगणा णाम ।	११७
८३	अगहणदव्ववगणाणमुवरि भासादव्व- वगणा णाम ।	६१	९८	वगणणिरूवणिदाए इमा एयपदेसिय- परमाणुपोगलदव्ववगणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ।	११२०
८४	भासादव्ववगणाणमुवरि अगहण- दव्ववगणा णाम ।	६२	९९	उवरित्थलीणं दव्वाणं भेदेण ।	१२१
८५	अगहणदव्ववगणाए उवरि मणदव्व- वगणा णाम ।	६२	१००	इमा दुपदेसियपरमाणुपोगलदव्व- वगणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ।	१२१
८६	मणदव्ववगणाणमुवरि अगहणदव्व- वगणा णाम ।	६३	१०१	उवरित्थलीणं दव्वाणं भेदेण हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं संघादेण सत्थाणेण भेद- संघादेण ।	१२१
८७	अगहणदव्ववगणाणमुवरि कम्मइय- दव्ववगणा णाम ।	६३	१०२	तिपदेसियपरमाणुपोगलदव्ववगणा चटु० पंच० छ० सत्त० अट्ठ० णव० दस० संखेज्ज० असंखेज्ज० परित्त० अपरित्त० अणंत० अणंतानंतपदे- सियपरमाणुपोगलदव्ववगणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेद- संघादेण ।	१२३
८८	कम्मइयदव्ववगणाणमुवरि धुवक्खंध- दव्ववगणा णाम ।	६३	१०३	उवरित्थलीणं दव्वाणं भेदेण हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं संघादेण सत्थाणेण भेद- संघादेण ।	१२४
८९	धुवक्खंधदव्ववगणाणमुवरि सांतर- णिरंतरदव्ववगणा णाम ।	६४	१०४	आहार० अगहण० तेया अगहण० मण० अगहण० कम्मइय० धुव- क्खंधदव्ववगणा णाम किं भेदेण	
९०	सांतरणिरंतरदव्ववगणाणमुवरि धुव- सुण्णवगणा णाम ।	६५			
९१	धुवसुण्णदव्ववगणाणमुवरि पत्तेय-				

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०	सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	किं संघादेण किं भेदसंघादेण ।	१२५	१२०	तत्थ जे ते साहारणसरीरा ते नियमा वणप्फदिकाइया । अवसेसा पत्तेय- सरीरा ।	२२५
१०५	उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण हेट्ठि- ल्लीणं दव्वाणं संघादेण सत्थाणेण भेदसंघादेण ।	१२५	१२१	तत्थ इमं साहारणलक्खणं भणिदं ।	२२६
१०६	धुवखंधदव्ववग्गणाणमुवरि सांतर- णिरंतरदव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ।	१२५	१२२	साहारणमाहारो साहारणमाणपाण- गहणं च । साहारणजीवाणं साहारण- लक्खणं भणिदं ॥	२२६
१०७	सत्थाणेण भेदसंघादेण ।	१२५	१२३	एयस्स अणुगहणं बहूण साहार- णाणमेयस्स । एयस्स जं बहूणं समा सदो तं पि होदि एयस्स ॥	२२८
१०८	उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं संघादेण सत्थाणेण भेद- संघादेण ।	१२७	१२४	समगं वक्कंताणं समगं तेसि सरीर- णिप्पत्ती । समगं च अणुगहणं समगं उस्सासणिस्सासो ॥	२२९
१०९	सांतरणिरंतरदव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेद- संघादेण ।	१२७	१२५	जत्थेउ मरइ जीवो तत्थ दु मरणं भवे अणंताणं । वक्कमइ जत्थ एक्को वक्कमणं तत्थणंताणं ॥	२३०
११०	सत्थाणेण भेदसंघादेण ।	१२८	१२६	बादरसुहुमणिगोदा बद्धा पुट्ठा य एयमेएण । ते हु अणंता जीवा मूलयथूहल्लयादीहि ॥	२३१
१११	पत्तेयसरीरवग्गणाए उवरि बादर- णिगोददव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ।	१३०	१२७	अत्थि अणंता जीवा जेहि ण पत्तो तसाण परिणामो । भावकलंकअ- पउरा णिमोदवासं ण मुंचति ॥	२३३
११२	सत्थाणेण भेदसंघादेण ।	१३०	१२८	एगणिगोदसरीरे जीवा दव्वप्प- माणदो दिट्ठा । सिद्धेहि अणंतगुणा सव्वेण वि तीदकालेण ।	२३४
११३	बादरणिगोददव्ववग्गणाणमुवरि सुहुमणिगोददव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ।	१३१	१२९	एदेण अट्ठपदेण तत्थ इमाणि अणु- योगद्वाराणि णादव्वाणि भवंति संतपरूवणा दव्वपमाणानुगमो खेत्तानुगमो फोसणानुगमो काला- णुगमो अंतराणुगमो भावाणुगमो अप्पाबहुगणानुगमो चेदि ।	२३७
११४	सत्थाणेण भेदसंघादेण ।	१३२	१३०	संतपरूवणाए दुविहो णिहेसो- ओघेण आदेसेण ।	२३७
११५	सुहुमणिगोदवग्गणाणमुवरि महाखंध- दव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ।	१३३	१३१	ओघेण अत्थि जीवा विसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा असरीरा ।	२३७
११६	सत्थाणेण भेदसंघादेण ।	१३३	१३२	आदेसेण गदियाणुवादेण णिरय-	
११७	तत्थ इमाए बाहिरियाए वग्गणाए अण्णा परूवणा कायव्वा भवदि ।	२२३			
११८	तत्थ इमाणि चत्तारि अणुयोगद्वाराणि णादव्वाणि भवंति-सरीरिसरीरपरू- वणा सरीरपरूवणा सरीरविस्सासुव- चयपरूवणा विस्सासुवचयपरूवणा चेदि ।	२२४			
११९	सरीरिसरीरपरूवणाए अत्थि जीवा पत्तेय-साधारणसरीरा ।	२२५			

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०	सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	गईए णेरइएसु अत्थि जीवा विसरीरा तिसरीरा ।	२३८		पज्जत्ता तसकाइया तसकाइयप- ज्जत्ता ओघं ।	२४२
१३३	एवं सत्तसु पुढवीसु णेरइया ।	२३८	१४४	जोगाणुवादेण पंचमणजोगी पंच- वचिजोगी ओरालियकायजोगी अत्थि जीवा तिसरीरा चदुसरीरा ।	२४२
१३४	तिरिक्खगदीए तिरिक्ख-पंचिदिय- तिरिक्ख पंचिदियतिरिक्खपज्जत्ता- पंचिदियतिरिक्खजोणिणीसु ओघं ।	२३८	१४५	कायजोगी ओघं ।	२४३
१३५	पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्ता अत्थि जीवा विसरीरा तिसरीरा ।	२३९	१४६	ओरालियमिस्सकायजोगि-वेउव्वि- यकायजोगि-वेउव्वियमिस्सकाय- जोगीसु अत्थि जीवा तिसरीरा ।	२४३
१३६	मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्ता- मणुसिणीसु ओघं ।	२३९	१४७	आहारकायजोगी आहारमिस्स- कायजोगी अत्थि जीवा चदुसरीरा ।	२४४
१३७	मणुसअपज्जत्ता अत्थि जीवा विसरीरा तिसरीरा ।	२४०	१४८	कम्मइयकायजोगी णेरइयाणं भंगो ।	२४४
१३८	देवगदीए देवा अत्थि जीवा विसरीरा तिसरीरा ।	२४०	१४९	वेदाणुवादेण इत्थिबेदा पुरिसवेदा णवुंसयवेदा ओघं ।	२४४
१३९	एवं भवणवासियप्पहुड्डि जाव सव्वहुसिद्धियविमाणवासियदेवा ।	२४०	१५०	कसायाणुवादेण कोषकसाई माण- कसाई मायकसाई लोभकसाई ओघं ।	२४५
१४०	इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरे- इंदिया तेसि पज्जत्ता पंचिदिय- पंचिदियपज्जत्ता ओघं ।	२४०	१५१	अवगदवेदा अकसाई अत्थि जीवा तिसरीरा ।	२४५
१४१	बादरएइंदियअपज्जत्ता सुहुमेइंदिया तेसि पज्जत्ता अपज्जत्ता बीइंदिया तीइंदिया चउरिंदिया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता पंचिदियअप- ज्जत्ता णेरइयभंगो ।	२४१	१५२	णाणाणुवादेण मदअण्णाणी सुद- अण्णाणी ओघं ।	२४५
१४२	कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया वणप्फदिकाइया णिगोदजीवा तेसि बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरवणप्फदि- काइयपत्तेयसरीरा तेसि पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरतेउक्काइयअपज्जत्ता बादरवाउक्काइयअपज्जत्ता सुहुमतेउ- काइय-सुहुमवाउकाइयपज्जत्ता अप- ज्जत्ता तसकाइयअपज्जत्ता अत्थि जीवा विसरीरा तिसरीरा ।	२४१	१५३	विभंगणाणी मणपज्जवणाणी अत्थि जीवा तिसरीरा चदुसरीरा ।	२४६
१४३	तेउक्काइया वाउक्काइया बादर- तेउक्काइया बादरवाउक्काइया तेसि		१५४	आभिणि-सुद-ओहिणाणी ओघं ।	२४६
			१५५	केवलणाणी अत्थि जीवा तिसरीरा ।	२४६
			१५६	संजमाणुवादेण संजदा सामाइय- छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा संजदा- संजदा अत्थि जीवा तिसरीरा चदुसरीरा ।	२४६
			१५७	परिहारविमुद्धिसंजदा सुहुमसांप- राइयसुद्धिसंजदा जहाक्खादविहार- सुद्धिसंजदा अत्थि जीवा तिसरीरा ।	२४६
			१५८	असंजदा ओघं ।	२४७
			१५९	दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणी अचक्खु- दंसणी ओहिदंसणी ओघं ।	२४७
			१६०	केवलदंसणी अत्थि जीवा तिसरीरा ।	२४७
			१६१	लेस्साणुवादेण किण्ण-णोल-काउ-	

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०	सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	लेस्सिया तेउ पम्म-सुक्कलेस्सिया ओघं ।	२४७	१८४	तिसरीरा संखेज्जगुणा ।	३०६
१६२	भवियाणुवादेण भवसिद्धिया अभव- सिद्धिया ओघं ।	२४७	१८५	मणुसअपज्जत्ता पंचिदियतिरिक्ख- अपज्जत्तभंगो ।	३०६
१६३	समत्ताणुवादेण सम्माइट्ठी खइय- सम्माइट्ठी वेदगसम्माइट्ठी उवसम- सम्माइट्ठी सासणसम्माइट्ठी मिच्छा- इट्ठी ओघं ।	२४८	१८६	देवगदीए देवा सव्वत्थोवा विसरीरा ।	३०६
१६४	सम्मामिच्छाइट्ठीणं मणजोगिभंगो ।	२४८	१८७	तिसरीरा असंखेज्जगुणा ।	३०६
१६५	सण्णियाणुवादेण सण्णी असण्णी ओघं ।	२४८	१८८	एवं भवणवासियप्पहुडि जाव अव- राइदविमाणवासियदेवा त्ति णेयव्वं ।	३०६
१६६	आहाराणुवादेण आहारा मण- जोगिभंगो ।	२४८	१८९	सव्वसिद्धिविमाणवासियदेवा सव्व- त्थोवा विसरीरा ।	३०७
१६७	अणाहारा कम्मइयभंगो ।	२४८	१९०	तिसरीरा संखेज्जगुणा ।	३०७
१६८	अप्पाबहुगाणुगमेण दुविहो णिद्देसो ओघेण आदेसेण य ।	३०१	१९१	इंदियाणुवादेण एइंदिया बादर- एइंदियपज्जत्ता ओघं ।	३०७
१६९	ओघेण सव्वत्थोवा चदुसरीरा ।	३०१	१९२	बादरेइंदियअपज्जत्ता सुहुमेइंदिय- पज्जत्तापज्जत्ता वीइंदिय-तीइंदिय- चउरिंदियपज्जत्ता अपज्जत्ता पंचि- दियअपज्जत्ता सव्वत्थोवा विसरीरा ।	३०७
१७०	असरीरा अणंतगुणा ।	३०२	१९३	तिसरीरा असंखेज्जगुणा ।	३०८
१७१	विसरीरा अणंतगुणा ।	३०२	१९४	पंचिदिय-पंचिदियपज्जत्ता मणुसगदि- भंगो ।	३०८
१७२	तिसरीरा असंखेज्जगुणा ।	३०२	१९५	कायाणुवादेण पुढविकाइया आउ- काइया वणप्फदिकाइया णिगोद- जीवा बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरा पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरतेउकाइय- बादरवाउकाइयअपज्जत्ता-सुहुमतेउ- काइय-सुहुमवाउकाइयपज्जत्ता अप- ज्जत्ता तसकाइयअपज्जत्ता सव्व- त्थोवा विसरीरा ।	३०९
१७३	आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु सव्वत्थोवा विसरीरा ।	३०२	१९६	तिसरीरा असंखेज्जगुणा ।	३०९
१७४	तिसरीरा असंखेज्जगुणा ।	३०२	१९७	तेउकाइय-वाउकाइय-बादरतेउकाइय- बादरवाउकाइयपज्जत्ता तसकाइया तसकाइयपज्जत्ता पंचिदियपज्जत्त- भंगो ।	३०९
१७५	एवं जाव सत्तसु पुढवीसु ।	३०३			
१७६	तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु ओघं ।	३०३			
१७७	पंचिदियतिरिक्ख-पंचिदियतिरिक्ख- पज्जत्त-पंचिदियतिरिक्खजोणिणीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा ।	३०३			
१७८	विसरीरा असंखेज्जगुणा ।	३०३			
१७९	तिसरीरा असंखेज्जगुणा ।	३०४			
१८०	पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्ता णेरइयाणं भंगो ।	३०४			
१८१	मणुसगदीए मणुसा पंचिदिय- तिरिक्खाणं भंगो ।	३०५			
१८२	मणुसपज्जत्त मणुसिणीसु सव्व- त्थोवा चदुसरीरा ।	३०५			
१८३	विसरीरा संखेज्जगुणा ।	३०५			
			२००	कायजोगी ओघं ।	३१०

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०	सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
२०१	ओरालियकायजोगीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा ।	३१०		सिद्धिय-अभवसिद्धिया ओघं ।	३१४
२०२	तिसरीरा अणंतगुणा ।	३१०	२२१	दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणी ओहि- दंसणी तेउलेस्सिया पम्मलेस्सिया	
२०३	ओरालियमिस्सकायजोगि-वेउव्विय- कायजोगि-वेउव्वियमिस्सकाय- जोगि-आहारकायजोगि-आहारमिस्स- कायजोगीसु णत्थि अप्पाबहुअं ।	३१०		पंचिदियपज्जत्ताणं भंगो ।	३१४
२०४	कम्मइयकायजोगीसु सव्वत्थोवा तिसरीरा ।	३११	२२२	केवलदंसणीणं णत्थि अप्पाबहुअं ।	३१५
२०५	तिसरीरा अणंतगुणा ।	३११	२२३	मुक्कलेस्सिया सव्वत्थोवा विसरीरा	३१५
२०६	वेदाणुवादेण इत्थिवेद-पुरिसवेदा पंचिदियभंगो ।	३११	२२४	चदुसरीरा असंखेज्जगुणा ।	३१५
२०७	णवुंसयवेदा कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई ओघं ।	३११	२२५	तिसरीरा असंखेज्जगुणा ।	३१६
२०८	अवगदवेद-अकसाईण णत्थि अप्पा- बहुअं ।	३११	२२६	सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठी वेदग- सम्माइट्ठी सासणसम्माइट्ठी	
२०९	णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुद अण्णाणि ओघं ।	३१२		पंचिदिपज्जत्तभंगो ।	३१६
२१०	विहंगणाणी सव्वत्थोवा चदुसरीरा ।	३१२	२२७	खइयसम्माइट्ठी उवसमसम्माइट्ठी सव्वत्थोवा विसरीरा ।	३१६
२११	तिसरीरा असंखेज्जगुणा ।	३१२	२२८	चदुसरीरा असंखेज्जगुणा ।	३१६
२१२	आभिणि-सुद ओहिणाणीसु पंचि- दियपज्जत्ताणं भंगो ।	३१२	२२९	तिसरीरा असंखेज्जगुणा ।	३१७
२१३	मणपज्जवणाणीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा ।	३१३	२३०	सम्मामिच्छाइट्ठी संजडासंजदाणं भंगो ।	३१७
२१४	तिसरीरा संखेज्जगुणा ।	३१३	२३१	मिच्छाइट्ठी ओघं ।	३१७
२१५	केवलणाणीसु णत्थि अप्पाबहुअं ।	३१३	२३३	सण्णियाणुवादेण सण्णी पंचिदिय- पज्जत्ताणं भंगो ।	३१७
२१६	संजमाणुवादेण संजदा सामाइय- व्वेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा मणपज्ज- वणाणिभंगो ।	३१३	२३३	असण्णी ओघं ।	३१८
२१७	परिहारसुद्धिसंजद-सुहुमसांपराइय- सुद्धिसंजद-जहाक्खादविहारसुद्धि- संजदाणं णत्थि अप्पाबहुअं ।	३१३	२३४	आहाराणुवादेण आहारएसु ओरा- लियकायजोगिभंगो ।	३१८
२१८	संजदासंजदा विभंगणाणिभंगो ।	३१४	२३५	अणाहारा कम्मइयकायजोगिभंगो ।	३१८
२१९	असंजद-अचक्खुदंसणी ओघं ।	३१४	२३६	सरीरपरूवणदाए तत्थ इमाणि छ अणुयोगद्वाराणि-णमणिस्ती- पदेसपमाणाणुगमो णिसेयपरूवणा गुणगारो पदमीमांसा अप्पा- बहुए त्ति ।	३२१
२२०	लेस्साणुवादेण किण्ण-णील-काउ- लेस्सिया भविद्याणुवादेण भव-		२३७	णामणिस्तीए उरालमिदि ओरालियं ।	३२२
			२३८	विबिहइड्डिगुणजुत्तमिदि वेउव्वियं ।	३२५
			२३९	णिवुणाणं वा णिण्णाणं वा सुहु- माणं वा आहारदव्वाणं सुहुमदर- मिदि आहारयं ।	३२६
			२४०	तेयप्पगुणजुत्तमिदि तेजइयं ।	३२७
			२४१	सव्वकम्मणं परूहणुप्पादयं सुहु-	

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०	सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	दुक्खाणं बीजमिदि कम्मइयं ।	३२८		आहारसरीरत्ताए जं पढमसमए पदे-	
२४२	पदेसपमाणाणुगमेण ओरालिय-			सगं णिसित्तं तं केवडिया ।	३३६
	सरीरस्स केवडियं पदेसगं ।	३३०	२५०	अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाण-	
२४३	अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाण-			मणंतभागो ।	३३६
	मणंतभागा ।	३३०	२५१	जं विदियसमए पदेसगं णिसित्तं	
२४४	एवं चटुण्हं सरीराणं ।	३३०		तं केवडिया ।	३३७
२४५	णियेयपरुवणदाए तत्थ इमाणि छ		२५२	अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो	
	अणुयोगद्वाराणि णादव्वाणि भवन्ति			सिद्धाणमणंतभागो ।	३३७
	समुक्कित्तणा पदेसपमाणाणुगमो		२५३	जं तदियसमए पदेसगं णिसित्तं तं	
	अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा			केवडिया ।	३३७
	पदेसविरओ अष्पाबहुए त्ति ।	३३१	२५४	अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो	
२४६	समुक्कित्तणदाए ओरालिय-वेउव्विय-			सिद्धाणमणंतभागो ।	३३७
	आहारसरीरिणा तेणेव पढमसमय-		२५५	एवं जाव उक्कस्सेण तिण्णिपल्लिदो-	
	आहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण			वमाणि तेत्तीससागरोवमाणि	
	ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीर-			अंतोमुहुत्तां ।	३३७
	त्ताए जं पढमसमए पदेसगं णिसित्तं		२५६	तेजा-कम्मइयसरीरिणा तेजा-कम्म-	
	तं जीवे किंचि एगसमयमच्छदि			इयसरीरत्ताए जं पढमसमए	
	किंचि विसमयमच्छदि किंचि तिसम-			पदेसगं णिसित्तं तं केवडिया ।	३३७
	यमच्छदि एवं जाव उक्कस्सेण		२५७	अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो	
	तिण्णिपल्लिदोवमाणि तेत्तीससागरो-			सिद्धाणमणंतभागो ।	३३८
	वमाणि अंतोमुहुत्तां ।	३३१	२५८	जं विदियसमए पदेसगं णिसित्तं	
२४७	तेयासरीरिणा तेयासरीरत्ताए जं			तं केवडिया ।	३३८
	पढमसमए पदेसगं णिसित्तं तं		२५९	अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाण-	
	जीवे किंचि एगसमयमच्छदि किंचि			मणंतभागो ।	३३८
	विसमयमच्छदि किंचि तिसमय-		२६०	जं तदियसमए पदेसगं णिसित्तं तं	
	मच्छदि एवं जाव उक्कस्सेण छावट्टि-			केवडिया ।	३३८
	सागरोवमाणि ।	३३५	२६१	अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो	
२४८	कम्मइयसरीरिणा कम्मइयसरीर-			सिद्धाणमणंतभागो ।	३३८
	त्ताए जं पदेसगं णिसित्तं तं किंचि		२६२	एवं जाव उक्कस्सेण छावट्टिसागरो-	
	जीवे समउत्तरावलियमच्छदि किंचि			वमाणि कम्मट्टिदी ।	३३८
	विसमउत्तरावलियमच्छदि किंचि		२६३	अणंतरोवणिधाए ओरालिय-वेउ-	
	तिसमउत्तरावलियमच्छदि एवं जाव			व्विय-आहारसरीरिणा तेणेव पढम-	
	उक्कस्सेण कम्मट्टिदि त्ति ।	३३५		समयआहारएण पढमसमयतब्भव-	
२४९	पदेसपमाणाणुगमेण ओरालिय-			त्थेण ओरालिय-वेउव्विय-आहार-	
	वेउव्विय-आहारसरीरिणा तेणेव			सरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसगं	
	पढमसमयआहारएण पढमसमय-			णिसित्तं तं बहुअं ।	३३९
	तब्भवत्थेण ओरालिय-वेउव्विय-				

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
२६४	जं बिदियसमए पदेसग्गं णिमित्तं तं विसेसहीणं ।	३४०
२६५	जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं ।	३४०
२६६	जं चउत्थसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं ।	३४०
२६७	एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि अंतोमुहुत्तं ।	३४१
२६८	तेजा-कम्मइयसरीरिणा तेजा-कम्म- इयसरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुअं ।	३४१
२६९	जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं ।	३४१
२७०	जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं ।	३४१
२७१	एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण छावट्टिसागरोवमाणि कम्मट्ठिदी ।	३४१
२७२	परंपरोवणिधाए ओरालिय-वेउव्विय- सरीरिणा तेणेव पढमसमयआहार- एण पढमसमयतब्भवत्थेण ओरालिय- वेउव्वियसरीरत्ताए जं पढमसमय- पदेसग्गं तदो अंतोमुहुत्तं दुगुणहीणं	३४६
२७३	एवं दुगुणहीणं दुगुणहीणं जाव उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि ।	३४७
२७४	एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमंतोमुहुत्तं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि पलिदोवमस्स असांखेज्जदिभागो ।	३४७
२६५	एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं थोवां ।	३४८
२७६	णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असांखेज्जगुणाणि ।	३४८
२७७	आहारसरीरिणा तेणेव पढमसमय- आहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण आहारसरीरत्ताए जं पढमसमए	

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	पदेसग्गं तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण दुगुणहीणं ।	३४८
२७८	एवं दुगुणहीणं दुगुणहीणं जावक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं	३४९
२७९	एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमंतोमुहुत्तं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि सांखेज्जा समयो ।	३४९
२८०	णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि थोवाणि ।	३४९
२८१	एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरम- सांखेज्जगुणं ।	३४९
२८२	तेजा-कम्मइयसरीरिणा तेजा-कम्म- इयसरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसग्गं तदो पलिदोवमस्स असांखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणहीणं पलिदोवमस्स असां- खेज्जदिभागं गंतूण दुगुणहीणं ।	३५०
२८३	एवं दुगुणहीणं दुगुणहीणं जाव उक्कस्सेण छावट्टिसागरोवमाणि कम्मट्ठिदी ।	३५०
२८४	एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसांखेज्जाणि पलिदोवमवग्गमलाणि णाणापदेस- गुणहाणिट्ठाणंतराणि पलिदोवमवग्ग- मूलस्स असांखेज्जदिभागो ।	३५०
२८५	णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि थोवाओ ।	३५१
२८६	एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं असांखेज्जगुणं ।	३५१
२८७	पदेसविरए त्ति तत्थ इमो पदेसविर- अस्स सोलसवदिओ दडओ कायव्वो भवदि ।	३५२
२८८	सव्वत्थोवा एइंदियस्स जहणिया पज्जत्तणिव्वत्ती ।	३५२
२८९	णिव्वत्तिट्ठाणाणि सांखेज्जगुणाणि ।	३५३
२९०	जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	३५४
२९१	उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ।	३५७
२९२	सव्वत्थोवा सम्मुच्छिमस्स जहणिया पज्जत्तणिव्वत्ती ।	३५७

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०	सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
२९३	निव्वत्तिट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ।	३५७	३१८	उववादिमस्स निव्वत्तिट्ठाणाणि	
२९४	जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	३५८		जीवणियट्ठाणाणि च दो वि तुल्लाणि	
२९५	उक्कस्सिया निव्वत्ती विसेसाहिया ।	३५८		संखेज्जगुणाणि ।	३६६
२९६	सव्वत्थोवा गम्भोवककतियस्स		३१९	उक्कस्सिया निव्वत्ती विसेसाहिया ।	३६६
	जहणिया पज्जत्तनिव्वत्ती ।	३५८	३२०	तस्सेव पदेसविरइयस्स इमाणि	
२९७	निव्वत्तिट्ठाणाणि असंखेज्ज-			छअणुयोगद्वाराणि- जहणिया	
	गुणाणि ।	३५९		अग्गट्ठिदी अग्गट्ठिदिविसेसो अग्ग-	
२९८	जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	३५९		ट्ठिदिट्ठाणाणि उक्कस्सिया अग्गट्ठिदी	
२९९	उक्कस्सिया निव्वत्ती विसेसाहिया ।	३५९		भागाभागाणुगमो अप्पाबहुए त्ति ।	३६६
३००	सव्वत्थोवा उववादिमस्स जहणिया		३२१	सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स	
	पज्जत्तनिव्वत्ती ।	३५९		जहणिया अग्गट्ठिदी ।	३६७
३०१	निव्वत्तिट्ठाणाणि जीवणियट्ठाणाणि च		३२२	अग्गट्ठिदिविसेसो असंखेज्जगुणो ।	३६७
	दो वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि ।	३६०	३२३	अग्गट्ठिदिट्ठाणाणि रूवाहियाणि	
३०२	उक्कस्सिया निव्वत्ती विसेसाहिया ।	३६०		विसेसाहियाणि ।	३६७
३०३	एत्थ अप्पाबहुअं ।	३६१	३२४	उक्कस्सिया अग्गट्ठिदी विसेसाहिया ।	३६८
३०४	सव्वत्थोवं खुट्ठाभवग्गहणं ।	३६१	३२५	एवं तिण्णं सरीराणं ।	३६८
३०५	एइदियस्स जहणिया पज्जत्तनिव्वत्ती		३२६	सव्वत्थोवा आहारसरीरस्स	
	संखेज्जगुणा ।	३६३		जहणिया अग्गट्ठिदी ।	३६९
३०६	समुच्छिमस्स जहणिया पज्जत्त-		३२७	अग्गट्ठिदिविसेसो संखेज्जगुणो ।	३६९
	निव्वत्ती संखेज्जगुणा ।	३६३	३२८	अग्गट्ठिदिट्ठाणाणि रूवाहियाणि ।	३६९
३०७	गम्भोवककतियस्स जहणिया पज्जत्त-		३२९	उक्कस्सिया अग्गट्ठिदी विसेसाहिया ।	३६९
	निव्वत्ती संखेज्जगुणा ।	३६४	३३०	भागाभागाणुगमेण तत्थ इमाणि	
३०८	उववादिमस्स जहणिया पज्जत्त-			तिणि अणुयोगद्वाराणि- जहणपदे	
	निव्वत्ती संखेज्जगुणा ।	३६४		उक्कस्सपदे अजहण-अणुक्कस्स-	
३०९	एइदियस्स निव्वत्तिट्ठाणाणि			पदे ।	३६९
	संखेज्जगुणाणि ।	३६४	३३१	जहणपदेण ओरालियसरीरस्स	
३१०	जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	३६४		जहणियाए ट्ठिदीए पदेसग्गं सव्व-	
३११	उक्कस्सिया निव्वत्ती विसेसाहिया ।	३६५		पदेसग्गस्स केवडियो भागो ।	३७०
३१२	समुच्छिमस्स निव्वत्तिट्ठाणाणि		३३२	असंखेज्जदिभागो ।	३७०
	संखेज्जगुणाणि ।	३६५	३३३	एवं चट्ठणं सरीराणं ।	३७०
३१३	जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	३६५	३३४	उक्कस्सपदेण ओरालियसरीरस्स	
३१४	उक्कस्सिया निव्वत्ती विसेसाहिया ।	३६५		उक्कस्सियाए ट्ठिदीए पदेसग्गं सव्व-	
३१५	गम्भोवककतियस्स निव्वत्तिट्ठाणाणि			पदेसग्गस्स केवडिओ भागो ।	३७१
	असंखेज्जगुणाणि ।	३६५	३३५	असंखेज्जदिभागो ।	३७१
३१६	जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	३६६	३३६	एवं चट्ठणं सरीराणं ।	३७२
३१७	उक्कस्सिया निव्वत्ती विसेसाहिया ।	३६६	३३७	अजहण-अणुक्कस्सपदेण-ओरालिय-	
				सरीरस्स अजहण-अणुक्कस्सियाए	

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०	सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	ट्टिदीए पदेसगं सव्वट्टिदिपदेसगस्स		३५७	पढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु	
	केवडिओ भागो ।	३७२		पदेसगं विसेसाहियं ।	३८०
३३८	असंखेज्जा भागा ।	३७३	३५८	अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु	
३३९	एवं चटुण्णं सरीराणं ।	३७३		पदेसगं विसेसाहियं ।	३८०
३४०	अप्पावहुए त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि		३५९	सव्वेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसगं	
	अणुयोगद्वाराणि-जहण्णपदे उक्कक्कसपदे			विसेसाहियं ।	३८०
	जहण्णुक्कस्सपदे ।	३७३	३६०	एवं तिण्णं सरीराणं ।	३८०
३४१	जहण्णपदेण सव्वत्थोवा ओरालिय-		३६१	सव्वत्थोवं आहारसरीरस्स चरिम-	
	सरीरस्स चरिमाए ट्टिदीए पदेसगं ।	३७३		गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसगं ।	३८१
३४२	पढमाए ट्टिदीए पदेसगम-		३६२	अपढम-अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाण-	
	संखेज्जगुणं ।	३७४		तरेसु पदेसगं संखेज्जगुणं ।	३८१
३४३	अपढम-अचरिमासु ट्टिदीसु		३६३	अपढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु	
	पदेसगमसंखेज्जगुणं	३७६		पदेसगं विसेसाहियं ।	३८१
३४४	अपढमासु ट्ठिदीसु पदेसगं		३६४	पढमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसगं	
	विसेसाहियं ।	३७७		विसेसाहियं ।	३८१
३४५	अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसगं		३६५	अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु	
	विसेसाहियं ।	३७७		पदेसगं विसेसाहियं ।	३८१
३४६	सव्वासु ट्ठिदीसु पदेसगं विसेसाहियं ,,		३६६	सव्वेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदे-	
३४७	एवं तिण्णं सरीराणं ।	३७७		सगं विसेसाहियं ।	३८१
३४८	जहण्णपदेण सव्वत्थोवं आहार-		३६७	जहण्णुक्कस्सपदेण सव्वत्थोवं ओरा-	
	सरीरस्स चरिमाए ट्ठिदीए पदेसगं ।	३७८		लियसरीरस्स चरिमाए ट्ठिदीए	
३४९	पढमाए ट्टिदीए पदेसगं संखेज्जगुणं ,,			पदेसगं ।	३८२
३५०	अपढम-अचरिमासु ट्ठिदीसु		३६८	चरिमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग-	
	पदेसगमसंखेज्जगुणं	३७८		मसंखेज्जगुणं ।	३८२
३५१	अपढमासु ट्ठिदीसु पदेसगं		३६९	पढमाए ट्ठिदीए पदेसग-	
	विसेसाहियं ।	३७९		मसंखेज्जगुणं ।	३८२
३५२	अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसगं		३७०	अपढम-अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाण-	
	विसेसाहियं ।	३७९		तरेसु पदेसगमसंखेज्जगुणं ।	३८२
३५३	सव्वासु ट्ठिदीसु पदेसगं विसेसाहियं ,,		३७१	अपढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु	
३५४	उक्कस्सपदेण सव्वत्थोवं ओरालिय-			पदेसगं विसेसाहियं ।	३८३
	सरीरस्स चरिमे गुणहाणिट्ठाणंतरे		३७२	पढमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसगं	
	पदेसगं ।	३७९		विसेसाहियं ।	३८३
३५५	अपढम-अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु		३७३	अपढम-अचरिमासु ट्ठिदीसु पदे-	
	पदेसगमसंखेज्जगुणं ।	३७९		सगं विसेसाहियं ।	३८३
३५६	अपढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु		३७४	अपढमाए ट्ठिदीए पदेसगं	
	पदेसगं विसेसाहियं ।	३८०		विसेसाहियं ।	३८३

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
३७५	अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसगं विसेसाहियं ।	३८३
३७६	अचरिमाए ट्ठिदीए पदेसगं विसेसाहियं ।	३८४
३७७	सव्वासु ट्ठिदीसु सव्वेसु गुणहाणि-ट्ठाणंतरेसु पदेसगं विसेसाहियं ।	३८४
३७८	एवं तिण्णं सरीराणं ।	३८४
३७९	जहणुक्कस्सपदेण सव्वत्थोवां आहार-सरीरस्स चरिमाए ट्ठिदीए पदेसगं ।	३८५
३८०	पढमाए ट्ठिदीए पदेसगं संखेज्जगुणं ।	३८६
३८१	चरिमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग-मसंखेज्जगुणं ।	३८६
३८२	अपढम-अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाण-तरेसु पदेसगं संखेज्जगुणं ।	३८६
३८३	अपढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसगं विसेसाहियं ।	३८६
३८४	पढमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसगं विसेसाहियं ।	३८६
३८५	अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसगं विसेसाहियं ।	३८६
३८६	अपढम-अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसगं विसेसाहियं ।	३८७
३८७	अपढमासु ट्ठिदीसु पदेसगं विसेसाहियं ।	३८७
३८८	अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसगं विसेसाहियं ।	३८७
३८९	सव्वासु ट्ठिदीसु सव्वेसु गुणहाणि-ट्ठाणंतरेसु पदेसगं विसेसाहियं ।	३८७
३९०	णिसेयअप्पाबहुए त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अनुयोगदाराणि-जहणपदे उक्कस्सपदे जहणुक्कस्सपदे ।	३८७
३९१	जणणपदेण सव्वत्थोवमोरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरस्स एयपदेस-गुणहाणिट्ठाणंतरे ।	३८८
३९२	तेयासरीरस्स एयपदेसगुणहाणिट्ठा-णंतरमसंखेज्जगुणं ।	३८८
३९३	कम्मइयसरीरस्स एयपदेसगुणहाणि-ट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ।	३८८

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
३९४	उक्कस्सपदेण सव्वत्थोवाणि आहार-सरीरस्स णाणापदेसगुणहाणि-ट्ठाणंतराणि ।	३८९
३९५	कम्मइयसरीरस्स णाणापदेसगुण-हाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि ।	३८९
३९६	तेयासरीरस्स णाणापदेसगुणहाणि-ट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि ।	३८९
३९७	ओरालियसरीरस्स णाणापदेसगुण-हाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि ।	३८९
३९८	वेउव्वियसरीरस्स णाणापदेसगुण-हाणिट्ठाणंतराणि संखेज्जगुणाणि ।	३९०
३९९	जहणुक्कस्सपदेण सव्वत्थोवाणि आहारसरीरस्स णाणापदेसगुण-हाणिट्ठाणंतराणि ।	३९०
४००	ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरस्स एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्ज-गुणं ।	३९०
४०१	कम्मइयसरीरस्स णाणापदेसगुण-हाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि ।	३९०
४०२	तेयासरीरस्स णाणापदेसगुणहाणि-ट्ठाणराणि असंखेज्जगुणाणि ।	३९१
४०३	तेयासरीरस्स एयपदेसगुणहाणि-ट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ।	३९१
४०४	कम्मइयसरीरस्स एयपदेसगुणहाणि-ट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ।	३९१
४०५	ओरालियसरीरस्स णाणागुणहाणि-ट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि ।	३९१
४०६	वेउव्वियसरीरस्स णाणापदेसगुण-हाणिट्ठाणंतराणि संखेज्जगुणाणि ।	३९१
४०७	गुणगारे त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अनुयोगदाराणि-जहणपदे उक्कस्स-पदे जहणुक्कस्सपदे ।	३९२
४०८	जहणपदे सव्वत्थोवा ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरस्स जहणओ गुणगारो सेडीए असंखेज्जदिभागो ।	३९२
४०९	तेया-कम्मइयसरीरस्स जहणओ गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंत-	

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०	सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	गुणो सिद्धाणमणंतभागो ।	३९३	४२८	चरिम-दुचरिमसमए उक्कस्सजोगं गदो ।	४०३
४१०	उक्कस्सपदेण ओरालियसरीरस्स उक्कस्सओ गुणगारो पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।	३९४	४२९	तस्स चरिमसमयतब्भवत्थस्स तस्स ओरालियसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसगं ।	४०४
४११	एवं चदुण्णं सरीराणं ।	३९४	४३०	तव्वदिरित्तमणुक्कस्स ।	४१०
४१२	जहण्णुक्कस्सपदेण ओरालिय-वेउ-विबय-आहारसरीरस्स जहण्णओ गुणगारो सेडीए असंखेज्जदिभागो ।	३९५	४३१	उक्कस्सपदेण वेउविबयसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसगं कस्स ।	४११
४१३	उक्कस्सओ गुणगारो पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।	३९५	४३२	अण्णदरस्स आरण-अच्चुडकप्प-वासियदेवस्स बावीससागरोवम-ट्टिदियस्स ।	४११
४१४	तेजा-कम्मइयसरीरस्स जहण्णओ गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंत-गुणो सिद्धाणमणंतभागो ।	३९५	४३३	तेणेव पढमसमयआहारएण पढम-समयतब्भवत्थेण उक्कस्सजोगेण आहारिदो ।	४१२
४१५	तस्सेव उक्कस्सओ गुणगारो पल्लिदो-वमस्स असंखेज्जदिभागो ।	३९५	४३४	उक्कस्सियाए वड्ढीए वड्ढिदो ।	४१२
४१६	पदमीमांसाए तत्थ इमाणि दुवे अणुयोगहाराणि- जहण्णपदे उक्कस्सपदे ।	३९७	४३५	अंतोमुहुत्तेण सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ।	४१२
४१७	उक्कस्सपदेण ओरालियसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसगं कस्स ।	३९७	४३६	तस्स अप्पाओ भासद्धाओ ।	४१२
४१८	अण्णदरस्स उत्तरकुरु-देवकुरुमणुअस्स तिपल्लिदोवमट्टिदियस्स ।	३९८	४३७	अप्पाओ मणजोगद्धाओ ।	४१२
४१९	तेणेव पढमसमयआहारएण पढम समयतब्भवत्थेण उक्कस्सेण जोगेण आहारिदो ।	३९९	४३८	णत्थि छविच्छेदा ।	४१२
४२०	उक्कस्सियाए वड्ढीए वड्ढिदो ।	४००	४३९	अप्पदरं विउविदो ।	४१३
४२१	अंतोमुहुत्तेण सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ।	४००	४४०	थोवावसेसे जीविदव्वए त्ति जोग-जवमज्झस्सुवरिमंतोमुहुत्तद्ध-मच्छिदो ।	४१३
४२२	तस्स अप्पाओ भासद्धाओ ।	४०१	४४१	चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मच्छिदो ।	४१३
४२३	अप्पाओ मणजोगद्धाओ ।	४०१	४४२	चरिम-दुचरिमसमए उक्कस्सजोगं गदो ।	४१३
४२४	अप्पा छविच्छेदा ।	४०१	४४३	तस्स चरिमसमयतब्भवत्थस्स तस्स वेउविबयसरीरस्स उक्कस्सपदेसगं ।	४१३
४२५	अंतरे ण कदाइ विउविदो ।	४०१	४४४	तव्वदिरित्तमणुक्कस्स ।	४१३
४२६	थोवावसेसे जीविदव्वए ए त्ति जोग-जवमज्झस्स उवरिमंतोमुहुत्तद्ध-मिच्छिदो ।	४०२	४४५	उक्कस्सपदेण आहारसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसगं कस्स ।	४१४
४२७	चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे आवलि-याए असंखेज्जदिभागमच्छिदो ।	४०३	४४६	अण्णदरस्स पमत्तसंजदस्स उत्तर-सरीरं विउविबयस्स ।	४१४
			४४७	तेणेव पढमसमयआहारएण पढम-	

सू० सं	सूत्राणि	पृ० सं	सू० सं	सूत्राणि	पृ० सं
	समयतन्भवत्थेण उक्कस्सजोगेण आहारिदो ।	४१४		४६६ अंतोमुहुत्तेण सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ।	४१९
४४८	उक्कस्सयाए वड्ढीए वड्ढिदो ।	४१४	४६७	तत्थ य भवट्ठिदि तेत्तीससागरो- वमाणि आउअमणुपालइत्ता ।	४१९
४४९	अंतोमुहुत्तेण सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ।	४१४	४६८	बहुसो बहुसो उक्कस्सियाणि जोग- ट्ठाणाणि गच्छदि ।	४२०
४५०	तस्स अप्पाओ भासद्धाओ	४१४	४६९	बहुसो बहुसो बहुसंकिलेसपरिणामो भवदि ।	४२०
४५१	अप्पाओ मणजोगद्धाओ ।	४१४	४७०	एवं संसरिदूण थोवावसेसे जीवि- दव्वए त्ति जोगजवमज्जस्स उववि- मंतोमुहुत्तद्धमच्छिदो ।	४२०
४५२	णत्थि छविच्छेदा ।	४१४	४७१	चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे आवलियाए असंखेज्जदिभाग- मच्छिदो ।	४२०
४५३	थोवावसेसे णियत्तिदव्वए त्ति जोग- जवमज्जट्ठाणाए मितद्धमच्छिदो ।	४१५	४७२	दुचरिम-तिचरिमसमए उक्कस्स संकिलेसं गदो ।	४२१
४५४	चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे आवलियाए असंखेज्जदिभाग- मच्छिदो ।	४१५	४७३	चरिम-दुचरिमसमए उक्कस्सजोगं गदो ।	४२१
४५५	चरिम-दुचरिमसमए उक्कस्सं जोगं गदो ।	४१५	४७४	तस्स चरिमसमयतन्भवत्थस्स तस्स तेजइयसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसगं ।	४२२
४५६	तस्स चरिमसमयणियत्तमाणस्स तस्स आहारसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसगं ।	४१५	४७५	तव्वदिरित्तमणुक्कस्सं ।	४२२
४५७	तव्वदिरित्तमणुक्कस्सं ।	४१६	४७६	उक्कस्सपदेण कम्मइयसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसगं कस्स ।	४२३
४५८	उक्कस्सपदेण तेजासरीरस्स उक्कस्सयं पदेसगं कस्स ।	४१६	४७७	जो जीवो बादरपुढविजीवेसु वेहि सागरोवमसहस्सेहि सादिरेगेहि ऊणियं कम्मट्ठिठदिमच्छिदो ।	४२३
४५९	अण्णदरस्स ।	४१६	४७८	जहा वेदणाए वेदणीयं तथा णेयव्वं ।	४२३
४६०	जो जीवो पुव्वकोडाउओ अघो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु आउअं बंधदि ।	४१६	४७९	जहण्णपदेण ओरालियसरीरस्स जहण्णयं पदेसगं कस्स ।	४२३
४६१	कमेण कालगदसमाणो अघो सत्तमाए पुढवीए उववण्णो ।	४१७	४८०	अण्णदरस्स सुहुमणिगोदजीव- अपज्जत्तयस्स ।	४२३
४५२	तदो उवट्ठिदसमाणो पुणरवि पुव्व- कोडाउएसुववण्णो ।	४१८	४८१	पढमसमयआहारयस्स पढमसमय- तन्भवत्थस्स जहण्णजोगिस्स तस्स ओरालियसरीरस्स जहण्णं पदेसगं	४२३
४६३	तेणेव कमेण आउअमणुपालइत्ता तदो कालगदसमाणो पुणरवि अघो सत्तमाए पुढवीएणेरइएसु उववण्णो ।	४१८	४८२	तव्वदिरित्तमजहण्णं ।	४२४
४६४	तेणेव पढमसमयआहारएण पढम- समयतन्भवत्थेण उक्कस्सजोगेण आहारिदो ।	४१९	४८३	जहण्णपदेण वेउविवयसरीरस्स जहण्णयं पदेसगं कस्स ।	४२४
४६५	उक्कस्सियाए वड्ढीए वड्ढिदो ।	४१९			

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०	सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
४८४	अण्णदरस्स देव-णेरइयस्स असण्णि- पच्छायदस्स ।	४२४	४९९	आहारसरीरस्स पदेसग्गमसंखेज्ज- गुणं ।	४३०
४८५	पढमसमयआहारयस्स पढमसमय- तब्भवत्थस्स जहण्णजोगिस्स तस्स वेउव्वियसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं ।	४२५	५००	तेयासरीरस्स पदेसग्गमणंतगुणं ।	४३०
४८६	तव्वदिरित्तमजहण्णं ।	४२५	५०१	कम्मइयसरीरस्स पदेसग्गमणंतगुणं ।	४३०
४८७	जहण्णपदेण आहारसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं कस्स ।	४२५	५०२	सरीरविस्सासुवचयपरूवणदाए तत्थ इमाणि छ अणुयोगद्वाराणि- अविभागपडिच्छेदपरूवणा वग्गण- परूवणा फट्ठयपरूवणा अंतर- परूवणा सरीरपरूवणा अप्पा- बहुए त्ति ।	४३०
४८८	अण्णदरस्स पमत्तसंजदस्स उत्तरं विउव्विदस्स ।	४२५	५०३	अविभागपडिच्छेदपरूवणदाए एक्केवकम्मि ओरालियपदेसे केवडिया अविभागपडिच्छेदा ।	४३१
४८९	पढमसमयआहारयस्स पढमसमय- तब्भवत्थस्स जहण्णजोगिस्स तस्स आहारसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं ।	४२५	५०४	अणंतो अविभागपडिच्छेदा सव्व- जीवेहि अणंतगुणा ।	४३१
४९०	तव्वदिरित्तमजहण्णं ।	४२६	५०५	एवडिया अविभागपडिच्छेदा ।	४३१
४९१	जहण्णपदेण तेयासरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं कस्स ।	४२६	५०६	वग्गणपरूवणदाए अणंतो अविभाग- पडिच्छेदा सव्वजीवेहि अणंतगुणा एया वग्गणा भवदि ।	४३२
४९२	अण्णदरस्स सुहुमणिगोदजीवअप- ज्जत्तयस्स एयताणुवड्ढीए बड्डमाण- यस्स जहण्णजोगिस्स तस्स तेया- सरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं ।	४२६	५०७	एवमणंतओ वग्गणाओ अभव- सिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाण- मणंतभागो ।	४३२
४९३	तव्वदिरित्तमजहण्णं ।	४२८	५०८	फट्ठयपरूवणदाए अणंतो वग्ग- णाओ अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो तमेगं फट्ठयं भवदि ।	४३३
४९४	जहण्णपदेण कम्मइयसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं कस्स ।	४२८	५०९	एवमणंतानि फट्ठयाणि अभवसिद्धि- एहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंत- भागो ।	४३३
४९५	अण्णदरस्स जीवो सुहुमणिगोद- जीवेसु पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदि- भागेण ऊगयं कम्मट्ठिदिमच्छिदो । एवं जहा वेयणाए वेयणीयं तहा णेयव्वं । णवरि थोवावसेसे जीवि- दव्वए त्ति चरिमसमयभवसिद्धिओ जादो तस्स चरिमसमयभवसिद्धि- यस्स तस्स कम्मइयसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं ।	४२८	५१०	अंतरपरूवणदाए एक्केवकस्स फट्ठयस्स केवडियमंतरं ।	४३४
४९६	तव्वदिरित्तमजहण्णं ।	४२९	५११	सव्वजीवेहि अणंतगुणा । एवडिय- मंतरं ।	४३४
४९७	अप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवं ओरा- लियसरीरस्स पदेसग्गं ।	४२९	५१२	सरीरपरूवणदाए अणंतो अविभाग- पडिच्छेदा सरीरवग्गणगुणपणच्छे- दणणिप्पण्णा ।	४३४
४९८	वेउव्वियसरीरस्स पदेसग्गमसंखेज्ज- गुणं ।	४२९	५१३	छेदणा पुण दसविहा ।	४३५

सू० सं	सूत्राणि	पृ० सं	सू० सं	सूत्राणि	पृ० सं
५१४	गाम ढुवणा दवियं सरीरबंधणगुण- प्पदेसा य । वल्लरि अणुत्तडेसु य उप्पाइया पण्णभावे य ॥	४३५	गंतूण तेसि पंचविहा हाणी-अणंत- भागहाणी असंखेज्जभागहाणी संखेज्जभागहाणी संखेज्जगुणहाणी असंखेज्जगुणहाणी ।	४४३	
५१५	अप्पाबहुए त्ति सब्बत्थोवा ओरा- लियसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा ।	४३७	५२८ एवं चदुण्णं सरीराणं ।	४४४	
५१६	वेउव्वियसरीरस्स अविभागपडि- च्छेदा अणंतगुणा ।	४३७	५२९ खेतहाणिपरूवणदाए ओरालिय- सरीरस्स जे एयपदेसियखेतोगाढ- वग्गणाए दब्बा ते बहुआ अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ।	४४४	
५१७	आहारसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा ।	४३७	५३० जे दुपदेसियवखेतोगाढवग्गणाए दब्बा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ।	४४५	
५१८	तेयासरीरस्स अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा ।	४३७	५३१ एवं ति-चदु-पंच-छ-सत्त-अट्ट-णव- दस-संखेज्ज-असंखेज्जपदेसियखेतो- गाढवग्गणाए दब्बा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ।	४४५	
५१९	कम्मइयसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा ।	४३८	५३२ तदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण तेसि चउव्विहा हाणी— असंखेज्जभागहाणी संखेज्जभाग- हाणी संखेज्जगुणहाणी असंखेज्ज- गुणहाणी ।	४४६	
५२०	विस्सासुवचयपरूवणदाए एक्के- क्कम्हि जीवपदेसे केवडिया विस्सा- सुवचया उवचिदा ।	४३८	५३३ एवं चदुण्णं सरीराणं ।	४४७	
५२१	अणंता विस्सासुवचया उवचिदा सव्वजीवेहि अणंतगुणा ।	४३९	५३४ कालहाणिपरूवणदाए ओरालिय- सरीरस्स जे एगसमयट्ठिदिवग्गणाए दब्बा ते बहुआ अणंतेहि विस्सासुव- चएहि उवचिदा ।	४४७	
५२२	ते च सब्बलोमागदेहि बद्धा ।	४३९	५३५ जे दुसमयट्ठिदिवग्गणाए दब्बा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुव- चएहि उवचिदा ।	४४८	
५२३	तेसि चउव्विहा हाणी-दव्वहाणी खेतहाणी कालहाणी भावहाणी चेदि ।	४४०	५३६ एवं ति-चदु-पंच-छ-सत्त-अट्ट-णव- दस-संखेज्ज-असंखेज्जसमयट्ठिदि- वग्गणाए दब्बा ते विसेसहीणा अणं- तेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ।	४४८	
५२४	दव्वहाणिपरूवणदाए ओरालिय- सरीरस्स जे एयपदेसियवग्गणाए दब्बा ते बहुआ अणंतेहि विस्सा- सुवचएहि उवचिदा ।	४४१	५३७ तदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण तेसि चउव्विहा हाणी- असंखेज्जभागहाणी संखेज्जभागहाणी		
५२५	जे दुपदेसियवग्गणाए दब्बा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुव- चएहि उवचिदा ।	४४२			
५२६	एवं तिपदेसिय-चदुपदेसिय-पंचपदे- सिय-छप्पदेसिय-सत्तपदेसिय-अट्टपदे- सिय-णवपदेसिय-दसपदेसिय-संखेज्ज- पदेसिय-असंखेज्जपदेसिय-अणंत- पदेसिय-अणंतानंतपदेसिय-वग्गणाए दब्बा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ।	४४२			
५२७	तदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं				

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०	सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	संखेज्जगुणहाणी असंखेज्जगुण- हाणी ।	४४९	५५०	तस्सेव जहण्णयस्सुक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सामुवचओ	
५३८	एवं चटुण्णं सरीराणं ।	४४९		अणंतगुणो ।	४५५
५३९	भावहाणिपरुवणदाए ओरालिय- सरीरस्स जे एयगुणजुत्तवग्गणाए दव्वा ते बहुआ अणंतेहि विस्सा- सुवचएहि उवचिदा ।	४५०	५५१	तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सामुवचओ अणंतगुणो ।	४५६
५४०	जे दुगुणजुत्तवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सामुव- चएहि उवचिदा ।	४५०	५५२	तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सामुवचओ अणंतगुणो ।	४५९
५४१	एवं ति-चटु-पंच-छ-सत्त-अट्ट- णव-दस-संखेज्ज-असंखेज्ज- अणंत-अणंताणंतगुणजुत्तवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सामुवचएहि उवचिदा ।	४५२	५५३	बादरणिगोदवग्गणाए जहण्णिद्याए चरिमसमयछट्टुमत्थस्स सव्वजहण्णिद्याए सरीरोगाहणाए वट्टमाणस्स जहण्णओ विस्सामुवचओ थोवो ।	४६०
५४२	तदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण तेसि छव्विहा हाणी-अणंत- भागहाणी असंखेज्जभागहाणी संखेज्जभागहाणी संखेज्जगुणहाणी असंखेज्जगुणहाणी अणंतगुणहाणी ।	४५२	५५४	सुहुमणिगोदवग्गणाए उक्कस्सियाए छण्णं जीवणिकायाणं एयवंधण- बद्धाणं सपिडिदाणं संताणं सव्वुक्क- स्सियाए सरीरोगाहणाए वट्टमाणस्स उक्कस्सओ विस्सामुवचओ अणंतगुणो ।	४६१
५४३	एवं चटुण्णं सरीराणं ।	४५३	५५५	एदेसि चेव परुवणट्टदाए तत्थ इमाणि तिण्णि अणुयोगद्वाराणि जीवपमाणानुगमो पदेसपमाणानुगमो अप्पावहुए त्ति ।	४६२
५४४	ओरालियसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सामुवचओ थोवो ।	४५३	५५६	जीवपमाणानुगमेण पुढविकाइया जीवा असंखेज्जा ।	४६३
५४५	तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सामुवचओ अणंतगुणो ।	४५४	५५७	आउकाइया जीवा असंखेज्जा ।	४६३
५४६	तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सामुवचओ अणंतगुणो ।	४५४	५५८	तेउक्काइया जीवा असंखेज्जा ।	४६३
५४७	तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सविस्सामुवचओ अणंतगुणो ।	४५४	५५९	वाउक्काइया जीवा असंखेज्जा ।	४६३
५४८	एवं वेउव्विय-आहार-तेजा-कम्मइय- सरीरस्स ।	४५५	५६०	वणप्फदिकाइया जीवा अणंता ।	४६३
५४९	जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सामुवचओ अणंतगुणो ।	४५५	५६१	तसकाइया जीवा असंखेज्जा ।	४६३
			५६२	पदेसपमाणानुगमेण पुढविकाइयजीव- पदेसा असंखेज्जा ।	४६४
			५६३	आउक्काइयजीवपदेसा असंखेज्जा ।	४६४
			५६४	तेउक्काइयजीवपदेसा असंखेज्जा ।	४६४
			५६५	वाउक्काइयजीवपदेसा असंखेज्जा ।	४६४
			५६६	वणप्फदिकाइयजीवपदेसा अणंता ।	४६४
			५६७	तसकाइयजीवपदेसा असंखेज्जा ।	४६४

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
५६८	अप्पाबहुअं दुविहं-जीवअप्पाबहुअं चेव पदेसअप्पाबहुअं चेव ।	४६५
५६९	जीवअप्पाबहुए त्ति सब्बत्थोवा तसकाइयजीवा ।	४६५
५७०	तेउक्काइयजीवा असंखेज्जगुणा ।	४६५
५७१	पुढविकाइयजीवा विसेसाहिया ।	४६५
५७२	आउक्काइयजीवा विसेसाहिया ।	४६६
५७३	वाउक्काइयजीवा विसेसाहिया ।	४६६
५७४	वणप्फदिकाइयजीवा अणंतगुणा ।	४६६
५७५	पदेसअप्पाबहुए त्ति सब्बत्थोवा तसकाइयपदेसा ।	४६६
५७६	तेउक्काइयपदेसा असंखेज्जगुणा ।	४६६
५७७	पुढविकाइयपदेसा विसेसाहिया ।	४६६
५७८	आउक्काइयपदेसा विसेसाहिया ।	४६६
५७९	वाउक्काइयपदेसा विसेसाहिया ।	४६६
५८०	वणप्फदिकाइयपदेसा अणंतगुणा ।	४६६

चूलिया

५८१	एत्तो उवरिमगथो चूलिया णाम ।	४६९
५८२	जो णिगोदो पढमदाए वक्कममाणो अणंता वक्कमंति जीवा । एयसमएण अणंतानंतसाहारणजीवेण घेतूण एगसरीर भवदि असंखेज्जलोग- मेत्तसरीराणि घेतूण एगो णिगोदो होदि ।	४६९
५८३	त्रिदयसमए असंखेज्जगुणहीणा वक्कमंति ।	४७०
५८४	तदियसमए असंखेज्जगुणहीणा वक्कमंति ।	४७१
५८५	एवं जाव असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए णिरंतर वक्कमंति जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।	४७१
५८६	तदो एक्को वा दो वा तिणिग वा समए अंतरं कारुण णिरंतर वक्कमंति जाव उक्कस्सेण आवलियाए असं- खेज्जदिभागो ।	४७१
५८७	अप्पाबहुअं दुविहं-अद्धाअप्पा- बहुअं चेव जीवअप्पाबहुअं चेव ।	४७४

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
५८८	अद्धाअप्पाबहुए त्ति सब्बत्थोवो सांतरसमए वक्कमणकालो ।	४७४
५८९	णिरंतरसमए वक्कमणकालो असं- खेज्जगुणो ।	४७४
५९०	सांतरणिरंतरसमए वक्कमणकालो विसेसाहियो ।	४७५
५९१	सब्बत्थोवा सांतरसमयवक्कमण- कालविसेसो ।	४७५
५९२	णिरंतरसमयवक्कमणकालविसेसो असंखेज्जगुणो ।	४७५
५९३	सांतरणिरंतरवक्कमणकालविसेसो विसेसाहियो ।	४७५
५९४	जहणपदेण सब्बत्थोवो सांतर- वक्कमणसब्बजहणकालो ।	४७६
५९५	उक्कस्सपदेण उक्कस्सओ सांतरसमय- वक्कमणकालो विसेसाहियो ।	४७६
५९६	जहणपदेण जहणगो णिरंतर- वक्कमणकालो असंखेज्जगुणो ।	४७६
५९७	उक्कस्सपदेण उक्कस्सओ णिरंतर- वक्कमणकालो विसेसाहियो ।	४७७
५९८	जहणपदेण सांतरणिरंतरवक्कमण- सब्बजहणकालो विसेसाहियो ।	४७७
५९९	उक्कस्सपदेण सांतरणिरंतरवक्क- मणकालो विसेसाहियो ।	४७७
६००	सब्बत्थोवो सांतरवक्कमणकाल- विसेसो ।	४७७
६०१	णिरंतरवक्कमणकालविसेसो असं- खेज्जगुणो ।	४७८
६०२	सांतरणिरंतरवक्कमणकालविसेसो विसेसाहियो ।	४७८
६०३	जहणपदेण सांतरसमयवक्कमण- कालो असंखेज्जगुणो ।	४७८
६०४	उक्कस्सपदेण सांतरसमयवक्क- मणकालो विसेसाहियो ।	४७८
६०५	जहणपदेण णिरंतरसमयवक्कमण- कालो असंखेज्जगुणो ।	४७८
६०६	उक्कस्सपदेण णिरंतरसमयवक्क-	

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०	सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	मणकालो विसेसाहिओ ।	४७८	६२७	अचरिमसमएसु वक्कमंति जीवा विसेसाहिया ।	४८३
६०७	जहणपदेण सांतरणिरंतरवक्क- मणकालो विसेसाहिओ ।	४७९	६२८	सव्वेसु समएसु वक्कमिदजीवा विसेसाहिया ।	४८३
६०८	उक्कस्सपदेण सांतरणिरंतरवक्क- मणकालो विसेसाहिओ ।	४७९	६२९	सव्वो बादरणिगोदो पज्जतो वा वामिस्सो वा ।	४८३
६०९	उक्कस्सयं वक्कमणंतरमसंखेज्जगुणं ।	४७९	६३०	सुहुमणिगोदवग्गणाए पुण नियमा वामिस्सो ।	४८४
६१०	अवक्कमणकालविसेसो असंखेज्ज- गुणो ।	४७९	६३१	जो णिगोदो जहणएण वक्कमण- कालेण वक्कमतो जहणएण पबंघ- णकालेण पवट्ठो तेसि बादरणिगो- दाणं तथा पवट्ठाणं मरणकमेण णिग्गमो होदि ।	४८५
६११	पबंघणकालविसेसो विसेसाहिओ ।	४७९	६३२	सव्वुक्कस्सियाए गुणसेडोए मरणेण मदाणं सव्वचिरेण कालेण णिल्ले- विज्जमाणाणं तेसि चरिमसमए मदावसिद्धाणं आवलियाए असंखे- ज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं ।	४८७
६१२	जहणपदेण जहणओ अवक्क- मणकालो असंखेज्जगुणो ।	४८०	६३३	एत्थ अप्पाबहुअं-सव्वत्थोवं खुद्दाभवग्गहणं ।	४९१
६१३	जहणपदेण जहणओ पबंघण- कालो विसेसाहिओ ।	४८०	६३४	एइदियस्स जहणिया णिव्वत्ती संखेज्जगुणा ।	४९१
६१४	उक्कस्सपदेण उक्कस्सओ अवक्क- मणकालो विसेसाहिओ ।	४८०	६३५	सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया ।	४९१
६१५	उक्कस्सपदेण उक्कस्सओ पबंघण- कालो विसेसाहिओ ।	४८०	६३६	बादरणिगोदवग्गणाए जहणियाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं ।	४९२
६१६	जीवअप्पाबहुए त्ति ।	४८१	६३७	सुहुमणिगोदवग्गणाए जहणियाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं ।	४९३
६१७	सव्वत्थोवा चरिमसमए वक्कमंति जीवा ।	४८१	६३८	सुहुमणिगोदवग्गणाए उक्कस्सियाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं ।	४९३
६१८	अपढम-अचरिमसमएसु वक्कमंति जीवा असंखेज्जगुणा ।	४८१	६३९	वादरणिगोदवग्गणाए उक्कस्सियाए सेडोए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं ।	४९३
६१९	अपढमसमए वक्कमंति जीवा विसेसाहिया ।	४८१	६४०	एदेसि चेव सव्वणिगोदाणं मूलमहा- खंघट्ठाणाणि ।	४९३
६२०	पढमसमए वक्कमंति जीवा असंखेज्जगुणा ।	४८१			
६२१	अचरिमसमएसु वक्कमंति जीवा विसेसाहिया ।	४८१			
६२२	सव्वेसु समएसु वक्कमंति जीवा विसेसाहिया ।	४८२			
६२३	सव्वत्थोवा चरिमसमए वक्कमंति जीवा ।	४८२			
६२४	अपढम अचरिमसमएसु वक्कमंति जीवा असंखेज्जगुणा ।	४८२			
६२५	अपढमसमए वक्कमंति जीवा विसेसाहिया ।	४८२			
६२६	पढमसमए वक्कमंति जीवा असंखेज्जगुणा ।	४८३			

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं	सू० सं	सूत्राणि	पृ० सं०
६४१	अट्ट पुढवीओ टंकाणि कूडाणि भवणाणि विमाणाणि विमाणि- दियाणि विमाणपत्थडाणि णि याणि णिरइंदियाणि णिरयपत्थडाणि गच्छाणि गुम्माणि वल्लीणि जदाणि तणवणप्फदिआदीणि ।	४९४		आवलियाए असंखेज्जदिभाग- मेत्ताणि ।	५०६
६४२	जदा मूलमहाक्खंघट्टाणां जहणपदे तदा बादरतसपज्जत्ताणं उक्कस्सपदे ।	४९६	६५३	तदो जवमज्झं गंतूण बादरणिगोद- जीवअपज्जत्तयाणं णिल्लेवण- ट्टाणाणि आवलियाए असंखेज्जदि- भागमेत्ताणि ।	५०९
६४३	जदा बादरतसपज्जत्ताणं जहणपदे तदा मूलमहाक्खंघट्टाणाण- मुक्कस्सपदे ।	४९६	६५४	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुम- णिगोदजीवअपज्जत्तयाणमाउअ- बंधजवमज्झं ।	५१०
६४३	एत्तो सव्वजीवेषु महादंडओ कायव्वो भवदि ।	५०१)	६५५	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोद- जीवअपज्जत्तयाणमाउअबंधजव- मज्झं ।	५११
६४४	सव्वत्थोवं खुद्दाभवग्गहणं । तं तिघा विहत्तं-हेट्ठिल्लए तिभाए सव्वजी- वाणं जहणिया अपज्जत्तणिव्वत्ती । मज्झिल्लए तिभाए णत्थि आवास- याणि । उवरिल्लए तिभागे आउअ- बंधो जवमज्झं समिलामज्झो त्ति वुच्चदि ।	५०१	६५६	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुम- जीवअपज्जत्तयाणं मरण- जवमज्झं ।	५११
६४५	तस्सुवरिमसंखेपद्धा ।	५०३	६५७	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादर- णिगोदजीवअपज्जत्तयाणं मरण- जवमज्झं ।	५१२
६४६	असंखेपद्धस्सुवरि खुद्दाभवग्गहणं	५०४	६५८	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुम- णिगोदजीवअपज्जत्तयाणं णिव्वत्ति- ट्टाणाणि आवलि० असंखे०भाग- मेत्ताणि ।	५१३
६४७	खुद्दाभवग्गहणस्सुवरि जहणिया अपज्जत्तणिव्वत्ती ।	५०४	६५९	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोद- जीवअपज्जत्तयाणं णिव्वत्तिट्टाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभाग- मेत्ताणि ।	४१४
६४८	जहणियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उवरिमुक्कस्सिया अपज्जत्तणिव्वत्ती अंतोमुहुत्तिया ।	५०४	६६०	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सव्वजीवाणं णिव्वत्तीए अंतरं ।	५१५
६४९	तं चेव सुहुमणिगोदजीवाणं जह- णिया अपज्जत्तणिव्वत्ती ।	५०५	६६१	तत्थ इमाणि पढमदाए आवास- याणि भवन्ति ।	५१६
६५०	उवरिमुक्कस्सिया अपज्जत्तणिव्वत्ती अंतोमुहुत्तिया ।	५०६	६६२	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण तिण्णं सरीराणं णिव्वत्तिट्टाणाणि आवलि- याए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ।	५१६
६५१	तत्थ इमाणि पढमदाए आवासयाणि होति ।	५०६	६६३	ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं जहाकमं विसेसाहियाणि ।	५१७
६५२	तदो जवमज्झं गंतूण सुहुमणिगोद- अपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्टाणाणि		६६४	एत्थ अप्पाबहुअ-सव्वत्थोवाणि ओरालियसरीरस्स णिव्वत्ति- ट्टाणाणि ।	५१८

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०	सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
६६५	वेउव्वियसरीरस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	५१९	६७९	एत्थ अप्पाबहुअ-सव्वत्थोवाणि ओरालियसरीरस्स णिल्लेवण-	
६६६	आहारसरीरस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	५१९	६८०	वेउव्वियसरीरस्स णिल्लेवण-	५२९
६६७	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण तिण्णं सरीराणमिदियणिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभाग-		६८१	ट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	५२९
	मेत्ताणि ।	५१९	६८२	आहारसरीरस्स णिल्लेवणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	५२९
६६८	ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं जहाकमं विसेसाहियाणि ।	५२०	६८३	तत्थ इमाणि पढमदाए आवास-	५२९
६६९	एत्थ अप्पाबहुअ-सव्वत्थोवाणि ओरालियसरीरस्स इंदियणिव्वत्ति-		६८४	याणि होंति ।	५२९
६७०	ट्ठाणाणि ।	५२१	६८५	तदो जवमज्झं गंतूण सुहुम-	५३०
६७१	वेउव्वियसरीरस्स इंदियणिव्वत्ति-		६८६	णिगोदजीवपज्जत्तयाणं णिव्वत्ति-	
६७२	ट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	५२१	६८७	ट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदि-	५३०
६७३	आहारसरीरस्स इंदियणिव्वत्ति-		६८८	भागमेत्ताणि ।	५३०
६७४	ट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	५२१	६८९	तदो जवमज्झं गंतूण बादरणिगोद-	५३१
६७५	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण तिण्णं सरीराणं आणापाण-भासा-मण-		६९०	जीवपज्जत्तयाणं णिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभाग-	५३१
६७६	णिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलि० असंखे० भायमेत्ताणि ।	५२१	६९१	मेत्ताणि ।	५३१
६७७	ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणि जहाकमं विसेसाहियाणि ।	५२२	६९२	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुम-	५३२
६७८	एत्थ अप्पाबहुअ-सव्वत्थोवाणि ओरालियसरीरस्स आणापाण-		६९३	णिगोदजीवपज्जत्तयाणमाउअबंध-	५३२
६७९	भासा-मणणिव्वत्तिट्ठाणाणि ।	५२५	६९४	जवमज्झं ।	५३२
६८०	वेउव्वियसरीरस्स आणापाण-		६९५	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोद-	५३३
६८१	भासा-मणणिव्वत्तिट्ठाणाणि विसे-		६९६	जीवपज्जत्तयाणं मरणजवमज्झं ।	५३३
६८२	साहियाणि ।	५२५	६९७	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोद-	५३४
६८३	आहारसरीरस्स आणापाण-भासा-		६९८	पज्जत्तयाणं णिल्लेवट्ठाणाणि	५३४
६८४	मणणिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसा-		६९९	आवलियाए असंखेज्जदिभाग-	५३५
६८५	हियाणि ।	५२५	७००	मेत्ताणि ।	५३५
६८६	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण तिण्णं सरीराणं णिल्लेवणट्ठाणाणि आव-		७०१	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादर-	५३५
६८७	लियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ।	५२६	७०२	णिगोदपज्जत्तयाणं णिल्लेवण-	५३५
६८८	ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं जहाकमेण विसेसाहियाणि ।	५२८	७०३	ट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदि-	५३५
			७०४	भागमेत्ताणि ।	५३५
			७०५	तम्हि चेव पत्तेयसरीरपज्जत्तयाणं	

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०	सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	णिल्लेवणट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ।	५३६	७०६	तस्सेव बंविणज्जस्स तत्थ इमाणि चत्तारि अणुयोगहारानि णाय- व्वाणि भवंति- वग्गणपरूवणा वग्गणाणिरूवणा पदेसट्ठदा अप्पाबहुए त्ति ।	५४१
६९२	एत्थ अप्पाबहुगं-सव्वत्थोवाणि सुहुमणिगोदजीवपज्जत्तयाणं णिल्ले- वणट्ठाणाणि ।	५३६	७०७	वग्गणपरूवणदाए इमा एयदेसिया परमाणु पोग्गलदव्ववग्गणा णाम ।	५४२
६९३	बादरणिगोदजीवपज्जत्तयाणं णिल्ले- वणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	५३६	७०८	इमा दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्व- वग्गणा णाम ।	५४२
६९४	तम्हि चेव पत्तेयसरीरपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	५३७	७०९	एवं तिपदेसिय-वदुपदेसिय-पंच- पदेसिय-छप्पदेसिय-सत्तपदेसिय- अट्ठपदेसिय-णवपदेसिय-दसपदे- सिय-संखेज्जपदेसिय-असंखेज्ज- पदेसिय-अणंतपदेसिय-अणंतानंत- पदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम ।	५४२
६९५	तत्थ इमाणि षडमदाए आवासयाणि हवंति ।	५३७	७१०	तासिमणंतानंतपदेसियपरमाणु- पोग्गलदव्ववग्गणाणमुवरिमाहार- सरीरदव्ववग्गणा णाम ।	५४२
६९६	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुम- णिगोदजीवपज्जत्तयाणं सभिला- जवमज्जं ।	५३७	७११	आहारसरीरदव्ववग्गणाणमुवरि- मगहणदव्ववग्गणा णाम ।	५४२
६९८	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण एइंदियस्स जहणिया पज्जत्तणिव्वत्ती ।	५३८	७१२	अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि तेया- दव्ववग्गणा णाम ।	५४२
६९९	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सम्मुच्छिमस्स जहणिया पज्जत्तणिव्वत्ती ।	५३८	७१३	तेयादव्ववग्गणाणमुवरि अगहण- दव्ववग्गणा णाम ।	५४२
७००	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण गम्भी- वक्कंतियस्स जहणिया पज्जत्त- णिव्वत्ती ।	५३८	७१४	अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि भासा- दव्ववग्गणा णाम ।	५४२
७०१	तदो दसवाससहस्साणि गंतूण ओववादियस्स जहणिया पज्जत्त- णिव्वत्ती ।	५३९	७१५	भासादव्ववग्गणाणमुवरिमगहण- दव्ववग्गणा णाम ।	५४२
७०२	तदो बावीसवाससहस्साणि गंतूण एइंदियस्स उक्कस्सिया पज्जत्त- णिव्वत्ती ।	५३९	७१६	अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि मणदव्व- वग्गणा णाम ।	५४३
७०३	तदो पुव्वकोडिं गंतूण समुच्छिमस्स उक्कस्सिया पज्जत्तणिव्वत्ती ।	५३९	७१७	मणदव्ववग्गणाणमुवरिमगहणदव्व- वग्गणा णाम ।	५४३
७०४	तदो तिण्णि पल्लिदोवमाणि गंतूण गम्भीवक्कंतियस्स उक्कस्सिया पज्जत्तणिव्वत्ती ।	५४०	७१८	अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि कम्मइय- दव्ववग्गणा णाम ।	५४३
७०५	तदो तेत्तीसं सागरोवमाणि गंतूण ओववादियस्स उक्कस्सिया पज्जत्तणिव्वत्ती ।	५४०	७१९	वग्गणपरूवणदाए इमा एयपदे- सियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम	

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०	सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	किं गहणपाओग्गाओ किमगहण- पाओग्गाओ ।	५४३		मधिच्छिदा तेयादव्ववग्गणं ण पावदि ताणं दव्वानमंतरे अगहण- दव्ववग्गणा णाम ।	५४८
७२०	अगहणपाओग्गाओ इमाओ एय- पदेसियसव्वपरमाणुपोग्गलदव्व- वग्गणाओ ।	५४४	७३४	अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि तेया- दव्ववग्गणा णाम ।	५४८
७२१	इमा दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्व- वग्गणा णाम किं गहणपाओग्गाओ किमगहणपाओग्गाओ ।	५४४	७३५	तेयादव्ववग्गणा णाम का ।	५४८
७२२	अगहणपाओग्गाओ ।	५४४	७३६	तेयादव्ववग्गणा तेयासरीरस्स गहणं पवत्तदि ।	५४९
७२३	एवं तिपदेसिय-चदुपदेसिय-पंच- पदेसिय-छप्पदेसिय-सत्तपदेसिय- अट्टपदेसिय-णवपदेसिय-दसपदेसिय- संखेज्जपदेसिय-असंखेज्जपदेसिय- अणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्व- वग्गणा णाम किं गहणपाओग्गाओ किमगहणपाओग्गाओ ।	५४४	७३७	जाणि दव्वानि घेतूण तेयासरीर- त्ताए परिणामेदूण परिणमंति जीवा ताणि दव्वानि तेजादव्ववग्गणा णाम ।	५४९
७२४	अगहणपाओग्गाओ ।	५४५	७३८	तेजादव्ववग्गणाणमुवरिमगहण- दव्ववग्गणा णाम ।	५४९
७२५	अणंतानंतपदेसियपरमाणुपोग्गल- दव्ववग्गणा णाम किं गहणपाओ- ग्गाओ किमगहणपाओग्गाओ ।	५४५	७३९	अगहणदव्ववग्गणा णाम का ।	५४९
७२६	काओ चि गहणपाओग्गाओ काओ चि अगहणपाओग्गाओ ।	५४५	७४०	अगहणदव्ववग्गणा तेजादव्वमवि च्छिदा भासादव्वं ण पावेदि ताणं दव्वानमंतरे अगहणदव्ववग्गणा णाम ।	५४९
७२७	तासिमणंतानंतपदेसियपरमाणु- पोग्गलदव्ववग्गणाणमुवरिमाहार- दव्ववग्गणा णाम ।	५४५	७४१	अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि भासा दव्ववग्गणा णाम ।	५५०
७२८	आहारदव्ववग्गणा णाम का ।	५४६	७४२	भासादव्ववग्गणा णाम का ।	५५०
७२९	आहारदव्ववग्गणं तिण्णं सरीराणं गहणं पवत्तदि ।	५४६	७४३	भासादव्ववग्गणा चउव्विहाए भासाए गहणं पवत्तदि ।	५५०
७३०	ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं जाणि दव्वानि घेतूण ओरालिय- वेउव्विय-आहारसरीरत्ताए परिणामे- दूण परिणमंति जीवा ताणि दव्वानि आहारदव्ववग्गणा णाम ।	५४६	७४४	सच्चभासाए मोसभासाए सच्चमोस- भासाए असच्चमोसभासाए जाणि दव्वानि घेतूण सच्चभासत्ताए मोसभासत्ताए सच्चमोसभासत्ताए असच्चमोसभासत्ताए परिणमेदूण णिस्सारंति जीवा ताणि भासा- दव्ववग्गणा णाम ।	५५०
७३१	आहारदव्ववग्गणाणमुवरिमगहण- दव्ववग्गणा णाम ।	५४७	७४५	भासादव्ववग्गणाणमुवरिमगहण- दव्ववग्गणा णाम ।	५५१
७३२	अगहणदव्ववग्गणा णाम का ।	५४७	७४६	अगहणदव्ववग्गणा णाम का ।	५५१
७३३	अगहणदव्ववग्गणा आहारदव्व-		७४७	अगहणदव्ववग्गणा भासादव्व- मधिच्छिदा मणदव्वं ण पावेदि	

सू० सं०

सूत्राणि

पृ० मं

सू० सं

सूत्राणि

पृ० सं०

ताणं दव्वणमंतरे अगहणदव्व- वग्गणा णाम ।	५५१
७४८ अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि मण- दव्ववग्गणा णाम ।	५५१
७४९ मणदव्ववग्गणा णाम का ।	५५१
७५० मणदव्ववग्गणा चउव्विहस्स मणस्स गहणं पवत्तदि ।	५५१
७५१ सच्चमणस्स मोसमणस्स सच्चमोस- मणस्स असच्चमोसमणस्स जाणि दव्वणि घेतूण सच्चमणत्ताए मोसमणत्ताए सच्चमोसमणत्ताए असच्चमोसमणत्ताए परिणामेदूण परिणमंति जीवा ताणि दव्वणि मणदव्ववग्गणा णाम ।	५५१
७५२ मणदव्ववग्गणाणमुवरिमगहण- दव्ववग्गणा णाम ।	५५२
७५३ अगहणदव्ववग्गणा णाम का ।	५५२
७५४ अगहणदव्ववग्गणा (मण) दव्व- मविच्छिदा कम्मइयदव्वं ण पावदि ताणं दव्वणमंतरे अगहणदव्व- वग्गणा णाम ।	५५२
७५५ अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि कम्म- इयदव्ववग्गणा णाम ।	५५२
७५६ कम्मइयदव्ववग्गणा णाम का ।	५५३
७५७ कम्मइयदव्ववग्गणा अट्टविहस्स कम्मस्स गहणं पवत्तदि ।	५५३
७५८ णाणावरणीयस्स दंसणावरणीयस्स वेयणीयस्स मोहणीयस्स आउअस्स णामस्स गोदस्स अंतराइयस्स जाणि दव्वणि घेतूण णाणावर- णीयत्ताए दंसणावरणीयत्ताए वेय- णीयत्ताए मोहणीयत्ताए आउअत्ताए णामत्ताए गोदत्ताए अंतराइयत्ताए परिणामेदूण परिणमंति जीवा ताणि दव्वणि कम्मइयदव्ववग्गणा णाम।	५५३
७५९ पदेसदुदा-ओरालियसरीरदव्ववग्ग-	

णाओ पदेसदुदा अणंताणंतपदे- सियाओ ।	५५४
७६० पंचवग्गणाओ ।	५५४
७६१ पंचरसाओ ।	५५५
७६२ दुग्ंधाओ ।	५५५
७६३ अट्टपासाओ ।	५५६
७६४ वेउव्वियसरीरदव्ववग्गणाओ पदेस- दुदाए अणंताणंतपदेसियाओ ।	५५६
७६५ पंचवग्गणाओ ।	५५६
७६६ पंचरसाओ ।	५५६
७६७ दुग्ंधाओ ।	५५६
७६८ अट्टपासाओ ।	५५६
७६९ आहारसरीरदव्ववग्गणाओ पदेस- दुदाए अणंताणंतपदेसियाओ ।	५५७
७७० पंचवग्गणाओ ।	५५७
७७१ पंचरसाओ ।	५५७
७७२ दुग्ंधाओ ।	५५७
७७३ अट्टपासाओ ।	५५७
७७४ तेयासरीरदव्ववग्गणाओ पदेस- दुदाए अणंताणंतपदेसियाओ ।	५५८
७७५ पंचवग्गणाओ	५५८
७७६ पंचरसाओ ।	५५८
७७७ दोगंधाओ ।	५५८
७७८ चट्टपासाओ ।	५५८
७७९ भासा-मण-कम्मइयसरीरदव्व- वग्गणाओ पदेसदुदाए अणंताणंतपदे- सियाओ ।	५५९
७८० पंचवग्गणाओ ।	५५९
७८१ पंचरसाओ ।	५५९
७८२ दुग्ंधाओ ।	५५९
७८३ चट्टपासाओ ।	५५९
७८४ अप्पाबहुगं दुविहं-पदेसअप्पा- बहुअं चेव ओगाहणअप्पाबहुअं चेव ।	५५९
७८५ पदेसअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवाओ ओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसदुदाए ।	५६०

સૂ. સં.	સૂત્રાણિ	પૃ. સં.	સૂ. સં.	સૂત્રાણિ	પૃ. સં.
૭૮૬	વેડવિવસરીરદવ્વવગ્ગનાઓ પદે— સટ્ટદાએ અસંખેજ્જગુણાઓ ।	૫૬૧	૭૯૨	ભાસાદવ્વવગ્ગનાઓ ઓગાહનાએ અસંખેજ્જગુણાઓ ।	૫૬૩
૭૮૭	આહારસરીરદવ્વવગ્ગનાઓ પદે— સટ્ટદાએ અસંખેજ્જગુણાઓ ।	૫૬૧	૭૯૩	તેજાસરીરદવ્વવગ્ગનાઓ ઓગાહ— હનાએ અસંખેજ્જગુણાઓ ।	૫૬૩
૭૮૮	તેજાસરીરદવ્વવગ્ગનાઓ પદેસ— ટ્ટદાએ અણંતગુણાઓ ।	૫૬૧	૭૯૪	આહારસરીરદવ્વવગ્ગનાઓ ઓગાહ— નાએ અસંખેજ્જગુણાઓ ।	૫૬૩
૭૮૯	ભાસા-મળ-કમ્મઇયસરીરદવ્વવગ્ગનાઓ પદેસટ્ટદાએ અણંતગુણાઓ ।	૫૬૨	૭૯૫	વેડવિવસરીરદવ્વવગ્ગનાઓ ઓગા— હનાએ અસંખેજ્જગુણાઓ ।	૫૬૪
૭૯૦	ઓગાહ્નઅપ્પાબહુએ ત્તિ સવ્વથોવાઓ કમ્મઇયસરીરદવ્વવગ્ગનાઓ ઓગાહનાએ ।	૫૬૨	૭૯૬	ઓરાલિયસરીરદવ્વવગ્ગનાઓ ઓગાહનાએ અસંખેજ્જગુણાઓ ।	૫૬૪
૭૯૧	મળદવ્વવગ્ગનાઓ ઓગાહનાએ અસંખેજ્જગુણાઓ ।	૫૬૩	૭૯૭	જં તં બંધવિહાણં તં ચડવિવહં— પયડિબંધો ટ્ઠિદિબંધો અણુભાગબંધો પદેસબંધો જેદિ	૫૬૪

૦ ૦ ૦

૨ અવતરણ.ગાથા-સૂચી

ક્રમ	ગાથા	પૃષ્ઠ	અન્યત્ર કહાં
૧	અણુ સંખા સંખગુણા	૧૧૭	ધવલા પ્ર૦ પુ૦ પૃ. ૩૧
૨	અણુસંખાસંખેજ્જા	૧૧૭	જીવકાણ્ડ ગા. ૫૯૩ (પાઠભેદ)
૩	અવગયણિવારણટ્ઠં	૫૧	ધવલા પ્ર૦ પુ૦ પૃ. ૩૧
૪	આહારતેજભાસા	૧૧૭	
૫	ઇચ્છં વિરલિય દુ	૧૧૬	
૬	ઉત્તરગુણિદં ઇચ્છં	૧૧૭	
૭	એદેસિ ગુણગારો	૧૧૮	
૮	એયક્ષેત્તોગાદં	૪૩૯	ગો. કર્મકાણ્ડ ગા. ૧૮૫ (પાઠભેદ)
૯	ઔપશ્લેષિકવૈષયિકા—	૫૦૨	
૧૦	જત્થેવ ચરઇ વાલો	૯૦	મૂલાચા. ૫, ૧૩૨
૧૧	જિયદુ મરદુ વ જીવો	૯૦	પ્રવચન. ૧૭ (પાઠભેદ)
૧૨	તિણ્ણિસદા છત્તીસા	૩૬૨	ગો. જીવકાણ્ડ ગા. ૧૨૨
૧૩	તિણ્ણિસહસ્સા સત્ત—	૩૬૨	સર્વાર્થસિદ્ધિ ટિપ્પણ પૃ. ૫૫
૧૪	ધુવલ્લંઘસાંતરણં	૧૧૮	
૧૫	પલ્લાસંખેજ્જદિમો	૧૧૮	
૧૬	બીજે જોણીભૂદે	૨૩૨	ગો. જીવકાણ્ડ ગા. ૧૮૯
૧૭	વિયોજયતિ ચાસુભિઃ	૯૦	સ્વયંભૂસ્તોત્ર

१८ सत्ता सव्वपयत्था	२३४ पञ्चास्तिकाय गा० ८
१९ सरवासे दु पदंते	९० मूलचा० ५, १३१
२० साहारण आहारो	४८७ गो० जीवकाण्ड गा० १९१
२१ सांतरणिरंतरेदर-	११७
२२ सेडिअसखेज्जदिमो	११८
२३ स्वयं ह्यहिंसा स्वयमेव	९०

३ विशेष-वाक्य-संग्रह

१ एत्थ सव्वे ' वा ' सद्दा समुच्चयट्ठे दट्ठ्वा ।	२०
२ प्रत्येकमात्मदेशा कम्भाविद्यवैरनन्तकैर्बद्धाः इति वचनात् ।	१६६
३ यत् एवकारकरणं ततोऽन्यत्रावधारणमिति वचनात् ।	२२५
४ ' दु ' सद्दस्स अवहारणट्ठस संबंधादो ।	२३१
५ ' इदि ' सद्दो हेदुविवक्खाणमुववत्तीदो उरालमेव ओरालियमिदि सिद्धं ।	३२२
६ ' स्त्रियो मूलमनर्थानाम् ' इत्यत्र ।	४९४

४ न्यायोक्तियाँ

१ यद्यस्य भावाभावानुविधानतो भवति तत्तस्येति वदन्ति तद्विद इति न्यायात् ।	१३
२ नावश्यं कारणानि कार्यवन्ति भवन्तीति न्यायात् ।	४३८
३ एकदेशविकृतमनन्यवदिति न्यायात् ।	५०३
३ समुदायेषु प्रवृत्ताः शब्दा अवयवेष्वपि वर्तन्ते इति न्यायात् ।	५०४

५ ग्रन्थोल्लेख

कम्माणुयोगहार

१ जो सो थप्पो कम्मबंधो णाम यथा कम्मेति तथा णेयव्वं ।	४६
२ कम्मबंधस्स चउसट्ठिभंगा जहा कम्माणुयोगहारे परुविदा तथा परुवेदव्वा ।	४६

खुद्दाबंध

१ एदेसि मग्गणट्ठाणां जहा खुद्दाबंधे परुवणा कदा तथा कायव्वा ।	४७
२ एवं खुद्दाबंधएवकारसअणुयोगहारं णेयव्वं ।	४७
३ एत्थ उद्देसे खुद्दाबंधस्स एवकारसअणुयोगहारणं परुवणा कायव्वा, अम्हेहि पुण गंथवहुत्तमएण ण कदा ।	४७

चूलियासुत्त

१ खीणकसायचरिमसमए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिगोदाणं ति उवरि भणमाणचूलियासुत्तादो ।	८५
२ ओरालियवग्गणोगाहणाए बहुत्तं कुदो णव्वदे ? चूलियअप्पाबहुआदो ।	३२२

जीवट्ठाणसुत्त

१ असंखेज्जा लोगा ति जीवट्ठाणसुत्ते परुविदत्तादो ।	२१४
२ ण च जीवट्ठाणसुत्तेण सह विरोहो, तत्थ ओरालियसरीरे पज्जत्ते संते चेव संजमो उप्पज्जदि ण तम्मि अपज्जत्ते इदि मणम्मि कादूण अप्पज्जत्तजीवसमासपडिसेहादो ।	४२६

तच्चत्थ (तत्त्वार्थसूत्र)

तच्चत्थे जं जीवभावस्स परिणामियत्तं परुविदं तं पाणधारणत्तं पडुच्च ण परुविदं ।	१३

परियम्म

१ परियम्मे परमाणू अपदेसो ति वुत्तो ।	५४

- ૨ અસંલેજ્જલોગમેત્તં કુદો ણવ્વદે ? પરિયમ્માદો । ૩૭૪
- ૩ સંપહિ પલિદોવમાદો હેટ્ઠા અસંલેજ્જાણિ વગ્ગણદ્વાણાણિ ઓસરિદૂણ સૂચિયંગુલ-
ચ્છેદણયાણમુવરિ તસ્સેવ ઉવરિમવગ્ગાદો હેટ્ઠા ઘણલોગચ્છેદણયા હોતિ ત્તિ
પયિમ્મે ભણિદ । ૩૭૫

બાહિરવગ્ગણા

- ૧ તં કથં પરિચ્છિજ્જદિ ત્તિ વુત્તે બાહિરવગ્ગણાએ પંચણ્ણં સરીરાણં વુત્તપદેસપ્પાબહુઆદો
સુત્તાદો । ૭૩
- ૨ બાહિરવગ્ગણાએ પંચણ્ણં સરીરાણં વિસ્સાસુવચ્ચયસ્સ ભણિદપ્પાબહુગસુત્તાદો । ૭૩
- ૩ એદમપ્પાબહુગં બાહિરવગ્ગણાએ પુદ્ધભૂદં તિ કાઠુણ કે વિ આહરિયા જીવસંવદ્ધ-
પંચણ્ણં સરીરાણં વિસ્સાસુવચ્ચયસ્સુવરિ પરૂવેતિ તણ્ણ ઘડદે, જહ્ણણપત્તેયસરીર-
વગ્ગણાદો ઉક્કસ્સપત્તેયસરીરવગ્ગણાએ અણંતગુણત્તપ્પસંગાદો । ૪૫૭
- ૪ એદં સુત્તં બાહિરવગ્ગણાએ ન હોદિ, જહ્ણણબાદરણિગોદવગ્ગણાએ સામિત્ત-
પદુપ્પાયણાદો ? ૪૬૧

ભાવવિહાણ

- ૧ તેસિ પરૂવણાએ કીરમાણાએ જહા ભાવવિહાણે પરૂવિદં તહા પરૂવેદઁવ્વં । ૪૩૪

મહાકમ્મપયડિપાહુડ

- ૧ ન તાવ અજાણંતેણ ન કદા, ચઉવીસઅણુયોગદ્વારસરૂવમહાકમ્મપયડિપાહુડ-
પારયસ્સ ભૂદબલિભયવંતસ્સ તદપરિણ્ણાણવિરોહાદો । ૧૩૪

મહાબંધ

- ૧ એદેસિ ચદુણ્ણં બંધાણં વિહાણં ભૂદબલિભડારણ મહાબંધે સપ્પવંચેણ લિહિદં
ત્તિ અમ્હેહિ એત્થ ન લિહિદં । તદો સયલે મહાબંધે એત્થ પરૂવિદે બંધવિહાણં
સમપ્પદિ । ૫૬૪

વગ્ગણાસુત્ત

- ૧ પુણો એવંવિહકમ્મઇયસરીરણાણાગુણહાણિસલાગાહિતો તેજઇયસરીરસ્સ ણાણાગુણ-
હાણિસલાગાઓ અસંલેજ્જગુણાઓ ત્તિ વગ્ગણસુત્તે ભણિદં । ૩૮૫

વેયણદવ્વવિહાણ

- ૧ સેસં વેયણદવ્વવિહાણેણ ભણિદવિહાણં સંભલિદેણ વત્તવ્વં । ૧૮૪
- ૨ જહા વેયણદવ્વવિહાણેણ સામિત્તપરૂવણા કદા તહા એત્થ વિ ણિરવસેસા કાયવ્વા,
વિસેસાભાવાદો । ૪૨૨

વેયણા

- ૧ અથવા જહા વેયણાએ ણાણાગુણહાણિસલાગાણં ગુણહાણીએ ચ પરૂવણા કદા તહા
વિ કાયવ્વા । ૩૫૧

સુત્તપોત્થય

- ૧ કેસુ વિ સુત્તપોત્થયેસુ એસો પાઠો । ૧૨૭

૬ ઐતિહાસિક-નામસૂચી

સુત્તકાર	૧૩૪	ભૂદબલિભયવંત)	૧૩૪
		ભૂદબલિભડારય)	૫૪૧, ૫૬૪

७ पारिभाषिक शब्द-सूची

अ		अविरदत्त	१२	आहार-तेया-कम्मइय-	
अक्ख	६	अविवाग	१०	सरीरबंध	४४
अगहणदब्बवग्गणा	५९, ६०	अविवागपच्चइय		आहार-तेयासरीरबंध	४३
	६२, ६३, ५४८	अजीवभावबंध	२३, २५	आहारदब्बवग्गणा	५४६,
अगहणपाओग्ग	५४३	अविवागपच्चइय जीव-		५४७, ५४९, ५५१, ५५२	
अग्ग	३६७	भावबंध	१०, १२	आहारय	३२६, ३२७
अग्गट्टिदिविसेस	३६७	असम्भावदुवणबंध	५, ६	आहारसरीर	७८, ३२६
अजीवभावबंध	२२, २३	असरीर	२३८, २३९		
अणंतरोवणिधा	४९	असंजद	११	इ	
अणादियसरीरबंध	४६	असिद्धत्त	१३	इत्थिवेदभाव	११
अण्णाण	१२	असुह	३२८	इद्धि	३२५
अणिसरणप्पय	३२८	अंगमल	३६	इंदाउह	३५
अणुग्गहण	२२८	अंडर	८६	इंदियपज्जत्ति	५२७
अणुच्छेद	४३६	असंजमबहुलदा	३२६		
अणुपेहण	९	आ		उ	
अत्थ	८	आगम	७	उक्कस्सपद	३९२
अत्थसम	८	आगमदब्बबंध	२८	उक्कस्सपदमीमांसा	३९७
अपढम-अचरिमसमय-		आगमदब्बवग्गणा	५२	उक्कस्ससांतरवक्क-	
वक्कंत	४८२	आगमभावबंध	७, ९	मणकाल	४७६
अप्पडिहय	३२७	आगमभाववग्गणा	५२	उक्का	३५
अप्पमाद	८९	आण	२२६	उप्पाइयच्छेदणा	४३६
अप्पाबहुअ	३२२	आणा	३२६	उराल	३२२, ३२३
अप्पाबहुगपरूवणा	५०	आणाकणिट्टदा	३२६	उवसमियअविवागपच्च-	
अप्रदेश	५४	आणावाण	२२६	इयजीवभावबंध	१४
अब्भ	३५	आदेस	२३७	उवसमियचारित्त	६५
अभव्व	१३	आधार	५०२	उवसमिय सम्मत्त	१५
अयण	३६	आभिणिबोहियणाणी	२०	उवसंतकसायबीयराय-	
अरूवी	३२	आयारध	२२	छदुमत्थ	१५
अल्लीवणबंध	३७, ३९	आलावणबंध	३७, ३८,	उवसंतकोह	१४
	४०, ४१		३९, ४०	उवसंतदोस	१४
अवक्कमणकाल	४७९	आवास	८६	उवसंतमाण	१४
अवहार	५०	आहार	२२६, ३३९	उवसंतमाय	१४
अवाण	२२६	आहार-आहारसरीरबंध	४३	उवसंतराग	१४
अविभागपडिच्छेद	४३१	आहार-कम्मइय-		उवसंतलोह	१४
		सरीरबंध	४३	ए	
				एइदियलद्धि	२०

एयपदेसियपोगमल-		पम्म-सुक्कलेस्सा	११	गुणपच्चासत्तिकअ	२७
दव्ववग्गणा	५४	कुडु	४०	गोवरपीड	४०
एयपदेसियवग्गणा		कूड	४९५	गोवुर	३९
	१२१, १२२	केवलणाण	१७	घ	
एयबंधण	४६१	केवलदंसण	१७	घादसुद्धाभवग्गहण	३६२
ओ		कोध-माण-माया-		घोससम	९
ओघ	२३७	लोहभाव	११	च	
ओरालिय	३२३	ख		चउग्गइणिगोद	२३६
ओरालिय ओरालिय-		खइयअविवागपच्चइय-		चउरिदियलद्धि	२०
सरीरबंध	४२	जीवभावबंध	१५, १६	चदुसरीर	२३८
ओरालिय-कम्मइय-		खइयचारित्त	१६	चित्तकम्म	५
सरीरबंध	४२	खइयदाणलद्धि	१६	चुंद	३८
ओरालिय-तेयासरीरबंध	४२	खइयपरिभोगलद्धि	१६	चूलिया	४६९
ओरालिय-तेया-कम्मइय-		खइयभोगलद्धि	१७	छ	
सरीरबंध	४३	खइयलाहलद्धि	१७	छट्टाण	४३४
ओरालियसरीर	७८	खइयविरियलद्धि	१७	छवि	४०१
ओरालियसरीरकायत्त	२४२	खइयसम्मत्त	१६	छेद	४०१
ओरालियसरीरट्टाण		खंध	८६	छेदणा	४३५, ४३६
	४३२, ४३३	खीणकसायवीदराग-		ज	
क		छदुमत्थ	१६	जदु	३१
कडय	४०	खीणकोह	१६	जवमज्झ	५०, ४०२, ५०२
कणय	३५	खीणदोस	१६		५०३
कदजुम्म	१४७	खीणमाय	१६	जहणपद	३९२
कम	४३३	खीणमोह	१६	जहणपदमीमांसा	३९७
कम्मइय	३२८	खीणराग	१६	जहणणुक्कस्सपद	३९२
कम्मइय-कम्मइय-		खीणलोह	१६	जाण	३८
सरीरबंध	४४	खेत्त	३६	जिद	८
कम्मइयदव्ववग्गणा		खेत्तवग्गणा	५२	जीवत्त	१३
	६३, ५५३	ग		जीवण	१६
कम्मइयसरीर	७८	गड्डी	३८	जीवभाव	१३
कम्मबंध	४६	गणी	२२	जीवपदेससण्णा	४३९
कम्मवग्गणा	५२	गहणपाओग	५४३	जीवभावबंध	९
कल्लिओज	१४७	गंध	८	जुग	३८
कार्मण	३२९	गंधसम	८	ट	
कार्मणशरीर	३२८, ३२९	गिल्ली	३८	टंक	४९५
काल	३६	गिह	३९	टुवणबंध	४
कालवग्गणा	५२	गिहकम्म	६	टुवणवग्गणा	५२
किण्ण-णील-काउ-तेउ-		गुणगाइ	३२१	टुवणा	४३५

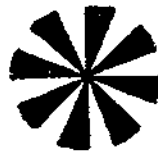
द्विदसुदणान	८
ठ	
ठवणबंध	६
ठवणसद्	६
ण	
णवुंसयवेदभाव	११
णाणासेडि	१३४
णामच्छेदणा	४३५
णामणिरुत्ती	३२१
णामबंध	४
णामवग्गणा	५२
णामसम	८
णिउण	३२७
णिगोद	८५, ४९२
णिगोदसरीर	८६
णिच्चणिगोद	२३६
णिण्ह	३२७
णिरइदिय	४९५
णिरय	४९५
णिरयपत्थड	४९५
णिरंतरवक्कमणकाल-	
विसेस	४७८
णिरंतरसमयवक्कमण-	
काल	४७४, ४७५
णिल्लेवण	५०७
णिल्लेवणट्टाण	५२७
णिव्वत्ति	३६३
णिव्वत्तिट्टाण	३५८
णिसेयखुट्ठाभवग्गहण	३६२
णिसेयपरूवणा	३२१
णेरइयभाव	११
णोआगमदव्वबंध	२८
णोआगमदव्ववग्गणा	५२
णोआगमभावबंध	९
णोआगमभाववग्गणा	५२
णोआगमवग्गणा	५२
त	
तडच्छेद	४३६

तदुभयपच्चइय अजीव-	
भावबंध	२३, २६, २७
तदुभयपच्चइय जीव-	
भावबंध	१०, १८, १९
तव्वभवत्थ	३३२
तव्वदिरित्तदव्ववग्गणा	५२
तिरिक्ख	२३९
तिरिक्खभाव	११
तिसरीर	२३८
तीइंदियलद्धि	२०
तेजइय	३२७
तेजस्	३२७
तेजोज	१४७
तेयाकम्मइयसरीरबंध	४४
तेया-तेयासरीरबंध	४४
तेयादव्ववग्गणा	६०, ५४९
तेयासरीर	७८
तैजसशरीर	३२८
तोरण	३९
थ	
थव	९
थुदी	९
द	
दविय	४३५
दव्ववग्गणा	५२
दव्वबंध	२७
दंतकम्म	६
दिसादाह	३५
द्विमात्रा	३२
दुपदेसियपरमाणु-	
पोग्गलदव्ववग्गणा	५५
दुपदेसियवग्गणा	१२२
देवभाव	११
देसपच्चासत्तिकय	२७
दोस	११
ध	
धम्मकहा	९
धुवक्खंधदव्ववग्गणा	६३

धुवसुण्णदव्ववग्गणा	
८३, ११२, ११६	
धुवसुण्णवग्गणा	६३
धूमकेदू	३५
न	
निक्षेप	५१
प	
पओअबंध	३७
पओगपरिणद (वग्गणादि)	२३, २४
पज्जत्तणिव्वत्ति	३५२
पडिच्छण	९
पढमत्तिभाग	५०१, ५०२
पढमसमयतव्वभवत्थ	३३२
पण्णभावच्छेदणा	४३६
पत्तेयसरीर	२२५
पत्तेयसरीरदव्ववग्गणा	६५
पदमीमांसा	५०, ३२२
पदेसच्छेदणा	४३६
पदेसपमाणानुगम	३२१
पबंधणकाल	४८०
परमाणु	५४
परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा	
१२१	
परंपरोवणिधा	४९
परिजिद	८
परिणव्वुदभाव	१८
परित्त-अपरित्तवग्गणा	५८
परियट्टण	९
पस्समाणकाल	१४३
पंचिदियलद्धि	२०
पागार	४०
पासाद	३९
पुच्छण	९
पुरिसवेदभाव	११
पुलविय	८६
पोग्गल	३६

पोतकम्म	५	मः	भावबंध	२३	
प्रदेशविरच	३५२	मज्झिमल्लतिभाग	५०२	विमाणपत्थड	४९५
प्रबन्धन	४८५	मणदव्ववग्गणा	६२,	विमाणिदिय	४९५
प्रबन्धनकाल	४८५		५५१, ५५२	विमादा	३०
प्रभा	३२७	मणुस्सभाव	११	विरइ	१२
प्ररोहण	३२८	मदिअण्णाणी	२०	विरच	३५२
फ		महाखंधट्टाण	४९५	विवाग	१०
फड्डय	४३३	महाखंधदव्ववग्गणा	११७	विवागपच्चइय जीवभाव-	
फड्डयंतर	४३४	मादा	३०, ३२	बंध	१०, ११
फिरिवकी	३८	मिच्छत्त	१२	विसम	३३
ब		मेह	३५	विसरीर	२३७
बन्धन	१	मोह	११	विस्ससापरिणदओगा-	
बन्धविधान	२	र		हणा	२५
बन्ध	१, २, ३०	रह	३८	विस्ससापरिणदखंध	२६
बन्धणगुण	४३५	राग	११	विस्ससापरिणदखंधदेस	२६
बन्धणिज्ज	१, २, ४८, ९६	रुवी	३२	विस्ससापरिणदखंधपदेस	२६
धंधय	२	ल		विस्ससापरिणदगदि	२५
बंधविहाण	२	लेणकम्म	५	विस्ससापरिणदगंध	२५
बादरजुम्म	१४७	लेप्पकम्म	५	विस्ससापरिणदकास	२५
बादरणिगोददव्ववग्गणा	८४	व		विस्ससापरिणदरस	२५
बाहुरियवग्गणा	२२३, २२४	वक्कमणकालविसेस	४७६	विस्ससापरिणदवण्ण	२५
बीज	३२४	वग्गणयविभासणदा	५२	विस्ससापरिणदसइ	२५
बुद्धभाव	१८	वग्गणणिकखेव	५१	विस्ससापरिणदसंठाण	२६
भ		वग्गणदव्वसमुदाहार	४९, ५३, ५४	विस्ससाबंध	२६
भव	४२५	वग्गणपरुवणा	४९	विस्सासुवचय	४३०
भवग्गहण	३६२	वग्गणा	५१	विस्सासुवचयपरुवणदा	२२४
भवन	४९५	वग्गणादेस	१३६	विहंगणाणी	२०
भव्वजीव	१३	वराडय	६	वेइंदियलद्धि	२०
भावकलङ्क	२३४	वत्तरिच्छेद	४३६	वेउव्विय	३२३
भावकलङ्कल	२३४	वाचक	२२	वेउव्विय-कम्मइय-	
भाववग्गणा	५२	वाचना	८	सरीरबंध	४३
भासादव्ववग्गणा	६१, ५५०	वायणा	८	वेउव्विय-तेया-कम्मइय-	
भित्तिकम्म	६	वायणोवग्गद	८	सरीरबंध	४३
भेद	३०, १२१, १२९	विज्जू	३५	वेउव्विय-तेयासरीरबंध	४३
भेदजणिद	१३४	विमाण	४९५	वेउव्विय-वेउव्विय-	
भेदसंधाद	१२१	विवागपच्चइय अजीव-		सरीरबंध	४३
भेडकम्म	६			वेउव्वियसरीर	७८

स	सर्वदुःखाणमंतयडभाव	१८	विसेस	४७७
सद्भावस्थापना	संवाद	१२१	सांतरवक्कमणजहण्ण-	
सब्भावदुवणबंध	संवादज	१३४	काल	४७६
सम	संजम	१२	सांतरसमयवक्कमणकाल	४७४
समगं वक्कंत	संजोग	२७	सांतरसमयवक्कमणकाल-	
समिला	संज्झा	३५	विसेस	४७५
समिलामज्झ	संदण	३९	सिद्ध	१३
सम्मत्तलद्धि	संवंध	२७	सिद्धभाव	१७
सम्मामिच्छत्तलद्धि	संभव	६७	सिविया	३९
सयड	संसिलेसबंध	३७, ४१	मुण्ण	१३६
सरीर	साडिय	४१	सुत्त	८
सरीरणिव्वत्तिट्ठाण	सादियविस्ससाबंध	३४	सुत्तसम	८
सरीरपज्जत्ति	सादियसरीरबंध	४५	सुदअण्णाणी	२०
सरीरबंध	साहारणजीव	२२७, ४८७	सुह	३२८
सरीरबंधणगुणछेदणा	साहारणलक्खण	२२६	सुहुमणिगोदवग्गणा	११३
सरीरविस्सासुवचय-	साहारणसरीर	२२५	सेलकम्म	५
परूवणा	सांतरणिरंतरदव्व-		स्थित	७
सरीरिबंध	वग्गणा	६४	ह	
सरीरिसरीरपरूवणा	सांतरवक्कमणकाल	४४७	हिंसा	८, ९, ९०
सरीरी	सांतरवक्कमणकाल-			



० धवला षट्खंडागम ०

पुस्तक क्रमांक	विषय	खंड	भाग
१	सत्प्ररूपणा - १	१	१
२	सत्प्ररूपणा - २	१	१
३	द्रव्यप्रमाणानुगम	१	२
४	क्षेत्र-स्पर्शन-कालानुगम	१	३-४-५
५	अंतर-भाव-अल्पबहुत्व	१	६-७-८
६	चूलिका	१	-
७	क्षुद्रकबंध	२	-
८	बंधस्वामित्व	३	-
९	(वेदनाखंड) कृतिअनुयोगद्वारम्	४	१ से ४
१०	(वेदनानिक्षेप-वेदनानय-वेदनाद्रव्य)	४	१ से ४
११	वेदनाक्षेत्र वेदनाकाल	४	५-६
१२	(वेदना भाव विधान)	४	७
१३	(वर्गणाखंड) स्पर्शकर्म प्रकृति अनुयोग	५	- २-३
१४	(वर्गणाखंड) बंधन अनुयोग	५	४-५-६
१५	(वर्गणाखंड) निबंधनादि ४ अनुयोग	५	-
१६	(वर्गणाखंड) मोक्षादि १४ अनुयोग	५	-



